ISSN 2229-547X

विदेह सदेह २२

विदेह-सदेह २२, विदेह www.videha.co.in/ पेटार (अंक २७७-३००) सँ, मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- अद्यतन। सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमे प्रकाशित सभटा रचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर) केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

(c)२०००- अद्यतन। सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतऽ लेखकक नाम नै अछि ततऽ संपादकाधीन। संपादकाधीन। विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur.

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com के मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऐ ई-पत्रिकामे ई-प्रकाशित/ प्रथम प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। (The Editor, Videha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).

ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि। ISSN: 2229-547X

मूल्य : भा. रु. २५००/- संस्करण: २०२०, २०२२

Videha Sadeha 22: A Collection of Maithili Prose and Verse (source:Videha e-journal issues 277-300 at www.videha.co.in).

अनुकम

गद-ि ण (पृ १-६३०)

आि ीष अनध्वहहार- लाल लंगौटी केर पहचान करैत कध्वता (आलोचना) (पृ. २०२०)

दुगानह्द मण्डल- सोह्हगर (पृ. २१-२४)

मुनाजी- बीहध्व कथा (मानकीकरर ओ तुलनात्मक पि) (पृ. २५-४२)

परर झा- लघुकथा (ध्वाद, एन.पी.एस.) (पृ. ४३-५०)

डॉ. बचेशर झा- संस्मरर (पृ. ५१-५४)

पूनम झा- बीहध्व कथा- कुसी (पृ. ५५-५५)

नागेि कुमार पेध्वत आि ुतोषक- शीरामचध्वतमानस (पृ. ५६-१०४)

रबीह्र नारायर ध्वाश- ध्वहार ि राबबंदी कानून (पृ. १०५-११२)

उमेश मण्डल- मैथिली साहित्य-रचनाक क्षेत्रमे जगदीश प्रसाद मण्डलक आगमन, जगदीश प्रसाद मण्डलक 'गामक जिनगी', जगदीश प्रसाद मण्डलक 'रहै जोकर परिवार'मे परिवर्तनक स्वर, जगदीश प्रसाद मण्डलक 'मुइलहा याएल घर' , जगदीश प्रसाद मण्डलक अदालनी कथा संग्रह, जगदीश प्रसाद मण्डलक 'बजहत्ता-बुझहत्ता', जगदीश प्रसाद मण्डलक दजन भरि कथाक सामान्य परिचय, जगदीश प्रसाद मण्डलक औपन्यासिक कृति, जगदीश प्रसाद मण्डलक जीवन-संघषण(पृ. ११३-२११)

केदार भारदाज- किछु बीहनि कथा, किछु लघुकथा, एकटा दीर्घकथा आ एकटा उपन्यास, बीहनि कथा (ओ बच्चा, कमिटमेट, मनु:गंध, सोच, गलत विचार, खाली हाथ, नबका लोक, किस्मत, पेम विराह-नब पयोग, दही राली बुद्धि, भुत-बंगला, मध्यस्थ, गामक माइट नसीब नधि), लघुकथा (कन्यादान, पछतारा, उपराग, अएना, हत्यारा, हुम्मा, इच्छा, भानि एडभानि, अपन लोक, बर्खी, टीस, विशासघात, पापक फल, हाथक लकीर, छका-पुरार, सरपाइज, अफेयर, केतकीक व्यथा- की कहू कथा, उठऊआ बियाह, बडका घरक बहुरिया, दरबार, समयक चक, बदलल बेबहार, अनघोल, देहक नेह, लछमी बहुरिया, अजादी, गोलकी फेमक चश्मा, अंत, फैसला, आत्मग्लानि, खेलौना, कल्पना, बच्चनक बचन, रखबार, चंसगर, दोषी के?, बतहिया गाछी, डालडा पसाद), की सोचल- की लीखल (दीर्घकथा), पैबंद (उपन्यास) (पृ. २१२-६३०)

पद-खण्ड (पृ. ६३१-७३४)

आशिष अनचिन्हार- किछु गजल (पृ. ६३२-६५७)

नन्द विलास राय- सरस्वती वन्दना, निरान (पृ. ६५८-६६६)

रामदेव पसाद मण्डल 'झारूदार'- किछु झारू (पृ. ६६७-६७१)

मुना जी- गजल (पृ. ६७२-६७३)

पदीप पुष्प- किछु गजल (पृ. ६७४-७२९)

संतोष कुमार राय 'बटोही'- कमला-बलानक मारल, रौदी आओर दहार (पृ. ७३०-७३४)

गद्य खण्ड

आशीष अनचिन्हार

लाल लंगौटी केर पहिनि करैत कविता (आलोचिना)

"सबद" मने शब्द। "ब्यातारथ" मने ब्याताथर्था शी कविराज विशनाथजी अपन पोथी "साहित्यदपर्ण"मे तीन पकारक दूतक निरूपण केने छथि ताहिमेसँ "ब्याताथर्थ" दोसर पकारक दूत अछि आ एकर लक्षण ई जे कम बात कऽ जे ठीक काज कऽ लैत हो। मने कम बातमे बेसी काज। दिमे एहन ऋृतिके धायथ्या मानल गेल जे कि यज कालमे गाएल जाइत कोनो सूक्तमे अतिरिक्त रूपसँ जोडल गेल हो। धायथ्या मने सम्बाधा सेहो होइत छै "कोधागनौ वाजतातवागहकथाधाय्यासमुदीचते"। सम्बाधा मने fuel सेहो कि तँ सभ तरहँक। पाचीन कालमे पतीक बहुत पकारक होइत छलै जाहिमे "महर्षी"के सेहो धायथ्या कहल जाइत छलै (मूलतः भरण-पोषणक हिसाबे। हमर अनुमान अछि जे "धाय" शब्दक जन्म एही ठामक हएत। "सबद ब्यातारथ धायथ्या" अरविन्द ठाकुरजी दारा लिखल कविता संगह केर नाम अछि।

१

पहिल कविता "सुनू जयदथ" अछि। पतीक रूपमे जयदथक तते ने पयोग भेल छै अछि जे एकर उपयोग करए बलाके बहुत साविधानी राखए पडैत छै से साविधानी एहि कवितामे नै राखल गेल अछि। एहि कविताक अंतिम किछु पाति एना अछि--

"सुनू जयदथ

एकल बेर कृष्णाक मायाक मुँह नहि जोहल जाएत

शुरू करब अहाँ जँ समर

सूयास्त धरि पतीक्षा नहि करब हम"

आन पसंग बादमे पहिने तँ हम इएह कहब जे जाहि तेरिक संग ई पाँति अछि ताहिमे हमरा हिसाबे "मुँह" शब्दक उच्चारण सही नै छै। एहि कविताक पाठमे "मूँह" सतिः एतै। बहुत संभि जे लोक एकरा तिथि दोष मानथि मानथि मुदा हम एकरा मैथिली कवितामे लय कोना उपेक्षित होइत अछि तकर उदाहरण मानि रहल छी। आब एहि कविताक पहिल किछु पाँति देखी--

"एकरा काठी जुनि देखायब कि

हमर कविताक अनन्त पृष्ठ सभहक बीि

अखनि सूतल पडल अछि बारद"

कविताक शुरुआतसँ पाठक बुझैत छथि जे ई कविक अपन मनोभाि छै मुदा अंतिम पाँतिसँ ई बुझाइत छै जे कविक भीतर बैसल अजुधाक मनोभाि छै आ तँइ हमरा बुझने कविताक शुरुआत ओ अंतमे संबंध नै छै। ई पूरा कविता एही तरहँक अछि। एकटा सकाक पाठक लेल ई कविता साधारण हएत तँ साधारण पाठक लेल जटिल।

दोसर कविता "हम हत्या करय िहै छी" केर सभसँ नीक बात जे ई कविता कोनो स्थूल नायक लेल नै लिखल गेल अछि। ई कविता विभिन्न पृिभिपर लिखल गेल छै। आब ई अलग बात जे विभिन्न पृिभि एकै नायकमे हो ि कि अलग-अलग नायकमे। ई तरीका

कोनो कथनके कविता बना दै छै खास कऽ ओहन व्यवस्थामे जखन कि कविता गद्यात्मक हो। एकर कविताक नकारात्मक पक्ष ई जे कवि हत्या करबा लेल तते ने व्यग्र छथि (भने ई व्यग्रता प्रेम दुखसँ हो) जे ओ विज्ञान पत्रिकाके साप बना सेहो डँसबाक लेल तैयार छथि। बदला लेबाक कोनो तरीका जायज भऽ सकैए मुदा कविसँ हम कहबनि जे साप बनबाक कममे जहर तँ हुनकोमे आबि जेतनि तँइ बदला लेबाक लेल साप बनबाक तरीका हमरा उचित नै बुझाइए।

तेसरसँ सातम कविता इनार सीरीज अछि। वस्तुतः कविता संग्रह हम एहीठामसँ शुरू मानैत छी। यथार्थ एहिठाम पकड़ल बेर आएल अछि। इनार-1 मे विषाद सन शाश्वत विषय चित्रित ओ बहुअर्थी अछि। इनार-2 मे इनारक लालाटपर जे लिखल छै से वस्तुतः इनारपर नै आजुक आधुनिक परिवेशमे कमजोर लोकक ललाटपर लिखल छै। इनार-3 मे "अनठीया बेग", "रक्तहीन काया" आ "ढोढ़िया साप"क प्रयोग कविताके अलग दिशामे लऽ जाइत अछि जाहि ठामसँ प्रासंगिक कविता सामने अबैए। इनार-4 कविता एहि सीरीजक कमजोर कविता अछि कारण पुरुषक दोष इनारपर नै थोपल जेबाक चाही। इनार-5 अकादेमी राजनीतिकेँ देखार करैए मुदा एहि कविताके आर धरगर बनाएल जा सकैए।

"अकादमी व्रत कविता सभहँक पक्षमे" नामक कवितामे ओहन साहित्य सभके अकानल गेल अछि जे कि मुद्रित नै भऽ सकल, अर्थात पुरस्कृत नै भऽ सकल। ई नीक गप्प मुदा ईहो कविता अपन बात मुद्रित भैए कऽ कहि रहल अछि। बहुत संभव जे भविष्यमे पुरस्कृत सेहो भऽ जाए। किछु दिन पहिने रवीश कुमार नामक हिंदी टी.वी पत्रकार सेहो टी.वीक माध्यमे बजैत छलाह जे टी.वी नै देखल जेबा

ाही। खएर माध्यम जे हो िचतिक पक्ष बाजब बेसी जररी छै।

"बुद्धिबोधक्कणा" नामक कविताम कवि टी.ाी िनल आ अपन पोतीक माध्यमे सकीनक पाछूक अन्हार देखेबाक पयास केलाह अछि। एहि कविताक नीक पक ई जे आन कवि जका जबरदस्ती नै देखने छथि। कवि ई सीकार करै छथि जे आने जका हमर पोती सेहो एहि अन्हारमे फँसल अछि मुदा कविके उम्मेद छनि जे एक िदन हमर पोती एहि अन्हारके जरर जानत। जँ हम पोती बदला पाठक पढी तँ ई कविता आन अथथ्लस लऽ जेबामे सेहो सक्षम अछि।

"हलफनामा" कविता मैथिलीक आधुनिक कविताक सिथा िवपरीत अछि आ एकरा हम बहुत नीक मानै छी। एहि कविताक माध्यमसँ कवि मम्मट (पाीन आाियथ्लके नकारै नै छथिन बल्कि मम्मटक िदिरसँ आगू बढए ाहि छथि। मैथिलीक कथ्यत पगितशील कवि अरविन्द ठाकुरके पारंपरिक आ जड कहल सकै छथिन कारण ई कथ्यत पगितशील सभ िवना जल्डक नीिनता ाहि छथि। एहि कविताम जे सतामे कील ठोकबाक बात कहल गेल छै ताहि लेल बहुत कथ्यत पगितशील कवि अरविन्दजीके साधुाद देताह मुदा हमर अनुभि ई अछि अिधकाश कविक िलखल कािता पोथिए धरि रहि जाइत छै मुदा आलोच्य कविक तेरि जे कितासँ बाहर रहल अछि ताहिसँ उम्मेद जरर जागल अछि जे ई कवि सताक माथमे कील जरर ठोकताह।

"बुद्धिजीाी सन ओ-1" नामक कविताम कवि कोनो सुिनयिित आशंकासँ दहलल ओ िसहरल छथि मुदा एकटा पाठकक तौरपर हम ई कहब जे जँ कविक आशंका सि भेल तँ कविकमथलेल सौभाग्यदायक रहत। िमाताथथ फेर आएल अछि "बुद्धिजीाी सन ओ-2" नामक

कविताम। भारतीय समाजमे बहुधा देखल जाइए जे कुकुरक अशिषपर मजार अथवा गहूँम आदिक अँकुरा कऽ मंदिर-मजार बना देल जाइत छै। एहि कविताम "लाल लंगौटी" अपन एही अर्थमे अछि। जेना किछु दबंग उपरोक्त विधिसँ मंदिर-मजार बना अपन आय सुनिश्चित कऽ लैत अछि जेहिना किछु बुद्धिजीवी अपन पिता-संबंधी-गुरुक ओ नायाब लाल लंगौटी पहीरि बुद्धिजीवी बनि अपन नाम-इनाम सुनिश्चित कऽ लैत अछि। जरूरी नै जे ई लाल लंगौटी मात्र बुद्धिजीवी पहिरै छथि सत्ता ओ बेपार दूनूमे इएह लंगौटी पहिरल जाइए। मैथिली कविताक इतिहासमे "लाल लंगौटी" प्रतीक पहिल अछि।

"हमर हिरा पर हिंदुस्तान" नामक कवितासँ हम प्रभावित नै भऽ सकलहुँ आ ई हमर सीमा सेहो भऽ सकैए। जरूरी नै छै जे माथपर टोपी, गटामे ताग आ कन्हापर किछु रहत तखने अहा सर्वधर्मसमभावी कहाएब। महात्मा गाधी बिना ई सभ केने सर्वधर्मसमभावी छलाह एवं आजुक नेता ई सभ कइयो कऽ कट्टर छथि।

"मुंबइमे स्वतंत्रता दिवस-1 एवं 2" नामक दूटा कविता अछि जकरा जोड़ि कऽ एकै कविता बूझब जरूरी बुझाएल हमरा। एहि दू कविताम कवि अपन आ रेलिंगपर छिड़िआइत फुदी बीच स्वतंत्रताक निर्णय केने छथि आ अपनासँ बेसी स्वतंत्र फुदीके मानै छथि। आगू बढबासँ पहिने हम पाठकके हिंदीक उपन्यास "चित्रलेखा" केर ओ अंश पढए कहब जे पात्र नायक बीजगुप्त आ सहनायिका यशोधराक बीच भेल छै। कविए जका यशोधरा सेहो कहै छथिन जे चिड़ैया सभ कतेक आनंदसँ रहैत अछि ताहिपर बीजगुप्त कहलखिन जे चिड़ैया सभ सेहो इएह सोचैत हेतै जे देखियौ आदमी सभ कतेक सुख-सुविधासँ रहैत अछि। आ ई नमहर कथन छै से देब अहिठाम संभव नै। कविके

एहन दुनियामे कतेक स्वतंतता भेटल छन्हि सेहो आकलन करब जरुरी।

"एहिक महान घटनाक" नामक कविता चानकको चित्रतगत खसबाक पढ़ियापर अछि आ से नीक अछि मुदा किछु पाँति बेसी बेर एलाक कारणसँ प्रभाव कम भेलैए--

"सोचि रहल छी

सोचि रहल छी

उठबाक हुअए कूबत त

खसैक खतरा मोल लएमे कोनो बुराइ नहि"

ई पाँति सभ कवितामे दू बेर प्रयोग भेल अछि जे कि प्रभाव कम करैत छै।

समझ कवितामे आएल भाव जे "केकरो बुझाबक लेल कनियो ओकरा सन होमए पडतै" ताहिसँ हम सहमत छी।

"अन्यपुरुष" केर नामसँ 5टा कविता अछि। अन्यपुरुष-1 मे काता, प्रभु, आ सुहृद ई तीनी शब्द एहन कविताक जान अछि जकर फैलाव व्याप्तिसँ उपर धरि होइत अछि कमशः "सेक्ससँ सेसेक्स" आ "शिलाजीत-मुसली" धरि पहुँचि अछि। ओना हम कनी-मनी आयुर्वेद शास्त्रक जानकारी राखैत छी तँइ हम पाठकके कहबनि जे शिलाजीत-मुसली-अशगंधा मात यौन रोग लेल नै समान्य दुबर्लता हटेबाक लेल सेहो देल जाइत छै तँइ एहन सभहँक अथथमात यौने रोग धरि नै राखल जाय।

अन्यपुरुष-2 बाहणादि विरोधी कविता अछि आ एहन समयमे एहने कविता लिखल जेबाक नहि। जे लोक बाहण आ बाहणादिके एकै बूझै छथि तिनका लेल ई कविता पढबा योग्य नै अछि।

अन्यपुरुष-3 नामक कविता दरभंगाक भूतपूर्व मठाधीशक तिनटान पुत सभ लेल लिखल गेल अछि जे 60 बरख धरि किछु नै भेलै से पलाप करए बला राजनीतिक दल लेल से कहब कठिन अछि मुदा यथार्थ एकठाम निमपर अछि आ तकर पता पात अन्यपुरुष-4मे भेटत।

अन्यपुरुष-4 नामक कविताके हम वास्तु ओ ज्योतिषक किछु समान्य शब्दक माधयमसँ देखाएब। वास्तुमे दिशा तँ ज्योतिषमे गह केर पधानता छै। वास्तुक हिसाबे हरेक दिशा लेल देवता आ गह निधारित छै जकर विवरण नीचा अछि--

उतर दिशा-देवता कुबेर, गह बुध

ईशान दिशा (उतर-पूर्वी कोना) देवता शिव, गह बृहस्पति

पूर्वी दिशा-देवता इंद, गह-सूयर्थ

आग्नेय दिशा (पूर्वी दक्षिण कोना) देवता अग्नि, गह-शुक

दक्षिण दिशा-देवता यम, गह मंगल

नैऋत्य दिशा (दक्षिण-पश्चिम कोना) देवता राक्स, गह राहु-केतु

पश्चिम दिशा-देवता वरुण, गह शनि

वायव्य दिशा (उतर-पश्चिम)-देवता वायु, गह चंद

ऊर्ध्व-देवता ब्रह्मा, ग्रह उल्लेखित नै

अधो-देवता शेषनाग, ग्रह उल्लेखित नै

ई कविता ईशान दिशा (उतर-पूर्वकोना) कोनसँ शुरु होइत अछि। एहि कोनक देवता शिव छथि ग्रह गुरु जे ज्ञानक प्रतीक छथि। एकर बाद वायव्य (उतर-पश्चिम) दिशा अछि जकर देवता वायु छथि आ ग्रह चान्द्र जे चान्द्र गुरुक पत्नी संग व्यभिचार केने छथिन। एकर बाद नैऋत्य दिशा (दक्षिण-पश्चिम कोना) अछि जकर देवता राक्षस ओ ग्रह राहु-केतु छथि। राहु-केतु चान्द्रक दुश्मन। जँ राजनीतिक मानी तँ दुश्मनक दुश्मन दोस्त होइत छै अर्थात बृहस्पति आ राहु-केतु दोस्त भऽ सकै छथि चान्द्रक विरुद्ध। मुदा ई बृहस्पतिसँ शुरु कएल ई कविता आग्नेय कोन धरि नै पहुँचि सकल आ एकर कारण छैक जे आग्नेय कोनक ग्रह शुक्र छथि आ बृहस्पति ओ शुक्र दून्नू दुश्मन दून्नू दू ध्रुव। अकारण नहि जे कवि अपन कविताके अध-सीझल कहै छथि। ई कविता विशुद्ध रुपसँ लोकक अपन मानसिक द्वंदक व्याख्यान कहैए। कविता अन्यपुरुष (5) मे सहज-सरल रहबाक कामना छै मुदा सहज-सरल रहब एते सरल कहा छै। "जँ अहा गुरु छी" ई कविता स्थूल भऽ गेल अछि। साफे-साफ पता चलि जाइत छै जे ई गुरुघंटाल सभपर लिखल गेल छै। एहि कविताक अंतिम पाँति अधिकाशतः फूसि छैक। असली चेला कहियो गुरु छोड़ि इजोत दिस नै जा सकै छथि। असली चेला रुकल रहै छै गुरुक चिता धरि कऽ गुरुआइक आसन लेल। लाल लंगोटी कविता मोन पाड़ू। "उन्टा सास लैत लोक आ विदापति" एहि विषयपर बहुत विचार विज्ञान विधामे आएल अछि आ भविसक तँइ प्रभावित नै कऽ सकल हमरा। पृष्ठ 49 सँ 61 धरि 11 टा कविता दरभंगाक विज्ञान भंगिमापर

अछि मुदा काजक कविता मात पहिल कविता (दरभंगा राज आ ओकर विरासत) अछि। दरभंगापर दोहा सेहो अछि। किछु दोहामे माता ओ यत्र-तत्र सही अछि मुदा किछुमे गडबड।

"सहज सुमति मागलनि विदापति" ईहो कविता सहज-सरल विषयपर अछि। हमरा हिसाबे ई कविता "अन्यपुरुष-5 सँ नीक अछि। आब फेर आएल अछि कविताक दुर्योधनक कन्याक नाम रहनि भानुमती आ भानुमती केर पयोग करैत 16 टा कविता अछि पृष्ठ 64 सँ 82 धरि। "चारहुत आ भानुमती" नामक कवितामे मैथिलीक कवित महानता ओ मान्यतापर आक्षेप कएल गेल अछि। आ एकटा नमहर बहसक माग करैत अछि। एहि कवितामे जँ "किंग लीडर" शब्दक बदला "किंग मेकर" रहितै तँ बेसी नीक।

"भानुमतीक किंग" नामक कवितामे कविताथजुता पाश्चात्यसँ निडी पाठ धरि कऽ रहल अछि। कवि लेल भानुमतीक किंग जिहे जे हो मुदा एकटा पाठकक तौरपर हमरा लेल भानुमतीक किंग "गरीब आ पाइभेट" नौकरिहारा अछि। पाठक समुदाय एहि कविताके पढ़िए कऽ मजा लऽ सकै छथि।

"भानुमती आ ठिनाि" नकली मिमपंथी सभपर अछि जे ठिनाि ि आर कोनो तात्कालिक फायदा लेल अपन पुरखाके गरिआबैए। आ कविकि मोताबिक भानुमती ठिनाि लडबा लेल एहन करैए। ओना बहुत बेर भूतकालक गलतीके उजागर करबाक पश्चातयाके गरिआएब ि उकटब बूझि लेल जाइत छै। पाठक एहि कवितापर बालक एहि बिंदुपर सोचथि।

"भानुमतीक पुश्तैनी कम" वस्तुतः एकटे हमरे सभहँक कम अछि। ई

कविता यथार्थक अद्भुत नमूना अछि। "भानुमतीक हँसब" एहि कवितापर जाएसँ पहिने हमरा एकटा लोककथा मोन पडल। एकटा गरीब बच्चा कोनो राजा लग सभ दिन जाइक आ राजा ओकरा लग सोना आ चानीक सिक्का राखि दै ओ बच्चा चानीक सिक्का उठा लिअ दै। राजा ओ दरबारी से देखि हँसै जे देखियौ केहन नाबुझ छै जे सोना रहितो चानी उठबै छै। एक दिन ओकर माए वा बाप पुछलकै जे सोना किए ने उठबै छीही तँ ओ बच्चा जबाब देलकै जे जहिया हम सोना उठा लेबै तहियेसँ ई खेल खत्म भऽ जेतै। तँइ हम मूखथ बनि चानी उठा लैत छी। आब कवितापर आबी। कविताक अंतिम पाँति अछि "हँसी सन पवित्र वस्तुओ भानुमती सन महिला लग आबि धंधा भऽ जाइत अछि। आ एहिठाम आबि पाठक बूझि सकै छथि जे कवि कोन खेलक रचना कविता माध्यमसँ केने छथि। एहि कवितामे भानुमती कियो भऽ सकैए लोकथाक बच्चा सेहो, गरीब सेहो आ महिला सेहो। बेसी बुझबाक लेल पाठक कविता पढथि।

"भानुमतीक उत्स" हम एहि कविताके दू भागमे बाटब। पहिल--- "गाछक जड़िसँ..........कंठस्थ कए उदरस्थ कएने अछि" आ दोसर- " जखनि कखनिओ उठैत अछि-----एकाकार भऽ जाइत अछि भानुमतीमे"। हमरा हिसाबे पहिले भाग कविता अछि। दोसर भाग एहि रचनाके एकपक्षीय बना देलकै। जँ कवि एहि रचनाके पहिले भागपर खत्म करतथि तँ ई दुनियाक हरेक भानुमतीक प्रतिनिधित्व करितै ओतबे शब्दमे मुदा एकर दोसर भाग आबि एहि रचनाके एक भानुमतीपर केन्द्रित कऽ कमजोर बना देलकै।

"कवि भानुमती" नामक कविता जाहि विषयपर अछि ताहिपर बहुत रास व्यंग्य, चुटकुला आदि रचल जा चुकल अछि। आ प्रस्तुत

कविताक स्वाक्ष्यो तेहन नै जे आकृष करए।

"भानुमती आ काछु" नामक कविताक एिह खण्डकत जे ई दू भागमे अछि आ मात पहिलुके भाग कारगर अछि (काछु िच इंिक-----कतेको साल तक)। जँ एहि कवितासँ दोसर भाग (एहि धरतीपर---अपच्छयात भेल अछि भानुमती) हटा देल जाए तैयो एहि कविताक अभीष पूरा भऽ रहल छै। "भानुमती आ घोघा" नामक कवितामे भानुमतीके घोघा अपन लोक बुझाइत छै कारण घोघेक दात सन भानुमतीक दात छै जाहिसँ ओ दुनियाक हरेक िस्तुक भक्षण कऽ सकैए।

"भानुमतीक चिन्ता" ईहो कविता दू भागमे अछि आ हमरा हिसाबे एकर पहले भाग (निकी बहुचयया बिना गहना... नहि जीबि सकैत अछि चकनहुँ) कारगर अछि आ एकर दोसर भाग (परम बूझि अछि ई पधानमंती...चिन्ताक हमशकल भेल भानुमती) एहि कविताके एकपक्षीय बना दैत छै।

"भानुमती आ समाजक न्याय" एहि कवितामे भानुमती ओहन लोकक अितारमे अछि जे लोकतंतमे समतािदके पिा ने सकल। कविताक अंत एहिसँ होइत अछि जे तमाकू खाएब राड-रोहियाक अमल छै आ एहिसँ हम ई मानैत छी जे कवि 95 कच्यत बाह णके राड-रोहिया मानै छथि एहि अमलक कारणे। "कापरेच्छभ भानुमती" नामक कवितामे भानुमती जोगाडीक र पमे अछि। आब ई जोगाडी कोनो क्षेत्रमे पहुँचि सकैए। पाठक अपन क्षेत्रक हिसाबे एकर व्याख्या कऽ सकै छथि। "इतिहासिता भानुमती" ई कविता भानुमतीक ओहन र पपर अछि जाहिमे ओ अतीतजीिी बुझाइत अछि। मुदा जेना-जेना कविता अंत दिस बढैत अछि तेना-तेना बुझबामे आबि जाइत छै जे भानुमती

अतीतक आरिण तिथ्यानक अपन संिथभ्ूलथलेल केने अछ्छ। एह्ल कचिताम्े ब्भताथथ्िरमपर अछ्छ। भानुमतीक ई रप कोनो राजनीचाक दल सेहो लऽ सकैए। "भानुमती आ खबासी" ई कचिता मठ ओ मठ्ाष्यपर अछ्छ। कचिताक अंत एना अछ्छ "जखन्म जखन्म नेतपट खोलताह / शी कृष्णरपी मठाधीश/ तँ पह्लने देखच्यन ओकरे युच्यब्ार रप" मुदा ई तथ्य तँ दुयोधन-अजुध्ा ओ कृष्णक बीिक छन्मा एह्लमे युच्यब्ार कोना एलाह से शोधक बात। बहुत संभि जे भािनामे बह्ल गेल हेता कचि। ि ईहो भऽ सकैए जे आर आन कोनो ब्भथक हेतै जे च्क हमरासँ छुच्ट गेल हो। पाठक एह्ल कचिताक एह्ल ब्भथकपर धेआन राखच्य। "भानुमती आ बतहबा" ई कचिता भानुमतीक ओहन रपपर अछ्छ जे च्क कोनो अिसिरपर च्कछु पाच्ा मैच्यली बाजए बलाके देिता मान्मा लैत अछ्छ। पाठक एकर चिस्तार कोनो संस्थाक िच्यक आयोजनसँ लऽ कऽ िनािी सभा धच्र कऽ सकै छच्य। "अयनामे भानुमती" एह्ल कचितापर एबासँ पह्लने चिश साह्लत्यमे अंतरात्माक अिाज देखी तँ पता लागत जे जे मात च्कछुए नीक लोक अपन अंतरात्माक अिाज सुन्मा सकलच्य आ बहुत खराप लोक अपन अंतरात्माक अिाजके अनठा देलाह। एखनो िएह च्स्थच्ा छै आ बादोमे िएह रहतै। एह्ल कचितामे भानुमतीके सेहो आयनामे आएल अपने रप पसंद नै पडलै। बात पुरान छै मुदा कहबाक शैली नि, इएह एह्ल कचिताक चिशेषता भेल। "सूयध्के चिन्हह भानुमती" नामक कचितामे कचि भानुमतीक डर दूर कऽ रहल छच्यन मुदा कोन डर से अजात अछ्छ। समान्यतः डर ि तँ शाच्चक कमोजरके होइत छै ि नैच्ाक कमजोरके। भानुमती कोन तरहक कमजोर अछ्छ से पाठक अपना समयपर जान्मा सकताह। "जाउ महापकाश" एिं "कुमार शैलेद" संस्मरणपरक कचिता अछ्छ आ मैच्यलीमे एहन कचिताक आिश्यकता

छै। "पतके मुक्त ाही" ईहो कविता कुमार शैलेदजीपर केन्द्रित अछि मुदा एहि कविताक किछु पाँति पूरा संसार लेल बनल अछि--

"आब कन्नु मरलाक बाद पछताइत छी / जीिंतमे कयल अपन ओहि करनीपर"

"जीवित पेत सभहक बनायल छल-छदक ितिमे नहि फँसू"

"मानसिक खबासीक महापातीय मकडजालसँ मुक्त होउ"................ आदि।

"शीमान् कपरगर" नामक कविता ओहन ि्चतपर लिखल गेल अछि जकर बाहरी आिरण चिकन-ि्नमुन मुदा भीतरक आिरण छल-छदक छैक। जेना जीिन बंदुसँ बंदु धिक याता अछि तेनाहिते ई कविता कपरगरसँ कपरजर धिक याता अछि।

"शहादत" कविता बुझबाक लेल कुंडलिनी योग बुझए पडत कारण एहिमे एहि योगसँ संबंधित शब्दािलीक पयोग भेल अछि। मूलाधार िक, सिाधिषान िक, मणिपुर िक, अनाहत िक, विशुद्धि िक, आजा िक, सहसार िक। मूलाधार िक सभसँ नीिा होइत छै आ सहसार सभसँ उपर। ई िक सभ पीठक पाछू रीढक हडडीमे होइत छै। एहि कवितामे कविकि बंदु विसगथ(सहसार)पर एकटा मच्छर बैसि जाइन छैक आ कवि ओकरा आजा िकक, विशुद्धि िकसँ खेहारैत मणिपुर िक लग ओहि मच्छरके मारि दैत छथिन। कविके आशंका छैक जे ई मच्छर हुनके सिाधिषान िकक कोनो कीडा छलैक। कुंडलिनी साधाना नीिासँ उपर होइत छै मने मूलाधार जागरण करैत साधक सहसार धरि पहुँिै छै। एकर मतलब ई जे जेना-जेना साधनाक जान उपर बढैत छै तेना-तेना अजानता नीिा

घटैत छै। जँ एहि कवितामे मच्छरके अजानता-दुगुर्णक प्रतीक मानी तँ ई सूचित होइए जे ओ नीचाँ कि धरि नहि पहुँचि सकल आ अपत्यक्ष रूपसँ ई देखबैए जे साधक केर साधना एखन दू कि धरि उपर नहि पहुँचल अछि मने साधक एखन विशुद्धि किपर जा कऽ अटकल छथि हुनका एखन आज्ञा कि ओ सहसार किक भेदन करए पडतनि। योगी सभहँक मोताबिक विशुद्धि कि कंठक पाछू होइत छै। आ एकरा भेदन कऽ देलासँ अपार उर्जा भेटैत छै। साहित्य केर दृष्टिसाबसँ देखी तँ साहित्यमे बिना रीढ बला सभ साहित्यकार बेसी भेटताह तेहन व्यवस्थामे प्रस्तुत कवि ई साबित केलथिहए जे हम रीढक हडडी मामिलामे पाचम किताना स्तरपर छी। योगक मोताबिक सासाधक आदमी मूलाधार किमे जीबि मरि जाइत छै तेनाहिते साहित्योमे साहित्यकार बिना रीढक हडडीक मरि जाइत छै।"रति सम्हार" कविता मैथिली भाषा मध्य विजातीय शब्दक घुसपैठके रेखाङ्कित करैए आ कवि ताहि लेल अपने घरक उदाहरण देलथि ई एकटा नीक प्रक भेल। अपना ओहिठाम तँ सभ अपने घरके बाचि अनका घरक उदाहरणसँ शुरु करै छथि। "नागफनी पंक्ति" एहन कविता मैथिलीमे लगातार एबाक चाही। प्राय: जीतिकातजीक बाद कियो एहि तरहँक कविता नै लीखि पाबि रहल छथि। ई कविता कवि ओ प्रकृतिक बीच मौन संवाद अछि। "हम कए रहल छी गीचिणि नृत्य" "हम कए रहल छी गीचिणि नृत्य" एहि कवितामे प्रयुक्त शब्द गीचिणि केर मतलब छै "देचि-देचिता" मने कवि देचि नृत्य कऽ रहल छथि मुदा किए? प्रस्तुत कवितामे कवि सुगंध, स्पंदन, तरलता आदि जमा कऽ रहल छथि, विशामितसँ नचि-नचि रचिबाक प्रेरणा लऽ रहल छथि। अधम-चाकृष आदिके बाहर फेकि रहल छथि आ कवि अपन आंतरिक आनंदमे मग्न छथि सचिभाचितिः एहन प्रचरिस्थितिमे कवि देचि-

नृत्य करताह मुदा की देिता नीके छलाह? जँ पौराणिक कथा सभ देखबै तँ देवी-देिताक छल-छद सभ सामने आबि जाएत तखन ई गीिाण नृत्य छल-छदसँ दूर कोना रहत। एकर विपरीत बहुतो एहन मानि भेटत जे छल-छदसँ दूर रहि नैतिकतामे देितोसँ आगू गेलाह। कविसँ आगह जे धरतीपर सहज-सरल मानि नृत्यक आयोजन करथि ओ।

"कविता लिखैत गेलहुँ" नामक कवितामे कवि अपन लिखबाक कारण दै छथि। ओना तँ सभ कवि कविता लिखबाक कारण मोनक शान्ति-आत्मसुख गनबै छथि। पस्तुत कविकि मनोभाि एहने सन छनि जे हम हलाहल पीबैत गेलहुँ आ कविता लिखैत गेलहुँ। एकटा स्थान कविताक रपमे ई साधारण कविता अछि मुदा जखन अहा एही कविता संगहक दोसर कविता "हम हत्या करय िाहै छी"सँ जोडि कऽ देखबै तँ सुखद अनुभूति हएत। आखिर जे कवि शुरमे हत्या करए धरि उताहुल छलाह से अंतमे आबि कहै छथि "पीबैत गेलहुँ सभटा हलाहल/ कविता लिखैत गलहुँ/ छोडैत गलेहुँ सभटा पमाण"। नकारात्मकसँ सकारात्मक दिस एबाक संकेत अछि। "दृष्टि"। राजस्थान उचि न्यायालयक न्यायाधीश महेश िंद शमा दारा बयान देल गेल छल जे मजूरक नोर पीबि मोरनी गभिती होइत छै। पक्षी विशेषज सभ एकरा गलत कहलाह। बहुत संभि जे शमाजी जनमानसमे पैसल भमके अपन बयान बना लेलाह। "दृष्टि" कवितामे कवि सेहो मोरनीक संबंधमे एकटा बात कहला जे ओ अपन पएरक कुरपता देखि खूब कनैत छै। आब भला केतमे किछुयो पक्षी विशेषज हेताह तँ कहियो एहिपर अपन मंतव्य देता। ओना कोनो िस्तुक सुंदरता व्यवस्था आ गहण करबाक क्षमतापर निर्भर छै आ ई बात सि छै से हमहूँ मानैत छी। "झूमझूम" ई कविता जतबे केकरो पयास,

संघषथ जीवनमनीषा आदिके देखार करैत अछि ओतबे सुविधा, षडयंत, ईर्ष्या आदिके सेहो। मुदा पश ई जे ई बात सभ जनैतो दीप असाधिान ओ आशस्त किए रहैए? "तीनटा टा कविता" कवि अपन पुतपर केन्द्रित कऽ लिखने छथि। "धन्य कुशहा" ई कविता 18 अगस्त 2008मे आएल कोशी बाढ़िपर अछि। कोशी बाढ़िपर बहुत साहित्यकार दारा लीखल गेल अछि ताही किसरीजक एकरो बूझू। एहि कविताक ममथ एिह बूझि सकत जे कि बाढ़ि देखनो हो आ से पायः सभ मैथिल देखने छथि। "बडकी माक बक्सा" कविता संभितः दाइ ि बडकी काकीपर रचित अछि। तेनाहिते "मा देलका ओलहन" माए केन्द्रित कविता अछि। पहिल कवितामे कवि अपन बिपन लेल औनाइत छथि तँ दोसर कवितामे माए केर ओलहनसँ हुनक रिना संसारमे कोना िवृि भेल तकर िणथ अछि। "टाइगर हिल पर सूयोदय" ई कविता भमण कविता अछि। मुदा अंत धरि अबैत कवि एहि कविताक माध्यमसँ अपन पिताक स्मरण कऽ लै छथि। "हमरा नहि छल बूझल" कविता मोह भंगक कविता अछि। से मोह भंग िहे जीिनक हो, सुख-सुविधाक हो। एहि कविताक अंतमे कवि एक बेर फेर अपन बिपन लेल औनाइत देखल जाइत छथि। "आयु, अंक, अभिलाषा आ जीि" कविता आशा केर कविता अछि। कवि कोनो हालतिमे िनष्क्रय नै रहए िहैत छथि। "अहा उठू, जागू" कविता कवियती पतिभा लेल अछि मुदा लागू हरेकपर होइत अछि। "विदा कालमे" ई कविता कवि अनाम मुदा विन्हार लेल लिखने छथि। कवि ओहि अनामके िन्है छथिन ओकरा बारेमे किछु सीकार करए िहै छथिन मुदा लीखि कऽ नै। ई कविता कविक वग-विशेषक कविता होइते सभहँक कविता अछि। सभहँक जीिनमे एहन समय आबै छै जखन ओ बहुत किछु कहए िहै छै मुदा से कहि नै पाबैत छथि। एहन

कविता मैथिलीमे बेसी चलखल जेबाक चाही। "समृद्धि बात अछि" कवितामे कवि समृद्धिसँ मैती करबाक सलाह दै छथि। कहै छथि "समृद्धिमे हम सभ/ बीतल घडीके फेरसँ जीबैत छी/ बेर-बेर जीबैत छी"। मुदा ई अनुभविक गप्प अछि जे अस्थिथा भेलापर समृद्धि बेसी जररी भऽ जाइत छै युकि मोकाबलामे। अतीतजीवी सेहो समृद्धिक बाते होइत छथि। "खाल्हस" कवितासँ पहने हमरा बझाकायत छल जे एहि संगह चकछु कविता दू भागमे बाहट देल गेल अछि जाहिमे ओकर पहिले भाग कारगर अछि। मुदा ई कविता "खाल्हस" एकै भागक छोट कविता अछि आ अपन अथर्थदेबामे समथर्थअछि। ई कविता कविक नास्तिक सरिक अछि मुदा कवि एहि शतर्पर आस्तिक बनि सकै छथि जे केकरो धािम्बाक संग हुनका अन्गाला जन्ममे सेहो भेटनि। एहि कवितासँ ईहो पता लिैए जे कविक अभीष्ट कवि लेल बहुत महतिपूणर्थछनि अन्यथा के अपन धाििबकताके छोडत। एहि कविताक दोसर अथर्थईहो भऽ सकैए जे जँ अभीष्ट पूरा हो तँ धाििबकताके छोडल जा सकैए मुदा एहि कवितामे आएल "धािम्बाक" शब्द कविताके नैबाक उजा दैत अछि। "दू बात" कवितामे एकटा मंि भोगी तँ दोसर एकात सेवी छथि। मंिभोगीक मोकाबलामे एकात सेवीक चकयाकलापसँ साबित होइए जे दोसर बेसी संविदनशील छथि आ असल कविता लेल इएह संविदनशीलता चाही। "बजारसँ घुरैत काल" जँ पाठक एहि कवितामे आएक शब्द बजारक बदला जीनि पढथि तँ अथर्विस्तार हएत। बजारक हिि जँ गूँह-मूत-घामसँ गन्हाइत अछि तँ जीनि चविमान कुकमर्थसँ। एहि कविताक अंत ओतेक समाधनल नै अछि। "जँ अहा कवि छी" नामक कवितामे कविक मंतव्य छनि जे ािािस्थिा अबाते शाचबिक तौरपर लोक कमजोर होइत अछि मुदा जँ चकयो कवि छथि तँ ओ मानसिक तौरपर बलगर भऽ जाइ छथि।

बहुत संभव जे एहन होइत हो मुदा मैथिली भाषामे कतेक तरहक पशपर मंथन करब उचित। ई कविता एकर संगह अंतिम कविता अछि।

२

मैथिली भाषाक परंपरानुसार विभक्ति सटबाक चाही, मैथिलीक सहोदरी भाषा (सहोदरी शब्द राजनैतिक बला नै)मे सेहो विभक्ति सटै छै,, एतए धरि जे गीता पेस, गोरखपुरसँ पकाशित सभ हिंदी किताबमे सेहो विभक्ति सटल रहै छै। पस्तुत संगहमे "पर" छोड़ि सभ विभक्ति मूल शब्दमे सटल अछि मुदा पता नै किए "पर"के छोड़ि देल गेलै। बहुत लोक मानै छथि (हमरा सहित) जे रचना सहज सरल भाषामे हेबाक चाही तँ बहुत लोक क्लिष्ट भाषाक पयोग सेहो करै छथि। ओना ई तँ मानि ते कहल जा सकैए जे क्लिष्ट भाषाक एकटा फायदा ईहो जे ओकरा बुझबाक लेल मेहनति करए पडैत छै आ अंततः ई अध्ययन पाठक-आलोचक सभ लेल नीक होइत छै। पस्तुत कविता संगहमे अधिकाशतः क्लिष्ट भाषाक पयोग भेल अछि। पायः एहन भाषा बला कविता संगह वा पद्य संगह बहुत कम पकाशित भेल अछि 1990 केर बाद (अपवादमे विजयनाथ झाजीक गजल संगह अछि जे कि 2008मे पकाशित भेल)। बहुत रास क्षेत्रीय उच्चारणक हिसाबसँ अछि आ कमसँ कम मैथिलीक हितमे अछि। बहुधा देखल जाइए जे कवि सभ अपन क्षेत्रीय उच्चारणके बिसरि केन्द्रीय उच्चारणपर बल देबए लागैत छथि (कारण जे हो) मुदा एहि संगहमे क्षेत्रीय उच्चारणके राखल गेल अछि। हरेक लोकमे किछु ने किछु गुण-अवगुण रहिते छै, कवि सेहो लोके होइत अछि तँ कविक रचनामे सेहो गुण-अवगुण रहबे करतै। पस्तुत संगहमे सेहो नीक-साधारण कविता दूनू अछि। किछु कविताके पुनलेखन कएल जेबाक चाही तँ किछु कविता

मैथिलीक चरिल कविता बना कऽ आएल अछि। गुण-अगिुण समेत ई कविता संगह तिथानक नै भविषयक अछि आ एकर अन्य पाठ साधारण बीस-पचीस बखक बाद संभि हेतै।

दुर्गानन्द मण्डल

सोनहगर

आधुनिक कथाकारक उत्तम शेणीक कथाकार शी नन्द विलास रायजीक सम्बन्धमे 'विदेह'क सह सम्पादक लिखै छैथ जे गामीण रचनाकार अपन पातक संगे-संग जीनि जीबै छैथ, संगे-संग संघषथ करै छैथ, संघषथक महत्व केबेहिसाबक तौरपर बुझै छैथ और तँएओ 'सम्बन्ध-बन्ध'क ख्याल करै छैथ, सदैति सम्बन्ध बना कऽ रहए िहै छैथ। ई मिथिलाक संस्कार छी। मिथिला अपन कोखिसँ सदैति एहेन वीरिरके जन्मल अपन पूत मानैत रहल अछि। ऐठाम लोक सम्बन्धके बहुत महत् दैत अछि। 'अपनेटा नीक'के कहियो नीक नहि कहैक इतिहास रहल अछि मिथिलामे। हँ! 'अपनो नीक' एहेन धारणा तँ अछिए। अही धारणाक अनुशरणमे मिथिलाक पसिद्ध रचनाकार डॉ. शिश कुमार पसाद एक उदाहरणकसंगआइ मिथिलामे ठाढ छैथ। कहब जे एहेन पसिद्धल अनुवादक शिशकुमारे बाबू भेला सेहो बात तँ नहि?ठीक! मुदा ई बुझि-सुझि कऽ कहबाक िहीं जे मैथिली साहित्यक अनुवाद विधामे कएल अधिकतम काजक इतिहास की अछि। सभ जनै छैथ जे पािरशमिक एिम् पुरस्कारक लेल कएल गेल अनुदित पोथीमैथिली साहित्यमे बेसी अछि। पाय: अनुवाद एसाइनमेन्ट लेल कएल गेलअछि। कहब जे शिशकुमारो बाबू भऽ सकैए ओही लेल लिखने नइ हेता तेकर कोन गारंटी? हँ, एकर दूटा गारंटी अछि। पहिल तँ ई जे निविर्वादयाक सहारे बनल सम्बन्धक बीिच मूल पोथीसँ अनुवाद करक लेल मैथिलीमे शिशकुमार बाबू स्वयं हृदयसँ तैयार भेला। आ 'ढिघलते हिमखंड' के 'पघलैत हिमखंड'क रूपमेसम्पूणथ पोथीके इच्छानुसार मनसँ अनुवाद केलैन अछि। आ दोसर गारंटी ई अछि

जे डॉ. शिव कुमार पसाद सिंहद्वारा मंचपिर बैसैबला गैर साहित्यिक रचनाकार सेहो छथिए। तहन एहनका सभपर, माने गैर योजनाबद्ध ढंगसँ साहित्य अकादेमीके संग देखबाहार रचनाकारसभपर भला 'पुरस्कारक लोभ' कखनहुँ उचित नहि बुझै छी। डॉ. शिव कुमार पसाद'सगर राति दीप जरय'सन मंच परहक किछु छैथ। जे मंच मात्र मैथिलिये नहि, समस्त भारतीय भाषा साहित्यमे असगरे अछि। ई बात हमरो बुझल अछि जे ऐ मंचक कल्पना पंजाबक एक मंचसँ कएल गेल अछि। मुदा हमर सबहक जे देह-हाथ अछि, खास कS नि मात्रयाक बाद, ओइ रूपमे तँ आरो असगर पड़िए गेल अछि।

मैथिली साहित्यगीत-कविता, काव्य आदिक लेल एकटा नि सुयश रचना 'सोहाँत-अनसोहात'रचनाकार डॉ. शिव कुमार पसाद आजुक समयमे आजुक पीढीक लेल बड सोन्हगर लागल, आ पाठकोके लगतैन। ई हमर आत्म विशास अछि। जइमे कविरि डॉ. पसाद अपन लेखनीसँ अनेकानेक, सभ तरहक रचना दS पाठक-पेमीक बीच अछप स्थान बनौलैन।

ओना, तिरहुतये डॉ. पसार हिन्दी साहित्यक विदान छैथ आ हरि पसाद साह महाविदालय- नामधारीमे हिन्दी विभागमे एसोसियेट पो. एवम् अध्यक्षपदपर सुशोभित। जइसँ आजुक पीढीके अपन जान दान दS समाज आ राष्ट्रक सेवा सेहो दS रहला हेन। सेवा मात नहि, अपितु अखन तिथान पीढी जे शाक्कक नामपर बौडा गेल अछि, जे जाएत केतए आ जेबाक केतए छै से जाने नहि, तैठाम डॉ. पसादजीक सारगर्भित जानसँ ओइ बोराएल पीढीके एकटा उचित दिशा भेटतै। ओना, ई अलग बात जे एखुनका शाक्षा पदतिसँ नौकरी मातेटा भेटत, रोजगार सृजन आ जान नहि, तैठाम डॉ. शिवकुमार पसाद अपन जान

दानसँ ऐ समाजक बीि जानोपदेश देबामे सफल बेकती छैथ। ई हमरा नीक नहाच्चा बुझल अच्छि। आ बुझलो केना नै रहत, हमहूँ तँ च्चामच्चीए माच्चपर रहै छी।

पस्तुत पोथीसँ पूथिडॉ. च्चाकिुमार पसादक च्चन्दी आ मैच्चली- दुनू भाषामे अनेकानेक रिना सभ पकाच्चात भेल अच्छि। जे अपने सभ पढनच्च हएब। एना ऐ दुआरे च्चखलौ जे पढनच्च हएब, जे नि च्चाच्चयाक समय अच्छि च्चकने। आब ओ समय गेल जे अहाँक रिना हम पढब तइले पच्चने मैच्चलीक च्चंट च्चाच्चयाक सम्पादकसँ फच्चआउ।

तिच्चान पच्चपेक्ष्यमे 'सोहात-अनसोहात'अपनेक बहुत सोहनगर रिना अच्छि, ई रिना सभ पाठक-बन्धुके सोन्हगरेटा लागत अनसोहात नच्च। च्चकएक तँ अपने बहुत नीक जतनसँ ऐ काव्य संगहक रिना केलौ अच्छि। जइमे छोट-कीण मुदा अनुकरणीय आ कणच्चाय रिना सभ संगहीत केलौ।

पोथीक आरम्भेमे रिनाकार च्चाच्चला धाम च्चख अपन गाम मोन पाडलैन आ नेनपना सेहो। पढलाक बाद थोडेकाल धच्चक लेल लागल जेना केतौ हेरा तँ ने गेलौ। जेतए लूखी, कबिच्चिया, मेना, पौरकी आच्च रहै छल मुदा अखन दशच्चो नदारत, अखन च्चफथ्पजेबा आ च्चमेन्ट-बालुसँबनल बेश ऊँकिगर कोठा-सोफाटा देखाइत अच्छि। तच्चना निच्चत रिनाकारक लेल डॉ. पसादक पोत्साहन जे च्चकछु-ने-च्चकछु च्चखैत जाउ...। नीक लागल। जे ऐ तरहे जे छपैत-छपैत छैच्चाये जाएब। एक च्चन लेखक बच्चाये जाएब। मंि आ इनामो भेटत...।

एक च्चस लेखक बच्चाये जेबै मंि आ इनामो भेटत..। तँए च्चकछु-ने-च्चकछु च्चखैत जाऊ..। तच्चना च्चामच्चीक च्चामच्चतामे च्चाषच्च कच्चितामे

च्लाकाक ऐ महापंकमे गामक च्लानगी लेटा रहल अच्छि कोचिंग, विदालय, कौलेजमे एक-एक जन लूटा रहल अच्छि च्लाकाक ऐच्छ महापंक...।

तिथ्वान च्लाकाक माध्यमसँ लूटाइत गामासिी सबहक आच्यथ्क दुदश्ा देखेबामे कच्वि सफल रहला अच्छि।

अच्छना ‘बौआक उबटन’सँ लऽ साँझ, ढोलकबोखार, छच्छ पाबैन च्लाख ठकुआ आ केरा सेहो मन पाडलैन।

रनिाकार दीप रनिाक मादे च्लाखै छैथ जे सगर राच्ला हम दीप जरेलौ तैयो घर अन्हारे अच्छि। च्लाका मेल विषयपर इजोत देलैन। तच्छना ‘मन पछताय’, ‘झूठ-फूसमे बाझल छी’च्लाएक से स्पष केलैन अच्छि। देख एलौ हम पटना,ओझराहैट, ठनकल फेर ठनका, च्लाखलैन तँ सुमीता सन नारीक चितण करब सेहो नै बिसरलाह।

रनिाकारक सरसता देखू जे फगुआआ फागुन च्लाखब सेहो नै बिसरला..! अपने तँ भाग खा पच्चयापर ओंघराएल छैथ आ कच्लायाँ रंग खेलक लेल एलैन। ऐ पकारक सभ तरहक बीहैन काव्य रनिा लऽ रनिाकार जाडक कनकनीसँ लऽ च्लानगीक झमेला, झूठ, भातक थारीसँ लऽ विदाक अथीधच्च च्लाख पाठक आ समाजके उच्चित बाट देखौलैन। ऐ लेल रनिाकार शी पसादजीके बहुत-बहुत धन्यादि आ साधुदि छैन। जे अपन रनिेक माध्यमसँ ओ आबए-बला पीढीक लेल तमसोमा ज्योच्लाथामय साच्लात करैक पचयास केलैन अच्छि। जे च्लानको अनसोहात कहा सोन्हगरेटा लगलैत।

बेस, अखन एतबे...।

मुनाजी

बीहनि कथा (मानकीकरण ओ तुलनात्मक पक्ष)

मैथिली कथा साहित्य मूलत: संस्कृत भाषा साहित्य सं अनुप्राणित भ'अपन पएर पसारने छल।एकर बीजारोपन विद्यापति झा दारा विद्यापतिक 'पुरुष परीक्षा' सं भेल छल।कालान्तर मे मैथिली कथाकार बाङला कथा माध्यमे पाश्चात्य कथासाहित्य सं परिचित भेला।तत्पश्चात मैथिली कथा लेखनक कथ्य,स्वरूप आ विषय परिमाणात्मक भ' मैथिली कथा साहित्य के नव दृष्टि देलक आ ओ संस्कृतक शब्द ,कथा/गल्प नामे चिन्हाइत रहल।पछाति प्रो. रमानाथ झा सदृश्य

विद्वान/आलोचक ,अंगेजीक प्रभावे एकरा अंगेजी मे Short Story आ ओकर अनुवाद ' लघुकथा कहि संबोधित केलनि।तहिया सं इ कथा/ गल्प ,रचना त' ओही नामे होइत रहल मुदा विधागत ' लघुकथा ' (Short Story) विधाक अन्तर्गत मूल्यांकित होइत रहल।आ ताहि प्रमाणामे मैथिलीक सब संग्रह पर अंगेजी मे Collection of Short Story अंकित भेटत।

तकर पछाति मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनि सेहो कथा/गल्प नामक रचना के लघुकथा विधाक श्रेणी मे राखि व्याख्या . करैत रहलाह।" संप्रति गल्प वा लघुकथा,उपन्यास सं अधिक लोकप्रिय भेल जा रहल ऐछ।तकर प्रबल कारण पाठक वर्गमे कय शक्तिक क्षीणता वा पलखतिक अभाव, से नै जानि।" --डॉ. जयकान्त मिश्र-मैथिली साहित्यक इतिहास(प्रकाशक- साहित्य अकादमी)ऐ परिच्छेओठक पछाति

अंगेजी साहित्यक विधाक पृष्ठभूमि मे ओकर विधा पारिवारिक अंग भ' स्थापित भेल। आगू ओकरा आओर फरिछबैत दुर्गानाथ झा शीश लिखै छथि--" आइ मैथिली साहित्यक एक मात उपलब्धि थिक लघुकथा(Short Story) पूर्वहि कथाकार लोकनि गल्प आ उपन्यासक बीच विधागत अन्तर नै बुझैत छलाह।मुदा आब इ स्पष्ट ऐछ।जाहि सं लघुकथा(कथा/गल्प नामे) विधागत स्वतंत्र परिचिति बना पओलक ऐछ।"--मैथिली साहित्यक इतिहास-दुर्गानाथ झा शीश।"

हमरा मैथिली परिभाषा निश्चित छात रहने मैथिली साहित्यक इतिहासक अध्ययनक अनिवार्यता छल। एहि अध्ययनक कमे मैथिली कथा के विधागत ' लघुकथा(Short Story)बुझबाक अभिज्ञान भेल। हम आश्चर्यचकित रही अगज सबहक चिन्हित लघुकथा विधाक मैथिली अतिरणक रूपे अंधानुकरण पर, ई की ?पहिने सं जे विधा विदिमान आ स्थापित ऐछ(कथा/गल्प नामे) ' लघुकथा(Short Story)।तहन ओइ विधाक दोहरीकरणक की खगता ?माने पिता आ पुतक एकहि नामे पुकार ! जहन की दुनूक चरित,पकृति आ क्रियाकलाप एक दोसराक विपरीत। फेर नकल कि बाइझरक अजानता थिकएक ? ओही अजानता कि अंधानुकरण सं पार पएबाक आ विधाक शुन्यता के भरबाक लेल अतिचरित भेल बीहनि कथा विधा (1995)।

सहयाती मंच,लोहना(मधुबनी)दारा भेल साहित्यिक बैसार मे सामूहिक रूपे सर्वसम्मति सं एहि विधाक अतिरण भेल छल। ऐ विधाक नाम की राखल जए ताहि पर बहसक पछाति शी राज दारा ताकल नाम- " बीहनिकथा" पर सर्वसम्मति सं स्वीकृति द'आगू बढाओल गेल।आ तहिया सं मैथिली कथा साहित्यक दू गोट विधा-पहिल,लघुकथा(Short Story)आ दोसर " बीहनि कथा(Seed Story)लिन साथ मे रहि

गेल।

25 बरख सं कछुआ िचाल सं िलैत बीहिन कथा विधा साहित्यक छद खरहा सं टपि अपना के विजेता कहेबाक पातता आब हासिल क' लेने ऐछ।जन्मक पछाित ठेहुनिया मे कतेको के सैािनक पटकिनया दैत डेगा डेगी बढ' लागल। तकर पछाित एकरा दबेाि/माथ्द मे गोडबा लेल बलकछु तथाकथित/सघिोषित विदान सक्रय भ' गेला। फलत:एकर िचाल बाधित होइत ठमकि सन गेल। सोझा मे ' एकला िलो रे' के उघैत करीब एक दशकक याता एकरा हेरेबा लेल िशि रहल।2010 मे पुन: इ कािन्ह उठेलक।आ तािह मे पहिला सं जेरगर समूह िन आँचर-पाथरक संग अंगेज पुन: सोझा आिन ठाढ़ केलिन।' विदेह , इ पािठक' बनल राजपथ आ सारथी भेलाह संपादक-.गजेन्द्र ठाकुर आ सहायक संपादक-उमेश मण्डल। ऐ एक दशकक भीठ पडल साहित्यक जमीन पर शी राजक ' बीहिन कथाक साहित्यक बीराडक बीहिन सं रोपिन भेल।तकरा हिरयरी अनलिन गाम-घर, पित्रकाक संपादक - शःरी रामभरोस कापिड भमर।आ ऐ तरहे शी राज भेलाह' ितसकिर ' बीहिन कथा(2003)सं एकर पिहल पकाशनक सिामी।

<u>बीहिन शब्दक उत्पित</u>

संस्कृतक ' बीही ' शब्दक अथथ होइछ बीज आ मैिथली मे बीहिन/बीहन/बीहैन सेहो ओही शब्दक मूलाथथमे पयुक्त।--प. भिनाथ झा

<u>बीहिन कथाक अथथआ पिरभाषा</u>

बीज/बीजम संस्कृत शब्द च्छयक।यथा-यज बीजै:सहस्ताक -महाभारत

कथा सेहो संस्कृत शब्द च्छयक।यथा-कथासच्चत्सागर ।

अथात् बीहच्चा कथा पूणथ्रा: संस्कृत शब्दक उत्पच्चा च्छयक।जेना-लघुकथा

मुदा साच्हच्चयक च्चधाक र पे जाि ी त' इ च्चधा मूलत:स्वतंत आ पूणथ र पे मैच्छयली साच्हत्य मातक च्चधा च्छयक।आयाच्चात/ नकल नै।

बीहच्चा माने बीज/बीया।जाच्हि मे च्चकास करबाक गुण च्चाच्हत होइछ।मुदा ओ अच्चकिच्चसत रहैत ऐछ।समय अएला पर च्चकिच्चसत होइत ऐछ।ओकरा मे एक सं अनेक होएबाक गुण रहबाक ि ाही।बीहच्चा कथा-एहेन कथा,जे अनेक कथा(कथा/उपन्यास)के जन्म देबाक क्मता राखए ओ बीहच्चा कथा भेल/हएत।अन्यथा नै।

ते बीहच्चा कथा मे च्चाष्कषथनै हेबाक ि ाही।---डॉ. भि ाथ झा

बीहच्चा कथा च्चधाक नामकरण कता शी राजक मतानुसार-

बीहच्चा कथा,ओइ बीयाक समान ऐछ जकरा मे झमटगर/पूणथगाछक संभाि ा हो।मुदा ओ गाछ पीपर/पाकैड नै,पौध र प मे हो।परञ्ि बोनसाइ नै।

पौध र प सं तात्पयथजे कथ्य/च्चाक्ो गसल मुदा शब्दक संख्ये सए सं डेढ सए धच्च हुअए।मुदा बन्हन मे बान्हल नै।

रि ानान्त च्चाकसगर (च्चास्तार देने) नै हुअए।च्चाष्कषथपाठक पर।

बीहन्नि कथाक विधि आ लोक प्रिय कथाकार, संपादक आदरणीय घनश्याम घनेरो ऐ विधा के परिभाषित करैत कहै छथि---

कोना बुझबै जे इ रचिना बीहन्नि कथा भेलै:--

(क)शब्दक मानक औसत सचि सौ हो

(ख) विषय मारक ,आ सोचिबा पर विवशि करैत हो।

(ग) कथ्य एहेन,जेना लगैत हो कथा/उपन्यास कि कोनो गदक सार हो।

(घ) कथा मे व्याकरणथनै हो।

कथा साहित्यक सशक्त हस्ताक्षर शी राजकुमार व्यास जीक विचारे-
(क) आकारगत छोट सं छोट हो

(ख) कथ्ये फरिछएल आ गसल हो

(ग) संपूणथगदक संभाविना व्याप्त हो

(घ) ऐ सं इतर, अव्यविस्थत रचिना फोक हएत।ओ बीहन्नि कथा नै।

<u>बीहन्नि कथा विधाक मानकीकरणक आधारभूत इकाइ</u>

गद साहित्य, मूलत: कथा विधाक मानकता तयकरणक आधार अंगेजी साहित्य ऐछ।अंगेजी साहित्यक अनुसार विशि भिन्नक कथा ,अंगेजीक Flash fictionक अन्तगथ व्याख्त ऐछ।इ फ्लैश फिक्सन छ: खण्ड मे विभाजित ऐछ जकर तेसर खण्ड टेलबा(Tellbra)क अन्तगथ मैथिलीक बीहन्नि कथा विधाक व्यायामकता सन्निहित ऐछ।

फ्लैश फिक्सन(टेलबा)पर आधारित बीहनि कथा मापनक महत्पूर्ण बिन्दू :-

01-कथ्य/शब्दक पुष्ट जाहि कथाक न्यूनतम शब्द स. 20 आ अधिकतम 150 हो।

02-कथा साहित्यिक मानकताक पालक हो।यथा कोनो संस्मरण वा शब्द संग्रह मात्र बीहनि कथाक श्रेणी मे नै राखल सकैछ।

03-कथा,एकटा बीजक कथाक पर्यादर्शक हो।अर्थात एहेन कथा जाहि सं कथा/उपन्यास आदिक सजर्नाक संभावना प्रबल हो।

04कथा, शिकस पर जा स्थिर नै हो। अन्त खूजल मुदा भावपूर्ण हो।

05-संपूर्णकथा कोनो संदेशप्रद वा सकारात्मक उद्देश्यक हो।शब्दक स्थूलकाय मात्र नै।

उपरोक्त मानकता पर ठाढ़ रचना बीहनि कथा विधाक रचनाक रूपे अपन जगह पेबा मे सक्षम भ' पाओत।तकर पश्चात मूल्यांकन लेखकक,पछाति संपादक ओ आलोचकक हाथ ऐछ।

"कोनो नव सफलता हासिल करबा लेल पुरान मे पैस' पड़त।,खंघार'पड़त।तहन परिमार्जित फल सोझा आओत।जे भविष्यक नव बात गढ़ि मोकाम धरि ल' जएबा मे सक्षम बना पाओत।'

एहि तरहे मैथिलीक लघुकथा विधा(कथा/गल्प)नामे लिखाइतक पछाइत

बीहनि कथा विधा िवशाक कथा मापदण्डे एकटा नि पिमान गढिक,मैिथली सािहत्य मे मैिथलीक अपन एक मात विधाक र प मे स्थािपत भेल।इ कोनो आन आयाितात/नकल,विधाक विधान्तरण ि नामान्तरण नै।सियं मे मानक सितंत विधा हेबाक पचिचि कायम केलक।

एिह पकारे मैिथली कथा सािहत्यक दू टा सितंत विधा अपन अिस्तत्व कायम क’ रखने ऐछ।पिहल-लघुकथा (Short story)जे कथा/गल्प नामे िलखाइछ।ठीक ओिहना जेना िक अंगेजीक Poetry,मैिथली मे ’काव्य’ नामक विधान्तगित-गीत,गजल,,कविता, हाइकु,कथाका आिद सितंत नामे/िकयाकलापे/ि वचाक गुणे अपन- अपन पचिचि बनौने ऐछ।मुदा विधागत सबटा काव्य पचािरक अंश ि अंग िथक।

<u>दोसर-बीहिन कथा(Seed Story)</u>

उपरोक्त दुनू विधा मध्य आओर कोनो िध/ अिध विधाक लेल जगाह ििल नै ऐछ। मुदा लघुकथा नामे बलधकेली मे िहन्दी लघुकथा विधाक नकल मैिथली अितरण के घोिसयेबाक असफल पयास ठाम ठीम क’ मैिथली सािहत्य के उकर बनेबाक षडयंत जारी ऐछ।इ भम ि दन्द ऐ दारे भेल जे िकछु मैिथली रिनाकार लघु कथा माने आकारे छोट कथा बूिझ नकल करैत रहलाह।ध्यातव्य महतिपूणि बात जे लघुकथा एकटा शब्द मात नै,ओिह नामक एकटा सितंत विधा िथक।जे मैिथली मे अदौ काल सं कथा/गल्प नामे लीखाइत पिहने सं स्थािपत ऐछ।आब तहन िीिर करी मैिथली सं इतर िहन्दी भाषा सािहत्यक अपन विधा " लघुकथा "क मैिथली अंधानुकरण पर।

कोनो व्यवहार,विषय,वौस्तुक गुणक अनुसरण/अनुकरण बेजए नै।मुदा अंधानुकरण कतेक उचित ?

मैथिली साहित्य मे विदमान " बीहनि कथा " विधा सं इतर सब विधा कोनो ने कोनो अन्य भाषाक विधा सं आयातित ऐछ।मुदा जत' सं आयातित भेल,ओइ मे आ मैथिली मे अपन मानकता वा पामाणिकता बनि केने ऐछ। हिन्दीक लघुकथा विधा जे सयिं मे आइयो मानक वा पामाणिक बनि नै भ' पाबि घडीक पेण्डूलम जका डोलैत रहल ऐछ।ओइ मे आइयो कते शब्दक वा कोन रचिना ओइ विधाट रचिना ऐछ की नै,तै पर मंथन चिलये रहल ऐछ।एते दशकक लेखनक पछातियो मूल्याकन मे लघुकथाक जगाह लघुकहानी सं जोइर व्याख्या होइछ।जतेक मुडी ततेक पीरी बला गप्प।एहेन अव्यवस्थित विषय/वौस्तुक अंधानुकरण ,हास्यास्पद आ चिक उठल्लूपन ? "अपने आँखि बगर रहैत, अन्हरा के सहारे बाट ताकब कतेक उत्कीणा बला बात।"

हिन्दी लघुकथा विधाक अंधानुकरणक पबल पक रहल हएत,हमर सबहक सामान्य ज्ञानक हिन्दी माध्यम।हम सब एकेडमिक ज्ञान गहण सामान्यतया हिन्दी भाषा माध्यमे केलहुँ।किताब,पत/पत्रिका क पाठनक भाषा हिन्दी रहलाक कारणे हिन्दी साहित्यक विषय-वस्तु पर प्रभाव सभाविक छल।ते हिन्दी साहित्यक संतान(विधा)के पोसपूतक रूप मेऑधि रूपे अंगेज लेब असभाविक नै।ओही देखाउसे वा नकल क'मैथिली मे लघुकथा संगह नामे 1972 मे आयल पहिल पोथी-" जे की ने से "--डॉ. हँसराजक।आ ,1975 मे तत्कालीन नतिुबया कथाकार डॉ. अमरनाथक " क्याका "।दुनू पोथीक रचिनाकार(आमुख मे)ऐ संगहक एको टा रचिना ,कोनो पत/पत्रिका मे

पकाश्यात नै हेबाट बात स्वीकारने छथ्यि।ऐ सं इ स्पष्ट ऐछ जे मैथ्यिली मे एकर कोनो अवस्तति नै रहै।इ तथ्यया के घटना/बात छैक जथ्यया मैथ्यिली सं इतर अन्य भाषा मे कथ्य/वाक्य मजगूत मुदा आकारगत छोट रचिनाक एकटा स्वतंत्र विधाकर पे/नामे सृजन भ' रहल छलै। यथा-संस्कृत -लर्घ्वी, हिन्दी-लघुकथा, पंजाबी-मिनी कहाणी/ कथाणि, उदुश्अफसाि, ओकिया-कुद्कथा... आदि।

मैथ्यिली मे हिन्दी विधाक अंधानुकरण क शुभारंभ क' चुकछु मैथ्यिली कथाकार सघियोध्यत विदान हेबाक दंभ पोसलथ्या।तकर करीब पचीस बरख धरि अंधानुकरण्यात लेखन सेहो सुषुप्त ि शुन्य रहल।पुन: 1997 मे लघुकथा संगह नामे दू गोट पोथी,वालालेख-तारानन्द वियोगी आ खण्ड-खण्ड जिनगी -पदीप बिहारीक आयल।से ताहि अस्थिा मे जाहि सं दू षिथपहिने(1995 मे)मैथ्यिलीक अपन एक मात विधा बीहनि कथा अतिष्वत भ' िकिल छल।ऐ विगत पचीस षिक्ष नमहर अन्तराल मे अंधानुकरण्यात हिन्दी लघुकथा विधाक मैथ्यिली अतिरण पर मैथ्यिली मे कोनो मानकता तय नै भेल छल।(आइ एकैसम सदीक दोसर दशक धरि नै भेल)।जेना पहिने मिथ्यिला मे सत्यनारायण भगिनक पूजन पर सुनता उपासक लिथ्य छल।तहिना मैथ्यिली रचिनाकार लघु कथा शब्द सुनि मात लघु कथा लिखबाक नकल करय लगलाह।जहन की हिन्दी मे लघु कथा शब्द मात नै,ओहि भाषाक एकटा स्वतंत्र विधा ऐछ।आ मैथ्यिली मे कथा/गल्प नामे लिखाइत लघुकथा विधा पहिने सं विदमान छल।आब नकल क' लिखल जाइ बला रचिना-जे बीस शब्द सं आठ सौ धरिक ऐछ।तखन पश उठैत जे कतेक लघु,ककरा सं लघु ?ऐ पर पकाश्यात कोनो तय मानकता नै छल(ऐखनियो नै)जाहि सं इ सुनिश्चित कएल जए सकए जे

कोन रचिना लघुकथा विधान्तर्गत स्वीकार कि अस्वीकार कएल जा सकए।पश्चिम कथाकार ओ इतिहासकार डॉ. मायानन्द मिश्र एकरा नकारैत लिखने छथि--" मैथिली मे लघुकथा नामे एक अन्य कथा लेखनक विकास भेल ऐछ जे समकालीन कथा/गल्प नै,अपितु चिटुकाक चोकट ऐछ।"- मैथिली कथाक विकास(संपादक- बासुकीनाथ झा) साहित्य अकादमी -2003

आधार हीन लेखने मठोमाठ हेबाक/कहेबाक परम्पराक संहिता मे किछु रचिनाकार लीन रहलाह।जहन कि बेसुरा तान सं पश्चिमी पेश्चहार गायक जका बिना मानकताक लेखन मे लीन रहनिहार अपना के पयोगधिदी आ पचिवादी त बुझनिहारक रचिना आ ओ तथाकथित विधा स्वयि: खारिज ऐछ।तात्के लेल अदखोइ-दिखोइ आ माथा पर्चीक खगते कोन?

हिन्दी विधाक मैथिली अतिरण लघुकथा नामक रचिना आइ धरि बसात मे बौआइत ऐछ।जमीन पर अनबाक कहियो कोनो वास्तुकी पयास नै भेल।ओ तथाकथित विधा/रचिना स्वति: खारिज होइत चिना शुन्य भ' गेल।किएक त' जहन जमीन पर उतरबाक पयास केलक तहन आधारहीन हेबाक कारणे सूपक भाटा सन ओंघराइत रहल किएक त' स्थिरताक आधार पहिने सं नदारद!किछु सिघोषित कि परपोषित विदान सब--" डाढि पाढि के ओकरा लक्ष्मण रेखा बुझ' लगलथिन,मुदा डाढि सोझ भेल की कि तकरा सं दूर धरि सरोकार नै।"पश्चिम रंगकमी शी कुणाल ,कथा पसंग लिखल अपन आलेखक अन्तिम अनुच्छेद मे लिखै छथि--"आब मैथिली मे लघुकथा नामे किछु रचिना सेहो देखाइछ,जे मैथिली साहित्य मे आधार हीन ऐछ।ते ओकर चिथिकरब व्यथथसन।"--अंचिका-रजतजयन्ती अंक(2008)संपादक-

अनलकान्त।

<u>लघुकथा नामक वर्तमान रचनाक भविष्य ?</u>

जेना अंगेज़ी मे पोएरी,मैथिली मे " काव्य ' विधा ऐछ।आ ऐ काव्य विधान्तर्गत--गीत,कविता ,गजल,कव्वाका, हाइकु आदि स्वतंत्र नामे आ स्वतंत्र अस्तित्व छैक।मुदा विधागत सब एकर्हि परिवारि "काव्य "क अंग छै।तहिना अंगेजी क शॉटस्टोरी विधा छै ,आ कथा/गल्प ओकर अंग।

मैथिली मे लघुकथा सं इतर दोसर कथा विधा छै " बीहनि कथा "(Seed Story),चलन्तीक अंधानुकरणे लघुकथा नामे सृजित रचना बीहनि कथा विधान्तर्गत गाह ऐछ।परञ्च बीहनि कथाक तय मानकता पर ठाढ होइ बला रचना मात।से ओ लघु कथा नामे होइ वा बीहनि कथा नामे।

<u>बानगी स्वरूप देखल जए डॉ. सत्येन्द्र झा जीक लघुकथा नामे दू टा रचना</u>

<u>इसकूल</u>

ओहि गाम मे एकटा दोकान नै छलै।तीन किलोमीटर जाय पडै छलै छोटो छीन चीज किनबा लेल।जे किओ कहियो दोकान फोलबाक साहस केलक ओकरा दोकान मे दोसरे -तेसरे राति चोरि भ' जाय आ तकर बाद दोकान बन भ' जाय।चोरि गामक नाम सं परोपटा मे जानल जाइत छल ओ गाम।मुदा नरेशक साहस कहू वा दु:साहस ओ बाहर सं आबि दोकान फोललक ओहि गाम मे।घर मे पिता आ पती विरोध कयलनि मुदा ओ ककरो नै सुनलक।दोकानक स्टाफक

रप मे सभ सँ सेसर ि र के रखलक।ओ ि र सेहो बार्चित छल जे जखने बेशी समान जमा होयत चक ि राक सभ चकछु ल' जायब।।नरेश तीन सए टाका ओक्ल ि रके दै छल।शहर सँ समान अनबाक हेतु नरेश ओही ि रबाके पठबै छल। कमशः ि रि कोन समान मे कते लाभ होइत छल सेहो धब बुझय लागल।

आइ ओक्ल दोकान मे समान भरल छल।आजुके राब्ला ि रबा अपन संगी सभहक संग ि चबक योजना बनौलक।जखन दोकान बनक' नरेश ि च्ल गेल तँ ि रबा अपन संगी सभहक संग दोकान मे घुसल।बोरा मे समान सब कसय लागल।एकटा संगी पुछलकै -" कते दामक समान हाथ लागल ?"

दोसर ि र कहलकै-"पा ि हजार सँ कम के नै हेतै।"

"मुदा एक्ल पा ि हजार मे तँ माल्लक के पा ि सयसँ बेशीक फयदा नै हेतै।साढे ि च हजार तँ मूलधन छै।"--ि रबा बाजल---फेर ओक्लमे हमरो तीन सय के ब्लस्सा हेतै।" ि रबाक मोन तीत भ' गेलै।ओ अपन ब्मात्र ि र सभके बुझबय लागल--ि ब त' तखने जायज होइछ जखन हमर हक छीन्ल क्यो अपन घर भरय,मुदा नरेश बाबू तँ ओतबे कमाइ छथ्य जतेक उर्चित अर्छ।ओ नाजायज लाभ कहा लै छथ्य?"

ि रबा ि च करबाक र्वि ि र बदब्ल लेने छल।संगी सभ ओकर बाणथ पर सहमब्ला व्यक्त कयलक।बोरा खोब्ल ि रबा सभ सामान के पब्लने जका सैतय लागल।नरेश एकटा कोन मे ठाढ भ' ई सभ देखैत रहल।ओकरा बि झना गेलै जे ओ कोनो दोकान नब्ल,एकटा इसकूल खोलने हो।

<u>र्वश्लेषण- </u> उपरोक्त र ि ना शब्द संख्ये नमहर ऐछ!माने टेलबाक

न्याधारित शब्द संख्या-150 सँ उपर।

कथ्य-पेरक,पंतितंक कथा समकक।पारम्भिक लेखनक करीब बाझल।

शैली- कथा बला,सेहो पूणर्थ नै।छेट सन।

ते बीहन्निकथाक पत्रिया सं बाहर ऐछ।

दोसर बानगी

मौअत्ति

ओ ईमानदार छल।ते लोकसभ ओकरा मारय छल।लोकसभ कहलकै- तोरा कुकुरक मौअत्ति मारबौ।ओ ुिपप छल,मुदा पसन।कारण- ओ मनुक्खक मौअत्ति नहि मरय ाहित छल।

विश्लेषण- इ रिना न्याधारित शब्द संख्या मे बान्हल ऐछ।

मुदा कथ्य - भाषण ा आदेशक हस्सा मात।

शैलीगत-निष्कषर्थपर पहुँा देल गेल छैक।

ते इहो बीहन्निकथाक हद मे नै रहि रहल।

उपरोक्त दुनू रिना--सत्येन्द्र कुमार झाक लघुकथा संगह-अहीके कहै छी(2007)।पृष - 30/31 सँ उि्त।

आब अही लेखकक इ तेसर कथा क बानगी नीा ऐछ जे हुनकर निका संगह-"जँ अहा सुनितहुँ"(2020) सँ ऐछ ।

भेटब डूबब

" अहाक जीनि मे सभ सँ नीक की लगैत अछि ?"

"अहाके भेटब...."

"आ अहू सँ नीक.....?"

" हमरा हेरा जएब...?"

उपरोक्त रचना लिखल त' गेल ऐछ लघुकथा नामे मुदा बीहनिकथाक मानकताक करीब ऐछ।

यथा-निर्धारित शब्द संख्या(अधिकतम-150)क भीतर कथ्य आ शिल्पके गसल। विस्तार विहीन।

ते इ रचना पूर्णतः बीहनि कथा विधाक अंग मानल जा सकैए।शेष विधेस सदृश्य।ठीक ओहिना जेना कोनो एक कक्षा मे पढैत सब विद्यार्थी परीक्षा समय समान पश हल करैछ।परिणाम मे न्यूनतम अंक 30% पाबय बला विद्यार्थी मात सफल आ शेष असफल घोषित होइत ऐछ।

आब एहने बानगी बीहनि कथा नामे लिखल रचना सँ....

डागदर साहेब-- मिथिलेश सिन्हा

बडड दिन सँ पती कहैत छलीह जे,हमरा पर किछु ध्याने नै दैत छी।खाली मोबाइल मे खुटूर-पुटूर करैत कविता-कहानी रचैत रहैत छी.....जखन बेमारी बढत,पलंग पकड़ि लेब...तखन सबटा कविताइ घुसड़ि जएत।

एहेन धमकी पर के नञि डरतै यौ?पती के होम्योपैथिक दवाई पर पूर्णविशास छैन्ह।ताँइ छला मंगल दिन शहरक बडड पुरान एगो बंगाली डागडर ठाम हुनका ल' गेलहुँ।

साझुक बेर,लगभग आठ-नौ गोट रोगी बैसल छलाह।डागदर साहेब बयस सँ लगभग अस्सी-पासीक हेताह।एकटा रोगी पर आधा घंटा पूछताछ करैत,अपन डीग डाग सँ रोगी आओर परिजनके अपन बडप्पनक ब्यस्सा कहैत समय आगा खीचि रहल छलाह।हमर नम्बर दोसरे छल,मुदा घंटा भरि डागदर साहेब लागल रहलाह।

अगल-बगल मे बैसल आन रोगी अकछय लागल।आब हमर नम्बर आएल।

" किनको देखाना हाय ?"

" जी,हमर पती के...।"

" हूँ,इधर आइए"

" हम हरि बाबूक बालक छियकहुँ.."

"ओहो,तुम इंजीनियर का बेटा है ।

ओ हमसे ही अपना इलाज कराता था..कैसा है ओ..?"--आन रोगी दीसन तकैत बजलाह।

" जी,ओ मरि गेलाह..."

" ओ गॉड...,तोमहारा माई कैसा है?"

"जी,ओहो मत्त्व गेलीह...।"

हमर जाबि सुत्ना क' बेि पर बैसल आन मरीज,बहना बना ससरय लागल....।---डागडर साहेब,आियथिचकत भाि सँ खन हमरा,खन रोगी सबके ससरैत देखय लगलाह।

विश्लेषण:- उपरोक्त रिना बीहत्ना कथाक मानक शब्द स. सँ बाहर ऐछ। कथा मे उप कथाक समाि श। कथ्य-त्वाक्रो कथाक छेट सन लघु कथा। -त्वाव्यलागन,अंक-38-39

त्वाह्मन--कल्पना झा

--माय गे! दादी त' हाथे सँ लपे लप त्वाल-िउर परसै छलीह,मुदा तो त' िम्मि सँ परसै छे ?

--धुरथ! तात्ल सँ की हेतैक ?

--नत्ल हेतैक की...?हमरो सबके नीक रस्ता भेटल।

--से की ?

--"इएह जे ' त्वाह्मन 'मे सेहो 'िम्मि ' लगाओल जा सकैछ।

त्वाव्यलागन---36-37

विश्लेषण:- इ रिना कथ्य-त्वाक्र आ शब्द स.मादे पूणथमुदा कथा सारक संग बन भेल।माने त्वाकस पर कसैत।ते इहो कथा त्वधागत झूस ऐछ।

बेटा त्वागम। --घनश्याम घनेरो

लाचिस लहास पुछलकै :

-- बेटा! नगर जागम?

-- हम तोहर बेटा नञि, कमचारी छी।

-- हमरा लेखा तोही बेटा।

-- छऊके! लोक के लोक सँ मतलब नञि रहलै तँ...

-- पञिने हमरा व्याख्सएबह आ की कुकूर के?

-- तोरा।

-- पञिने हमरे चकए?

-- एतेक मनुक्खता अखन छैक, तै!

-- मनुक्खक लहास के बादमे आ कुकूर पञिने कञिया सँ व्याख्सएल जेतै?

-- ई काज हमर अगिला पीढी करत।

व्याख्सया क' ठेलापर ढिबैत काल लहासक आँखि कुकूर चद्स छलैक।

इ रनिा ऐ चिधाक सब मानकता यथा- जाधाचत शब्दक भीतर। फरीछएल कथ्य आ गसल चाक्य मे जास्तार रञित पूणथऐछ!

अन्तत:मैथिली साहित्यक दू भाग भेल -लघुकथा (SHORT STORY)आ बीहनि कथा ,(SEED STORY)इ दुनू समानान्तर पे निरन्तरता बनौने रहत। शेष फोक मात। पछिने बीहनि कथा, सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ैत रहल। आ आब.....पीढी दर पीढी बढैत रहत।

पणि झा

च्बाि (लघुकथा)

“बाबी गै, घर पर च्बाि बैस गेने की होईत छैक?” रमण अपन बालमन मे उठल पश बाबी से पुछैत बाजल छल. भोरहे से गाम मे अनहोर उठल छल जे सीडी झा के घर पर च्बाि बैस गेलै य।

"बाउ रे जै घर पर च्बाि बैस जाइत छै ने तै घर मे भूत-पेत के िस होमय लागैत छै. च्कएच्क च्बाि बडढ अधलाह जीि होइत छैक, मुइल जीि के नोच्चि के खाइत छैक”.

रमण कइएक बेर च्बाि नामक ऐ च्विशालकाय पक्षि के घरक पछुआर मे बडका ताड गाछ पर बैसल देखने छल, आ गोटेक बेर बाबी संगे खेत च्बदस गेला पर देखने छल मुइल जानिर के मास नोिित.

ई घटना ओय समय के छल जखन रमण करीब छ: िषच्क बालक छलाह आ गाम मे रहैत छलाह. समय च्बातला पर रमण अपन बाबी आ माय संगे बाबूजी लग रह गाच्जयाबाद िच्ल आयल छल. रमण के बाबूजी गाच्जयाबाद के एकटा फैक्टरी मे अकाउंटेट के काज करैत छलच्खन. रमण के नाम एकटा पाइिट इस्कूल मे च्लखा देल गेल

छल. अब रमण 13 षिथ्के भ गेल छलाह. घर से इस्कूल करीब २ चकलोमीटर छलै. रमण रोज सायकल से इस्कूल जाइत छलाह. रास्ता मे एकटा ीर पडै छलै जै मे रमण देखैत छलाह जे लोक अपन मुइल पशु सबहक लहास फेक के िच्ल जाय छल. रमण देखैत छल जे अक्सरहा एकटा १६-१७ षिध्क छौरा ओय लहास के िमडा छोडाबैत रहे छल आ ओय लहास के च्ाि-कुकुर सब च्ाल के खाइय छल, बाद मे ओ छौरा ओय मे से बिल हडडी सब के सोहो अपना झोरा मे भच् लैत छल. ई देख के रमण के ओ छौरा के पच्ा बडड च्ान आबैत छलै, मुदा मोन मे च्ाजासा सेहो उठैत छलै जे "ओ एहन अधलाह काज चकएक करैत अच्छ?" ओय हडडी सब के ओ की करैत अच्छ? काकरो-काकरो से ओ सुनने छल जे चकछ लोक हडडी से कालाजादू करैत छैक? कतेको बेर रमण के भेलै जे ओकरा जा के पूछी जे "तो ई की करैत छहक आ ऐ काज से तोरा की भेटैत छह?" मुदा रमण के अपन आ ओकर िश-भूषा के अंतर सच्खन ओकरा लग जा क ओकरा चीषय मे बात करै के साहस करै से रोच्क दैत छल.

एक च्न रमण जखन इस्कूल जाय छल त ओकरा घर से कच्ाकबे आगा एकटा मोच्याइन के घर छलै, जे ३-४ टा माल जाल पोसने छल. ओ देखलक जे ओत चकछु गोटे ओच्ा छौरा के घेरने छल आ अंधाधुंध लच्येने छलै. भीड से चकछु सच्ाच्ात सिर सुनबा मे आच्ा रहल छल जे "मार सार के, ई च्ाि च्यकै, यैह बडड च्न से नजर लगउने छल फला के माल पर जाच् कारणे ओ मच् गेल. बहुतो के माल जाल पर एकर च्ाि बला नजैर रहैत छैक... आच् आच्।" माच् खाइत-खाइत छौरा अधमर भ गेल छल। ओ त च्ाक भेलै जे चकयौ पुच्ास के सूच्ित क देने रहै, तै पुच्ास आच्ा के भीड

के तीतर-बितर केलकै आ ओकर छौरा के जान बचलै.

किछु दिन बाद एकदिन रमण घर पर कोनो बात से रुसल छल. छुटी के दिन छलैक ओ नेहेनहो सोनेने नै छल. एहिना गंजी पैजामा पहिरने घर से परा गेल छल. घुमैत-घामैत ओकर चर दिस पहुँचलै. देखलक त ओ छौरा फेर नजैर एलै. बस फेर की, रमण ओकरा लग पहुँचलै. ओकरा पुछलकै हौ! तो एहन अधलाह काज किएक करै छहक? लोक के माल-जाल के काला-जादू से मारि दैत छहक, आ ओकर खाल खींचैत छहक! ओहि दिन एतेक मारि लागलह तैयो फेर यैह काज!

ओ कहलक मुइल माल-जाल के खाल-हडडी निकालनाइ हमर खानदानी धंधा छियै. मुदा हमसब किनको माल-जाल के मारि दैत छियै आ की नजैर-गुजैर लगा दैत छियै ई सौ टका अनगढ़ आरोप अछि हमरा सब पर. ऐ तरहे भीड अक्सरहा हमरा सब पर अत्याचार करैत अछि.

हमसब जे ई चमडा छोडा के ल जाइत छी, तकरा के सफैया क के आ फेर पोलिस आदि क चमका के रंग रंगक, जुता, बेल्ट, बैग, पसथआ कतेको आन आन शृंगारक आ उपयोगक वस्तुजात बनायल जाइत अछि, जे सभगोटे के भोग्य आ शुचि बुझना जाइत छैक. आ अहा की कहलियै हडडी.....हा..हा..हा.., यौ जी हडडी के हमसब कालाजादू के उपयोग नै करैत छियै. सभटा माल दिल्ली के शाहदरा-उस्मानपुर एरिया मे भेज देल जाइत छैक. जत ओकर सफैया होइत छैक फेर फैक्टरी मे कटाई-घिसाई-पोलिस क के रंग रंग के सजावटि के वस्तु जात, भगवान क मूर्ति, स्त्रीगण के शृंगार के लेल माला-

झुमका आदि कतेको आकर्षक वस्तुजात एहि हडडी सभ के बनायल जाइत छैक. बडका मेला आ मार्केट सब मे जे सस्ता सस्ता मे मोती माला सब देखैत छियैक, से कोनो असली होइत छैक! सभटा एहि हडडी सब के बनाओल जाइत छैक. से ई वस्तु जात छियौ हो, पंडित, मुल्ला, बभनाया-रार, साहेब-गुलाम सब के चमनेहगर लागैत छैक, आ हमरा सन के काज केनिहार सभके लेल अधलाह होइत छैक!

जौ हमरा सन के काज केनिहार नै होइ, आ ई गाय कुकुर नै होइ त अहाक ई समाज मुइल जानवरि के सडल लहास से पटल पडल रहत आ ओकरा उठेनाहर नै भेटत. हम सब छी त अहा सब ऐ सडाध से छुटकारा पाबैत छी. मुदा तैयो अहा सब हमरा सब के गाय कहि पताडित करबै, मौक़ा पाबिते लाछियेबै, मारबाई, आ इज्जत के त खैर छोडिये दिय!

आब रमण सब किछु बुझि गेल छल, पाचबर्षक यात्रा मे गाय के महर्ति, आ इहो बुझि गेल छल कि केना अहाक पहिरन-ओरहन सेहो अहाके कोनो लोक से संवादि करै मे आ ओकरा विषय मे वास्तविकता जानै मे एकटा अविरोधक जेका काज करै छैक. रमण के मोन पडलैन जे कोना गाधीजी भ्रमारण मे किसानक दुखदर्द के देख अपन सूट-बूट त्यागि देने छलाह, तै के बाद हुनका देश के अंतिम आ सबसे कमजोर तबका सब के समस्या समझ मे भागट नै रहल छलैन्ह.

एन.पी.एस. (लघुकथा)

सुनु, जल्दी से हमरा किछ खाय लेल द दिय, हमरा नटरि बौआ लग जेबा के अछि, एनपीएस खाता खोलाबय लेल" दोकान से घुसते विनोद बाशर अपन कनिया अंजना देवी से कहलखिन.

"एनपीएस! ई की होइत छै यौ?" अंजना देवी पत्युतर मे पुछलखिन.

ई पेशन खाता होइत छै जै मे लोक अपन कमाई के किछु हिस्सा जमा करैत रहै छै आ साइठ षिर्ख भेला मातर ओहि जमा पाई से लोक के पेशन भेटैत छै. ऐ मे आन खाता से बेसी ब्याज सेहो भेटैत छै जै से पैसा तेजी से बढैत छै

"ईह! तखन ऐ मे की बुधियारी? जकरा फाजिल पाई होय तकरा लेल ई सब चटमभा भेल, हमरा सब के कमाई त सभटा खेनाइ-पिनाई दर-दाईई,धियापुता के पढाई-लिखाई आ सर-कुटमैती मे लिा जाय य त ई एनपीएस मे पाई कत से देबै! धीया-पूता जे पढि लिखि गेल त फेर बुरहारी मे पेशन के कोन काज पडत. आ फेर सरकारो त कहाँदन ििि पेशन दैते छैक." पस्ताकि पकिाकार करैत अंजना बजलीह.

विनोद आ अंजना बाबुलाक एकटा गाम स पलायित भ क दिल्ली आयल छलैथ. पहिने गाम मे विनोद अपन पैतृक जमीन पर खेती-बारी क के गुजर करै छलाह. मुदा दिनानुदिन खेती-बारी के हालत खरापे भेल जा रहल छल, आमदनी घटल जा रहल छल. एही बीि ३ टा धियापुता सेहो नमहर भेल जा रहल छल, जकर पढाई-लिखाई दर-दाईई सेहो आब हिनका जोडय परै छल. माय-बाबू के मुइला के

बाद भैयारी सब सेहो व्यस्त भ गेल छलाह. ऐ परिस्थिति मे अंजलि हुनका पाछा पड़ि गेल छलीह जे ई खेती-बारी से गुजारा केनाइ मुश्किल य आ धियापुता के सेहो ई गामक विद्यालय मे पढाई-लिखाई ठीक से नै भ पाबि रहल अछि तै दिल्ली चलू ओतहि मेहनत मजूरी करब आ ओतहि रहब, अपना गामक आ हमर नैहरक कतेको लोक ओतय गेलाह य आ आई सुख से रहैत छैथ. खेत-पथार के बटाई लगा दियौक. खेत पथार आब के बटाई लैत छै आ जे लैत छै सेहो किछ ढंगक उपजा बारी कहा दैत छै. मुदा खेत-पथार के मोह कहिया तक. भगवान् भरोसे ई सब छोरहे पडैत छै अंततोगत्वा अपन स्त्री के बात मानि के एकदिन सपरिवार विनोद बाबू दिल्ली के बाट धेलाह.

मैथिल बाम्हणक लुरि-पुरि देह छल सेइत विनोद कोनो फैक्टरी मे काज करय मे नै सकलाह. अंततः हुनकर सासुर के एकटा लोक जे द्वारका के एकटा अपार्टमेंट मे एकटा छोटछीन किराना दोकान चलबैत छलाह से कहलकैन जे हमर अपार्टमेंट मे एकटा धोबी छल जे लोकक कपडा आइरन करैत छल ओ कतहु भागि गेलै य, त अहा कहि त ओतहि अहा के काज धरा दी. पहिले त भेलैन जे धोबी के काज कोना करब, मुदा मरता क्या न करता बला हिसाब छल. ओ काज शुरु केलाह. किछुए दिन मे हुनकर दोकान चलि पडल छल. आब महीना के १५-२० हजार टाका कमा लेत छलाह. अंजलि सेहो एकटा अपार्टमेंट मे २टा घर मे भानस बनबै वाली के काज पकडि नेने छलीह. आ ई सब पालम गाम के एकटा कालोनी मे किराया पर रहै लागल छलैथ. जिनगी ठीक ठाक कटै लगलै मुदा बचति के नाम पर हुनका सब लग ठनठन गोपाल छल. हुनके गाम के एकटा लडका नटवरि सेहो एही बीच मे दिल्ली आयल छलाह पढाई करै खातिर. कइएक बेर विनोद से कहने छल जे कका किछ

बुढाबयो लेल बिाउ,एकटा एनपीएस खाता फोल्ल ल्लय. मुदा सल्लखन विनोद हुनकर गप्प के हिा मे उडा दैत छलाह.

ओहो! हमहुँ कहा ल्लस्सा के फ्लैशबैक मे ल क िल्ल गेलहु अछ्छ. हं, त अंजल्ल के पल्लकार केर उतर दैत विनोद बजलाह जे सरकारी पेशन के आशा लोक कल्लया धल्ल राखत! आ ओहुना ओ एकदम से ल्लदान लोक सब लेल थीक. हम ल्लये मनाल्ल जे बुढारी धल्ल हम ल्लदान रही. आ रहल बात धीया-पूता के पल्ल ल्लख जेबा के बाद बुढारी के कोन चिंता करबाक, त यै, हमहु पल्लने यैह सोिति छलहुँ, मुदा आई हमरा संगे एकटा घटना जे भेल तकरा बाद हमर जान फुल्ल गेल अछ्छ.

"एहेन की भेल अहा संगे आई? " अंजल्ल पुछल्ल

हे हम जै बाटे दोकान पर जाय छी, ओल्ल रस्ता मे एकटा लालबती पर सबल्लन एकटा बुरहा गाडीिला सब से भीख मागैत रहैत छै. कपडा लता आ िशभूषा से ओ ल्लक पल्लिरक लागैत छल, तै हमरा मोन मे डेली ल्लजासा होइत छल जे कोन पल्लल्लथल्ल भेल हेतै जे ई बूढा के भीख माग पडैत छैक. आई हमरा नै रहल गेल त हम बुरहा से पूछ्छ बैसलहुँ जे कका की बात जे अहा के भीख मागे परै ये.

ऐ पर ओ बुरहा कहै लागल जे ओ पल्लने एकटा पाइिट नौकरी करैत छल. अपन बेटा के खूब मोन से पढेलक -ल्लखेलक बेटा इंल्लल्लयर बल्ल गेल. वीिह दान भेलै. फेर बेटा-पुतहु दुनू अमेल्लका िल्ल गेल नौकरी करय लेल. बुरल्ल पल्लनने सिगिथसी भ गेल छलीह. तै बेिरे बुरहा एकसरे एतय रल्ल गेल छलाह. बाप-बेटा ल्लली के शुरआती मे दारका मे एकटा छोट छीन फ़्लैट ल्लनने छलाह ताल्ल मे ओ एकसर

रहैत छैथ. अपन सभटा कमाई ओ घर लिाब, बेटा-बेटी के पढाई कीिह आ ई घर मे खिथक देने रहथन तै एकाउंट पर कोनो पाई नै. पहलने बेटा बीि बीि मे पाई भेज दैत छलैन्ह मुदा किछ मास पहलने कोनो बात पर बेटा संगे कहा-सुनी भ गेलै तकरा बाद बेटा फोन केनाइ छोडने छैन्ह आ पाई सेहो नै पठा रहल छैन्ह. अरोसी-पडोसी आब, के ककरा देखैत छै आ कतेक िदन! इहो अपन अपन ईड छोडने बेटा से बात नै केलाह. रहबाक कोनो कमी नै मुदा खैबा लेल जे पाई िछल ओहो लेल अपन ईड मे ओ भीख मागै लागलाह अछ.

हम हुनका कहलयैन जे कका अहा िछल त एकटा उपाय क सकैत छी अहा ऐ मकान के किराया पर िढा िदयौ आ हमर कालोनी मे सस्ता मे किराया पर मकान ल के रहु आ जे पाई बित तै मे खेनाइ पीनाई भ जैत. जौ मोन बनै त हमरा कहब, हम मकान खोजने देब.

ई कहने हम आगा बढ़ गेलहु मुदा हमरा बेर बेर हुनकर साथहल मोन पडै लागल आ सिइत हम मोन बना नेने छी जे नटिर बौआ से कहने के ऑनलाइन एनपीएस एकाउंट खोलबा लेब, आ सब महीना मे हजार-दू हजार-पािसौ जैह हेतै से एनपीएस खाता मे जमा करब. ई कहने विनोद भूजा के अंतम कौर मुंह मे घोटने पानी पीबा के घर से बहरा गेलाह.

इित.

डॉ. बि शिर झा

संस्मरण

अिकाश पाप्त कएलोपरान्त हम बोझ तरक दूबि जका पडल रही। साहित्यिक अन्धार मे रहलोपरान्त किछु नहि बुझबा-पढ़ि रहलहुँ। जे गद-पद रिना छल ओकरा सहेज कऽ रखने रही। शी उमेश मण्डल एक चिकित्सक रपमे हमरा ओहिठाम बजाओल गेला। हुनकर तजुरबा तेहन सटीक छल जे निजात स्वाशुक काया-कल्प सावित भेल। तहियासँ हमरा परिवारमे हुनका डॉक्टरक रपमे समादृत कएल गेल।

एहि तरहे समय बितैत गेल। हुनकर पिताजी शी जगदीश पसाद मण्डलजीक बहुत रास पोथी पढबाक अिसर सेहो भेटए लगल। कमश: सम्बन्ध बढ़ैत गेल।

मैथिलीक एक ससक्त पहरी उमेशजी हमरासँ किछु बानिध ओ सफूट कविताक माग कएलनिह। हम हुनका समर्पित कऽ अपनामे उत्साह ओ दबल स्फूणाक जागत करबाक षि ामे छी।

हम उमेशजीक दीघथजीिनक कामना करैत छियनिह।

अस्तु..!

विगत जीिनक झाकी-

हम जखन नेना रही तँ बुढ-पुरानक मुहसँ सुनैत रही जे हटनी गाम बड उपजाउ अछि। एहिठामक गाछी-बिरछी अित सघन छलैक। हमर पितामह बाबू पसाद झा षिाि धमथक पालन करैत घरसँ फराक बुढ़िया पोखरिक महारपर कुटी िनाय रहथि। हुनक भोजन, माइनजन काका

बनाबथि आ दुनू गोटए भोजन करथि। कालक्रमे हुनक असिमान भेलापर पिताजी ओ पित्ती भाइक भैयारी रहलन्हि। खेतीक कार्य हमर पिताजी देखथि। माल-जालक कार्य पित्ती अनन्त झाक ऊपर संगहि जेष्ठ भाई उग्र मोहन झा मधुबनीमे अधिकांश समय बितबैत रहथि। हठात् कोसीक प्रकोप एहन भेल जे हटनीक रूप साफ बदलि गेल। ऊपजा-बाड़ीक जगह काश-पटरेक बाहुलता सर्वत्र देखाए लगल।

हमर मातृक भगिनीपुर नरुआरमे स्व. लिदेवि पाठकक तीन भाइ भैयारीक बीच छल। मझिला नाना स्व. भुटकून पाठक अनन्य शिव भक्त छलाह। हुनकर सहृदयता हमरा मायक प्रति विशेष रहलन्हि। हमरो बचपनक अधिकांश समय नरुआरेमे बितल। मामा स्व. राजकान्त पाठक ओ ममियौत दशरथ पाठक संगहि मामा शिवनाथ पाठक हमरा पिताजीक गृहस्तीमे महती योगदान रहलन्हि। समय-समयपर हर-बरद ओ हरवाहि पठाए खेतीमे मदैत करथि।

संयोगवश, 1955 ई.मे कोसीक तटबन्ध बनल। हटनी प्रभृति इलाका पुनः जलमग्न भऽ गेल। परिस्थितिक भूमि जलमग्न रहल। एहन परिस्थितिमे गाम-घरसँ लोक भागि कए कलकत्ता, जलपाईगुरी, दिनाजपुरइत्यादि जगहक भ्रमण कए रोजीक जोगारमे लागि गेल।

मोन अछि हटनीसँ प्रत्येक दिन 5 मीलक दूरी तय कए डेढि हाई स्कूल अबैत रही। ओतहिसँ मैट्रिक प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलहुँ। आर्थिक परिस्थिति लचिर रहबे करए। पिताजी खेती-बारी कार्य आरम्भ कएलन्हि। हमहूँ गाम आबी तँ हमहूँ ओहि काज सभमे सहयोग करियन्हि।

रामानन्द बाबू भूगोलक शिक्षक कहलन्हि जे भूगोल विषय अबस्स

राखू। राम कृष्ण महा महाविद्यालय- मधुबनीमे भूगोल विषयक अंगीकार कएल। भूगोलमे पत्राषा तँ भेटल मुदा व्यथथभेल। स्नातक पत्राषा भेलापर नेपालक तराईमे एक हाई स्कूलमे च्छाक्क भेलहुँ। तीन षिथ धच्च ओतए समय बताउल। पित् अपन मातृ भाषा- मैथ्यलीमे सतिंत छातक रपमे परीक्षा देलहुँ। हमरा सभक केओ मददगार नच्छ तँए स. रमानाथ झाजी च्चतीय गिथदेलच्छ। मुदा माकथ56% छल तँए जखन कमीशनमे उपच्चथत भेलहुँ तँ स. गुरिरि बुद्धिधारी बाबूक आशीिद ओ तात्कालीन एस. आर. अहमद ियरमेन छलाह। हमरा अनेक तरहक पश पुछलच्छ आ हमर पशोतरसँ संतुष भए हमर नाम सेिा अयोग दारा च्चामथ्यी कॉलेज च्चामथ्यी अगसाच्चत कऽ देल गेल। स. रामसेकि च्चांह तात्कालीन पधानाियथहमर च्चयुच्चत कऽ स्थायी हेतु अगसाच्चत कऽ देलच्छ। 12 अगस्त 1972 ई. तक यथाति हमरालोकच्चा कायरत् रही। 1980 ई.मे तृतीय िरणमे डॉ. जगनाथ च्चाश मुख्य मंती रहच्छ ओ च्चामथ्यी कॉलेजके सरकारी सूिीमे साच्चाल कऽ देलच्छ। तच्छयासँ हमरो लोकच्चाक आच्छ्यक च्चथच्चा सुधरए लागल। 36 षिथधच्च एच्छ महाविद्यालयमे सेिा देलहुँ। अन्तमे पधानाियच्छ कुरसीसँ 15 माि2009 ई.मे अिकाश पाप्त कएल।

सम्पच्चा कॉलेजमे अनिक शेय पो. गोविन्द शरण च्चांह ओ च्चनेश पसाद च्चांहके छच्छ, जच्चाकर आभारी हम एखनहुँ छी। मैथ्यलीमे स. जय गोविन्द झा विभागाध्यक रहच्छ। हमरा लोकच्चाक पयाससँ मैथ्यलीमे आनसच्छ पढाइ िलू भेल आ पथम बैिमे छह गोट छात मैथ्यलीमे पच्चाषा त भेला। बादमे जय गोविन्द झा पधानाियथभेला तँ मैथ्यलीक पूरा भार हमरा कान्हपर पडल।

हम समय-समयपर आकाशिणी दरभंगासँ सेहो 1982 ई.सँ

सािहत्यक िातामे भाग लैत रहलहुँ। सिथ पथम जखन हमरा आकाशिाणी दरभंगासँ पसाणक हेतु बजाओल गेल तँ असमंजसमे पिड़ गेल रही। हठात् शी िनदनाथ िमश 'अमर' जीक समरण भेल। हम जामथीसँ दरभंगा गेलहुँ। िमसर टोलमे हुनकर िािस स्थानक पता िलल। हम जाइत देरी हुनक िरण समशथकएल। अहाित भए पूछलिनह- अहाक नाम-पित िय? हम कहिलयिनह- 'बिशिर झा नाओं छी, जामथी महािविदालयमे मैिथली िविभागमे सहायक छी। हमरा आकाशिाणीसँ पसारणक हेतु पत पापत भेल अिछ। हम तँ कोरा कागज छी तँए अपनेसँ भेट करए आएल छी। बड सनेहसँ हमरा बैसा कए कहलिनह जे समय साधािधत रहैत छैक, तँए िविषय-िसतुक उदोष संके9मे करब। कोिशश करब जे आिज पष हुअए, घबडाएल सन निह बुझना जाए। जाउ अहाक पथम-पसारण सफलक संतोष पद रहत...। हम हुनका सिनेह नमन करैत जामथी एलहुँ। हमर पसारण ठीक रहल। लगातार 16 िषथधिर आकाशिाणीसँ िताकारक रपमे हमर पसारण होइत रहल।

सािहत्यक अिमार िि एखनहुँ अिछ। बोझ तरक दूिब जका छलहुँ, संयोगसँ उमेश मण्डलजी हमरामे सफूितथजगाओल आ हमर रिनाके उजागर करबाक अथक शम कएल,फलाफल आइ अपने लोकिनक हाथमे 'िािन्ध-िाकुञ' अिछ। संगिह काव्यक एक पोथी सेहो हुनका दारा मुिदत भए रहल अिछ। 'िािन्ध-िाकुञ'अपनेक समक अिछए तँए तत्सम्बन्ध िकछु कहब आिश्यक निह, अपनिह लोकिन तािहपर िििार करब।

पूनम झा, कोटा, राजस्थान

बीहनि कथा- 'कुर्सी'

उपनयन क घर पाहुन परख सब आबि रहल छलखिन|चन्दनू बाबू (जिनकर बच्चा के उपनयन छैन्ह) 22 साल सं बाहरे रहै छैथ|गाम पर भाय सब रहै छथीन|आई त भरि दिन मडबा पर सबटा बाँध हेबाक छै|टेट बला कुर्सी बाहर बेसी आर अंगना मे कम लगा क चलि गेल|चन्दनू बाबू कछु घर सब सं कुर्सी आनि क अंगना मे लगा देलखिन ।

किछु देर मे भैया एलखिन आर अप्पन कुर्सी बाहर देखि क बरबराइत--"ई कुर्सी के बाहर ध देलकै ?" से कहैत दुनू कुर्सी उठा क घर मे राखि एलैथ ।

ई सब तमाशा चन्दनू के कनिआया 'रानी' देखैत छलीह ।

ओ सोचि लगली 'जखन हम दुरागमन क कय आयल छलहुं त एहि घर क केहन व्यवस्था छलै|अही भैया के बेटी सब हक बियाह आर पाहुन सबहक स्वागत मे हमर नैहरक कुर्सी, टेबुल एते तक की बेटी जमाय हमरे कमरा मे रहै छलैन्ह|हमर सब टा फनीचर व्यवहार क कय तोड़ि देलैन ।

एतेक काज भेलै ठीको नै करेलैथ आर आई हमर बेटा के उपनयन मे पाहुन के बैसs लेल कुर्सी सेहो देबय मे तकलीफ छैन्ह ।

गौर करय बला बात ई छै जे भैया के स्वल्प संस्कार के कारण एखन किछु उठेनाई मना सेहो छलैन|तखनो ...।

नागेश कुमार पेचलात आशुतोषक- शीरामचिरतमानस

आशुतोष [kumarnagesh1008@gmail.com]

शीरामचिरतमानस

शीहिर:

शीरामचिरतमानसक विषय कम

मंगलाचरण। गुर वन्दना। बाम्हण संत वन्दना|खल वन्दना|संत असंत वंदिना|रामर पसँ जीमातक वन्दना|तुलसीदासजीक दीनता आओर रामभक्तिमय कविताक मिहमा|कवि वन्दना|िवल्मीकि, विद, बम्हा, देिता, िशि, पािर्ती आिदक वन्दना|शीसीताराम धाम पिरकर वन्दना|शीनाम वन्दना आओर नाम मिहमा|शीरामगुण आओर शीरामचिरतक मिहमा|मानसिनमाणक ितिथ|मानसक र प आओर माहात्म्य|याजिल्क्य भरदाज संिाद आ पयाग माहात्म्य|सतीक भम, शीरामजीक ऐशयव आओर सतीक खेद|िशिजीदारा सतीक त्याग, िशिजीक समािध|सतीक दक यजमे जायब। पितके अपमानसँ दु:खी भय सतीक योगािग्नसँ दहन, दक यज िवधिंस|पािर्तीक जन्म आओर तपस्या, शीरामजीक िशिजीसँ िििहके लेल अनुरोध। सप्तिषयलोकिनक परीकामे पािर्तीजीक महति|कामदेिक देिकायके जायब आओर भस्म होयब|रितके िरदान|देितालोकिनक िशिजीसँ िििहक लेल पािर्ना करब, सप्तिषयलोकिनक पािर्ती लग जायब, िशिजीक िििचत बराित आओर िििहक तैयारी|िशिजीक िििह ष िशि पािर्ती संिाद, अितारके

हेतु|नारदक अभिमान आओर मायाक प्रभाव|विश्वमोहिनी स्वयंवर, शिवगणसभके आ भगवानके शाप आओर नारदक मोह भंग|मनु शतरूपा तप एवं वरदान|प्रतापभानुक कथा|रावणादिक जन्म, तपस्या आओर हुनक ऐश्वर्य आ अत्याचार|पृथ्वी आओर देवतादिक करुण पुकार|भगवानक वरदान|राजा दशरथक पुत्रेष्टि यज्ञ रानीसभके गर्भवती होयब|श्रीभगवानक प्राकट्य आओर बाललीलाक आनन्द|विश्वामित्रक राजा दशरथसँ राम लक्ष्मणके मागब|विश्वामित्र यज्ञक रक्षा|अहल्या उद्धार|श्रीराम लक्ष्मणसहित विश्वामित्रक जनकपुरमे प्रवेश|श्रीराम लक्ष्मणके देखि कय जनकजीक प्रेम मुग्धता|श्रीराम लक्ष्मणक जनकपुर निरीक्षण|

पुष्पवाटिका निरीक्षण, सीताजीक प्रथम दर्शन, श्रीसीतारामजीक परस्पर दर्शन,|श्रीसीताजीक पार्वती पूजन एवं वरदानप्राप्ति आ राम - लक्ष्मण संवाद|श्रीराम लक्ष्मणसहित विश्वामित्रक यज्ञशालामे प्रवेश|श्रीसीताजीक यज्ञशालामे प्रवेश|बन्दीजनसभद्वारा जनकप्रतिज्ञाक घोषणा|राजासभसँ धनुष नहि उठब, जनकक निराशाजनक वाणी|श्रीलक्ष्मणजीक क्रोध|धनुषभंग|जयमाल पहिरायब|श्रीराम लक्ष्मण आओर परशुराम संवाद|दशरथजी लग जनकजीक दूत भेजब, अयोध्यासँ बरियातक प्रस्थान|बरियातक जनकपुरमे आगमन आओर स्वागतादि|श्रीसीता - राम - विवाह|बरियातक अयोध्या लौटब आओर अयोध्यामे आनन्द|श्रीरामचरित सुनब गायबक महिमा ।

अयोध्याकाण्ड

मंगलाचरण|रामराज्याभिषेकक तैयारी, देवतालोकनिक व्याकुलता तथा सरस्वतीजीसँ हुनक प्रार्थना|सरस्वतीक मन्थराक बुद्धि फेरब|कैकैयीक कोपभवनमे जायब|दशरथ कैकेयी संवाद आओर दशरथ शोक, सुमन्त्रक महलमे जायब आओर ओतयसँ लौटिकय श्रीरामजीके महलमे

भेजब|शीराम कैकेयी संवाद|शीराम दशरथ संवाद, अधिविस्सलोककक विषाद, कैकेयीके समझायब|शीराम कौसल्या संवाद|शीसीता राम संवाद|शीराम कौसल्या सीता संवाद|शीराम लक्ष्मण संवाद|शीलक्ष्मण सुमता संवाद|शीरामजी, लक्ष्मणजी, सीताजीक महाराज दशरथ लग विदा मागय जायब, दशरथजीक सीताजीके समझायब|शीराम सीता लक्ष्मणक निगमन आओर नगर काविस्सलोककके सूतल छोड़कय आगू बढब|शीरामक शृंगवेरिपुर पहुँचब, कषाद दारा सेवा|लक्ष्मण कषाद संवाद, शीराम सीतासँ सुमन्तक संवाद, सुमन्तक लौटब|केवटक पेम आओर गंगा पार जायब|पयाग पहुँचब, शीराम भरदाज संवाद, यमुनातीरकाविस्सलोककक पेम|तापस पकरण|यमुनाके पणाम, निविस्सलोककक पेम|शीराम वाल्मीक संवाद|कचतकूट मे कास, कोल भीलसभक दारा सेवा|सुमन्तक अयोध्याके लौटब आओर सचिव शोक देखब|दशरथ सुमनत संवाद, दशरथ मरण|मुक्त विसष क भरतजीके बजाबय लेल दूत भेजब|शीभरत शतुधक आगमन आओर शोक|भरत कौसल्या संवाद आओर दशरथजीक अन्त्येष्टि कया|विसष भरत संवाद, शीरामजीके लयबाक लेल कचतकूट जयबाक तैयारी|अयोध्याविस्ससभसक्हत शीभरत शतुध आदक निगमन|कषादक शंका आओर सावधान|भरत कषाद मलन आओर संवाद एवं भरतजीक आ नगरकाविस्ससभक पेम|भरतजीक पयाग जायब आओर भरत भरदाज संवाद|भरदाजदारा भरतक सत्कार|इन्द्र बृहस्पक्त संवाद|भरतजी कचतकूटके मागमे|शीसीताजीक स्वप्न, शीरामजीके कोल करातसभकेदारा भरतजीक आगमनक सूचना, रामजीक शोक, लक्ष्मणजीक कोध|शीरामजीक लक्ष्मणजीके समझायब एवं भरतजीक महिमा

कहब|भरतजीक मन्दाकिनी स्नान, चित्रकूटमे पहुँचब, भरताक्दि सभलोकनिक परस्पर संलाप, पिताक शोक आओर शाद|निषादसलोकनिदारा भरतजीक मण्डलीक सत्कार, कैकेयीक पशाताप|शीवसिष्ठ जीक भाषण र शीराम भरतादिक संवाद|जनकजीक पहुँचब, कोल किरातादिक भेंट, सभलोकनिक परस्पर संलाप|कौसल्या सुनयना संवाद, शीसीतजीक शील|जनक सुनयना संवाद, भरतजीक महिमा|जनक विसष्ठादि संवाद, इन्द्रक चिन्ता, सरस्वतीक इन्द्रके समझायब|शीराम भरत संवाद|भरतजीक तीर्थ जल स्थापन आ चित्रकूट भ्रमण|शीराम भरत संवाद, पादुका प्रदान, भरतजीक विदाई|भरतजीक अयोध्या लौटब, भरतजीदारा पादुकाक स्थापन, नन्दिगाममे निवास आओर शीभरतजीक चरित्र शवणक महिमा ।

अरण्यकाण्ड

मंगलाचरण|जयंतक कुटिलता आओर फलपाप्ति|अत्रि-मिलन एवं स्तुति|शीसीता-अनसूया-मिलन आओर शीसीताजीके अनसूयाजीक पातिव्रतधमवकहब|शीरामजीक आगू पस्थान, विराध-वध आओर शरभङ्-पसंग|राक्षस-वधक पतिज्ञा करब|सुतीक्ष्णजीक पेम, अगस्त्य-मिलन, अगस्त्य-संवाद, रामक दण्डक-वन-पवेश आओर जटायु मिलन|पञ्चवटी-निवास आओर शीराम-लक्ष्मण-संवाद|शूर्पणखाक कथा, शूर्पणखाक खर-दूषण लग जायब आओर खर-दूषणादिक वध|शूर्पणखाक रावणके कहय जायब, शीसीताजीक अग्नि पवेश आओर माया सीता|मारीचपसंग आओर स्वर्णमृग रूपमे मारीचक मारल जायब|शीसीताहरण आओर शीसीता-विलाप|जटायु-रावण-युद्ध|शीरामजीक विलाप, जटायुक पसंग|कबन्ध-

उदार|शबरीपर कृपा, नधिा भक्ति-उपदेश आओर पम्पासर क्दक्स पर्स ान|नारद-राम-संदि|संतलोकक्सक लक्ण आओर सत्संग-भजनक लेल पेरणा ।

किष्किन्धाकाण्ड

यदयपि पभु शीरामचन्द्रजीक पभुताके सभ अक्हना (अकथनीय) बूझैत छथि तथापि बानु कहल कयो नक्ह रहल|एक्हमे दि एहन कारण बतयने अक्छ कि भजनक पभाि बहुत तरहे कहल गेल अक्छ|(अति भगिनिक मक्हमाक पूणवणिना तँ कियो कय नक्ह सकत ; परन्तु जकरासँ जतबा भय सकय ततबा भगिनिक गुणगान करबाक चाही|किएकतँ भगिनिक

यदयपि पभु शीरामचन्द्रजीक पभुताके सभ अक्हना (अकथनीय) बूझैत छथि तथापि बानु कहल कयो नक्ह रहल|एक्हमे दि एहन कारण बतयने अक्छ कि भजनक पभाि बहुत तरहे कहल गेल अक्छ|(अति भगिनिक मक्हमाक पूणवणिना तँ कियो कय नक्ह सकत परन्तु जकरासँ जतबा भय सकय ततबा भगिनिक गुणगान करबाक चाही|किएकतँ भगिनिक गुणगानरूपि भजनक पभाि अजीब अक्छ ओकर नाना पकारसँ शास्त्रसभमे णिना अक्छ|कनेको भगिनिक भजन मनुष्यके सहजे भिसागरसँ तारि दैत अक्छ) ।।1।।

बालकाण्ड

अक्रक , अथसमूहक, रसक, छन्दक आओर मंगलकें करनाहार

सरस्तीजी आओर गणेशजीकेँ हम न्दिना करैत छी ।। 1 ।। ॅ
शदा आओर विशासक सरिप शीपार्वीजी आओर शी शंकरजीक हम दिना करैत छी, जकाक बानु वसद जन अपन अंतःकरणमे स्थित ईशरकेँ नहि देखि सकैछ ।। 2 ।।
जानमय, नात्य, शंकररप गुरक हम दिना करैत छी, जकाक आश्रित भेलेस टेढ िन ;सेहो सर्वि न्दित होईछ ।। 3 ।।
शीसीतारामजीक गुणसमूहर पवित नि मे विहार करयािला , विशुद विजानसम्पन्न किशर शीकािमीकजी आओर कपीशर शीहनुमानजीक हम न्दिना करैत छी।। 4 ।।
उदि , स्थित ;पालन आओर संहार करयािली , क्लेशकेँ हरयािली आ संपूर्णककाणकेँ करयािली शीरामन्दिजीक पियतमा शीसीताजीकेँ हम नमन करैत छी ।। 5 ।।
जकाक मायाक िशीभूत सम्पूर्णविश , ब्रहादि देिता आओर असुर छथि , जकाक सतास रस्सीमे सपक भमक भाँति ई सकल दृश्य - जगत् सत् बुझना जाईत अछि आओर जिनक केिल िरणे भिसागरस तरक इच्छािलाक लेल एकमात नौका अछि, ताहि समस्त कारणस पर ; सभ कारणक कारण आओर सभस शेष राम कहायिािला भगािन हरिक हम न्दिना करैत छी ।। 6 ।।
अनेक पुराण, िदि आओर ; तन्त शस्तस सम्मत जे रामायणमे िर्णित अछि आओर किछु अन्यतोस उपलब्ध कथाकेँ तुलसीदास अपन अन्तःकरणक सुखकलेल अत्यंत मनोहर भाषा रिनामे विस्तृत करैत अछि ।। 7 ।।
जिनक स्मरण करयस सभ कार्यसिद होईत अछि जे सभक सािामी आओर सुनर हाथीक मुखबाला छथि , एिह बुद्धिक राशि आओर शुभ गुणसभक धाम ;शीगणेशजी हमरा पर कृपा करथि जकाक कृपास

बौका बड नीक बाजयिला भय जाईत अछि आओर नागर - लुल दुर्गम पहाडपर चढि जाईत अछि , ओ कलयुगक सबटा पापसमूहकेँ जरा देयिला दयालु ;भगवान हमरापर द्रवित होईथ दया करथि ।। 2 ।।

जे नील कमलक भाँति श्यामवर्णक छथि, पूर्ण फुलायल लाल कमलक भाँति जिनक नेत छन्हि आओर जे सदा क्षीरसागरमे शयन करैत छथि से भगवान ; नारायण हमरा हृदयमे निवास करैथ ।। 3 ।।

जिनक कुंदक पुष्प आओर चन्द्रमाक समान ;गौर देह अछि , जे पार्वतीजीक प्रियतम आओर दयाक धाम छथि , आओर जिनक दीनसभपर स्नेह अछि , ओ कामदेवकेँ मर्दन करयिला ; शंकरजी हमरापर कृपा करथि ।। 4 ।।

हम ओहि गुरु महाराजकेँ चरणकमलक वन्दना करैत छी, जे कृपाकेँ समुद्र आओर नरररूपमे शीहरि छथि आओर जिनक वचन महामोहरूपी घन अन्धकारकेँ नाश करबाक लेल सूर्य- किरणसभक समूह अछि ।। 5 ।।

हम गुरु महाराजकेँ चरणकमलक रजक वन्दना करैत छी, जे सुरुचि ।सुनर स्वाद।, सुगंध तथा अनुरागरूपी रसस पूर्ण अछि ; ओ अमर मूलक संजीवनी जडी|सुनर चूर्ण अछि, जे सम्पूर्ण भवरोगक परिवारकेँ नाश करयिला अछि ।। 1 ।।

ओ सुकृति ; पुण्यवान ्र पुरुष रूपी शिवजीक देहपर सुशोभित निर्मल विभूति अछि आओर सुनर कल्याण आओर आनंदक जननी अछि , भक्तकेँ मनररूपी सुनर दर्पणक मैलकेँ फराक करनिहार आओर तिलक करयस गुणसभक समूहकेँ वशमे करनिहार अछि ।। 2 ।।

शीगुर महाराजक िरण - नखक ज्योत्त मत्रासभक पकाशक ;इजोतक समान अछ्, जकर स्मरण कवतत्त हृदयमे त्वव्य दृष्य उत्पन भय जाइत अछ् ओ इजोत अजानर त्त्प अन्हारकें नाश करयिला अछ् ; ओ जकर हृदयमे आबा जाईत अछ्, तकरे बड भाग्य अछ् ।। 3 ।।

ओत्लकें हृदयमे अबाते हृदयक त्तामक्ष नेत खूत्ल जाईत अछ् आओर संसारर त्प रात्तकें दोष - दुःख मेटाय जाईत अछ् आ शीरामिवतर त्प मत्रा आओर मात्रातक्य, गुप्त आओर पकट जतय जे जात्त खानमे अछ्, सबटा देखाय लागैत अछ् - ।। 4 ।।

जेना त्त्सद जनकें नेतसभमे लगाकय साधक, त्त्सद आओर सुजान पित्तासभ, निसभ आओर त्त्वर्थीकें तौरमे कौतुकेस बहुत - रात्त खानसभ देखैत छत्य ।। 1 ।।

शीगुर महाराजक िरणक रज कोमल आओर सुनर नयनात्तित-अंजन अछ्, जे नेतक दोषसभकें नाश करयिला अछ्|तात्त अंजनस त्तीिकर त्प नेतसभकें त्तामक्ष कय हम संसारर त्प बन्धनस छोडायििला शीरामिवतक िणत्ता करैत छी ।। 1 ।।

सिधत्थम त्त्वर्थीक देिता बाम्हण लोकत्तक िरणक न्दिना करैत छी, जे अजानस उत्पन सबटा संदेहक हरत्ताहार छत्य|तखन सभ गुणक खान संत - समाजकें पेमसत्तत सुनर िणीस पणाम करैत छी ।। 2 ।।

संतसभक िवत कपासक िवतक ;जीिनक भॉत्ता शुभ अछ्, जकर फल नीरस,त्तशिद आओर गुणमय होइत अछ्|;कपासक डोडी नीरस होइत अछ्, संत - िवतमे सेहो त्तषयासत्तत्त नत्त अछ्, तात्तस ओ सेहो नीरस अछ्; कपास उजिल होइत अछ्, संतक हृदय सेहो अजान आओर पापर त्प अन्हारस रत्तत होइत अछ्, एत्त लेल ओ

विशिद अछि, आओर कपासमे गुण ;तनु होइत अछि, एहि तरहेँ संतक चिरत सेहो सदगुणसभक भण्डार होइत अछि, एहि लेल ओ गुणमय अछि|जेनाॅ कपासक धागा सूईक काएल छेदमे अपन तन दय झाँपि दैत अछि, अथिा कपास जेनाॅ तूनय गेलास, काटय गेलास आओर बूनय गेलास कषो सहिकय स्तिक रपमे पिरणत भय दोसराकेँ गोपनीय स्थानसभकेँ झाॅपैत अछि तहिना। संत स्यिं दुःख सहिकय दोसरकेँ छेदसभ ; दोषसभ केँ झाॅपैत अछि, जाहि कारणे ओ जगत ्रमे िन्दनीय यश पाप्त कयने अछि ।। 3 ।।

संतसभक समाज आनन्द आओर कल्याणमय अछि, जे जगतमे िलैत - फिरैत तीथराज ;पयाग अछि ँ जतय ;ओहि संतसमाजसभक पयागराजमे रामभिक्तर पी गंगाजीक धारा अछि आओर ब्रह्मििचािरक पिार सरस्तीजी छिथ ।। 4 ।।

िििध आओर िनषेध ; ई कर आओर ई नहि कर रपी कमसभक कथा कलयुगक पापसभक हरनिहार सूयतनया यमुनाजी छिथ आओर भगिान िषणु आओर शंकरजीक कथासभ ििेणीर पस सुशोिभत अछि जे सुनैतहि सभ आनंद आओर कल्याणसभक देनिहार छिथ ।। 5 ।।

।ताहि संतसमाजर पी पयागमे। अपन धमर्मे जे अटल िशास अछि से अक्यिट अछि, आओर शुभकमे ओहि तीथराजक समाज ।पिरिार। अछि ओ ।संतसमाजर पी पयागराज। सभ देश सभमे सभ समय सभकेँ सहजहिमे पाप्त भय सकैत अछि आओर आदरपूिक सेिन कयलास क्लेशसभकेँ नष करयििला अछि ।। 6 ।।

ओ तीथराज अलोिकक आओर अकथनीय अछि, आ शीघ फल देयििला अछि; ओकर पभाि पत्यक अछि ।। 7 ।।

जे मनुष्य एहि संत - समाजर पी तीरथराजक पभाि पसन मनस

सुनैत आओर बुझैत छथि आओर फेर अत्यंत पेमपुर्वक एहिमे डुबकी लगाबैत छथि , ओ एहि देहकेँ रहितहि धर्म,अर्थ, काम, मोक्ष - चारि टा फल पाबि जाइत छथि ।। 2 ।।

एहि तीरथराजमे स्नानक फल तत्काल एना पतीत होइत अछि जे कौआसभ कोईली बनि जाइत अछि आओर बगुलासभ हंस|ई सुनिकय कियो आश्चर्य नहि करय , कियेक त सत्संगक महिमा नुकायल नहि अछि ।। 1 ।।

वाल्मीकिजी, नारदजी आओर अगस्त्यजी अपन - अपन मुखस अपन होनि ;जीवनिक वृतान्त कहने छथि|जलमे रहनिहार, थलपर चलनिहार आओर अकाशमे विचरियाला नाना पकारक जड - चेतन जतेक जीव एहि जगतमे छथि ।। 2 ।।

ताहिमेस जे जाहि समय जतय कतहु जाहि कोनो जतनस बुद्धि, कीर्ति,सदगति, विभूति ;ऐशयथआओर भलाई पओने छथि , से सभ सत्संगेक पभाव बुझबाक चाही। वेदसभमे आओर लोकमे एहि पाबिताक दोसर कोनो उपाय नहि अछि ।। 3 ।।

सत्संगक बिनु विवेक नहि होइछ आओर शीरामजीक कृपाक बिनु ओ सत्संग सुलभ नहि|सत्संगति आनंद आओर कल्याणक जैड अछि। सत्संगक सिद्धिये ;पाप्तिये फल अछि आओर सभ साधन त' फूल अछि ।। 4 ।।

दुष्ट सतसंगति पाबिकय सुधरि जाइत अछि , जेनॉ पारसक स्पर्शस लोहा सोहाय जाइत अछि ।सुनर सोना बनि जाइत अछि . किन्तु दैवयोगस यदि कहियो सज्जन कुसंगतमे पड़ि जाइत छथि, त' ओ ओतहुं सॉपक मणिकेँ समान अपन गुणेक अनुसरण करैत छथि ।अथात जाहि तरहें सॉपक संसगथपाबियोकय मणि ओहिक विषकेँ

गहण नञ्ह करैछ आ अपन सहज गुण पकाशकेँ नञ्ह छोडैत अछ्छि, तञ्हना साधु पुरख दुष्टक संगमे रञ्हयोकय दसेसरकेँ पकाशे दैत छथ्यि, दुषसभक पभाि ञ्हनकापर नञ्ह पडैछ। ।। 5 ।।

बम्हा, विष्णु, शिा,कवि आओर पण्डित सभक ाणी सेहो संत मञ्हमाक णिथ्य करबामे सकुाय छथ्यि ; ओ हमरास कोना नञ्ह कहल जायत अछ्छि, जेनॉ साग - तरकारी बेयािला बुतय मण्िक गुणसमूह नञ्ह कहल जा सकैछ ।। 6 ।।

हम संतसभकेँ पणाम करैत छी, जञ्हक चितमे समता छञ्हि, जञ्हक ने कयो मित अछ्छि आओर ने शतु! जेनॉ आंजुरमे राखलगेल सुनर फूल ;जाञ्ह हाथस फूल टूटल आओर जाञ्ह हाथमे राखल गेल ताञ्ह। दुनू हाथकेँ समानरपेँ सुगंधित करैछ ताञ्ह पकारेँ संत शतु आओर मित दुनुक समानरपेँ कल्याण करैत छथ्यि। ।। 3 ।क। ।।

संत सरल हृदय आओर जगतक ञ्हतकाञ्ब होइत छथ्यि , हुनक एहन सभाि आओर स्नेहकेँ जाञ्िकय हम विनय करैत छी, हमर एञ्ह बाल - विनयकेँ सुञ्िकय कृपा कञ्ब शीरामजीक रिणमे हमरा पीञ्त दञ्यह ।। 3|ख| ।।

आब हम सॉि भािसि दुषसभकेँ पणाम करैत छी, जे ञ्बानु पयोजनेँ, अपन ञ्हत करयबालाक हेतु सेहो पञ्तकूल आिरण करैत छथ्यि|दोसरक ञ्हतक हाञ्िय ञ्हनक दृञ्ष्टमे लाभ अछ्छि, जकरा दोसरकेँ उजडयमे हषथआओर बसयमे विषाद होइत अछ्छि ।। 1 ।।

जे हञ्ब आओर हरक यशरञ्प र्णूञ्ंमामाक ािनक हेतु राहुक समान ;अथात जतय कतहु भगािन् विष्णु ाि शंकरकेँ यशक णिथ्य होइत अछ्छि, ताञ्हमे ओ बाधा दइत अछ्छि आओर दोसर सभक ञ्ंदा करबामे सहसबाहुक समान ािर छथ्यि ;ँ दोसरसभक दोषसभकेँ हजार ऑञ्खस देखैत छथ्यि आओर दोसरसभक ञ्हतरञ्प घीकेँ हेतु जञ्हक मन माछीक

समान अछि अथात जाहि पकारें माछी घीमे खसिकय ओहिकें खराब कय दइत अछि आओर स्वयं सेहो मरि जाइत अछि, तहिना दुष्ट गण दोसरकें बनल - बनायल कार्यकें अपन हानि कइयोकय बिगाड़ि दइत छथि ।।2 ।।

जे तेज ;दोसरसभकें जरायिालिा ताप मे अग्नि आओर कोधमे यमराजकें समान छथि, पाप आओर अगुिणर रुपी धनमे कुबूरक समान धनिक छथि, जिनक उदय सभक हितक नाश करबाक हेतु केतुकें ;पुच्छल ताराकें समान अछि, आओर जिनक कुम्भकर्णक भाँति सुतले रहबाटामे भलाई अछि ।।3।।

जेनाँ हिम कृषिकें उपटकय अपने सेहो गैल जाइत अछि, तहिना ओं दोसरक कार्यबिगाड़बाक हेतु अपन शरीरधरि छोड़ि दइत छथि।हम दुष्टसभकें ;हजार मुखवािला शेषजीक भाँति बूझि पणम करैत छी, जे परक दोषकें हजार मुखस सहषर्वणिन करैत छथि ।।4।।

पुनः हुनका राजा पृथुक ; जे भगिानिक यश सुनबाक हेतु दस हजार माँगने छलाह भाँति जानिकय पणाम करैत छी जे दस हजार कान दोसर सभक पाप सभकें सुनैत छथि फेर इन्द्रक समान मानिकय हुनक विनय करैत छी, जिनका सुरा ;मदिरा नीक आओर हितकर बुझना जाइत छन्हि ।इन्द्रकें लेल सेहो सुरा नीक अर्थॉात देिताक सेना हितकर छन्हि। जिनका कठोर िनि सदिखन वज्रअरगर लागैत छन्हि आओर हजारो ऑखिस दोसरसभकें दोषसभ देखैत छथि ।।6।।

दुष्टसभक ई रीत अछि जे ओ उदासीन, शतु अथिा मित ककरो हित सुनिकय जरैत छथि।ई बुझिकय दुनू हाथ जोड़िकय ई जन पेमपूर्विक हुनकास विनय करैत अछि ।। 4 ।।

हम अपन व्यवसाय व्यवहोरा कयलहुँ, मुदा ओ अपन व्यवसाय करब कयो नहि ि किताह|कौआसभकेँ कतबो पेमस पोषू; तथापि ओ की कहियो माउसक त्यागी भय सकैछ ? ।। 1 ।।

आब हम संत आओर असंत दुनुक िरणक िनन्दना करैत छी; दुनूटा दुःख देियिला छथि, मुदा उभयक बीिमे किछु अन्तर कहल गेल अछि|आं अन्तर ई अछि जे एक ;संत त' बिछुडैत काल पाण हैर लइत छथि आओर दोसर ;असंत भेलैत छथि तखन दार ण दुःख दइत छथि|;अथात संतक बिछोह मरनक समान दुःखदायि होइत अछि आओर असंतक भेलान ।। 2 ।।

दुनू ;संत आओर असंत जगमे संगहि जनमैत छथि; मुदा ;एकेँ संग जनम लेनहार कमल आओर जोकक भाँति हुनक गुण पृथक - पृथक होइत छन्हि|।कमल दशर्न आओर स्पशर्स सुख दइत अछि, मुदा जोक देहक स्पशर्थमात्रिते सोखात िसय लागैत अछि। |साधु अमृतक भाँति ।मृत्यु र पि संसारस उबारयिला। आओर असाधु मदिराक भाँति ।मोह, पमाद आओर जडत उत्पन करयिला। अछि, ;शास्त्रसभमे समुदेमन्थनस अमृत आओर मदिरा दुनूक उत्पत्ति बतायल गेल अछि ।। 3 ।।

भल आओर बेजाय अपन - अपन करनीक अनुसार सुनर यश आओर अपयशकक सम्पत्ति पाबैत छथि|अमृत, िन, गंगाजी आओर साधु आ विषि, अग्नि, कलियुगके पापसभक नदी अथात कमर्नाशा आओर हिंसा करनिहार व्याध, हिनक गुण - अिगुण सभ कियो जानैत छथि; मुदा जकरा जे भाँित अछि तकरा सैह नीक लागैत अछि ।। 4 - 5 ।।

भल भलाइये गहन करैत अछि आओर ओछ ओछतेकेँ गहण करैत अछि|अमृतक सराहना अमर करबामे होइत अछि आओर विषिक मारयमे

।।5।।

दुष सभकेँ पापसभ आओर अगिुणसभक आओर साधुक गुणसभक कथा - दुनूटा अपार आओर अथह समुद अछि। एहिस किछु गुण आओर दोषक णिर्ण कायल गेल अछि, किएकत बिनु चिन्हल हुनक गहण ि त्याग नहि भय सकैछ ।।1।।

नीक, बेजाय सभटा बह्मक बनायल अछि, परंि गुण आओर दाषसभकेँ बाििकय दि, इतिहास आओर पुराण कहैत छथि कि बम्हाक ई सृष्टि गुण - अगिुणस सानल अछि ।।2।।

दुःख - सुख, पाप - पुण्य, दिन - राति, साधु - कुसाधु, सुजाति - अजाति, दानि - देिता, उि - नीि, अमृत - विष, सुजीिन ;सुनर जीिन -मृत्यु सम्पति - दिदता, रंक - राजा, काशी - मगध, गंगा - कमधाशा, मारिड - मालि, बाम्हण - कसाई, सिगथ- नरक, अनुराग - िरागय ।ई सभटा पदाथथबम्हाक सृष्टि मे छथि। िद - शास्त सभ हुनक गुण - दोष सभक विभाजन कयने अछि ।।3-5 ।।

करतार एहि जड - ितन विशकेँ गुण - दोषमय रिने छथि ; मुदा संतर प हंस दोषर प पािकेँ छोडिकय गुणर प दूधेटा गहण करैत छथि ।।6।।

बिधाता जहन एहि पकारक विंकि दइत छथि , तहन दोषसभकेँ छोडिकय मन गुणसभमे अनुरक्त होइत अछि|काल - सिभाि आओर कमधक पबलतास भल मनुष्य ।साधु। सेहो मायाक बश भय कहियो - काल भलाईस िूकि जाइत छथि ।।1 ।।

भगिानक भक्त जेनाँ ओहि िूककेँ सुधरि लइत छथि आओर दुःख दोषसभकेँ मेटकय बिमल यश दइत छथि, तहिना दुष सेहो कहियो - काल उतम संग पाबि भलाई करैत छथि; मुदा हुनक कहियो भंग

नष्ट होबयिला सभिा नष्ट मेटाइछ ।।2।।

जे ।भेखधारी। ठग अछि, तकरो ;साधु जेकाँ भेष बनायल देखिकय भेषक पतापस जगत पूजैत अछि; मुदा एक - ने - एक दिन ओ िाड आबिये जाइत अछि, अन्तःधच ओकर कपट नष्ट भामहैछ, जेनाँ कालनेमि, राणि आओर राहुक हाल भेल ।।3।।

अधलाहो भेष बना लेबयस सेहो साधुक सम्माने होइत अछि, जेनाँ जगतमे जाम्बानि आओर हनुमानजीक भेल|अधलाह संगतिस हानि आओर नीक संगतिस लाभ होइत अछि, ई बात लोक आओर िदिमे अछि, आओर सभ चकयो एहिकेँ जानैत छथि ।।4।।

बसातक सगस धूल अकाशपर िढ जाइत अछि आओर ओ नीि ।नीिमे बहयािला। पानिक संगस थालमे भामि जाइत अछि|साधुक घरक तोता - मैना राम - राम सुमिरैत अछि आओर असाधुक घरक तोता - मैना गारि - गारिकय गारि दइत अछि ।।5।।

कुसंगक कारणे धुआँ कारिख कहाइछ, िएह धुआँ ।सुसंगस। सुनर स्याही बनिकय पुराण लिखबाक काममे आबैत अछि आओर िएह धुआँ जल, अगिन, ाियु आओर पनिक संगस मेघ बनि जीिनदाता बनि जाइत अछि ।।6।।

गह, औषध, जल,ाियु आओर िस्त - ई सभ सेहो कुसंग आऑर सुसंग पाबिकय संसारमे अधलाह ाि नीक पदाथथमय जाइत अछि|ितुर आओर विािरशीले पुरष एहि बातकेँ जानि पाबैत छथि ।। 7।ख।।।

माहक दुनू पखमे इजोत अन्हार समाने रहैत अछि, मुदा विधाता एहिक नाममे भेद कयने छथि ;एकटाक नाम शुक्ल आओर दोसरक नाम कृष्ण रखलन्हि |एकटाकेँ िनिकेँ बढाियािला आओर दोसरकेँ ओहिकेँ घटाियािला बूझिकय जगत एकटाकेँ सुयश आओर दोसरकेँ अपयश

दय देलक ।। 7 ।ख। ।।

जगतमे जतेक जड आओर ितन जीि छथ्यि, सभकेँ राममय बूझ्झिकय हम हुनक सभकेँ िरणकमलक सच्दिखन दुनू हाथ जोड्िकय िन्दिना करैत छी ।।7।ग। ।।

देिता, दैत, मनुष्य, नाग, पकी, पेत, िपतर, गन्धिर्, िकनर आओर िनशािर सभकेँ हम पणाम करैत छी|आब सभ हमरा पर कृपा करथु ।।7।घ। ।।

ि◌ौरासी लाख योिनसभमे िार पकारक ; स्िदिज, अण्डिज, ,

जरायु जीि जल, पृथ्िी आओर अकाशमे रहैत छथ्यि, तािह सभस भरल गेल एिह समस्त जगतकेँ शीसीताराममय जािनकय हम दुनू हाथ जोड्िकय पणाम करैत छी ।। 1 ।।

हमरा अपन दास बूझ्झिकय कृपाक खान अपने सभ गोटे िमलिकय छल छोड्िकय कृपा कर |हमरा अपन बुिद्ध - बलक भरोस निह अिछ, तेँ हम सभस िीनती करैत छी ।। 2 ।

हम शीरघुनाि जीक गुणक िणिन करय चाहैत छी, मुदा हमर बुिद्ध ओछ अिछ आओर शीरामजीक चिरत अिाह छिन्ह|

ते हेतु हमरा उपायक एकहुि अंग अिात िकछुओ (लेशमात) उपाय निह सुझाईछ|हमर मन आओर बुिद्ध कंगाल अिछ, मुदा मनोरि राजा अिछ ।।3।।

हमर बुिद्ध तँ अत्यंत नीच अिछ आओर रिि बड ऊँच अिछ|रिि तँ अििि पीबाक अिछ, मुदा जगत् मे जुरईया छॉछो निहं|सज्जन हमर िढठईके कमा करि आओर हमर बालिचनके मन लगाकय (पेमपूिक) सुनि ।।4।।

जेना बालक जहन तोतराक बात बाजैत अछि तँ ओकर माता पिता ओकरके पसन्न मनसँ सुनैत छथि|मुदा कूर, कुटिल आओर कुविचारी लोक जे दोसरसभके दोषेसभके भूषणरूपसँ धारण कयने रहैत छथि (अर्थात् जनिका दोसरक दोषे नीक लागैत छन्हि), हँसताह ।।5।।

सरस हो अथवा फीक, अपन कविता ककरा नहि नीक लागैछ ? मुदा जे दोसरक रचनाके सुनिकय हर्षित होईत छथि, एहन उत्तम पुरुष जगतमे बेसी नहि छथि ।। 6 ।।

हे भाई ! जगतमे पोखरि आओर नदीक समान मनुष्ये बेसी छथि, जे जल पाबिकय अपने बाढ़िसँ बढ़ैत छथि (अर्थात् अपने उन्नतिसँ पसन्न होईत छथि)|समुद्र जेका तँ कियो सज्जन होईत छथि जे चान्दके पूर्ण देखिकय (दोसरक उन्नति देखिकय) उमड़ि पड़ैत छथि ।।7।।

हमर भाग्य ओछ अछि आओर इच्छा बड़ पैघ अछि , मुदा हमरा एकटा विश्वास अछि कि एकरा सुनिकय सज्जनसभ सुख पौताह आओर दुष्ट उपहास करताह ।।8।।

मुदा दुष्टसभके हँसलासँ हमरा हित होयत|मधुर कंठबाली कोइलीके कौआ तँ कठोरे कहैत रहैत अछि|जेना बौकला हंसके आओर बेंग पपीहके हँसैत अछि, तहिना मलिन मनवाला दुष्ट निर्मल वाणीके हँसैत अछि ।।1।।

जे नहि तँ कविताक रसिक छथि आओर ने जिनका श्रीरामचन्द्रजीक चरणमे पेम छन्हि, हुनक हेतु सेहो ई कविता सुखद हास्यरसक काम देत|पहिल तँ ई भाषाक रचना अछि , दोसर हमर बुद्धि भोरि अछि ; एहिसँ ई हँसहो योग्य अछि , हँसयमे कोनो दोष नहि ।।2।।

जिनका नहि तँ पभुक चरणमे पेम अछि आओर ने नीक बुझि छन्हि, हुनका ई कथा सुनयमे फीके लगतन्हि|जिनक श्रीहरि (भगवान विष्णु)

आओर शीहरके (भगानि क्शा) चरणमे पीक्त अक्छ आओर बुक्द कुतकव करयािला नक्ह अक्छ (जे शीहक्र __हरमे भदक अाि ऊँच-नीचक कल्पना नक्ह करैछ), हुनका शीरघुनाजीक ई काि क्मठ लगतक्ह ।।3।।

सज्जनगण एक्ह काके अपन जीमे शीरामजीक भक्त्तसँ भूक्षत जाक्तकय सुनर ाणीसँ सराहना करैत सुनताह|हम नक्ह तँ कवि छी, ने ाक्येरचनामे कुशल छी, हम तँ सभ कला आओर सभ विदासभसँ हीन छी ।।4।।

नाना पकारक आखर, अिवआओर अलंकार, अनेक पकारक छन्द रचना, भाि आओर रससभक अपार भेद आओर कविताक भाक्त-भाक्तक गुण-दोष होइत अक्छ ।।5।।

एक्ह मे काव्य सम्बन्धी एकहुि बातक जान हमरा नक्ह अक्छ, ई हम कोर कागजपर क्लक्खकय (शपिूकि) सत्य-सत्य कहैत छी ।।6।।

हमर रचना सभाि गुणसँ हीन अक्छ, एक्हमे बस जगत्पक्सद एकाि गुण अक्छ|तकरा क्चाक्रकय नीक बुक्दक पुरष, क्जनक क्नमक्ल जान अक्छ, एक्हके सुनताह ।। 9।।

एक्हमे शीरघुनाजीक उदार नाम अक्छ, जे अत्यंत पविति अक्छ, ि-पुराणसभक सार अक्छ, जकरा पािक्तीजीसक्हत भगान् क्शाजी सक्दखन जपल करैत छिि ।।1।।

जे नीक कवि दारा रचल गेल बड नीक कविता अक्छ , सेहो रामनाम क्बनु शोभा नक्ह पाबैछ|जेना चान जेका सुनर मुखबाली सुनर स्त्री सभ पकारसँ सुसक्जत भेलोसँ िस्त्र क्बनु शोभा नक्ह दैछ।।2।।

एक्हक विपरीत, कुकविक रचल गेल सभ गुणसँ हीन कविता सेहो, रामक नाम एिं यशसँ अंक्कत जाक्तकय, बुक्दमान् गण आदरपूिक कहैत आओर सुनैत छिि, क्कएक तँ संत मधुिनक भाक्त गुणे गहण

करबाहार होइत छथि ।।3।।
यदापि हमर एहि रचनामे कविताक एकोटा रस नहि अछि, तथापि एहिमे श्रीरामजीक प्रताप प्रकट अछि|हमरा मनमे इएह एकटा भरोस अछि|भल संगसँ भला, के नहि ऊँच स्थान पौलक ? ।। 4।।
धूआँ सेहो अगरके संगसँ सुगंधितभय अपन स्वाभाविक कड़ुआपन छोड़ दैत अछि|हमर कविता अवश्य भद्दा अछि, परन्तु एहिमे जगतक कल्याण करबाहार रामकथा रूपी उत्तम वस्तुक वर्णन कायल गेल अछि|(ताहिसँ ई सेहो नीके बुझल जायत) ।।5।।
तुलसीदासजी कहैत छथि जे श्रीरघुनाथजीक कथा कल्याण करबाहार आओर कलयुगक पापसभक हरबाहार अछि|हमर एहि कूर कवितारूपी नदीक चालि पवित्र जलवाली नदीक (गंगाजी) चालिक जेका टेढ़ अछि|प्रभु श्रीरघुनाथजीके सुनर यशके संग सँ ई कविता सुनर आ सज्जनसभक मनके भावयवाला भय जायत|श्मशानक अपवित्र राखो श्रीमहदेवक अंगक संगसँ सोहनगर लागैत अछि आओर स्मरण करैते पवित्र करबाहार होइत अछि ।
श्रीरामजीक यशकसंगसँ हमर कविता सभके अत्यंत प्रिय लागत जेना मलय पर्वतक संगसँ काष्ठमात्र (चानन बनकय) वन्दनीय भय जाइत अछि, फेर की क्यो काठक (तुच्छता) विचार करैत अछि ? ।।10(क)।।
श्यामा गौ कारी भेलोसँ ओकर दूध उज्ज्वल आओर बड गुणकारी होइत अछि|इएह बूझि सभ लोक ओकरके पीबैत छथि|एहि प्रकारे गँवारु भाषामे भेलोसँ श्रीसीता - रामजीक यशके बुझिकय लोक बड प्रेमसँ गाबैत आओर सुनैत छथि ।।10(ख)।।
मणि, माणिक आओर मोतीक जेहन सुनर छवि अछि , ओ साप, पर्वत आओर हाथीक मस्तकपर ओहन शोभा नहि पाबैछ|राजाक मुकुट

आओर नियुिती स्तीक शरीरके पौलेसँ ई सभ बेशी शोभा पाबैत अवछ।।1।।

एव्ह तरहे, बुझक्क लोकक्त कहैत छवि क्क सुकविक कविता सहो उत्पन कतहु होइत अवछ आओर शोभा कतहु पािित अवछ (अिात कविक िाणीसँ उत्पन भेल कविता ओतय शोभा पाबैछ अवछ जतय ओकर विचार, पचार ि ओव्हमे कवित आदशक गहण आओर अनुसरन होइत अवछ)|कविक अनुसरण कवरते ओकर भक्तक कारणे सरसतीजी बम्हलोककय दौगल आबैत छवि ।।2।।सरसतीजीक दौगल आयलक ओ िकान रामचवरतर वम सरोिरमे हुनका नहबयने वबनु दोसर करोडोिि उपायसभसँ नव्ह जाइछ|कवि आओर पंवडत अपन हृदयमे एहन वबचावरकय कवलयुगक पापसभके हरक्हहार शीहवरक यशेक गाण करैत छवि ।।3।।

संसावर मनुष्यसभक गुणगान कयलासँ सरसतीजी माि धुक्कय पछताय लागैत छवि (क्क हम क्कएक एकरा बजयलासँ एलहुँ)। बुवद्मान लोकक्त हृदयके समुर, बुवद्के सीप आओर सरसतीजीके सिािि नक्त जेका कहैत छवि ।।4।।

एव्हमे जौ शेष विचारर वम जल बरसैत अवछ तँ मुक्तामवणके समान शेष कविता होइत अवछ।।5।।

ताव्ह कवितार वम मुक्तामवणसभके युक्तसँ बेवधकय फेर रामचवरतर वम सुनर तागमे वपरोकय सजजनजक्त अपन वनमल हृदयमे धारण करैत छवि, जाव्हसँ अत्यंत अनुरागर वम शोभा होइत अवछ (ओ आत्यंवतक पेमके पाप्त होइत अवछ) ।।11।।

जे कराल कलयुगमे जनमल छवि, जकक करक कौआक समान अवछ आओर भेष हंस जेका अवछ, जे िदमागव छोवडकय कुमागपर चलैत छवि, जे कपिक मूवतव आ कवलयुगके पापसभक भाड छवि

।।1।।
जे शीरामजीक भक्त कहबाकय लोकसभके ठकैत छवि, जे धन (लोभ), कोध आओर कामक गुलम छवि, आओर जे धीगाधी करक्हहार , धमध्वजी (धमक फुक्श धजा फहरायिला ___दम्भी) कपकि धन्धासभक बोझ उघक्हहार छवि, संसारक एहन लोकसभमे सभसँ पक्हल हमर गनती अक्छ ।।2।।
जौ हम अपन सभ अगुिनसभके कहय लागू तँ कि बड बक्ढ जायत आओर हम पार नक्ह पायब|ताक्हसँ हम बड अगुिणसभक णिबा कयलहुँ अक्छ। बुझक्तक जन कम्मेमे बूक्झ लेब ।।3।।
हमर विविध पकारक विनितीके बुक्झकय, क्कयो एक्ह किाके सुक्नकय दोष नक्ह देत|एतबहुपर जे शंका करताह, ओ तँ हमरोसँ बेसी मूखव आओर बुक्दक कंगाल छवि ।।4।।
हम नक्ह तँ कवि विकहुँ, ने ने चतुर कहाबैत छी ; अपन बुक्दक अनुरपे शीरामजीक गुण गाित छी|कतय तँ शीरघुनािजीक अपार चक्रत, कतय संसारमे आसक्त हमर बुक्द ।।5।।
जाक्ह बसातसँ सुमेर ___जेका पहाड क्ड जाइत अक्छ, कहू तँ ओकर आगूमे रई कोन गनतीमे अक्छ|शीरामजीक असीम पभुता बूक्झकय कि रचयमे हमर मन बड क्हचकैत अक्छ - ।।6।।
सरस्तीजी, शेषजी, क्शाजी, बम्हाजी, शास्त, दि आओर पुरान ई सभ ‘ नेक्त - नेक्त ‘ कक्हकय (पार नक्ह पाक्बकय एहन नक्ह, एहन नक्ह कहैत) सदा जक्तक गुणगान करैत रहैत छवि ।।12।।
यदक्प पभु शीरामचन्रजीक पभुताके सभ अक्हना (अकनीय) बूझैत छवि ताक्प क्बनु कहल क्कयो नक्ह रहल|एक्हमे दि एहन कारण बतयने अक्छ क्क भजनक पभाि बहुत तरहे कहल गेल अक्छ|(अति भगिनक मक्हमाक पूणविणबा तँ क्कयो कय नक्ह सकत ; परन्तु

जकरासँ जतबा भय सकय ततबा भगानिक गुणगान करबाक चाही|कएकतँ भगानिक गुणगानरवम भजनक पभाि अजीब अवछ, ओकर नाना पकारसँ शास्तसभमे णिबा अवछ|कनेको भगानिक भजन मनुष्यके सहजे भिसागरसँ तावर दैत अवछ) ।।1।।

जे परमेशर एक छवि, जक्क कोनो इच्छा नक्ह अवछ, जक्क कोनो रप आओर नाम नक्ह अवछ, जे अजन्मल , सक्चदानन्द आओर परमधाम छवि आओर जे सभमे व्यापक एिं विशिरप छवि, सैह भगानि वदव्य शरीर धारण कय नाना पकारक लीला कयलाह ।।2।।

ओ लीला केलि भक्त सभक वहतेक िस्ते अवछ ; कएकतँ भगानि परम कृपालु छवि आओर शरणागतक बड पेमी छवि|जक्क भक्तसभपर बड ममता आओर कृपा छक्ह, जे एक बेर जकरापर कृपा कय देलक्ह, ओकरा फेर कक्हयो कोध नक्ह कयलाह ।।3।।

ओ पभु शीरघुनाजी गेल िस्तुके फेर पाप्त कराबयिला, गरीबनािज (दीनबन्धु), सरलसिभाि, सिाक्तमान, आओर सभक सिामी छवि|इएह बूझकय बुझक्क लोकक्त ओ शीहवरक यश िणबा कय अपन िाणीके पवित आओर उतम फल (मोक आओर दुलबा भगतिोम) देयिला बनाबैत छवि ।।4।।

तावह बलसँ (मवहमाक यिाििणिबा नक्ह, परन्तु महान् फल देयिला भजन बूझकय भगतिकृपाक बलपर) हम शीरामचन्द्रजीक चरणमे मािनािकय शीरघुनाजीक गुणसभक किा कहब|तावह विचारसँ (ािल्मीक, व्यास आवद) मुक्सभ पवहने हवरक कीवतवगएने छवि, भाई ! तावह मागघर चलब हमरालेल सुगम होयत ।।5।।

जे अत्यंत पैघ नदी सभ अवछ , जौ राजा ओवहपर पुल बाक्ह दैत छवि तँ अत्यंत छोि चुवियो ओवहपर चवढकय वबानु पवरशमे पार चल

जाइत अछ (ताह पकारे मुक्तसभक णिबाक सहारासँ हम सेहो शीरामचवरतक णिबा सहजक्हं कय सकब) ।।13।।
एव्ह पकार मनके बल देखाकय हम शीरघुनाजीक सोहनगर कि‍िक रचना करब|क्यास आव्ह जे अनेको शेष कवि भय गेल छवि, जे बड आदरसँ शाहवरक सुयश णिबा कयने छवि ।।1।।
हम ओव्ह सभ (शेष कविसभ) के चरणकमलमे पणाम करैत छी, ओ हमर सबि मनोरिसभके पूर करवि|कव्लयुगक सेहो ओव्ह कविसभके हम पणाम करैत छी , जे सभ शीरघुनाजीक गुणसमूहक णिबा कयने छवि ।।2।।
जे बड क्सयान पाकृत कवि छवि, जेसभ भाषामे हवरचवरतसभक णिबा कयने छवि, जे एहन कवि पव्हने भय चुकल छवि, जे एखन तिबान छवि आओर जे आगू होयताह, क्तनका हम सबि कपि तेव्जकय पणाम करैत छी ।।3।।
अपने सभ पसन भय ई रिद व्हयँ क्क साधु समाजमे हमर कविताक सम्मान होयि ; क्कएकतँ बुझ्क्तक जन जाव्ह
कविताक आदर नव्ह करैत छवि, मूखे कवि ओकरा रचबाक क्यावि पवरशम करैत छवि ।।4।।
कीक्तव् कविता आओर सम्पक्त एिह उतम अछ जे गंगाजीक भाक्त सबहक व्हत करव्हहारहोयि|शीरामचन्रजीक कीक्तव तँ बड नीक (सभक अनन्त कल्याणे करव्हहार) अछ, परंच हमर कविता कुरप अछ|ई असमंजस अछ (अिात् एव्ह दुनुक मेल नव्ह क्सलैछ), एव्हक हमरा अंदेस अछ ।।5।।
परंच हे कविगण ! अपनेक कृपासँ ई बात सेहो हमरा लेल सुगम भय सकैत अछ |रेशमक क्सअन िापिर सोहनगर लागैत अछ ।।6।।

चतुर पुरष ओही कविताक आदर करैत छथि, जे सरल होयि आओर जाहिमे निर्मल चरितक णिन होयि एमि जकरा सुनिकय शत्रुओ सिभाविक रिके बासािर बखान करय लागय ।।14।।
एहन कविता बिनु निर्मल बुद्धिक होईछ नहि आओर हमर बुद्धिक बल बड कम अछि|ते बेर बेर निहोरा करैत छी कि हे कविगण ! अपने कृपा करी, जाहिसँ हम हरियशक णिन कय सकी ।।14 (ख)।।
कवि आओर पिण्डतगण ! अपने जे रामचिरतरिप मानसरोिरिक सुनर हंस छी, हमर बालविनिय सूनिकय आओर सुनर रिच देिखकय हमरापर कृपा करी ।।14(ग)।।
हम ओिह िल्मीकि मुनिके चरनकमलक िन्दना करैत छी, जे रामायणक रचना कयने छथि, जे खर (राक्स) सहित भेलोसँ खर (कठोर) सँ विपरीत बड कोमल आओर सुनर छथि आ जे दूषण (राक्स) सहित भेलोसँ दूषण अिात दोषसँ रहित छथि ।।14(घ)।।
हम चार िदिक िन्दना करैत छी, जे संसारसमुरके पार होयबाक िास्ते जहाजक समान छथि आ जिनका शीरघुनािजीक निर्मल यश णिन करैत सपनोमे खेद (िकान) नहि होईछ ।।14(डर)।।
हम बम्हाजीक चरण-रजक िन्दना करैत छी, जे भिसागर बनयने छथि, जतयसँ एक दिश मनुष्यरिप विष आओर मदिरा उत्पन भेल ।।14(च)।।
देिता, बाम्हण, पिण्डत, गह-एिह सभके चरणक िन्दना कय हाि जोिडकय कहैत छी जे अपने पसन भय हमर सबिा सुनर मनोरिसभके पूर करी ।।14(छ)।।
पुन: हम सरसितीजी आओर देिनदी गंगाजीक िन्दना करैत छी|दुनूक पवित आओर मनोहर चिरत छिह|एकिा (गंगाजी) स्नान कयला आओर जल पीयिसँ पापसभके हरैत छथि आओर दोसर (सरसितीजी) गुण

आओर यश कहला ि सुनलासँ अजानक नास कय दैत छथि ।।1।।

शीमहेश आओर पार्वतीके हम पणाम करैत छी, जे हमर गुर आओर माता-पिता छथि, जे दीनबन्धु आओर नित्य दान करनिहार छथि, जे सीतापति शीरामचन्द्रजीक सेवक, स्वामि आओर सखा छथि आ हमरा तुलसीदासक सभ तरहे कपटरहित (सत्) हित करनिहार छथि ।।2।।

जे शिव-पार्वती कलियुगके देखिकय, जगतक हितक लेल, साबर मन्त्रसमूहक रचना कयलनि, जाहि मन्त्राक आखर बेमेल अछि, जाहिक नहि कोनो ठीक अर्थ होईत अछि आओर नहि तँ जपे होईत अछि, तथापि शीशिवजीक पतापसँ जकरक पभाव पत्यक अछि ।।3।।

ओ उमापति शिवजी हमरापर पसन्न भय (शीरामजीक) एहि कथाके आनन्द आओर मंगलक मूल (उत्पन्न करनिहार) बनयताह|एहि पकारे पार्वतीजी आओर शिवजी दुनूक स्मरण कय आओर हुनक पसाद पाबिकय हम चाभिरल चितसँ शीरामचरितक वर्णन करैत छी ।।4।।

हमर कविता शीशिवजीक कृपासँ एना भाओत, जेना तरेगन समेत चानक संग भाँति अछि|जे एहि कथाके पेमसहित आ सचेत भय समझि बूझिकय कहताह-सुनताह, ओ कलियुगक पापसभसँ रहित आओर सुनर कल्याणक भागी भय शीरामचन्द्रजीक चरणक पेमी बनि जयताह ।।5-6।।

जौ हमरापर शीशिवजी आओर पार्वतीजीक सपनोमे साच पसनता हौइतनि , तँ हम एहि भाषा, कविताक जे पभाव कहलहुँ से सभ साच हो ।।15।।

हम अतिपवित शीअयोध्यापुरी आओर कलियुगक पापसभक नाश

करबाहहार शीसरयू नदीक िन्दना करैत छी|फेर अिधपुरीक ओबह नर-नाबरके पणाम करैत छी बजनकापर पभु शीरामजीक िड ममता नबह छबह (अित बहुत अबछ)।।1।।

ओ (अपन पुरीमे रहयिला) सीताजीक बनन्दा करयिला (धोबी) आओर ओकर समिक पुर-नर-नाबरसभ) के पापसमूहक नाश कय ओकरा शोकरबहत बनाकय अपन लोक (धाम) मे बसा देलबह|हम कोसलयार बम पूिवबदशाक िन्दना करैत छी, जबनक कीबतव समस्त संसारमे पसबर रहल अबछ|जतय (कौसलयार बम पूिवबदशा) सँ विशके सुख देबहहार आओर दुिरबम कमलक लेल पालक समान शीरामचन्रजीर बम सुनर चान पकि भेलाह|सभ रानीसबहत राजा दसरिजीके पणय आओर सुनर कलयाणक मूबतवमाबनकय हम मन, िचन आओर कमबसँ पणाम करैत छी|अपन पुतक सेिक जाबनकय ओ हमरापर कृपा करिव, बजनका रबचकय बम्हाजी सेहो बडाई पौलाह आ जे शीरामजीक माता आओर बपता होयबाक चलते मबहमाक सीमा छिव ।।3।।

हम अिधक राजा शीदसरिजीक िन्दना करैत छी, बजनक शीरामजीक चरणमे सतय पेम छल, ज दीनदयाल पभुके बबछुडतबह अपन बपय देहके मामूली तृण जेका तयािग देलाह ।।16।।

हम सपबरिर राजा जनकजीके पणाम करैत छी, बजनक शीरामचन्रजीक चरणमे गूढ पेम छलबह, जाबहके ओ योग आओर भोगमे नुका रखने छलाह, मुदा शीरामचन्रजीके देखैते ओ पकि भय गेल ।।1।।

(भाईसभमे) सभसँ पबहने हम शीभरतजीक चरणमे पणाम करैत छी, बजनक बनयम आओर ित िणबन नबह कयल जा सकैछ आ बजनक मन शीरामजीक चरणकमलमे मधुप जेका लोभायल अबछ , कबहयो हुनक संग नबह छोरैछ ।।2।।

हम शी लक्मणजीक चरणकमलके पणाम करैत छी, जे शीतल, नीक आओर भक्तसभके सुख देयिलिा अछ|शीरघुनाजिीक कीत्तबि्या विमिल पताकामे वजनक (लक्मणजीक) यश (पताकाके ऊँच कय फहरायिलिा) दंड जेका भेल ।।3।।

जे हजार मूडीलिा आओर जगतक कारण (हजार मूडीपर जगतके धारणकय राखयलिा) शेषजी छथि, जे पृथ्वीक भय भगायिलेल अतिार लेलाह, ओ गुनाकर कृपासिन्धु सुमतानन्दन शी लक्मणजी हमरापर सबदखन पसन रहथि ।।4।।

हम शीशतुघजीक चरणकमलके पणाम करैत छी, जे बड ीर, सुशील आओर शीभरतजीक अनुगामी छथि|हम महाीर शीहनुमानजीक विनिती करैत छी, वजनक यशक शीरामचन्रजी स्ियं (अपन शीमुखसँ) णिबा कयने छथि ।।5।।

हम पनिकुमार शीहनुमानजीके पणाम करैत छी, जे दुिरबा निके भस्म करय लेल अक्मार प छथि, जे जानक घनमूत्तव छथि आओर जक्तक हृदयरबा भनिमे धनुष-बाण धारणकय शीरामजी ोसि करैत छथि ।।17।।

कबिपत्त सुगीिजी, रीछसभक राजा जाम्बानिजी , राक्ससभक राजा विभीषणजी आओर अंगदजी आदि जतबा बानरसभक समाज अछ, सभक सुनर चरणक हम निदना करैत छी, जे लोकक अधमो (पशु आओर राक्स आदि) शरीरमे शीरामचन्रजीके पाप्त कय लेलाह ।।1।।

पशु, पकी, देिता,मनुष्य, असुरसमेत जतेक शीरामजीक चरणक उपासक छथि , हम ताकह सभ लोकक्के चरणकमलके निदना करैत छी , जे शीरामजीक कष्काम सेिक छथि ।।2।।

शुकदेिजी , सनकादि, नारदमुक्त आदि जतबा भक्त आओर परम जानी

शेष मुक्त छथि , हम धरतीपर माथ टेकिकय ताहि सभ लोकनिकेँ पणाम करैत छी ; हे मुनीशर लोकनि ! अपने सभ हमरा अपन दास बूझिकय कृपा कयल जाय ।।3।।

राजा जनकक बेटी, जगतक माता आओर करुणानिधान शीरामचन्द्रजीके पियतमा शीजानकीजीक दुनू चरणकमलके हम मानैत छी, जनिक कृपासँ निर्मल बुद्धि पाबी ।।4।।

फेर हम मन, वचन आओर कर्मसँ कमलनयन, धनुष-बाणधारी, भक्तसभक विपत्तिक भंजन करय आओर ओ लोकनिके सुख देयवाला भगवान् शीरघुनाथजीक सर्वसमर्थ चरणकमलक वन्दना करैत छी ।।5।।

जे वाणी आओर ओकर अर्थ आ जल आओर जलक लहरक भावसँ कहयमे पृथक-पृथक अछि, परंच वास्तवमे अभिन्न (एक) अछि, ओहि शीसीतारामजीक चरणक हम वन्दना करैत छी, जिनका दीन दुखी बड रास पिय छथिन्ह ।।18।।

हम शीरघुनाथजीक नाम 'राम ' के वन्दना करैत छी , जे कृशानु (अग्नि) , भानु (सूर्य) आओर हिमकर (चान) के हेतु अर्थात ' र ' आ ' आओर ' म ' रूपसँ बीज अछि|ओ 'राम' नाम बम्हा, विष्णु आओर शिवरूप अछि|ओ वेदसभक पाण अछि ; निर्गुण, उपमारहित आओर गुणसभक भण्डार अछि ।।1।।

जे महामन्त्र अछि, जकरा महेशर शीशिवजी जपैत छथि आओर हुनक दारा जकर उपदेश काशीमे मुक्तिक कारण अछि, आ जकर महिमाके गणेशजी बूझैत छथि, जे एहि 'राम' नामक पभावसँ सभसँ पहिने पूजल जाइत छथि ।।2।।

आदिकवि शीवाल्मीकिजी रामनामक पतापके जानैत छथि , जे उलटा नाम ('मरा ' 'मरा') जपिकय पवित्र भय गेलाह|शीशिवजीक एहि वचनके

सुमिरकय कए एक राम-नाम सहस्त्र नामक समान अछि , पार्वतीजी सदिखन अपन पति (शीवशिजी) के संग रामनामक जप करैत रहैत छथि ।।3।।
नामक प्रति पार्वतीजीके हृदयक एहन प्रीति देखिकय शीवशिजी हर्षित भय गेलाह आओर ओ स्त्रीसभके भूषणरूप (पतिव्रतासभमे शिरोमणि) पार्वतीजीके अपन भूषण बना लेलाह (अर्थात हुनका अपन अंगमे धारणकय अर्धांगिनी बना लेलाह)|नामक प्रभाविके शीवशिजी नीक जेका जानैत छथि, जाहि (प्रभाव) के कारण कालकूट माहुर हुनका अमृतक फल देलक ।।4।।
शीरघुनाथजीक भक्ति वर्षा - ऋतु अछि , तुलसीदासजी कहैत छथि जे उतम सेविकगण धान छथि आओर 'राम' नामक दूटा सुनर आखर साओन - भादवि मास्हिना अछि ।।19।।
दुनू आखर मधुर आओर मनोहर अछि, जे वर्णमालारूपी शरीरक नेत अछि, भक्तसभक जीवन अछि आ स्मरण करयमे सभक लेल सुलभ आओर सुख देयिवाला अछि, आओर जे एहि लोकमे लाभ आओर परलोकमे निर्वाह करात छथि (अर्थात् भगवान् क दिव्य धाममे दिव्य देहसँ सदिखन भगवत्सेवामे नियुक्त राखैत छथि)।।1।।
ई कहय, सुनय आओर स्मरण करबामे बड नीक (नीक आओर मधुर) अछि ; तुलसीदासके तँ शीराम-लक्ष्मण जेका दुनू प्रिय छथि|हिनक ('र' आओर 'म' के) पृथक-पृथक वर्णन करयमे प्रीति बिलगाबैत अछि (अर्थात बीजमन्त्रक दृष्टिसँ एहिक उच्चारण, अर्थ आओर फलमे भेद बूझि पडैत अछि) परंच छथि ई जीव आओर ब्रह्मके समान स्वभावसँ संग रहयवाला (सदा एकरूप आओर एकरस) ।।2।।
ई दुनू आखर नर-नारायणके सुनर भाई छथि, ई जगतक पालन आओर विशेषरूपसँ भक्तसभक रक्षा करबाहार छथि|ई भक्तिरूपी

सुनर स्तीक कानक सुनर गहना (करणफूल) अछि आओर गतक तक लेल कामक्षा चान आओर सूयवछवि ।।3।।

ई नीक गक्त (मोक) र वा अमृतक सदि आओर तृक्प्तक समान छवि, कच्छप आओर शेषजीक समान पृथ्वीके धारण करक्हहार छवि, भक्तसभक मनर वा सुनर कमलमे विहार करयिला भकि समान छवि आओर जीहर वा यशोदाजीके लेल शीकृष्ण आओर बलरामजीके समान (आनन्द देयिला) छवि ।।4।।

तुलसीदासजी कहैत छवि- शीरघुनाजीके नामके दुनू आखर बड शोभा दैत छवि, जाक्हमेसँ एक (रकार) छतर प (रेफ -) सँ आओर दोसर (मकार) मुकुमिवा (अनुसिर -) र पसँ सभ आखरसभके उपर छवि ।।20।।

बुझनामे नाम आओर नामी दुनू एक जेका छवि, मुदा दुनूमे परस्पर सिमी आओर सेकि जेका पीक्त अछि, (अित् नाम आओर नामीमे पूणवएकता भेलोपर जेना सिमीक पाछू सेकि चलैत अछि ताक्ह पकारे नामके पाछू नामी चलैत छवि|पभु शीरामजी अपन राम नामेकि अनुगमन करैत छवि, नाम लैइतक्ह ओ आवा जाइत छवि)|नाम आओर र प दुनू ईशरक उपाधि छवि, (भगिनके नाम आओर र प) दुनू अकाब्यनीय छवि, अनादि छवि आओर सुनर (शुद भक्तयुक्त) बुद्दयेसँ क्हनक [दिव्य अविनाशि] सरि प बुझना जाइत अछि ।।1।।

एक्ह (नाम आओर र प) मे कोन पैघ अछि, कोन छोि अछि, ई कहब तँ अपराध होयत|क्हनक गुणसभक तारतम्य (कम-बेश) सुक्कय साधु जन सियं बूझ्झ लेताह|र प नामक अधीन देखल जाइत अछि, नामक बानु र पक जान नक्ह भय सकैछ ।।2।।

कोनो विशेषर प बानु ओकर नाम जानल तलहिपर राखलो कान्हल

नहि जा सकैछ आओर रूपके बिनु देखलो नामक स्मरण कयल जा तँ विशेष पेमक संग ओ रूप हृदयमे आबि जाइत अछि ।।3।।
नाम आओर रूपक गतिक बिखस्सा (विशेषताक कथा) अकथनीय अछि|ओ बुझलामे सुखदायक अछि, मुदा ओकर वर्णन नहि कयल जा सकैछ|निर्गुण आओर सगुनके मध्यमे नाम सुनर साक्षी अछि आओर दुनूक यथार्थ ज्ञान करौन्हिहार चतुर दुभाखिया अछि ।।4।।
तुलसीदासजी कहैत छथि, जौ तू भीतर आओर बाहर दुनू कात इजोत चाहैत छह तँ मुखरूपी दारक जीहरूपी दुहारिपर रामनामरूपी मणि-दियौरीके राखह|
बम्हाके बनायलगेल एहि पप च (दृश्य जगत) सँ बिरक्त भेल बैराग्यवान मुक्तयोगी पुरुष एहि नामके जीहसँ जपैत (तत्वज्ञानरूपी दिनमे)जागैत छथि आओर नाम आ रूपसँ रहित अनुपम, अनिर्वचनीय, अनामय बम्हसुखक अनुभव करैत छथि ।।1।।
ओ परमात्माक गूढ रहस्यके (यथार्थ महिमाक) बूझय चाहैत छथि, सैह नामके जीहसँ जपिकय ओहिके जानि लैइत छथि [लौकिक सिद्धि सभके चाहनाहर अर्थार्थी] साधक लौ लगाकय नामक जाप करैत छथि आओर अणिमादि (आठू)सिद्धि सभके पाबिकय सिद्ध भय जाइत छथि ।।2।।
[संकटसँ अकुलायल] आतवभक्त नाम जाप करैत छथि तँ हुनक बड भारी अधलाह-अधलाह संकट मेटि जाइत छन्हि आओर ओ सुखी भय जाइत छथि|जगतमे चारि पकारक (1- अर्थार्थी - धनादिक चाहसँ भजन्हिहार, 2- आतव - संकटक निवृत्तिक हेतु भजन्हिहार , 3- जिज्ञासु : भगवानके जनबाक इच्छासँ भजन्हिहार, 4- ज्ञानी - भगवानके तत्वसँ जानिकय स्वभाविके पेमसँ भजन्हिहार) रामभक्त छथि आओर चारू पुण्यात्मा, पापरहित आओर उदार छथि ।।3।।

चारि चतुर भक्तसभके नामेटिक आधार छक्ह|एक्हमे जानी भक्त पभुके विशेषर पसँ क्षय छक्ह|एनातँ चार युगमे आ चार दिमे नामक पभाि अक्छ, परंतु कलयुगमे विशेषर पसँ अक्छ|एक्हमेतँ (नामके छोक्ड) दोसर कोनो उपाये नक्ह अक्छ ।।4।।

जे सभ पकारक (भोग आओर मोक्क्के सेहो) कामनासभसँ रक्हत आओर शीरामभक्क्तक रसमे लीन छथि , ओ सेहो नामक सुनर पेमर क्षा अमृतक सरोरिमे अपन मनके मीन बनौने धयने छथि (अिात ओ नामर क्षा सुधाक क्तरंतर आसिादिन करैत रहैत छथि, क्णोभक्र लेल ओक्हसँ फक्कि होयि नक्ह चाहैछ) ।।22।।

क्तगुबा आओर सगुण - बम्हके दूि सिरिप छक्ह|ई दुनूि अकिनीय, अिाह, अनाक्द आओर अनुपम छथि |हमर सम्मक्तसँ नाम एक्ह दुनूसँ पैघ अक्छ, जे पन बलसँ दुनूके अपन िशिमे कयने अक्छ ।।1।।

सज्जनगण एक्ह बातके हमर दासक क्ढठई िकेलि काक्योक्क्त नक्ह बूझैि|हम अपन मनक विशास, पेम आओर रक्चक बात कहैत छी|[क्तगुबा आओर सगुण] दुनू पकारक बम्हक जान अक्तक समान अक्छ जे काठक क्षतर अक्छ , परंतु देखाइछ नक्ह; आओर सगुण ओक्ह पकि अक्तक समान अक्छ जे पत्यक देखाइत अक्छ|[तततिः दुनू एके अक्छ ; केलि पकि - अपकिके भेदसँ क्षन बुझना जाइत अक्छ|तक्हना क्तगुबा आओर सगुण तततिः एके अक्छ|एतेक भेलोसँ] दुनूि बुझबामे बड कक्ठन अक्छ, परंतु नामसँ दुनू सुगम भय जाइत अक्छ|एक्हलेल हम नामके (क्तगुबा) बम्हसँ आओर [सगुण] रामसँ पैघ कहने छी, बम्ह क्यापक अक्छ, एक अक्छ, अविनाक्श अक्छ ; सता चैतन्य आओर आनन्दक घनराक्श अक्छ ।।2-3।।

एहन विकाररक्हत पभुक हृदयमे रक्हतो जगतक सभि जीि दीन

आओर दुखी अछ|नाओक कारपन कय (नाओक यािविसरिप, मह्मा , रहस्य आओर पभाकिे जाक्कय) नाओक जतन कयलासँ (शदापूकि नामजापर व्म साधन कयलासँ) िएह बम्ह एना पकि भय जाइत अछ जेना रतके जाक्गेलासँ ओकर मूल्य ।।4।।

एक्हतरहे क्गुणासँ नाओक पभाि अत्यंत पैघ अछ|आब अपन विचारक अनुसारे कहैत छी क नाम [सगुण]

रामसँ सेहो पैघ अछ ।।23।।

शीरामचन्रजी भक्तसभक क्हतक िस्ते मनुष्य शरीर धारण कय सियं कि सह्कय साधुसभके सुखी कयलाह ; परंतु भक्तगण पेमक संग नाओक जाप करैत सहजह्मे आनन्द आओर कल्याणक घर भय जाइत छवि ।।1।।

शीरामचन्रजी एकिा तपसीियेिक स्ती (अहल्या)के तारलक्ह, परन्तु नाम तँ करोडोिा दुिक कागडल बुद्दके सुधाक देलक|शीरामजी ऋवि विशाक्मतक क्हतक िस्ते एकिा सुकेतु यक्क कन्या ताडकाक सेना आओर पुत (सुबाहु) सह्त समाक्त कयलक्ह; परन्तु नाम अपन भक्तसभक दोष, दु:ख आओर दुराशासभक एना नाश कय दइत अछ जेना सूयवराक्क|शीरामजी तँ सियं क्शािजीक धनुषके तोडलक्ह परन्तु नाओक पतापेिि संसारक सभि भयसभक नाश करयािला अछ ।।2-3।।

परयािला अछ ।।2-3।।

पभु शीरामजीक [भयानक] दण्डक िनके सोहनगर बनौलक्ह, परन्तु नाम तँ असंख्य मनुष्यसभक मनके पवित कय देलक|शीरघुनािजी राक्ससभक समूहके मारलक्ह , परन्तु नाम तँ कक्लयुगक समस्त पापसभक जक्ड उखाडयािला अछ ।।4।।

शीरघुनािजी तँ शबरी, जिायु आक्द उतमे सेिकसभके मुक्क्त देलक्ह;

परन्तु नाम तँ अनगनत दुि सभक उदार कयलक|नाओक गुणसभक किा िदसभमे पक्सद अक्छ ।।24।।

शीरामजी सुगीि आओर विभीषण दुईएिके अपन शरणमे रखलक्ह, ई सभक्कयो जानैत छवि; परंतु नाम तँ अनेको गरीबसभपर कृपा कयने अक्छ|नाओक ई सुनर विरद लोक िदमे विशेषर पसँ पकाक्शत अक्छ ।।1।।

शीरामजी तँ भालु आओर बानरक सेना बिरलक्ह आओर समुरपर पूल बान्हयलेल कनेक पक्रशम नक्ह कयलक्ह ; परंतु नाम लैतक्ह संसार-समुर सूक्ख जाइत अक्छ|मनमे विचार कर [क्क जे दुनूमे कोन पैघ अक्छ] ।।2।।

शीरामचन्रजी कुिम्भसमेत राणिके युदमे मारलक्ह , तखन सीतासमेत अपन नगर (अयोध्या) मे पिश कयलक्ह|राम राजा भेलाह , अधि हुनक राजधानी भेल , देिता आओर मुक्न सुनर िणीसँ क्नक गुण गाित छवि|परंतु सेकि (भक्त) पेमपूिक नामके स्मरणमातसँ क्बनु पक्रशम मोहक पबल सेनाके जीक्तकय पेममे मन्न भेल अपने सुखमे विचरैत छवि, नाओक पसादसँ हुनका सपनहुमे कोनो क्चंता नक्ह सताबैछ ।।2-4।।

एक्ह तरहे नाम [क्नगुण] बम्ह आओर [सगुण] राम दुनूसँ पैघ अक्छ|ई बरदान देबयिलाके सेहो बर देबयिला अक्छ|शीक्शजी तँ अपन हृदयमे ई जाक्नयेकय सै करोड रामचक्रतमेसँ एक्ह 'राम ' नामके [सारर पसँ चूक्नकय] गहण कयने छवि ।।25।।

मासापारायण, पक्हल विशाम

नमेिक पसादसँ क्शजी अविनाक्श छवि आओर अमंगल िषिला

भेलोसँ सेहो मंगलक राशि छथि|शुकदेवजी आओर सनकादि सिद्ध, मुनि, योगीगण नामेकि पसादसँ ब्रह्मानन्दके भोगैत छथि ।।1।।
नारदजी नामक पतापके जानलगेल छथि|हरि समस्त संसारके प्रिय छथि, [हरिके हर प्रिय छथि] आओर आहा (शीनारदजी) हरि आओर हर दुनूगोटिके प्रिय छी|नामके जपलासँ पभु कृपा कयलनिह , जाहिसँ पहलाद भक्तशिरोमणि भय गेलाह ।।2।।
धुवजी ग्लानिसँ (विमाताक वचनसँ दुखी भय सकामभविसँ) हरिनामके जपलनिह आओर ओकर पतापसँ अचल अनुपम स्थान (धुवलोक) पाप्त कयलनिह| हनुमानजी पवित नाओक स्मरण कय शीरामजीके अपन वशिमे कय रखने छथि ।।3।।
नीच अजामिल, गज आओर गणिका (वेश्या) सेहो शीहरिक नाओक पभाविसँ मुक्त भय गेल|हम नामक बडाई कतय धरि कहू, राम सेहो नामक गुणसभके नहि गाबि सकैत छथि ।।4।।
कलियुगमे रामक नाम कल्पतरु (मनचाहल पदार्थ देनिहार) आओर कल्याणक निवास (मुक्तिक घर) अछि, जकर स्मरण कयलासँ भाग-जेका (निकृष्ट) तुलसीदास तुलसीक समाने (पवित) भय गेलाह ।।26।।
[केवल कलियुगेकि बात नहि अछि,] चारु युगमे, तीनू कालमे आओर तीनू लोकमे नामके जपिकय जीव शोकरहित भेल छथि|वेद, पुराण आओर संतसभक मन ईयैह अछि कि समस्त पुण्यसभक फल शीरामजीमे [अथवा रामनाममे] पेम भेनाई अछि ।।1।।
पहिने (सत्य) यूगमे ध्यानसँ, दोसर (तेता) युगमे यजसँ आओर दापरमे पूजलसँ भगवान पसन होईत छथि; मुदा कलियुग केवल पापक जडि आओर मलिन अछि, एहिमे मनुष्यसभक मन पापरूपी समुरमे माछ बनल गेल अछि (अर्थात पापसँ कहियो फराक होबहे नहि चाहैछ ;

एकहसँ ध्यान, यज आओर पूजन नकह बका सकैछ) ।।2।।
एहन कराल (कक्लयुगके) कालमे तँ नामे कल्पाृकि अक्छ, जे स्मरण कक्रतक्ह संसारक सभा जंजालसभक नाश कय देयािला अक्छ, परलोक परम क्हताक्ा आओर एक्ह लोकक माता-क्पता अक्छ (अाित परलोकमे भगािनक परमधाम दैत अक्छ आओर एक्ह लोकमे माता-क्पताक जेका सभ तरहे पालन आओर रक्ण करैत अक्छ) ।।3।।
कक्लयुगमे ने कमव अक्छ, ने भक्कत्त अक्छ आओर ने जाने अक्छ ; रामनामे एका आधार अक्छ|कपकि खान कक्लयुगरवप कालनेक्मके (मारबाक) लेल रामनामे बुक्द्दमान आओर समाि शीहनुमानजी छिक ।।4।।
 रामनाम शीनृक्सह भगािन छिक, कक्लयुग क्हरण्यकक्शपु अक्छ आओर जाप करयािला लोक पहलादके जेका अक्छ ; ई रामनाम देितासभक शतु (कक्लयुगरवप दैत्य) के मारकय जाप करक्हहारक रक्ा करत ।।27।।
नीक भाि (पेम) सँ, अधलाह भाि (िैर) सँ, करोधसँ िा आलस्यसँ कोनो तरहे नाम जपलासँ दसू क्दशामे कल्याण होईत अक्छ|ओक्ह (परम कल्याणकाक्र)रामनामक स्मरण कय क आओर शीरघुनाािजीके माा झुकाय कय हम रामजीक गुणसभक िणवन करैत छी ।।1।।
ओ (शीरामजी)हमर [क्बगडल] सभ तरहे सुधाक्र लेताह; जक्नक कृपा कृपा कयलासँ नक्ह अघाईछ|राम-सँ उतम सिाक्म आओर हमराजेका अधलाह सेिक ! ततबोपर ओ दयाक्नक्ध अपन क्दक्स देक्खकय हमरा पोसने छिक ।।2।।
लोक आओर िेदमे सेहो नीक सिामीक ईएह रीक्त परक्सद अक्छ जे ओ क्िनय सुक्नतक्ह पेमके चीक्ह लैत छिक|धक्नक — गरीब , गँाि — नागर , पक्णडत — मुरख, बदनाम — यशसिी ।।3।।

सुकवि — कुकवि, सभ नर — नारि अपन — अपन बुद्धिक अनुसारे राजाक सराहना करैत छथि|आओर साधु, बुद्धिमान, सुशील, ईशरक अंशसँ उत्पन्न कृपालु राजा - ।।4।।
सभक सूनिकय आओर हुनक िणी , भक्ति, विनय आओर चालिके चीन्हिकय सुनर (कोमठ) िणीसँ सभक यिायोग्य सम्मान करैत छथि|ई सभाितँ संसारक राजासभक अछि, कोसलनाि शारामचन्द्रजी तँ चतुरशिरोमणि छथि ।।5।।
शीरामजी तँ विशुद पेमेिसँ रीझैत छथि, मुदा जगत् मे हमरासँ बढिकय मुर ख आ मलिनबुद्धि आओर के होयत ? ।।6।।
ताियो कृपालु शीरामचन्द्रजी हम दुि सेकिक पीति आओर रुचिके अिशिय रखताह, जे पािरके जहाज आओर बानर — भालुसभके बुद्धिमान मंती बना लेलाह ।।28 (क)।।
सभकियो हमरा शीरामजीक सेकि कहैत छथि आओर हम सेहो (बिना लाज - संकोचके) कहाबैत छी (कहनहारक विरोध नहि करैछ); कृपालु शीरामजी एहि निंदाके सहैत छिि जे शीसीतानाििजी — जेहन सिामिक तुलसीदास जेका सेकि अछि ।।28 (ख)।।
ई हमर बड पैघ ढिठई आ दोख अछि, हमर पापके सुनिकय नरको नाक सिकोड़ि लेने अछि (अरिात नरकोमे हमरा लेल ठौर नहि अछि)|ई बूझिकय हमरा अपनहि कल्पित डरसँ ड र भय रहल अछि, मुदा भगिान् शीरामचन्द्रजी तँ सपनोमे एहिपर (हमर एहि ढिठई आओर दोषपर) ध्यान नहि देलाह ।।1।।
िरं हमर पभु शीरामचन्द्रजी तँ एहि बातके सुनिक, देखिकय आओर अपन सुचितरुपी चकुसँ िनरीकण कय हमर भक्ति आओर बुद्धिक (उनि) सराहलिह|कियएक तँ कहबामे चाहे बिगड़ि जाय (अिात हम चाहे सियंके भगिानिक सेकि कहैत — कहािित रहू), मुदा हृदयमे

नीकपन होयबाक चाही|(हृदयमे तँ अपनाके हुनक सेकि बनय जोग नहि मानिकय पाप आ दीने मानैत छी, ई नीकपन अछि ।) शीरामचन्द्रजी सेहो दासके हृदयक [नीक] रुचि जानिकय रीझ जाइत छथि ।।2।।

पभुके चितमे अपन भक्तसभक कयलगेल भूल चूक याद नहि रहैछ (ओ ओहिके बिसरि जाइत छथि) आओर हुनक हृदय (के अच्छाई - नीकी) के सै-सै बेर याद करैत रहैत छथि|जाहि पापक कारणे ओ बालिके व्याध जेका मारने छलाह, तेहने कुचालि फेर सुगीवि चलल ।।3।।

िएह करनी विभीषणक छल, मुदा शीरामचन्द्रजी सपनहुमे ओकर विचार नहि कयलाह|उनहि भरतजीसँ भेकिाल शीरघुनाजिी हुनक सम्मान कयलन्हि आओर राजसभामे सेहो हुनक गुणक बखान कयलन्हि ।।4।।

पभु (शीरामचन्द्रजी) तँ गाछक नीचा आओर बानर डारि पर (अिात कतय मयादापुरषोतम सच्चिदानन्दघन परमात्मा शीरामजी आओर कतय गाछक डारि सभपर कूदयिाला बानर ।) मुदा एहन बानरसभके सेहो ओ अपने जेका बना लेलन्हि|तुलसीदासजी कहैत छथि जे शीरामचन्द्रजी जैका शीलनिधान स्वामि कतहुि नहि अछि ।।29 (क)।।

हे शीरामजी ! अपनेक अच्छाईसँ सभक नीक अछि (अिात अपनेक कल्याणमय स्वभािा सभक कल्याण करयिाला अछि)|जौ ई बात साच अछि तँ तुलसीदासक सेहो कल्याणे होयत ।।29 (ख)।।

एहि तरहे अपन गुण दोषसभके कहिकय आओर सभके फेर मािनािय हम शीरघुनाजिीक निर्मल यश िणिन करैत छी जाहिके सुनलासँ कलियुगक पाप निि भय जाईत अछि ।।29 (ग)।।

मुक्त याजलिक्यजी जे सोहनगर कि मुक्तशेष भारदाजजीके सुनयने छलाह, सएह संिदके हम बखाक्तकय कहब, सभ सज्जन सुखक अनुभि करैत ओक्हके सुनू ।।1।।

क्शजी पक्हने एक्ह सोहनगर चक्रतके रचलाह , फेर कृपा कय पार्विीजीके सुनयलाह|एिह चक्रत क्शजी काकभुशुक्षडजीके रामभक्त आओर अक्धकाक्र चीक्हकय देलाह ।।2।।

ओक्ह काकभुशुक्षडजीसँ फेर याजलिक्यजी पौलाह आओर ओ फेर ओक्हके भारदाजजीके गाविकय सुनयलाह|ओ दुनू िक्ता आओर शोता (याजलिक्य आओर भरदाज) समान शीलिला आओर समदशी छवि आओर शाहक्रक लीलाके जानैत छवि ।।3।।

ओ अपन जानसँ तीनू कालक बातके तरहतीपर रखने धातीक जेका (पत्यक) जानैत छवि|आओर सेहो जे सुजान (भगिन् क लीलासभक रहस्य जानयिला) हक्रभक्त छवि, ओ एक्ह चक्रतके नाना पकारसँ कहैत , सुनैत आओर समझैत छवि ।।4।।

फेर एिह कि हम िराह केतमे अपन गुरजीसँ सुनलहुँ; मुदा ताक्हकाल हम बालपनक कारणे बड बेसमझ छलहुँ ताक्हसँ ओक्हके ओक्हपकारे (नीक जेका) बुझलहुँ नक्हं ।।30 (क)।।

शीरामजीक गूढ किके (कहयिला) आओर शोता (सुनयिला) दुनूि शानक खजाना (पूर जानी) होईत छवि|हम कक्लयुगक पापसभसँ गसल महामूढ जड जीि भला ओक्हके कोना बूक्झ सक्कतहुँ ।।30 (ख)।।

तिक्पयो गुरजी जखन बेक्र-बेक्र कि कहलक्ह, तखन बुक्दक अनुसारे क्कछु बुझना गेल|एिह आब हमरासँ भाषामे रचल जायत, जाक्हसँ मरा मनके सन्तोष हो ।।1।।

जेना क्कछु हमरामे बुक्द आओर विकिक बल अक्छ, हम हृदयमे हर पेरणासँ ताक्हक अनुसारे कहब|हम अपन संदेह, अजान आओर भमके

हरयािला कि। रचैत छी, जे संसाररवा नदीके पार करबाकलेल नाि अवछ ।।2।।

रामकि। पवण्डतसभके विशाम देयि, सभ मनुष्यसभके पसन करय आओर कवलयुगक पापसभक नाश करवनहार अवछ|रामकि। कवलयुर वा सापक लेल मयूरनी अवछ आओर विकिरवा अवमाके पकि करबााकलेल अरवण (मनि न करबाक लकडी) अवछ, (अिात एवह कि।सँ जानक पावप्त होईत अवछ) ।।3।।

रामकि। कवलयुमे सभ मनोरिके पूणव करवनहार कामधेनु गौ अवछ आओर सज्जनिदिक लेल सुनर संजीवि। जडी अवछ|पृथ्वीपर इएह अमृतक नदी अवछ, जन्म - मरणरवा भयके नाश करवनहार आओर भमरवा बेगसभके खयबाक लेल सवपवण अवछ ।।4।।

ई रामकि। असुरसभके सेनाक जेका नरकसभके नाश करवनहार आओर साधुरप देितासभके कुलक वहत करवनहार पािवी (दुगा) अवछ|ई संत-समाजरवा कीरसमुरक लेल लक्ष्मीजीक समान अवछ आओर सम्पूणव विशिक भार उठाबयमे अचल पृथ्वीक समान अवछ ।।5।।

यमदूतसभक मुँहपर कवरखा लगेबा लेल ई जगतमे यमुनाजीक समान अवछ आओर जीिसिभके मुवक्त देबाकलेल बुझू कावशए अवछ|ई शीरामजीके पवित तुलसी जेका वपय अवछ आओर तुलसीदासक लेल हुलसी (तुलसीदासजीक माय) जेका हृदयसँ वहत करवनहार अवछ ।।6।।

ई रामकि। वशािजीके नमवदाजीक समान वपय अवछ, ई सभ वसवदसभक आ सुख - सम्पवतक रावश अवछ|सदगुणरवा देितासभके उत्पन आओर पोषबाकलेल माता अवदवतक समान अवछ|शीरघुनािजीक भवक्त आओर पेमक परम सीमा जेका अवछ ।।7।

तुलसीसजी हैत छथि जे रामकथा मन्दाकिनी नदी अछि, सुनर (निमर्ल) चित्त चित्रकूट अछि, आओर सुनर स्नेहे वन अछि, जाहिमे श्रीसीतारामजी विहार करैत छथि ।।31।।

श्रीरामचन्द्रजीक चरित्र सुनर चिन्तामणि अछि आओर संतसभक सुबुद्धिरूपी स्त्रीक सुनर शृंगार अछि|श्रीरामचन्द्रजीके गुणसमूह जगत् क कल्याण करवाहिहार आओर मुक्ति, धन, धमर्व आओर परमधामके देयिवाला अछि ।।1।।

ज्ञान, वैराग्य आओर योगकलेल सद्गुरु आओर संसाररूपी भयंकर रोगक नाश करबालेल देवतासभक बैद (अश्विनीकुमार) जेका अछि|ई श्रीरामचन्द्रजीके प्रेमके उत्पन्न करबालेल माता - पिता छथि आओर सम्पूणर्व्रत, धमर्वआओर नियमसभक बीज छथि ।।2।।

पाप संताप आ शोकक नाश करयवाला आओर एहि लोक आओर परलोकके प्रिय पालन करवाहिहार छथि|विचार (ज्ञान) रूपी राजाके शुरवीर मन्त्री आओर लोभरूपी आपार समुद्रके सोखबाकलेल अगस्त्य मुनि छथि ।।3।।

भक्तगणक मनरूपी वनमे बसयवाला काम, क्रोध आओर कलियुगके पापरूपी हाथीसभके मारबाक लेल सिंहक बच्चा अछि|शिवजीक पूज्य आओर प्रियतम अतिथि छथि आओर दरिद्रतारूपी दावानलके बुतयबाक लेल कामना पूणर्वकरवाहिहार मेघ छथि ।।4।।

विषयरूपी सापक विष उतारबालेल मंत्र आओर महामणि अछि|ई ललाटपर लिखलगेल कठिनतासँ मेटायवाला अधलाह लेखसभके (मंग पारब्ध) मेटि देयिवाला अछि|अज्ञानरूपी अन्हारके हरण करबाकलेल सूयर्किरणक जेका आओर सेरूपी धानके करबालेल मेघके समान अछि ।।5।।

मनोवाञ्छित वस्तु देयिमे शेष कल्पवृक्ष समान अछि आओर सेवा

करबामे हक्र ___हरके जेका सुलभ आओर सुख देयिाला अक्छ|सुकविरिक्र शरद् ऋतुक मनरक्र आकाशके सुशोक्रत करबालेल तरेगणक समाने आओर शीरामजीक भक्तसभक तँ जीनिधने अक्छ ।।6।।

सम्पूणवसुकृतक फल महान भोगक समाने अक्छ|सेकिसभक मनरक्र मानसरोरिके लेल हंस जेका आओर पविति करबामे गंगाजीक तरंगमालाक समाने अक्छ ।।7।।

शीरामजीक गुणसभक समूह कुमागव्र कुचाक्ल आओर कक्लयुगक कपि, दम्भ आओर पाखण्डके जरयबाक लेल ओहने अक्छ जेना ईधनक लेल पचंड अक्त ।।32(क)।।

रामचक्रत पूवामबाक चानक क्कवरणक जेका सभके सुख देयिाला अक्छ, मुदा सज्जनरक्र कुमुक्दक्त आओर चकोरक क्चतक लेल तँ विशेष क्हतकर आओर महान लाभदायक अक्छ ।।32(ख)।।

जाक्ह तरहे शीपाविीजी शीक्शजीसँ पश कयलक्ह आओर जाक्ह तरहे शीक्शजी विस्तारसँ ओकर उतर कहलक्ह, ओ सभ कारणे हम विक्चत किाक रचना कय गाक्बकय कहब ।।1।।

जे ई किा पक्हने नक्ह सुनने होइि, ओ एक्हके सुक्नकय आशयवनक्ह करौि|जे जानी एक्ह विक्चत किाके सुनने छवि, ओ ई जाक्नकय आश्चयवनक्ह करैि क्क संसारमे रामकिाक कोनो सीमा नक्ह अक्छ (रामकिा अनन्त अक्छ)|हुनक मनमे एहन विशास रहैत अक्छ। नाना पकारसँ शीरामचन्द्रजीक अतिार भेल अक्छ आओर सै करोड आ अपार रामायण अक्छ ।।2-3।।

कल्पभेदक अनुसारे शीहक्रक सुनर चक्रतके मुक्नशरगण अनेको पकारसँ गयलक्ह अक्छ|हृदयमे एहन विचाक्रकय संदेह जुक्न कर आओर आदरसंग पेमसँ एक्ह किाके सुनू ।।4।।

शीरमचन्रजी अनन्त छथि, हुनक गुण सेहो अनन्त छक्ह आओर हुनक कथाक विस्तार सेहो असीम अछि|ते वजनक विचार कामना छक्ह, ओ एक्ह कथाके सुक्तकय आशयवनक्ह मानताह ।।3।।

एक्ह पकारे सभ संदेहसभके फक्किकय आओर शीगुरजीक चरणकमलक रजके माथपर धारणकय हम फेर हाथ जोक्डकय सभक विनती करैत छी, जाक्हसँ कथाक रचनामे कोनो दोष स्पशवनक्ह करय ।।1।।

आब हम आदरपूिक शीक्शाजीके माथ नाकिय शीरामचन्रजीके गुणसभक कामना कथा कहैत छी|शीहक्रक चरणपर माथ राक्खकय संित 1631 मे एक्ह कथाके आरम्भ करैत छी ।।2।।

चैत मासक नौमी क्तथि मंगल क्दनकय शीअयोध्याजीमे ई चक्रत पकाक्शत भेल|जाक्ह क्दन शीरामजीक जन्म होईत अछि, िदि कहैत छथि जे ओक्ह क्दन सभि तीथिओतय (शीअयोध्याजीमे) चल आबैत अछि ।।3।।

असुर, नाग, पकी, मनुष्य, मुक्त आओर देिता सभ अयोध्याजीमे आक्बकय शीरघुनाथजीक सेिा करैत छथि|बुझ्क्कगण जन्मक महोत्सि मनाित छथि आओर शीरामचन्रजीक सुनर कीक्तक गान करैत छथि ।।4।।

सज्जन सभक बहुत ___रास समूह ओक्ह क्दन शीसरयूजीक पवित जलमे स्नान करैत छथि आओर हृदयमे सुनर श्यामशरीर शीरघुनाथजीक ध्यान कय हुनक नाओक जाप करैत छथि ।।34।।

िदि ___पुराण कहैत छथि क्क शीसरयुजीक दशबा, स्पशव् स्नान आओर जलपान पापसभके हरैत अछि|ई नदी बड पवित अछि, एकर मक्हमा अनन्त अछि, जाक्हके विमल बुक्द्ध सरसितीजी सेहो नक्ह कक्ह सकैछ ।।1।।

ई शोभयमान अयोध्यापुरी शीरामचन्द्रजीक परम धाम के देबहहार अछि, सभ लोकसभमे पसिद आओर अत्यंत पवित अछि|जगत् मे (अण्डज, स्विदज, उद्भिज आओर जरायुज) चारि खानि (पकार) के अनन्त जीि छवि , एहिमेसँ जे कियो अयोध्याजीमे शरीर छोरैत छवि ओ फेर संसारमे नहि आबैछ (जन्म-मृत्युके चकसँ छूटि कय भगिानिके परमधाममे िास करैत छवि) ।।2।।

एहि अयोध्यापुरीके सभ पकारसँ मनोहर, सभि सिद्धि सभके देबहहार आओर कल्याणक खान बूझिकय हम एहि िमल किाक आरम्भ कयलहुँ, जाहिके सुनलासँ काम, मद, आओर दम्भ नि भय जाईत अछि ।।3।।

एहि नाम रामचरितमानस अछि, जाहिके कानसँ सुनलासँ शान्ति भेलैत अछि|मनरूपी हािी विषयरूपी दािानलमे जरि रहल अछि, ओ जौ एहि रामचरितमानसरूपी सरोिरमे आबि जाय तँ सुखी भय जाय ।।4।।

ई रामचरितमानस मुनिसभके वपय अछि , एहि सोहनगर आओर पवित मानसके शिािजी रचलखिन|ई तीनू पकारक दोष, दु:ख आओर दरिरताके आ कलियुगक कुचालिसभक आओर सभि पापसभक नाश करबहहार अछि ।।5।।

शीमहादेिजी एहिके रचिकय अपन मनमे रखने छलाह आओर सुअिसर पाबि कय पािवतीजीके कहलखिन|ताहिसँ शिािजी एहिके अपन हृदयमे देखिकय आओर पसन भय एहिक सुनर ‘रामचरितमानस’ नाि रखलाह ।।6।।

हम सएह सुख देनहार सोहनगर रामकिाके कहैत छी, हे सज्जनिृिद ! आदरपूिक मन लगाकय ई सुनू ।।7।।

ई रामचरितमानस जेना अछि, जाहि तरहे बनल अछि आओर जाहि

हेतुसँ जगतमे एकर पचार भेल, आब िएह सभ कि हम शीउमा-महेशरक स्मरण कय कहैत छी ।।35।।

शीवशिजीक कृपासँ ओकर हृदयमे सुनर बुद्धक विकास भेल, जाहसँ ई तुलसीदास शीरामचवरतमानसके कवि भेल|अपन बुद्धक अनुसारे तँ ओ एहके मनोहरे बनािति अछ|मुदा तखनो हे सज्जनृिद ! सुनर वतसँ सुनकय एहके अपने सुधावर लेब ।।1।।

सगुण लीलाक जे विस्तारसँ िणब करैत छवि, िएह राम-सुयशरवप जलक नमलता अछ, जे मलक नाश करैत अछ; आओर जाह पेमभक्तक िणब नह कयल जा सकैछ, िएह जलक मधुरता आओर सुनर शीतलता अछ ।।3।।

ओ (राम-सुयशरवप) जल सतकमबवप धानक लेल हतकर अछ आओर शीरामजीक भक्तसभक तँ वजनि अछ|ओ पवित जल बुद्धरवप पृथीपर खसल आओर समिकय सोहनगर कानरवप मागबँ चलल आओर मानस (हृदय) रवप शेष सिनमे भवरकय ओतह सिर भय गेल|िएह पुरनाकय सुनर, रवगर, शीतल आओर सुख देनहार भय गेल ।।4-5।।

एह किमे बुद्धसँ विचावरकय जे चावरि अत्यंत सुनर आओर उतम संिद (भुशुवणड-गरड, वशि-पाविर, याजलिक्य-भरदाज आओर तुलसीदास आओर संत) रचल अछ; िएह एह पवित आओर सुनर सरोिरके चावरि मनोहर घाि अछ ।।36।।

साति काणडे एह मानस-सरोिरक सुनर साति सढी अछ, वजनकी जानरवप आँखसँ देखतह मन पसन भय जाइत अछ, शीरघुनािजीक नगुण (पाकृतक गुणसभसँ अतीत) आओर नबाध (एकरस) महमाक जे िणब कयल जायत, िएह एह सुनर जलक अिह गहराई अछ ।।1।।

शीरामचन्द्रजी आओर शीसीताजीक यश अमृतकसमाने जल अछि|एहिमे जे उपमासभ देल गेल अछि एिह तरंगसभक मनोहर विलास अछि|सुनर चौपाईयेसभ एहिमे घनगर पसरल पुरइन (कमलिनी) अछि आओर कविताक युक्तिसभ सुनर मणि (मोती) उत्पन्न करएबहार सोहनगर सीपसभ अछि ।।2।।

जे सुनर छन्द, सोरठा आओर दोहासभ अछि, एिह एहिमे बहुरंगा कमलसभक समूह सुशोभित अछि|अनुपम अर्थ ऊँच भाि आओर सुनर भाषे पराग (पुष्परज), मकरन्द (पुष्परस) आओर सुगंध अछि ।।3।।

सत्कर्मसभ (पुण्यसभ) के पुंज भौरासभक सुनर पाँति अछि, जान वैराग आओर विचार हंस अछि|कविताक ध्वनि िकोक्ति, गुण आओर जाईते अनेको पकारक माछ अछि ।।4।।

अर्थ धर्म, काम, मोक्ष- ई चार , जान-विजानक विचारकय कहब, काव्यके नौि रस, जाप, तप, योग आओर ैराग्यक पसंग- ई सभ एहि सरोिरके सुनर जलचर जीि छवि ।।5।।

सुकृती (पुण्यात्मा) गणलोकनिके, साधुलोकनिके आओर शीरामनामेक गुणसभक गाने विचित्र जलपक्षीसभक समान अछि|संतसभक सभे एहि सरोिरके चार कदिशक अमराई (आमकगाछी) छवि आओर शदधा िसंत ऋतुके समान कहल गेल अछि ।।6।।

नाना पकारसँ भक्तिनक नरपण आओर क्षमा, दया, आ दम (इन्द्रियनिगह) लतासभक मण्डप अछि|मनक निगह, यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्यवआओर अपरिगह), नियम (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय आओर ईशरपणिधान) ि हिनक फूल छिहि आओर शीहरिके चरणमे पेमे एहि जानरवा फलक रस अछि|ई िदसभक कहब िक ।।7।।

एक्ह (रामचक्रतमानस) मे आओरो जे अनेको पसंगसभक कि सभ अक्छ , िएह एक्हमे सूगा, कोईली आक्द रंग-क्बरंगक पकी अक्छ ।।8।।
किमे जे रोमा च होईत अक्छ, िएह िविका, बाग आओर िन छवि ; आओर जे सुख होईत अक्छ, िएह सुनर पकीसभक विहार अक्छ|क्समक्ल मने माली अक्छ जे पेमर क्प जलसँ सुनर आँक्ख दारा हुनका पिित (सीचैत) अक्छ ।।37।।
जे क्कयो एक्ह चक्रतके सक्रयाकय गाबैत छवि, िह एक्ह पोखक्रक रखिर छवि आओर जे स्त्री-पुरष सदा आदरपूिक एक्हके सुनैत छवि , िएह एक्ह सुनर मानसके अक्धकाक्र उतम देिता छवि ।।1।।
जे अक्त दुि आओर विषयी अक्छ ओ भाग्यहीन बौकला आ कौवि अक्छ, जे एक्ह सरोिरक समीप नक्ह जाईछ|क्कएकतँ एतय (एक्ह मानस-सरोिरमे) डोका, बेग आ सेिर जेका विषय-रसक नाना तरहक किि नक्ह अक्छ ।।2।।
ते बेचारा कौआ आओर बौकलार क्प विषयी लोक एतय आबयसँ हृदयमे हाक्र माक्न जाईत अक्छ|क्कएकतँ एक्ह सरोिरधक्र आबयमे बड कक्ठनाइ अक्छ|शीरामजीक कृपाक क्बनु एतय नक्ह आयल जा सकैछ ।।3।।
घोर कुसंगेि भयानक अधलाह बाि अक्छ ; तक्ह कुसंवासभक िचने बाघ, क्संह आओर साप अक्छ|घरक काम-काज आ गृहक्स्तक भाक्त-भाक्तक जंजाले अत्यंत दुगम्ब पैघ-पैघ पहाड अक्छ ।।4।।
मोह, मद आओर माने बड रास बीहड िन अक्छ आओर नाना पकारक कुतके भयानक नदीसभ अक्छ ।।5।।
क्जनका संगमे शदार क्प बिखचा नक्ह छक्क्ह आओर संतसभक संग नक्ह छक्क्ह आओर क्जनका शीरघुनािजी क्पय नक्ह छक्क्ह, हुनकालेल ई मानस अत्यन्ते अगम अक्छ|(अिित शदा, सत्संग आओर भगिप्रेमक

कानु कयो एकरा के नहि पावि सकैछ) ।।38।।

जौ कोनो मनुष्य कि उठाकय ओतय धरि पहूँचो जाय तँ ओतय जाइतहि ओकरा नीरार बला जूड़ि आबि जाइत छैक|हृदयमे मूखताक बड कडगर जाड लागय लागैत छैक, जाहिसँ ओतय जाइयोकय ओ अभागा स्नान नहि कय पाबि अछि ।।1।।

ओकरा बूते ओहि सरोवरिमे स्नान आओर ओकर जलपान तँ कयल नहि जाइछ, ओ अभिमानसहित घूरि आबैत अछि|तखन जे कयो ओकरासँ [ओतयके हाल] पूछय आबैत अछि, तँ ओ [अपन अभागक बात नहि कहि] सरोवरिक कुचेष्टा कय ओकरा समझाबैत अछि ।।2।।

ई सभटा विघ्न ओकरा नहि व्यापैछ (बाधा नहि दैछ) जकरा शीरामचन्द्रजी सुनर कृपाक दृष्टि सँ देखैत छथि|एहि आदरपूर्वक एहि सरोवरिमे स्नान करैत अछि आओर महान् भयानक त्रितापसँ (आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक तापसँ) नहि जरैछ ।।3।।

जनक मनमे शीरामचन्द्रजीक चरणमे सुनर पेम अछि, ओ एहि सरोवरिके कहियो नहि छोरैछ|हे भाई ! जे कयो एहि सरोवरिमे स्नान करय चाही से मन लगाकय सत्संग करौथि ।।4।।

एहन मानस सरोवरिके हृदयक आँखिसँ देखिकय आओर ओहिमे डुब्बी मारिकय कविक बुद्धि निर्मल भय गेल, हृदयमे आनंद आओर उत्साह भरि गेल आओर पेम आ आनंदक पवाहि उमड़ि आयल ।।5।।

ताहिसँ ओ सुनर कवितारुपी नदी बहि गेल, जाहिमे शीरामजीक निर्मल यशरुपी जल भरल अछि|एहि (कवितारुपिणी नदी)क नाम सरयू अछि, जे सम्पूर्णसुनर मंगलसभक जड़ि अछि|लोकमत आओर वेदमत एहिक दूटा सुनर किनार अछि ।।6।।

ई सुनर मानस-सरोवरिक कन्या सरयू नदी बड पवित्र अछि आओर

कलियुगक [छोटि-पैघ] पापरूपी वृक्षनकाँ आओर किसभक जड़सँ उखाड़िकय फेकिहार अछि ।।7।।

तीनू पकारक शोतासभक समाजे एहि नदीक दुनू किनारपर बसल पुर, गाम आओर नगर छवि ; आओर संतसभक सभाएि सभि सुनर मंगलसभक जड़ि अनुपम अयोध्याजी छवि ।।39।।
सुनर कीर्तिरूपी सोहनगर सरयूजी रामभक्तिरूपी गंगाजीमे जा मिललिह|अनुज लक्ष्मणसहित शीरामजीक युदक पवित यशरूपी सोहनगर महानद सोन ओहिमे आबि मिलल ।।1।।
सेहि करबामे
[आशुतोष]

रबीन्द्र नारायण मिश्र

बिहार शराबबंदी कानून

भारतीय संविधानक धारा ४७मे निर्धारित निदेशक सिद्धांतक अनुसार राज्य पूर्णरूपसँ मद निषेधक हेतु प्रयास करत जाहिसँ लोकक जीवनस्तरमे सुधार होएत । यद्यपि संविधानक ई धारा बाध्यकारी नहि अछि तथापि एतबा तँ स्पष्ट अछि जे मद निषेध वा कोनो एही तरहक कोनो कानून संविधानक उपरोक्त भावनाक अनुकूल अछि ।मुदा व्यवहारिकताक कारणसँ देशक अधिकाश भागमे एहन कोनो कानून आइधरि लागू नहि भेल । बिहारमे सेहो ई कानून बहुत विलंबसँ सन्२०१६मे लागू भेल । मुदा जे कानून बनल से बहुत खोधिह भए गेल । अपराध आ दंडमे संतुलन नहि रहि गेल । ई बात नहि छैक जे एहि कानून बनलाक बाद किछु फाएदा नहि भेलैक । सरेआम शराब पीनाइ वा नशा करब कम जरूर भेलैक ,मुदा आन-आन समस्यासभ ततेक भए गेलैकजे थोडबे दिनमे ई कानून एकटा भार भए गेल ।
बिहारेमे नहि अपितु सौसे देशमे एहन कतेको लोक अछि जे शराबक लिते अपन पारिवारिक भरण-पोषण नीकसँ नहि कए पबैत अछि। शराब वा कोनो प्रकारक नशा केबाहार व्यक्ति तकर जोगार करबाक हेतु कोनो हद धरि जा सकैत अछि । ओकरा शराब चाही चाहे जेना होइ । कतेको बेर ई देखल जाइत अछि जे जँ नशेरी वा शराबीके नशा करबासँ केओ रोकैत अछि तँ ओ हिंसक भए जाइत अछि ,विरोध केबाहार पारिवारिक सदस्यक हत्या पर्यंत कए दैत अछि । शराबक नशामे नशेरीसभ अपन घरमे झगडा करैत रहैतअछि,अपशब्द तँ बजैत रहैत अछि। एहिसभसँ पारिवारिक माहौल

खराप भए जाइत अछि । नेनासभक पढाइ-लिखाइ ीपट भए जाइत छैक,ओकरसभक विकासपर पतिकूल पभाि पडैत अछि ।हमर अधीनस्त एकटा कर्मचारी अपन व्यवस्सा कहलाह जे हुनकर पिता बहुत अधिक शराबक सेिन करैत छलाह । नशा चढि गेलाक बाद ओ बेकाबू भए सभके तंग करैत रहैत छलाह । एकदिन साझमे ओ परीक्षाक तैयारी करैत छलाह । हुनकर पिता आबि कए भूगोल पढबए लगलथिन जखन कि काल्हि भेने इतिहासक परीक्षा हेबाक रहैक । ओ डरे किछु नहि बाजि सकलाह आ परीक्षामे ओही विषयमे असफल भए गेलाह जाहि कारणसँ हुनकर एकसाल बरबाद भए गेलनि । नोकरीमे हम एहन कैकटा परिवारिके उजरैत देखलिऐक । कैक बेर तँ शराबी/ नशेरीक मृत्यु भेलाक बाद परिवार बेसी सुरक्षित आ सुखी भए जाइत अछि।

ई बात सर्वविदित अछि जे शराब ि कोनो मादक बस्तुक अभ्यस्त लोकके नशाक जोगार िही िहे ताहि हेतु ओकरा जे करए पडैक। कतेको बेकसा िलक,मजदूर, ि छोटमोट नौकरी केनिहार लोक नशाक िकरमे अपन कमाइक अधिकाश हिस्सा नशा सेिनिमे खिथ कए लैत अछि । परिणामतः ओकर घरक अर्थव्यवस्था सदिखन गडबडाएल रहैत अछि । नेनासभ बिलटल रहैत अछि । नशेरीसभक घरक माहौल ततेक विषाक्त भेल रहैत अछि जे ओहिमे के कखन मरि जाएत तकर कोनो ठेकान नहि । कैकबेर तँ विषाक्त शराब पीबि पिसो लोक एकहिठाम सुतले रहि जाइत अछि ।नशा करब गरीबे नहि अपितु ककरो लेल खराप होइत अछि । कैकबेर देखल जाइत अछि जे नशा कए कार िलओनिहार भयंकर दुघर्टनाक शिकार भए जाइत अछि । एहनमे कैकबेर तँ पूरा परिवारे सुडाह भए जाइत अछि । अस्तु,शराब ि अन्यकोनो पकारक नशाक नियंतण करबाक

कोनो पयास स्तुत्य अछि ।

समाजक एहि कुप्रथासँ उबारबाक हेतु बिहार सरकार सन् २०१६मे शराबबंदी कानून लागू केलक । कानून बनि गेल आ लागूओ भए गेल । मुदा एकर पाधानसभ आशिमयकतासँ बेसीपनाशोधी छल । पचणामसरिप, लोकसभ शराबक कय-विकिय नुका कए करए लागल । एकबेर हम मधुबनीमे चक्सापर जाइत रही । ओहि समयमे शराबबंदी कानून बिहारमे लागले रहैक । चक्साबलाके ओहि कानूनक बारे मे पुछलिऐक । ओ कहलक-“जकरा पीबाक आदति छैक से तँ पीबे करत िहे ओकरा जे करए पडैक । पहिने दस रपयामे जतेक तारी भेटि जाइत छलैक आब तकर आधा िवगुना दामपर भेटैत छैक आ नशेरीसभ सेहो कीनैत अछि ,पीबैत अछि।”

बिहार शराबबंदी कानून २०१६क धारा ३७क मुताबिक जे केओ कतहु शराब पीबैत अछि ि कोनो नशा करैत अछि ि कतहु नाशा केने पकडल जाइत अछि तँ ओकरा कमसँ कम पाि साल आ बेसी सँ बेसी सात सालक जहलक संगे कम सँ कम एक लाख आ बेसी सँ बेसीदस लाखक जुमाना कएल जा सकैत अछि । तहिना जौँ केओ शराब पीबि कए ि कोनो नाशा कए झंझट करैत अछि चाहे ि हिंसा करैत अछि, अपन घर ि बाहर शराब पीबाक हेतु उत्साहित करैत अछि,सीकृति दैत अछि,शराबी लोकनिके अपना घरमे जमा करैत अछि तँओकरा कमसँ कम दस साल आ बेसी सँ बेसी आजन्म जहल आ एक लाख सँ लए कए दस लाख धरि जुमाना कएल जा सकैत अछि।

सन्२०१६मे शराबबंदी कानूनलागू भेलाक बाद तीन सालमे एक लाख सडसठि हजार आदमी पकडल गेल आ बाबन लाख दू हजार अस्सी लीटर शराब जब्त कएल गेल । सबाल ई अछि जे एतेक मातामे

शराब बनैत कोना अछि आओकरा एकठामसँ दोसर ठाम कोना पहुँचाएल जाइत अछि जखन कि एतेक सख्त कानून पूरा बिहार राज्यपर लागू अछि?एहनो सुनबामे अबैत अछि जेकैकबेर जब्त कएल गेल शराबके पुलिस स्वयं पिबि रा कए राखि लैत अछि । कैमूर नामक स्थानपरजखनएहने घटना पकडल गेल तँ पुलिस कहलक जे मूस शराब पीबि गेल ।

शराबबंदी कानूनक तहत नाथथबंगाल स्टेट रोड रासपोटथकारपोरेशन बनाम बिहार सरकारक मामिलाक सुनबाइ करैत बिहार सरकारक खिलाफ बहुत सख्त टिप्पणी करैत पटना उच्च न्यायालयकहलकिन्ह जे बिहार पुलिस आँखि मूनि कए काज कए रहल अछि आ निर्दोष जनताके बिहार शराबबंदी कानूनक तहत परेसान कएल जाइत अछि ।उपरोक्त मामिलामे बेगुसरायक नाथथबंगाल स्टेट रोड रासपोटथ कारपोरेशनक बस पुलिसएक्ट लेल जब्त कए लेलक जे ओहिमे एकटा यातीक संगमे शराबक बोतल पाओल गेल रहैक । माननीय उच्च न्यायालयक कहब रहनि जे किँक बस सरकारी छलैक ते ओकरा एना सोझे जब्त नहि करबाक चाहैत छलैक अपितु पुलिसके कुकीक पकृया करबाक चाही ।पुलिस दारा एक्ट कानूनक तहत कएल जा रहल ज्यादतीक उदाहरण दैत कोटथकहलकिन्ह जे एकटा बैक अधिकारी नोएडासँ बंगाल बदली भेलापर अपन घरक समानसभ पचहिन कंपनीक रक दारा पठओने छलाह। ओहि रकमे आनो लोकसभक सामान रहैक । पुलिसके ओहि रकमे शराबक बोतल भेटलैक । तकरबाद पुलिस पूरा रकक समानसभ जब्त कए लेलक । पचणामसरिप,बैक अधिकारीके बिना कोनो गलती केनहि बहुत परेसानी भए गेलैक । एहन उदाहरण सभक चिथिकरैत कोटथकहलकिन्ह जे पुलिस बिहार शराबबंदी कानूनक लोकसभके आँखि मूनि कए जहल पठा दैत अछि

। जहलसभ एहन लोकसभसँ भरल गेल अछि । कोटथमे मोकदमाक संख्या बढ़ले जा रहल अछि । पुलिस कारथाइकरबासँ पूर्थिजँ माथा लगाबए तँ बहुत रास परेसानीसँ लोक बँचि सकैतअछि ।

बिहार शराबबंदी कानूनक अधीनजहलमे बंद बेसी लोक समाजक निम्न गिक छल। जहलमे बंद रहलासँ ओकरसभक पवारिक पालन-पोषण मोसकल भए गेल । जनता ताहि माम करए लागल । तकर बाद बिहार सरकार केन्द्र सरकारक अनुमतिसँ आममाफीयोजना आनि बहुत रास कैदीसभके जहलसँ छोड़ि देलकैक । कहक माने जे बिहार शरबबंदी कानूनक दुरपयोग ततेक भेल जे सरकारके स्यिं ओहि कानूनमे संशोधन करए पडलैक ।

न्यायालयसभमे निरंतर बढ़ि रहल केससभक कारण पटना न्यायालय बिहार सरकारसँ पुछबाक हेतु िध्य भेल जे आखिर दू लाख सडसठि हजार शराबंदीसँ संबंधित मामिलाके कोना खतम कएला जाएत? कोटथमे जज एमि् अन्य जररी सुविधाक अभाके देखैत ई एकटा गंभीर समस्या भएगेल अछि ।नितम्बर २०१९ धरि मात २६२९ एहन मामिलाक निषपादन भए सकल छलजखन कि लाखो केस कोटथसभमे अखनोलंबित अछि ।

किछुगोटे बिहार शराबबंदी कानूनके पटना उच्च न्यायालयमे ुनौती देलक । उच्च न्यायलय पटना एहि कानूनके निरस्त कए देलक । एहि निणथक खिलाफ बिहार सरकार उच्चतम न्यायालयमे अपील केलक । उच्चतम न्यायालय बिहार सरकारक अपीलपर पटना उच्च न्यायालयक आदेशपर रोक लगा देलक ।

शराबबंदी कानूनक उल्लंघनक मामिलासभ लाखोमे कोटथसभमे लंबित अछि । कोटथसेहो परेसान अछि । जनता तँ परेसान छलहे । समाजक गरीब लोकसभके एहि कानूनक पाधिानसँपताणना बढ़ि

गेलैक ।लोकसभ थाना-पुलिस,कोट-कचहरीक चक्करमे पडल रहैत छल । एहि बातसभक जानकारी बिहार सरकारके भेलैक । उपरोक्त कानूनक कैकटा प्रावधानके सन्२०१८मे बिहार सरकार बदलि देलक जाहिसँ लोकके परेसानी कम होइक ।

असलमे सन्२०१६क कानून ततेक कठोर छल जे लोकसभ परेसान भए गेल ।संगहि एहि कानूनक दुरूपयोगक सिकाइत सेहो सरकारके प्राप्त भेलैक । ताहिसभ बातके ध्यानमे रखैत एहि कानूनमे निम्नलिखित महत्वपुर्णसंशोधन कएल गेल-

१.शराब पीबैत पकडल गेल व्यक्तिके थानासँ जमानत भेटि सकैत छैक ।

२.पहिल बेर शराब पीबाक अपराधमे पकडल गेल व्यक्ति पचास हजार जुमाना दए छुटि सकैत अछि । मुदा जुमाना नहि देला पर तीन मासक काराबास हेतैक ।

३.जौँ दोसर बेर केओ शराब पीबैत पकडल जाइत अछि तँ ओकरा एक लाख जुमाना आ एक सालक जहलक दंड हेतैक ।

४.शराब पीबैत पकडल गेल व्यक्तिक संपत्ति जब्त करबाक प्रावधानके समाप्त कए देल गेल अछि । मुदा शराबके अपन घर आ गाडीमे संगह करए बला व्यक्तिके कोनो छूट नहि देल गेल अछि ।

५.सामुहिक दंडक प्रावधानके समाप्त कए देल गेल अछि ।

६.शराब पीबैत पकडल गेल व्यक्तिके जिला बदर करबाक प्रावधानके समाप्त कए देल गेल अछि ।

७.सन् २०१६मे लागूभेल शराबबंदी कानूनक अनुसार जौँ केओ शराबक संगह केने पकडल जाइत अछि तँ ओकर परिवारिक सदस्य(पती,पत्नी आ आश्रित संतान)के सेहो अपराधीक मामिला कएल जा सकैत अछि । संगहि मकान मालिकके खिलाफ सेहो अपराधीक

मोकदमा कएल जा सकैत अछि । कानूनी पाधिानक अनुसार अपराध साबित भेला पर कम सँ कम दस सा धरि जहल आ एकलाख जुमाना कएल जाएत ।पारिवारिक सदस्य वा कंबा मकान मालिकके एहि तरहे पताड़ित करब भारतीय संविधानक धारा १४ एिम् २१क उल्लंघनहोइत छल ।उपरोक्त कानूनमे २०१८मे कएल गेल संशोधन दारा उपरोक्त पाधिानके हटा देल गेल अछि।

८.जौँ केओ शराब बनबैत पकड़ल बेर पकडल जाइत अछि तँ ओकरा दू साल धरिजहल हेतैक । मुदा दोबाराईगलती केलापर कमसँ कम दस सालक जहल हेतैक ।

९.कोनो मकानमे शराब भेटलापर पहिलुका कानूनमे पूरा मकान सील करबाक पाधिान छल । संशोधनक बाद आब मात ओहि कोठरी मातके सील कएल जाएत जतए शराब राखल छल ।

१०.विषाक्त शराब पीलापर भेल मृत्युपर संबंधित दोषी व्यक्तिके फासी देबाक पाधिान कएल गेल अछि ।

बिहार सरकार शराबबंदी कानूनक उल्लंघनक शिकाइत हेतु टालफी फोन संख्या १५५४५ िा १८००३४५६२६८ पर कएल जा सकैत अछि । शिकाइतकर्ता केबिहारक नाम गोपनीय राखल जाइत अछि । शिकाइतक पाप्त भेलापरओकरा संबंधित पुलिस अधिकारीके कारवाइ हेतु अगेषित करैत अछि । पुलिससँ पाप्त जानकारी/ पतिादिनसँ शिकाइत केनिहार व्यक्तिके अिगत कराओल जाइत अछि । जौँ ओ कएल गेल कारवाइसँ संतुष नहि अछि तँ ओकर आगहपर दोबाराजािसेहो कएल जा सकैतअछि ।

बिहारक अतिरिक्त गुजरात,मिजोराम,नागालैड आ केन्द्र शासित केत्र लक्दीपमे पहिनेसँ शराबबंदी कानून लागू अछि । मुदा कतहु एहन अव्यिहारिक कानून नहि बनल,ने कतहु कानून बनलाक बाद एतेक

उठा-पटक भेल। ओहि राज्यसभमे शराबबंदी कानून लागू भेलासँ लोक शराब पीनाइ छोड़ि देलक से नहि कहल जा सकैत अछि । एहू राज्यसभमेकैकठाम शराबजेना-तेना बिकाइते अछिआ लोक पीबिते अछि । गुजरातमे तँ शराब तरकारी जका घरे-घर पहुँि देल जाइत अछि। कानून बनओनाइ एकटा बात छियक आ ओकरा लागू भेनाइ दोसर बात । एक सँ एक कानून बना कए व्यथथसाबितभए िकल अछि । बिआहमे दहेज देबा-लेबाक चिरि कानून कहिआसँ बनल अछि मुदा ई सभ केओ जनैत अछि जे व्यिहारमे एकर बिना साइते कोनो बिआह होइत होइक । जतए सोझा-सोझी टाका नहिओ लेल जाइत अछि ओतहु आन-आन तरहे कन्यापक्सँ उगाही होइते अछि । कहबाक माने जे सामाजिक केतमे सुधार हेतु कानूनक अतिरिक्त िचत एिम् व्यक्तित बिमाण बहुत जररी अछि । तखने समाजमे सुधार भए सकैत अछि,तखने शराबसँ मुक्ति भए सकैत अछि ।

कैक बेर एहनो देखल जाइत अछि जे शराबीक संतान शराब छुबितो नहि अछि।ब्दिन-राति पािरिवक कलह देखैत-देखैत एहन नेनाक मोनमे कतहु-ने-कतहु शराब ि अन्य कोनो पकारक नशाक घृणा भए जाइत अछि। तकर कैक बेर सकारात्मक पतिकृयासरिप ओसभ शराबसँ जीिनभरि फटकी रहैत अछि।पिरिस्थिति ओकर व्यक्तितमे शराब ि कोनो अन्य निशाक पति एकटा अरुचि भए जाइत अछि ।

एहि बातमे कोनो संदेह नहि अछिजे शराब पीनाइ अधलाह छियक मुदा एकर आदति छोडेनाइ पहाडि ढब छियक । जे होइक मुदा कानून बना गेलासँ एकटा अिरोध तँ भइए गेलैक अछि । आशा अछि जे लोक एहि कानूनक जन कल्याणक भािना बुझैत सरकारकेआिश्यक सहयोग देताह जाहिसँ एकर उदेश्यपूर्णथसंभि होअत ।

उमेश मण्डल

मैथिली साहित्य-रचनाक क्षेत्रमे जगदीश प्रसाद मण्डलक आगमन

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक जन्म 5 जुलाई 1947 ईस्वीमे मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे भेलन्हि। हिन्दी ओ राजनीति शास्त्र विषयसँ एम.ए. कए ई अपन जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यकेँ अपनौलन्हि। एहि प्रसंगमे मण्डलजी स्वयं 'मौलाइल गाछक फूल' उपन्यासक 'अप्पन बात'मे लिखने छथि-

"जखन हम एम.ए. क विद्यार्थी रही तखने नोकरीसँ विराग भऽ गेल। आठ बीघा जमीन रहए। खेतीसँ जीवन-यापन करैक जिज्ञासा भऽ गेल। बानु गाजथ्यक पुरुष गाजथ्यक-परिवार 1960 ईस्वीमे भऽ गेल। पितेक अमलदारीसँ दू भाइ पितियौत रहै छला। तत्काल गाजथी हुनके दुनू भाइपर छेलैन। कोसीक उपद्रवसँ भागल पीसा बेरमे माने सासुरेमे रहि गेल रहैथ। ..पिताक मृत्युक समय तीन बरखक हम आ छह बरखक जेठ भाय छला। पितियौत भाए 1960 ईस्वीमे अपन गाम 'हरिनाही' चलि गेला। दुनू भाय, श्री कुलकुल मण्डल 1954 ईस्वीमे आ हम 1957 ईस्वीमे गामक स्कूलसँ जाकैल अपर प्राइमरी स्कूल कछुबीमे नाओं लिखौने रही। 1960 ईस्वीसँ परिवारिक बोझ पडल। पुरुष विहीन भेनौ माए ओहन परिवारिक छेली, जइ परिवारिमे मामा 1942 ईस्वीमे अंग्रेजक गोली खा चुकल छला। साहसी माए। अपन गहना, जमीन बेचि देल बच्चाकेँ पढबै खातिर। पैतीस साल धरि समाज सेवा केला पछाइत अपन हहरैत शरीर देख किछु लिखै-पढैक विचार जगल।"

2000 ईस्वी धरि जगदीश प्रसाद मण्डलजी समाजसेवामे संलग्न रहलाह। रचि एवम सामन्ती व्यवहारक खिलाफ लडाइ लडैत रहलाह,

केस-मोकदमा, जहलयातासभमे हुनक लगभग तीन दसक समय बीतलनि, पछाइत साहित्य लेखनमे एलाह। पहिल रचना औपन्यासिक कृति 'मौलाइल गाछक फूल' थिकनि जे 2004 ईस्वीमे लिखलाह। 2008 इस्वी धरिक अवधिमे पाँच गोट उपन्यास, एक नाटक तथा किछु कथासभ लीखि चुकल छलाह। मुदा कोनहु पत्र-पत्रिकासभमे एकहु गोट रचना प्रकाशित नहि भेल रहनि। तथापि हुनक कलम, लिखबाक कम जारी रहलनि- प्रस्तुत अछि एहि प्रसंगमे हुनकहि लिखल बात- ''मौलाइल गाछक फूल 2004 ईस्वीमे लिखल पहिल उपन्यास छी। अखन धरि पाँचटा उपन्यास आ किछु कथा, लघुकथा, नाटक सभ अछि। छपबैक जे मजबूरी बहुतो रचनाकारके छैन से हमरो रहल। मुदा तइसँ लिखैक क्रम नै टुटल। 'भैटकलाँच' कथा सेहो दू-हजार तीनिक पहिल कथा छी।''

8 नवम्बर 2008 मे आयोजित लाक पश्चात 'सगर राति दीप जरय'क 64म कथा गोष्ठी डॉ. अशोक अविचलिक संयोजकत्वमे हुनक गाम-रहुआ संगाम (मधेपुर)मे आयोजित भेल छल जाहिमे जगदीश प्रसाद मण्डलजी उपस्थित भऽ 'भैटक लाँच' कथा केर पाठ कएलनि। एहि गोष्ठीमे भाग लेबाक आग्रह डॉ. तारानन्द 'वियोगी' कयने रहथि। सगर राति दीप जरयक गोष्ठीमे भाग लेबए लेल आयोजक/ संयोजकक हकार अनिवार्य नहि होइछ। कोनहु माध्यमसँ पता चलिल एिह ब्यक हकार। 'वियोगीजी'सँ जगदीश प्रसाद मण्डलक पहिल भेट 2008 इस्वीमे मधुबनीमे भेल छलनि।

साहित्य क्षेत्रमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पहिल मंच रहुआ संगाम 64 सगर राति दीप जरय कथा गोष्ठीके कहल जा सकैछ। जाहिठामसँ हुनक रचना सार्वजनिक हएब शुरू भेल। ओना, पहिने बेरमा पंचायत आ रहुआ संगाम, दुनू मधेपुर ब्लौकक अन्तर्गत पडैत

छल। जे चक जगदीश पसाद मण्डलजीक कमथक्ेत रहल छन्हि। समन्वयात्मक समाजसेवीक चकया-कलाप रहल छन्हि। “8.11.2008 लक्ष्मीनाथ गोसाइक स्थानमे कायक्रम भेल छल। ओना, केतेक बेर राजनीचतक मंचपर रहुआमे बाजल िकिल छेलौ, कमथक्ेत छल तँए कथा िमे संकोि नइ भेल।”

2008 इस्वीसँ पूथिजगदीश पसाद मण्डलजीक एकहु गोट रचना साहित्यक नजचर भेल छलन्हि। कोनहुँ पत-पचत्रकामे पकाचशत नचह भेल छलन्हि। पहिल रचना ‘घर बाहर- पटना’सँ पकाचशत भेलन्हि। जाचह कथाक पाठ रहुआ संगाममे कयने छलाह, आ पशंसा भेल छलन्हि। दषक्य अचछ के सभ पशंसा कयने रहन्हि- “डॉ. रमानन्दझा ‘रमण’ जी ओ कथा मांचग लेलैन। चकछुए मासक उपरान्त ‘घर बाहर’ पचत्रकामे पकाचशत केलैन। चकि पुरषक स्थानमे पचतषा भेटल। डायरी-कलम भेटल। गमछा-पाग भेटल। लक्ष्मीनाथ गोसाइक मुचतथ सेहो भेटल।”

घर-बाहरमे एक आर रचना (कथा) पकाचशत भेलन्हि। पछाचत ‘चमचथला दशन- कोलकाता’मे ‘िनािली’ नामक कथा पकाचशत भेलचन। िनािली, भैटक लाि आ चबसाढ, कथा पकाचशत होइतचह ‘चवदेह’क सम्पादक शी गजेन्द्र ठाकुरजीसँ सम्पकथ भेलन्हि। तकर बाद मण्डलजीक रचना सभ पुस्तकाकार रपमे पकाचशत हुअ लगलन्हि। एचह सन्दभथमे जगदीश पसाद मण्डलजी ‘अपन बात’मे चलखलन्हि अचछ- “घर बाहर मे भैटक लाि आ चबसाढ छपल आ फेर चमचथला दशनमे ‘िनािली’ कथा पचढते अनेको बधाइ फोन आएल जेना- पत्रीकार चवदानन्द झा जीक। एकटा महतपूणथफोन शी गजेन्द्र ठाकुर जीक रहल। चहनकर फोन सुचनते चहनगीक ओहन िबटी टचि गेलौ जे िबीस घन्टाक खुशी मनमे आचब गेल।”

2009 सँ 2013 इर्सीक बीि जगदीश पसाद मण्डलजीक 27 गोट पोथी शुत्ल्ा पकाशन, त्त्वकलीसँ पकात्ल्ाात भेल छत्क्ह। जात्ल्मे त्ल्नका एकहु पाइ पकाशनक हेतु नत्ल् देबए पडलत्क्ह। ई ीिज सत्ष होइछ दू ठामसँ, पत्ल्ल जे लेखक सियं अपन 'तरेगन' पोथीक मनमत्ल्ायामे त्ल्खने छत्थ- ''समय-समय पर गजेन्दजी (शी गजेन्द ठाकुर, मेहथ) क आगह आ सुझाि आ संगत्ल् शुत्ल्ा पकाशनक शी नागेन्द कुमार झा आ शीमती नीतू कुमारीक भरपुर सहयोग भेटलासँ त्ल्खैक नि उत्साहो आ आशो मनके सकत बना देने अत्छ।'' आ दोसर 'अंशु' समालोिनाक पोथीमे शी त्शि कुमार त्टकलू त्ल्खने छत्थ- ''जगदीश पसाद मण्डलजीक लघुकथा 'त्सााढ' आ 'भैटकलाि' घर-बाहरमे आ 'िनिली' त्ल्यला दशत्ल्मे पकात्ल्ाात होइते मैत्थली पत्ल्ाकाक संपादक मण्डलक संग-संग पबुि पाठकक मध्य हडहोत्त मत्ि गेल। 'पत्ल्ने आउ आ पत्ल्ने पाउ' क आधारपर त्िदेहक संपादक शी गजेन्द ठाकुर त्ल्नक रिना सभके अपन पत्ल्ाकामे छपबए लेल हत्थया लेलत्ल्ा। ऐ पकारक शब्दक पयोग करबाक हमर तात्पयथअत्छ जे जगदीश जी कोनो नि रिनाकार नै छत्थ, त्ल्ारसत्ल् बखत्क माजल सात्ल्त्यकार छत्थ, मुदा त्ल्नक रिनाक पदशत्ल्ा नै भेल छल। समग रिना-संसार त्ल्नक पुत शी उमेश मण्डल जीक कम्प्यूटरमे ओझराएल छल त्ल्कएक तँ छपबैले कैि केतएसँ आएत?''

एत्ल् तरहे जगदीश पसाद मण्डलजीक आगमन मैत्थली सात्ल्त्यक दुत्ल्ायामे होइत छत्क्ह। त्ल्ानु पाइक अथात् त्ल्ानु खिि पोथी पकाशन मैत्थली सात्ल्त्यमे नि उदाहरण छल। जगदीश पसाद मण्डलजीक 27 गोट पोथी एक संग शुत्ल्ा पकाशन, त्त्वकलीसँ पकात्ल्ाात भेलत्क्ह। ित्थानमे ओत्ल् तरहे पोथीसभक पकाशन पकलीि पकाशन, त्ल्ामत्थीसँ भऽ रहलत्क्ह अत्छ।

जगदीश पसाद मण्डलक 'गामक जिनगी'

'गामक जिनगी' एक पोथीक नाओं छियैक। एहि पोथीक लेखक छथि यशी जगदीश पसाद मण्डलजी। मण्डलजीक ई पहिल कथा संगह छियन्हि। एहिमे 19 गोट कथा संगहित अछि।
भैटक लाि कथासँ एहि संगहक आरम्भ भेल अछि। एहि कथाकेंमण्डलजी 2004 इर्सीमे लिखलन्हि। पुस्तकाकार रपमे पोथीक पहिल संस्करण, शुति पकाशन- नई दिल्लीसँ 2009 इर्सीमे पकाशित भेल छन्हि। पहिल 'विदेह' पथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिकाक सम्पादक शी गजेन्द ठाकुर आ डॉ. सुभाष िन्द यादजी एहि पोथीक आमुखकार छथि। कथा एिं कथाकारक विषयमे लिखने छथि-
"ितथान समएमे पिचित आ मान्य कथासँ जगदीश पसाद मण्डलजीक कथा ज्ञान अछि। कथा घटना बहुलता आ ऋजुसँ युक्त अछि। मण्डलजीजीिनिमे पाप्य जनजीविषा, मानीियता एिं आदशर्के सुदृढ आ पुनपथ त करबाक उदेश्यसँ अनुपािणत छथि।"
लेखक मािथलाक िन्दािनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल फुलबाडी लगौिनहार तथा नि विहान अनिनहारलेल एहि पोथीके समिपत कयने छथि।
'गामक जिनगी' पोथीक लोकापण पहिल समीक्षक डॉ. योगानन्द झाक संयोजकत्मे 'सगर राति दीप जरय'क 70म कथा गोषी, कबिलपुर, दरभंगामे, 12.06.2010क डॉ. शीमती कमला िधरी, पहिल लेखिका एिम् मैथिली विभागाध्यक, बी.आर.ए.बी.यू. मुजफ्फरपुर दारा भेल अछि। ितथानमे पकिं पकाशन- िनमली (सुपौल),सँ एहि पोथीक

अन्तिम संस्करण सेहो उपलब्ध अछि।

मैथिली साहित्यक एकल पुरस्कार- 'टैगोर साहित्य पुरस्कार' एमि् पहिल 'विदेह साहित्य सम्मान'सँ एही पोथीपर शी जगदीश पसाद मण्डलजीके सम्मानित कएल गेल छन्हि।

गामक जिनगी' पोथीक अन्तिम पृष पर 'विदेह' पथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिकाक सम्पादकशी गजेन्द्र ठाकुरजी लिखलन्हि अछि-

"१९४२-४३क बंगालक अकालक विषयमे अमर्त्यथसेन लिखै छथि जे ऐ अकालमे बंगालमे लाखक लाख लोक मुइला (फेमीन इन्क्वायिरी कमीशनक अनुसार १५ लाख) मुदा अमर्त्यक एकोटा सर-सम्बन्धीक मृत्यु ओइमे नै भेल। तहिना बिहारक १९६७ ई.क अकालमे भारतक पधानमंतीके देखाएल गेलन्हि जे कोना मुसहर लोकनि बिसाढ खा कऽ अकालसँ लड़ि रहल छथि, मुदा ऐपर कथा लिखल गेल २००९ ई.मे। २००९ ई. मे जगदीश पसाद मंडलजी बिसाढपर मैथिलीमे कथा लिखलन्हि। आ ऐ विलम्बक कारण सेहो स्पष अछि। मैथिली साहित्यमे जे एकभगाह पद्धति रहल अछि, तइ कारणसँ अमर्त्यथसेन जका हमरो साहित्यकार सभ ओइ महाविभीषिकासँ ओते पभावित नै भेल हेता। आ एतऽ जगदीश पसाद मंडल जीक कथा मैथिली कथा धाराक याताके एकभगाह हेबासँ बचा लैए।"

'गामक जिनगी' कथा संगहक सम्बन्धमे पख्यात साहित्यकार शी मन्तेशर झा लिखने छथि- "गामक जिनगीक सभ कथा गाम्य जीवनिके किछु अनछुअल पसंगके मार्मिक चितण करैत अछि।"

पस्तुत पोथीमे 19 गोट कथाके कथाकार समायोजित कयने छथि। शब्द संख्या सहित सभ कथा-लेखनक विवरण कमानुसार निम्नांकित अछि-

1. भैटक लावा- शब्द संख्या :3100

2. ब्रसाढ- शब्द संख्या :2516
3. पीरारक फड- शब्द संख्या :2064
4. अनेरआ बेटा- शब्द संख्या :3369
5. दूटा पाइ- शब्द संख्या :3294
6. बोब्रहाब्रन मरनी- शब्द संख्या :3412
7. हाब्र-जीत- शब्द संख्या :2373
8. ठेलाबला- शब्द संख्या :2572
9. जीब्रिका- शब्द संख्या :3655
10. ब्रक्साबला- शब्द संख्या :3963
11. ि नि लिी- शब्द संख्या :2452
12. डीहक बटबारा- शब्द संख्या :4789
13. भैयारी- शब्द संख्या :4026
14. बब्रन- शब्द संख्या :2688
15. घरदेब्रया- शब्द संख्या :4021
16. पछताबा- शब्द संख्या :2663
17. डाक्टर हेमन्त- शब्द संख्या :4407
18. बाबी- शब्द संख्या :2167
19. काब्रनी- शब्द संख्या :2289

‘भैटक लाि’, कथाके 3100 शब्दमे कथाकार ब्रखने छब्र। कथाकार शी जगदीश पसाद मण्डल ब्रब्रलाक गाममे रहैत छब्र। ब्रब्रलाक बहुसंख्य लोकक जीनि कृब्र कायब्र ब्रभब्र अब्र। मण्डलजी सेहो ब्रकसान छब्र, ब्रनकहु जीब्रकोपाजब्र कृब्र ब्रयब्र। अत: ई अपन पब्रल कथा ब्रखलब्र ‘भैटक लाि’, जाब्रमे ब्रब्रलाक ब्रकसान-मजूदरक सभसँ पैघ समस्याके ब्रब्रत कएल गेल अब्र।

सभक्कयो जनैत छी जे सभक्कनसँ म्मब्यलालि बाक्क-रौदीक पिटमे पडैत रहल अछ्छ। एक्कठाम जक्कना रंग-रंगक बाक्कक रप अछ्छ, माने बाक्कक एकरपता नक्क अछ्छ तक्कना रंग-रंगक रौदी सेहो अछ्छ। अथात् जक्कना बाक्क नम्हरो होइए आ छोटो होइए तक्कना रौदीक सेहो अछ्छ। रामायणाक क्कसाबसँ रौदी बारह षिथ्धक्कक भेल अछ्छ। क्कएक तँ बारह षिक्क रौदीक पछाक्क राजा जनकजी हर जोतने छलाह जाक्कमे सीताक जन्म भेल छलक्क। म्मब्यलालिमे अनेको तरहक पहाडी नदी सभ बक्क रहल अछ्छ। संख्याक क्कसाबे करीब दू दजथ्य धार (नदी) अछ्छ जे म्मब्यलाक भूभागमे उतरसँ पशि करैत दक्कछन मुहे बक्क रहल अछ्छ। जाक्कमे क्ककछु रिसाती धार अछ्छ बाँकी अक्कक्कतर धार बारहो मास बहैबला अछ्छ। अथात् जक्कना बाक्क म्मब्यलालिक क्ककसानके तोडैत रहल अछ्छ तक्कना रौदी सेहो क्ककसानक क्कनगीके तबाह करैत रहल अछ्छ। जाक्कसँ एक्कठामक क्ककसानक उनैक्कक क्कशा अरि भेल पडल अछ्छ। मुदा क्ककछु-क्ककछु ओहन लोक एखनहुँ छक्कए जे लाख समस्याक बाजिूदो अपन क्ककसानी संस्कृक्कके पकक्क क्कन रहला अछ्छ।

पस्तुत कथा- 'भैटक लाि'क लेखन कथाकार 1987 इर्सीक बाक्कक रप-रंगके अपना आँक्कसँ देक्क कऽ कयने छक्क। तँए, बाक्कक एतेक सजीि क्कतण कथाकार कयने छक्क। ओ कहैत छक्क- ''पैछला बाक्क मोन पक्कते देह भुटैक जाइए। रोइया-रोइया ठाढ भऽ जाइए। बाक्कक क्ककिराल दृश्य आँक्कक आगू नाि लगैए। घोडोसँ तेज गक्कसँ पाक्क दौगैत। बाक्कयो छोटकी नक्क, जुअनकी नक्क, बुक्कया। बुक्कया रप बना नृत्य करैत। केकरा कहूँ बडकी धार आ केकरा कहूँ छोटकी, सभ अपन-अपन िन-पहीन मेटा समुद जका बक्क गेल। जेमहर देखू तेमहर पाक घोराएल पाक्क, क्कछोहे दक्कछन-मुहे दौगल जाइत।

केतेक गाम-घर पजेबाक नइ रहने घर-विहीन भऽ गेल। इनार, पोखैर, बोचंग, ापाकल पानाक तरमे डुबकुनाया काटए लगल। एहेन भयंकर दृश्य देख लोकके डरे छने-छन चयास लगलोपर पीबैक पाना नइ भेटैत। जीनि-मरण आगूमे ठाढ भऽ झूमकम-झूमका करैत। घर खसल, घरक कोठी खसल, कोठीक अन भँसल। जेहने दुरगैत घरक तेहने गाइयो-महीस, गाछो-बारीछ आ खेतो-पथारक।"

पस्तुत कथा मुसना आ जीबछीक माध्यमसँ गढल गेल अछि। मुसना आ जीबछी ओहन पचािरिक अछि जकरा सम्पत्ताक नामपर चकछु ने छैक। मात अपन हूनरअथातलूब आ शम करैक शक्तटा छैक। जाक्क बले मुसना आ जीबछी जीनि-यापन करैए। दुकालकलिते गामक कतेको लोक आन-आनठाम जा कऽ जीनि-यापनक जोगार करैए मुदा मुसना दुनू परानी गामह्मे रह्ल अपन भोजनक जोगार ताक्क लइए। ई कथाकारक खास विशेषता छन्ह। जे ह्लनकर पात कोनहुँ बस्थतामे भटकैत नह्ल अछि। एह्ल पसंगमे पचमि आलोकि डॉ योगानन्द झा बलखने छथ्- 'बाच्यलामे उपलब्ध पाकृत्ताक उपादानक उपयोगातापर वमिशथ पस्तुत करैत अछि। बाढ्ढ आ सुखारसँ पीड्डत बाच्यलाक जनसमुदाय अपन जीनि रक्षाक हेतु कोन तरहे भँट, बासाढ, पीरार आद्दके अपन मेहनताक बले खाद पदाथक्क र पमे गहन करैत रहल अछि तथा एह्लठामक पाकृताक संसाधनक उपयोग दारा कोना बाच्यलाक भूखमरी ओ बेरोजगारीके दूर कएल जा सकैछ, एकर आथ्यक्क वकास कएल जा सकैछ तकर चत एह्ल तीनू कथामे भेटैत अछि। शमपर वशािस, इमानदार पयास, कमथ्यता ओ ाितुयक्क संबलसँ वपनतापर वजियक ई गाथा सभ बाच्यलाक लोकजीनिमे ियाप्त उत्साह ओ संघषक्क ममस्पशी चत पस्तुत करैत अछि।

कथाकार शी जगदीश पसाद मण्डलजी पस्तुत कथामे समाजक अन्तिम व्यक्तिके अगुआ माने ओहन पातके आगा आनि नाराशाक जीनिसँ नाकाल आशानि बना जीनिक ित्थिकयने छथि, जकरा अपना चकछु ने छैक।

2. ‘बसाढ’कथा गामक जनगी संगहक दोसर कथा थिक। एहि कथाके 2516 शब्दमे लखल गेल अछि।एहि कथाक माध्यमसँ कथाकार रौदीक विषद ित्थिकयने छथि। जहिना रंग-रंगक बाढि होइएमाने छोटो, मध्यमो आ नम्हरो होइए तहिना रौदी सेहो रंग-रंगक होइए। एहनो रौदी होइए जे एक मौसममे माने िरसातक मौसममे मौनसूनी िषा नहि भेने सालक बारहो मासके पभावित करैए तँ एहनो रौदी होइते अछि जे दू-साल-तीन-साल धरिके पभावित करैबला होइए। जहिना बंगालक 1942 इर्सीक रौदी छल तहिना बिहारमे 1966-67 इर्सीक रौदी सेहो भेल। जाहिसँ मध्यलालिक चकसाने टा पभावित नहि भेलाह, चकसानक संग बोनिहारो आ मालो-जाल, गाछो-बिरीछ आ चिडैयो-िनमुनी पभावित भेबे कएल। बहुतो चकसानक चिडै-िनमुनीक उपटान भऽ गेल। तहिना गाम-गामक मालो-जाल आ गाछो-बिरीछ सुखि गेल जाहिसँ इलाकाक (मध्यलालिक) िहरा कुरप भऽ गेल।

पस्तुत कथामे कथाकार डोमन आ सुगियाक ित्थिकयने छथि।एहि दुनू व्यक्तिक माध्यमसँ रौदीक विषद ित्थिकरैत कथाकार नाराशासँ भरल जनगीके आशानि बनौलनहि अछि। कथाकार एक दिस रौदी-सुखारसँ तस्त भऽ गामक लोक ढाका, दिनाजपुरओ मोरंग आदि स्थानपर जा अपन जीविकोपाजर्नक तालाश करैबला लोकक िि कएलनहि अछि तँ दोसर दिस डोमन ओ सुगियाके गामहिमे रहबाक

आ सुच्चायाक मनक च्चिशासक ि थिसेहो कएलच्चह अच्छि- ''जे भगिानि जन्म देलैन आ मुँह िरने छैथ, अहारो तँ िहिए ने देता।''

तथा ओ रास्ता तखन साफ भऽ जाइत अच्छि जखन डोमनके मोन पडैत छच्चह जे जच्चना माच्चटक तरमे अलुआक च्चसरो आ अलुओ रहै छैक तच्चना पुरैनक जच्चडमे च्चसरो आ च्चबसाढो रहैत अच्छि। अनासुरती मुहसँ च्चाकललै-

''बाप रे! बाबन बीघाक पोखैरमे तँ केते-ने-केते च्चबसाढ हेतइ। ओकरे खुनैमे माछो भेटत।''

एक पंथ दू काज। मनमे खुशी अच्चबते डोमन हाक पाच्चड अपन पतीके कहलच्चह- ''भगिानि बडीटा छच्चथन। जच्चना अरबो-खरबो जीि-जन्तुके जन्म देने छच्चथन तच्चना ओकर अहारोक जोगार केने छच्चथन।''

शी जगदीश पसाद मण्डलजीक एच्चह 'च्चबसाढ' कथाके लेखन-च्चाम्मापर 'च्चिदेह' पथम मैच्चथली पाच्चक्ष्त ई-पच्चत्रकाक सम्पादक, गजेन्द्र ठाकुरजीअपन 'पबन्ध-च्चाबन्ध-समालोिना' (भाग-२) मे च्चलखलच्चह अच्छि- ''१९४२-४३क बंगालक अकालक च्चिषयमे अमत्यथसेन च्चलखै छच्चथ जे ऐ अकालमे बंगालमे लाखक लाख लोक मुइला (फेमीन इन्क्िायरी कमीशनक अनुसार १५ लाख) मुदा अमत्यथक एकोटा सर-सम्बन्धीक मृत्यु ओइमे नै भेल। तच्चना च्चबच्चथलाक १९६७ ई.क अकालमे भारतक पधानमंतीके देखाएल गेलच्चह जे कोना मुसहर लोकच्चा च्चबसाढ खा कऽ अकालसँ लच्चड रहल छच्चथ, मुदा ऐपर कथा च्चलखल गेल २००९ ई.मे। २००९ ई. मे जगदीश पसाद मंडलजी च्चबसाढपर मैच्चथलीमे कथा च्चलखलच्चह। आ ऐ च्चिलम्बक कारण सेहो स्पष अच्छि। मैच्चथली साच्चहत्यमे जे एकभगाह पिृच्चत्त रहल अच्छि, तइ कारणसँ अमत्यथसेन जका हमरो साच्चहत्यकार सभ ओइ महाच्चिभीच्चषकासँ ओते पभाच्चित नै भेल हेता। आ एतऽ जगदीश पसाद मंडल जीक कथा मैच्चथली कथा

धाराक याताके एकभगाह हेबासँ बि लैए।”
एहि कथाक पसंगमे समीक्षक श्री कुमार झा 'चक्कल्लू' अपन पोथी- 'अंशु' नामक पबन्ध-निबन्धमे लिखने छथि-
“बिसाढ कथाक इच्छाशी सुखारक मध्य एहेन फलक शोधक रपमे कएल गेल जकरा विषयमे बहुत कम लोक सोिने हेताह।”
बिसाढ पुरनि (कमलफूल) गाछक जड़िक सीरमे फडैए। जकरा लोक खाइए। ओही बिसाढके खा डोमन आ सुगिया रौदीसँ अपन ताण पबैए।

3. 'पीरारक फड', ई कथा 'गामक जिनगी'क तेसर कथा छियक। एहि कथाके लगभग 2064 शब्दमे कथाकार गढलनिह अछि। अहू कथामे ओहन लोकक जिनगीके कथाकार सोझमे अनलनिह अछि जकरा देहक अलाि किछु ने छैक। चाि कुन आ धनिया दुनू परानी पीरारक फड आ अनेर आ माछसँ अपन आर्थिक तंगीके दूर करैत अछि आ जीिनमे सभ किछु जोडबाक पयास सेहो करैत अछि। कथाके पढलापर बुझना जाइत अछि जे िस्तिमे पकृति अनेको िज ओहन मनुक्ख लेल उपलब्ध कराओने अछि जकरासँ पाबि मनुक्ख जीिन जीबि सकैए। मुदा मनुक्ख सियं ओहन-ओहन िजसँ बिमुख अछि।
एकटा पीरारक गाछक पछा कथाकारक जे नजरि छनिह आ ओकर जे िस्तविक रप अपना एहिठाम छैक तकरा देखल जाए- “एतेक नमहर जिनगीमे ने किओ जड़िके तानि-कोरि पानि देलक आ ने ठाढिके छकैड-छुकैड गाछके सुन्दर बनौलक। सोल्होअना देखभाल भगिनिक ऊपर। तँए पाि गाछ सिाभिमानसँ भरल जे केकरो एहसान रपी कजथजिनगीमे नै लेलौ। हरदम पाि हँसैत-इठलाइत मन्द हिामे

झूमैत...। पछाइने पाि गाछक फूल फुला फड बना झड़ जाइत, पछाइत फड पूणथजनगीक सुख भोगा अनतम अिसथामे आबा पनि रपी नौतहारीके पठा चििडै-िनमुनीके बजा-बजा अपन शरीर दान करैत, यएह पाि गाछक जनगी भचक धरम रहल।

...ओइ गाछसँ हटए कऽ लोक अपन खेतक जोत-कोर आद करैत जे ओइ गाछपर सुगबा साप रहैए। सुगबा साप लोकके देखैमे अबाते ने छै चकएक तँ ओ हबअर-लती जका होइए। जेकरा कटलासँ सिगथरकक दार अनेरे खुन जाइ छइ। बीिमे केतौ कोनो रकाबट नै होइए।”

सम्पूणथकथाके पढलापर सिित: भान होइत अछ जे जौ मनुकख लगनसँ कायथकरय तँ सभ चकछु समभि छैक। एह कथाक पातसभ अछ- धनाया, चििकुन, मुनेसरीआ सोमनी दादी।

4. ‘अनेरआ बेटा’, 3369 शबदक कथा अछ। गरीब गृहस्त पचािरक कथा छयक। लगभग पािस िषक सन्तानहीन गंगाराम एह कथाक पात अछ। गंगाराम हाटसँ अबैकाल जखन एकटा जनमौटी अनेरआ बचािके सडकक कातमे फेकल देखब कोरामे लऽ कऽ घर अबैत अछ आ घरिलीके कहैत छैक- “आइ भगािन खुश भऽ एकटा बेटा देलना।” तँ अनायास दुनू परानीक बीि पसनताक माहौल बना जाइत अछ। कमश: ओइ बचािके अपन बेटा जका पोसए-पालए लागल। ओह बचािक नाओं ‘मंगल’ राखल जाइत अछ। आथयक चिपनताक कारणे मंगल िाहक दोकान खोला लैत अछ। दोकानदारीक संग मंगल अपन पढाइ सेहो करैत अछ। अपन जीिनक अनतम समयमे गंगाराम अकरस: मंगलके ओकर जन्मक सभ बात सुना देने रहैक। मंगल चकताबक संग-संग समाजक बेबहारक

अध्ययन सेहो करय लागल। पछाति मंगल एकटा उपन्यास लिखैत अछि, जकर शीर्षक अछि 'मरल गाम', जाहि सम्बन्धमे एक गोट पतकार मंगलक बात सुनैत छथि आ ओकरा छापि दैत छथिन। मंगल दारा लिखल 'मरल गाम'क विषयमे सुनि सुनयना नामक एकटा पढल-लिखल नायिका मंगल लग अबैत छथि आ मंगलक प्रतिभासँ पभावित भऽ अपन किील पितासँ दलील दऽ मंगलसँ विवाह करय लेल पिताक सोझमे प्रस्ताव रखैत छथि।

एहि कथामे कुल सात गोट पात अछि-1. गंगाराम, 2. भुखनाया, 3. कबुतरी, 4. मंगल, 5. सम्पादक, 6. सुनयना, 7. ओकील साहैब।

जगदीश पसाद मण्डलक 'रहै जोकर परिवार'मे पवृत्तिधात्मक स्वर

रहै जोकर परिवार (2020) :एहि पोथीमे संगृहीत कथासभक लेखन 12 मार्च 2020 सँ 20 अपैल 2020 धरिक समयावधिमे कथाकार कयने छथि। 'रहै जोकर परिवार' कथा संगहके पल्लवि पकाशन, तुलसीभवन, जे.एल.नेहरु मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौलसँ पकाशित कराओल गेल अछि। उक्त पोथीमे संगृहीत सभ कथाक संक्षिप्त विवरण- कथाक शीर्षक, शब्द संख्या आ लेखन तिथि निम्नाङ्कित अछि-

1. दलबरी- शब्द संख्या : 2560, तिथि : 12 मार्च 2020
2. सघन बन- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 17 मार्च 2020
3. हुसैत लोक- शब्द संख्या : 2602, तिथि : 23 मार्च 2020
4. हुलस गेलौ- शब्द संख्या : 2574, तिथि : 28 मार्च 2020
5. झूठक झाम- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 01 अपैल 2020
6. दुषपन- शब्द संख्या : 2317, तिथि : 06 अपैल 2020
7. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 15 अपैल 2020
8. पचपर्की आरलज- शब्द संख्या : 2232, तिथि : 20 अपैल 2020

कमश: सभ कथाक इंगित पवृत्तिनक स्वर निम्नाङ्कित अछि-

1.'दलबरी',कथामे वैदिक रानहल बैशाखमे खेबाक जे परम्परा अपना एहिठाम अदौसँ आबि रहल अछि, तकर गुण-दोषक विवेचन कथाकार कएल गेल अछि। पूर्वमे जखन अविकसित लोकक अविकसित समाज छल, ताहि समयमे एहि परम्पराक चलैन शुरु भेल। मुदा आजुक

समय आधुनिक अछि, जकरा विज्ञानिक युग सेहो कहल जाइछ। विज्ञानिक युगमे कोनहुँ वस्तुके व्यवहारिक कसौटीपर देखल जाइत अछि, अथात् कोनहु चीजक नीक-बेजाके देखब, विज्ञानिक दृष्टिकोण सेहो कहबैत अछि। अत: विज्ञानिक दृष्टिएँ बाइस-तेबाइस भोजनके शरीरक लेल अहितकर मानल गेल अछि। एिह अन्तरएिह कथाक मूलमे अछि जे परम्पराक सिर बदलल गुंजाइत भेल अछि।

2. ‘सघन बन’,कथामे मनुक्खक अविकसित अवस्थासँ विकसित अवस्था लेल परिवर्तनक सिरक गूंज अछि। जेना-जेना मनुक्खमे ज्ञानगीक विकासक सघनता बढैए, तेना-तेना मनुक्ख साधारण जीविसँ विशेष जीविक लेल अगसर होइत, विशिष्ट जीवि पाप्त करैए। ओना, साधारणसँ विशेष बनबाक जे प्रक्रया अछि ओ सरपट नहि अछि, ओहिमे अनेको अवरोध सेहो अबैत छैक, जकरा पस्तुत कथामे नीक जका कथाकार व्यक्त कयने छथि। वास्तवमे: मनुक्खक साधारण-सँ-विशेष जीविक जे परिवर्तनक सिरप अछि ओ एिह कथामे पदर्शित भेल अछि।

3. ‘हुसैत लोक’,कथाके कथाकार विज्ञानिक दृष्टिकोणसँ देखलन्हि अछि। एखन धरि जे परिवार आ समाज रूढिवादी विचारिसँ गस्त विचारमे लैत आबि रहल अछि, जाहिसँ परिवारिक संग समाजक नोकसान सेहो होइत रहलैक, तकरा पस्तुत कथामे चितिण करैत आजुक जे परिवेश अछि ताहि परिवेशक अनुकूल कोना परिवार आ समाजक गठन होयततािह दिशामे कथाकार परम्पराक इशारा करैत कहलन्हि अछि- “कानून केहनो मोट-मोट किताबक किए ने हुअए जे ‘यिस्क भेला पछाइत अथात् अठारह बरख पुरला पछाइत, अपन-

अपन चीारिक माच्लक सभ होइए, एच्ल लेल दोसरके एतराज नइ हेबा ाही। मुदा की समाजोमे सएह अच्छ?”

4.‘हुच्स गेलौ’,कथामे कथाकार जीानिक णिथा करैत कहलच्ह अच्छ जे जीानि जीानि च्यक। जीानिमे सम-चीषम पच्चस्थच्त अबैत रहैत छैक। जाच्सँ जीानि पभाचीत होइते अच्छ। आच्यथक, सामाच्नक, ीािचक अनेकहु रंगक पचतिथा जीानिमे होइत अच्छ। जेहेन पच्चस्थच्त जीानिमे अबैए तेहने चीार आ व्यहार सेहो बदैलते अच्छ। एही च्मबके पकच्ड पस्तुत कथामे जागेसर ािथिकएलच्न अच्छ। जागेसर गरीबीक ालिते अथात् आच्यथक मजबूरी भेलाक कारणे गामसँ च्दल्ली गेलाह। चकछु समयक पछाच्त पुन: गाम आबा गामच्हमे रहैक चीार मोनमे रोच्य लेलच्ह। जुगेसरक जीानिमे जे पचतिथा भेल एिह एच्ल कथाक मूलमे अच्छ जकरा ीािचक पचतिथा कहल जा सकैछ।

5. ‘झूठक झाच्ल’,कथाक माध्यमसँ कथाकार एकटा महतपूणथ चीार च्दस इंच्गत कएलच्न अच्छ। ओ चीार च्यक जे आच्दयेकालसँ अथात् ीच्दके युगसँ अपना एच्ठाम सत्यके च्छपेबाक मनोाृच्च चीदित समाजक बीा रहल अच्छ। नारद, काच्लदास, मण्डन च्मश आ तुलसीदासके आधार बना हुनका सभक पच्त जे झूठक पच्पादन होइत आबा रहल अच्छ तकरा चीचित करैत कथाकार ओच्ल झूठक जगह सत्यके कोना स्थाचपत कएल जाए, ताच्ल च्दशामे अपन चीार रखैत यथोचित पचतिथाक सािरके इंच्गत कएलच्न अच्छ। जाधच समाजमे झूठक ाच्सथ बनल रहत ताधच सत्यक संग अन्याय होइत रहत। जकर पभाा समाजक चीारधारापर पडैत रहत।

6. 'दुषपन',कथाक माध्यमसँ कथाकार समाजक ओहि मनोवृत्तिके गहराइसँ पकड़ि अपन विचार प्रस्तुत कएलनि अछि जाहिमे दुषपनक क्रिया-कलापसँ इषपन प्रभावित होइत रहल अछि। आइये नहि, आदिये-कालसँ समाजमे एक दिस जहिना इषपनक विचारधारा रहल अछि तहिना दोसर दिस दुषपनक विचारधारा सेहो रहल अछि। दुषपनक जगह इषपन कोना स्थापित होयत, ताहि दिशामे कथाकार मण्डलजी गम्भीर चिन्तन-मननक संग महतपूर्ण प्रवृत्तिक विचार व्यक्त कएलनि अछि। ओ कहैत छथि जे जाबत धरि मनुक्खक संस्कारमे परतंत्र पकड़ने रहत ताबत धरि स्वतंत्र विचार दबल रहत जाहिसँ स्वतंत्र रूपे क्रियो अपन जीवन-यापन नहिये कय पाओत।

7. 'रहै जोकर परिवार',कथामे यातायाक वृतान्त अछि। एहि कथाक माध्यमसँ कथाकार मिथिलाक समस्त समाजक ओहि मनोवृत्तिके गहराइसँ पकड़ि प्रस्तुत कएलनि अछि जे मैथिल समाजक कोढ़-करेजके खोखर-खोखर सभ दिनसँ खाइत रहल अछि। ओहि मनोवृत्तिसँ कोना समाजक इष हएत, एही प्रवृत्तिक संग कथाक पारूप तैयार कएलनि अछि। कोना समाज अशान्तिसँ शान्तिक बाटपर औताह, कथाक मूल बिन्दु यएह छियक।

8. 'पचपकिया बारलज',कथामे कथाकार समाजक ओहि वर्गक लोकक चर्चा कएलनि अछि जे दोहरी चरित्र बना समाजमे अपनाके ठाढ़ कयने छथि। ओहन लोकक विचार आ कायथदुनूके ताहि रूपे प्रस्तुत कएलनि अछि जाहिसँ प्रवृत्तिक दिशा केर रेखाकन भेल अछि। ओहन दोहरी चरितक लोक समाजक वैचारिक धरातलपर ताहि रूपे पसरल अछि जाहिसँ समाज दिनानुदिन कमजोर होइत

अपन ास्तविक शब्दनसँ दूर भऽ गेल आ जेहो किछु बालि अछि सेहो ब्दनानुब्दन कीण होइत जा रहल अछि। फलाफल समाजक अस्तित ब्दनानुब्दन विकृत होइत जा रहल अछि।

जगदीश पसाद मण्डलक 'मुब्ध्याएल घर'

मुब्ध्याएल घर (2016) :एह्व पोथीमे संगह्वत कथासभक लेखन 6 ब्सतम्बर 2016 सँ 28 नम्बिर 2016 धब्रक समयाब्धिमे कथाकार कयने छब्य। 'मुब्ध्याएल घर' कथा संगहक पह्वल संस्करण 2016 इर्समे पल्लवि पकाशन, तुलसीभनि, जे.एल.नेहर मागश्र ािडथां. 06, ब्नमह्वी, ब्नला- सुपौलसँ पकाब्शत भेल अब्छ। एह्व पोथीक लोकापथ ब्दनाक 31.12.2016क शी अजय कुमार दास 'ब्मन्टु'जीक संयोजकत्वमे आयोब्जत 'सगर राब्त दीप जरय'क 92म कथा गोषी- नमिनी (मधुबनी)मे मंपिर उपब्स्थत समस्त साब्हत्यकार एिम् साब्हत्य पेमीगणक दारा सामुब्हक रपे भेल अब्छ।

उक्त पोथीमे संगह्वत सभ कथाक संब्क्षप्त िििरण- कथाक शीषब्क, शब्द संख्याआलेखन ब्तब्थब्नमाब्कत अब्छ-

1. बगदल गाम- शब्द संख्या :2405, ब्तब्थ : 6 ब्सतम्बर 2016

2. बतीसोअना- शब्द संख्या :890, ब्तब्थ : 8 ब्सतम्बर 2016

3. कहिब्या रोग- शब्द संख्या :1651, ब्तब्थ : 12 ब्सतम्बर 2016

4. ब्दन घब्ट गेल- शब्द संख्या :2425, ब्तब्थ : 5 अक्टुबर 2016

5. मुब्ध्याएल घर- शब्द संख्या :2352, ब्तब्थ : 11 अक्टुबर 2016

6. गामक सुरता- शब्द संख्या :2265, ब्तब्थ : 19 अक्टुबर 2016

7. खब्सयाएल घर- शब्द संख्या :2057, ब्तब्थ : 09 नम्बिर 2016

8. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या :1889, ब्तब्थ : 15 नम्बिर 2016

9. अनका बेर ओंघी- शब्द संख्या :2233, ब्तब्थ : 20 नम्बिर

2016

10. देि उठान- शब्द संख्या :2297, बाच्य : 24 नम्बिर 2016

11. नमहर घरक िच- शब्द संख्या :2397, बाच्य : 28 नम्बिर 2016

बगदल गाम’,कथा ‘मुबइयाएल घर’क पबहल रिना च्यक। समाजमे व्याप्त र च्बढ़िदी सोि ओ अन्धचविशाससँ जकडल समाजक चितके पस्तुत करैत अच्छ। समाजक ओहन व्यचबत तथा सोिके रेखाचकत करैत अच्छ जे ब्माच्यलाक चकसानी-आत्मबाभघ संस्कृचाके कमजोर करैत रहल अच्छ। पस्तुत कथाक पात- घुरनके देबच ओबह िजिके अकानल जा सकैछ।

घुरन, मनच्ह-मन सोिने छलजे पढाइ समाप्त कएला बाद नोकरी नबह करब। जतेक अपन खेत-पथार अच्छ, बपौती सम्पचा अच्छ ओबहमे रबम अपन पचिरिके ठाढ राखब। मुदा से नबह भऽ सकलैक। कारण, कोनहुँ िजिके जाधचर अनुकूल पचरबस्थत नबह भेटैछ ताधचर ओकर चिकास कोना सम्भि भऽ पाओत? ई शाशत सत्य च्यक। खाएर.., पढल-चलखल घुरन जखन खेतमे पहुँिला चक रंग-चबरंगक कुचच-िल समाजमे िलिए लागल..!

खेती-चकसानीक चरि ब्माच्यलामे जे सामाच्नक ितािरिण रहल ओ चकनकहुसँ च्छपल नबह अच्छ। उदाहरणक रपमे चकसानक च्जनगी आ खेती-बाडीक बस्थचा सबहक सोझमे अच्छए। ओना, िािचक दौरमे अपना एबहठाम कृचष संस्कृचाके बहुत ऊपर माचन लेल गेल अच्छ। मुदा व्यिहाचरक बस्थचा ठीक चिपरीत अच्छ। घुरनके छीतन कहलकबह-

“अहा तँ पढल-चलखल छी, अहूँ जखन घासे च्छलबै तखन हमरा सन मुरख आ अहा सन पढल-चलखलमे की अन्तर भेल?”

खेती-बाड़ी आ किसानीक संग गाम-घरके छोड़ि घुरन परदेस दिस जाइत अछि। छीतनक बात घुरनके अपना पक्षमे आनि कखनो लऽ कोना लैत अछि? ई विचारणीय विषयक।

'बतीसोअना',एक पढल-लिखल यातीक गाय-घी लऽ कऽ कुशेशर स्थान विदा होइत छथि। ओहि ठाम पहुँचए लेल नाहपर चढ़ि कोसी धार टपए पडैत छैक। नाहपर बैसल ओ यात्री आ मल्लाह दुइए व्यक्ति रहैत छथि। यात्री पुछलखिन खेबैयाके- "भैया, तूँ साइकोलोजी जनै छह?"
खेबैया बाजल जे 'नहि जनै छी', ताहिपर यात्री कहलकनि, तखन तोहर 25 प्रतिशत जिनगी पानिमे चलि गेलह। ..एहिना आरो-आरो ओहन प्रश्न यात्री पुछैत रहल जाहिसँ ओ किछु अगित नहि छल। यात्री कहैत-कहैत 75 प्रतिशत धरि कहि देलकैक जे तोहर जिनगी बेकार भऽ पानिमे चलि गेलह। किछुकालक बाद मौसमक रुखि बगदने नाहक स्थिति बिगडए लागल। खेबैया बाजल- "भाय साहैब, तैयार भऽ जाउ, हेलए अबैए?"
यातीक मुहसँ 'नहि' सुनि खेबैया पुन: बाजल- "भाय साहैब, जिनगीक धार उकडू-सुकडू दुनू दिस लैए। हम तँ बारहेअना डुमब, मुदा अहा बतीसोअना डुमब! किएक तँ अहाके पढैओमे बहुत खर्च भेल अछि!!"
एहि तरहे 'बतीसोअना' कथा बेस मार्मिक रीति प्रस्तुत करैत ओहि मानवीयकताक चरित्र ठाढ होइत अछि जे जानक अर्थके अनर्थ करैत हीनभावनासँ ग्रस्त छथि।

'कहियाबया रोग', एहि कथामे मुख्यत: तीन गोट पातक चित्र अछि। पहिल शीकान्त, दोसर गौरी आ तेसर कथाकार। कथाकार अपनहुँ

एक पात छथ्‍ि‍। शीकान्‍त हालहिमे मोटर साइकिल चलेनलक ओकरे डाइभिंगक लाइसेंस आ गाड़ियोक लाइसेंस बनेबाक छेलै, एिह पुरान कहिवया बुझि पड़ैनका लग (कथाकार लग) आबि कहलकि जे कनी मधुबनी िलू। मधुबनीमे हुनकर एक संगी कोटमे मुंशीक काज करैत छथ्‍ि‍न। जिनकाक नाओं अछि गौरी। कथाकारके गौरी मोन पडैत छथ्‍ि‍न। मोन पड़िते हुनकापर तामस िढ़ जाइत छन्‍हि। तीस िषिथ पहिने गौरी आ कथाकार समेत गामक 28-30 व्‍यक्‍त‍ि जमीनक आन्‍दोलनमे भाग लेने छलाह। ओहि समय गाम-गाममे जमीनक लडाइ िलि रहल छल। ईहो सभ जमीनक हेतु लडाइ लडला केस-मुकदमा िलल। ताहि कममे गौरी संकल्‍पि‍त भेल छलाह जे गामहिमे रहि खेती करब। मुदा कोटक दौड-बडहासँ ललखै-पढैक लूरि भऽ गेलन्‍हि आ ओ (गौरी) मुंशीक काज करय लगलाह। यएह सभ िीज कथाकारक स्‍मृतिमे आबि गेने मोने-मन तामसो उठि जाइत छन्‍हि। मुदा एक तँ शीकान्‍त भातिजा छथ्‍ि‍नआ दोसर र्यीहिमे दहेज नहि लेबक र्यीिर सेहो हुनकर मानि लेने रहथि। दुनू व्‍यक्‍त‍ि मधुबनी जा गौरीसँ भेट कए काज करबैत छथ्‍ि‍। आ साँझ धरि घुमि कऽ घर आबि जाइत छथ्‍ि‍।

‘मुझयाएल घर’, उदयपुर गामक जागेशर काका आ रमणी काकीक बीकि ई कथा छथ्‍ि‍क। िणीशरी भगतीक दशहाक हेतु दुनू परानी र्यादा होइत छथ्‍ि‍। संगहि उदयपुरक आरो बहुतो लोक िणीशरी भगतीक दशहाक संगबे भऽ जाइत छन्‍हि। सबा र पैआ दछिणा दए जागेशर काका फुटे अपना दुनू परानी लेल एकटा कोठरी भाडापर लैत छथ्‍ि‍। राति भरि र हि भोरे स्‍नान कएडाली सजा भगतीक पूजा करैत छथ्‍ि‍। फलाहार कएला बाद गाम अबैत छथ्‍ि‍। कथाक

सामान्य पाठ यएह छयक।

मुदा कथाक उदेश्य बेस व्यापक अछि। िणीशरी भगतीक भक्त िएह छथि जनाक िणीमे चौिकि छन्हि, जनाक सिर कमसँ बान्हल छन्हि। ई िज कथामे तखन स्पष्ट होइत अछि जखन जागेशर काकाकेरमणी काकी पुछलकन्हि जे गामेक कए गोटे संगे जाए िहैत अछि िणीशरी भगतीक स्थान। ताहिपर जागेशर काका अपन चौिर व्यक्त करैत छथि ओहिमे िणीशरी भगतीक महात्म्यसँ झलैक उठैत अछि। ओ कहैत छथि- ‘‘कहैले तँ सभ (गौआँ) िणीशरी भगतीक दर्शन करय जेता मुदा घरसँ बाहर धरबक जे बोली-िणीक रप बना नेने छैथ, से की अपने िणीशरी भगतीक दर्शन करता, ओ तँ अपन दर्शन भगतीके देथिन। मुदा जे हौउ, एके गाममे सभ रहै छी, मुदा...।’’

<u>जगदीश पसाद मण्डलक अिाचानी कथा संगह</u>

(2013) : 'अिाचानी' बीस गोट कथाक संकलन अछि। एहि पोथीक पहिल संस्करण, 2013 ईसवीमे शुित पकाशन- नई दिल्लीसँ पकाशित भेल अछि। पसिद्ध कथाकार शी दुगानन्द मण्डलजीक दारा एहि पोथीक लोकापण, 'सगर राति दीप जरय'क80म कथा गोषी- माििक राम-बैजनाथ बजाज धमशाला, बिमही, (सुपौल),मे 30.11.2013क भेल अछि।

एहि पोथीक कथा सभमे नोकरिहाराक जीिनक संतास, पिशमी कृषकक उल्लास, सास्कृिाक पािन-तिहारमे पैसल अन्धिशिासक, गाम्य जीिनमे जातीय ियिसायक महत्ि, कमश: टुटैत सम्बन्ध-बन्ध, सामािजक जीिनक िििधान समस्या तथा ओकर समाधानक बाट आदिक सूक्ष्म िविश्लेषण लोकमंगलक कामना देखबामे अबैत अछि।

एहि संगहक आमुखकार डॉ. योगानन्द झा छथि। डॉ. योगानन्द झा िहनका िविषयमे कहैत छथि- ''युगीन समस्या ओ समस्याक कारण एिम् तकर समाधानक पित ििन्तनशीलता िहनक ििस्तु-िििन्यासके पेरक-पभािकारी बनौने रहलिन अछि जािहमे परम्परित कथाधाराक आदशोन्मुख यथाथिादी दृषि कोण स्पष रूपे पस्फुिटत देखि पडैछ। मािथलाक लोकजीिनक उत्थानक पित समििदनात्मक अिभािियिक्त कौशलक कारणे मण्डलजीक कथा सभ िहनका आधुिनक कथाकार लोकिनक अगिम पंक्तिमे ठाढ कऽ देलकिन अछि।''

ििदेहमे िििम संस्करण उपलब्ध अछि। िििम संस्करण, पकाशी पकाशन- बिमही (सुपौल) सँ पकाशित भेल अछि। 'गामक िजनगी' पोथीक बाद कथािििधामे मण्डलजीक ई तेसर पोथी छियिन। एहि

पोथीमे 20 गोट कथा अछि। जकर क्रमानुसार कथाक शीर्षक, शब्द संख्या सहित क्रमानुसार अछि-

1. दोहरी मार- शब्द संख्या : 1368
2. केना जीब? - शब्द संख्या : 1039
3. नानि- शब्द संख्या : 2306
4. बालासंकाबातक लाइ- शब्द संख्या : 2056
5. भाइक बसनेह- शब्द संख्या : 1201
6. पेमी- शब्द संख्या : 2526
7. बपौती सम्पैत- शब्द संख्या : 2350
8. डंका- शब्द संख्या : 2401
9. संगी- शब्द संख्या : 1849
10. ठकहरबा- शब्द संख्या : 2349
11. अतहतह- शब्द संख्या : 2486
12. अभिमानी- शब्द संख्या : 3057
13. ऑपरेशन- शब्द संख्या : 1616
14. धमधाथ- शब्द संख्या : 1968
15. सरोजनी- शब्द संख्या : 1810
16. सुभदा- शब्द संख्या : 1922
17. सोनमाकाका- शब्द संख्या : 1572
18. दोती बआह- शब्द संख्या : 1822
19. पडाइन- शब्द संख्या : 1970,
20. केतौ नै- शब्द संख्या : 1203

'दोहरी मार', एहि कथामे अधिकाश पाप्त पोफेसर गुलाबक मनोविश्लेषण भेल अछि। पो. गुलाब कतेको विषयसँ चीनी रोग तथा ब्लड-पेसरसँ गस्त छथि। गामक सभ सम्पत्तिक संग घर-घराडी

सम्प्रति बेचि शहरमे पत्नी-पती एकाकी रहैत छथि। बेटा-पुतोहु परदेशमे रहैत छन्हि। हुनकालोकनिक सुखद लेखाहार पत्रिरिमे चिकयो ने छन्हि। शहरी जीनिक िकित्रिक्यसँ सम्मोहित भऽ पो. गुलाब शहरी जीनिके अपनौलन्हि। शुरमे तँ बडड नीक लगलन्हि मुदापछाति जखन शहरी िताििरणक भान भेलन्हि, िरी-डकैती, लूट-पाट, अपहरण, गन्दगी आदि समस्यासँ गस्त शहरी िताििरणसँ र-ब-र भेलाह तखन गाम्य जीनिक सौहादपूर्णथा िताििरणक पत्नी आकषर्ण जगलन्हि। जखन पुत्र दारा ई समाद भेटैत छन्हि जे पौतक मुडन घरपर नहि भऽ कऽ िष्णो देिीमे होएतनि, जइ लेल हुनकोलोकनिके ओहीठाम एबाक आमंतण भेटैत छन्हि आ ओ अपनाके अशक्य बुझैत छथि। टुटल सिरमे गुलाबबाबू बजैत छथि-

“मोबाइल छोडि अन्सरािदो केना दऽ सकब। तीन दिनसँ बजारमे करफू लागल अछि। सिपाहीसँ सडक भरल अछि। एहेन स्थितिमे घरसँ केना िनकलब?”

‘निनि’,ई कथा अिभिानी नामक पोथीमे तेसर स्थानपर अछि। निनि कथामे पत्रशमी कृषकक गाथा आएल अछि। अपन पत्रशमक बले अपन भाग्यक िनमाण करैत अछि। एहि कथामे मिथिलाक लोक जीनिक िकिभिन्न खण्डकिित उपस्थित कएल गेल अछि यथा ृकि-लतािदक पत्रहल फड देिताके िढायब, गाए िबआएलापर महादेिके दूधसँ अिभषेक करब आदि। गाम्य जीनिमे पसरैत जातीय ओ साम्पदाियक िदिेष िदस सेहो एहिमे संकेत कएल गेल अछि। मुदा एहि कथामे मिथिलाक लोकजीनिक आिथिक स्थितिके बदहाल करएबला जइ समस्यापर िशेष दृिष्ट िनक्षेप कएल गेल अछि, से थिक बािढक समस्या। एहि समस्याक कारणे मिथिलाक गाम्य जीनिक आिथिक िियिस्था अस्त-ियस्त भऽ जाइत अछि। तथािप

एहि कथाक नायक आधुनिक िजानक पदि्धा अपनाए निकसम्मक धान उगबय लगैत अछि, तीमन-तरकारीक नगदी फसल उपजाबय लगैत अछि आ नूतन नस्लक माल-जाल पोसि अपन जीनिके खुशहाल बना लैत अछि।

'नानि' कथाक विश्लेषणक कममे आमुखकार कहैत छथि- "स्तुत: एहि िजानक पदि्धा दारा ग्रामयलाक कृषकक जीनि समुन्नत भऽ सकैत अछि, से संदेश देब कथाकारक उदेश्य छन्हि।"

'वालासंकान्तिक लाइ',एहि कथाक माध्यमसँ गाम्यजीनिमे पसरल अन्धविशासपर पहार कएल गेल अछि। वालासंकान्ति एकटा एहन पािनि व्यक जे ग्रामयलाक घर-घरमे मनाओल जाइत अछि। एहि दिनसँ सूयर्थउतरायण भऽ जाइत छथि आ कमश: शीत ऋृतु सिन्त आ गृषम दिस बढय लगैत अछि। मुदा एहि पिक पसाद गहण करबाक हेतु पात: स्नान जररी बूझल जाइत छैक। ग्रामयलामे ई अपिद सेहो पसरल छैक जे एहि दिन जे कयो भोरे नदी ि पोखरिमे डूब दैत छथि हुनका नदी-देिता तत्काले लाइ धरा दैत छथिन।

एही अपिदपर विशास कऽ गोपाल नामक एकटा नेना बारहे बजे रात्रिमे नदीमे डूम देबए िल जाइत अछि आ ठंढसँ गस्त भऽ जाइत अछि।

एहि कथाक मादे आमुखकार लिखैत छथि- "गाम्यजीनिक अन्धविशासी समाजके एहि कथाक माध्यमसँ ई संदेश देल गेल अछि जे स्तुत: ई पािनि पकृति-पिरतिथिपर आधािरत अछि आ एहिमे बानु पाखण्ड कयने लोकके अपन सामथ्थिक अनुसार समैपर स्नान करबाक िाही, नहि त अन्धविषिसमे पड़ि रोगगस्त भऽ जएबाक िाही।"

'भाइक सिनेह',कथामे सुभाष देि आ विंिरनाथ दुनू भँइ एक दोसराक

पत्नी अगाध शांति, भक्ति ओ बन्धुत्वकि भावि रखैत छथि मुदा देयादिनी लोकनिक बीच खट-पटसँ परिवारिमे तनाव-तनाउज भऽ जाइत छन्हि। तनाव-तनाउजक मूलमे अर्थाभावतापर कबजा रहैत अछि। मुदा जखन दुनूक मनमे परस्पर प्रेमक भावि जगैत छन्हि तँ दुनू एकदोसराक दु:ख बँटबाक हेतु तत्पर भऽ जाइत छथि।

आमुखकार लिखैत छथि- "भाइक स्नेह कथामे कृषक जीविनिमे पारस्परिक सहयोग, सद्भावि ओ शक्तिक अनुकूल श्रमपर आधारित संयुक्त पारिवारिक उपयोगिताताक परम्परागत अनुगायन देखल पडैछ।"

जगदीश पसाद मण्डलक 'बजन्ता-बुझन्ता'

बजन्ता-बुझन्ता (2013) :पस्तुत पोथी कथाकारक द्वतीय बीहैन कथा-संगह च्थक। एहि पोथीक पहिल संस्करण; शुति पकाशन, दिल्लीसँ 2013 ईस्वीमे पकाशित भेल अछि। 30.11.2013क शनि दिन 80म कथा गोष्ठी- बेरमा-बेमस्थीमे अनुमण्डल पदाधिकारी शी अरुण कुमार सिंहजीक, डॉ. बचेशिर झा, डॉ. रामाशीष सिंह, पो. धीरेन्द्र कुमार, शी रामजी पसाद मण्डल, डॉ. अशोक अविचिल आदि विदानक संग कथाकार जगदीश पसाद मण्डलजीक समक एहि पोथीक लोकापर्ण भेल अछि। पछाति, पल्लवि पकाशन- निर्मली (सुपौल)सँ सेहो अगाम संस्करण पकाशित होइत रहल; तिथ्यानमे तिचम संस्करण (2018) उपलब्ध अछि।

पस्तुत संगहक पत्येक कथा अलग-अलग सामाजिक मुदाके लए कऽ बुनल गेल अछि। आजुक परिवेशिमे भऽ रहल सामाजिक परिवर्तिथा ओ उथल-पुथलके एहि संगहक सभ कथा किछु-ने-किछु रेखांकित करैत अछि। कहल जा सकैछ,'बजन्ता-बुझन्ता' व्यक्तिगत ओ सामाजिक स्तरपर भऽ रहल उथल-पुथलक एकटा दस्तावेज अछि।

एहि संगहमे 68 गोट बीहैन कथा (Seed Stories) आएल अछि। कमश: सभ कथाक शीर्षक निम्नांकित अछि- 'कटिट','काटि सूत','बुधनी दादी','चलतोड','मुँह-कान','अनठेना','अपन काज','दूरी','पुरनी भौजी','छुटि गेल','काठक दिन','अप्पन हाथ','कनफुसकी','मुँहक बात मुहेमे','कनीटा बात','गप्प-गुदा','बिसतरिस','कहिबया भाय','गोहाइर','स्वामीजीक डाक-बाक्','सोग','पनटिती','कनमन','अजादी','पटोर','फुसयाह','गप्प-मुक्का','ठिकीदारी','झगडाउ-झोटैला','घबाह ट्यूशन','दादी-

मा',‘पटोटन',‘मुसाइ पण्‍डित',‘भरमे-सरम',‘देखल चिन्‍न',‘फज्झैत',‘अकास दीप',‘बुच्चि-बच्चिया',‘पहाडक बेथा',‘उमकी',‘बजन्‍ता-बुझन्‍ता',‘मिथ्‍योग',‘शंका',‘ओसार',‘छोटका काका',‘सीमा-सरहद',‘रमैत जोगी बोहैत पानि',‘गंजन',‘सजए',‘घटक बाबा',‘आने जका',‘दान-दच्छिना',‘उडहैड',‘मत्‍हानि',‘मेकिी',‘झुटका चिदाइ',‘मुँहक खचिायान',‘कोसच्ञया',‘हूब्‍स गेल',‘पोखला कटहर',‘सरही सौबजा',‘तेरहो करम',‘डुमैत चिानगी',‘िर-चिापाही',‘दूधबला',‘टाइच्यस्‍ट',‘समदाही' आ अन्‍तिम कथा अछि- ‘बुच्चिया दादी।'

20 गोट कथाक सामान्‍य अथथ्‍प्रस्‍तुत कएल जा रहल अछि। संगह पच्‍हल कथा च्यक‘किट',एच्‍ह कथामे कथाकार स्यिं एक पात छच्यि आ दोसर पात छच्यि च्‍दनेश। एच्‍ह कथामे मध्यम गिच्छ मजबुरीके हू-ब-हू देखाओल गेल अछि। ओहन पचािरमे पढबाक-च्‍लखबाक इच्‍छा रच्‍हतो चिदाथीके जीनि-यापन सम्‍बन्‍धी आन-आन काजक मजबूरीमे कोना बाझल रहए पडैत छैक, जाच्‍ह कारणे स्‍कूल नच्‍ह जा पबैत अछि।तकर नीक चितण एच्‍ह कथामे च्‍दनेशक माध्यमसँ कथाकार कएलच्‍नि अछि।

2. ‘कािि सूत', कथामे दू जाच्‍ताक च्यातमे छोट-छीन बात लऽ कऽ आपसी मत-च्‍भनताके देखार करैत कथाकार एच्‍ह कथामे देखौलच्‍न्‍ह अछि जे एकठाम रहबाक कारणे दू जाच्‍ताक लोकमे च्‍भनता तँ अछि मुदा ओ कािि सूतमे बान्‍हल अछि जे कखनहुँ टुच्‍ट सकैए।

3. ‘बुधनी दादी', कथामे कथाकार गामक बुढ-बुजुगच्‍क दशाके देखेबाक पयास कएलच्‍नि अछि। च्यया-पुता बाहर कमा रहल छच्‍न्‍ह आ ओ बुढ-

बुजुगथसभ चकछु अछैत असगर आ जीनि जीबाक लेल अभिशप्त छथि। बुधनी दादी बजलीह- “बुर्चा, जीबैक मन होइए मुदा तेहेन-तेहेन आपैत-विपैत सभ अछि जे होइए तइसँ नीक भरमे-सरमे मरब जाइ।”

4. ‘चबलतोड’,कथाक माध्यमसँ शी जगदीश पसाद मण्डलजीसैद्धान्तिक जान ओ पायोगिक जानक बीचि अन्तरके बुझेबाक पयास कएलनि अछि। संगहि आधुनिक चशिक्षा आ जान पाप्त केनिहार लोकमे पायोगिक जानक कमी कोन तरहे व्याप्त अछि तकरा सेहो एहि कथाक माध्यमसँ कथाकार चिचित कएलनि अछि। एहि कथामे दू गोट पात अछि- 1. चन्दनानाथ, 2. दयाकान्त।

5. ‘मुँह-कान’, कथामे आजुक आधुनिक युगमे कजाक चिक्यूहमे फँसैत लोकक दशाक चित्रण भेल अछि। सुनरलालआमनधन काका नामक पातक बीचि एहि कथाके गढ़ि कथाकार इशारा कएलनि अछि जे आधुनिक युगमे कजा लेब तँ आसान अछि, मुदा ओकरा चिपस करब कठिन चकएक भऽ जाइत अछि।

6. ‘अनचिन्हना’, अनचिन्हना कथा आजुक चशिक्षा-व्यचस्थाक दुदशाक उघाड़ित करैत अछि। एक तँ स्कूल सभ चशिक्षक चिहीन अछि आ जे चशिक्षक छथियो, हुनकासँ पढाइ-चलखाइसँ बेसी आन-आन काज लेल जाइत अछि, जाहिसँ पढाइ-चलखाइ रसातलमे जा रहल अछि। चिहुतरफा हास एकर उदाहरण छथिक। रामचकसुन आ अमरनाथ मास्टर साहैब, एहि दू पातक बीचि कथाके गढल गेल अछि। रामचकसुन कहलकचिह- “होउ, अही सबहक जुग-जमाना छी, जे काटब से काटि

चाअ।'' रामचकसुनक 'काटब' सुना अमरनाथ अहाचत होइत बजला- ''ठीके ने अहा कहै छी। अपना सभके जे सभसँ छोटका चन अछि, ओइमे कथीक छुटी होइए से बुझल अछि?'', रामचकसुन बजलाह- ''नञ।'' मास्टर साहैब कहलथिन- ''बडा चनक!''

7. 'अपन काज', कथाके भोला आ कपलेसर नामक दू पातक बीि गढल गेल अछि। अपना एठामक खेती-बाडीक बदलैत पचदृश्यक जीन्त िणया एि कथामे कएल गेल अछि। चकसान पारम्पक खेती छोड़ि व्यसायक खेती चचन बढ़ि तँ रहल अछि, बढाओलो जा रहल छैक, नीक बात, मुदा ताि लेल जानसँ िचत रहबाक ि रखबाक स्थिा सेहो व्याप्त अछि। ताहू तरफ कथाकार इशारा कएलि अछि।

8. 'दूरी', कथामे बाबा-आ पोताक बीि ितालापसँ पि-पतीक बीिक नाजुक सम्बन्धक झलक देखाओल गेल अछि। एि कथामे ई बताओल गेल अछि जे दू अलग-अलग माहौलमे पलल-बढल पुरख आ स्ती बीि एहन दूरी रितो कोना एकठाम रहैत अछि।

9. 'पुरनी भौजी', एि कथामे गामक चानगीक बीि पोता-पोतीक संग एकटा दादी केर दुलार-मलाडक िणया कथाकार कयने छथि। दादी लेल दस बखक पोताक पश- 'मीरा माने की भेल, दाय' सँकथाक अन्त होइत अछि। एि पशक माध्यमसँ कथाकार इशारा कएलि अछि जे कोना जानक सहजता पभाचत भेल जा रहल अछि।

10. 'छुटि गेल', कथाके साचतीआ काशीनाथ नामक पातक बीि

कथाकार मण्डलजी गढने छथि। एक दिस तँ छोट बच्चीक बाल-सुलभ चिन्ता छैक, जे अपन बाबा दिया लोकक बजनाइ अपना बाबाके सुना रहल छै, तँ दोसर दिस बाबाक आत्मजानक चित्रण अछि जे गरियाएब छोड़ि देलखिन्ह। "अबै छेलौ तँ अहा-दे लोक सभ बजै छला जे ओ आब केकरो नै गरियबै छथिन।" ...गामक नाओं सुनि साम्प्रतीके अनुकूल बनबैत काशीनाथ कहलखिन- "बुच्ची, केतेके गरियाएब। अपने मुँह दुखा जाइए। छोड़ि देलिऐ तँए छुटि गेल।"

11. 'कारण दिन', कथामे कथाकारसँ दुनू परानी पात छथि। कथाकार एहि कथाक माध्यमसँई बतेबाक पयास कएलनि अछि जे छुद कारणे दूटा गाम अपनहि भीड जाइए, लड़ि जाइए। तकर फलाफल नुकसान होइत छैक, जे कतेको लोकके व्यक्तिगत आ सामाजिक स्तरपर सेहो भुगतए पडैत छैक। कथाकार पतीके कहलखिन- "पैछला सालक भोट दिन की भेलै से अखनो ने बुझै छी। एतबे देखै छी जे दुनू गामक बीच खूब मारि भेल। दुनू गामक लोक झोरा लऽ लऽ कोट-कचहरी करैए। चाहे जेकर गोटी लाल होइ तइसँ हमरा कोन मतलब। छगुन्तामे पडल छी जे मारि केलक कोइ, रोजी-रोटी हमर केना छीना गेल, एकठाम रहितो दुनू गामक आबा-जाही किए बन भऽ गेल? अपना खेत-पथार अछि जे अपने आबाए-पाबाये कमहब!"

12. 'अपन हाथ', कथामे कथाकार सँ पत्नि-पतीक बीचक सम्बन्ध आ धीया-पुताक पति माए-बापक व्यवहारक चित्रण कयने छथि। कथाकार बहुत अकर्षक शब्दमे व्यवहारक पूणचित्रण पस्तुत कएलनि अछि।

32. 'कनफुसकी', कथामे गामक दू व्यक्तिक बीच दोस्ती आ ओहि दोस्तीमे नुकाएल अविश्वासके रेखांकन भेल अछि। पहिल व्यक्ति सोहन नामक नियुक्ति आ दोसर स्वयं कथाकार एहि कथाक पात्र रूपमे उपस्थित भेल छथि। जे दोस्तीमे नुकाएल नीक-बेजा केर छोट-छीन आलेख सदृश प्रस्तुत करबामे सफल भेल छथि।

13. 'समदाही',कथाक माध्यमसँ कथाकार दूटा पती राखैबला लोकक केहन दुदर्शा होइत छै आ ओ कोना दाँत तरक जीह जकाँ जीबैत अछि, तकर सटीक चित्रण करैत ओकरापर आक्षेप सेहो कएलनि अछि।

14. 'मुँहक बात मुहेमे',कथामे दू गोट पात अछि पहिल- बच्चा माएआ दोसर घटक। कथाकार एहि कथामे एकटा माइक निरदुताके देखेबाक प्रयास कएलनि अछि। संगहि गाम-घरमे अजीब आ अजगुत नाओं रखबाक प्रथा दिस सेहो ध्यान आकृष्ट करयबाक भरपूर प्रयास कएलनि अछि।

15. 'कनीटा बात' कथामे विश्वासघातक परिणामके रेखांकित कएल गेल अछि। कथाकार आ पढुआ काका एहि कथाक पात छथि। बहुत कम शब्दमे पैघ गप्प रखबाक कलाक प्रदर्शन सेहो एहि कथामे कथाकार कएलनि अछि।

16. 'गन्हा-गुदा', कथामे दू गोट पात अछि, पहिल सुखदेव आ दोसर खुशीलाल बाबा। ई कथा वितमान समयमे जे गामक किसानक दुदर्शाक

अछि, तकर छोट-छीन दस्तावेजि सदृश अछि।
सोलह षिष्ठपर आएल सुखदेकिे अपन हाल-ि ाल खुशीलाल बाबा सुनबैत छथि- “बौआ, ऐठामक च्चारहस्तके कोनो गच्चा-गुदा अछि। धार माच्छ दुइर कऽ देलक! कोसी नहर ठीकेदार खा गेल! मौनसूनी बखाके रौदी खा गेल! की कहबह..!” एह्ल कथामे कथाकार ईहो कहबामे पाछू नच्छ रहला जे खेती-बाडी छोच्छ गामसँ शहर पलायन कए नौकरी-ि ाकिरी करैबला लोक आच्यध्क र पे च्चकसानसँ बेसी नीक स्थानपर छथि।

17. ‘च्चासि ािस’, कथाक माध्यमसँ कथाकार सम्बन्धक बीि कि माया आ ममताके नीक रेखाच्चि त खीि लच्चा अछि। एकटा डॉक्टर जे पूरा दुच्चायाँक रोगीक ऑपरेशन करैत अछिओ अपन सखा-सम्बन्धीक ऑपरेशन नच्छ कए सकैत अछि, च्चकएक तँ शच्य-च्चकयाक दौरान माया आ ममताक कारणे छाती दहच्चा सकैत छच्चह। ई सन्देह डॉक्टर परमेसरकजेठ भाय भागेसरके भेलच्चा तँए ओ अपन भाएसँ ऑपरेशन नच्छ करा दोसर डॉक्टरसँ करबौलच्चा। पुछलापर कहबो केलच्चन-
“बौआ, अहा साधारण शेणीक लोक नइ छी जे च्चकछु कच्छ देब। दू र पमे जान काज करै छइ। गुण आ च्चागुण। अहा छोट भाए छी, जखन पेट काच्चतौ तखन छाती दहैच्चायो सकै छल। मुदा देखैक जे भार देलौ से अही दुआरे जे अपन जेठ भाय बुच्झ नीकसँ तकच्चायान करब।”

18. ‘कि हच्चया भाय’, कथामे दू गोट पात कमश: ‘कि हच्चया भाय’ आ ‘नीरस’ नामक व्यच्चात्तक बीि जीि निक अच्चातम अि स्थामे गप्प-सप्प जीि नानुभि कि साझा करबौलच्चा अछि। च्चकछु लोक मोकदमाबाज

होइत छथि से पूरा जिनगी ओहिना मोकदमाबाजीमे बरबाद कऽ लैत छथि आ बाल-बच्चा सेहो एहिना पाछा बरबाद भऽ जाइत छथिन्ह। जकर उदाहरण कहियाया भाइके बनबैत कथाकार सिद्ध कएलनि अछि जे कोनहु चीजक आदति नहि हेबक चाही, आदत पतिापक कारण होइछ।अत: आवश्यकता भरि मतलब राखक चाही।

19. 'गोहाइर', कथामे 'भगत'क संग 'कथाकार' सेहो एक पात छथि। अनुभतिात्मक शैलीमे कथाक रीति परस्तुत कए कथाकार देखौलनि अछि जे अन्ध-विशासक जालमे फँसल लोकक दशा केहन अछि। संगहि ओहि जालसँ निकलबाक छटपटाहट ओ संघषर्को सेहो कथाकार रेखांकित कएल मुदा पूरा जतन कएलाक उपरान्तहुँ पचासप्रतिशत लोक ओहि जालसँ निकलि नहि पबैत अछि, बल्कि उतरोतर ओहि जालमे ओझराएले रहि जाइत अछि।

20. 'पनिती', कथामे आमजनक बेथा आ ओहि बेथाक मजा लैत सरकारी तंत आ राजनेताक खेलाडिक नीक चित्रण एहि कथामे भेल अछि। पचासि इन्दरा आवास कायर्क्रममे सरकारी तंतक घूस-पेकि सजीव चित्रण करैत कथाकार सोनेलाल बाबाकबेथाके तखन सोझा अनलनि जखन पचासिआ कहलकैन- "आइक युगमे बिना खुऔने-पीऔने काज चलै छइ?" ताहिपर सोनेलाल बाबा अपनाके चाहतथा बुझि बजलाह- "ई बात ओइ दिन चिकए ने कहलौ जइ दिन हमरो हाथमे भोट छल।"

जगदीश पसाद मण्डलक दजथ्य भच्च कथाक सामान्य पच्चिय

शी जगदीश पसाद मण्डलजी पस्तुत च्चिधामे बहुत रचिना कयने छथ्थ। ह्लनक कथा लेखनक संसार बेस व्यापक छच्हि। एह्लठाम हम दजथ्य भच्च कथाके अध्यायन कय ओकर सामान्य पच्चिय, सामान्य अथथ पस्तुत कय रहलहुँ अच्छि-

1. 'डीहक बटबारा',शीकान्तआ मुकुन्द दुनू व्यच्चत एकह्ल पच्चिरिक छथ्थ। च्चच्चायौत भैयारी। दुनू व्यच्चत पह्ल-ह्लच्चब कऽ इंजीच्चायर बच्चा गामसँ बाहर रहैत छलाह। गाम पाय: छुट्टये गेल छलच्हि। आबजखन अकिाश पाप्त कएलच्चा आजीनिक बीरिंग-रंगक समस्या सभ आबए लगलच्हि, अथात् शहरी जीनिक मध्य समस्या आच्चसँ भेट हुअ लगलच्हि च्चक दुनू व्यच्चतके गामक च्चानगी आकथ्य केलकच्हि। गाम आबा पह्लल कायथघर बनाएबके आरम्भ करैत छथ्थ जाह्लमे अपन-अपन सुच्चिधायुक्त बुच्चिक नीक-जका जह्लना इस्तेमाल सभ च्चन करैत रहथ्थ तह्लना करय लगलाह। पाि कटाक घराडी छच्हि जे बटबारा नह्ल भेल छल। एिह बटबाराक कममे गामक अमीन आ छह-पाि करएबला लोकक संग फराक-फराक ढंगसँ दुनू इंजीच्चायर साहैब िहैत छथ्थ जे हमरा तीन कटा हुअए तँ हमरा तीन कटा हुअए। एही तरहे कथा आगू बढैत अच्छि।

गामहुँमे अनेको तरहक लोक छथ्थए। च्चकछु लोक ह्लनका सबहक च्चकरदानीसँ छुब्ध भऽ, च्चकछु करय ताह्लसँ हमरा कोन मतलबक च्चीिरसँ खाली पिताप कएलक आ च्चकछु लोक ओहनो तँ अच्छिए च्चकने जे ठकके ठकब अपराध नह्ल मानैए। माने, ओहन लोक अपन-अपन हाथ सुताराए लगल। आ जतयसँ अपराध बोध हुअ लगलैक च्चक गुरकाका लग जा कऽ राय-च्चीिर करैत अच्छि। गुरकाका-

“देखहक, गामक पढल-लिखल ि बानु पढल-लिखल लोक, पेट भरै दुआरे नोकरी करैले बाहर जाइ छैथ, नीक बात। मुदा गामके सोलहनी नै छोड़ि दैथ। अखन देखै छी जे अमेरिका, इंग्लैडसँ लोक तीन दिनमे गाम आबि सकै छैथ। तँए सालमे कम-सँ-कम एको बेर, नहि तँ हुनको गाम छुटऐन, केतेको बेर आबि सकै छैथ। जइसँ गामक लोक आ खेत-पथारक संग सम्बन्ध बनल रहतैन। मुदा से नै कऽ गामके सोलहनी छोड़ि, अनतहि घर बना रहए लगै छैथ, ओ गामक दुर्भाग्य छी। जेकर फल होइए गामक जान निआयात भऽ जाइए। जइसँ सुतल गाम सुतले रहि जाइए। संगे गामक बेहिार, कला-संस्कृति सभ टुटि जाइए। रिटायर केला पछाइत ि जनगीक अन्तिम अस्थिामे, जँ कियो गाम आबि रहए ि हिता तँ हुनका गाम केहेन लगतैन। डेग-डेगपर टकर आ बात-बातमे विि ाद हेबे करतैन। ..दोसर बात सुनह, अपना गाममे ि द्धकजी भेल छैथ। जिनके पोता शुभकान्त छुटऐन। ि दिक पकाण्ड िदान ि द्धकजी। नाओं तँ छेलैन गंगाधर मुदा ि द्धकजी नाओंसँ ि ख्यात भेला। अपनो राज्यमे आ आनो-आनो राज्यमे जहन पण्डितक बीि शास्त्रार्थ होइ तँ हुनकर जि ब देनिहार कियो ने ठहरैत। अनेको तगमा आ पशस्ति पत भेटलैन। अखनो परोपटाक लोक हुनके नाओंपर अपना गामक नाओं ‘ि द्धकजीक गाम’ बुझैए। हुनके ि लौल अपना गामक पाप्त छी। पहिने पापक छुआ-छूत अपनो गाममे छल, मुदा ओ सभके बैसार करा कऽ बुझा देलखिन जे दुनियामे जेते मनुख अछि, सभ मनुख छी, तँए मनुख-मनुखक बीि छुआ-छूत नै हेबा ि ाही। थोपडी बजा सभ हुनकर ि ि ारक समर्थन कऽ देलक। ओइ दिनसँ पापक छुआ-छूत गामसँ मेटा गेल। तहिना दोसर भेल जोगानदर, मोखारी दासक पका ि ला। अजीब कला हुनकोमे छेलैन। जहिना नि मे अलाया-बेताल, तहिना गीत गबैमे। जे पाटथलऽ कऽ

स्टेजपर अबैत, धऽ कऽ झहरा दइत। एहेन बापटा अखन धरि कोनो नाि मे नइ देखलिऐ। ओकरे परसादे गाममे भिखारी दासक नाि केतेको बेर भेल। जहन भिखारी दासक पाटी छपरासँ पूब-मुहे असाम, बंगाल, नेपाल चिदा होइ तँ अपने गाममे र कइ। खाली खेनाइ आ इजोतक खि थगौआँक होइ। तहिना जब तीन-िार मासमे घुमै तँ फेर अँटकै। तहिना भेल महाीिर। िििरा बड गरीब छल। नोकरी करैले कलकता गेल। मुदा नोकरी नै कऽ रिक्सा िलिबए लगल। अजीब संस्कार ओकरोमे छेलइ। रिक्शो िलिबै आ गीतो-कविता बनबै। पहिने तँ लिखल-पढल नै होइ, मुदा अ-आसँ सीखब शुर केलक। रिकछुए दिनक पछाइत लिखबो आ पढबो सीखि लेलक। रिक्सापर जहन िलै तँ अपन बनौल गीत गाबए। एक दिन एकटा साहित्य पेमी रिक्सापर िढल रहैथ आ महाीिर रिक्शो िलिबै आ गीतो गबइ। उतरै काल कवि पुछि देलखिन। सभ बात महाीिर कहलकैन। ओ एकटा कवि गोष ीमे आमंत्रित कऽ देलखिन। ओइ गोष ीमे पहुँि महाीिर तीनटा कविता आ दूटा गीत गौलक। तइ दिनसँ ओ कवि गोष ीमे आमंत्रित हुअ लगल। बंगाल सरकार दस हजारक पुरस्कार आ पशस्तिपतसँ सम्मानित केलकैन। तहिना भेल कारी खलीफा। जेकरा इलाकाक लोक खलीफा मानैत। बडका-बडका दंगलमे पहुँि ओ आन-आन इलाक केतेको खलीफाके पटकलक। ओकरा िलैत गाममे ककयो केकरो बहु-बेटीके खराब नजैरसँ नै देखैत। एक बेर एकटा घटना जमीनदारक सिपाहीक संग घटलै। एक साए लाठी सिपाहीके समाजक बीिमे मारलकै। तही दिन जमीनदार दू बीघा खेत ओहिना दऽ देलकै। एहेन-एहेन पण्डित, कलाकारक बनौल गाम छी, तेकरा हम सभ अपना जीबैत केना दुइर कऽ देबइ। आइ जँ गाम दुइर हएत तँ ऐगला पीढी केकरा गाव

पढतै। तँए जँ दुनू गोरे मनुख बनल गाममे रहए िहता तँ बडबढ़िया, नहि तँ गाममे रहने की कयो समाज तँ नहि बनल जाइत।"

अमानत भेल। कोनो बेसी झमेल रहबे नहि करैक। पािन कटाके दू भाग करब। बँटिारा कय रामिनन्द अमीन बजलाह- "जानकी संदेह हुअए ओ िहे कडीसँ ि फीतासँ ि लग्गीसँ आबिक डेगसँ भजाि लअ।"

4789 शब्दक एहि कथामे आठ गोट पातआएल अछि, यथा- 1. शीकान्त, 2. मुकुन्द, 3. बुिइ, 4. रामिनन्द, 5. खुशीलाल, 6. चिकसुनदेि, 7. सरप, 8. गुर काका।

डॉ योगानन्द झा पस्तुत कथाक सन्दर्भमे लिखने छथि- शी जगदीश पसाद मण्डलजीक 'डीहक बटबारा', कथामेभष्टािर पूर्वक धन अर्जन कएनिहार समाजक अधोगतिक चितािकन करैछ।"

2. 'भैयारी', कथामे कथाकार ओहन लोकक िथिकयने छथि जे पिरिक महतिके तँ नहि ये बुझि पौलक जे गामो आ समाजहुसँ दूर भऽ मात धन अर्जनके जनगी बुझि ओहि पाछू लािग जाइत छथि। पस्तुत कथाक पात कुसुमलाल सेहो यएह कएलक। बी.ए. पास कए मधुबनी कोटमे किरानीक नोकरी शुर कएलक।

कोटक बडाबाबूक बेटीसँ बिवािह भेलैक। मधुबनीए मे डेरा लऽ दुनू व्यस्त रहए लागल। किछु दिनक पछाित नीक कमाइ हुअ लगलैक। धीरे-धीरे शहरी िसातमे कुसुमलाल उझियाए लागल। शराब पीबैक लत सेहो पकिड लेलकैक। बिवािर कएलक जे गाममे जे अपन सम्पत्तिक हिस्सा अछि ओ बेचि मधुबनीए आिन ली। सएह कएलक। किछु दिनक पछाित कुसुमलाल बीमार पिड जाइत अछि। तखन पिरिर आ समाजक महतिके बुझैत अछि मुदा ताबत बहुत समय

ससरब गेल रहैक। मनुक्खक ब्मानगीए कतेकटा होइए।

एब्ह कथाक पसंगमे कैलाश कुमार ब्माश ब्लखने छब्य ओ ब्मामाब्कत अब्छ- “भैयारी कथा शहरी जीनिक किाधिसँ लोकके साधिान करैत अब्छ। जे ऐ बातके नब्ह बुझैत छब्य आ अपन परम्परा आ संस्कारके नै ध्यान मे राब्ख गामक जमीन जत्था बेचि, गामक जब्ह के समाप्त कए जे शहरमे बैस जाइत अब्छ तकर पब्रणाम नीक नै होइत अब्छ।”

एब्ह कथाके बुनबामे कथाकारके िाब्च हजार छब्बीस गोट शब्द तथा पाि गोट पात, यथा- 1. दीनानाथ, 2. रामखेलौन, 3. सुब्माता, 4. कुसुमलाल, 5.ऑब्कसक एकटा स्टाफ, केर संियिन करय पडलब्ह।

3. ‘बब्हन’,कथाके ‘राधेश्याम’,‘राब्माणी’,‘मामा’,‘सुनीता’,‘रीता’,‘डॉक्टर सुधीर’,‘उमाकान्त’, डॉक्टर सुब्माता’,‘शबाना’,‘रेहना’ तथा सरोजनी नामक पातक माध्यमसँ कथाकार बेस मनोयोगसँ 2688 शब्दमे ब्लखने छब्य। एब्ह कथाक सन्दभमे डॉ. योगानन्द झा समीकामे कहने छब्य- “बहीन, कथामे सरोजनी नामक िृाक कथा अब्छ जब्माक मृत्युक अिसिरपर बजाओलो उतर हुनक पुती रीता हुनक अन्ब्ताम दशब्नक हेतु नब्ह अबैत छब्य आ व्यस्त होएबाक लाथ लगा दैत छब्य जखन ब्क परजाब्ताक मुसलमाब्न बब्हना शबाना हुनका देखबाक हेतु अबैत छब्यन। राधेश्यामक एब्ह ब्चन्तनमे सम्बन्ध-बन्धक िास्तब्िकताके उदाब्टत करैत कहल गेल अब्छ- ‘दुब्नयामे बब्हनक कमी नै अब्छ। लोक अनेरे अपान आ बीरान बुझैए। ई सभ मनक खेल ब्छऐ। हँसी-खुशीसँ जीनि ब्बातबैमे जे संग रहए, िएह अपान।” माता-ब्पताक पब्त ब्धयापुताक कुभेलाक संगब्ह एब्ह कथामे मानितािदिक पब्तपादन मण्डलजीक लक्ष्य बुझना जाइत अब्छ। उि् ब्खाका पाप्त ब्गथे

सम्पन्न विदेश गमनक लालसा पबल देखल जाइत अछि। एहि प्रवृत्तिक कारणे ओ लोकनि स्वदेश सेहो सँ तँ विचित रहिये जाइत अछि, अपनो जीवनक परिवेशि संकुचित बना लैत छथि।''
क्रमशः डॉ कैलाश कुमार मिश्र- ''बहीन कथाक माध्यमसँ मण्डलजी कहए चाहैत छथि जे केबल माइयक कोरासँ जन्म लेने बहिन या भाए नै भऽ सकैत अछि। एक बहिन जतऽ अपन बेटी अपना कार्यमे अतेक लीन अछि जे मरनासन माएके देखबाले समए नै निकालि पाबि रहल अछि ओतहि दोसरठाम माइयक एक मुसलमान सखी हल्ला-फंसाद रहितहुँ रास्तामे घिरा कऽ बहिनाके देखए अबैत अछि। ई कथा हिन्दु-मुसलमानक संग आपसी पेमक गंगा-जमुनी प्रतीक कहल जा सकैत अछि। मैथिलीमे ऐ तरहक कथाक रचना हेबाक चाही।''

4. 'घरदेखिया',कथा चारि हजार एकैस (4021) शब्दक ऑट-पेटबला कथा थिक, जकरा कथाकार ओहन पातक माध्यमसँ देखौलनि अछि जकरा कहियो ने छैक। लुखिया, जे एक मसोमात छथि। एहि कथामे 'लुखिया'क अलाबे 'नागेसर','भुरकुनिया','पीहुआ, पुहुपलाल','डोमन' आ 'बुचि' नामक पात आएल अछि। कथाक सन्दर्भमे डॉ. योगानन्द झा देखौलनि अछि- ''दहेजक सामाजिक समस्याक उन्मूलनक दृष्टिएँ 'घरदेखिया' कथा अत्यन्त हृदयस्पशी अछि। मध्यलाक उच्चवर्गीय समाजमे धनलोलुपताक कारणे उत्पन एहि समस्याक कुफल नारी पताडनाक अनेकक रूपमे अत्यन्त गम्भीर स्वरूप पाप्त कयने अछि जकर कारणे कन्याक विवाहि एकटा पैघ समस्या बनल रहल अछि आ एकर कोनो ठोस समाधान अदयावधि समक नहि आबि सकल अछि। मण्डलजी एहि समस्याक समाधान लोकजीवनक विविधक पवृतिमेके मानैत छथि आ सद्विचारा विवाहक अभिलाशय दीन पात लुखियासँ

कहबैत छथि- “नै। हम ककरो बेटीके पाइ लऽ कऽ अपना घर नै आनब।” लुखियाक एही क्रियमे दहेज समस्याक पक्का समाधानक दिशा-बोध होइत अछि।”

5. ‘पछताबा’, कथा भारतीय आजादीक लडाइमे योगदान देबयबला, गोली खेलहा पचारिक व्यक्ति रामानाथक छियक। ओ समय छल। आब रामानाथक पुत- ‘रघुनाथ’ पढ़ि-लिखि कऽ इंजीनियर बनि अमेरिका चलि जाइत अछि। सासुर पक्सँ एहि तरहक भावना लेल पोत्साहन भेटैत छैक। बेटाके अपन देश छोड़ि आन देश जएबाक भावनासँ रामानाथके दुख होइत छनि। पुछैत छथिन-

“किए?तोरा-जोकर काज अपना ऐठाम नइ छइ?”

मुदा रघुनाथ किछु ने बाजल आ ने अपना भावनामे संशोधन कएलक। उच्च शिक्षा पाप्त रघुनाथक भावनाके चिता रामानाथ स्वीकार करैत चुपि रहि गेलाह।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र एहि कथाक समीक्षा करैत कहलनि अछि- “पछताबा एक एहेन कथा थीक जकरा माध्यमसँ ई कहक पयास कएल गेल अछि जे आधुनिक आ तकनीकि शिक्षा पाप्त कए लोक बाहर भागि जाइत अछि। बाहर जाए जीवि मशीन भऽ जाइत छैक। रघुनाथ किछु एहने कायथकेलन्हि। चलि गेलाह अमेरिका। मुदा अन्तमे अपन गलतीक अनुभव भेलन्हि आ अपने-आपके बोनिहार-मजदुरसँ निचाँह मानए लेल तैयार भेलाह- “हमरासँ सइयो गुना ओ नीक छथि जे अपना माथापर घैल उठा मातृभूमिक फुलवाडीक फूलक गाछ सीचि रहल अछि। अपन माए-बाप समाजक संग जिनगी बिता रहल छथि। आइ जे दुनियाक रुप-रेखा बनि गेल अछि ओ किछु गनल-गूथल लोकक बनि गेल अछि। जिनगीक अन्तिम पडावमे पहुँचि

आइ बुझि रहल छी जे ने हमरा अपन परिवारि चिन्हैक बुझि भेल आ ने गाम समाजके।''

एहि कथाके 2663 शब्दमे लिखल गेल अछि। जाहिमे कथाकार मात तीन गोट पातके माध्यम बनौलन्हि, यथा- 1. रघुनाथ, 2. शशिनाथ, 3. रुक्मिणी।

6. 'डॉक्टर हेमन्त', एहि कथामे बाढ़िक पिटमे जनमानसक राइ-बाइ होइत परिवारि, जिनगी आ जिनगीक संघर्षक परिचयि कराओल गेल अछि। संगहि समयपर ओहन लोकके मात एकटा चिकित्साक सुविधा उपलब्ध कराओने केहन खुशी होइत छैक तकर पमाण उपलब्ध करबैत कथाकार गाम-समाजक योगदानके सेहो देखबैत छथि। व्यहिारिक रुपके पस्तुत करैत देखा देलन्हि अछि जे एकोरती सहयोग भेटने कोना ओहनो परिस्थितिमे, बाढ़िमे अपन बिलटल परिवारिके बिसरि लोक समाजक सेवामे लोक तन-मनसँ लागि जाइत अछि। सुलोचिनाक परिवारि बाढ़िमे दहा गेल, तथापि सुलोचिना डॉक्टर साहैबक संग आपदागस्त रोगीक सेवामे लागि जाइत अछि। संगहि एकटा डॉक्टरके अपन कार्यक पति निस्वार्थिक रुपक निर्णय सेहो करैत अछि जाहिमे हुनक असुविधाके सेहो सोझा आनल गेल अछि।

कथाके समीक्षा करैत डॉ. कैलाश कुमार मिश, पबन्ध-निबन्ध-समालोचिना (विदेह-सदेह- 10)मे लिखने छथि-

''डॉ. हेमन्त पत्यावर्तित् करैत छथि ओइ तमाम डाक्टर समुदायके जे अपन सुविधाके मर्यादा बिसरि शहरी जीवनि जीबैत अछि, पैसा कमाइत अछि, गाम-घर जेकाँ दुर्गम स्थानमे जेनाइ, जहल जेनाइ जेकाँ कालापानीक सजा बुझैत अछि। जखन डॉ. हेमन्त कोसिकन्हामे बसल बाढ़िसँ पभावित गाम जाइत छथि तँ एक बारह

िषक्क चकशोरी सुलोिनाक ियिहार आ गामक लोकक स्नेह पाबा ओ कृत-कृत भऽ जाइत छथ्थि। अभाकि स्नेह कतेक रमनगर आ सुअदगर भऽ सकैत अछि। सुलोिनाक मुँहसँ गाम आ शहरी जीिनक तुलना व्यारिाइ आ िीनीक कीडासँ कए लेखक कहानीमे निीनम्िकि रिना करैमे सफल होइत छथ्थि। कथामे सुलोिना डॉ. हेमन्तके कहैत छन्हि- “हम तँ बचिा छी डॉक्टर सहाएब ते बहुत नै बुझै छी। मुदा तइयो एकटा बात कहै छी। जहिना िीनी मीठ होइत अछि आ व्यारिाइ कडू। दुनूमे कीडा फडै छै आ ओइमे जीिन-यापन करैत अछि। मुदा िीनीक कीडीके जँ व्यारिाइमे दऽ देल जाइए तँ एको क्षण नै जीवित रहल। उचिते भेलै। मुदा की व्यारिाइक कीडाके िीनीमे देलाक बाद जीवित रहत? एकदम नहि रहत। तहिना गाम आ बाजारक व्यानगी होइत।”

कथाकार एहि ‘डॉक्टर हेमन्त’ कथाके कुल छह गोट पात, यथा- 1. डॉक्टर हेमन्त, 2. कम्पाउण्डर, 3. चक्साबला, 4. नैया, 5. सुलोिना, 6 जीयालाल केर माध्यमसँ व्यखलन्हि अछि। जाहिमे 4407 शब्दक संियनक खगता पडलन्हि।

7. ‘बाबी’, एहि कथा केर पाठसँ स्पष होइछ जे कथाकार हिन्दू-मुस्लिम सरोकारके छद्म पािमिक ऐतिहासिक आधारके उजागर करैत एकटा ठोस पमाण उपस्थित कएलन्हि अछि। एहि कथाक समीक्षामे डॉ. कैलाश व्यासजी व्यखलन्हि अछि-

“बाबी कथाक माध्यमसँ लेखक एक एहेन सामाजिक महिलासँ पचिाए करबैत छथ्थि जे ओना तँ अपन नाओं व्यखऽ नै जनैत छथ्थि परन्तु ियिहार आ बुद्धिसँ समस्त गाममे पूज्या थीकी। गामक लोक कुनो कायथहुनका पुछने बिना नै करैत अछि। बाबी सबहक लेल छथ्थि आ

सभ बाबी लेल तत्पर। कथाक पारम्भमे एकटा उपमा खाटी देसी आ औचजनल लगैत अछ। काचाक मासक णिधा करैत बाबी कहैत छथ जे ई एहेन मास थक जैमे लुंगाया बारिइक घौदा जका पाचाक घौदा अछ। एहेन उपमा हमरा अन्यत नै भेटल अछ। अही कथामे “पचयामे दूटा नाचयल, पान छीमी केरा, दूटा टाभ नेबो, दूटा दारीम, दूटा ओल, दूटा अडुआ, दूटा टौकुना, दूटा सजमना, एक मुटी गाछ लागल हरदी, एक मुटी आदी नेने रहमतक माए आंगन पहुँच बाबीक आगूमे रख बाजल- बाबी अपनो डालीले आ हनको-ले नेने एलएना हे।”

ई कथा हन्दु-मुसलमानक बीि पेम आ सास्कृचाक एकताक कडी थीक। अपन बेटा रहमत जे क बचिमे बीमार भऽ गेलैक आ बाबी ओकरो लेल छ मइयासँ कबुला कऽ देलथन्ह, तँए ओकर माए बाबीक माध्यमसँ पाि षिथधव बाष्ठाक संग छ मनबैत अछ। ओहना उपास, सभ िजिक पालन, छक पचा आस्था। बाबी जखन खरनाक खीरक पसाद रहमतक माएके दैत छथन्ह तँ ओ खुशीसँ नाच उठैत अछ। छ मइयाके गोर लगैत छन्ह आ बेटाके बारोग बनगी जीबैक आशा सेहो लगा लैत अछ।”

कथाके 2167 शब्दमे ‘बाबी, ‘बरखचयािली’, ‘रहमतक माए’ आ सोनरेिली नामक पातक बीि कथाकार बखलन्ह अछ।

8. ‘काबानी’,कथामे कथाकार ओहन चित पस्तुत केलाह अछ जाहमे लालबाबू सन लोकक करदानी स्पष भेल अछ। लालबाबू एह कथाक एक पात्रक नाओं अछ जे नारीके नारी नह बुझ माने मनुक्ख नह बुझ मनोरंजनक साधन बुझैत छथ। आ भैयाकाका सन लोक ओहन मनुक्खके चचित नह कए पबैत छथ जाहसँ भयानक

पचणामक काभनीके भोगय पडैत छन्हि।

भैयाकाकाके अपन बेटी- काभनी केर विहि पाि लाख र पैआ खिथ कएलाक उपरान्तो बुझ पडैत छन्हि जे हम अपन बेटी-संग कंजुसाइ कएलौ हे। भैयाकाका अपना मुहे स्वीकार करैत छथि- ''हमरा दस बीघा खेत अछि। तेकर बादो केते रंगक सम्पैत अछि। गाछ-बास, घर-दुआर, माल-जाल इत्यादि। मुदा ऐ सभके छोडि दइ छी। खाली खेतेक हिसाब करै छी। अपना गाममे दस हजार र पैए कटासँ लऽ कऽ साठि हजार र पैए कटाक जमीन अछि। ओना, सहरगंजा जोडबै तँ पैतीस हजार र पैए कटा भेल। मुदा हम्मर एकोटा खेत ओहेन नै अछि जेकर दाम िलीस हजार र पैए कटासँ कम अछि। बेचिसयोक अछि। मुदा िचालिसे हजारक हिसाबसँ जोडै छी तँ आठ लाख र पैए बीघा भेल। दस बीघाक दाम अस्सी लाख भेल। तीन भाए-बहिन अछि। हमरा िहसाए तँ जेहने बेटा तेहने बेटी।''

एहि कथामे पात सभ आएल अछि- 'भैया काका', 'कथाकार','कथाकार केर माय','लालबाबू', 'मृगनयनी', 'मुरही बेियािली एक िि मिहला' तथादुखपुर गामक अनेको घसाििहनी।

9. 'ओ िदन', एहि कथामे गामक झगडा, झंझट माि-पीट आ केश-फौदारीक िि भेल अछि। फगुआक िदन सुिल, िकरण, अर ण, तर ण, िर णआ कर ण एकठाम बैस िविरैत अछि जे आशा निह छल जे समाजक मरण भऽ जाएत। तर ण बजैत अछि-

''भाय सहाएब, अनेरे तरडे छी, आब िक ओ िदन रहल जे मरद-औरत, िधया-पुता सभ िमलक गेबो करत, खेबो करत आ रंगो-अबीर खेलत।''

गाममे केश-मोकदमाक िलते िविषाक्त िताििरण बिन गेल अछि, तािहमे आपसी पेम, भायािरा इत्यािद समाप्त भऽ गेल रहैत अछि।

10. ‘उरीन’,ई बुधना काकाक बेथा-कथाक कथा च्यक। जकरा कथाकार फराक अन्दाजमे च्लखलन्हि अच्छ। कथा अमैया भारसँ शुर होइत अच्छ। जन्हना लोक माए-बापक चकया-कमथकएला पछाच्च ऋणसँ उरीन होइत अच्छ तेनाच्हते बेटा-बेटीक चीिहि कएलापर सन्तानक ऋणसँ सेहो उरीन होइत अच्छ।

बुधना काकाक तेसर बेटीक चीिहि छल। बुधना काकाके दूटा पुत छन्हि, दुनू गामसँ बाहर रच्ह नौकरी करैत छन्हि। दुनू पुत अपन-अपन पतीके सेहो अपना लगच्हमे रखने छच्य। तेसर बेटीक चीिहिमे बुधना काकाके दुनू पुतमे सँ क्यो ने गाम आएल आ ने आच्यथक सहयोग केलकन्हि।

बुधना काका गाइक खटालक नाओंपर बैकसँ तीन लाख टाका कजथ उठा कए बेटीक चीिहि कएलच्चा।

11. ‘देखौस’, कथामे चकसानी कमथक उतराच्यकारपर रघुिर बाबा आ गौरीनाथक बीि गप्प भेल अच्छ। रघुिर बाबा आब 80 िषसँ बेसी उकि भेलापर अपन जीिनिक अन्तम समयक कल्पना करैत छच्य। एहेन गौरीनाथसँ अपन अन्तम समयमे देखभालक कामना राखैए। मुदा गौरीनाथ रघुिरबाबाके अपन गुर जका मानैत अच्छ। ओ सामाच्जक जीिनिमे सीकार करैए जे जे हम बाबाक देखौस केलौ ते हमरा खेती करबाक लूच भेल।

12. ‘हेराएल च्जनगी’, कथामे ओहन लोकक गप्प आएल अच्छ जे च्ायच्मत रपे अपन कायथक सम्पादन करैत अपन च्जनगीसँ बहुत उम्मीद तँ रखैत छच्य, मुदा तेहन भऽ नच्ह पबैत छन्हि। हीरानन

सुभ्यस्त चकसानक पढ़ुआ बेटा छच्थि। हीरानन बी.एस-सी. धच पच्छ पबैत छच्थि मुदा कोनहुँ नोकरी नच्ह भऽ पबैत छच्हि। देखबते-देखबते हुनक बेटा-बेटी सेहो बाच्लग भऽ जाइत छच्हि। अपन पैतृक, साढे तीन बीघा जमीनक बदौलच्त हीरानन अपन बेटीक कन्यादान करब आ बेटाके एम.बी.ए. कराएब असम्भि लगैत छच्हि। हीराननके अपन च्जनगी हेराएल सन लगैत छच्हि।

जगदीश पसाद मण्डलक औपन्यात्मक कृत्ति

मैथिली साहित्यमे उपन्यास लेखनक आरम्भ होइत अछि 1914 इर्सीसँ। अनेकहु उपन्यासकार विदान लोकनि अपन-अपन औपन्यात्मक कृतिसँ एहि विधाक सजबैत रहलाह। 1960 ईर्सीसँ पूर्वधरि मैथिलीमे नाम-मात्रवत उपन्यासक सृजन भऽ सकल छल-

'निदर्थी सासु' (1914), 'शशिकला' (1915), 'पूणर्थविवाह' (1926) 'दुरागमन रहस्य' (1946), 'कलयुगी सन्यासी' (1921),'रामेश्वरि' (1915), ' सुमति' (1918), 'मनुष्यक मोल' (1924) 'चन्द्रगहन' (1933),'कन्यादान' (1933), 'विमुन्डा' (1933), 'मालती-माधव' (1935) 'सोन्दयोपासनक पुरस्कार' (1938), 'सुशीला' (1943) 'असहाया जाया' (1945), 'दुरागमन' (1945), 'जैबार' (1946),'पारो' (1946),'नतिुनया' (1956), 'कुमार' (1946), 'भलमानुस' (1947), 'कला' (1946), 'विकास' (1946), 'चन्द्रकला' (1950), 'पतिमा' (1950), 'मधुशालिनी' (1956),'गिरिकन्या' (1950), 'विदागरी' (1950), 'अनलपथ' (1954), 'विदापति' (1960), 'कृष्णहत्या' (1957), 'रतहार' (1957), 'आन्दोलन' (1958), 'दुविक्त' (1958), 'आत्मकथा' (1958), 'विनोदय' (1959), 'बाहाबपात-पाथर' (1960)

कमश: अनेकहु उपन्यासक सृजन अदतन भऽ रहल अछि आ आगूओ होइत रहत। कोनहु भाषा-साहित्यक सभसँ महान विधा उपन्यासके मानल जाइछ। एहि विधाक शीर्षमे मैथिलाक अनेकहु विदान उपन्यासकार लोकनि अपन-अपन अमूल्य योगदान दैत रहलाह अछि।

जाहिसँ मैथिली साहित्यक उपन्यास-विधाक भण्डार दिनो-दिन विशाल होइत गेल अछि। एहि कड़ीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी सेहो दू हजार इस्वीसँ रचिना करय लगलाह। अन्यान्य विधाक संग उपन्यास विधामे सेहो हिनक योगदान महत्वपूर्ण अछि। अल्प समयावधिमे मण्डलजी दर्जन भरिसँ ऊपर उपन्यासक रचिना कय सम्बन्धित विधाक श्रीवृद्धिमे योगदान कएलनि अछि।

1. मौलाइल गाछक फूल (2009), 2. उत्थान-पतन (2009), 3. जिनगीक जीत (2009), 4. जीवन-मरण (2010), 5. जीवन संघर्ष (2010), 6. नै धाड़ैए (2013), 7. बड़की बहिन (2013), 8. ठूठ गाछ (2015), 9. इज्जत गमा इज्जत बँचलौं (2017), 10. लहसन (2018), 11. पंगु (2018), 12.आमक गाछी (2018), 13. भादवक आठ अन्हार- (अपूर्ण), 14. सधवा-विधवा- (अपूर्ण)

क्रमश: सभ उपन्यासक पोथी परिचय देल जा रहल अछि-

1. मौलाइल गाछक फूल (2009):मण्डलजीक ई पहिल औपन्यासिक कृति छियनि। एहि उपन्यासक लेखन 2004 इस्वीमे कयने छथि। लेखन कार्यक आरम्भक सन्दर्भमे उपन्यासकार अपन मंतव्य व्यक्त कयने छथि- “मौलाइल गाछक फूल 2004 ईस्वीमे लिखल पहिल उपन्यास छी। अखन धरि पाँच टा उपन्यास आ किछु कथा, लघुकथा, नाटक सभ अछि। छपबैक जे मजबूरी बहुतो रचिनाकारके छैन से हमरो रहल। मुदा तइसँ लिखैक क्रम नै टुटल। ‘भैटक लावा’ कथा सेहो दू-हजार चारिक पहिल कथा छी।”

प्रस्तुत उपन्यास, ‘मौलाइल गाछक फूल’क पहिल संस्करण 2009 इस्वीमे ‘शुभम प्रकाशन’, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- 110008 सँ

भेल पकाशित अछि। तिथानमे पाचमि संस्करण 'पल्लवी पकाशन', तुलसी भनि, जे.एल.नेहरु मार्ग, वार्ड नं. 06, नीमश्री, जिला- सुपौल, बिहार :847452 सँ पकाशित अछि।

03.04.2010क जनकपुर (नेपाल) मे 'सगर राति दीप जरय'क 69म कथा गोष्ठी आयोजित भेल छल। जाहिमे 'मौलाइल गाछक फूल' उपन्यासक लोकापर्ण डॉ. रामावतार यादव, पख्यात भाषाविद्, डॉ. रामानन्द झा 'रमण', डॉ. राजेन्द्र 'विमल', शी राजाराम सिंह 'राठौर' तथा मंचस्थ अन्य विद्वान लोकनिक दारा भेल अछि।

उपन्यासकारक समपर्ण भाव विराट रूपमे अंकित भेल अछि। जामाकेत हुनक समपर्ण भावके देखल जाए-

''आधिलाक निन्दाविसँ लS कS बालुक ढेरपर बैसल फुलबाडी लगौनिहार तथा नवविहान अननिहारलेल...।'' ई पोथी समर्पित अछि।

एहि उपन्यासमे 13 गोट पडाव अछि। 'मौलाइल गाछक फूल' उपन्यासमे उपन्यासकार समाजक विराट रूप पस्तुत कएलनि अछि। जामाकेत 65 गोट पातक माध्यमसँ एहि उपन्यासके मण्डलजी पूणर्थ कएल- 1. बौएलाल, 2. रूपनी, 3. रघुनाया, 4. अनुप, 5. नथुआ, 6. मुसना, 7. रमाकान्त,8. शशि शेखर, 9. हीरानन्द, 10. अजाज्य (मटकन) 11. सोनेलाल, 12. सोनेलालक बहिन, 13. सोनेलालक साउ, 14. फुदी, 15. सुमाया, 16. डाइरि, 17. झाडूबला, 18. डॉक्टर बनजी, 19. कम्पाउण्डर, 20. रमापति दास, 21. गंगा दास, 22. बुढ़ाइ दास, 23. जुगेसर, 24. डॉक्टर महेन्द्र, 25. डॉक्टर रविन्द्र, 26. श्यामा, 27. डॉक्टर सुजाता, 28. डॉक्टर जमुना, 29.

रमेश, 30. बहिरीजी, 31. सुभाता, 32. रोगही, 33. कबुतरी, 34. बेगबा, 35. राम पसाद, 36. चटकट मास्टर, 37. पैटमेन, 38. टमटमबला, 39. सुबुध, 40. सुकन, 41. मुनमा, 42. पधानाध्यापक, 43. वीकि बाबू, 44. राजनन्दर, 45. गुलबाया, 46. मंगल, 47. निनीिली, 48. चकशोरी, 49. बुधनी, 50. सोमनी,51. बौका, 52. लखना, 53. बालटा, 54. शीनि, 55. रदल, 56. भजजु, 57. झोली, 58. कुशेसरी, 59. मंगल, 60. एकटा ढेरबा बचिया, 61. ललबा, 62. चमचाया, 63. जोखन, 64. भालेसर, 65. सोनमा।

पस्तुत उपन्यासक पचिय दैत पचसि साहित्यकारएमि् 'विदेह' ई पत्रकाक सम्पादक शी गजेन्द्र ठाकुर 'पबन्ध-नबन्ध-समालोिना' (भाग-२) मे चलखलन्हि अछि- ''जगदीश पसाद मण्डलक 'मौलाइल गाछक फूल' गामक, गामसँ पडाइनक आ गलल व्यिस्थाक पुनजीिनक लेल समाधानक उपन्यास अछि।''

पचसि रिनाकार सि. जीिकान्त एहि उपन्यासक भाषाक विषयमे पबन्ध-नबन्ध-समालोिना (विदेह-सदेह- 10)मे चलखलन्हि अछि- ''पोथीक भाषा खाटी लोकक भाषा छयक, चकताबी भाषा नहि छयक। सेहो एकटा विशोष्ट आ महत्िपूणथ्बनबैत छैक। साहित्यमे एहेन घर-आँगनक पात नहि आएल छल, से सभ पिशि कएलक अछि।''

पचसि समीक्क/आलोिकि डॉ. योगानन्द झा एहि उपन्यास तथा उपन्यासकारक सन्दभथ्मे चलखलन्हि अछि- ''शी जगदीश पसाद मण्डलक 'मौलाइल गाछक फूल' उपन्यासमे भाषाक कुशल ओ रिनात्मक पयोग भेल अछि जाहिसँ िणथ्मे सटीकता, सहजता, चाम्बधभाषा, स्पषता ओ मनोिैज्ञानक विश्लेषणक क्मता पदचशथ्त होइत अछि। अपन गुणक कारणे मण्डलजीक कथा संसारमे

चिशि्सिनीयता देखबा पडैत अछि आ ओ अपन पौढ चिोिर ओ अनुभूचिाके पाठकीय मानसमे स्थानान्तचित करबामे सफल भेल छथि। अन्ततः महेन्दक उक्चि- 'समाज रपी गाछ मौला गेल अछि, ओहिमे ताचि, कोचि, पटा नि चिनगी देबाक अछि जाहिसँ ओहिमे फूल लागत आ अनरित फुलाइत रहत'मे उपन्यासक उिश्य स्फुट भेल अछि। स्भािति: मण्डलजी एहि कृचिाक माध्यमे गाम ओ गामेतर जीनिक संगहि ियिक्चि, पचािर, समाज ओ राष्रक अभ्युन्नचिाक हेतु एकर पत्येक इकाइके त्याग ओ समपथक भानिासँ ओत पोत रहबाक आदशथजीनि पचिा अपनयबाक संदेश देलचि अछि। हुनक ई संदेश 'सि भन्तिु सुखबनः सि सन्तु चिारामयाः, सि भदाचि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग भित्'क भानिाक पुनः उपस्थापन थिक।"

एही कडीमे पचिि समीक्षक शी दुगानन्द मण्डल अपन 'िकु' पोथीमे उक्त उपन्यासक पचिािय एहि तरहे पस्तुत कयने छथि- "मौलाइल गाछक फूल उपन्यासमे सहजता, समरसता, यथाथिाद, आदशिाद, धमथािरता, एकल एिम् संयुक्त पचािरिक रप-रेखा खीि एकटा मनोिैजाचिक चिश्लेषण रपमे उपन्यासकार हमरा लोकैनक मध्य उपचिथत छैथ। हुनक ई चिधासँ उपन्यास जगतमे एकेठाम सभ तरहक सुख, आनंदक अनुभि होइत छैन। आजुक समाज जे सभ तरहे मौलाएल अछि। अपना उपन्यासक मादे उपन्यासकार मात एक आदमी रमाकान्तबाबूक हृदय पचितिचि कऽ समाजमे एकटा निका फूल चिलेबामे शत्-पचिशत सफल भेला अछि। रमाकान्त बाबू दारा अपन दू साए बीघा जमीन- सबहक माथपर एकहक बीघा खेत अथात् जेकरा सात गो बेटा ओकरा सात बीघा दऽ सभके एकटा नि चिनगी पदान करैत छैथ। एक नि चिनगी जे पूणथः मौलाएल छल ओइमे

फूल खिलला दैत छैथ। हमरा आशा नै अपितु विशास अछि जे शी जगदीश पसाद मण्डलजी सन उपन्यासकार होथि आ रमाकान्तबाबू सन नायक तँ अपन समाज रूपी मौलाएल गाछ, मौलाएल नै अपितु फूलसँ लदि सकैत अछि।''

2. जिनगीक जीत (2009) : जिनगीक जीत उपन्यास शी जगदीश पसाद मण्डलजीक द्वितीय औपन्यासिक कृति छियनि। एहि उपन्यासक लेखन 2005 इर्स्वीसँ पहिनहि कयने छथि। मुदा पुस्तकाकार रूपमे एकर पहिल संस्करण 'शुति पकाशन', न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110008 सँ 2009 इर्स्वीमे पकाशित भेल छलिह। तिथानमे एहि पोथीक अगिम संस्करण 'पल्लवी पकाशन', तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार :847452 सँ सेहो पकाशित अछि।

'जिनगीक जीत' उपन्यासक पहिल संस्करण केर लोकार्पण कबिलपुर (दरभंगा)मे भेल अछि। डॉ. योगानन्द झाक संयोजकत्वमे 'सगर राति दीप जरय'क 70म कथा गोष्ठी 12.06.2010क आयोजित छल जाहिमे डॉ. मोहन भारद्वाजजी पस्तुत उपन्यास (जिनगीक जीत)क पहिल संस्करणक लोकार्पण कयने छथि।

एहि उपन्यासक आमुखमे मैथिलीक सुपरिचित आलोचक डॉ. तारानन्द 'वियोगी' लिखने छथि- ''जगदीश पसाद मण्डलजीक साहित्यमे मिथिलाक गामीण समाजक अद्भुत चित्र आएल अछि। मैथिलीमे एहि वस्तुक खगता सभ दिनसँ रहल अछि। हमरा लोकनि अक्सरहा चिन्तित होइत रहै छी जे गाम उजड़ि रहल अछि, गामक सम्बन्धमे

जतबे जे किछु लेखन भऽ रहल अछि से आगेसँभ फोससँ भरल अछि, अधिकांशक हताश करऽ बला अछि। हमरा लगैत अछि जे जीनिमे देखबाक जे दृष्टिकोण जगदीशजीक छन्हि से आम मैथिली साहित्यकारक दृष्टिकोणसँ फराक छन्हि ते ओ एहन कृति रचि पबैत छथि जे सामान्यसँ हटि कऽ अछि।''

रीय साहित्यकार शी मन्तोशर झा लिखैत छथि- ''जइ गाम घरक कथा सभ मण्डलजी उठाए ओकरा पचरणमे तक पहुँओने छथि तइ गाम घरक एतेक सूक्ष्म आ विस्तृत विरिण मैथिली साहित्यमे ऐसँ पूर्विकमे भेल अछि।''

उपन्यासकार शी जगदीश पसाद मण्डलजीक सम्बन्धमे पचसि साहित्यकार,'विदेह' ई पत्रिकाक सम्पादक शी गजेन्द्र ठाकुरजीफलैपमे लिखने छथि- ''जगदीश पसाद मण्डल शिल्पी छैथ, कथ्यके तेना समेट लइ छैथ जे पाठक विचिमत रहि जाइत अछि। मुदा हिनका दारा कथ्यके (कथा, उपन्यास, नाटक, पेरक-कथा सभमे) उदेश्यपूणथ बनेबाक आगह आ क्षमता हिनका मैथिली साहित्यमे ओइ स्थानपर स्थापित करैत अछि, जेतए-सँ मैथिली साहित्यक इतिहास 'जगदीश पसाद मण्डलसँ पूर्वि आ 'जगदीश पसाद मण्डलसँ' ऐ दू खण्डमे पाछित होएत। समाजक सभ गिथहिनकर कथ्यमे भेटैत अछि आ से आलंकारिक रपमे नै रिन अनायास, जे मैथिली साहित्य लेल एकटा हिलकोर एबाक समान अछि। हिनकर कथ्यमे केतौ अभार-भाषण नै भेटत, सभ गिथक लोकक जीनि शैलीक पक्ष जे आदर आ गौरि ओ अपन कथ्यमे रखै छैथ से अदुत।''

एहि उपन्यासमे 15 गोट पडाि अछि। 'बानगीक जीत' उपन्यासमे

उपन्यासकार समाजक अन्तिम व्यक्ति अथात ओहन व्यक्ति जकरा देह छोड़ि किछु ने छैक, तकरा सभक माध्यमसँ अपन विराट भाि-भूमिके पल्लापाितत कएलनि अछि। उपन्यासकार एहि उपन्यासके लिखबामे आमात्रित पात सभके अनलनिह अछि- "1. मखनी, 2. र मा, 3. सुजाता, 4. बि लाल, 5. पलैन, 6. अछेलाल, 7. जुगाय, 8. भुखनी, 9. दीनमा, 10. देनि, 11. भुटकुमरा, 12. राधाकान्त, 13. गुलेचाया, 14. रमुआ, 15. बुधनी, 16. नसीि लाल, 17. सजन, 18. जोगान्दर, 19. फुचियाहा, 20. नकिी, 21. किसुनमा, 22. फुचियाहाकघरि ाली, 25. जुगायक पती, 26. . शशाि कुमार, 27. रामनाथ, 27. दिनेशबाबू, 28. दोकानदार, 29. रमेसरा, 30. . देि ीदत, 31. पधानाध्यापक, 32. धनिकलाल, 33. महंथजी, 34. पुजेगरी, 35. बबाजी, 36. बटोही, 37. शान्ति।"

पो. ीणा ठाकुर, पूि थ विभागाध्यक, मैथिली विभाग, ल.ना.मि.विशिविदालय- दरभंगा, 'जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा करैत लिखने छथि- "मिथिलाक लोक संस्कृति संिाहक उपन्यास 'जिनगीक जीत'मे उपन्यासकार जीिनक ओइ सत्यके आत्मसात् करबाक पयास कयने छथि जइमे जीिनक समस्त 'सार' नुकाएल अछि। उपन्यासक मध्यमे उपन्यासकार मनुष्य जीिनक समस्त राग-विराग, आशा-आकाक्षा, दीनता-हीनता, उत्कषथ-अपकषथके विितत करैत ि स्तुत: जीिनक शाशत तथ्य- जीिक इि छाके उजागर करिामे सफल भेल छथि। ि स्तुत: ई उपन्यास भाषा अथिा ि लीमे जातीय स्मृतिक आ सांस्कृतिक र प व्यक जे हमर जातीय ि तना अथिा जातीय ि धिके सुरक्षित राखने अछि। मिथिलाक सूि ि वित अंकित करैत उपन्यासकार अपन जीिनानुभिसँ संचित कएल 'सार' आओर 'सत्य'के अभिा ि यिक्त कयने छथि। ि स्तुत: ई उपन्यास मिथिलाक

संस्कृतिक पतीक थिक आओर एकर सार थिक शाश्वति। उपन्यास मध्य पकृति, पर्वशि, आध्यात्म, समरसता आओर समन्वियक छवि आओर छटा सर्वत्र दृष्टिगोचर होइत अछि। तिनक साहित्यमे ई पवृत्ति पमुख अछि- एक समाजोन्मुख दोसर व्यिक्तिवादी तथा आत्म केन्द्रीत। उपन्यासकारक पवृत्ति समाजोन्मुख अछि। सम्पूर्ण उपन्यास मध्य मिथिलाक गामक लोकक रहन-सहन, आचार-विचारिक चितण एतेक सजीव अछि जे पाठकके ओइ लोकमे लऽ जाइत अछि, जनिका गाम छुटि गेल छन्हि। उपन्यास मध्य मिथिलाक समाजक चित एतेक वास्तविक रूपमे चित्रित भेल अछि जे मिथिलाक माटि-पानिक सुगन्धसँ पाठकक हृदए सहजहि आहलादित भऽ जाइत अछि।"

3. उत्थान-पतन (2009) : पस्तुत उपन्यास शी जगदीश पसाद मण्डलजीक तेसर औपन्यासिक कृति थिकन्हि। एहि उपन्यासक लेखन 2005 इस्वीसँ पारम्भ भेल अछि। 'उत्थान-पतन'क पहिल संस्करण 2009 इस्वीमे 'शुति पकाशन', न्यू राजेन्द नगर, नई दिल्ली-110008 सँ पकाशित भेल अछि। तिनकामे पाचीम संस्करण 'पल्लवी पकाशन', तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार :847452 सँ पकाशित अछि।

'उत्थान-पतन' उपन्यासक पहिल संस्करणक लोकार्पण डॉ. वीणा ठाकुरजी 'सगर राति दीप जरय'क 70म कथा गोष्ठी कबिलपुर (दरभंगा)मे कयने छथि। उक्त आयोजन 12.06.2010क डॉ. योगानन्द झाक संयोजकत्वमे आयोजित भेल छल।

पस्तुत उपन्यास 'उत्थान-पतन'मे 15 गोट पड़ाव अछि। उपन्यासकार

चामत्कारिक पातसभक माध्यमसँ उक्त पोथीके चित्रखल गेल अछि- 1. गंगानन्द, 2. पार्वती, 3. रीता, 4. दुखन सिपाही, 5. बनिा, 6. फुलेसरया, 7. बनिाक सरहोजि, 8. बाशेसर, 9. भोलया, 10. रतना, 11. रविया, 12. गुमश्ता, 13. बराहलाल, 14. अमृतलाल, 15. सावित्री, 16. दीनानाथ, 17. बौआजी, 18. रपनि, 19. सुशील दि, 20. गुलबा, 21. तेतरी, 22. लेलहा, 23. ढोरबा, 24. दादी, 25. भालेसर, 26. माधव, 27. जाननि, 28. सुखिया, 29. पकाशनिन्द, 30. िनििन, 31. बिहारी, 32. बुधना, 33. बाशेसरक बहनोइ, 34. देसिुनरी, 35. माधुरी, 36. श्यामानन्द, 37. यमुनानन्द, 38. पटिरी, 39. लीला, 40. रामधन, 41. यमुनानन्दक पती, 42. बेगबा, 43. कुरहबया, 44. नकिी दादी, 45. माला, 46. सुनयना, 47. गुलाब, 48. िलि, 49. रामदेि, 50. गंगानन्दक नाचान, 51. मुनीलाल, 52. रेखा, 53. रेखाक माए, 54. बनिू, 55. भास्ती, 56. रघुनाथ दास, 57. सुकल, 58. फुलनि दास, 59. चन्नेश, 60. महेन्द्र, 61. सचता, 62. डॉक्टर नीलमनी सेन, 63. पोफेसर जफर, 64. हसीना, 65. डॉक्टर मुकुल, 66. पण्डित शंकर, 67. कमलदेि, 68. कमलदेकि पती, 69. सुकन, 70. गणेशी, 71. बंगट, 72. चाणिी, 73. बकशाबला, 74. पिरासी, 75. चकरानी, 76. रामचकसुन, 77. सोनेलाल, 78. मंगला, 79. रघुिर बाबा, 80. चिदेसर, 81. मनलि, 82. भोलानाथ, 83. खुशीलाल, 84. दोकानदार, 85. रेशमा

एहि उपन्यासक सन्दर्भमे बहुविधाविद् रनिाकार शी राजदेि मण्डलजी कहैत छथि, अथात पस्तुत पोथीक सन्दर्भमे लिखने छथि- “केहनो अकमण्य बेकती जँ पूणथमनोयोगक संग आश्यकता उनचामे दतचित भऽ जाए तँ हुनक पगति होएब चालित भऽ जाइत अछि। ऐ दशाके

देखेबाक पयत लेखक पात श्यामानन्द दारा केलैन अछि। पचलितिधाशीलता संसारक नाअम छी। सामन्तादिसँ पूँजीादि आ पूँजीादिक गभेसँ समाजादिक जन्म सेहो होइत अछि। ई अलग बात जे पूँजीादिसँ साजियादि सेहो पनपैत अछि।

समाजनक उत्थान सम्बन्धक नामाण कऽ लेखक ई देखबए िहै छैथ जे टुटैत गामक लेल एकता आश्यक भऽ गेल अछि। जइसँ एक-दोसराक सहयोग भेटतै आ गामक सम्पूणथवकास हेतइ। सबहक संगे समाजनक न्याय हेतइ। श्यामानन्द दारा आधुनाक यंतसँ कृष कायथहोइत अछि। जइसँ ओ सम्पन चकसान बना जाइत अछि। ऐ माध्यमसँ लेखक देखबए िहै छैथ जे अपनो गाम-घरमे जँ बेकती वकि आ कमथनाष ासँ काज करय तँ ओकरा अजथा करबाक लेल दोसर पदेश नै जाए पडतै आ पडाइन रचक जेतइ।

अखनो गाम-घरमे पूणथजानक चकचण नै पहुँि सकल अछि। तइ कारणे एक गाम दोसर गामसँ लडैत-झगडैत अपना वकासके अरि केने रहैत अछि। बेमारीके डाइन-जोगान आ भूत-पेतक पकोप मानैत अछि। ई समस्या सभ सहजे ऐ उपन्यासमे उपस्थत भऽ गेल अछि। ऐ तरहे देखै छी जे लेखक गामक यथाथथजनगीक वत उपस्थत केने छैथ, संगे आदशथरप सेहो दृषगत भऽ रहल अछि।”

पस्तुत उपन्यास तथा उपन्यासकारक सम्बन्धमे पचा साहत्यकारएम् 'वदेह' ई पत्रकाक सम्पादक शी गजेन्द ठाकुरफलैपमे लखने छथ- “जगदीश पसाद मण्डलक कथ्यमे नोकरी आ पलायनक वरि पारम्पचक आजीवकाक गौरि मह्नमा मचाडत भेटैत अछि। आ से पभाकारी होइत अछि जनकर कथ्य आ कमथक पचा समान

दृष्टि कोणक कारणसँ आ से अछि जनकर बेकतीगत आ समाजिक जीनिक शेषताक कारणसँ। जे सोचै छी, जे करै छी; सएह लिखै छी तइ कारणसँ। याती आ धूमकेतु सन उपन्यासकार आ कुमार पनि आ धूमकेतु सन कथा-शिल्पीक अछैत मैथिली भाषा जनसामान्यसँ दूर रहल। मैथिली भाषाक आरोह-अरोिह मिथिलाक बाहरक लोकके सेहो आकर्षित करैत रहल आ ओइ भाषाक आरोह-अरोिहमे समाज-संस्कृति-भाषासँ देखौल जगदीशजीक सरोकारी साहित्य मिथिलाक समाजिक केतटामे नै रिन आर्थिक केतमे सेहो कान्ति आनत।”

4. जीनि-मरण (2010) : पस्तुत पोथी जगदीश पसाद मण्डलजीक ितृम औपन्यासिक कृति छियनि। एकर उपन्यासक लेखन 2005 इर्सीसँ पहिनहि भेल अछि। ‘जीनि-मरण’ उपन्यासक पहिल/द्वितीय संस्करण 2010 इर्सीमे ‘शुति पकाशन’, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110008 सँ पकाशित भेल अछि। तिथानमे पाचिम संस्करण ‘पल्लवी पकाशन’, तुलसी भनि, जे.एल.नेहर मागथ्र िडथनं. 06, निमली, जिला- सुपौल, बिहार :847452 सँ पकाशित अछि।

02.10.2010क बेरमा (झंझारपुर) मे ‘सगर राति दीप जरय’क 71म कथा गोषीमे ‘जीनि-मरण’ उपन्यासक लोकापथ कुमार रामेशर लाल दासतथा मंिस्थ अन्य विदान लोकनिक बीि भेल अछि। सम्पूणथ गामीणक आयोजकति तथा जगदीश पसाद मण्डलजीक संयोजकतिमे, मध्य विदालय पिसर- बेरमा गाममे उक्त गोषी भेल छल। कहल जाइछ, सगर राति दीप जरय’क 71म आयोजनसँकथागोषीमे खास बदलाि आबए लगल। नि-नि कथाकार, नि-नि सयोजकक

संयोजकत्वमे 'सगर राति दीप जरय' गाम-गाममे, गौआँ-समाजक साहित्य प्रेमीक सान्निध्यक स्थलपर आयोजित होएबाक दिशामे अगसर भेल।

पल्लवी प्रकाशनसँ प्रकाशित 118 पृष्ठक 'जीनि-मरण' उपन्यासक संग उपन्यासकारक विषयमे प्रख्यात समालोचक श्री शिव कुमार झा 'टिल्लू'जी 'मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पातक चित्रण' विषयक आलेखमे एहि रूपे व्यक्त कएलनि अछि- ''कहैले तँ सभ साहित्यकार अपनाके साम्यवादी कहै छथि मुदा साम्यवादी जीवन शैलीक जौं विश्लेषण कएल जाए तँ संभवत: मैथिलीक समकालीन साहित्यमे ध्रुवताराक स्थान श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीके भेटबाक चाही। हिनक सभ उपन्यास (मौलाइल गाछक फूल, जिनगीक जीत, जीवन-मरण, जीवन-संघर्ष, उत्थान-पतन, नै धाड़ैए, सदबा-विधवा, बड़की बहिन, भादवक आठ अन्हार।)मे दलितक चित्रण अनायास भेट जाइत अछि। लिखबाक शैली ओ बिम्बक विन्यास तेतेक पारदर्शी जे सवर्ण-दलितक मध्य कोनो खाधि नै। सम्पूर्ण समाजमे सकारात्मक तारतम्य स्थापित करबाक जगदीश जीक स्वप्न मात्र उपन्यासमे नै रहत, ऐसँ मिथिलाक समाजक प्रत्येक व्यक्तिमे भविसमे सर्वे भवन्तु सुखिन:, शान्तिक स्थापना अबस्स हएत। हिनक अविरल मर्मस्पर्शी आ प्रयोगधर्मी कृति 'मौलाइल गाछक फूल' मे दलित समाजक महादलित मुसहर जातिक रोगही, बेगबा, कबुतरीक मनोदशा आ आत्मकर्मसँ समाजमे शान्तिक ज्योति जगबैक कल्पना अनमोल अछि। दरभंगाक प्लेटफार्मपर सँ भंगी डोमक मानवीय भावनाक मरीचिका एकठा भऽ कऽ उठि जाइत अछि। भजुआ, झोलिया आ कुसेसरी सभ सेहो डोम जातिक छथि, जिनकर सहायता सम्यक् सोचिबला ब्राह्मण रमाकान्तजी

करै छथि। ऐ कृतिक सभसँ अजगुत पात छथि रमाकान्तजी। हुनक छोट पुत कालक डागसँ अधमर, किन्तु माता सुजाता जे धोबिन छथि, हुनकासँ बिआह कऽ लइ छथि। बिआहे टा नै, बिआहसँ शिक्षा गहण करैले पेरणा आ अर्थसेहो सुजाताके भेटलनि, जइसँ ओ डॉ. सुजाता बनि गेली। गाममे रहनिहार आ अपन मातृभूमिक पति असीम शक्ति रखनिहार रमाकान्त जीके अपन पुत महेन्दक ऐ निर्णयसँ कोनो पीडा नै भेलनि। हुनक सम्पूर्ण परिवार ऐ निर्णयके सहृदए स्वीकार कऽ लेलकनि। ..जगदीश जीक दोसर उपन्यास 'जीनि-मरण'मे हेलन-गुदरी डोम दम्पतिक चित्रित कएल गेल अछि। जीबछ, छीतन, रंगलाल चमार जातिसँ सम्बन्ध रखै छथि। हिनकगीक जीत उपन्यासमे पलहनिक नेपथ्यक पातता दर्शाएल अछि।"

पस्तुत उपन्यास 'जीनि-मरण'के उपन्यासकार निम्नलिखित पातसभक माध्यमसँ राखलनिहँ अछि- 1. शीला, 2. डॉक्टर देविनन्दन, 3. सुभदा, 4. दयानन्द, 5. स्टाफ-सँ छात धरिक झुण्ड, 6. डॉक्टर कृष्णाकान्त, 7. डाइरि, 8. आशा, 9. रघुनन्दन, 10. कनिया काका (बटु), 11. रनिया दादी, 12. शीकान्त, 13. चकसुन लाल, 14. सोधन, 15. लेलहा, 16. लेलहाक घरविली, 17. घुरना भैया, 18. सुखदेव, 19. सुन्दर काका, 20. छीतन भाय, 21. छीतनक घरविली, 22. जीबछ, 23. रंगलाल, 24. फोचि भाय, 25. बचिनू, 26. सोहन भाय, 27. मनोहर, 28. मनोहरक माए, 29. अढुलिया, 30. अपराजित, 31. बतहू, 32. चिलि, 33. झोली, 34. लोहनाविली, 35. शीला, 36. पढुआ, 37. हुलन, 38. गुदरी, 39. कुसुमलाल, 40. राजेसर, 41. शंकरदेव।

5. जीनि संघषथ(2010) :'जीनि-संघषथ उपन्यास जगदीश पसाद मण्डलजीक उपन्यास विधामे पाचिम पोथी छियन्हि। एहि उपन्यासक लेखन 2005 इर्सवीसँ पहिनहि मण्डलजी कयने छथि। लेखन कायथक आरम्भक सन्दभथ्मे उपन्यासकार अपन मंतव्य व्यक्त कयने छथि- ''पैतीस साल धरि समाज सेवि केला पछाइत अपन हहरैत शरीर देख किछु लिखै-पढैक विचार जगल। ...मौलाइल गाछक फूल 2004 ईस्वीमे लिखल पहिल उपन्यास छी। अखन धरि पाँटा उपन्यास आ किछु कथा, लघुकथा, नाटक सभ अछि। छपबैक जे मजबूरी बहुतो रचिनाकारके छैन से हमरो रहल। मुदा तइसँ लिखैक कम नै टुटल। 'भैटक लावि' कथा सेहो दू-हजार विचक पहिल कथा छी।''

'जीनि-संघषथउपन्यासक पहिल/द्वितीय संस्करण 2010 इर्सवीमे 'शुति पकाशन', न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- 110008 सँ पकाशित भेल अछि। तिथ्यानमे पाचिम संस्करण 'पल्लवि पकाशन', तुलसी भवि, जे.एल.नेहर मागथ, विडथ नं. 06, निमथली, जिला- सुपौल, बिहार :847452 सँ पकाशित अछि।

02.10.2010क बेरमा (झंझारपुर) मे 'सगर राति दीप जरय'क 71म कथा गोषवीमे 'जीनि-संघषथ उपन्यासक लोकापथ्ण पसिद्ध रचिनाकार उग नारायण मिश 'कनक', अशोक (कथाकार)तथा मंचस्थ अन्य विद्वान लोकनिक बीच भेल अछि।

145 पृष्ठक एहि उपन्यासक लिखयमे उपन्यासकार शी जगदीश पसाद मण्डलजी निमािकत पात सभके सोझाँ अनलिन्ह अछि- 1. पविती, 2. कुसुमलाल, 3. कुसुमलालक बेटी, 4. मनधन बाबा, 5. जोगिन्दर, 6. पेमलाल, 7. अनुप, 8. रघुनाथ, 9. देविनाथ, 10. मंगल, 11.

गणेशी, 12. झुनझुना िली, 13. सोनमा, 14. ढोलबा, 15. तेतरी, 16. पोफेसर दयानन्द, 17. ललबा, 18. बरसपैब्बाया, 19. भगतजी, 20. डब्बाबाह, 21. मसोमात, 22. पोफेसर कमलनाथ, 23. दुखनी, 24. नि िनीिली, 25. श्यामा, 26. भुखना, 27. देि नि, 28. सजना, 29. दुब्बायालाल, 30. मुनेसरी, 31. र पलाल, 32. भुब्बाया, 33. नसीि लाल, 34. सुनरी, 35. राजेसर, 36. डॉक्टर, 37. डोमन, 38. फुलेसरी, 39. सुरब्बाया, 40. फुदना, 41. ब्बाब्बाया, 42. रघुनी, 43. दोकानदार, 44. भोला, 45. बलदेि , 46. लब्बात, 47. लब्बातक पती, 48. सुरजी, 49. मकशूदन, 50. देि नाथक पती, 51. जीबछ, 52. दुखा, 53. ब्बारधन, 54. बौना, 55. नेगरा, 56. बौकू, 57. बाबा

एब्ब उपन्यास तथा उपन्यासकारक ब्बिषयमे पब्बा ि समीक्क डॉ. कैलाश कुमार ब्बाश 'ब्बिदेह-सदेह, 10' मे ब्बाखलब्ब अब्ब- ''शी जगदीश पसाद मण्डलक उपन्यास 'जीि नि संघषथ एक नीक र िना ब्बक। एहेन र िना अगर मैब्बली साब्बत्यमे लगातार हो आ ऐ तरहक र िनाक प िर-पसार नीकसँ कुनो जाब्ब-पाब्ब, िगि़ सम्पदाय, स्थानीयता आब्बक दुभा िनासँ दूर भऽ कएल जाए तँ मैब्बली साब्बत्य मब्बमा-मण्ब्बत भऽ एक गौर िशाली परम्पराके पारम्भ कऽ सकैत अब्ब। ...'जीि नि संघषथपोथीके अदोपान्त पब्ब ि ूकिल छी तँ अनेक तरहक ब्बि िर मोनमे ब्बलोड लऽ रहल अब्ब। होइत अब्ब अगर कुनो कुशाग-बुब्बबला शोध-ब्बिदाथी भेटत तँ ओकरा उत्साब्बत करबैक जे जगदीश पसाद मण्डलक र िनाशैली, जीि नि-कम आ ियिक्ब्बागत इब्बाहास तीनूके समेटैत मैब्बला िलक समाजक सन्दभथे एक समाजशास्तीय अध्ययन करए। ...साब्बत्यके समाजक दपथ कहल जाइत अब्ब। दपथ तखन जखन साब्बत्यकार पारखी होब्ब। समाजक संग ि लब्ब।

सामाजिक बेसिथाके समैक संग चरिित्रिना करैछ। साहित्य सृजनक धर्मके बुझैछ। मण्डलजी ऐ कार्यके इमानदारीपूर्वक केलनि अछि। ऐ उपन्यासके हिन्दी, अंगेजी इत्यादि भाषामे अनुवादित कए परि-पसार होमाक चाही। ई रचिना समाजक दर्पण अछि। एक चािल आ आशािन विचिारधाराके पत्रिपादित करैत अछि। जगदीश पसाद मण्डल अपन कृतिमे Native intelligence केर अभूतपूर्व पमाण दैत छैथ।"

6. नै धाडैए (2013) : उपन्यास बाल साहित्यपर केन्द्रीत ई मण्डलजीक पहिल औपन्यासिक कृति छियनि। ओना, 'नै धाडैए' 6म उपन्यास छियक, एहिसँ पूर्वपाँच गोट उपन्यास शी जगदीश पसाद मण्डलजी लिखि चुिकल छैथ। बाल साहित्यपर केन्द्रीत एहि उपन्यासक लेखन 2010 इर्सवीक पछाति कएलनि। एकर पहिल संस्करण 2013 इर्सवीमे 'शुति पकाशन', न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110008 सँ पकाशित भेल अछि। तिथानमे द्वितीय संस्करण 'पल्लवी पकाशन', तुलसी भवन, जे.एल.नेहरु मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार :847452 सँ पकाशित अछि।

'नै धाडैए' उपन्यासक लोकार्पण शी उमेश मण्डलक संयोजकत्वमे आयोजित 'सगर राति दीप जरय'क80म कथा गोष्ठीमे शी गुरु दयाल भमर, डॉ. अशोक 'अविचिल', डॉ. रामाशीष सिंह तथा मसिस्थ अन्यान्य विदानक दारा उपन्यासकार करबौने छैथ। उक्त आयोजन मािताक राम-बैजनाथ बजाज धर्मशाला, निर्मली, (सुपौल),मे दिनाक 30.11.2013क आयोजित भेल छल। ओहि गोष्ठीमे पस्तुत पोथीक

रिनाकार शी जगदीश पसाद मण्डलक एकसंग 21 गोट पोथीक लोकापथ भेल रहनि।

‘नै धाड़ैए’ उपन्यासके कुल पाि पडािमे लिखल गेल अछि। जाहिमे समाजक पातसभक माध्यम बनाओल गेल अछि- 1.राधामोहन, 2. नन्दलाल, 3. पण्डाजी, 4. बुधनी, 5. बडबाबूया, 6. फैजली, 7. पी.एन. बाबू, 8. दीनानाथ बाबू, 9. सुरेखा, 10. सुरेन्द बाबू...।

7. बडकी बहिन (2013) : केन्दीत उपन्यास थिक। एहि उपन्यासमे पाि गोट पडाि अछि। एहि पोथीक लेखन 2010 इसीक पछाति कएल गेल। एकर पहिल संस्करण 2013 इसीमे ‘शुति पकाशन’, न्यू राजेन्द नगर, नई दिल्ली- 110008 सँ पकाशित भेल अछि। तिथानमे िदतीय संस्करण ‘पल्लिी पकाशन’, तुलसी भिन, जे.एल.नेहरू मागथ, िाडथ नं. 06, िनमली, जिला- सुपौल, बिहार :847452 सँ पकाशित अछि।

‘नै धाड़ैए’ उपन्यासक लोकापथ डॉ. अशोक ‘अििचल’क अध्यक्षता आ शी उमेश मण्डलक संयोजकतिमे आयोजित ‘सगर राति दीप जरय’क80म कथा गोषी, मािनक राम-बैजनाथ बजाज धमथशाला, िनमली, (सुपौल),मे दिनाक 30.11.2013क भेल अछि।

8. ठूठ गाछ (2015) :‘ठूठ गाछ’ शी जगदीश पसाद मण्डलजीक 8म औपन्यासिक कृति छियनि। एहि उपन्यासके 25 अक्टुबर 2015 सँ 16 दिसम्बर 2015 धरिक समयाििधमे लिखल गेल अछि।

पस्तुत उपन्यासमे एक रचनाकारक जीवनिक बात कएल गेल अछि। शैक्षिक आ चिकयागत जीवनिमे गडबडी भेलासँ पोफेसर रामकृष्ण बाबूक जीवनि ठूठ गाछ सदृश भऽ गेलन्हि जाहिसँ हुनक मुँहक बोली बन भऽ गेलन्हि। 'ठूठ गाछ' उपन्यासक पहिल संस्करण 2015 इस्वीमे 'पल्लवी पकाशन', तुलसी भवन, जे.एल.नेहरु मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार :847452 सँ पकाशित अछि। तथा एहि पोथीक लोकापर्ण 'सगर राति दीप जरय'क 88म कथा गोष्ठी- डखराम (बेनीपुर)मे भेल अछि। उक्त गोष्ठी श्री अमरनाथ झाक आयोजकत्वमे तथा श्री कमलेश झाक संयोजकत्वमे दिनाक 30.01.2016क मध्य विद्यालय- डखराम (बेनीपुर) भेल छल।

पस्तुत उपन्यासक समपर्ण भाविके उपन्यासकार श्री जगदीश पसाद मण्डलजी, एहि तरहे व्यक्त कयने छथि- ''जिनगीक तँ दुइएटा ने धुरी अछि, सुख आ दुख। अही दुनू धुरीपर ने दुनियाक बीच आनो- आनो विरिसँ अविरि धरि नचिबो करैए, उडबो करैए, महकबो करैए आ महकेबो करैए। जेना एक दिस- बेली, चमेली आ जूही अछि जे धरतीसँ सटल अपन पातक पवित्रता आ फूलक सादगीक संग अपन जिनगीक आदि-अन्त करैत अकासके अपन महकसँ महकबैत जीवनि- लीला समाप्त करैए तँ दोसर दिस- राडी, डबहारी आ पटेर अछि जे अपन फूलके अकासमे पसारि एक दिशासँ दोसर दिशा उडि-उडि अपन रंग-रूप देखबैए, मुदा महक केहेन रखने अछि से बेली, चमेली आकि जूही पुछौ कि नै पुछौ मुदा देखनिहारक दायित्व तँ बनिये जाइए..!''

9. इज्जत गमा इज्जत बँलौ (2017) : उपन्यासकार एहि उपन्यासके 14 सितम्बर 2017 सँ 19 अक्टुबर 2017 धरिक समयावधिमे कुल दस पडावमे रचलनि अछि।

पल्लवी प्रकाशन प्रकाशित एहि उपन्यासक लोकार्पण 'सगर राति दीप जरय'क मंचपर 16.12.2017क कराओल गेल अछि। उक्त आयोजन श्री राधाकान्त मण्डलजीक संयोजकत्वमे धबौली (लौकही, मधुबनी)मे आयोजित भेल छल।

प्रस्तुत उपन्यास 'इज्जत गमा इज्जत बँलौ'मे क्रमश: सभ पडावक पात्रसभक विवरण निम्नांकित अछि-

एक-1. खुशीलाल, 2. रघुवीर, 3. घसावनी, 4. घसाह

दू-1. खुशीलाल, 2. चंहेसर, 3. बिनू

तीन-1. खुशीलाल, 2. सोमन, 3. रजनी, 4. राम सुनर

चारि-1. बिनू, 2. रमेश, 3. खुशीलाल, 4. राम सुनर, 5. विलास, 6. रोहिणी, 7. भोगमाया देवी

पाँच-1. खुशीलाल, 2. बिनू, 3. खुशीलालक माए

छअ-1. बिनू, 2. बिनूक पती, 3. सुरेश, 4. जीतन, 5. सुमाया

सात-1. जीतन, 2. बिनू, 3. सुरेश, 4. खुशीलाल, 5. बुधनी, 6. गीता, 7. सुभाषि, 8. बडाबाबू

आठ-1. बिनू, 2. बिनू भाइक पती, 3. सुरेश, 4. खुशीलाल, 5. जीतन,

नअ-1. जीतन काका, 2. बिनू, 3. सुनाया काकी, 4. महात्माजी, 5. खुशीलाल, 6. सुजाता, 7. बिनूक मामा, 8. सुशीला

दस-1. भोगाया देवी, 2. विलास, 3. बिनू, 4. जीतन काका, 5. खुशीलाल, 6. सुशीला

सभ उपन्यासक पातक नामकरण उपन्यासकार बड सोचि-समझि कऽ कयने छथि। नामक शब्दक अथथपातक चिरतमे चारचाँत कयने छथि। चिरतक अनुसार अथात् नामक अनुसार चिरत (पात) आ तािह अनुकूल पातक िकया-कलाप जिहना जगदीश पसाद मण्डलक सभ रिनामे भेटैत अिछ तिहना उपन्यासमे अिछ। ई निह जे नीक नाओं रािख लेलौ मुदा िकया-कलाप ओिह शब्दक गुणक उनटा भऽ िलैए, शब्दक संग खेल करैत शब्द-सािहत्यक पिमा मात खाना-पुरी करैए।

10. लहसन (2018) : पस्तुत उपन्यास शी जगदीश पसाद मण्डलजीक दसम औपन्यािसक कृित छियिन। एिह उपन्यासक लेखन 10 निम्बर 2017 सँ 25 फरिरी 2018 धिरक समयाििधमे कएलिन। 'लहसन'क पिहल संस्करण 2018 इसीमे 'पल्लिी पकाशन', तुलसी भिन, जे.एल.नेहर मागथ, िडिथनं. 06, िनमथली, िजला- सुपौल, िबहार : 847452 सँ पकािशत अिछ। 'सगर राित दीप जरय'क 97म गोषीमे 'लहसन' उपन्यासक लोकापथण भेल अिछ। उक्त गोषी, िदनाक 24.3.2018क पिमा कथाकार शी कमलेशर राउतजीक संयोजकत्िमे बेरमा (झंझारपुर, मधुबनी)मे आयोिजत भेल छल।

पस्तुत उपन्यासक सन्दभमे पचारि साहित्यकार शी रबीन्द्र नारायण मिश्र अपन ब्लॉग 'भोरसँ साझ धरि'मे लिखने छथि- "शी जगदीश पसाद मण्डलक 'लहसन' उपन्यासके पढलासँ पाठक थोडबे कालमे समाजक निम्नतम पौदानपर ठाढ लोकक जिनगीक बारेमे बहुत किछु बुझि सकैत छथि। किछु एहन करबाक पेरणा पाप्त कए सकैत छथि जाहिसँ मेहिलाल सन-सन गरीब लोकसभके गाम छोडि कलकत्ता सन महानगर पलायन नहि करय पडनि। एहिसँ पेरणा लए समाजक समृ लोकनि किछु करथि जाहिसँ गाम-घरसँ पलायन बन्द होअए आ गाम एकबेर फेर पकृति-पुष्पित भए जाए। ई उपन्यास हुनका लोकनिक हेतु एकटा मागदर्शकक काज कए सकैत अछि जे शहर गेलाक बाद आधुनिकताक पहिमे अपनासन लोकके छोडि विशेष बनबाक फेराकमे पैघ लोकसभसँ सटैत छथि आ ताहि कममे सभ किछु गमा लैत छथि। मिथिलाक अधिकाश लोक गुजर करबाक हेतु दिल्ली, पंजाब, कलकत्ता आ आन-आन शहरसभमे पसरि गेल छथि। कतेको गोटे तँ अरब धरि गेल छथि। किएक? तकर मूल कारण थिक अपना ओहिठाम रोजगारक अभाव।"

एहि उपन्यासमे कुल नौ (9) गोट पडाव अछि। पत्येक पडाविमे जाहि पातसभके उपन्यासकार अनलनिह, ओ कमश: निम्नलिखित अछि-

एक- 1. मेहिलाल, 2. सुभाि, 3. बुधिलाल, 4. मेहिलालक पती।

दू- 1. मेहिलाल, 2. सुभाि, 3. दोकानदार, 4. ाहबला, 5. मकैबला, 6. पानबला

तीन- 1. मेहिलाल, 2. रघिनाथ

ाचि- 1. मेहिलाल, 2. सुमनलाल, 3. नटुआ

पाि- 1. मेिलाल, 2. रघुनाथ, 3. सुमनलाल, 4. दोकानदार, 5. भूषण, 6. बिनू, 7. बौन, 8. राघि, 9. मनोहर, 10. सुकदेि

सात- 1. मेिलाल, 2. बौन, 3. बिनू, 4. दुखमोिन

आठ- 1. मेिलाल, 2. मैनेजर

नअ- 1. मेिलाल, 2. सुनीलपाल, 3. अंबिकापाल, 4. राधा, 5. िकील साहैब, 6. सुदामा

11. पंगु (2018) :‘पंगु’ उपन्यासक पहिल संस्करणक पकाशन िषथ 2018अछि। पल्लिी पकाशन : िामछी (सुपौल)सँ एहि पोथीके पकाशित कराओल गेल अछि तथा पसिद्ध कथाकार ि समीक्षक डॉ. शिि कुमार पसादजीक संयोजकत्वमे आयोजित ‘सगर राति दीप जरय’क 97म कथा गोष्ठी, िामरा (झंझारपुर)मे ‘पंगु’क लोकापथि कराओल गेल अछि।उक्त आयोजन दिनाक 16.6.2018क आयोजित भेल छल।

‘पंगु’ उपन्यासमे कुल 9 गोट पडाि अछि। एहि उपन्यासके 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018 धरिक अिधिमे मात 8 गोट पातक बीि उपन्यासकार रिना कएलनि अछि। कमश: सभ पातक नाओं दष व्य अछि- 1. गुलाबिन, 2. बराहिल, 3. बालिन, 4. सोराजीलाल, 5. िांहेशर, 6. देििरण, 7. हिरिरणतथा 8. िांहेसरी।

पस्तुत उपन्यासक आरम्भ सीतापुर गामसँ होइत अछि। उपन्यासकार सीतापुरक पिरिय एहि तरहे देलनहि अछि-

‘‘हजार बीघा जमीनक ऑट-पेटबला गाम सीतापुरमे जह्लना सभ रंगक भूम्ाि अच्छ ऊँ गिर-सँ-न्ाि गिर धच्र, तह्लना ओइ भूम्ािक उपज सेहो सभ रंगक अच्छाए। ओना, सालो भच्र बहैबला धार, जेकरा िलन्ता धार कहै च्छाऐ ओ सीतापुरमे एकोटा नह्लि अच्छ। तँए च्छक सीतापुर धार रह्लत गाम अच्छ सेहो नह्लये कहल जा सकैए। सीतापुरमे दूटा धार अच्छाए। जइमे उत्थर रहने एकटा धार मात बरसाते भच्र बहैए, जेकरा िमच्हसया धार गौआसँ लऽ कऽ अनगौआँ तक कहै छैथ। गौआँ ऐ दुआरे कहै छच्थन जे गाममे रहने अपना-अपना आँच्खये देखबो करै छैथ आ ओइसँ जे हान्ि-लाभ अच्छ सेहो भोन्ाते आब्ि रहल छैथ। आ अनगौआँ ऐ दुआरे कहै छच्थन जे आनो-आनो गाम देने होइत ओ धार बनलो अच्छाए आ बह्लतो अच्छाए। मुदा दोसर जे धार अच्छ ओ बरहमच्हसया िलन्ता धार तँ नह्लि छी, मुदा गहीरगर रहने अखाढ-सँ-अगहन तक बहैत अच्छ।

तँए ओकरा छह-मसुआ धार सभ कहै छैथ। जह्लना खेत-पथार अखाढमे अनसँ आच्छाद्त होइए आ अगहनमे उसरन भऽ जाइए तह्लना ओ धार पहाडी पान्िसँ लऽ कऽ धरतीक पान्िक बीि अपन धारा बना बह्लते अच्छ। फिच्हाँ बनल पान्ि जह्लना पच्वत होइए, माने ओइमे सुनरताक िमक रहै छै, तेकर च्वपरीत बखाक पान्िक बहाब होइए, जे मेघसँ बच्रस पाथरक स्थानसँ लऽ कऽ माच्टक स्थानके धोइ-पखाच्र बहैए, जइसँ ओकर रंग मटमैल रहैत अच्छ। मटमैल एक रूप भेल आ गन्दगीसँ भरल गन्दपन दोसर रूप भेल। मटमैल रहनौ च्बना गंदपन रहने गन्दा दोसर रूप भेल। खाएर जे भेल जेतए भेल से भेल तेतए भेल। मुदा सीतापुरक बीि जे धार अच्छ ओ माच्ट-पाथरक धोन पान्िक अच्छ, तँए ओकरा गन्दा नह्लये कहल जा सकैए। गेन्दा फूल जका ओकरो आँच्खमे िमक छइहे। जइमे बहाउ धारक

अञ्चावक्ता अनेको रंगक जलसोत सेहो अछिए।

ञ्चाञ्चलालिक बीकि गाम ने सीतापुर छी तँए गामक अनेको वीशेषता अखनो सीतापुरमे िञ्चाए रहल अछि। गामो तँ गाम होइते अछि। मुदा ओहूमे ने नकोर, सकोर आ कुकोरक गुण सेहो होइए। ओना, तीनू गुणसँ सम्पन गाम सभ सेहो अछि आ फुट-फुट गुणबला गाम सेहो अछिए। तइमे आन-आनसँ ञ्चान सीतापुर गाम अछि। जञ्चना हजार बीघा रकिा जमीन छै तञ्चना अठारह गण्डा पोखैर सेहो छै तहूमे जाइठबला। जञ्चना अठारह गण्डा जाञ्चबला पोखैर सीतापुरमे अछि, तञ्चना दूटा नमहर पञ्चाझाउबला आ दजर्था छोट-छोट पञ्चाझाउबला पोखैर सेहो अछिए, मुदा ओ सभ जाइठ रञ्चत अछि। ओना तहूमे दुनू नमहरका जे अछि ओकरा लोक दैतक खुनल पोखैर कहैए आ बाकी छोट-छोट जे रंग-रंगक अछि तेकरा सभके भिचिा, कोाञ्चसँ लऽ कऽ डोह-डाबर कहैए। भाय! भूञ्चा तँ भूञ्चा छी ञ्चकने, तहूमे सीतापुर गामक, जे ञ्चक ञ्चाञ्चलाक मध्य बसल गाम अछि। ऐठामक भूञ्चाक तँ ई गुण ऐछे जे कुइया-इनारक र पमे जञ्चना पतालसँ पाञ्चा अनैए तञ्चना खेत-पथाररसँ लऽ कऽ अकास धञ्चक पाञ्चाके सेहो संञ्चित कञ्चते अछि। साए-साए बीघाक दूटा िरी सेहो अछि। जइमे छह-सात मास तक पाञ्चाक जमा रहैए। जइसँ अन, फूल, फल उपैजतो अछि आ ओकर रक्ष सेहो होइत अछि। अन-फूल आ फल तँ धरतीक ऊपर होइए। ओहन धरतीपर, जइमे पाञ्चा आञ्चा ञ्चकछु ञ्चन पहुनाइ करैत या तँ अकासमे उञ्च कऽ िञ्चा जाइए ि रसे-रसे पताल ञ्चस सटैक कऽ िञ्चा जाइए ि ऊपरसँ टघैर-टघैर ओही नीिला खेतमे- माने िरीमे िञ्चा जाइए। ओना, अकाससँ धरतीपर उतैर िएह पाञ्चा उञ्च-उञ्च अकासो ञ्चस बढैए आ पतालो ञ्चस ससरैत

समुदसँ सेहो गडाजोडी करैत अछि। खाएर जे अपना मन फुरै छै से अपन करैए, अनेरे सीतापुरबलाके एतेक हिसाब लइक कोन काज अछि। हमरा सभके ओतबे से ने मतलब अछि जे नीक-नीक माछ उपजए, नीक-नीक सौरखी, करहर आ बरी उपजए, तैसंग गाए-महीसके नहाइ-पीबैले आ खेत पटबैले पानि भेटए। बस भऽ गेल जर रतक पुरती..! लोकके अनेरे कोन खगता छै जे धरतीए जका पानियोक ऊपरमे ओछाइन ओछा कऽ सुतबो करत आ बैस-बैस कऽ ताशो भाजत। कोन खगता छै जे पनिसीक घर बना पनिमयो खेलत आकि कोजगरा-दिवालीक उत्सव मनौत। तइले तँ धरती अछिए।”

12.आमक गाछी (2018) : एहि उपन्यासक लेखन 2018 इस्वीमे 10 अगस्त सँ 30 सितम्बर धरिक समयाविधमे कएल गेल अछि। उपन्यासकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी एहि उपन्यासक निर्माणमे 9 गोट पडाव बनौलनहि अछि। प्रस्तुत पोथी 122 पृष्ठ क अछि। एहि पोथीक पहिल संस्करण, पल्लवी प्रकाशन, तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452 सँ प्रकाशित अछि।

‘आमक गाछी’क लोकार्पण शताक कथा गोष्ठीमे सामुहिक रूपमे भेल अछि। सगर राति दीप जरय’क 100म कथागोष्ठी 22 दिसम्बर 2018कउमेश मण्डलक द्वारा श्री नरेश जैन स्थानी, श्री मनीष जालान आयोजकत्वमे निर्मली (सुपौल)मे भेल अछि।

एहि उपन्यासमे 9 गोट पडाव अछि। शब्द संख्याक संग प्रत्येक पडाव केर विवरण निम्नांकित अछि-

1. शब्द संख्या : 3068, तारीख : 10 अगस्त 2018

2. शब्द संख्या : 3553, तारीख : 17 अगस्त 2018

3. शब्द संख्या : 2484, तारीख : 22 अगस्त 2018

4. शब्द संख्या : 2291, तारीख : 28 अगस्त 2018

5. शब्द संख्या : 2185, तारीख : 02 सितम्बर 2018

6. शब्द संख्या : 4701, तारीख 12 सितम्बर 2018

7. शब्द संख्या : 1805, तारीख : 15 सितम्बर 2018

8. शब्द संख्या : 1917, तारीख : 25 सितम्बर 2018

9. शब्द संख्या : 1914, तारीख : 30 सितम्बर 2018

13. भादिक आठ अन्हार (अपूर्ण) : प्रस्तुत उपन्यासक लेखन कार्य एखन पूर्ण नहि भेल अछि, अपूर्ण अछि। तथापि 'भादिक आठ अन्हार'मे एखन धरि जतबा पात सोझा आएल ओ समीक्षित अछि-
1. सुरजा काका, 2. निमुनाया काकी :

उपन्यासकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी,'भादिक आठ अन्हार' उपन्यासक आरम्भ एहि तरहे कयने छथि- ''आने दिन जका सुरजा काका जुना आङनपर राखि पाज भरि जनेर कटने रहैथ आकि हकला जका दूरक आगि बुझि पडलैन।

जनेर काटब छोडि आङनपर आबि ठाढ भऽ हियासए लगला। दूरक

हक्ला दुरेमे, तँए कोनो तेहेन साफ नञि, घरघराएले बुझि पडलैन। मन भेलैन जे कनी टहैल-बुलि हक्लाक भाजो बुझि ली आ पानि पीब लेब। पानि मनमे अबिते, मनेमे कटौझ उठलैन। एक मन कहैन- “पानि पीब” आ दोसर कहैन- “पानि नञि पीब।”

दुनूक तको अपन-अपन आ िक्तयो अपन-अपन। एकक तकथजे धरतीपर सभसँ शुि पानि होइए। दोसराक तकथजे पानि नञि, अन होइए। आनो-आनो गामक अनमे रोगक दोख नइ छै जे पानिमे छइ। एके गामक दोसर इनार ि कलक पानि पीने सरदी भऽ जाइ छइ। मुदा तैयो दुनू संगे शास्त्र-पुराणसँ लऽ कऽ िक-िराहा धरि तँ टहैलते अछि। देखबिहार तँ एक-दोसराक पेमी कहबे करत। ओना सुरजा काका जखन भोरका उखडाहाक काज शुर करै छैथ तइसँ पहिने अन-जल कइए कऽ शुर करै छैथ।

मनमे हक्लाक गुनधुनी लगले रहैन आकि एक गोटे मोटर साइकिलसँ सडक धेने जाइतो आ बजितो जे कोसी बान्ह टुटि गेल। एक दिसनसँ गामक गाम डुमौने अबैए। बाना चिकछु दोहरौने सुरजा काका घासक आँटी बान्हि घर दिस बढला।

दस गोटेक परिवािर सुरजा ककाक। पाि बीघा खेतक बीि कि आरहस्ती। ओना खेतक आँट-पेट छोट रहैन मुदा अपनाके आरहस्त मानैत। आरहस्त तँ िएह ने जे अपन खेत-पथारसँ जीिन-यापनक लग घरि पहुँि सकए। पाि बीघाक रकबामे एकटा दस कटाक पोखरियो छैन जोत जमीनमे एक बीघा घासोक खेती करै छैथ, जइसँ खुटापर आरहस्ती आनगीक एकटा उदोग लगौने छैथ।”

14.सधाि-चिधाि (अपूणथ) उपरोक्त 'भादकि आठ अन्हार' सदृश अहू उपन्यासक लेखन कायथएखन अपूणथअछि। एखन धरिक लेखनमे चामाचकत पातसभक िथिभऽ िकल अछि- 1. सरोजनी मैया, 2. र चमणी, 3. हंशराज, 4. मदनेसर, 5. दमयन्तीक, 6.सुखदेि।

पस्तुत उपन्यासक आरम्भ एहि तरहे कयने छथि- "सतैर िषीए सरोजनी मैयाके अखनो िएह सुखि-बुखि छैन जेना पहिने छेलैन। अखनो ओहने झोकाह जका चनगीके झोकि िलै छैथ जेना जुआनीमे सभ िलैए। तहूमे मरणक ऐगला बेठेकान सीमा रहने ओ सीमाने हेराएल छैन। नकथ्मािरण िुदशीक चदन। मरद तँ कमो-सम मुदा अधिकाश स्त्रीगण पाबैनक उपास केने। एक तँ चकसान-बोनिहारक बैसारीयेक चदन दोसर चदनोक आँट-पेट छोट रहने उपासो असान। देखते-देखते चदन कचट जाइत अछि, तहूमे सूयोदयसँ अस्ते भचरक ने उपास। चकचण डुमिते फलहार कऽ पाबैनक चिसजथ कए लेल जाइत अछि। बेर झूचकते सरोजनी-मैया चदनक बाकी काज चदस नजैर उठौलैन तँ भक-दे मन पडलैन जे आन चदन समय पाचब खेनाइ खा चिदालय देख अबै छेलौ मुदा चासरैक कारण भचरसक उपासे तँ ने भेल। एक-सँ-साए धचरक चानतीमे एकाएकी ऐगला संख्या अबैत जाइत अछि, भचरसक पैछला काज छुटने ऐगला ने तँ भोचराया गेल। मुदा छोडलो तँ नहि ये जा सकैए। तखन उपाय? हँ उपाय यएह जे, जे समय शेष बँिल अछि ओहीमे बीि बाि कऽ देख आएब नीक हएत।"

शी जगदीश पसाद मण्डल लेखन कायथक पारम्भक संग अपना चिषयमे मंतव्य व्यक्त कयने छथि-

“जखन हम बुझाया एम.ए.क विद्यार्थी रही तखन हमरा बुझाए नोकरीसँ विराग भऽ गेल। आठ बीघा जमीन रहए। खेतीसँ जीवन-यापन करैक अभ्यास भऽ गेल। वास्तवमे गार्जनक पुरुष गाजथिन्हक परिवार 1960 ईस्वीमे भऽ गेल। स्वतेक अमलदारीसँ दू भाइ बसैयौत रहै छला। तत्काल गाजथी हुनके दुनू भाइपर छेलैन। कोसीक उपदसँ भागल पीसा बेरमे माने सासुरेमे रहि गेल रहैथ। ..स्वताक मृत्युक समय तीन बखरक हम आ छह बखरक जेठ भाय छला। बसैयौत भाए 1960 ईस्वीमे अपन गाम ‘हरनाही’ चलि गेला। दुनू भाय, शी कुलकुल मण्डल 1954 इस्वीमे आ हम 1957 इस्वीमे गामक स्कूलसँ आकैल अपर पाइमरी स्कूल कछुबीमे नाओं लिखौने रही। 1960 ईस्वीसँ परिवारिक बोझ पडल। पुरुष विहीन भेनौ माए ओहन परिवारिक छेली, जइ परिवारिमे मामा 1942 ईस्वीमे अंगेजक गोली खा लिकल छला। साहसी माए। अपन गहना, जमीन बेचि देल बचाके पढबै खातिर। पैतीस साल धरि समाज सेवा केला पछाइत अपन हहरैत शरीर देख कछु लिखै-पढैक विचार जगल।”

जगदीश पसाद मण्डलक जीनि-संघषथ

शी जगदीश पसाद मण्डल साहित्यक अनेकहु विधामे रिना कएनिहार एक ओहन रिनाकार छथि जनिक लेखन अनिरत ओ अिधि गतिये ििल रहल छनि। जहना गीत, कविता पद विधामे तहिना गदमेएकाकी, नाटक, कथा, बीहैन कथा, लघु कथा दीघथकथा, उपन्यास आदि िायिमत रपसँ ििखैत रहलाह अछि।'जीबन-संघषथ मण्डलजीक औपन्यािसक कृित छियिन।

जीनि संघषथउपन्यासमे समाजक विराटरपक झलक उपन्यासकार पस्तुत कएलिन अछि। जे अििकिसत समाजसँ लऽ कऽ िविकिसत समाज धिरक बीिि अछि। जीनिमे दन्द एलासँ संघषथक िताििरणक िनमाण होइछ, ओही िताििरणसँ संघषथशुर सेहो होइछ। जीनि-संघषथ उपन्यासक आरम्भ समाजक अत्यािारसँ भेल होइए। बँसपुरा एकटा गाम अछि जकरा बगलमे िसौनी गाम अछि। िसौनी गाममे दुगापूजा होइए। जकरा देखए लेल पास-पडोसक गामक अनेको लोक जाइत अछि। ओहने देखिनहारमे बँसपुराक एकटा लडकी सेहो अछि। जकर उमेर करीब अठारह-बीस िषथअछि। ओहि लडकीके िसौनीक पूजा सिमितक तीन गोट सदस्य फुसला कऽ भण्डारघर लऽ जाइए आ ओकरा संग बलात्कार करैए।

भोरमे जखन ओहि लडकीके छोडि देल जाइए तखन ओ लडकी ििपििप मेलासँ िनकिल अपन गामक रस्ता पकिड िविदा होइए। अपन गामक सीमामे पहुँििते बपहािड कािट कानए लगैत अछि। जािहसँ गामक लोक एके-दुइये पहुँिि ओकरासँ पुछैत अछि। तखन ओ लडकी

अपन बीतल रातुका सभ ृतान्त कहै सुनबैए।

उपन्यासकार समाजक चीराटर पक ि थ्िकरैत कहैत छथि जे इलाकामे बँसपुरा गाम सभ गामसँ पछुआएल अछि। बँसपुरासँ अगुआएल गाम चसौनी अछि। दुनूक तुलना करैत कहैत छथि जे बँसपुरामे साथिजाक र पक कोनहु काज (समारोह) नहि होइए। जखन चक चसौनीमे माछल तकक पढाइक स्कूलो छैक आ साथिजाक र पमे दुगोपूजा होइए आ मेला सेहो लगैए। ओना, बँसपुरामे सेहो अष याम कीतथि, भनडाराइत्यादि होइत अछि। मुदा ओ व्यक्तिगत र पमे होइत अछि। जहिना बँसपुरासँ अगुआएल गाम चसौनी अछि तहिना चसौनीसँ अगुआएल बरहरबा अछि। बरहरबामे हाइ स्कूल तकक पढाइ सेहो होइत अछि आ साथिजाक र पमे आनहु-आन समारोह इत्यादि होइत अछि। तहिना बरहरबासँ अगुआएल कटहरबा अछि। जाहि गाममे हाइ स्कूल धबक पढाइयो होइए आ अस्पताल सेहो अछि तथा साथिजाक समारोह सेहो कतेको तरहक होइत अछि।

उपन्यासकारक दृषि ओहि बान्दुपर छन्हि जे जाहि गाममे जतेक जीनिक बुजायादी जर रतक पूरािथहोइए ओ गाम ओतेक अगुआएल भेल आ जाहि गाममे जतेक कम होइए ि नहि होइए ओ गाम ओतेक पछुआएल भेल। एहन दृषि उपन्यासकारक ओहिना नहि छन्हि, ओहि पाछू ईहो सत्य अछि जे जखनहि वीदालय ि अस्पतालक पिर-पसार माने स्थापना होइए तखने ओहि गाम-समाजक लोकके लगमे सुविधा भेटने लाभ होइते अछिजाहिसँ जीनि सुलभ बनाते अछि।

सतैर-अस्सी िषिथपूिथबँसपुरामे कोसी धारक बाढक पिश भेल। जे साले-साल बढैत गाममे धार फोचि देलक। धार बनाते पानाक बहाि शुर भेल जाहिसँ गामक खेत-पथारक जजात दहाए लागल आ घर-

दुआर सेहो कटि-कटि धारमे विलीन भऽ गेल जाहिसँ गाम उपटि गेल। गामक लोक अपन जान लऽ लऽ आन गाममे सेहो बसलाह आ बेसी लोक नेपाल जा-जा नोकरी-चाकरी करय लगलाह। जिनका अपना सम्पत्ति छलन्हि, जे सुभ्यस्त किसानक रूपमे बँसपुरामे छलाह, ओहो सभ आनठाम जा नोकरी-चाकरी करय लगलाह किएक तँ अपन सम्पत्ति नष्ट भऽ गेलनि। तीस वर्षक पछाति बँसपुरा गामसँ कोसी आगू बढल। माने कोसी धार दोसर मुँह बनौलक। कोसी आ कमला एहन धार अछि जे एकठाम अस्थिर नहि रहैए। बँसपुरा गामसँ कोसीके हटिते गाममे बालु आएब कमल। गाम पुन: जागल। गामक माटिके जागिते कास-पटेर, झौआ, राडी इत्यादिक बोन भऽ गेल जे गौआँ सभ अथात् बँसपुराबला सभके सेहो भाज लगलन्हि। जे पीढी गाम छोडि पडाएल छलाह ओहि पीढीक गोटे-आधे लोक जीवित रहला बाकी सभ मरि गेलाह। हुनका सबहक बेटा-पुता, जे जनि भऽ भऽ विवाह-दुरागमन सेहो कऽ लेने छलाह, बेटा-पुता सेहो भऽ गेल छलन्हि, अपन बाप-दादाक गाम सुनि बँसपुरा आबि-आबि बसय लगलाह आ गामक बोन-झाडके काटि-काटि खेत-पथार बनौलन्हि। एिह गाम बँसपुरा थिक।

बँसपुरा गामक पहिलुका सभ किछु नष्ट भऽ गेल। अथात् गाछी-बिरछी, इनार-पोखरि, घर-दुआर इत्यादि सभ किछु। पुनर्जन्म गामक भेल।

सिसौनी दुगास्थानक घटनासँ बँसपुराक सभक मनमे आकोश भेल। सभ किओ सिसौनीबलासँ बदला लइक विचारसँ एकमुहरी विदा भेल। गामक सभसँ बुढ मनधन बाबा छथि। मनधन बाबाके अस्सी वर्षक जीवनक अनुभव छन्हि। ओ सोचलनि जे दू गामक विवाद छी।

अनेकहु नि घटनाक जन्म हएत, जाहिसँ दुनू गाम नष भऽ जाएत। अत: बीि-बिाि करैत मनधन बाबा सभके रोकैत िाि बजेमे बैसारक समय चाधाित कएलनि।

गाम जीिलामुखीक आिा जका धधैक रहल छल। िाि बजेक बैसारमे मदथ्औरत सभ एकत्रात भेलाह। बैसारमे रंग-बिरंगक चीिर उठल। सभक मन अिायाएल रहनि। मरदसँ बेसी जनिजाातक मन अिायाएल रहनि। ओना, बैसारमे मरद एकभाग बैसलाह आ जनाना दोसरभागमे बैसलीह। दुनूके एकठाम बैसैक चीिर मनधन बाबा देलनि।

एखन धिब समाजक बीि पुरखेटाक बैसार होइत आिब रहल अछि। पुरख-जनानाक बीि बैसार भेल। ई बैसार गामक चीिराटरपमे दृषि पात भेल।मनधन बाबाक चीिर मािा सभ चकयो अथात् मरद-जनाना एकठाम बैसल। सभक मनमे आिा पजरले छलै ते सभ चकयो अपन चीिर राखए लेल तनफन कय रहल छल। जनानाक रप देख मनधन बाबा पुन: अपन चीिर रखैत बजलाह जे समाजक बैसार छी, ते जौ सभ अपने-अपन चीिरमे घघौज करब तखन काज आगूमुहे केना ससरत। ओना, मनधन बाबाक मनमे ई चीिर रहनि जे जाबत धिब समाजमे लोक अपन अतयािरके अपनहि नइ रोकए लेल तैयार हएत ताबत धिब ओ अन्याय-अतयािर रचक कोना सकैए, ते समाजक लेल ई शुभ संकेत अछि। मनधन बाबाक मनमे ईहो चीिर नािि रहल छलैन जे कोन गाम एहन अछि जाहि गाममे लडका-लडकीक एहन घटना नइ होइए। नारी पिा अन्यायाक कोनहु ई पहिल घटना छी, सभ गाममे होइए। अत: घटनाके दोसर चदशामे मोडैत मनधन बाबा बजलाह जे कोनहु सबालक जािब एहन नहि हुअए जे िस्तविक घटना तर पडि जाए आ आने-आन घटना चकिराल

रूपमे उपस्थित भऽ जाए। तखन बीिच बाबाक मनमे पछिला एकटा घटना मन पड़ि गेलिन। ओिह घटनाक चिर्चा करैत बजलाह-

“एकटा नवयाक खातीर बेला आ मैनही गामक शिकार खेलिनहारक बीिच मािर भेल। धमगज्जर मािर। परिस्थितिसायो अनुकूले पडलै। पाबैन मनबए सभ लाठी, सोहत, तीर-धनुष लऽ लऽ शिकार खेलए गेले रहए। ने लोकक कमी आ ने मािर करैक ित्तुक। मुदा तेहने भारी, एकटा मुइल नवयाा। मुदा पक्षाष ाक पश तँ गामक रहबे करइ। अही पक्षाष ा लऽ कऽ केतेको लोकक कपार फूटल, केतेकोके हाथ-पएर टुटल आ दुनू दिस एक-एकटा खूनो भेल। सबकयो केकरो देखैबला नै रहल। जे जेतइ से तेतइ कुहरैत रहए। केकरा के उठा कऽ लऽ जाइत आ इलाज करबैत। हो-ने-हो तखना..!”

चर्चािरमे मोड दैत मनधन बाबा फेिर बजलाह- “भाय लोकैन! अपना गामक भाए-बिहन आन गामक मेलामे जा बेइज्जत होइए। एकर की कारण छइ? कारण छै जे अपना गाममे कोनो तेहेन सािंस्कृतिक काजे ने होइए। जखने अपनो सभ तेहेन काज करब तँ अनेरे आन गाम बलाके दहसैत हेतइ। िएह दहसैत गामके उजागर करत, पहिचान त बनौत। गोसाइ जी रामायणमे कहने छैथ, बिनु भय होइ न प्रीत।”

मनधन बाबाक चर्चािर सुिन गौआँ सभ चर्चािर कएलिन जे जखना दुर्गापूजाक उत्सि सभसौनीबला करैए, तखना अपनो सभ कालीपूजा करी। चर्चािरके सभ सबकयो, अथात् बैसारमे आएल सभ सबकयो मािन गेलाह, राजी भऽ गेलाह। लगले पूजाक आयोजनक कार्यक्रम दिस सभ सबकयो बढलाह। एकटा समितिक गठन भेल। एिह पूजा समितिमे सभ जातिक लोक सदस्य भेलाह। एखन धिर जातिक समाजमे सबकछु

मुँहगर-कन्हगर लोक अगुआ बना साधियाक काज करैत छलाह ताहि जगहपर बँसपुरामे समाजक सभ जातिके समान अधिकार भेटल जे समाजक वृहत् रूपमे ठाढ भेल।

ओना, बसौनी गाममे भेल घटनाक पश्चात्‌ किया सरिप सेहो बैसार भेल। जकर अगुआ पो. दयानन्द भेलाह। ओहि बैसारमे मार-पीट सेहो भऽ गेल जाहिसँ अत्याचारीक बीच दहसैत सेहो बनल।

एहि अंकमे उपन्यासकार एकटा मसोमातक चित्रण कयने छथि। जनिक नाओं अछि दुखनी। सभ तरहे दुखनी गरीब लोक अछि। ओना, दुखनीके दूटा सनतान सेहो अछि। एकटा बेटा आ एकटा बेटी। बेटी सासुर बसैत छथिह। आ बेटा जे तीन साल पूर्वे परदेश गेल छल ओ ने कहियो एकोटा पाइ पठौलकैन्हि आ ने गाम एलैन्हि। मुदा तैयो दुखनी अपन जीवन-यापन कए रहली अछि। दुखनीक घरमे जारनि नहि छल, चूल्हि पानिक ठेकान छल। देखू दुखनीक चित्रण उपन्यासकारक शब्दमे-

“नीन टुटिते दुखनीक मनमे, ओछाइनेपर उपकल- आइए दीयोबाती छी आ गाममे काली-पूजाक मेलो। बेटी मन पडलै। एना कऽ श्यामाके समाद देने छेलिऐ जे एक ठेकान पहुनक बिधाया-पुताके नेने अबिहे, से कहा आएल। ओहो बिचारी की करत? अन-पानि घरमे हेतै मुदा तीनू तूर जे मेला देखत तइले तँ दसो-बीस चाही। जँ कही अपना हाथ-मुठीमे से नइ होइ तेकरो इंजाम ने करय पडतै। भऽ सकैए जे तेकर ओरियान नै भेल होइ। हँ, हँ, भऽ सकैए सएह भेल हेतइ।

ओना, आइ भरि अबैक समैयो छै, बेरो धरि एबे करत। खाइले चाउर आ देखैले रपैआ नेने आएत मुदा जारैन तँ नै आनत। अखन धरि

हमहूँ तँ जारैनक कोनो ओरियान नहि कयने केलौ हेन। आब कहिया करब? भने मन पड़ि गेल। सोनि छेलौ जे श्यामा औत तँ घर-अँगनाक काज सम्हारि देत सेहो नहि भये भेल। भरि ये दुःखनमे की सभ करब। घरो छछारैले अछि, ओलतीयो ओहिना पडल अछि। केना असगरे एते काज सम्हरत? ओलतीमे माटि भरब, आकि घर छछारब आकि जारैन आनब..?''

कमश: दुखनी जारनि तोडए गलीह। ि बोझ सुखल ठौहरी तोडैत-तोडैत दुखनीके दुपहर भऽ गेलनि।

पस्तुत अंकमे उपन्यासकार दुखनीक मनोविश्लेषण एहि रपे कयने छथि जे एकटा निःसहाय गरीबक जीनि होइए। बेर झुकैत-झुकैत बेटी श्यामा सेहो दुनू बचिाक संग पहुँिए। आ बेटा 'भुखना' सेहो परदेशसँ आबि जाइत अछि।

उपन्यासकार दुखनीक माध्यमसँ ओहन चित पस्तुत कएलनि अछि जाहिमे ई देखबामे अबैत अछि जे निराश लोकक मनमे कोना आशा जागैत अछि। बेटा-बेटी, नाति-नातिनके देखि दुखनीके अतिशय खुशी होइत अछि।

अगिला अंकमे उपन्यासकार बँसपुरा समाजक ओ रप पस्तुत कएलनि अछि जे विराट-सँ-विराटतम गाम-समाजक थिक। समुचि गौआँ एकठाम बैस कालीपूजा आ मेला हेतु एहि तरहे व्यणस्था कएलनि-

(1) गामेक कारीगर माने मूर्तिथबनौनिहार मूर्तिथबनबए। ओना, एक-पर-एक कारीगर दुनियामे अछि मुदा पूजाक मूर्तिथमे कला नै देिी-देिताक सरिप देखल जाइए। दोसर जँ हम अपन बनौल मूर्तिथके

अपने अधला कहब तँ गामक कलाकार आगू केना ससरत? तँए जे गामक कला अछि ओकरा सभ बातमे पोत्साहित करी।

(2) काली मण्डप गामेक घरहट्टाया बनबैथ। जनका घर बनबैक लूरि छैन ओ मण्डप चाकए ने बना सकै छैथ। संगे ईहो हएत जे गामक अधिक-सँ-अधिक लोकक सहयोग सेहो होएत।

(3) मनोरंजन-ले गामोक कलाकारके असिर भेटैन। संगे बाहरोक ओहन-ओहन तमाशा आनल जाए जेहेन ऐ परोपटामे नै आएल हुअए।

(4) पूजा-ले, परम्परासँ अबैत ओहनो पुजेगरीके असिर भेटैन जे पूजाक पेमी छैथ।

(5) गामक जेते गोरे काज करैथ ओइमे नीक केनाहारके पुरस्कृत आ अधला केनाहारके आगू मौका नै देल जाइन।"

एहि तरहक कारणसँ समाजक महतेटा नहि बढत बल्कि समाजक गुणमे चिरिटपन सेहो आओत। जखनहि समाजमे साधिताक काजमे जखन समाजक लोकक कलाक अथात् लूरिक पुछ हएत तखनहि ने गामक कलामे चिरिटपन आओत। से भेल। तहिना गामक मेला छी, ओना बाहरी व्यापारी सेहो अपन दोकान-दौरी करय लेल एबे करताह, ताहूमे मेलाक ततेक पिरि भऽ गेलजे...। मुजफ्फरपुरक नाटक, िन्दानिक रास, मेल-फीमेल कौबालीक संग मल्लंसोथाक मल्लनाया नाि सेहो आओत। जाहिसँ परोपटाक लोकअथात् मेला देखिनाहारक भीड हेबे करत, ताहि संग गामक जे दोकान-दौरी करैबला छथि हुनकहु सभके पोत्साहित कएल जाएत। एहिठाम दोकान-दौरी केनाहारक माध्यमसँ उपन्यासकार समाजक नि जागरण दिस इशारा कएलनि अछि। मनुक्खमे नि ितनाक संिर कएलनि अछि। जाहिसँ

सुतल ितनामे जागर कता आओत। जखनद्ध सुतल ितनामे जागर कता अबैए तखनद्ध लोक आगू बढ्ढ चाकछु करय िहैत अछ्छ।

बँसपुराक मरदा-मरदी गामक सभ चाकयो अपन-अपन घरक काज अपन पती ि आन समागके सुमझा, कालीपूजाक व्यिस्थाक पाछू व्यानसरेसँ लाच्चा जाइत गेलाह। व्यच्चत्तगत चांिरके समाजीकरण करैत, काली स्थानसँ लऽ कऽ गामक जतेक रस्ता-पेरा टुटल अच्छ तकरा सभके मरम्मत्चा करैत, काली स्थानक मैदानके चांकिन-िनमुन बनबए लगलाह।

मेलाक बीि दुनू रंगक बाजारक ििथउपन्यासकार कयने छच्चि। नि फैशनक दोकानक संग पुरान ढराक दोकानक ििथसेहो कएलच्चा अच्छ। जे सभद्धना व्यापारी छच्चि ओ नि-नि िस्तुक दोकान कयने छच्चि मुदा गामक जे नि-नि लोक छच्चि ओ पुराने ढडाक दोकान कएलच्चा अच्छ। ताद्धमे ताडक पातक झुनझुनाबला बुढबा सेहो अच्छ। जे िलीस िषर्सँ ऊपरेसँ गाममे झुनझुना बेिँत आच्चा रहल अच्छ। झुनझुनाबला बुढबाक चांषयमे उपन्यासकारक िणर्चा दष व्य अच्छ- "तोरा तँ कनी कऽ चांन्है च्छअ हौ झुनझुनाबला?"

"बौआ िसमा लगौने छी तँए धकिकाइ छह। पद्धने िसमा नै लगबै छेलौ। आँच्चयो नीक छेलए। दू साल पद्धने आँच्च खराप भऽ गेल, अही बेर लहानमे आँच्च बनेलौ।"

मुदा झुनझुनािली परेख कऽ कहलक- "बौआ सोनमा रौ? जद्धयासँ परदेस खटए लगले तद्धयासँ नै देखच्चयौ। तूँ हमरा चांन्है छे?"

"नद्ध।"

“तोहर मामाघर आ हम्मर नैहर एके ठीन अछि, अँगने-अँगने झुनझुनो आ बाऐनो-पचिया बेचि छी। अहीसँ गुजर करै छी। आब तँ भगवान सभ किछु दए देलैन। दूटा बेटा-पुतोहु अछि। सातटा पोता-पोती अछि। दुनू बेटा घर जोडैया करैए, राज मिस्त्री छी। खूब कमाइए। आब तँ अपनो ईटाक घर भऽ गेल। मुदा दुनू परानी तँ जिनगी भरि यएह केलौ। आब दोसर काज करब से पार लगत। ओना, दुनू भाइ मनाहियो करैए। मगर हाथ-पर-हाथ धऽ कऽ बैसल नीक लगत। तँए जाबे जीबै छी ताबे करै छी। तोरा माएसँ बचपनसँ बहिना लगल अछि। जखनि तोरा घर दिस जाइ छी तखनि बिना खुऔने थोडे आबए दइए। माएके कहि दिहैन जे अपनो दोकान मेलामे अछि। तोरा कएटा बच्चा छौ?”

“एकेटा अछि।”

“एकटा झुनझुना बौआ-ले नेने जाही।”

“ओहिना नै लेबौ मौसी। अखन हमरो संगमे पाइ नै अछि आ तहूँ दोकान लगैबते छे। बिकरी बटा थोडे भेल हेतौ।”

“रओ बोहैनक सगुन ओकरा होइ छै जे इद-बाद करैए। हम तँ अपन पोताके देब। तइले बोहैनक काज अछि। ले नेने जाही।”

दोसर दोकान रमेसरा बढीक छी, जे लोहोक समान आ लकड़ियोक समानक अछि। हँसुआ, खुरपी, टेगारी, पगहरिया, कुरहैर, खनती, चक्कू, सरौता, छोलनीक संग-संग चकिला, बेलना, कतरा, रेही, दाइब, खराम, बच्चा सबहक तीन पहिया गाडी इत्यादिक दोकान लगौने अछि। तहिना रौदियाँ भैया, जे गौए छथि ओहो चाहिक दोकान कएलनि अछि। तहिना कुम्हारक दोकान सेहो अछि जे माटिक बर्तनक दोकान

कएलन्हि अछि। तहिना डोमक अछि जे अपन सभटा कारोबार बासक छिट्टा, पथिया, कोनियाँ-सूप इत्यादिक दोकान कयने छथि।

साझू पहर, जखन पूजा शुरु नहि भेल छल, मुदा मेलाक रूप-रंग तँ तैयार भइये गेल छलैक। नाच-तमाशाक स्टेज सभ तैयार भऽ गेल छल, सभ पाटी स्टेजपर जाइ लेल तैयारी कइये रहल छल, दर्शकक भीड लागब शुरु भेल छल कि एकाएक मेघ उठल आ झाँट-पानि सभ शुरु भऽ गेल। जहिना तेज हवा चलि रहल छल तहिना घनघोर बरखा सेहो भेल। गौआँ-घर आ तँ भागि-भागि, भीजैत-तीतैत अपन घर पहुँचि गेल मुदा अनगौआँ फँसि गेल। ओना, किछु अनगौआँ सेहो भागि-भागि गौआ सबहक एकठाम पहुँच गेल, मुदा अधिकतर अनगौआँ मेलेमे अपन जान बँचबैक खियालसँ जहाँ-तहाँ अपन गर लगौलक। दुर्गास्थानिक रासक मंच किछु बेसी खडा छल जकरा चारूकात माने तरमे लोक भरि गेल। ताहि संग मंचकेँ ऊपरोमे, मंचकेँ ऊपर तिरपाल-पदा लागल छल, ताहूपर तेते लोक चढ़ि गेल जे मंच टुटि कऽ खसि पडल। जाहिसँ तरक लोकके हाथो-पएर टुटल आ कतेको मरबो कएल।

मेलाक दृश्यक पछाति उपन्यासकार बँसपुरा गामक समाजक स्थिति कएलन्हि अछि। झाँट-पानि तेज रहने गामक घरो-दुआर खसल आ अनेकहु तरहक नोकसान सेहो भेल। रूपलालक घर खसि पडल। घरक तरेमे रूपलाल अपने पड़ि गेल। पती दोसर घरमे, रहने बुझबे ने केलीह। झाँट-पानिक ततेक आवाज होइत छलै जे घरक आवाज दबि जाइत रहैक। पती (मुनेसरी) बुझबे ने केलीह।

सजना मेला देखए गेल छल। ओहो तीतैत-भीजैत घरपर आबि गेल।

दुखायाँलाल आ रूपलाल सहोदार भाय मुदा दुनू भीन अछि। जीह-जानसँ दुखायाँलाल आ बेटा सजनो दुनू बापूत मिहनत कऽ मेहनत कय रूपलालके घरसँ निकाललक। ओना, रूपलालके िट लगल रहैक मुदा शरीरक किछु अिधात नहि भेल छलैक। शान्त भेला पछाति जखन दुनू भाइक बीि गप-सप्प शुरु भेल तखन दुखायाँलाल तँ अपन दाबि तर्ति बुझलक मुदा रूपलालक मनमे सहोदर भाइक प्रति स्नेह उमैड पडलैक। आ बाजए लगल-

''भैया, धरमागती बात कहै छिअ। दुरागमनक पछाइत जे चिदागरी करबैले पठौने रहऽ, ओइ दिनक बात कहै छिअ। अपनो सासु आ टोलोक मौगी सभ आबि कऽ लगमे बैसल। अपना बुझि पडए जे जहिना िन्दािनिमे कृष्ण गोपी सबहक संग बैस कऽ गप-सप्प करै छला तहिना हमहूँ छी। एक-मुहरी सभ स्तीगण कहए लगल जे अहाक भाए बड छनकट अछि। केतबो कमाएब तँ भाभन्स हुअ देत। अहा दुनू परानी कमाएब आ ओ कोसल करत। जखन हाथ-मुटी गरमा जेतै तखन भीन कऽ देत। अखन दुनू परानी जुआन छी, कमाइ-खटाइ छी। अखन नै किछु बना लेब तँ जखन धिया-पुता हएत खरि बढत, तखन कएल हएत। तँए नीक कहै छी जे अखने भीन भऽ जाउ। नै तँ पाछू पिताएब।'' रूपलाल ईहो बाजल जे आइ बुझै छी जे सहोदर भाय की छी।

पस्तुत घटनाक माध्यमसँ उपन्यासकार सहोदर भाइक पति की स्नेह हेबा िही आ सामाजिक पिरवेशिमे की बनि गेल अछि तकर िथि विस्तारसँ कएलनि अछि। विस्तारित रूपके दृश्य पात कएल जाए-

''किये जे तोरा किछु कहलकौ आ तूँ मानि गेले से अपन बुद्धि केतए गेल छेलौ। तूँ नै देखै छेलही जे दुनू भाइ संगे बोइन करैले जाइ

छेलौ आ आँगनमे भौजाइ भच्च च्चन अँगना-घरक काज सम्हाच्च जारैन-काठीक ओच्चयान करै छेलखुन। तैपर एकटा नाङैरक घास-भूसा, खुऔनाइ-पीऔनाइसँ लऽ कऽ आशमी भानस-भात कऽ बरतन-बासन धच्च मँजै छेलखुन, से सभ अपना आँच्चिए नै देखै छेलही। तोही कह जे सत् बात की छेलै आ मौगी सबहक कान भरने तूँ की बुझलीही!''

अपसोि कऽ मुडी डोला र पलाल च्चारच्चाराइत बाजल- ''हँ भैया, ई तँ ठीके कहै छह।''

''अपने आँच्चिसँ जे देखै छेलही से झूठ बुच्च पडलौ आ जे झूठ बात सुनले ओकरा सत् माच्च लेलही। एकरे कहै छै मौगयाही भाज। तोरे जका आनो-आन मौगयाही भाजमे पच्च कुल-खानदानक नाक-कान कटबैए। नैहरसँ सासुर जाइ काल जे मौगी सभ काच्च-काच्च बजैए से की कहै छै से बुझै छीही? ओ कहै छै जे जच्चना बाप-माइक घराडीपर हम कनै छी, तच्चना बाप-दादाक घराडीपर घरबलाके कनाएब। अरे! एतबो ने बुझै छीही जे दुच्चयामे सभ कुछ च्चच्च सकैए मुदा सहोदर भाए नै च्चलै छइ। भाइक खाच्चार लक्ष्मण स्ती, पच्चिर आ समाज सभ छोच्च देलच्चिन मुदा भाइक संग अच्चाम समय धच्च रहलच्चिन। आइ तोरा के काज दइले एलौ। कच्चयो जँ हमरा मनमे पाप रहैत तँ तोरा घरेमे मरैले नै छोच्च दैच्चयौ। नै तँ झीक-झाच्क कऽ ठाठ देहेपर खसा दैच्चयौ। नइ मच्चते मुदा हाथो-पएर तँ टुटबे कैरतौ।''

नमहर सास छोडैत र पलाल अपन च्चमसल आँच्चिके च्चाडैत बाजल- ''भैया, आइ बुच्च पडैए जे सभ ठच्च लेलक!''

''कान पाच्च कऽ सुच्च-ले। जच्चना मनुख सभसँ पैघ जीि ऐ धरतीपर

अछि, जे बडका-बडका मितकारी काजो करैए, तकरा ना छुतहरो अछि। देखबीही जे जेकरा कनी बुद्धि-अकील छै ओ सदिकाल बुद्धिबक सबहक कमाइ ठक-ठक मौजसँ खाइए, खेबेटा नै करैए ओकर बोहु-बेटीक संग कुता-बिलाइ जका इज्जतो संग बेहिार करैए।"

"भैया, आइ बुझ्झ पडैए जे हमर बाप मरल नै जीबते अछि।"

यताक र पमे अपनाके पाबि दुखायालालक हृदय पसीज गेल। बाजल- "बौआ, जे समय बीत गेल ओ आब थोडे घुमा कऽ औत। मुदा जाबे जीबैत रहब, तैबीि जे समय अछि ओ तँ बँिल अछि। हमरा तूँ मोजर दे आक नै दे मुदा अपन सीमा तँ हमहूँ बुझै छी चकने। अपन कमाइ खाइ छी, अपने और दे जीबै छी। तइले दोसराक कोन आश। अपन काज दुसैबला नै करब। जँ केकरो नीक कएल नै हएत तँ अधले चकए करबै। तोरा पच्चा जे काज अछि सएह ने करब।"

एहि तरहे उपन्यासकार आगू अनुपक िथिसेहो कएलि अछि। अनुप ओहन चकसान अछि जे खेतीक संग महीस सेहो पोसने अछि। जाहि दिन मेलाक आरम्भ भेल छल ताहिसँ एक दिन पहिने अनुपक महीस उठल, पाल खाइ लेल। िच बजे भोरमे महीस लऽ कऽ अनुप पाडा ताकए चिदा भेल। िआइत-िआइत बेर पहरमे पाडा भेटलैक, जे महीसके गछाब्छ लेलक। भूखे-पियासे अनुप लहालोट भऽ गेल मुदा करबतए की। दोसर कोनहु उपाय रहबे ने करैक। जखन झाँट-पािमे अनुप पच्छ गेल छल। घरपर अबैत-अबैत मन खराि भऽ गेलैक। माने धाह-बोखार लािग गेलैक। पतीके अनुप कहलक अही महीसक परसादे गुजरो लिैए आ हाथ-मुटीमे दूटा पाइ सेहो रहैए।

अनुपक अितरिक्त उपन्यासकार राजेसर भाइक िथिसेहो कएलि

अछि। राजेसर जरसी गाए रखने अछि जे ठाठ भऽ गेल छैक। ते डॉक्टर लग मधेपुर लऽ गेल छल। अबेर भऽ गेलैक। झाँट-पानि रस्तेमे पकड़ि लेलकैक मुदा कहुना-कहुना घरपर आबि गेल। घरपर एला बाद गाए मरि गेलइ। गाए मरैक कारण भेलैक जे झाँट-पानिमे भीजब आ अकान्त हएब।

कानैत राजेसर बेटाके कहलक जे बौआ, गाए मरि गेल तेकर सोगि ओते नहि अछि मुदा बैकक कजर्थकेना ाकिएब चिन्ता तेकर अछि। पस्तुत पसंगक विस्तावित र प, जे उपन्यासमे आएल अछि। राजेसर बाजल-

“गाए मरि गेल तेकर दुख ओते ने अछि जेते बैकक करजाक अछि। एक तँ सरकार लोकके मदैत करैए आकि गरदैनमे फास लगबैए। जखन गाए नै नेने रही तखन कहलक जे तेकरी सरकार देत आ बाकी दू तिहाइ बैकसँ करजा भेटत। काज सुगम देख लेलौ। बुझबे ने केलिऐ जे गरदैनमे फँसरी लगबैए। छूट-ले बैकबला कहलक जे मधमनीसँ कागत आनि कऽ दिअ तखन ओइ र पैआक बिनहा लोनमे भऽ जाएत। जाबे तक ओ कागत नै देब ताबे तक सोल्होअना र पैआक सूद ाैत रहत। अपने देखल-सुनल नहि। कोटक मंशीके जा कऽ सभ बात कहलिऐ तँ ओ तैयार भऽ कऽ ओइ ओफिस गेल। पाछूसँ अपनो गेलौ। ओफिस जखन गेलौ तँ कहलक जे पान साए र पैआ लगत, तखन कागत देब। अहिना दौड-बडहा करैमे हजारसँ ऊपरे खर्चि भऽ गेल। र पैआक हिसाब नै देने छेलिऐ। बैकमे जखन हिसाब करबए लगलौ तँ कहलक जे छह मासक सूद मूरमे जमा भऽ गेल, आब ओकरो सूद लगत। तैबीच गाइयो मरि गेल! आब की करब?”

अच्चाला घटना कुम्हारक अछि। जे अपन शमबलसँ खपडाक कारोबार ठाढ कयने छल। पाछ्काक शुभ च्चन बुझ्झ सुरच्चाया खपडाक भटा लगौलक। खेला-पीला पछाच्चा भटामे आच्चा देलक। आच्चा जखन पजच्च गेलैक तखन झाँट-पाच्चाक लैत सभटा खपडा गच्चा गेलैक, माच्चा भऽ गेलैक। मास च्चनक मेहनतके डुमैत देच्च्व सुरच्चायाक मन छहोच्छत भऽ गेलैक। ओना, एच्च घटनाके सुरच्चायाक पती डाइन-जोच्चानक दोख लगबैत खूब गच्चयाबए लगलीह। मुदा तकरा रोकैत सुरच्चाया कहलक जे एक तँ मास च्चनक मेहनत गेल तइपर अनेरे अहाँ की समाजमे दुश्मनी बढबै छी।

ताच्चसँ आगूक एक घटना फदनाक अछि। जे दूटा पोखच्चमे माछ पोसने अछि। एकटा तँ बँलै मुदा दोसर दहा गेलैक, एच्च पोखच्चमे महार नच्च छलै। दुनू परानीक बीकि यथाति तािलापके देखल जाए- “गलती अपनो सबहक भेल जे पोखैरक मुँह मजगूतसँ नै बाच्चह देच्चाऐ। जँ से बान्हल रहैत तँ एहेन च्चन थोडे देखतौ। काच्चा भोरे पाटिा टक्लाबला जन कऽ कऽ मजगूतसँ मुँह बाच्चह देबइ। अखन काच्चाके छी बहुत समय अछि। बैशाख-जेठमे मछहैर हएत। भने पोखैर उपो-उप भच्च गेल।”

पतीक बात सुच्चा फुदना बाजल- “जँए एते पूजी लगेलौ तँए थोडे आरो लगा देबइ। दू मन खैर आच्चा कऽ सेहो दइए देबइ। ओना, देखै च्छऐ जे केते गोरे खादो दइए। मुदा अपना तँ ओते ओकाइत नइए। ऐ साल कहुना-कहुना कऽ च्चअ। ऐगला सालसँ नीक जका करब। कोनो की अग्गह-च्चग्गह पोखैरे जोतलासँ थोडे होइ छै, जेतबे करब नीक जका करब।”

तकर अच्चाला घटनामे भोलाक िथिउपन्यासकार कएलच्चा अछि।

कोबी, भाटा, मिरचाइ इत्यादिक बीहनिक कारोबार भोला करैए। ऊपरका खेतमे तेहन दनार फोडलकैक जे सभ बीआ भँसियाएल माटिक तरमे पड़ि कऽ झँपा गेल। भोलाक परिचय दैत एहि घटनाक पसंगमे उपन्यासकार लिखने छथि- “मंकि घटना सम्हारि भोला घरपर आबि बीरार देखए गेल। बीरारमे बिहैनक दशा बिगडल देख निराश भऽ गेल। आमदनीक आशा टुटि गेलइ।”

जहिना भोला छोट किसान तहिना छोट कारोबारियो। पनरहे कटाक आँट-पेटक किसान। मुदा दुनू परानी एहेन मेहनती जे सात गोरेक परिवारि हँसी-खुशीसँ चिलबैत। ओना, तिनटा बच्चिा लिधुरिया रहै मुदा जेठका बारह बखर्क। जेठ बेटा बलदेब मिडल स्कूलमे पढबो करैत आ घर-गिरहस्तीक काजमे संगो-साथ दइत। स्कूलोक दशा तेनाहे सन। पाि साए विदिाथीक स्कूलमे तीनिटा शिक्षक। तहूमे एकटा नेतागिरिये करैत। पढबै-लिखबैसँ ओते मतलब नहि, जेते आँफिसक दौड-बडहासँ। स्किफ लोकेक काजे ऑफिस नै जाए, बल्कि स्टाफो सबहक काज करैत। जइसँ आमदनियो नीक आ पैघ लोकक बीि बैस समैयो गूदस करैत। स्कूलसँ ओतबे मतलब जे मासो दिनक हाजरी बना दरमाहा उठबैत। समाजमे केकरो किछु कहैक साहसे नहि। थाना-बहानासँ लऽ कऽ कोट-कहिरी धरिक धुडफन्दा लोक, तँए कियो आँखि केना उठा सकैए। तहूमे सरकारी पाटीक नेतागिरी करैत।

स्कूलक ढील-ढालसँ भोला खुशीए रहए। किएक तँ बलदेब माल-जालक पूरा भार उठा नेने। कुटी काटब, खाइले देब, पानि पियाएब, घर-बाहर करब, थैर खडरब, गोबर उठाएब बलदेकि बान्हल डयूटी। अइले ने पिताके अढबैक जर रत आ ने कोनो चिन्ता। मुदा तँए की

बलदेि पढए नञ्? पढबो करए। भञ ब्दन ने माल-जालक नेकरम करै मुदा बारह घन्टाक राञ्च तँ बँिइ। दोसैर साझ होइते भोला मुस्तैज भऽ ञ्चया-पुता लग बैस नजैर रखैत।

पढैमे बलदेि ओते िनसगर नञ्, रहबो केना करैत? जखन सकूलेके केन्सर धेने रहत, तखन हाथ-पएर केते चकयाशील रहत। मुदा तँए चक बलदेि सोलहनी भुसकौले रहए से नञ्। इमानदारीक छह घन्टाक मेहनतसँ चकयो इंजीञायर तँ चकयो डॉक्टर, चकयो ओकील, तँ चकयो पोफेसर बञ्च जाइए, तँ तीन घन्टाक मेहनतसँ बलदेि चकए ने पास करत। साले-साल चकलास टञ्चते रहए। भोलो खुशी, चकएक तँ बचिमे बाबाक मुहे सुनने रहए जे- ‘उतम खेती।’ नोकरी आ गुलामीमे की अन्तर छइ। कमा कऽ ञ्चनगी जीबैक लूञ जँ भऽ जाए तँ ऐसँ बेसीक जर रते की। जञ्ना राजतंतमे रजेक बेटा राजा होइत तञ्ना ने पजातंतोमे मंञ्चयेक बेटा मंती आ हाचकमेक बेटा ने हाचकम बनत। तइले आनक सेहन्ता, सेहन्ता नै तँ आरो की भऽ सकै छइ?”

पछाञ्च ञ्चसौनी गाममे सेहो काली पूजाक संग मेलाक आयोजन होइत अञ्छ। मेलाक बीि जे नि-नि लोक, अथात ओहन-ओहन लोक जे एखन धञ कोनहु कारोबार नञ् कयने छलाह, ओहनो लोक सभ व्यिसाय ञ्चस बढला। मुदा पाञ्च-ञ्चहाञ्चक िलैत जे कारोबार असफल भऽ गेलैक। ताञ् असफलताके देखबैत उपन्यासकार ओञ् असफल व्यञ्चतक बीिकि पञ्चाचकयाके सेहो रेखाचकत कएलञ्च अञ्छ। दू तरहक पञ्चाचकया भेलैक। पञ्लपञ्चाचकयामे लोक अपन भाग्यके कोसए लगल जे भाग्यमे ञ्चखल जएह रहत सएह ने हएत। अथात जे काज जकरा भाग्यमे ञ्चखल रहैत छैक ओ ओकरे भऽ सकैत छैक। मुदा सामुञ्क रपमे घटना भेलासँ, अथात घटनाक पभाि एकरंग भेलासँ

लोकक मनमे दोसर पच्चीकयाईहो भेलैक जे जँ हमरेटा एहेन भेल रहैत तखन ने, से तँ ओकरो भेल जे जीनी कारोबारी अछि।

पस्तुत उपन्यासमे उपन्यासकार नि तिनाक संग पच्चि बाध्य होइत जीनिक विषद र पमे िथिकएलन्हि अछि। ताहि संग साहित्य समाजक दपण व्यक, जे एखन धरि मैथिली साहित्यमे एकाकी र पमे आवि रहल छल ओकरा विराट र पमे अथात् समाजक सभ गिक लोकके समाहित करैत उपन्यास गढलैन अछि। जे साहित्यकेतक लेल एकटा नि उपलब्धि सेहो कहल जा सकैए।

जीनि-संघषथउपन्यासमे जे कोनहु घटनाक िथिभेल अछि ओ जीनिक भविष्य वद्स सेहो इशारा करैए। ताहि संग समाजमे जे िमनस्यक र प एक-दोसराक बीि सभ वदनसँ अबैत रहल अछि ओकरा सामंजस्य करैक भरपूर पयास भेल अछि। जाधरि समाजमे पेमपूणथसम्बन्ध नहि बनत ताधरि नि समाजक नामाण कोना हएत। जाधरि समयानुकूल नि र पमे समाज ठाढ नहि हएत ताधरि समयक संग समाज िल कोना सकैए।

‘जीनि-संघषथ उपन्यासक नामक साथकता वाि करैत संघषक महतिके देखबैत उपन्यासकार संघषक मुख्य कारक ततिके सेहो पदशाय कएलन्हि अछि। संघषक कारण दन्द होइत अछि। ओना, दन्द दुनू वदशामे होइए। माने सकारात्मक सेहो होइए आ नाकारात्मक सेहो होइते अछि। नकारात्मक दन्द पतन वदस बढबैत अछि जखन कि सकारात्मक दन्द उत्थान वदस बढबैत नीकसँ नीक वदशामे, उनतिसँ उनति वदशामे बढबैत अछि।

केशव भारद्वाज- (आइ-काल्हि कम्पाला, युगाण्डामे)

किछु बीहनि कथा, किछु लघुकथा, एकटा दीर्घकथा आ एकटा उपन्यास

ओ बच्चा (बीहनि कथा)

कम्पाटमेट (बीहनि कथा)

मनु:गंध (बीहनि कथा)

सोि (बीहनि कथा)

गलत व्याणथ (बीहनि कथा)

खाली हाथ (बीहनि कथा)

नबका धक्काक (बीहनि कथा)

किस्मत (बीहनि कथा)

प्रेम चीठि-नब प्रयोग (बीहनि कथा)

दही ि ली बुढी (बीहनि कथा)

भुत-बंगला (बीहनि कथा)

मध्यस्थ (बीहनि कथा)

गामक माइट नसीब नहि (बीहनि कथा)

कन्यादान (लघुकथा)

पछताि (लघुकथा)

उपराग (लघुकथा)

अएना (लघुकथा)

हत्यारा (लघुकथा)

हुब्बा (लघुकथा)

इच्छा (लघुकथा)

ब्ाशन एडब्ाशन (लघुकथा)

अपन लोक (लघुकथा)

बख्शीश (लघुकथा)

टीस (लघुकथा)

व्शिासघात (लघुकथा)

पापक फल (लघुकथा)

हाथक लकीर (लघुकथा)

छका-पुराण (लघुकथा)

सरपाइज (लघुकथा)

अफेयर (लघुकथा)

केतकीक व्यथा- की कहू कथा (लघुकथा)

उठऊआ बियाह (लघुकथा)

बडका घरक बहुरिया (लघुकथा)

दरबार (लघुकथा)

समयक कि (लघुकथा)

बदलल बेबहार (लघुकथा)

अनघोल (लघुकथा)

देहक नेह (लघुकथा)

लछमी बहुरिया (लघुकथा)

अजादी (लघुकथा)

गोलकी फेमक शिमा (लघुकथा)

अंत (लघुकथा)

फैसला (लघुकथा)

आत्मग्लानि (लघुकथा)

खेलौना (लघुकथा)

कक्रासि (लघुकथा)

बर्चिनक बनि (लघुकथा)

रखबार (लघुकथा)

सिंगर (लघुकथा)

दोषी के? (लघुकथा)

बतहिया गाछी- (लघुकथा)

डालडा पसाद (लघुकथा)

की सोचि- की लीखल- दीर्घकथा (पहिल आ दोसर भाग), (अंतिम भाग)

पैबंद- उपन्यास (पहिल सँ सातम भाग), (अंतिम भाग १-२)

ओ बच्चि (बीहनि कथा)

किछु लोक जीनि मे एहन होइत छइ जे कखनो काल मे अपन छाप छोड़ि जाइत छइ। उनकासऽ आहाकऽ कम्फटर्थलेलि कम्मे काल मेभऽ जाइत अछि।एना बुझाइत जे कतेयाकऽ पुरान परिचित छी।कतउ किछु छइ जे खीचित छइ एक दोसर के।विस्मृति मे ओ चिहरा अबइत रहइ छइ।

ओही मेसऽ एककऽ विषय मे कहइ छी। बच्चि मे संबंधी कत गेल रही ओत ओइ बच्चिसऽ भेट भेल। ओ उमर मे हमरासऽ पैघ रहितो, हमरा पैघ जेका आदर करअय। हमरा देखते ओ बच्चि खुशभऽ जाय। अपन सब संगीसऽ हमरा भेट कराबय।तखनया ओतेक धनिक गरीब त नहि बुझयइ, मुदा ई बुझि गेल रहियइ की ओ परिवारिकऽ आर्थिक हालात ठीक नहि छइ। हम जखइन ओकरा संग ओकर घर जाइ त ओकर पुरा परिवारि खुब मान करय। अतेक मान, अपन गाम मे नहि भेटय तािह लेल बेसाये नीक लागय। ओ बच्चि हमर संबंधी कतकऽ हाट-बाजार ,टहल- टकोरा सेहोकऽ करअय।हाट जायकऽ काल मे हमहु ओकरा संगे जाइ त ओ बड खुशभऽ जाय।जेतबा स्मृति अछि, ओ किछु सामानक खरीद मे गडबडी करय, मुदा नहि हमरा खराब लागय आ नहि हम अपन संबंधीकऽ किछु कहलियइ। कारण ई छल जे ओ बच्चि ओइ पाइसऽ अपन घर खातिर किछु सामान खरीदइ छलइ। दोकानदार आ ओकरा मे इशारा मे गपभऽ जाइ। हमरा पाहुन बच्चि कहि किछु चिकलेटदऽ करअय। हमरा जनतिं, हमर संबंधीकऽ सेहो ई गडबडी बुझल छेलइन, लेकिन कियो किछु नहि कहइ।गाम घर मे बाबू-भइयाकऽ बच्चि ओतेक अनुशासित नहि कि दोकानसऽ

सामान आइन दय। नौकर िकर भेटनाइ कमभऽ गेल छलइ। ओही व्स्थच्च मे ईएह बचि पर सबके आस। ई त एक गुण भेल। दोसर जे ओ पढ मे सबस तेज सेहो छल। लेच्कन जे बचि दोकानसऽ सामान आनऽ काल अतेक सज्जन, उएह बचि संगी संग खेल मे सबसऽ दबंग। खेल मे ओकरे िलती छलइ- कनी उि सेहो बेशी भेनाइ एक कारण। कहबाक जे कयेक टा ओकर र प आ हम ओकर संग आनन्दसऽ ब्तबइ छलौ।

समय अप्पन रफ्तारसऽ िइल रहल छल। कयेक बरख कऽ बाद जखइन फेर हम ओइ गाम गेलौ आ ओकर पुछारी कयलौ त पता िलल च्क ओ बचिकऽ च्दलकऽ बीमारी छलइ आ ओकर मृत्यु तीन बरख पच्हनेहेभऽ गेलइ। हम सुइनकऽ स्तब्धभऽ गेलौ। हम संबंधीसऽ पुछलइन च्क ईलाज नच्ि कराओल गेलइ। जिब भेटल- खाय पर आफत छलइन, ईलाज कतऽ सऽ करयच्तन।हम १/२ च्दनक बादय गाम िपस आच्ब गेलौ। कतऽ हम सोिई छेलौ च्क ओ बचि अप्पन माय बापकऽ कष दूर करत, त कत ओ बचि सबकऽ छोड कर िइल गेल।गरीबक च्जम्मेदार बचि।

भगिनसऽ च्िनती जे ज्यो जन्म दइ छच्थन त जीिन सेहो च्दयउन।

<u>कम्प्रोमाइज (बीहनि कथा)</u>

कम्प्रोमाइज शब्दक ऽ युग सब सलमान खानक ऽ डायलॉगसऽ जोड़इक ऽ गाहे-बगाहे उपयोग करइत छथि। आइ हम एक टा मैथिल मनीषीक ऽ कम्प्रोमाइजक ऽ बारे मे लिख रहल छी। हाल तक मिथिला मे संयुक्त परिवार बहुल मे देखल जाइत छल। संयुक्त परिवारक ऽ अपन किछु सीमा , अनुशासन आ नियम होइत छइ जे कयेक बेर विकास विरोधीभऽ जाइत छल।

कथाक ऽ किरदारक ऽ कायस्थक नाम हम राम बाबू रखइ छी।आजादी पूर्वक ऽ समय छल।

राम बाबू सुव्यवस्थित गृहस्थ संयुक्त परिवारक ऽ छलाह। घरक सामुहिक खर्चसऽ कलकत्ता मे पढ़लाह उपरात सरकारी सेवा मे कार्यरत छलाह। हुनक सहोदर छोट भाइ आ पितियौत भाइ दुनु एक रंगाहे विद्यार्थी छलाह । एके संगे मैट्रिक पास केलाह। आब समस्या ठार भेलइ जे आगु के, की, कोना।फैसला भेलइ जे चूंकि राम बाबूकऽ बाहर पठाकऽ घरक सामुहिक आमदनीसऽ पढ़ाओल गेल छइन, ताहि लेल अइ बेर आगुकऽ पढ़ाइकऽ मौका उनकर पितियौत भाइकऽ भेटतइन। आ पढ़ाइकऽ खर्च राम बाबूकऽ देबाक छइन। राम बाबूकऽ विचार छलइन जे दुनु भाइकऽ आगु पढ़ाओल जाय। मुदा उनकर मत पर सहमति नहि भेलइन। राम बाबूकऽ सहोदर अनुजकऽ अंग्रेज सरकार मे नौकरी ज्वाइन कर परलइन। ओ आखिरकार्योकऽ ग्रेजुएट नहि करा सकला अपन छोट भाइ के। मुदा ताहि समय अपने आपसऽ कम्प्रोमाइज कयलाह जे

हम अप्पन भाव्वजकऽ जरूर ग्रेजुएट करायब। घरक फैसलाकऽ अनुसार चचियौत भाइकऽ ग्रेजुएट करेलाह, आ ओ भाइ सेहो सम्मानित पद प्राप्त कयलाह।

राम बाबूकऽ अइ बीच अपनो परिवार बढलइन। तखनो ओ भाव्वज की भतीजीकऽ सेहो पढेलाह आ ग्रेजुएट बनेलाह। ई भेलइ कमिटमेंट। हालांकि राम बाबूकऽ जीवनि काल बेशी नहि रहलइन, मुदा परिवार खातिर हुनक त्याग आ योगदान अदभुत छइन।

आब जे हमर कहबाक आशय अछि जे अतेक त्याग की हमरा सब मे अछि?

हम अप्पन कमाइसऽ इच्छाकऽ विरुद्ध चचियौत भाइकऽ पढबइकऽ खर्च उठा सकइ छी?

परिवारिकऽ अनुशासनकऽ एना पालनकऽ सकइ छी?

कमिटमेंटकऽ पुरा करबाक इच्छा शक्ति अछि?

संयुक्त परिवार एना चलइ छलइ। त्याग पर परिवारिकऽ गरीमा टीकल रहइ छलइ।

आइ त कमउआ बेटा नको सुनताह अप्पन खर्चकऽ बारे मे।ओइ मनीषीकऽ हमर नमन। हमर संबंधी सब बुझि गेल हेताह।

मनु:गंध (बीहनि कथा)

कयेक लोक युगिस्थिा मे बहुते सामाजिक रहइ छथि, मुदा बाद मे एकाकीभऽ जाइत छथि। ओही मेसऽ एक छथि- राम बाबू। आब दिल्ली मे रहइ छथि। बहुत कम अबरजात गामघर स। भगिती सब किछु देलखिन गामो मे, मुदा कियो देख बाला नहि। भग्न पडइ छइन, घर - दुआर। जतऽ गाम- समाज के,के कहय, दुर दुरकऽ संबंधी सब परल रहइ छल, ओत कियो साझ देबबाला नहि।

हमर ओ संबंधी नहि, अनुबंधी छलाह। हुनक लिा- लिी हम देखने छलियन।ओ व्यक्तित्व एना असगरआ किअए भऽ गेलाह। हमर जिज्ञासा बढइत गेल। एकसऽ एक खिस्सा हुनक रखबर सभािकिऽ दिल्लीकऽ मैथिल समाज मे फैलल अछि। कियो कहइ छइ जे हम गेलौ भेट करऽ त हमरा रामबाबू कहलाह- ई दिल्ली छइ। अतऽ एक साझ लोक खुआ त दइ छइ, मुदा रहअकऽ नहि दइ छइ। हम सुनिते घुरी गेलौ। बरका छथि त अपना के। हमरो सारकऽ दिल्ली मे कोठा-सोफा छइ। हम ओत िइल गेलौ। अछिना दस मूंह- दस गप्प।

जखइन मूल कारण पता लागल, त सोिऽ पर विशिभऽ गेलौ कीकऽ जिम्मेदार।

रामबाबू नि विभाग मे पैघ अधिकारी छलाह। सब दिअयद-बाद, गौआ, संबंधी,ईस्ट मित, जे आगह केलकइन, छोट छिन सरकारी नौकरी दियेलखिन। ईहो कहू, कत्तौको कियो दरबारी केलक, किछु न किछु भेटलइ। ताहि लेल बुढी दाई माई सब रामबाबूकऽ खुब आशीष दइ छलखिन आ कियो बेटा, कियो जमाय, कियो नाती, पोता,

भाग्यानकऽ नौकरी खाइबार कहइतान। रामबाबू अपना संग एक टा ललका डायरी रखइ छलाह। जानकर नाम डायरी मे लिखा गेल-बुझु नौकरीभऽ गेल। उनकर पद त बढइत गेलइन लेकिन बाद मे सरकारी तंत मे आयल नायमालिकीकऽ कारण नौकरी लगबऽ मे असमर्थभऽ गेलाह। बड जश- पताषा छलइन। ओतबे खाई जे मोछ मे नहि लागे- ई नाति पर लि बाला। जई शहर गेलाह, सामाजिक कायर्मे भरपूर योगदान कयलाह।

रिटायरमेटकऽ एक साल पुथिकमर्थारी यूनायन उनकर खिलाफ बडका आन्दोलन केलकइन। ओइ मे किछु लोक माईकलऽ क उनकर घर पर गाइड- गुप्ता सेहो देलकइन। अकर नेतृर्त उनके दारा लगालि नौकरी हुनके दोसर टोलकऽ गौआ करय छल। ओकरा नौकरी ओ बहूत कठिनाईसऽ दियौने छलाह- ओकर मसोमात दाईकऽ आगह पर। ई सबकऽ पाछु किछु लाबी काज करय छल- आ मोहरा नबका कामरेड हुनके लगायल लोक छल। ई घटना उनका अन्दरसऽ तोइड देलकइन। फेर उनका मनु: गंध लागऽ लगलइन। ओ कह लगलखिन की जेकरा आहा कनिो नीक नहि करबइ, ओ कमसऽ कम गाइड नहि पढत।

आब सालि ई सामने अइछ कि एकर जिम्मेदार के। अतेक सामाजिक लोक एहन एकाकी किअए भेल-जिम्मेदार के।

जीनि मे ज्यो उपकृत कनायो छी, त उनकर खिलाफ नहि जाऊ। समाज मे उपकारी सभाकिऽ कमे लोक बलि छथि। ओहो विमुखभऽ जयताह त सब सामाजिक व्यसिथा गडबडा जाइत।

सोि- (बीहन्नि कथा)

पहलुने राज, दरबार आ जमीदार सबकऽ कृत्वासऽ आम लोक उपकृत होइत छल। जेना स्कूल, कालेज, धर्मशाला, मंन्दिर,खेलक मैदान, मेला, पढ िला बच्च िकऽ िजीफा, पूजा, रामलीला, बडका कलाकारकऽ कार्यक्रम सब अछ्छि। लेच्किन इनकर कृत्वासऽ बेशी च्किकृत्वाकऽ व्यवस्सा, गा ि-घर मे फैलल अछ्छि। सच िाई पता नच्ि। आब ओइ स्थान पर अच्धिकारी आ च्किछु नेता/नेती छच्थि। नेता सबहक अपने अतेक टा पेट जे ओ भरतइन तखइन ने समाजकऽ सो िताह। ब िलाह अच्धिकारी सब।एक टाकऽ सो िऽ कऽ दृच्ष्ट कोण आहा सबकऽ साझाकऽ रहल छी। च्किछु गोटेकऽ बुझलो होइत।हमर च्किरदार रामबाबू (छद्म नाम) छच्थि।

राम बाबू भारत सरकार मे शीषथपद पर छलाह। एक बेर कोनो काज मे गाम गेलाह। दु च्दिनभऽ गेलइन, च्कियो गंउआ भेट करऽ नच्ि अयलइन।कान ठार भेलइन। हमेशा लोकसऽ च्घिरल रहअ ि िला लोक।पता लगलइन जे च्दिल्ली मे उनकर घर पर गेलाह पर उच्चित व्यव िहार हुनका संग नच्ि कयल गेल छलइन। जाइनकऽ दुख भेलइन। ओ अपने सबहक कतऽ गेलाह आ च्दिल्ली आबऽ कऽ नोत देलच्थिन। आब की छल। शुर भेल लोकक रेला। च्मिच्थिला मे बेरोजगारी सब च्दिनसऽ महामारी। च्कियैक त काज आ खेलकऽ सेहो छोटका बरका मे बाटल। च्दिल्ली मे उएह काज करताह मुदा दरभंगा मे कोना।

रामबाबू एकटा कर्मचारीकऽ लगा देने छलच्थिन- मैच्थिल सबहक

सत्कार मे। अपनहु खोज-खबर रखइ छलखिन। नौकरीकऽ पत्याशी सबकऽ पहिले दिन स्पष्ट शब्द मे कहल लेल जाइत छलइन। ठीक छइ नौकरी नीक- बेजाय, आगु- पाछु भेटत, मुदा ताबइत आहाकऽ शम करऽ परत। बहुत मैथिल शमकऽ नामे पर परा जाइत छलाह। जे बहि छलाह, हुनका सबकऽ झाडू, खुरपी, कोदाइड, झरनाथि थमा देल जाइ छलइन। पचवसर बडकी टा छलइन आ आगंतुक मैथिल ओहोसऽ बेशी। खुब तरकारी उपजई, बिकाइ आ सरकारी एकाउंट मे जमा होइ। जे काजक नाम लइते भाइग जाइ छलाह ओ खुब नुन तेल लगाकऽ बखनान्स करय छलाह। जे सब टीकलाह, सबके नौकरी भेटलइन। एक आर खास गुण छलइन जे छुटीकऽ दिन ओ सब आगंतुकक संगहि भोजन करय छलाह।

अइ काज करेबाक पाछु जे सोचि छइ ओ पणम्य छइ। हुनक कहब छलइन जे ई सब बइसकऽ खाली खेताह से राष्ट्रीय क्षति छइ। किछु ओ उत्पादकता होबाक चाही। कहुं सब खाली बइसकऽ समय नष्ट ने बिताऊ। ई आहाक नष्ट राष्ट्रक क्षति अइ।

हमरा तरफसऽ हुनक सोचिकऽ सैल्यूट।

गलत व्याणथा (बीहत्मा कथा)

रामबाबू चद्वक्ली मे सरकारी अस्पताल मे डाक्टर छलाह। ओतेक सामाच्जक त नच्चि मुदा चकयो पहुंि जाइ छलइन त चकछु मददकऽ दइत छलच्चथन। सबसं पैघ ई च्वशेषता छलइन जे काज करच्थन ि की नच्चि, बोली मधुर छलइन। मोहन च्भाशा जेका फीस देलोह पर उाि कथा नच्चि कहइ छलच्चथन। अप्पन समाज मे बोली बानीकऽ लकऽ नीक इज्जत छलइन। रामबाबूकऽ एक टा संतान छलइन। नाम छइन - चया। आब त धीयापुता कम्मे होइ छइ आ जे छइ से महा दुलार। एकलौताकऽ त बाते अलग। ज्यो माय - बाप पाइ बाला, त ओ आबेश अलगेसऽ देखाई छइ।

एक च्चन रामबाबू लग गामक बगलक गामक एक गोटे देखबऽ एलच्चथन। गप्पकऽ कम मे िि भेलइ की उनके गामक रमन नामक बच िकऽ चद्वक्ली मे MAMC मे नाम च्लखेलइ अच्छ। रमनक चपताकऽ अस्था- पात बेशी नच्चि छइन। आरो बच ि सब पईढ च्लख रहल छइन।ओ िहइ छच्थ की चकयो रमनक पढाइक भार गच्छ च्लयाय आ च्बयाहक खि च्द्दऽ च्दअयह त ओ कथाकऽ लेताह। रामबाबू जखइन दरभंगा मेच्डकल कॉलेज मे पढइ छलाह त उनकर एकटा संगीकऽ अहीना च्बबाह भेल छलइ। बड ठसकबाजी मे ओ संगी च्बयाहक बाद रहअ लागल छेलाह। बाद मे सासुरे िला ओकरा सरकारी नौकरी च्बहारे मे लगा देलकइ। रामबाबूकऽ ई कथा ठीक बुझेलइन। आ ओ ओइ सम्भात व्यच्क्तकऽ गप्प बढबइ लेल कहलच्चथन। च्बबाहक खि च्कऽ अथथ्सामने िलाकऽ हैच्सइत पर च्नभथ्र करइत छइ। जेना तेना च्बबाह चाच्च ित भेल। घी कत हरायल, रहरी दाइल मे। रामबाबू एक टा संतानकऽ लेल पुरा

खथिकयलाह।

बबाह तभऽ गेल। मुदा रमन आ चयाकऽ सोि मे कतउ मेल नहि। चया बबाहकऽ सामाजक समझौता बस मानहि छलीह। समाजक रीत-चाजि कमजोरकऽ लेल होअइ छइ- ई हुनक मान्यता छल। समाजकऽ लेल रमन आ चया दम्पत्त मुदा असल मे दुनु अलग। रामबाबू सब देखइत बुझइत छलाह। अपन संतानकऽ जनहि त छलाह। ई भरोस छलइन जे सब ठीकभऽ जेतइ।

इमहर रमन MBBS केलाक बाद MD करऽ लागल छलाह। चया सेहो गैजुएशनकऽ संग स्ती शक्तकऽ एक्टविस्टभऽ गेल छली। ओ अपनाकऽ सेहो सामाजक चसिंगक्ताकऽ रूपाकार मानहि छलीह। हुनक कयेकटा रपोटथअमेरकाकाऽ जनरल मे छपल िकिल छलइन। मानिवकार पर आगुकऽ पढाइकऽ िलेल छात्रवित संग िजीफा सेहो भेटलइन। ओ अमेरका िइल गेलीह। ओतइ एकटा आर एशयाई मूलक लोक सऽ हुनक चीिर बालइ छलइन। आ बाद मे पढाइकऽ बाद दुनु संगे रहअ लगलीह। रमन सेहो MDकऽ बाद बडका अस्पताल मे कन्सलटेन्टभऽ गेलाह। नीक दरमाहा भेटई छलइन। आब रामबाबूसऽ मासक पाइ लेनाई छोडल देने छलाह। रमन आ चया दुनुकऽ माय- बापकऽ असलइत कमोबेश पता िइल गेल रहइन। उपाय की। जखन कखनो रामबाबूकऽ कनाया चयाकऽ फोन करथन त चयाकऽ पल्टल जबाब जे रमनकऽ छोडलकऽ ज्यो कनिो आर गप्प अइ त ओ कर। माय लग आर कनिो गप्प नहि छलइन। बहुत साहसकऽ क रमन, चया लग तलाकक पस्ताि पठेलाह, मुदा चया ईहो लेल तैयार नहि। दुनु परवािर लोकक व्यंग्य बान सहइत छल। चयाकऽ

रामबाबूकऽ धन सम्पत्तिक कऽ सेहो कनिो चिन्ता नहि। रामबाबू साल दु साल पर कन्याया संग अमेरिका जाइत । किछु समय बेटा संग बितबइत आ िपस चलि आइब जाइथ। ओ अपनाकऽ ई बेमेल विवाहक दोषी मानिथ छलाह।

बहुते आगह पर बेटा तलाक पर सहमति देलखिन आ रमनकऽ दोसर विवाह एकटा जुनियर डाक्टरसऽ भेलइन। रामबाबू अइ विवाह मे अपनहु शामिल भेलाह। रामबाबू रिटायरमेटकऽ बाद अपनाकऽ व्यस्त राखइ लेल एक टा पाईिट हास्पिटल जाय लगलाह । रमन सेहो नब जिनगी शुर करबाक लेल लन्दनकऽ अस्पताल जिइन केलाह ताकि इतिहास पीछा नहि करयन।एक टा गलत निर्णय दु परिवारिकऽ देश निकालाकऽ देलक।

अइ लेलकऽ दोषी। माय - बाप त नीके सोिइत अछि- संतानकऽ िस्ते मुदा ....होनीकऽ आगे ककर िललइ अछि।

खाली हाथ (बीहनि कथा)

रामबाबू पगतिशील गृहस्थ छलाह।दु टा बेटा छलइन। दुनुकऽ पढाइ बड्ड नीक नञि होइन, अपनाकऽ ओही लेल झोंईक देने छलाह। शहरक नामी स्कूल मे दुनु बच्चा पढलकइन। सोइ सकइ छी नोकरीक बिना सीमित आमदनीकऽ ई काज कतेक कठिन। इमहर उमहरसऽ जोर तोरकऽ क काज करय छलाह। सालो भरी अही मे लागल रहइ छलाह। कखनो बच्चा सबकऽ लकऽ शहर जाइत छइत त कखनोलऽ क अबइ छथि।हरदम जतरे मे रहइ छलाह आ खाली हाथे। कनियाया ओतेक सचेत नञि छलखिन जे ओहो कखनो असगर शहर चलि जइतइथ। आइ काल्हि त माय सबकऽ ई सौभाग छइ। मजबुरी कि शौक, से स्पष्ट नञि। कयेक बेर त रेलक टिकट किन्नंग मे रही गेलइन, तखनो बच्चा सबकऽ कहियो टिकट नञि होबऽ देलखिन। जुनुनी छलाह।

गाम- घर मे सब कहइन जे अपन अतृप्त इच्छाकऽ बच्चाकऽ माध्यमसऽ पुरा करइत छथि। सत जे हुआय। शहरमलाकऽ बाद दिल्ली विश्वविदालय मे बच्चा सब पढलकइन। बडका बेटा दोसरे पयास मे संघ लोक सेवा आयोग मे उतीणर्भेलाह आ IPS मे चयन भेलइन। रामबाबूकऽ तपस्या पुणथभेलइन। जे समाज मजाक उरबइत छलइन, आब ओकरा खातिर सबसं सफल लोक छथि। बेटा सेहो घरक स्थितिसऽ अवगत छलइन।ओ रेनिंग मे जाइते, रामबाबूकऽ छोट भाइकऽ पाइ पठबऽ सऽ मुक्तकऽ देलकइन। बेटा पर बडड कथा सब आब लगलइन। रामबाबूकऽ बेटा अनुशासित छल। रामबाबू सब बडका लोककऽ छोअइडकऽ सामान्य परिवार मे कुटमइती कयलाह। उनकर अपन दशथी छलइन

जे बेटाकऽ बिबाह अपनासऽ आर्थिक आधारसऽ न्युन मे करी त पुतोहु मान देत। सब ठीक ठाइल रहल छलइन। पुतोहुसऽ सेहो रामबाबू पुरा पसन छलाह। पाच छिक पच्चीष। बेटाक लगभग आदशथ बिबाहकऽ बाद आर बच्चा गेलइन।

अच्छा बीच मे ककर नजर लाइग गेलइ। रामबाबूकऽ बेटा जे कमला पुलिस कप्तानभऽ गेल छलाह, एक दिन लैण्ड माइन्स बिस्फोट मे घायलभऽ गेलाह। दिल्ली रेफर कायल गेलइन, मुदा बइच नहि सकलाह। अस्पताल मे जाबइत भती छलाह त मंती अधिकारीकऽ लाइन लागल छलइन। टीवि बला सब रामबाबू आ हुनकर पुतोहुकऽ हमेशा देखबइत छलइन। लोक सब इनका सबकऽ जानऽ लगलइन।

बेटाकऽ मृत्युकऽ बाद रामबाबू गाम आइब गेलाह। सरकारीआ गैर-सरकारी तरफसऽ बहुत रास पाइ उनकर पुतोहुकऽ खाता मे जमाकऽ देल गेल। पुतोहु जे काजक बाद नैहर गेलीह से फेर नहि अयलीह। रामबाबू उनका बजबऽ गेलाह मुदा ओ नहि अयलीह।उक्टा ब्शाकाइत। नैहर बाला सब उएह पाइकऽ हिसाब लगबऽ मे लागल। एक टा पेरोल पम्प सेहो भेटलइन। किछु दिनक बाद एक भलमानुषकऽ संग पुतोहुकऽ सेहो दोसर बिबाहभऽ गेल इन। रामबाबूकऽ कनिो खबर नहि। लोककऽ अनुसार, पाइकऽ लोभ मे ई बिबाह भेलइत अछि। बेटाकऽ यादकऽ अंतिम निशानी सेहो खत्मभऽ गेलइन।

जे रामबाबू बेटाकऽ मृत्युकऽ बादो साहस रखने छलाह से आब टुइट गेलाह। अधर्विक्षिप्त जेकाभऽ गेल छलाह। सरकारकऽ केहन कानुन जे माय बाप अप्पन सम्पत्ति बेटा पर न्योछारिकऽ

च्छअयह, ओकरा संतानकऽ सम्पच्चा मे कनिो भाग नचि। आच्चयक्ष च्मथच्चा त ततेक पातरभऽ गेलइन जे दोसरो बेटाकऽ सब छोअइरकऽ ापिस गाम आबऽ परलइन।

रामबाबूकऽ जीनि फेर खाली हाथभऽ गेलइन।

नबका धनमाक (बीहनि कथा)

रामबाबू (छद्म नाम) टुटल जमीदार परिवारसऽ छलाह। ओही समय मे गाम घर छोड़िकऽ महानगर अयलाह, जखन कि घरक आर्थिक अवस्था केहनो होइ, सरकारी कम्पनी मे नोकरीकऽ नीकसऽ नहि देखल जाइ छलइ।बाप कहलखिन जे आहाकऽ जेते पाइ ओ कम्पनी मिला देत, ओइसँ१०० टका बेशी हमही देब। सच मानिई ई छलइ चलन जथा- जर बेचिकऽ ही सब चालनिछु होअइत छलइ। मुदा एक टा टशन छलइ। सब होइतो रामबाबू जखनही बकसालऽ क गामसऽ बिदा भेलाह।ओ बुझि गेल छलाह जे ई हाथि-पानीसऽ चालनिछु होबऽ मिला नहि छइ।

अपमान अनुभवि अध्ययनकऽ आधार पर आगु बढइत गेलाह। एक तरहसऽ क्रान्तिकारी कदम उठेला। महानगर मे पहिने एक टा छोट घर, फेर बाद मे पैघ घर लेलाह। सामाजिक सांस्कृतिक काज सब मे सेहो सहभागिता छलइन। व्यवहारिक लोक छलाह। गाम समाज मे सेहो यश छलइन।

आब देखू बदलाव। दु टा बच्चा छलइन। बेटा IIT आ IIM केलाक बाद कमे समय मे ओइ पद पर पहुंचि गेलइन, जईसँओ सेहो निवृत्ति भेल छलाह। गौरवान्वित छलाह। बेटा अपने संगीसऽ अंतजातीय विवाहकऽ लेलकइन। पुतोहु, बेटोसँउच्च पद पर छलइन।DIG(double income group)भऽ गेल छलाह।आब सब कोई कोठी मे रहअ लागल छेलाह। भनसिया आ खबासिन दुनु छलइन। बेटा पुतोहुकऽ अलग अलग गाडी डाईवर छलइन। रामबाबू सपतीक अइ बदलल व्यवस्था मे डुबी गेल छलाह। जे कहियो काजबालीकऽ जोरसऽ बजबितो नहि छलाह से आब सब पर रौब

दाब करऽ लागल छलाह। अपनाकऽ आब स्टेटस िला बुझअ लागल छलाह। सब जगह नहि जाइत छलाह। बेटा सेहो पुरनका समाजसऽ पुरा कइट गेल छलइन। अंतजातीय विहि मे इ होअइ छइ जे ओकरा समाजक जर रत नहि बुझाइत छइ। यिनात लोकसऽ अबरजात छलइन। पुरनका लोकसऽ दुरीभऽ गेलइन।

आब देखू बदलइत बदलइत केहनभऽ गेलाह।नब दुनाया मे दुनु बेगत डइम गेल छलाह। बेटीकऽ विहि अपने समाज मे कयने छलाह। कतेक बरख बाद बेटी जमाय सब अयलइन। ओ सब खाबार सनेश अनने छलइन। रामबाबू ,हुनक कनाया आ पुतोह सब खुश भेल- सनेश देख क, मुदा बेटा ओ सनेश(टाई-चान) बलनकऽ सीधा िपसकऽ देलबन जे हम आब टाई नहि पलडइ छी। भाइ ई नहि देखलबन चक बलन भाइकऽ अफसर बुझकऽ कतेक शौकसऽ मंथनकऽ क अनने रहइन। रामबाबू आ हुनक कनायाकऽ अतेक साहस नहि जे बेटाकऽ चकछु बुझईबलान।सब हंसकऽ गप्प बदइल देलकइ। नौकर िकरकऽ संग रहबाक कारण भािना शुन्य सबभऽ गेल छलाह।

आब बेटीकऽ िपस अपन शहर जयबाक छलइन। स्टेशन जाय खाबार डाइिरकऽ फोन केलबन आ कहलबन चक एक गेस्ट आयल छथ, उनका काल ९ बजे स्टेशन छोड बाक अछ। बेटी ई फोन परहक गप्प सुइन लेलबन्ह। माय सेहो सुनलबन।घर मे िुपीभऽ गेल। माय माहौलकऽ हलुक करय लेल कहलबन- जे छथ, जेहन छथ, आहाकऽ बापे छथ, कतेक चन जीता, बडड उत्साह मे छलाह, की कहू।राइत भर बेटी परेशान, जे बाप एक आिज पर हाजर, उनका लेल हम गेस्ट कलयाभऽ गेलयइन।

अंत मे चाषकषथपर पहुंलिी चक ई चकछु नचि- नबका धचाकक नशा छइ।

बेटी माय मे की समझौता भेलइन, से ककरो नचि बुझल। रामबाबू सुतले छलाह आ बेटी सपचबिरि टैक्सी बजेली आ साते बजे भोर मे सबके सुतले छोचकS स्टेशन लेल चादाभS गेलीह।

चकस्मात (बीहच्च कथा)

ई ७०कऽ दशकक ब्बसस्सा अइछ। रामबाबू (छद नाम) जच्छया पटना विशविदालय पढअ गेल छलाह त हुनका बाबूजी (ब्पता) मोटरसाइचकल कीनकऽ देलच्छन। तच्छया ओ असकर छलाह क्लास मे जे मोटरसाइचकलसऽ अबइ छलाह। ओना बेशी दुर कालेजसऽ डेरा नचि छलइन। एकटा चदखाि छलइ , मोन मानयकऽ तैयार नचि जे ई चकजुलखि थिछइ। चकक्षी हीरो जेका देख मे सेहो छलाह, ओच्छने स्टाइल िला कपडा लता आ शौक। चसगरेटसऽ गोल गोल धुआं चाकालबा मे पारंगत। पाइ कतऽ सऽ अबइ छइ, से बुझबाकऽ फुसच्च ककरो नचि। पढाइ कहूना िलइत रहइन। BSc करइत करइत एक अच्चकारीकऽ कन्यासँचिि हि सेहोभऽ गेलइन।

जखइन कच्चाया सासुर बसलीह त असच्चाइत पता िललइन। इमहर रामबाबू सेहो घीि घाि किऽ MScकऽ लेलाह। आब पटना मे रहीकऽ की करताह।हुनक बाबु जीकऽ आरो चजम्मेदारी छलइन। बच्छनक चि हि, भाइ सबहक पढाइ आ दहेज मे आयल जमीनकऽ मोकदमा। सब मे खि खि। रामबाबूकऽ कच्चाया चाणच्च केलीह जे अइ जहाजसऽ चाकली। मुदा जायब त जायब कत। अतेक योग्यता नचि जे कोनो अफसरीकऽ नौकरीभऽ जाइ।व्यिसाय मे एक बेर हाथ पका िकल छइ, ताच्छ लेल इहो आप्सन नचि। दु टा संतान सेहोभऽ गेलइन अही बीि। रामबाबू अइ सबस अनच्चाज बाबू साहेब बनल पटना मे रही रहल छलाह।

कन्यायाकऽ नही रहल गेलइन। जखइन रामबाबू गाम अयलाह त सब पता लगलइन।आब अनुकम्पा पर नौकरीकऽ सेहो समय बितल गेल छलइ। तखनयो हुनक पिता अप्पन एकटा संबंधी आ अधिकारी , जे राजस्थान मे पदस्थापित छलाह,कऽ बेटाक लेल चिट्ठी लिखलखिन। रामबाबू ओतऽ गेलाह आ तृतीय श्रेणीमे नौकरी ज्वाइन केलाह। किछु दिनक बाद पदोन्नति सेहोलऽ गेलाह। ई नौकरीकऽ ओ मोनसऽ कइयो स्वीकार नहि केलाह। केना करतैथ, अखइन तकहक जीवनि डइसी मे बीतल छलइन। अवसाद मे रह लगलाह। अधिकारी सबसऽ लइड लइ छलाह। तखनो दुनु बेटाकऽ सबसं महंग कान्वेंट स्कूल मे पढेलाह। अप्पन अइ स्थितिकऽ लेल अप्पन बाबु जीकऽ जिम्मेदार मानऽ लागल छलाह। गाम घरसऽ पुणर्रूपेण कइट गेल छलाह। ई मानसिक अवसादक असर एक टा बेटा पर सेहो परलइन। पढाइ मे नीक रहलाहक बावजूद जयपुरकऽ स्विमिंगपूल मे बेटाक लाश भेटलइन।ई घटना पुरा तोइड देलकइन। ६ महीनाकऽ बाद मामुली जरबोखारसँरामबाबूकऽ निधनभऽ गेलइन।

समय खराब होइ छइ त चारि कात स। दोसर बेटा छोट छलइन। ओ जखइन BAकऽ लक त, अनुकंपा पर ओकरा नौकरी कन्याया दियेलकीन। जे पाइ सब भेटलइन ओ बेटाकऽ द देलखिन। किछु बरख त सब ठीक छलइन। बाद मे पुतोहुसऽ नहि बनलइन। हारऽ थाकि कऽ गिली रामबाबूकऽ कन्याया नहि। पेशन त भेटते छलइन। सरकारी कॉटेज त बेटाकऽ नामभऽ गेल छलइन।ओ किराया पर घर लेलीह आ बेटा पर केस केलीह। अतेक जल्दी फैसला थोडबे होइ छइ। आब ओत रहअ मे ठीक नहि बुझेलइन। नैहर सासुर सब जगह खबर कयलीह, कतउसऽ उत्साहजनक

ज़बाब नहि भेटलइन।

िपस पटना मे जई मकान मे रामबाबू चिदाथी समय मे रहइ छलाह, ओ मकान टुइटकऽ अपाटमेंट बइन गेल छलइ। मकान मालिककऽ परिवारकऽ सोलह टा मकान चारसा मे छलइ। रामबाबू ओइ परिवारसऽ सम्पकमे छलाह। ओही पुरनका संबंधकऽ मयादाकऽ आदर करइत मामुली चकराया पर रहबाक घर देलकइन। ओही मे रही रहल छथि। भाइ, देरि आ ननदि सबकऽ पटना मे आइकऽ समय मे घर छइन, मुदा मुंहछुआइनो चकयो रहक लेल नहि कहलकेन। ईएह चकसमत छइ।

प्रेम चौहि- नब पयोग (बीहन्नि कथा)

राम बाबू कहकलेल किील छलाह।किालतसऽ आमद नहुये बराबर। मकान चकरायासऽ बढ़िया आयबात आमदनीभऽ जाइत छलइन। खेत - पथार सेहो पयाप्त छलइन। गाछी सलाना बेि कऽ सेहो चीकिन पाइ आइब जाइ छलइन। छोट शहरकऽ बडका लोक छलाह। चौहि सेहो ओइ समयक सासदकऽ कन्यासऽ भेल छलइन। ईहो पचायि, पचासा बढेने छलइन।दु टा कन्या आ एक टा बेटा छलइन। पचािर मे सब चकयो एकसऽ एक सुन्दर। पाइ अपने-आप मे सुंदरता छइ। खायल पीयल घरकऽ सदस्यकऽ सुन्दरता दुरऽ सऽ देखाअ जाइ छइ। सुकुमार सब अतेक जे आंगुर घोइप चयउ त शोिआत बहरेबाक अंदेशा।एक टा बेटीकऽ बाबाह नीक दान-दहेज दकऽ पुरा शान शौकतसऽ क िकल छलाह। जमाय डाक्टर छलइन। बेटाकऽ पढबक लेल चदल्ली पठा देने रहइत।

छोट शहर मे बडका लोकक धीया पुता सब पढ मे लुचाये होइत छइ। इनकर छोटकी बेटी जहना पढ मे नीक, ओहना सुनर आ संस्कारी सेहो। मैचक मे चाला मे टौप केलाक बाद को- एड कालेज जाय लगलइन। पढाइकऽ दौरान एकटा संगीसऽ चकछु चीशेष दोस्तीकऽ जानकारी भेलइन।पहल लडका तरफसऽ छल। छोट शहर मे ई सब बात जल्दी फैलइ छइ।चाचयला मे पहने चीशेष दोस्तीकऽ कखनो सहषथर्सीकार नचि कायल जाइ छलइ।

रामबाबू सुलझल लोक छलाह। ओ एक चदन ओइ दोस्त जे एकटा

पोफेसरकऽ बेटा छल, कतऽ गेला। कहलच्खन जे हम आहा सबकऽ जनचि छी। आहा आगु पईढकऽ चकछु बइन जाऊ, हमरा आहाकऽ पचवारिसऽ संबंध जोडकऽ लेल तैयार छी। ई पस्तािि ओइ चविदाथी मे बडका बदलाि अनलक।अकर बाद ओ चविदाथी चमाशन मे लाअइग गेलाह। आगु बइढकऽ नीक पद पाप्त कयलाह। दुनुकऽ चववाह भेलइन। समपचत ओ चविदाथी िरीय पशासचनक अचधकारी छचथ आ रामबाबूकऽ कन्या जानल - मानल पतकार।

रामबाबूकऽ नब पयोगकऽ शहर मे खुब ओइ समय मे िाि भेल आ हुनक चाणथसऽ सिभाचवक आकषथकऽ सुखान्त मे बदलल गेल।

दही ािली बुढी (बीहन्ना कथा)

गामक अलग लोकाािर छइ। बयसक कानो बंधन नन्ह। ज्यो छइ त ओ संबंधक।दही ािली बुढी।ओकऽ छलीह। नन्हकअए अबइ छलीह। कतऽ सऽ अबइ छलीह। कन्नया एतीह। कखन जयतीह। नन्हकछु ककरो नन्ह बुझल आ ओइ पर अजीब ािपी। नन्ह कन्नयो अबइत देखन्नयइन आ नन्ह कन्नयो जाइत। तन्नया कारण नन्ह पता ािलल, आब हमरा जन्ताि ओ साझक बाद अबइ छलीह आ फरीाि होबऽ सऽ पन्नने ािइल जाइ छलीह- त कोना देखइतैत। तन्नया रहस्य छल। ओ बंगली पर बइसल भेटई छलीह। गोर धबधब, उज्जर साडी, ािमकइत आंईख आ छोटकी मोटरी संग मेएक मटकुर दही। हमरा उनकर संग नीक लागय। ओ हम सब बचािकऽ देखकऽ खुशभऽ जाइत छलीह। हमरा सबकऽ न्वसा सुनबइ छलीह। हुनकर सब न्वसा मे मा-बेटा, पुन्नस दुआरा न्नदोषकऽ पकरनाई, केस ािलनाई आ अंत मे जज साहेबकऽ न्नहाइकऽ फैसला, घर ािपस गेनाई, दही- न्नठाई बंटनाई रहइ छलइन।

२/३महीना पर ओ अबइ छलीह। उनकर आनल दहीकऽ सािद हरदम मोन मे रहइ छल आ उनकासऽ बेशी दहीकऽ इंतजार रहइ छल। पुछला पर कहइ छलीह- हमर महीस खाली हन्नयर घास खाइत अन्छ। ओकर देल दुधकऽ हम अलग तरहसऽ दही पऊरकऽ आहा सब लेल आनन्ह छी। नीक कोना नन्ह होइत। उनकर मोटरी मे ािडा, सतुआ सब खायकऽ ािस्तु रहइ छलइन। ओ घरबइया पर न्नभन्न नन्ह छलीह, तखनो खेनाई उनका लेल बंगली पर पठा देल जाइ छलइन। ओ ओत सुरन्नक्त राइत न्नतबऽ अबइ

छलीह।

ब्जजासा कयलाह आ कनफुसकी सुइनकऽ अतबा पता लागल जे दुरसऽ अबइ छथ्थ।इनका बडड जर जमीन छलइन।ब्दअयदी पब्लने ब्दिनी मोकदमा फेर कयेक टा फौजदारी।बुढीकऽ घरबालाकऽ ईएह मोकदमा मे हत्याभऽ गेलइन।बेटा छोटे छलइन। ताबइत ओ घरसऽ बाहर ब्जकललो नर्वि छलीह। बेटा जखइन पैघ भेलइन तखने ब्पताकऽ आरोपीकऽ हत्याभऽ गेलइ। पुब्लस सीधा ओकरा पकइडकऽ जेल पठा देलकइन। आब एकलौता बेटा हत्याकऽ मोकदमा मे जेहल मे छइन।ओ बेटासऽ तारीख पर भेट करय लेल अबइ छथ्थ। दू मटकुर दही(बेटाकऽ ब्पय)लऽ क अबइ छथ्थ। एक मटकुर बेटाकऽ द दइ छथ्थन आ दोसर हमरा सब लेल। तब्लया जेहल मे खेनाई ब्पनाई जाइ छलइ। उनकर बेटा दुआरे, सब हमरो सबकऽ डराबय उनका लग जयबा सं।हम सब तइयो जाइ। कखनो डरक भा मोन मे नर्वि आयल।

कब्लयो ओ बड खुश रहइत आ कब्लयो गंभीर।

उनका पुरा उम्मेद छलइन जे बेटाकऽ ब्बहाइभऽ जेतइन।जी निक उदेश्य सैह छलइन। बडका किील सेहो रखने छलीह।ब्बस्साकऽ लब्बोलुआब उएह जे ब्जदोष बच ाकिऽ ब्बहाइ ि ओकरा संग मायकऽ घर िपसी।बाद मे उनकर अयनाई बंदभऽ गेलइन।

पता िलल की बेटाकऽ आजन्म जेहलक सजाभऽ गेलइ आ भागलपुर जेहल पठा देल गेलइ।उनकर मुस्की संग ब्बहाइ िला ब्बस्सा आ दही, दुनु ओब्लना स्मृब्ता मे अछ्छ। पता नर्वि ओइ फैसलाकऽ ओ कोना सामना कयलीह।

भुत- बंगला (बीहनि कथा)

सब भुत- बंगलाकऽ सचिनाथ इतिहास रहइ छइ। कनियो ओकरो िला-िली छलइ। आइ धरि कियो देखऽ बाला नहि। जेकरा जे मोन करय छइ, से बंगलासऽ उठा कलऽ जाइ छइ- ठसकबाजी संग। एना धरि अएभऽ गलइ। धरि कियो साझो देबऽ बाला रहितइ त भुतबंगले नहि कहइतइ।

अइ बंगलाकऽ मालिक बिहार सरकार मे मध्यम स्तरकऽ अधिकारी छलाह। हुनक बाबूजी सेहो असगर, आ ओ सेहो असगर भाइ छलाह। बाधिक बडकी टा चदअयदी। सरकारी अधिकारी बनला पर धिनको खास मोजर नहि देलाह। अपनाकऽ अंगेज सरकारकऽ अधिकारी जका बुझइत, मुदा चदअयद सब इनका धिकछु बुझइत नहि। अधिकारी छलाह त कियो विरोध खुइलकऽ नहि करयन, साथो नहि दइन। ओझा खाबिार गामबला बताह, आ गामक लेल ओझा िला बथिया।

सबसं हइटकऽ बंगला, पोखरा-पाटन सब बनेला।गामो मे अंगेज िला टोप आ भर आ सिगरेट पीबइ छलाह। मौका बेमौका सिगार सेहो दइ छलथिन। अतेक शानसऽ रहनाई, कतेको लोककऽ परेशान करय छलइन।एक टा बेटा आ बेटी छलइन। बचि मे तीर-धनुष खेल मे इनकर बेटाकऽ तीर बहिनकऽ आंखि मे लाइग गेलइन। बेटीकऽ एक टा आंखि पाथरकऽ लगाबल गेलइन। बेटा तखने शपथ खेला धरि ओ डाक्टर बइनक बहिनकऽ आंखि बनेताह।काल कमेण बेटा डाक्टरभऽ क अमेरिका िइल जाइ

छइन। पुतोहु बाहारक एकटा स्टेटक बेटी छलइन।न ऊधो को लेना, न माधो को देना। बेटी पोफेसरभऽ गेलइन, मुदा अविवाहित।अपन सम्पत्तिाकऽ बेटा-बेटी मे बराबर बटलाह आ बेटीकऽ बाबस बनेलाह। ततेक पगतिशील छलाह जे कियो इनकर कन्यादान मे मध्यस्थता केबे नहि केलकइन। बहुत बाद मे बेटी अपने बिबाह केली, मुदा बिबाह नहि टिइल पेलइन।संबंध समझौता छइ, ई कियो बुझबे नहि केलकइ।अइ बिबाहसऽ एक टा बेटा भेलइन। ई बचि नाना लग रहइ छलाय। एतऽ तक सब ठीक।

कयेक बरख बाद बेटाकऽ मातृभूमि पेम जगलइन आ ओ गाम अयलाह। बाबुजी- बहिनकऽ आगह पर नजदीकी शहर मे नर्सिंग होम खोलनाईकऽ निर्णय कयलाह।विधाताकऽ किछु आर मंजुर। गाम आयल छलाह, किछु जमीनक विवादि सेहोभऽ गेल छलइन, हृदयाघातसऽ परलोक टिइल गेलाह। पुतोहु पुरा पोस्टमार्टमकऽ विडियोगाफी (जे अमेरिका मे मेडिकल क्लेमक लेल जरुरी छइ) करेलीह आ जे अमेरिका गेलीह, घुइडकऽ नहि अयलीह। उतराधिकारी बेटियेकऽ सब बुझइन।आब बाकी दिअयद सब ऊछनर मनिाई शुर केलकइन। असगर सबहक सामना करय छलाह। बेटाक मरलाक बाद बरखक भीतरे अपनो सगिथविधाइड गेलाह। बेटी पोफेसरीकऽ नौकरी करयथ या नैहरक झंझट सब देखइत। बेटा सेहो लायक नहि भेलइन। समस्या से जुझइत संघषशील बेटी बाद मे विडविडा आ अिसादक पिट मे आइब गेल छलीह। अही स्थिति मे जाल्ह कालेजकऽ कोटिया मे रहइ छलीह, ओतइ एकराइत सुतले रही गेलीह। ओतुके समाज दाह-संस्कार करेलकइन।गाम मे कतेक दिनक बाद लोक बुझलकइन जे हुनक

मृत्युभऽ गेलइन। बेटा लापता।

आब भेल गामक खेल। कतेक केयरटेकरभऽ गेलाह।जे कियो ओही बंगला मे गेलो नहि छलाह,आब ओइ पर खुटा गाइड देलाह। सब चिकअयदी दार्दार सब पहिने अन्हार मे, बाद मे दिनदहाडे समान सबलऽ जाय लगलाह। अंत मे खिडकी केबार तक सबलऽ गेलइ। आब ओ बंगलासऽ भुत बंगलाभऽ गेल छइ। बच्चा सब ओइ परिसर मे खेलऽ जाइत छइ त माय कहइ छइ जे ओइ मे नहि खेलाऊ, ओतऽ भुत रहइ छइ। आब ई भुत बंगला कहाइत अछि।

मध्यस्थ (बीहन्ि कथा)

रामलाल गाम मे धाही बाला लोक छल। बाबू भैया बाला गाम मे लिती ओकरे। च्किनको पाइ ाही, रामलाल। जमीन बेबिाक हो, रामलाल।रोपनी- दौनीकऽ लेल जन ाही, रामलाल।जमीन भरना रखबाक काल, रामलाल।दुध-दहीकऽ काज जग परोजन मे, रामलाल। बच्ियाती मे खबास मे खास दरबार मे, रामलाल। जमीन बंटाई देबकाल, रामलाल। गाछी बेिऽ काल, रामलाल।घरहट लेल, रामलाल। माच्िलक कहइ लेल कयेक लोक, मुदा मनेजर सबहक रामलाल।

कपडा लता ओकर साफ आ किकि, च्कियो माच्िलकसऽ कम नच्ि, बेच्सिये कहू। कखनो ओकर िहरा मच्िलन नच्ि।सबहक समस्याकऽ समाधान ओकरा लग। कतेकोकऽ बेटीक च्बियाहक लेल पाइकऽ व्यवस्था ओ कयने छल गाम मे।ओ गामक धुरी छल। सामाच्िजक समरसता मे ओकर बडड योगदान। ओना ओकर समाज, पीठ पाछु च्बिनान्श्ा करय, मुदा पभाि मे किनो कमी नच्ि।ओ मनाकऽ दइ त च्कियो जमीन बटाई लेल तैयार नच्ि। पंिइती मे अहम स्थान। ुनाि कच्ियो नच्ि लडल,लेच्किन मुच्बियासऽ बेशी दम। पाटी-पॉच्िलच्टक्स मे बेशी च्दिलच्स्पी नच्ि, लेच्किन हंसुआ गेहूंकऽ भीतच्िया समथच्क। अपान बेटाकऽ ओ पढा च्लिखाकऽ मनुक्ख बनबऽ ाहिइ छलाय। ओकरा अनुसार ओकर समाज गरीबी, अच्शिक्ष आ नशाक कारण मनुक्ख नच्ि अच्छि। ओ बेटाकऽ बाबू भैया संग रहइ लेल कहइ छल।

जाबइत ओ लोककऽ जर रत छल, महत्व छलइ। बाद मे बाबू सब अपने नौकरी खातिर गाम छोड़लक, महानगर ओगरऽ लगलाह।खेती अपने केनाई या त लोक छोड़ि देलक या हुंडा परदऽ देलकइ।खाली बइसल गाम मे सब पोपटी डीलरभऽ गेल।ओकरो समाज मे सब बाहर निकइल गेल। ककरो ककरो बात मानि लेल राज़ी नहि। सब कहइ जे रामलालकऽ सब डील मे ककरो भेटई छइ तखने नील- पीतनोपाल िला धोती कुता मेनटेन करइत अछि।

रामलाल देहसऽ कहियो काज केलक नहि। बी पी एल, ए पी ल, लाल काडश्च मनरेगा तहिया छलइ नहि। एके बेर मनेजरसऽ ओ मजदूरभऽ गेल। घरामीकऽ काज मे शम कम छइ।बयस बढला स, देह से हो खइस गेल छलइ।सैह काजकऽ क पेट पोसई छल। बेटा सेहो जेकरा बडका सब स्वीकार नहि केलकइ आ ओकर समाज मोनसऽ अपनेलकइ नहि, नशा करऽ लागल।ठीक जखइन रहय त राज मिस्त्रीकऽ काज करय। संगहकऽ सभिा ओकर समाज मे छलइ नहि, एहन स्थितिमा ओकरभऽ जेतइ से ककरो सोिबो नहि केने छल। बाद मे लोक ओकर पुरान दिनक यादकऽ क ककरो भलमानुष ककरो काजदऽ दइ। रामलाल ततेक स्वाभिमानी छल जे कहियो ककरो नकोसऽ ककरो मंगलक नहि। गुमनामी मे अहिना िइल गेल दुनिया सं। मध्यस्थक भुमिका समाज मे खत्म भेलाक पछाति स्वाकार रामलालभऽ गेल।

गामक माइट नसीब नहि (बीहनि कथा)

किछु लोक हर हालात मे खुश रहइत अइछ िहे कतबो परीक्षा भगिन लेइथ। ओही मेसऽ एक छलाह रामबाबू। जखइन होश सम्हारलाह त सात टा दुध दइत महीस छलइन, मुदा घर मे िाऊर नहि। बग्घी सजल दलान पर, लेकिन घोडा बुढायल। जमीन पर असामी सबहक कब्जा, किछु उपजादऽ दइ-ओकर मरजी। कहक लेल बािन बीघा मे पुदिना, असलमे इत किछु आर। माय-बाप दुनिया क सामना करबाक लेल अफीमक सेिन करऽ लागल छलखिन। कहक लेल सब किछु अप्पन, लेकिन अपनापन किनको मे नहि।

ई अपनापन भेटलइन मौजे पर जे िमाइन खबासिन छलइन, ओकर बेटी सं। अपन गामसऽ बेशी, मौजे पर रहअ लगलाह। एक कान, दु कान, धीरे धीरे लोक बुझि गेलइ। रामबाबू एक बेर बियाह घुरायल सेहो गेलाह अही िमाइनक अपनापनक हल्ला कारणे। फेर दोसर गाम मे बियाह भेलइन। सचि ाईसऽ दुनु संबंध निभेलाह। कतबो संबंधी सब कहलखिन गाम छोडि शहर आऊ, नहि गेलाह। जीना यहा मरना यहा- कहथिन

किछु समय बदललइ त नाम गामक लेल मौजे परक सब जमीन बेिकऽ बस किनलाह।बससऽ नाम त भेलइन, लेकिन घाटाक सौदा भेलइन। एक टा फायदा भेलइन जे बस मालिकक कौनो बस मे चढकसकऽ पाइ नहि लागइ छइ, जाबइत जीलाह, फी मे

घुमलाह आ बइसऽ कऽ सीट सेहो भेटलइन।

उनकर बोली बानी एहन मीठ, जे लोकसऽ हमेशा च्चारल रहलाह। कतबो भाग्य बाम भेलइन, संयम नचि छोरलाह। कच्चयो चकनकोसऽ च्चच्चयाकऽ नचि बजलाह। पाइकऽ काज त पाइये करतइ। आमदनीकऽ जचया छलइन पुश्तैनी जायदादकऽ उलटफेर।दोसरोकऽ जमीन गोलकऽ दइ छलच्चन।भोजभातक चकरीसतक एकसपटथछलाह। धन घटइत गेलइन, मान मे कचयो कमी नचि।ई सब भेल उनकर बोली बानीक कारणे।चकयो िणक्य कच्च देन त च्चारच्चतभऽ जाइ छलाह। बेटा सब पढी च्चखीकऽ बाहर िइल गेलइन। रामबाबूकऽ कतबो कहलकइन, नचि गेलाह। गामसऽ एहन लगाि। अपन शाि कि पाइ आ पुरच्चतक दचकणा सेहो अलगकऽ देने छलाह। संस्कारक लेल जमीन अलगसऽ रखने छलाह जे बेटा सारा पर मंच्चर बनौताह।

समयक ि कि देच्चयउ। मृत्युसऽ चकछु च्चन पूिथिबेटा ईलाजकऽ नाम पर अपना लगलऽ गेलइन। ओतइ दाह-संस्कार आ चकया कमथकेलकइन। गाम मे जे रामबाबू जमीन अपन चिताचा खाच्चार रखने छलाह, बेटा बेि लेलच्चन्ह।अकरे कहइ छइ माईटो नसीब नचि। जे गामक संबंधकऽ भइड जीबन चाभेलाह उनकर अंत एहन।

मुडनक केश (लघुकथा)

रामबाबू भारत सरकार मे पैघ पदसऽ सेवानिवृति भेलाक बाद दिल्ली मे रही रहल छलाह। किछु दिन पूर्व दिल्ली मे उनकासऽ भेट करऽ गेलौ। बड खुश भेलाह। हुनक धीया- पुताकऽ हाल चाल पुछला पर ओ त मौन छलाह मूदा हंसैत हुनक शीमती जी जे कहलीह से अहुं सब सुइन लिअयअ।

ववस्सा आगु बढाबऽ सँपहिने हुनक घर परिवारिकऽ बारे मे कनी बुइझ लिअयअ। रामबाबूकऽ तीन टा बेटा छलइन। जेठ बेटा कनेक बेशी पगतिशील छलखिन। ओ पहिने विवाह इन, बाद मे अपनासऽ संतान नहि करबाक निर्णय लेलाक बाद सम्मिलित जीवन अलग रहीकऽ बितबइ छथि। दोसर बेटा विदेश मे रहइ छलइन आ ओतइ सडक दुर्घटना मे अकाल मृत्युभऽ गेलइन। तेसर बेटा जे डाक्टर छलइन,के जल्दिये नीक कुल-शील देखकऽ मैथिल परिवार मे विवाह करा देलखिन।

तेसर बेटा - पुतोहु संगही रहइ छलइन।एक टा पोता सेहो भेलइन। सब दुख बिसइडकऽ रामबाबू पोता संग खुशीसऽ समय बितबइ छलाह। की भेलइ, से ककरो नहि बुझल, एक दिन छोटका बेटा कैरियर आ नीक मौका बताकऽ बम्बइ सपरिवार जायकऽ अनुमति मंगलाह।घर मे मातम जेका हाल भऽ गेल छलइन। हारि कऽ

रामबाबू पचनस्थबासऽ समझौताकऽ क अनुमबादऽ देलथ्बन। फोन पर पोतासऽ भोर साझ गप्प सप्प होअइत छलइन।

एक दिन पुतोहुकऽ फोन सासकऽ एलइन जे मुडनकऽ नीक दिन तका दइ लेल। रामबाबूकऽ कनाया तुरंत पचाइत जीकऽ बजा क, तीन टा दिन तकाकऽ पुतोहुकऽ बता देलथ्बन। आब रामबाबू सब तैयारी मे लाइग गेलाह चक फला फलॉकऽ बजेबइ, एना भोज करब...। मोने मोने चास्ट बजट सब बना नेने रहइत।

रोज दुनु बेगत मे घमथथा होइन जे ओकरा बजेबइ। ओकरा नचि। फलाकऽ मूंहछुआन कही देबइन।ओहो तऽ जनऊ मे अहीना कहने रहइत। रोज दुटा नाम जुडइन आ एक टा कटइन। चकछु अपन लोककऽ ओचना नोतोदऽ देने छलथ्बन।अपन सोइि सोइि कऽ राम बाबू दुनु बेगत रमन ि मिन करइत छलाह। कनाया जखइन तखइन कहइ छलथ्बन जे आहा बेशी मधुर नचि खाय लागब। हम त पाहुन मे व्यस्त रहब आ आहा अपन मौका सुतारऽ लगइ छी। ि िनी आहाकऽ बहुत बढल अइछ। राम बाबू कहलथ्बन जे पचल पोताकऽ मुडन होइत आ हम मधुर नचि खाई, से नचि भऽ सकइत छइ।

कनाया बजलथ्बन- बेशी नचि खायब।

अंत मे दुनु गोटे मे समझौता भेलइन जे एकटा भोर आ एकटा साझ मधुर खेताह।

रामबाबूकऽ कन्यायाकऽ तऽ िनीकऽ बीमारी नि छलइन। ओ कहलखिन जे हमरा मधुर खाइत देख कऽ आहा डेकसी नि करऽ लागब।

अहिना गप सरका दुनु मे होइत रहइ छलइन। जे बाजा भुकी बन भऽ गेल छलइन, से कतऽ दन बला गेलइन।

जखइन मोन नि लगइन, मुडनकऽ िि शुर कऽ लइ जाइ छलाह।

अही बीि बम्बइसँपुतोहुकऽ फोन सासकऽ एक दन अयलइन जे मुडन िला केशकऽ केना भसबल जाइ छइ ?

सुनीकऽ दुनु गोटे स्तब्धभऽ गेलाह। सास, पुतोहुकऽ विधि बता देलखिन।मोनक मनोरथ मोने रही गेलइन। पोताकऽ मुडनकऽ मनोरथ।

ई सब कहऽ मे कन्याको रामबाबूकऽ कन्यायाकऽ िहरा मलान नि भेलइन। हंसते कहलाह- ईएह हाल छइन। आब की गामबाली आ की भदेश। सब एके। कहकऽ ठहका मारलाह।

कन्यादान (लघुकथा)

आइ फेर मुरली बाबूसरक घर मे मातम बला हाल छइन। सब िप। शात बैसल।एना बुझाई जे बकयो मइड गेल छइ। मरला पर तऽ बलाप होइ छइ, आ बलाप िपीकऽ कटने घुडइ छइ। अतुका िपीकऽ कोनो थाहे नहि लगइ छलइन रामजी बाबु के। आन बेर घर मे घुसते देरी सब धीया-पुता गोर लगइ छलइन आ घेर कऽ बइस रहइ छलइन। अइ बेर बकयो गोरो लागऽ नहि एलइन, बइसऽ कऽ बात त दुर। मोन भेलइन जे एखने घुइड जाय के।फेर बान कारण जनने घुरनाई उचित नहि बुझा परलइन।ओसारा परसँएकटा आराम कुसी अपने घीिला आ बइस रहलाह।

रामजी बाबु संबंध मे मुरली बाबूसरक ससुर लगइ छलथिन। दुनु गोटे एके शहर मे काज करय छलाह, तै अपेक्षा बेशी रहइन। गाम सेहो दुनुकऽ लग पास छलइन तै अबरजात बेशी। कनी काल मे मुरली बाबूसरकऽ कनाया सचिता, जे रामजी बाबुकऽ भतीजी भेलथिन, भीतरसँएलीह आ पैर छुईब कं गोर लगलथिन। खुब सौभाग्यवती होऊ-के आशीिद रामजी बाबु देलथिन। भतीजीकऽ नोरसँडबडबायल आंईख देख कऽ बुझा गेल छलइन जे ओ हदय मजगुत कऽ कऽ एलीह अइछ। कनी काल मे बचि लोटा मे पाइन अनलकइन। धीरे धीरे माहौल हल्लुक भऽ रहल छलइ। रामजी बाबु खेहल मेहल लोक छलाह तै अपने बजबासँबेशी सुनबा पर जोर देने छलाह।एहन वातावरण मे मोनक भरास बाकलऽ कऽ

जगह देने छलाह।

दु घंटाक करीब बीत गेल छलइ। रआबजाक ललका शरबत पी िकल छलाह। आब िह बइन रहल छलइन।सब बात खुइल कऽ सोझा आइब िकल छलइन। मुरली बाबू सर अपन बेटीक कथा बात थर कऽ िकल छलाह। टकाकऽ बानतीकऽ दसे बद्धन बािल छलइन। जमीन बेिऽ गाम गेल छलाह। ओतऽ औने पौने दाम पर लोक जमीन लेबऽ िहइ छलइन। सब खगता बुझ्झ गेल छलइन।अही जमीनक भरोसे ओ होबऽ बाला कुटुम्बकऽ पाइ गछने छलब्बन। आब त सब गडबडा गेलइन। पोवीडेट फंडसँसब पाइ गाम मे जनऊकऽ मे खिथकऽ िकल छलाह। ततेक ने लंफलंफा गऊंआ सब कऽ देने रहइन जे अखनो हथपईि बिले छलइन। बाकी जे रहल सहल छलइन से बचि सबहक पढाइ आ बेटीकऽ कथाकऽ दौरहट मे गंि िकल छलाह।

मोन बाजाजसँमुरली बाबू सर अपनाकऽ छोट नवि बुझई छलाह।बकरानीकऽ नौकरी रहतो, धीया पुताकऽ अंगरेजाया स्कूल मे पढेलाह। कन्हयासँसुनवि छलब्बन जे जमाना बदलऽ बाला छइ। नीक पढल लखल बुर्चीकऽ बायाह मे आब गनऽ नवि पडतइ।ओ बेटा-बेटीकऽ कन्हयो दु रंग नवि केलाह। उनका कनाया काकी कहबो करय छलब्बन जे बेटीकऽ पढाइ पर अतेक पाइ बकअए फेकइ छह। सरकारी स्कूल मे नाम लखा दहक आ ओइ पाइकऽ जमा करह। गीनती काल काज एतह। मुरली

भ्आसरकऽ तक्ष्या ई बात बुझ्वयाकऽ फुंक्स लगइ छलइन।कहक्ष्यन- "काकी सब अपन अपन भाग लऽ कऽ अबइ छइ। जमाना बदइल रहल छइ। पक्ष्ने बरागत, कन्यागतकऽ पाइ दइ छलक्ष्वन। फेर क्ष्न बदललइ आ कन्यागत, बरागतकऽ पाइ क्षानऽ लगलक्ष्वन। आब फेर क्ष्न घुरतइ, बरागतकऽ क्षानती करऽ पडतइन।"

ई त छलइये जे क्ष्कयो क्षानय, क्षानती हेबे करतइ। मुरली भ्आसरकऽ पुरा भरोसा छलइन जे अपन बुच्चीकऽ ओ नीकसँपढेला क्षखेला अइछ, ऊपरसँघरो नामी छइन, कुल-शीलकऽ त कहबो नक्षि करी, सब बडका घर मे कुटमैती, तै कथा मे क्ष्कत नक्षि हेतइन

सब गलतफहमी धीरे धीरे दूर भऽ रहल छलइन। सब जगह बोली लगइ छलइ। कोनो ने कोनो कारणसँई हुईस जाइ छलाह। कतउ ससुर अफसर नक्षि होबाक कारण, त कतउ पाइ कम गनबाकऽ कारण, कतउ दुर होबाक कारण त कतउ लग होबाक कारण, कतउ शहर मे पढबाक कारण त कतउ महानगर मे नक्षि पढबाक कारण, कतउ बेशी पढल होबाक कारण त कतउ कम पढल होबाक कारण, कतउ क्षक्शासँजेबाक कारण त कतउ मोटर मे जयबाक कारण।

अइ क्षथत मे एक जगह मोन मना कऽ कथा क्षथर केने छलाह। पाइ कौडीकऽ बेबसथा लेल गाम गेल छलाह- ओतऽ सब

अटकऽ पट भऽ गेलइन। दु ाइर संबंधी लग हाथो पसारलाह, ओतउसँखाली हाथ भेटलइन। आब बलि छलइन ई शहरक "घर"। बडड शान आ शौकसँमुरली बाबसरक बाबु ई जमीन कीन कऽ घर बनेने छलखिन। पुरना घर त कच्चि ा माइट आ भीतक बनल छलइन, जकरा कालक्रमेण पका ईटा मे मुरली बाबसर अपन कमाइसँबदलबेने छलाह।

घर पर पढल लिखल गुणल बुच्चीकऽ देखइ छथि। ककरो संग हाथ तऽ नहि पकडा देथिन। मुरली बाबसरकऽ घर मे घुसते आंगनसँपुछलखिन जे भऽ गेल होइत पाइक बेबसथा।

ई सुनते सऊंसे देह मे आइग लाइग गेलइन- "गाम मे सब मौकेकऽ ताक मे अइछ। माइटक मोल सब माइग रहल अइछ। उपरसँबंटािरा ािला कागज मे सेहो किछु कमी छइ। जेकरा दु टकाकऽ औकात नहि, ओहो बाबंग आबंग देखा रहल अइछ। सब गामक घर घरारी बेि लेब तखनो बानतीकऽ पाइ नहि पुइड रहल अइछ। "

फेर ीकिरइत बजलाह-" की कहयई। बुच्चीकऽ माइड बद अय। जहर माहुर खुआ बद अय।"

बुच्ची दोसर घर मे बाछान पर जा कऽ कननहि त पइड रहलीह।

सबता एक बेर घरािलाकऽ देखऽ जाइत छइथ,फेर दोसर

घर मे बेटीकऽ सम्हारऽ जाइत छथि।

ि‍ार तरफ अन्हार देखा रहल छलइन। कतउसँकोनो बोल भरोस सेहो नहि। नैहरे सासुर सब लेल बेटीकऽ माय भेने " अछोप" भऽ गेल छलीह। सब एनाई गेनाई छोड़ि देने रहइन। लोककऽ डर होइ छलै कही बियाह मे पाइ ने माइग लइस ि‍ा कतउ जायकऽ तऽ नहि पइड जाय।

एहन समय भऽ जेतइ से सचिता सपनो मे नहि सोि‍ने छलीह। तीन भाइकऽ एतऽ राईख कऽ पढने छलीह। ि‍ाइर टा देि‍र अतइ पईढ लीख कऽ आइ पाइ बला बनल छइथ। ई सत छइ जे घर साबिकक छइ, मूदा बाकी सब खि‍थित उएह करय छलीह।

आइ देखू चिकयो झाबियो पारऽ नहि अबइत अइछ। बुझाइत छइ जे बेटीकऽ जन्म देने दोषी भऽ गेलीह। आइ रामजी ककाकऽ देख कऽ सचिताकऽ कोढ फाइट गेलइन। कहलथिन - "सबहक बेटीकऽ बियाह होइत छइ,हमर बेटी की कुमाईरे रहत। आहा हमर भाइ सबकऽ कहियो देबइन जे उनका सब लेल हम मइड गेल छियइन।"

रामजी बाबु कहलखिन- "आइ तक की एहनो भेलइ अइछ। बियाह, जन्म, मरण सब उपरसँ लिखा कS अबइ छइ। घबराऊ नहि, कन्यादान हेबे करतइ।" बोल भरोस दS कS ओ बिदा भेलाह। फेर अपन गाम मे सबिताकS भाइ सबकS जिम्मेदारीकS अहसास दियेलखिन।

अइ बीच मे समय पर पाइक जानती नहि होबाक कारण स्थिर भेल कथा गडबडा गेलइन। सबिता बडड दुखी भेलीह।

सबिताकS भाइ सबकS बहिनक घरक स्थितिसथबाकS जान नहि छलइन।उनका सबकS ईएह बुझल छलइन जे ईएह सब मीन मेख लगाकाइल कS कथा स्वीकृत नहि करय छइथ। आब सब अइ विषय पर अपन जिम्मेदारीकS संग फुजाये सही, गंभीर भेल।

अही बीच मे बगलेकS गाम मे एकटा सेनाकS अधिकारी लडकाकS कतउ बियाह स्वीकृत भेल छलइ। लडका छुटी लS कS गाम आइब गेल छल।कोनो कारणसँलडकी बाला ई कथासँमुकइड गेलइ।आब सेना अधिकारीकS घरबिला सब नीक कथा ताकS लागल। कोनो तेहन कथा नहि भेटलइ। छुटी खत्म होबS बाला छलइ। हाइरे कS मुरली बिसर कतS कथा पठेलकइन.........दस दिनक भीतर बियाह दान भेलइ आ बर-कनिया नब जिनगी शुर करबाक लेल अतS सँबिदा भेल।

सचताकऽ आब कहबी पर पुरा चासिस भऽ गेलइन- चायाह, जन्म आ मरण उपरेसँ चलखा कऽ अबइ छइ।

अइ कन्यादानसँउनका सर समाजक असली िहरा देखबाक अनुभि भेलइन। जाबइत काज नि पडइ छइ, सब नीके रहइ छइ।

आइ फेर रामजी बाबु आयल छथ। ललका शरबत पी िकलाह। मुरली कासर,सचता आ बिल पाहुन परख सब उनका घेर कऽ बइसल छइन। िह जलखइ सब आइब रहल छइन। हंसी ठहकाकऽ फुलझडी सब छुइट रहल छइ। रामजी बाबुकऽ याद पडई छइन जे एकटा ओ मातम बाला चन छलइ आ एकटा ई चन छइ। बजलाह- " सब चन एक ना होत हो रामा।" जीतल काज चान पाइये भेलइन।

कनाया काकीकऽ मुरली कासरक गप्प आइयो मोन छलइन- सब बचि अपान अपान भाग लऽ कऽ अबइ छइ। एहन नीक कथा मुरली कासरकऽ हेतइन, से सब अिमात अइछ। ईएह छइ "कन्यादान"।कहक लेल दान, ई त अइछ जीनिक असली जान।

<u>पछताि (लघुकथा)</u>

आइ पुरा डीह टोल मे िहल पहल छइ। नरेन बाबुसरक पोता महेद्र विदेशसँआइब रहल छइन। ओ गाम मे कुलदेिीकऽ पातइड सेहो देतइ। सब इंतजाम बात भऽ गेल छइ।ओ पन्डितजीनेहेसँकन्याया काकीकऽ बेटाकऽ बैक एकाउंट मे पाइ पठा देने छइ। आब देरी छइ त बस ओकरा पहुंिबाक।भइड डब्बुक तसमई बनल छइ। पुरी छना रहल छइ। रसगुल्ला पन्डितजीनेहे बजारसँआइब गेल छइ। कयेक बेर लोकककऽ चानती भेल छइ। सब मुडी पाछु दु टा कऽ रसगुल्ला आयल छइ। जडदा आम सेहो कटा कऽ राखल छइ। थोडे काल पन्डितजीने फोन आयल छलइ जे ओ पहुंिऽ बाला अइछ।पुरा हुइल माल मिल छइ। चाकयो ओकरा देखनेहो नचि छइ। फेसबुक पर चाकछु लोक देखलकइ आ िटिसएप पर गप्प सडका भेल छइ। मऊगी महाल मे बेशी बेगरता छइ।

कोइलख िीली कहलचकन -उनकर कन्याया सेहो संग छइन।

ओइ पर धमौरा बाली चटपलचकन- ओ तऽ आन जाइत छइ।

रानीपुर िीली कहलचकन- आहाकऽ त सब बुझल अइछ। कन्डितयो भेटो भेल अइछ? बजेबो केने छल?

धमौरा िाली - हमरा चकअए बजैत। हम तीन मे की तेरह मे। चानकासँअपेका रहइन, ओ ने जेताह। हम त जे सुनल से कहल। हमरा तीन पाि नचि रहइत अइछ। चकनको नीक लागय त लागय, अधलाह लागय त सेहो हमरा नचि परािह। दु कौड अपना घर मे ओ बेशी खेतीह।

जबदौल िाली बजलीह- छोडु ई जाइत आ अनजाइत बाला गप्प। गाम मे त आब अनजाइत कचाया सब आइब गेल छइ। ओ सब तं सद चदेश मे रहइ छथ्य। सबचना बाहरे बाहर पढई आ रहइ गेलाह। आब की कोनो घर बाि‍ल अइछ। रामजी आ सीताजीकऽ की एक जाइत छलइन?

बस शुर भऽ गेलइ। सब गामक अही तरहक चर्ािह आ नबकी कचाया सबहक िाि।चकयो आटा साइन रहल अइ, चकयो परथन दऽ रहल छइ, चकयो मैन मे कंजूसी नचि करबाक लेल कच्ह रहल छइ, चकयो पुरी बेल रहल अइ, चकयो चाटी बना रहल अइ, चकयो पुरी छाइन रहल अइ। सऊंसे टोलक स्तीगण अपने लागल अइछ। आचबर ईएह खानदानक लोक आइब रहल छइ।कचाया काकी सबकऽ थम्हने छथ्य।

ताबेते मोटरकऽ हानथबजलइ। सब माथ पर नुआ लइत दलान द्वश लपकल।

देखते अंदाज लाइग गेलइ जे महेद, उनकर कनया आ कोरा मे बचि छइ। महेदक िहरा अनमन रबन्दक जेका छलइन।" देह पर भुलकी रोईया"- ई डीह टोलक चन्हासी छइ। महेन्दकऽ देखते बुझा गेलइ जे ओ अइ पचिरक ल्सा अइ।

महेन्द आ उनकर कनया सबके गोर लागऽ झुकलइ, तखने झट दं सुगाि िली कहलबन- पने भगाती घर िलु। उनका गोर लयायउन, फेर सबके लगइत रहब। चकयो भागल नचि जाइ छइथ। सुगाि िली मौका देख कऽ अपन बुयारीकऽ दाि जता दइ छयन।

जतऽ भगािन भगातीकऽ बात बीि मे आइब जाइ छइ, ओतऽ मऊगी मेहर चरोध नचि करत। सब हा मे हा मलेलक आ चदा भेल भगाती घर।

पुरना घर सबहक िखट बेशी जगह नीि रहइ छइ। कनाको ध्यान इमहर ओमहर भेल की माथ मे िट लागल। आब खान-पान पर बेशी ध्यान लोक बचिसँदेबऽ लगलइ या। नचि तं पने ई छह

फीटा लोक कहा होइ छलइ। घरक िखट चारहथक लंबाईसँ िइर आंगुर बेशी रहइ छलइ।अतउ भगिती घरक िखट कम्म ऊंि छलइ।पुरना चारहथ छोटे ऊंिाईकऽ हेताह। ईहो भऽ सकइ छइ जे भगिन भगिती लग माथ झुका कऽ जाइ, तै जाइने बुइझकऽ दरिजा छोटे रहइत होइ। जे भी सि होइ, नब लोककऽ माथा मे िट लइगते टा छइन।

पछनेहे महेन्दकऽ िता देल गेलइन जे माथ झुका कऽ जायब। तखने पाछुसँसरया बाली बजलीह- अतेक काल थम्हलऊं त कनी आरो थम्ह जाऊ। पातइड ढिअ चयउ, तकर बादयभगितीकऽ गोर लागु।

ईहो पस्तािि एकमतसँपाबत भऽ गेल। आइ चकयो ककरो विरोध नवि कऽ रहल छइ। कही कोनो विार दी आ ओ नवि मानल जाय। तखइन तऽ बेजती भऽ जाइत। महेन्दकऽ कनाया की बुइझ लेत?सब अपन अपन िम्रु बढबऽ मे लागल अइ।

आब पातइडक ओबयान शुर भेल । इमहर खुसुर फुसुर िइल रहल छल। जे सब महेदकऽ कनायासँकने दुर मे छलीह ओ सब आंईखे आंईख मे सब गप्प कऽ रहल छलीह।आंईख सऽ ओकर एकसरे नया रहल छलइ।

आरो टोलकऽ बच्चा आ पुरुख पातर सब बहरी मे जमा छल। पातइड भेल। परसादी बंटायल।

रमेश बाबा सर बजलाह- ई बंगाली बाबा कतऽ कऽ रसगुल्ला छइ।

महेश ज़बाब देलखिन- हं। हमरा कतऽ त ओकरेसँअबइत अइछ।

रमेश बाबा सर- आब बंगाली बाबा योकऽ ओ बात नहि रहलइ अइछ। ओकर बाप जे बनबइ छल- "अद्भुत"।

तखने जीतेन्द्र बजलाह- कका रहअ दियउ। हम सब त अकरे मिठाई खाइत बढलऊं अइछ। जखइन ओकर बापकऽ बनायल खेनहे नहि छी, तऽ ि ि कऽ कऽ की फायदा।

रमेश बाबा सर- कमाल करय छं तो सब। तु नहि खेलह त ओइ मे हम की करबयह। हम खेने छी, तै बजलऊं। तोहर बाप तऽ रोज साझ मे बंगाली बाबा कतऽ जाइते छलखुन।

जीतेन्द्र- देखू बाप पर नहि जाऊ। हम आहाकऽ देखइ छी, आइ काइल बात बात पर आहा बापकऽ बीच मे घुसा दइत छी। कका छी तै। नहि तं हम देखा दइतऊं।

रमेश चौरासर- तुं की देखेबह। हम तोरासँपुईछ कऽ बाजब! एलाह आय बडका। तोहर बापकऽ त मुंह हमर सामने खुजल नहि छलइन। ई दु टा पाइ ठीकेदारी मे कमा लेलाह अइछ त हमरे सीखबइ छइथ जे की बाजु आ की नहि बाजु।

जीतेन्द्र- देखू कका हम अंतिम बेर आहाकऽ कहने रहल छी।आब अततः भऽ रहल अइछ। हमर संयमकऽ परीक्षा नहि लियह।

ईएह गमा गमी भऽ रहल छलइ। बेचारे महेद अपचायात भऽ सब देख सुइन रहल छलाह। जोरसँबहस सुइन आंगनसँकनिया काकी दौडलीह। फेर थोडथाम लागल। सब परसादी खेलक। किछु लोक विदा भेल आ किछु बइसले रहल।

महेन्द्रकऽ ई महानगरक " रोडरेज" जका लगलइन। कखन मे कथाक भऽ जाइ छइ। अखने लडाई होइत होइत बचलइ।

महेन्द्र ताबइत देखइत छइथ जे रमेश बाबू आ जीतेन्द्र कोनो गप्प पर कोना मे ठार भऽ कऽ ठहका माइड रहल छइथ। महेन्द्र त बहसक शब्द सुअइन कऽ घबरा गेल छलाह। बाकी लोक खाइ-पीबार धन सन। सब सामान्य भऽ गेल छलइ।देख कऽ बुझेबे नहि करीतय जे अखने मारा पीटीकऽ नौबत एतऽ भेल छलइ।

महेन्द्र अतुका लोकक आबेश देख कऽ अचम्भित भऽ गेल छलाह। ओ अपनाकऽ अइ भीडक हिस्सा बुझअ लागल छलाह। कखनो कऽ ये काल मे ओ ओतऽ घुइल मिल गेल छलाह। बुझेबे नहि करय जे पहिले बेर ओ अयलाह अइछ।ओ कतऽ सँ अबैत छैथ। उनकर पिता हरेन्द्र बाबू सर, अंतिम बेर बाबा नरेन्द्र बाबूसरक श्राद्ध मे आयल छलाह। ओइ समय महेदकऽ जन्मो नहि भेल छलइन।

आखिर कोन एहन टीस छलइ जे हरेन्द्र बाबूसरकऽ अपन मातृ भूमिसँ विरक्त भऽ गेल छलइन।

बात तहिया कऽ छइ, जहिया असली मे जमीदारी छिइल गेल छलइ मूदा खूनक जमीदारी नहि गेल छलइ। ई खुनक जमीदारीसँ बेसी कनको हत्याक बात नहि छलइ, अकर अर्थ छलइ - " फुसियाही शान "। ई नरेन बाबुकऽ सब किछु लऽ कऽ डुबा देलकइन।

नरेन बाबुकऽ बियाह अपनासँ पैघ जमीदारक बेटीसँ भेल छलइन। नरेन बाबु दु भाइ छलाह। छोटे मे टुगर भऽ गेल छलाह। जेठ भाइ मिन बाबु इनकर पालन पोषण केलखिन। नरेन बाबु अपन भाइ भौजाइकऽ परम भक्त भऽ गेल छलाह।ई भक्तिकऽ किछु लोक आने रंगदऽ देने छलइन। नरेन ससुर आ उनकर भौजीकऽ संबंध पर कयेक टा खिस्सा पिहानी उनकर सासुरो मे घुमइत लुटन बाबुकऽ कान तक पहुंचि किल छलइन। नरेन बाबुकऽ कनिया के, अतेक भाइ भौजाइकऽ आगापाछु घुमनाई नीक नहि लगइ छलइन। उनका अनुसार आहाक भाइ त घरक धनसँ आहाकऽ पलला पोसला। अहुंकऽ त आधा हिस्सा भेल। अइ मे उपकार की?सत की छलइ, ई तऽ उनकर सबहक संग दुनियासँ बिदा भऽ गेल छइ।

अइना छोट छीन गप्प पर टेना मेनी होइत छलइन। एकबेर नरेन बाबुकऽ कनिया अपन तीन टा छोट छोट संतान संग नैहर गेल छलखिन। पिदागरी लेल खबास गेलइन। नरेन बाबुकऽ ससुर लुटन बाबु पिदागरीसँ मना कऽ देलखिन। फेर की छलइ। नरेन बाबुकऽ टिसँ उनकर भाइ दोसर बियाह करा देलखिन।अइसँ लुटन बाबुकऽ अपन शान मे गुस्ताखी लगलइन। ओ अपन बेटीकऽ ओतइ बसा लेलाह। िइर बेटा आ एक बेटी छलइन। ओ अपन बेटीकऽ बेटा बुइझ पामि हिस्सादऽ देलकिन।पामि हिस्सा बक्तम छलइ, चाखतम नहि।

नरेन बाबु कन्याक शान मे आइब कऽ दोसर बियाह कऽ तऽ लेलाह लेकिन अपन पहिल कनिया आ बच्चि सबकऽ बिसरि नहि सकलाह।

जमीदारी त पहिनेहे खत्म भऽ गेल छलइन। ऊपरसँ अइ तरहक परिवारिकऽ स्थिति होइत देख कऽ नरेन बाबु अर्धविक्षिप्त जका भऽ गेल छलाह। सब

संपइत सब बिलाय लागल छलइन। ऊमहर नैहर मे संपइतक बल पर हरेद आ आर बच्चि सब नीक पढलकइन लिखलकइन। बापक जगह त आर ककरो नहि लऽ सकइत छलइ।ई कमी ओकरा सब कऽ खिन लगले रहलइ। उपरसँ" भगवानमानक" तगमा।लुटन बाबु जाबइत जीलाह ताबइत त पारिवारिक समस्या भेटलइन। बाद मे माम सब कऽ अयद बड्झ परेशान करऽ लागल छलखिन। हरेद बाद मे विदेश मे नौकरी करऽ लगलाह।उनकर आर भाइ सब सेहो जतऽ जतऽ नौकरी केलाह, लालाभाइ जका ओतइ बइस गेलाह। आपसी कोनो हेमक्षेम भेबे नहि केलइन।

हरेद अइ सब दुखक कारण अपन पिता नरेन बाबु आर कका मिन बाबुकऽ बुझई छलाह। किछु बरख बीतला बाद नरेन बाबु त अपन सासुर एनाई गेनाई शुरु कऽ देने छलाह लेकिन उनकर कनिया फेर कहियो सासुर नहि गेलीह। सऊतीन तर बसनाई उनका मंजुर नहि छलइन। तहिया दु तीन बियाह सामान्य गप छलइ।

लेकिन ओ बडड सिभमानी छलीह। ओ नरेन बाबुकऽ जीबइत सासुर नहि ये एलीह। जखइन नरेन बाबु मरलाह त ओ उनकर शाि मे एलीह। हरेदकऽ जेठ बेटा होबाक कारण बापक मुखाग्निकऽ अधिकार भेटलइन। माछ मासक परात जे हरेद, उनकर भाइ सब आ माय नैहर घुरलीह, से फेर कहियो सासुर नहि गेलीह।

हरेदकऽ ततेक ने कुंठा घेरने रहइन जे ओ मातृक मे सेहो मायकऽ मरलाकऽ बाद माम सबसँसंबंध नहि चाभा सकलाह। सब भाइ सब मिल कऽ जमीन जथा बेि लेलाह।ओइसँओतुका समाज सेहो इनका सबकऽ चाडइस देलकइन। पैतृकक आर्थिक व्यवस्था नरेन बाबुकऽ मरलाहकऽ बाद जजर्र भऽ गेल छलइ। अइ पिडासँबिऽ लेल ओ सब अपनाकऽ अलग थलग कऽ लेने छलाह।बाकी भाइकऽ त नहि लेकिन हरेदकऽ कनियाकऽ बडड मोन करयन सासुरक गाम जयबाक, लेकिन हरेद कहियो अनुमति नहि देलखिन। हरेदकऽ कनिया मरऽ काल अपन बेटा सबकऽ कहलखिन जे आहा सब अपन कुलदेिकऽ दर्शन जरर कऽ लेब, भऽ सकाय तऽ ओतऽ पातइड देब।

जीनि उतार िढाि संग िइल रहल छलइन। आपसी सामंजस्यकऽ अभाि पिािर मे देखाइत छलइन। कीयो मध्यस्थ करऽ बाला नहि छलइन। मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना बाला हाल छलइन। हरेद आ उनकर भाइ सबकऽ चकियो सीखेबे नहि केलकइ जे कका काकी

, गाम घर आ सखा संबंधी भी चकछु होइ छइ। ओ सब संबंधी बुझबे नचि केलकइ। माय आ भाइसँसबहक कुषि` सुनलकइ। ईएह सब मोन मे भरलइ आ ककरो पचा ममतकि भाि नचि पनपलइ।

समयक अपन बहाि होइ छइ। उनकर पैतृक पचािर बहुतही आगु बइढ गेल छलइन। हरेदकऽ घर मे पद आ पैसा भेलाक बाजिुदो भाबंश नचि बुझा रहल छलइन।

महेन्दकऽ उएह मायक गप्प सुतला मे झकझोडइत रहइ छलइन। आब गाम जायसँरोकऽ बाला चयता हरेद सेहो नचि जीबइ छच्यन। गाम आइब अपनाकऽ बीि पाइब महेद सब पचलुका गला चाकि बासइड गेल छइथ। अफसोस होइ छइन जे मायक जीबते चकअए नचि एलाह।

आइ नचि एला गेलाक कारण बहुत रास संबंध मे गाठ पइड गेल छलइ। आब सब गाठ खुइल गेल छइ। आब अफसोस ईएह होइ छइन जे चकयैक ने एकटा ठाि उनको अपन पैतृक गाम मे छइन। जखने अकर िि होइ छइ,नरेन बासरक अइ घरक पुतोहु , जे आब कचाया काकी भऽ गेल छच्य, चानकर कान ठार भऽ जाइ छइन जे कही ई चदअयद बइन संपइत ने बंटा चमयाय।ई सोचिते सब आबेश फुरथभऽ जाइ छइन।होइ छइन जे कही ई रहअ लेल तऽ नचि आयल अइछ। जायकऽ िि नचि कऽ

रहल अइछ।ब्दअयद बाद त ढिबे करतइ। हमर संपइत बंटबाईये कऽ मानत। ईएह सब सोचिते छलीह की तखने मोटर फेर आइब गेलइ।

महेन्द्र मोटर मे सपचरि बइसल अपन डीह टोलकऽ देखइत जा रहल छलाह।ओकरा अपन चताक णाथा पर पछतावि भऽ रहल छइ। एकटा बादागरी सनक छोट बातक कारण ओ अपन खानदानसँकइट गेल आ झुठक शानक बच्च दिी पर िईढ गेल।पछतावि तऽ नरेन भासरकऽ सेहो भेल छलइन दोसर बायाहक बाद, लुटन बाबुकऽ सेहो भेल छलइन बेटीकऽ घर उजरलाकऽ बाद, हरेदकऽ सेहो भेल छलइन सबसं कटलाकऽ बाद। आइ महेदकऽ पछतावि भऽ रहल छइन, सबसं जुडलाकऽ बाद।

पुरान कहबी छैक- "अब पछतावि होत क्या, जब चिड़िया ुिग गइ खेत", एहने लेल कहल गेल छइ।एहन आबेश त अपनेसँभेट सकइ छइ, चिदेश मेकऽ केकरा चिन्हइ छइ। ओतऽ तऽ आबेशोकऽ मोल छइ। भारी मोनसँमहेद घुइड रहल छलाह। अइ संग संग बकछु णाथा सेहो लेबाक भावि अबइत जाइत रही रहल छलइन।

उपराग (लघुकथा)

दमन बाबु आइ बीसो पचीस बरखक बाद बहिनक सासुर एलाह अइछ। कतऽ सऽ अबैतैथ। बहिन अपने शहर मे डेरा पर रहइ छलीह। पहिने बहिनोई असरकऽ जतऽ जतऽ बदली होइन, ओतऽ रहइ छलीह। बाद मे जखइन बचि सब पैघ भेलइन त ओकर पढाइ दुआरे राचिये धअ कऽ रहलीह। बहनोई अपन असगरे बदली बला शहर मे रहइ छलाह। जखइन शहर लग रहइन, तऽ शइन डइब मे राचि आइब जाइ छलाह........मूदा बाद मे जखइन बदली दूर भऽ गेलइन.........तखइन दरमाहा लऽ कऽ महीने महीना राचि अबइत छलाह। कष त होइन लेकिन धीया पुताकऽ पढाइ आ भविष्यकऽ लेल माय बापकऽ त्याग तऽ करहे पडतइ।अहिना चलन चलतइत छलइन।

दमन बाबु सुन्दरीसँइंजीनियरिंग केलाक बाद बाहर चलकइल गेल छलाह। कोनो भी जग परोजन मे शामिल नहि होइ छलाह। आइ जेका सस्त हाई याता तहिया नहि रहइ। दमन बाबुकऽ सोचि छलइन जे जतबा आबऽ जाय मे खचि होइत, ओतबा जे घरबइयाकऽ पठा देबइ त बेशी मदद हेतइ। शुरु मे तऽ संबंधियो सबकऽ डालर भेटइन त नीक लगइन। लेकिनको दमन बाबुसँकोनो शिकाइत नहि छलइन। जहिया ओ चलकी अबइ छलाह......सब सगा संबंधी भेट करऽ अबइन। सबकऽ जाइत काल लेकिछु ने लेकिछु दमन बाबु देबो करथिन। खुब जश छलइन। नब नब कुटुम्ब

सब सेहो डालरकऽ फिर मे भेट करऽ अबैत छलइन।सब ठीक ठाक चलि रहल छलइ।

दमन बाबुकऽ विदेश कनियोसँ नहि सोहाइ छलइन। दु टा पाइ बेशी भेटलइन, तै ओतऽ गेल छलाह। बाद मे धीया पुता आ आंगन सं, भारत घुरबाक तैयार नहि भेलखिन, तै ओतइ रही गेलाह। जखने बच्चा सब व्यवस्थित भेलइन, भारत घुरबाक सोचऽ लगलाह।बहुत रास बदलाव किऽ बारे मे पढइत सुनइत रहइ छलाह। अइ बीच मे बाबुजी सेहो एकदिन बडड उपरागसँभरल चिठी पठेलखिन-

"तुं सब बडका लोक भऽ गेल छअ। हमर कोनो काज/ करदेतिा मे नहि उपस्थित भेलह।गाम मे घर बनेलऊं सेहो नहि देखबाक सेहंता भेलह। हमरा तोहर डालर नहि चाही। हम तऽ पहिनेहे तोहर पठाओल पाइकऽ घुरेबाक चाहइ छलऊं..... मूदा तोरा तकलीफ हेतह, तै नहि घुरा पिस केलियह। बाबुजीन लेल भाइकऽ काज मे सदेह ठार रहनाई , सबल बनबइ छइ। हम सब कोनो भिखारी छी जे पाइ पठा दइ छअ। कनियो तोरा छगुन्ता नहि भेलऽ जे भगवान जमायकऽ देखी.....बाबुजीनक पुतोहु आ पोता पोतीसँभेट करी। ओकरा आइब कऽ जे आशीर्वाद देबऽ , ओइसँबइढ कऽ किछु नहि छइ। अहिसर तोहर दुखिताह रहइ छथुन, से तऽ बुझले छह। आब गाम मे ओतेक दखिाई - दार नहि भऽ रहल छइन। आइब कऽ भेट कऽ जहुन। हमर बियाहक बाद तोहर जन्म

भेल छह। अपने बचि जेका तोरा मानि छलकुन...... से तो अबरजात बने कऽ देलह। हमरा पाइ कौडी नि िही। ि‍सरकऽ पेशन तऽ हम खि नि कऽ पबइ छी। पाइ बि‍ये जाइत अइछ। पहने त बचि सबहक पढाइ-ि‍खाईकऽ कारण हाथ ि‍ाकस्त भऽ गेल छल। तै तोहर पढाइकऽ खि नि उठा सकि‍यअ। मुजौना बाला तोहर ससुर ज्यो पढाइयक खि उठेलकुन तऽ बदला मे एहन सुनर हमर भाइ सन जमाय भेटलइन। बेशी सासुरकऽ लटर शटर मे नि पडअ। बस एक बेर आइब जाह।देखबाकऽ बडड मोन कऽ रहल अइ।"

ईएह चि‍टी पढलाकऽ बाद दमन बाबु बहनक सासुर आयल छलाह।बाहरो रहलाकऽ बाद दमन बाबु मे लंफलंफा नि आयल छलइन।ओ अखनो गाम एलाह पर पैसेजर रेन मे िढई छलाह। गामसँतऽ दुईये टीशन पर उनकर बहनक सासुर छलइन।कतेक बेर ओ आयल गेल छथि। बडड भीड जखइन रेनक बोगी मे भऽ जाइ छलइ त ओ पौदान पर लटईक कऽ जाइ छलाह। ज्यो एक रेन छुइट जाइ त दोसर रेन कखइन आइत, ओकर कोनो ठेकान नि छलइ......ओहोसँबेशी जे ओइ मे अइ रेनसँकम भीड हेतइ, तकर कोन गारंटी। ि‍कछु भऽ जाइ, दमन टीशन पर रेन नि कहियो छोडलाह। एकबेर त रेन छुइट गेला पर ओ िडुिनया एहने कोनो पाबइन मे सनेशक मोटरी कनहा पर उठा कऽ रेनक पटरी धेने धेने बहनक सासुर िइल गेल छलाह। बाद मे बुझला पर गाम मे सब ि‍ागडनेहो रहइन अइ लेल। तहिया एते कहा सोिाई छलइ।जायकऽ अइ त जायकऽ अइ। जे सिरी भेटल,

पकड़ु आ पहुंि जाऊ। नहि चकछु भेटल त " िरणदासक कार" छइये। अइ कारक ओ खुब उपयोग करय छलाह। ओ पैरे िललासँउनका " िीनी"कऽ बीमारी नहि भेलइन। अखनो उएह पचलुका आत्मचिशास पर कतउ आ कखनो चिदा भऽ जाइ छथि।

बचलनक सासुर मे बातायल गप शप सब आइ मोन पइड रहल छइन।उनकर ससरक माय (बचलनक सास) बडड कडगर रहथिन। तचलया जे बुढी कडक होइ छलइ, उनका सब इंचदरा गाधी कहइ। एक बेर गाम मे कोनो गप िललइ त दमन बाबुकऽ भाचान कहलचिन - " हमर बाबी लग बंदुक छइ। आहा सबकऽ उनकर डर नहि होइया। हमर मा त बाबीसँखुब डराई छथिन।"

दमन बाबु भाचानकऽ बयसकऽ छलाह, मूदा छलाह त माम। ओ िटसँबजलाह- " हमरा लग तोप अइछ। जा कऽ कहल चदयउन अपन बाबी के। हम सब नहि डराई छी।"

तचलया दमन बाबु तोप देखनेहो नहि छलाह। गाम मे सुनथिन जे तोप, बंदुकसँभइडगर तऽ बाईज देलाह।

चकछु महीनाकऽ बाद जखइन बचलनक सासुर गेलाह तं ओ बुढी सास इंचदरा गाधी एलीह। कहलचिन-" ईएह तोपबाला पुरख छथि। अइ बेर इनकर बाछान राइत मे हमरे घर मे कऽ देबैन कचााया।हम देखइ चाहइयइन इनकर तोप"।

आब डरक मारे सकदम छलाह बचि दमन। बुझ्झ गेलाह जे भव्गाना, इमहरसँऊमहर बात केलाह अइछ। गामक सुनल फकरा याद आइब गेलइन- "धी, जमाय आ भव्गाना, ई तीनु नहि अपना"। ओ त जे छइ से छइ, अखइन ई बुढीसँकोना व्जबटल जाय।आब राइत होबऽ मे बेशी देरी नहि छलइ। डरक मारे दमनक हाल पातर भऽ रहल छलइन। खने बुसर लग जाइथ, खने बव्लन लग जाइथ, हम त मजाक मे कहव्लयइन। हमरा लग कोनो तोप नहि अइछ। लेव्कन एतऽ पाहुनकऽ सुनहि या के। सब इनकर गप सुइन कऽ मुव्सकया रहल छल।अगर बुढी राइत मे बंदुक चलकाइल लेतीह त दमन की करताह। ऊयाह चिंता बेगडता मे व्बान खेनहे दलान पर सुइत रहलाह। बाद मे लोक उठा कऽ खुयेलकइन। बुढीसँबाद मे दोस्ती भऽ गेल छलइन। ओ कहथ्यन जे आव्खर उनकर बेटाक सासुर मे एकटा शेर जन्म लेलक जे ज़बाब देलक। बचि दमन अपनाकऽ शेर बुइझ गव्ज्ञत होइत छलाह।

खव्टया पर पडल दमन, कने ऊंघाइत छलाह।

ताबइत सुनहि त छइथ जे बव्लन बाईज रहल छलव्थन- " कोन काज छलइ रेनसँऐबा के। उपरसँअतेक दुर पैरे। हरही सुरही सब तं मोटरसऽ अबइत अइछ। हमर अफसर भाइ पैरे आइब गेल। आब तोहर देह पव्हलुका थोडे छह। बडड थाईक गेल छह।पइड रहअ।जखइन साझु पहर उठबऽ त एक बेर व्मानी दाईसँभेट कऽ व्लयहुन। तोरा बडड मोन पाडइ छथुन। मोन जुडा जाइ छइ जखइन

नैहरक लोकक सासुर मे नीक लेल ि ि होइ छइ।

ब्मानी दाईकऽ नाम लइते दमन बाबुकऽ अपन हुनका संग ब्बितायल च्दिन याद आइब गेलइन। बच्छ्रन कच्छ रहल छथ्यिन- ब्मानी दाई अपन जीबन इज्जतकऽ संग अइ गाम मे ब्बिता लेलीह। कच्छयो सुख नच्चि भेटलइन। दु दु टा ब्बियाहो भेलइन। नच्चि जाइन ककर नजइड लगलइन ि कोन नक्त मे जन्म भेलइन। ओतेक टा घर नच्चि ह्िली कहऽ , ओइ मे असगर पडल रहइत छइथ। राइत ब्बिराइत च्चकछु भऽ जेतइन तकऽ देखतइन। याद हेतह, दुसधा हजरा, ओकरे बेटा राइत कऽ दलान पर सुतइ छइन।

ब्मानी दाई, बखारी ि◌धरीकऽ बेटी छलीह। बखारी ि◌धरीकऽ असली नाम दमनकऽ नच्चि बुझल छलइन। एतबा जनच्चि छलाह जे उनकर दलान पर कयेक टा बखारी छलइन। गाम की, पुरा परोपटा मे ओतेक बखारी च्चकनको नच्चि छलइन। ओहीसँउनका सब " बखारी ि◌धरी" कहइन। अतेक बखारी रहइन, तै बुइझ च्लियअ जे कतेक अन पाइन होइन।बखारी ि◌धरी बडका कलामी लोक छलाह लेच्चकन दमनक ब्मासर आ उनका मे दुगोला छलइन। दुगोला मतलब खान पीन आपस मे बन। अबरजातो नच्चि। कर कुटुम्बकऽ एक दोसरा कतऽ एला पर पाबंदी नच्चि छलइ। बाकी सब पर लागू छलइ।

बखारी िधरीकऽ दु टा बयाह छलइन। बडकी कनाया ओतेक नीक देखबा मे नहि छलखन। तखइन अपने देख कऽ सुनर दोसर कनाया केलाह। ओना तऽ नबकी कनाया बेशी दुलार होइ छइ, लेकन बखारी िधरी कतऽ उकटा छलइ। िलती बडकी कनायाकऽ बेशी छलइन। बखारी िधरीकऽ दुनु कनायासँधीया पुता भेलइन। छोटकी कनायासँभेल धीया पुता सब चकिन िनमुन आ बडकी कनाया सं भेल धीयापुता सब जमुनाया रंगक छलइन।

जखइन धीया सब बयाह जोगर भेलइन तं बखारी िधरी बर तकनाई शुर केलाह। मनी दाई बडकी कनाया सं भेल छलीह।उनके समयिसक छोटकी कनायासँिनी दाई छलीह। िनी दाईकऽ कथा सुन्दरता लऽ कऽ एक जगह सथर भेलइन। लडका धन सम्पइत बला छलइ। बडकी कनायाकऽ जखइन पता लगलइन जे उनकर सऊतीनकऽ बेटीकऽ अतेक नीक कथा भऽ रहल छइन.......ओ अटाबजर खसा देलकन। उनकर बात बखारी िधरी माइनतो बेशी रहथन, फेर की छलइ। ओइ लडकासँमनी दाईकऽ बयाह भऽ गेलइन। सन्दुरदानक बाद जखइन बरकऽ ई धोखा पता लगलइ त ओ कोनो बहाने ितुथीसँपहनेहे परा कऽ अपन गाम िइल गेल। ओतऽ सबकऽ ई बात बतेलकइ। ओ सब अपने लंगा छल। कहलकइन जे आब सासुर जेबाक नहि काज, हम सब देख लेबइन।

इमहर बखारी िधरी सब ई सोिइत -

" भेल ब्याह मोर करता की।

धीया छोड़ि कऽ लेता की।"

कयेक बेर पर पंचयितीकऽ सेहो पयास भेलइ, लेकिन बर पक टससँमस नहि भेलइ। ईएह सब तेला बेलासँ भानी दाईकऽ बर ततेक ने परेशान भेलइ जे एकदिन माहुर पी कऽ मइड गेलइ। उडन्ती समाचार बखारी चौधरी तक सेहो पहुंचलिइन। भानी दाईकऽ सासुरसँनहि कोनो खबर एलइन। नैहरे मे चुडी तुडी फोरल गेलइन आ जे कनी मनी लोकाचार छइ, से सब भेलइन। ऊमहर चुनी दाईकऽ दोसर जगह कथा भऽ गेलइन। अइ ब्याहलऽ कऽ दुनु सौतीन मे बडड ऊकटापैंची भेलइन। बखारी चौधरीकऽ कयेक बेर थोर थाम करऽ पडलइन।

बखारी चौधरीकऽ देह आब उमर बढलासँखइस रहल छलइन। ओ चाहइत छलाह जे कहूना कोनो सुपातरक हाथे भानी दाईकऽ बाईध दी। मौकाक तलाश मे सब बेर सभा गाछी जाइ छलाह। एक बेर कनीक बयसगर बर भेटलइन। बेशी ओकर खोज खबर नहि लेलकिन आ सोझे सभागाछीसँऊठा कऽ लऽ अनलखिन। लडकाकऽ अतबे बतेलकिन जे बेटीकऽ ब्याह राइत मे जमाय छोड़ि कऽ चइल गेलइ। नहि चतुथी भेलइ आ नहि मधुशाचिणी। शास्त्र आ लोकाचार दुनु लेखे ई बिबाह पूणर्थ नहि मानल जेतइ आ ऊपरसँलडका सेहो मइड गेलइ।ओ बयसगर बरकऽ फुसला कऽ आ धनक लोभदऽ कऽ गाम परलऽ अयलाह। भानी दाईसँपुछबाक

काजो नहि। कपडाक गुदड़िया जेका भानी दाईकऽ फेर बियाह दान भेलइन। सब ठीक-ठाक बुझाई छलइ। दस दिन बाद बिदाई लऽ कऽ लडका ओतऽ सँ लिल। जखइन ओतऽ सँपहुंनिामा आ कोनो खोज पुछारी नहि एलइ त इमहर चिंता भेलइ। भानी दाईकऽ मोन त पहिलनेहेसँसशंकित छलइन।जखइन बखारी िधरी लडका बारे मे पता लगेला त भेद खुललइ। ओ बर पहिलनेहेसँबियाहल नहि, िदह बरखक बेटो छइ। कोनो काज नहि करय छइ आ सब अिगुणसँआगर छइ। बहु बेटा जे मना केलकइ त खीस मे दोसर बियाह कऽ लेलकइ। बाद मे जखइन घर गेल त सब भूत ऊतइड िकिल छलइ।कानुनन सेहो नबका बियाह मान्य नहि छलइ। भानी दाईकऽ जीनि फेर ओहिना सुन भऽ गेल छलइन। बाद मे बखारी िधरी थोडेक जमीन खोिदसक र प मे लिख देने छलखिन। बाकी भाइ सब बडका बडका हाकिम भऽ महानगर सब मे रहइत छइन। सबकऽ फडाक फडाक बडका बडका घर बनल छइन। भानी दाई एक बेर कऽ साझ बाती देखा अबइ छथिन।

ईएह गप्प सब बहिन , दमनकऽ सुना रहल छलखिन। तखने लाठीकऽ सहारे घिचसयाइत भानी दाई जोडसँबजइत एलीह- "कऽ आयल छथि। पाटथिर की?"

दमन आ उनकर बहिन दुनु गोटे ठार भऽ गेलाह। उनकर लाठी हटा कऽ दमन हाथसँसहारा दऽ कऽ खिटया पर बइसलकिन। भानी दाईकऽ ताशक गोिठया हरदम दमने रहइ

छलखिन। तै ओ दमनकS आबेशसँ"पाटखिर " कहइ छलखिन। अतेक बरखकS बादो आजि सुइन कS आइब गेलखिन।

दमन उनकर हाल पुछलखिन। भानी दाई ज़बाब देलखिन- " हमर छोड। हमर हाल त भइड दुनयाया जनिते अइछ। तु अपन कह पाटखिर।

दमनकS किछु कहल नहि भेलइन।भानी दाईकS बयससँबेशी देह खइस गेल छलइन। थोडबाक काल बाद साझबाती देबाक समय भS गेल छलइ। ओ िइल गेल छलीह।

दमन बाबु, बच्चनसँपुछलखिन आबो दुगोला छऊ।

बच्चन ज़बाब देलखिन- धुरथछी। आब लोके कहा जे दुगोला। मरला पर काध देबइ लेल मजुरी पर लोक बजालि जाइ छइ।हमरा जखइन समय भेटइत अइछ तं हम उनका कतS िइल जाइ छी। दु दिन नहि जेबइन त तेसर दिन टुघडइत ई अपने पहुंि जेतीह।

दमन बाबुकS बच्चनकS सब उपराग आब खत्म भS गेल छलइन। दमन बाबु सोइि रहल छलाह कि दुगोला रहलो पर भानी

दाई कहलयो पाहुन बुझइ कऽ , कहलयो खेलबासँआ ताशक गोद्धाया बनबासँमना नचि केलच्छन। कनीक रंग दब उनकर दुखक कारण त नहलये भऽ सकइ छइन, चयछले जन्मक चकछु लेखा जोखा मे बलि छइन, उएह चलसाब भऽ रहल छइन।आब उपराग ककरा सं।

अएना (लघुकथा)

मन्जुनाथ बाबु दीनिनी मामलाकऽ जानल मानल किील छलाह।ओना उनकर पिता रमानाथ बाबु भी कानुनकऽ कम जाता नहि छलाह। लेकिन रमानाथ बाबुकऽ किालतक पैक्टिस ठीक नहि िललइन। ततेक ने उनकर व्यटम्भा छलइन जे मोश्किल सब धीरे धीरे दुर होइत गेलइन। मोश्किल आहाकऽ पाइ दइया, ओ नखरा थोडबे सहत। आहाकऽ ओकर ध्यान राखऽ पडत, नहि तऽ ओ दोसरकऽ धअ लेत। ऊयाह भेलइन, रमानाथ बाबु जानी रहलतो, मोश्किल सबकऽ नहि सम्हाइड सकलाह। क्यहिाचक पक कमजोर रहबाक कारण उनकर घरक गाडी जेना - तेना डुगडइत रहलइन। उनकर कन्नयाकऽ सेहंता लगले रहलइन जे किीलाइन जेका बनल ठनल, खुब देब-लेब करइत जीनि बीतइन।उनका अपन घरबालाकऽ पोछल पाछल सुखल बेबहार बुझल छलइन। रमानाथ बाबुकऽ सामने आयल किील सबहक ठाट-बाट ओ देखथ्थिन........ िि सेहो करथ्थिन .... लेकिन अइ काठक मुरत रमानाथ बाबु के,कऽ बुझेतइन। रस्सा फुक्की, लडाई-झगडा, ऊकटा-पईंिी, कना-रोहट, नीक-बेजाय, सईज-धईज,अलार-मलार, शपता-शपती सब कऽ कऽ किीलाइन थाईक गेल छलीह।आब ओ चकछु कहनाई ओना ओ छोच्छ धेने छलथ्थिन, लेकिन मौका भेटला पर अखनो छोडई नहि छलथ्थिन।

अइ घरक भीतरका संघषर्मँमन्जुनाथ रोज दु िइर होइ छलाह। ओ मायक उपरागकऽ बुझअ सुझअ लागल छलाह। ओ कन्नया ई

बनाि य कऽ लेलाह जे उनका किील बनबाक छइन, से अपनो नहि बुझेलइन।जखइन ओ किालतक पढाइ लेल कालेज मे नाम लखा लेलाह, तखइन घरक लोक बुझलकइन। ओइ समय मे जे डाक्टरी, ईन्जीनियरी, आ सरकारी नौकरी मे नहि पास होइ छलाय, उएह किालतक पढाइ करय छलाह। लोक मल्लनाथक किालती पढाइकऽ फैसला जाइन कऽ अचम्भित भऽ गेल छल। सब ई बुझय नहि सकल जे की कारणथकऽ पाछु एकटा दृढ बनाि य छइ।

मल्लनाथ किालतक पढाइकऽ संग संग आरो काज सब मे सक्रिय छलाह। जखनया परीक्षा पास कऽ कऽ किालत जिइन केलाह, तखनया पुरा तडक भडक संग बडका पाटी देलाह।अपन पिताकऽ जुनियर नहि बइन कऽ शहरक नामी किील बीरेद बाबुकऽ जुनियर मे जिइन केलाह। बीरेद बाबुकऽ जज सबसँघुटा सोहार रहइ छलइन। ओखना मल्लनाथ कम्मे समय मे ओकर सबहक बीि मे लोकप्रिय भऽ गेल छलाह। अधिकारी सबहक कोनो भी काज होइ, ओइ मे मल्लनाथ सबसं आगु। अपन जान जी लगा दइ छलाह-ओकर सबहक लेल। पहिने तऽ िीरेद बाबुकऽ जुनियरकऽ र प मे पहिानि रहइन, मूदा थोडबे दिनक बाद अपन पहिानि होबऽ लगलइन। िीरेद बाबु अपने सेहो अही रस्ते आगु बढल छलाह, तै ओ इनका पीठ पर हाथ ठोकइत रहलथिन।

मल्लिनाथ जखने कनी सुस्थितगर भेलाह त ओ सबसं पहिने किछु पाइ इमहर ओमहर कऽ कऽ एकटा मोटर कीनलाह। तहिया मोटर िरिद बाबुकऽ सेहो नहि छलइन। ई मोटर आ डाईिर ओ जज सबहक तीमारदारी मे छोड़ि देलखिन। अखनो मंगनी मे मोटर डाईिरक संग ककरो भेटई त दस टा काज जर री भऽ जाइ छइ।अइ मोटरकऽ कारण इनका कोटर्मे कयेक टा लोक सबसं नजदीकी भऽ गेल छलइन। अधिकारी सब हिनकर मोटरक भोग केलाक बाद हिनको कहूना ना कहूना उपकृत करऽ लगलइन।

मल्लिनाथकऽ जन्मे कानुनक पोथीसँभरल घर मे भेल छलइन। ओ गलती आ मजबुरीसँबनल िकील नहि छलाह। ओ अपन ध्येय बना कऽ अइ पोफेशन मे आयल छलाह। ओ लच्यातो छलइ। जखने समय भेटइन कानुनक पोथी सब पढइत रहलाह। ताईद आ मोहब्बतक लंबा सुिी हिनका लग छलइन। सबकऽ बेसाये कमीशन दऽ कऽ पठयेने छलाह।अइ सबकऽ संग अपन उदार आ अव्याजात्य िहरा सेहो समाजक सामने रखने छलाह। पब्लिसिटीकऽ कोनो मौका हाथसँनहि जाय दइ छलाह। पैचकस िलऽ लागल छलइन।अपन घरक लोकक जन्मक तारीख याद होइन िा नहि होइन, सब साहब की, मेमोसाहबक जन्म तारीख आ बियाहक दिन याद रहइन। कतउ मधुर, कतउ गुलदस्ता, कतउ उपहार, कतउ सनेश त कतउ खाली शुभकामना....... अधिकारीकऽ सिभाकि अनुसार ई बेबहार करय छलाह।

ओ अपन घरे लग एकटा पुरना घर सेहो भाडा परलऽ लेने छलाह। अइ मे मोिचकल सबकऽ रहबाक आ खेनाई चयनाईकऽ सेहो बेबसथा छलइ।दीिनी मुकदमा सबहक फैसला होबऽ मे बडड समय लगइ छइ।जकरा जमीन रहतइ, सैह ने मोकदमा लडत। कयेक लोककऽ तऽ जमीनक संग भािनात्मक लगाि रहइ छलइ। अकरे सबकऽ मन्हनाथ भजबइ छलाह। आब बीरेद बाबुसँअलग भऽ नीक पैक्टस करऽ लागल छलाह। मोिचकलक रहबाक बेबसथाकऽ कऽ नब शुरआत भऽ गेल छलइ। रमानाथ बाबु बला भगलका मोिचकल सब सेहो घुअइड कऽ इनका लग आइब रहल छलइन।

आब शहरक पचाब त लोक मे मन्हनाथ बाबु आइब गेल छलाह। शहरक कलक्टर, पुचस कप्तान, चला जज, चिधायक, नेता, व्यिसाई, पैघ चारहथ सब संग ऊठई बइसई छलाह।बाहरी दुनयाकऽ लेल, दहेज लेल बायाह मे शािमल नि होइ छलाह। लंबा लंबा सैिचाक आ आध्याचमक गप सब देबऽ आइब गेल छलइन। उनका कतऽ सँफायदा होबाक अइछ, अकर पहिन मे पटुता छलइन। जतऽ जई तरहसँबाना "ना " कहने चाबटारा होइत, ओइ तरहक तकथदइ छलचवन। कखनो दु पचाब त पचािरकऽ बीि कथा-िता सेहो करा कऽ अपन पैठ बना लइ छलाह।

अन्हना आगु बढइत जा रहल छलाह।मन्हनाथ अपन भाचाजक बायाह एकटा अच्धकारीकऽ बेटीसँकरिबइल लेल जी जान लगेने छलाह।

च्लनकर भाइ दोसर जगह बेटाक बायाह ठीक कS लेलकइन। ई अपन झेप भ्मटबS खाच्लर " पाइ लेब, च्क भाइ लेब "कS डायलॉग समाजक सामने रखलाह।अइ मे भाइकS चकरचकरी भेलइन, लेचकन मच्लनाथ बाबुकS पच्सचि भेटलइन।हर वसथच्लाकS भजबं मे माच्लर छलाह।

अच्लना मच्लनाथक गामक संगी एकबेर कोनो काज मे मददक इच्छा लS कS उनका लग एलच्वन।मच्लनाथ अपनाकS च्सातिदी दशच्इत, सीधा कहबा मे लाारिरी देखेलचकन।ओ कहलच्वन- " ज्यो हमरा ओ पुछताह, त हम कहबइन।"मच्लनाथकS ई बात मोनो मे नचि एलइन जे अकरासँउनका कच्लयो कोनो काज पईरो सकइत अइछ। जेकरासँकाज परS बाला होइ छलइ, ओकरा लेल तS सचि समपथ च्साित छलइन।मच्लनाथकS ओइ संगीकS मोन मे एलइन जे काश हमरो एहन च्दन होइता जे मच्लनाथ हमरा लग काज लेल अयताह। कहल जाइ छइ- कोनो ािज मोनसँाहिब तS , ओ पुरा हेबे करत।सब पचच्सथच्ला ाहितक अनुकूल भS जाइ छइ।

समयक पच्लया घुईम रहल छल। थोडे बरखक बाद मच्लनाथकS काज ओइ गऊआं संगीसँपडलइन। ओ अपन पुरना संगीक संबंध लS कS उनका कतS बडका मोटर मे मधुरक च्लबा आ भइड पच्यया मालदह आम लS कS पहुंलाह। अइ सनेशक बल पर ओ केहन केहन काज करा िकल छलाह। ओ संगीकS सब

चाछला बात मोन छलइ। ओ कहलकइन-" हम त अहीसँनीक ि जि सीखलऊं। ज्यो हमरा ओ पुछताह, त हम आहा बारे मे कहबइन "। मन्नलनाथकऽ सब याद पइड गेलइन। अपन िक्प्रटुता पर उनका बडड गुमान छलइन।आइ गामक अदना सन लोक उनका अएना देखा देलकइन।

पुरा गाम समाज मे ईएह ि ि इिल रहल छइ जे सबकऽ अपन च्चन होइ छइ। बडका होइ ि छोटका होइ, ककरो उम्मेदकऽ नर्चि तोडी। समयक िक एहन ने घुमई छइ जे सब केलहा मुंह बेने सामने ठार भऽ च्चि ढबऽ लगइ छइ।ओकर मारल मे आिजि नर्चि होइ छइ।

अइ घटनासँमन्नलनाथ पुरा तरहे च्चाफइड गेलाह। आब उनका सब गामक लोक अपन च्चिरोधी बुझाय लागल छलइन। च्चकनका कोना हाच्चा पहुंिबइन, अहीकऽ पाछु परल रहलाह। अही सब िक्च्यूह मे फंसल हदयाघातसँपरलोक िइल गेलाह। अएना उनका लेल भारी परलइन।

हत्यारा (लघुकथा)

नब कालोनी छलइ। ि ुनी महतोकऽ बेटा सेहो कालोनी मे घर बनेने छइ। बच्चाया सबहक नकलकऽ कऽ ओहो अइ कालोनी मे जमीन लेबा काल मेन रोड ि ुनलक। अकर पाछु एके टा कारण छलइ जे ओ दु टा दोकान बहरी च्चद्रस चाकालत। सैह भेलइ। दोकान बनलाकऽ बाद एकटा तऽ च्चकराया मे लगेलक आ दोसर मे ि ुनी महतो अपने दोकान खोलबाक फैसला केलक। ओना ओकरा अकर अनुभि सेहो छलइ। ई सत गप छइ जे ओकारा दोकानसँबरकत नच्चि भेलइ।

ि ुनी महतो तात्क्ष जमानाकऽ मैच्च क पास छल। ओकरा च्चस्सा तीन बीघा जमीन पडल छलइ। अपन समाज मे ओकर धाक छलइ।जोडा बडद संग टायर गाडी सेहो ओकरा रहइ। ओकर घर अपना समाज मे नीक च्चारहथ मे अबइ छलइ। दोसरोकऽ जमीन ओ भरना लइत छल। ई सब रहलाकऽ बादो ओकरा खेती मे मोन नच्चि लगइ। ओना सरकारी नौकरीकऽ परीक्षा सब देनहो रहइ लेच्चकन नौकरी नच्चि भेलइ। इमहर च्चबयाह दान छोटे मे भऽ गेल छलइ। ि इर टा ननकीरबाकऽ लाइन लगा देने छल। कोनो काज तऽ दोसर रहइ नच्चि........आइ जेका टीिी, मोबाइल, फोन- फान, सच्चनमा च्चकछु नाई। बरख मे एक बेर दसमी मे नाि अबइ छलइ। कोनो कोनो बेर बाबु भैय्या सबहक कतऽ जग सब मे सेहो शहरसँनाि च्चआया अबइ। गामक बाहर गाछी मे नाि-गानक पोगाम होइ

छलइ।ि नी महतो अइ सब मे जी जानसँलागल रहइ छलाह। ओ सब समाजक नाि क भार लेने रहइ छलाय। नि ञाया ठीक करऽ सँलऽ कऽ ओकर सबहक खेनाई पीनाई सुतनाई- सब महतोकऽ ञाम्मा। जाबइत नाि - पाटी गाम मे रहइत छलइ, भुख यास सब हरा जाइ छलइ ि नी महतो के। दु ि इर बरख पर जमीन बेि ई छल आ ओइ पाइसँ करानाकऽ दोकान खोलइ छल। साल दु साल दोकान ि लबो करय.......फेर एके बेर दोकान बन भऽ जाइ। लोक सुनि जे ि नी महतोकऽ घाटा भऽ गेलइ।

ओकरा खेतीसँबेशी दोकनदारी मे रस भेटई छलइ।तै अपन खेत पथार ओ बटईया दऽ देने छल।

गाम मे ई ि ि सब बेर अकर दोकान बन भेलाक बाद होइ- जे एना कयैक भेलइ। दोकान पर हरदम भीड रहते छलइ, दामो अकर बेशी रहइ छलइ, मोल कम्मो नि करय छलइ, उधारी देबहो मे करकर करइत छलइ, सोलकनक ईएह टा दुकानदार छल- तै ओकर समाजक सब अतइसँकीनय। गाम मे ओना दु टा आर करानाकऽ पुरान दोकान बाभन सबहक छइन। उनकर सबहक बोली बानी नि नीक। तै सोलकने नि , बभनटोयोकऽ लोक सब ि नी महतोकऽ दोकान पर अबइत छल। बाद मे कतउ कतउसँगप छुटलइ जे ई ि नी महतो ढेकाक कमजोर छल। ओ अइ ि कर मे दोकान डुबेलकइ। भोर साझ त दोकान मे भीड रहइ छलइ,तखइन मौका नि लागइ, लेकन दुपहया मे ओ गडबड कऽ लइ छलाय।बजार जे ओ होलसेलसँसमान आनऽ जाय ओतउ ओ कछु कछु गडबड

कऽ लइ छलाय। गाम मे दबले ज़बान मे, लेकिन कहल जाइ छलइ।

ईएह कोटा रहलो पर ओकरा नौकरी नहि भेटलइ, मूदा कपार जोरगर छलइ, एकटा बेटाकऽ रेलवे मे नौकरी लाइग गेलइ। ओकरे कतऽ रही कऽ दोसरो बेटा सब पढलकइ। आब त िर कतउ कतउ नौकरी धेने छइ। छोटका त फौज मे छइ। ओकरासँ िनी महतोकऽ बडड सुख। ओ बेटा जखइन अबइ छइ, अंगरेजी दारूक बोतल सब रंक भइड कऽ अनइ छइ। जे पीलक तखन चिन्ता नहि, बलिका जायकाल मे अपन बापक हाथमे कऽ दइ छइ। फेर तऽ िनी महतो िनी काटअ लगइ छथिन। बडका बेटा रेलवे टीशन पर मालबाबु लागल छइ। सब समान िढला उतरला पर कमीशन बान्हल छइ। ऊयाह शहर मे जमीन कीन कऽ घर बनेलकइ, ओही मे िनी महतो दोकान चलाकाललाह अइछ।आब फेर कयेक बरख बाद दोकान खोललाह अइछ।अपने त दोकानक नाम पर शहर मे रहअ लागल छल लेकिन ओकर घरबाली गामे मे धान गहुम सम्हाडइ लेल रही गेलइ।ओ नहि अपन कनियायाकऽ परिहि करय आ नहि कनियाया ओकरे करय।

पहिलुका गामक दोकान मे त असगरे ओ सब काज करय छलाह। आब तऽ िइर टा कमासुत बेटाकऽ बाप छथिन, अपने दोकान मे झाडु पोछा आ बाकी काज कोना करताह।आब गल्ला पर अपने बइसई छथिन आ एकटा टेलिकऽ रखने छथिन। चलयो टेलि

दोकान मे चलैकइ नहि छइन। ओना पाइ कम्मे दइ छथिन, तखनो सब भाइग जाइ छइन। किछु ने किछु तऽ झोल छइ।

आब शहर मे घर पर समान पहुंचिबइकऽ फैशन भऽ गेल छइ। अइ कालोनी मे सेहो अकर लसाइड लागल छलइ। गामसँएकटा छौडा देबनाकऽ पकइड कऽ ुनी महतो दोकान पर रखने छल। ओ छौडा बडड पइनगर छल। ओ दऊड दऊड कऽ काज करय। भरीगर आ दुर बला घर पर समान पहुंचिबइ लेल साईकिलसँजाय।कतउ घर बाला सबसँ ज्यो ओ गप करबाक कारण देरी भऽ जाइ त माइड माइड कऽ छुटय ओकरा पर ुनी महतो। सब शान अइ छौडा पर झारय। ुनी महतोकऽ ई दोकान िइल गेल छलइन।

कालोनीकऽ बचि सबकऽ खेल खेलाइत देख कऽ देबनाकऽ सेहो खेलेबाक सेहन्ता होइ। ुनी महतो ओकरा खेल पर पलैकऽ नहि देबऽ िहइ छलइ। कतउ कतउ समान पहुंचिला पर घर बाला सब दु िइर टका देबनाकऽ द दइ छलइ। देबना ओकरा जमा करय छल।ओ दोकानक सब तरी कमाटी सीख रहल छलाय। ओकरो मोन रहइ जे कनी पाइ जमा कऽ कऽ शहर मे कतउ ओहो अपन ठीहा जमाति। अही धुन मे लागल रहइ छलाय। ुनी महतो अपन बेटाक देल अंगरेजी काया बोतल मेसँकनी कनी रोज पीबइ छल। एक दिन देबनाकऽ सेहो पीयई लेल जोड केलकइ। देबना त ओकर नौकर छल,केना बात कइटतइ.........दु घुंट दऽ

देलकइ। जहा तक ओकरा मोन पडइ छइ, ओइ राइत ि नी महतो ओकरा संग चकछु गलत बेबहार सुतली मे केलकइ। भोर मे जखइन देबना ऊठल त ओकरा सब बुझेलइ। ओ कनी काल बाद अपन झोडी ऊठेलक आ गाम पडा रहल।

इमहर ि नी महतोकऽ अइ खराब सोभा िलऽ कऽ आर चकयो ओकर दोकान मे काज करय लेल नचि गछइ छलइ। दु तीन हफ्ता बीतला बाद ि नी महतो अपन कचयासँभेट करऽ गाम गेल। थाह लेबऽ देबना कतऽ सेहो गेल। देबना कतउ बाध चदस गेल छलाय।ओकर मायसँ ि नी महतो चयकिन ि पिडल गप केलक। ओकरा पता ि इल गेलइ जे अतऽ सब ठीक छइ। थोडेक काल बाद जखइन देबना आयल त ओकर माय अपन गरीबीकऽ कननाई शुर केलक।हाच कऽ देबना फेर ि नी महतोकऽ दोकान पर काज करबाक गछलक। ि नी महतो एडबासे मे करकरऊआ टका देबनाकऽ मायकऽ हाथ पर राईख देलकइ।

महल्ला बाला ि नी महतोकऽ देबनाकऽ दोबारा अयलाकऽ बारे मे पुछइ त ओ कहइ - सब गमी आब ऊतइड गेलइ, त आइब गेल।गमीसँमतलब अतऽ जमा पैसा खत्म होबाकसँछलइ।

देबनाकऽ चासराजीकऽ कचया सऽ बडड गप होइ। चासराजीकऽ पोता देबनेकऽ बयसकऽ छलइ। उनका कतऽ

हर बेर समान लऽ कऽ गेला पर पाइ त भेटबे करय, उपरसँखाय पीयई लेल सेहो भेटई। ओ सच्चखन ब्मसराजी कतऽ जाइ लेल तैयार रहइ छल। जखइन ओ जाय तऽ घुरऽ मे ब्वलमा जाइ छलइ। ि◌नी महतो ओकरा अइ देरीक लेल एक दशा नच्चि छोडई। देबनाकऽ अइ ब्वगडाईकऽ कोनो असर नच्चि छलइ।

ब्मसराजीकऽ घर सेहो कालोनी मे मेने रोड पर छलइन। ि◌नी महतोसँबेच्चाये रोखगर उनकर घर छलइन। ब्मसराजीकऽ घरक सब लोक ओकरा मानऽ लागल छलइ। ब्मसराजीकऽ कच्माया देबनाकऽ गाम लगक छलच्वन। ओकरा गाम मे बाभनटोली मे उनकर संबंधी सब रहइ छलइन।ओ ओकरा गाम गेल आयल छच्थ। बडड लोककऽ च्चिनहतो हच्थन ओ। देबना ि◌नी महतोकऽ ि◌इल ि◌लनक च्चाकाइत इनका सब लग केलकइन।कनी मनी शक उनको सबकऽ बुझा रहल छलइन, लेच्चकन अतऽ महक्ला बाला बात छलइ। सबच्चनाकऽ झमेला बेमतलबकऽ ,कऽ ऊठाइत। ओ सब ओकरा दोसर जगह काज तकबा लेल कहलच्वन। अइ लेल मददकऽ भरोसा सेहो देलच्वन।

देबना एकच्चन उनकर घरक आगु तरकारीकऽ ठीहा लगबऽ कऽ बारे मे पुछलकइन। ओ सब तखने हं कच्च देलखीन।उनका सबकऽ तऽ एकटा मंगनी मे च्चिशासी ि◌कीदार भेट जेतइन। अतबे नच्चि , ब्वन सुदक पाइ पईि सेहो लइ लेल कहलच्वन। देबना आब अपन

गुमटी बनबऽ कऽ बारे मे सोिऽ लागल छलाय। सस्कृतक एकटा मास्टर साहब कालोनी मे रहइ छलन्खन, उनकासँदोकान खोलबाक न्द्न तकइ लेल कन्ह्न देने छलइन। आब पुरा जोश जोश मे देबना रहअ लागल छलाय।िनी महतोकऽ सेहो दोकान खोलबाक भनक लाइग गेल छलइ।

अन्ह्नना एक न्द्न राइत मे दोकान बन भेलाक बाद िनी महतो, देबनाकऽ नब दोकान खोलबाक खुशी मे अंगरेन्जया शराब पीयेलकइ। नशा मे अयलाकऽ बाद की भेलइ से अडोस-पडोसकऽ सेहो न्कयो नन्ह बुझलकइ। भोर मे दोकान नन्ह खूलला पर लोक घर मे तकलकइ त ओतऽ िनी महतोकऽ न्ाख्नत लाश भेटलइ। छुरासँसऊंसे देह मे गंथने छलइ।शोन्ात पुरा घर मे फैलल। बाकी कोनो समानकऽ नन्ह अगरम्भार भेल छलइ। सब घर मे सब समान ओन्ह्नना संइतल राखल। दोकानक गन्ला सेहो सुरन्क्त।खाली देबनाकऽ कोनो पता नन्ह। पुन्लसकऽ खबर भेलइ। लाशकऽ कब्जा मे लेल गेलइ। टीशन पर न्द्कली बाला रेन मेसँदेबनाकऽ पकइड कऽ पुन्लस अनलकइ। देबना अपन अपराध माइन लेने छल। िनी महतोकऽ बेटा सब आइब गेल छलइ।ओकरा सबकऽ पुन्लस बलासँलऽ दऽ कऽ सेन्टंग भऽ गेल छलइ। दु न्द्न बाद अखबार मे न्ाकललइ - "देबनाकऽ नब दोकान खोलइ लेल पाइकऽ जररत छलइ। ओइ लेल ओ अपन मान्लककऽ जान लऽ लेलक। आबसँनौकर राखऽ सँपन्हने जाि करा लेल करं"।देबना कोनो नौकर थोडे छल।ओ तऽ िनी महतोकऽ गऊंआ आ समाग छलइन। ई बुझअकऽ फुसया

ककरा छइ। महीना ब्चन अइ घटनाकऽ खोदबेद होइत रहलइ, फेर सब ब्बसइड गेल। जीनि कतउ रकलइया। िनी महतोकऽ बेटा सब दोकानक समान बेि कऽ पुब्लस िलाकऽ रपय्या उलीझ देलकइ। दोकानकऽ ब्ककराया पर उठा देलकइ। आब एस टी डी बुथ ओइ मे खुईज गेल छलइ।

देबनाकऽ पुब्लस बला ओइ घर पर जाि करय लेल अनलकइ। ब्मसराजीकऽ पब्वािरक लोक बाहरे मे ठार छलइन। सब बाल बच्िदार लोक, हत्यारासँकेना संबंध रखतइ। अकरा देब्खते सब घरक भीतर जा कऽ साकल िढा लेलकइ।

देबनाक बात बाहर नब्ि आइब सकलइ।ओकर अपन दोकानक सपना जेहल तर दबा गेल छलइ।अइ सपना देब्खते ओ कयेक राइत जगलाहे ब्बतेने छल। क्ण मे क्णाक भऽ गेल छलाई।केना ओ अपनासँबब्लष िनी महतोकऽ िकुसँगोईध देलकइ, ओकरा अपन ताकत पर आियथहोइ छलइ। कतेक बेर िकु गंथलकइ, ओकरा ब्ककछु मोन नब्ि छइ। ओ िकु िलबइत रहलउ। जखइन खुनसँसऊंसे ओ नहा गेल, तखइन छोडलकइ। एना लगइ जे ओ खुन नब्ि ललका रंग होइ आ ओइ ललका रंगसँओ अपन गामक नबकी भौजाइ संग होली खेलने हुआय।सऊंसे घर मे लाले लाल शोब्णत फैलल।

ओकरा सब हत्याराकऽ नाम दऽ देने छलइ। ओहन मोहक मुस्कान बाला छौडा, आब हत्यारा भऽ गेल छलाय।

असल मे तऽ हत्या देबनाकऽ अरमानकऽ भेल छलइ। ओकरा अइ लेल चौशिकऽ केलकइ, ओ जानऽ सुनऽ बाला अइ आन्हर बहीर संसार मे चकयो नचि छइ। देबनाकऽ जीनि पहाड भऽ गेलइ। तारीख पर कचकयो काल गामसँमाय अबइ छइ। तारीख पर तारीख लाइग रहल छइ। जखइन चमासराजीकऽ कतऽ कऽ लोककऽ गाहिी लेल कहल गेलइन तऽ ओ सब देबनाकऽ चनिहबासँइनकार कऽ देलचबन।देबना आ चमासराजीकऽ बीि भेल गपक बात तऽ कोटथमे भईये नचि सकलइ। अंचाम उम्मेद ईएह सब रहच्यन। सब खत्म भऽ गेल छलइ। सजा भेलाक बाद बाकी जीनि जेहल मे काइट रहल छल देबना।माय ओकरा जेहल मे भेट करऽ काल कहलकइ जे गाम समाज मे आब ओकर नबका नाम पइड गेल छइ " हत्यारा "। ओकरो लोक आब देबनाकऽ माय नचि कहइ छइ .... "हत्याराकऽ माय " नब नाम ओकरो भऽ गेल छइ। देबनाकऽ मायकऽ पचछने होइ जे एहन हत्यारा ओकर कोखसँकेना जनमलइ।जनचिमते चकअए नचि ओ नुन िटा कऽ माइड देलकइ। मूदा जखइन ओकरा िनी महतो बाला गप सब देबनाकऽ किील साहब बतेलकइ, तखनसँतऽ ओकरा " हत्यारा" नाम नीक लाइग रहल छइ। आब ओ अपने कहइ छइ-" हमरे देबना ओइ मुंहझौसाकऽ मारने छइ। हम ओकरे माय छीयई। हत्याराकऽ माय।"

आब ओ आईख िराअ कऽ नचि, आंईख उठा कऽ गाम जाय बला बस मे बइस िकिल अइछ।गर्मिँभरल आ अकरल ओकर देह भऽ गेल छलइ। आइ ऊपरसँईहो देखबयउ, ओकरा बस मे सीटो एकटा मंशा दऽ देलकइ। ओ मंशा आर चकयो नचि ब्मासराजीकऽ बेटा छलइन।देबनाकऽ कोटथमे ओ सब नचि चिन्हलचबन लेचकन बस मे ओकर माय लेल सीट छोच्ब देलचबन।

हुक्का (लघुकथा)

दुगा स्थान मे सब साल जेका जतराकऽ परात बैसार भेल छलाय। पपिच्चया मंच्चर कम्पाटी बाला सब जमा छल। धीया-पुता सब सटले परती पर खेला रहल छलाय।

कनीके काल पच्छने टेट बला सम्मायाना, दरी, कनात आ आरो समान सब समेटने रहय। एक तोड बैलगाडी पर लदाकऽ थोडे समान छिल गेल रहय। बाकी सब जमाकऽ क राखल गेल रहाय। समानक च्चानतीभऽ गेल छल। अहु बेर दु टा जाच्मम नच्चि भेठलइ।ई सब बेरक लीला छइ- च्चकछु ने च्चकछु हराईते छइ। मंच्चर संकऽ िरा कलऽ जेतइ। टेट बाला सबकऽ अपन च्चसाब बारी फाइनल करऽ काल मे दबाब बनबऽ कऽ तरीका छइ। ओ पुरना फटलाही जाच्मम केकर काज के। ऊपरसँदस च्चनसऽ ओइ पर ररधुम्मस भेल छइ। केहन हाल हेतइ से सोइि च्चयह। अहु बेर टेट बाला बजई छल जे अच्चाला बेरसँओ नच्चि आइत। ओकर सब सामान च्छया लेदरभऽ जाइ छइ। ओ एको पाइ फायदा नच्चि कमबइ अइछ अइ पूजा सं। ओ त पुरनका बेबहार छइ जे ओ आइब जाइया। नबका कम्पाटी बाला सब त ओकरा हटबऽ िच्चते अइछ- सब बेर पुरान आ फाटल िटल समान एतऽ लगबइ अइ। ओकर बातकऽ पच्चायेतइ। तखनो पुरना लोक सब ओकरे भार दइ छच्चन। ओकरा सब बुझल सुझल।कच्चया आ कखइन, कथीक जररत छइ- कहबाक काज नच्चि, ओ अपने नेने अबइत

छइ। गामक समागभऽ गेल अइछ ओ। सबके चीन्हइत अइछ। चकनकासऽ कोना चाबटल जाइ छइ-ओ पारंगत अइछ। कोन बच्चि कोन घरक अइछ- सेहो ओकरा बुझल। चकनका बागडबाक काज, चकनका आदर संग कहनाई आ चकनका लाठी आ गाइड तरे भगेनाई-ओ जनचित अइछ। चकछु बच्चि सब जमा कायल मसलंगकऽ पहाड बनाकऽ ओइ पर ढिई छलाह आ ओइ परसऽ कुईदकऽ उतडइ छलाह। बेशी बच्चिकऽ बाप चयती सब बगले मे बैसार मे जमा छलाह, तै टैट बाला नचि चकछु बजई छल। ओकरो चहसाब ओइ बैसार मे होइ छलइ। जे पाइ भेट गेल से भेट गेल, बचकयौता त फेर पर क साल। तै ओ अपन नम्बार आबऽ कऽ लेल साकाक छल।टेट बालाकऽ ई पपिच्चया बाला सबकऽ डपोरशंखी गप्प पर हंसी अबइ छलइ। दस बरखसऽ बेचायेसऽ मंच्छलक चकरीस्त बइन रहल छल। दमरी चकयो चाकालता नचि आ गप्प सुनु।ओकरो पाइ अखइन तक नचि बढेलाह अइछ। सब बेर-अचाला बरख। आब त ओ कचहतो नचि छइन। जेहने ढऊआ खरचिता, तेहने ने सामान भेटतइन।

बैसार मेसऽ आबाज एलइ जे रामा मायकऽ चहसा छोच्छ चयऊं।ओ बेरिरी कतऽ सऽ देतीह। झटसऽ दोसर लोक ओकर समथचा केला। बैसार मे पासभऽ गेल जे रामा मायकऽ चहससाकऽ दिा देबऽ कऽ नचि काज।

"रामा " नाम सुचाते, ओतइ टेट बाला जमा मसलंग पर कुदइत "

दीना "कऽ कान ठारभऽ गेलइ। ओ सब छोड़ि क, बैसारक गप्प पीबऽ लागल। ओकरा ई फैसला ठीक नहि लगलइ। ओ चुनकोसऽ कम चुकयैक। ओ दौडल घर गेल आ दाईकऽ कहलकइ ई समस्या बाला बात। दाई ओतेक बुझलखिन नहि। कहलखिन जे हम पता करय छी जे की बात छइ।

- पता चुक करबही। हमहु समस्या देबइ -मंडल मे। ईएह गप्प छलइ।

-

ठीक छइ। दइयही। तु केकरासऽ कम। आबऽ दहुन पटी बाला सब के। हम कहबइन एना चुकअए केलाह। हमहु समस्या देबइ। ओना दुगा जीकऽ कहून की अतेक पाइ दथुन जै तौ असकरे मंडल बना ले।

दीना ओतइसऽ मोनेमोन दुगा महारानीकऽ ई गप्प कहि देलकइन। दाई ओकर कल जोइडकऽ दुगाजीकऽ कहलखिन जे दीनोकऽ सूझायउ हे महरानी।

रामाकऽ दाई कहि त देलखिन लेचुकन कतऽ सऽ पाइयक बेबसथा हेतइ- से सोिऽ लगलीह। मोने मोन हंसयो लगलइन जे बाबा बला शान पोता मे आयल छइ। हम चुनकासऽ कम।

रामाकऽ गाम त ओना बडकी टा छइ। सोलहो बरण ओइ गाम मे - एको दु घर भेच्चटये जाइत। दुगा पूजा पा पटी ब्मालकऽ करय छइ। गाम मे इनका सबकऽ पपिच्चटया कहल जाइ छइन। पूजा ईएह सब शुर केने छइथ, तै पुरा बेबसथा इनके सबहक हाथ मे। गऊंआसऽ िदा पूजा लेल नचि लेल जाइ छइ।

पपिच्चटया मे हर सालक पार िलइ छइ- दुगा पूजाकऽ लेल। पूजाकऽ अला नाि गाना आ मनोरंजनकऽ बेबसथा गऊंआकऽ कब्माटी छइ, से करय छइ।पच्हने त नटुआ अच्बाते टा छलइ लेच्चकन आब त मुजफ्फ्ररपुरकऽ कब्बाली पाटी ि बेच्लायाकऽ बाईजी अबइ छइ। अइ गामक नाटक नामी छल।कयेक गामक लोग देखऽ अबइ छल। अबइ त अखनो अइछ - बाईजीकऽ नाि ि दुअथी कबाली सुनऽ च्क देखइ लेल।आबकऽ खेलत नाटक आ कतऽ सऽ आइत नटुआ। सब च्चकछु अतेक जक्दी बदइल जेतइ- च्कयो सोिने नचि छल।

दुगा मंच्दरकऽ भनि बडड पुरान छल। बरका बाईढ मे अकर थोडे भाग खइस परलइ। ओकरे दोबारासँबनबऽ कऽ बारे मे सब साल जेका अहु बेर सेहो बैसार मे ि ि भेल छलइ। पपिच्चटयाकऽ एकटा च्बशेषता छइ- आपस मे खुब पटीदारी करत- सब एक दोसरकऽ लंगी मारऽ लेल तैयार बैसल, आपसी मोकदमाकऽ त पुछु

नवि। लेकिन जो दोसरासऽ कोनो झमेल, त सब एकभऽ जाइत। गाम मे आब दोसर टोलकऽ कतेक पाइ बलाभऽ गेल छइ, जे पछियाकऽ जेबी मेलऽ क घुमतइन। ई सब ओकर पंसगो मे नवि छइथ, मूदा दुगा पूजा, गंिरी नवि होबऽ देलखिन।

ओना हिंदू धमथमे छइयो- आहा अपन गोसाउन घर ि पूजा घर ि मंदिर राईख सकइ छी, लेकिन मुसलमान जो मसजिद बनेलक त ओ समाज कभऽ जाइ छइ। ककरो नमाज पढअसऽ रोईक नवि सकइ छी। दुगा पूजा मे अपन लिती त पछिया देखइबते अइ- धमक पाछा छइजो जाइ छइ।

आब देखू पछियाकऽ आपसी दा-पे। दीनाक बाबा, बालदि ठाकुर उफथबाला बाबु पुरना कागेसी छलाह। आजादीकऽ लडाई मे सेहो भाग लेने छलाह। जेहल नवि गेलाह तै रामा मायकऽ पेशन नवि भेटलइन। कोशिश पैरवी खुब भेल- लेकिन नवि भऽ सकलइन। पटना मे एसेम्बलीकऽ टिकट फाइनलभऽ क नाम कटनकर चदली गेल छलइन। तखुनका अध्यक कहलखिन जे -

"आहा अपन केत्र मे जाऊ-परिर शुर कर। टिकट बुझु की ने, आहाकऽ भेटिये गेल अइछ।" ओ केत्र मे आइब गेलाह।मोटर कीनलाह।गामे गाम घुमनाई शुर कयलाह।

बाला बाबुकऽ कंगेच्मया सब गर्च ादऽ देलकइन। उनकर च्टकट कइट गेलइन। दोसरकऽ भेट गेलइ। बाला बाबु पाछु हटअ बाला लोक नर्च ि।च्दअयद बाद आर ि ढा देलकइन। ओना पच्छनेहेसऽ कहल जाइ छइ- च्कनकोसऽ बदला सुतारऽ कऽ हुिय त, या ब्धायकीकऽ इलेक्शन लडा दी ि पुरना मोटर गाडी खरीदा दी।

पच्बष ा आ िट दुनु दु ीज होइ छइ। पोच्बंग बूथ पर इनकर पैर छुअ बाला लोकक लाइन, िटक लाइनसऽ पैघ छलइ। ओइ समय कागेसकऽ एहन लहर छलइ जे कुकुरो ब्बलाई ओकर च्रन्ह पर जीत जाइ। बालाबाबु आ कागेसकऽ उम्मेद ािर दुनु ि नाि हाच्ब गेलाह। तेसरे जीत गेल।

आब शुर भेल बाला बाबुक दुच्दथ। पच्छने मोटर ब्बकेलइन, फेर दोसर गामक जमीन,फेर गामक खरहोइड, फेर नासी, फेर धनहर खेत, फेर पच्चम भरक गाछी। कतेक कजा उठा लेने छलाह से अपनो अंदाज नर्च ि। घर- घरारी आ थोरेक बहुत सच्झया गाछी , पोखइड, खेत ब िलइन। बाद मे ब्बच्कप्तभऽ गेलाह आकऽ एल सहगलकऽ गाना गूनगुनबइत मइड गेलाह। अपना जीबते मे जेठका बेटा "रामा ठाकुर " केन्सरसऽ मइड गेलइन- आठ महीनाकऽ दीनाकऽ छोच्ब क।

अइ गामकऽ बालाबाबुकऽ गामसऽ लोग जानय लागल छलइ। ई बात पपिच्चयाकऽ लोककऽ अखडइ।बालाबाबु कागेसी रच्हतो सामंती सभािक छलाह। पपिच्चयाकऽ चकयो उनकर सामने ठाढ नचिभऽ सकइ छल।के नचि उनकर पटना बाला डेरा पर आयल छल। चकयो आबय- भोजन भेच्चते टा छलइ। हं ई सही छलइ जे पुछा-पुछी नचि छलइ। अपने जाऊ आ भनचसयासऽ खेनाईलऽ चलयह। तखइन त अतेक लोक अबइ।लोको मीन मेख नचि चाकालइ। कोनो बाला बाबु चकनको बजेने त नचि छेलचवन।अपन काजसऽ ककरो कतऽ जायब, त ओइ समय मे अइसऽ बेशी उमेदो लोक नचि करय छल।

ऊयाह बदला आब ओ सब उनकर पचवारिकऽ दीन-हीनकऽ र प मे बाईज कऽ केलक।

ई कमाल देखू- रामा मायकऽ त चलससा देबऽ सऽ बि देलकइन । सहानुभूचाकऽ पात बनेलकइन, लेचकन अपनो चकयो नचि देलक।देबऽ कऽ हूब्बा होइ छइ। ओ कतऽ सऽ होइतइन। सब बेर अचलना बैसार होइ। चकरीस्त बनचि-सीमेट, ईटा, छडी, बालु, मजुरीकऽ चलसाब होइ आ साल बीत जाइ।बजट सुरसाकऽ मूंह जका बढइत जाइ छलइ।

दीना ठाकुर ओतेक पढल चलखल त नचि। चदक्ली मे एमहर ओमहर

बऊ लिाकऽ बाद आब कयेक होटल सब ठेका मे लेने अइ आ लिबइत अइछ। च्िकिन पाइ कमा रहल अइछ। नब भनि दुगा मंच्दिरकऽ बनबौलक अइछ गाम मे। बाला बाबुकऽ पुरखाकऽ बनाबल मंच्दिरकऽ पपिच्ञया ठीक तक नच्िि करा सकल। आइ संगमरमर पर च्ज्ञखल पटी,दीनाकऽ दाईकऽ नामस, सेहो मंच्दिरक आगा मे लाइग गेल।

गऊंआ कच्ञ्ह रहल छइ - जे हुब्बा बालाबाबु मे छलइन उएह हुब्बा दीना देखेलक। दीनाकऽ अफसोस होइ छइ - जे दाई रच्ञ्हतै त ओकरा कतेक खुशी होइतइ।ओ त अपन बाबाकऽ नच्िि देखने छल। लोक मजा लइ लेल ओकर बाबाकऽ च्ञ्खस्सा कहइत रहइ छल।

ई हुब्बा कखनोकऽ जानलेि सेहोभऽ जाइ छइ। तै बइ किऽ अइ हुब्बा सं। सोइि समइझकऽ काज कर। बाला बाबुकऽ त ईएह हुब्बा सब च्ककछु "च्बाला" देलकइन आ दीनाकऽ हुब्बा समाज मे पच्ञाष I च्दयेलकइ।

इच्छा (लघुकथा)

सुतले रहइथ रमन, चक "बापता"कऽ शोर पाडइत सुनला- उठु ने, "घुरन बाबु" अपने आयल छथ्- आहासऽ भेट करबाक लेल।

राईते रमन अयलाह आ भोरे घुरन बाबु आइब गेलाह। कतेक मजगुत उनकर खुफ्या तंत गाम मे छइन- से बुझु। बाना कतउ गेने- सब खबर रही छइन। चकछु खास लोक उनकर सब टोल मे छइन।

पुरा घर मे दलमल म िल अइछ। लोक सब पदा हटाकऽ बहरी दलान बशि ताईक रहल अइछ। पाइन ओ पीब ि किला आ ि ह उनकर सामने राखल छइन।

कतबो ओ कहलबन जे हम ि ह अखने पीकऽ आइब रहल छी, तैयो ि ह उनका लेल बइने गेलइन।

जगक आंगन रहइ। कयेक लोक घुरन बाबुकऽ देखने नि छइन-नाम त सब सुनने छइन। स्त्रीगण महाल मे त बेशीये फुस्सा फुस्सी।चकयो कोनठा लग ठार त चकयो बखडकी सं। पुरख पाहुन सब सेहो नमस्कार नमस्कार करइत घुरन बाबु लग पहुंि गेल

छलाह।

अहु बयस मे अतेक भव्य लगइ छलाह। दुरेसऽ लगइ जे चकयो बइसल छइथ। दरबज्जा भरल बुझाई। सब धन्नाकाहाकऽ अन्हना हिरा मोहराभऽ जाइ छलइ। हिरा देखबयेकऽ लाइग जईता, चक कते समपइत चलनका हेतइन। एकटा हैदराबादकऽ नाजामे एहन छलाय, जेकरा देखला पर बुझईता जे कतेक दबद अइ।

घुरनबाबु बडड कम बजई छथ्थ- सुनथि आ मुचमकयाई बेशी छइथ। ई मुस्की बडड मार क छइ, थाहे नथि लागय दइ छलचबन जे खुश भेलाह आ चकछु आर। कम बजनाई, सेहो धन्नाकाहाक गुण छइ। आब ई गुण ससइडकऽ आइब गेल छइ- अफसर सब मे। जतेक बडका अफसर, ओ ओते कम बजताह। आहा बजबासऽ अंदाज लगा सकइ छी, जे कोन पद पर छइथ। एना िप रहइ जेता, जेना बजलासँदु कठा जमीन ककरो चदअय जेतइ।

घुरन बाबु िप्पे मुंहे सबसं पचबयि पातकऽ रहल छलाह। बापता, बचिसँउनके घर धेने छल। आब उमहर गडबडेलइ त इमहर धेने अइछ। आब त सीधा सादा फमुश्वा छइ-

बाबू बडा न भैया, सबसे बडा रपैया।

जे बेशी पाइ देतइ, ओकरे काज करतइ। बापताकऽ पुरना मालिक छलखिन त ओहो- लक्लो पिो मे लागल छल। तै रमनकऽ उठबऽ आयल।

घुरन बाबुकऽ " हरि अनन्त हरि कथा अनंता" बाला खिस्सा सब छलइन।

आजुक समय मे सरकार दु टा बियाह करऽ मे , ने रोक लगेने छइ- राखऽ मे त नहि। ओ अही खातिकऽ छलाह। शहर मे एकटाकऽ रखलखिन आ ओकर पुरा भार ताउि उठेलखिन। गाम मे सेहो एकटा नसथकऽ पच्छने रहइ लेल कोठली देलखिन आ बाद मे घरे मे आइन लेलखिन। लोकक लेल ओ नसथ्र मोन खराब मे सेि करऽ लेल आयल छलइन, बाद मे त सबधिना उनके कतऽ रहअ लगलइन। ओहो नसथाया जबार छल- पुरख कियो किछु कहथिन से त बुमते नहि, स्त्रीगण मेसँकियो किछु कहइ, त उनका तेहन ने ज़बाब दइन जे मुंहे बंदभऽ जाइन। ई नसथत हाल तक छलइन।सबसं कमाल ई छलइ जे कखियो कियो खाकाइत नहि केलकइन। पीठ पाछु लोक मस्ती मे कहइ- घुरन बाबुकऽ बडड सूनर " डेबऽ " अबइ छइन। ईएह 'कला "कऽ कारण सबहक बाजासाकऽ केद बनल छलाह।

उठअ पडलइन रमन के।

घुरन बाबु त कतउ जाय बला लोक नहि।ओ त अपन कोनो बच्चनक सासुरो तक नहि गेल छइथ। अपन सासुर, बबाहक बाद कतऽ सऽ जयताह।अही तरहक कयेक टा गुणक भंडार छलाह, तै ने िटी जेका सऊंसे लोक उनकर लग ससइडकऽ आइब गेल-बान बजौने। ईएह त छइ "आकषण"।

रमन जा कऽ गोर लगलखिन। हाल िल पुछलाकऽ बाद घुरन बाबु कहलखिन-

आहा हमर घर अबातऊं- त बडड खुशी होइताय।

- चकयैक नहि। हम कनीके काल मे अबइ छी।

बस घुरन बाबु उठलाह। सबके नमस्कार केलाह आ िलइत बनलाह।

रमन बुझई छलाह जे ओ चकयैक अयलाह अछ। आइ तक त कक्कयो घर पर बजेला नहि। उनकर घरो जादुगरक बाक्सम छइ। कतेक तरहक बवस्सा। चकयो कहइ जे सब देबालक बीि मे घर गरम करबाक बेबसथा छइ। जारइन ओइ मे दइत रहु आर माघो मास उघारे देह सूतु। ततेक गमश़ घरभऽ जाइ छइ। चकयो कहइ जे उनकर घर मे जे बंदुक छइन ओकर मुठ "सोना"कऽ छइ। उनकर चदअयद त कक्कयो उनकर कतऽ जाइये नहि सकइ छथ्थ-रमन त सद्य दोसर टोलक।

गामक लोक अंदाज लगा लेलक जे की बात छइ। चकयो चकयो

तुरपा फेकइ छलाह - जे अही लेल- त कयो दोसर लेल। अंदाज लगेनाई शुर भऽ गेल छलइ।

उटकर पि डेढ सै।

घुरन बाबु आ रमनक समीकरण सबहक बुझबासँदुर छलइ लेकिन मानतइ के।

घुरन बाबुकऽ बेटी करण आ जमाय सुधीर बादेश मे रहइ छलखिन।करण ओतऽ दुखताईभऽ गेल छलखिन। आब उनका देश मे रहबाक शौक जागल छलइन। भेलइन जे पाइन बदलत तभऽ सकइत अइछ जे मोन ठीकभऽ जाय।

ओतऽ सँदिल्ली आयल छलाह आ अतइ घर कीनबाक उधेरबुन मे छलाह। कतउ कतउ घर देखतो छलाह। अतुका समाजसऽ सबदीना कटले रहलाह। दुखित त करण पहिनहेसऽ छलखिन, ऊपरसऽ दिल्ली मे अइ गमी मे मुहल्ले मुहल्ले घुमायेनाई। पोपटी एजेट सब घुमबइत रहलइन। करणकऽ लू लाइग गेलइन। अस्पताल मे भती भेलीह , लेकिन बइि नहि सकलीह। सुधीरकऽ दिल्ली मे कयो नहि अपन। घुरन बाबुकऽ खबर भेल। ओ कयेक लोककऽ सुिना देलखीन- मदद लेल कोना कहथिन।कयो नहि

टघरलइन। गऊंआ ब्लसाबे रमनोकऽ कहलथ्बन।

रमन अस्पताल गेलाह। ओतऽ सुधीरसऽ भेट भेलइन। सुधीरक दुनू बेटा सेहो बादेशसऽ आइब िकिल छलइन। दुब्बतेकऽ खबर ओकरा सबकऽ छलइ।ओही पर ओ सब आयल। अस्पताले मे बापसऽ लडअ लागल जे अही मारलऊं हमर माय के। कोन काज छल हुनका भारत अनबाक लेल। आहाकऽ अपन मोन भेल त आहा जाऊ। आहाकऽ छी अपन बाि र थोपअ बाला।व्यक्तगत आजादीकऽ आहा सीमा लंघलऊं। अपराधी छी आहा ...... अल्हना कतेक उपराग।........ हम सब पुल्सकऽ बपोर्ट करबइ।............. अहा योजना बनाकऽ मायकऽ मारलऊं।आरो आरो बात सब। सुधीर माथ पर हाथ देने गुम्म बैसल।

अस्पताल मे आरो मरीजक तीमारदार सब ई तमाशा देखइ छलाय।रमन त बकनको बिन्हइतो नबि छलाह। भीड देखकऽ उम्हर गेलाह त सब बुझा गेलइन।

रमण सीधा सुधीर लग गेलाह आ घुरन बाबुकऽ समादकऽ बारे मे बतेलथ्बन।

सुधीर बजलाह-

-ईएह लीला छल हमर घर के। तै पराअकऽ अतऽ अयलऊं।

भाग्य हमर साथ नहि देलक। चकरण संग छोड़ि देलीह। हमरा त दाह संस्कारकऽ कोनो जान नहि। आहा कहूना करबाअ चद्रय-कल्ह क-कलजोइडकऽ ठारभऽ गेलच्चन।

-हमर कोनो भी चाणथा पर कल्हयो सबाल नहि उठेली आ ऊपरसँसंग सेहो देलीह। देश घुरऽ कऽ हमरे इच्छा छल, जैकरा ओ अपन कहलीह।हम ठीके दोषी छी। जे सजा दइ जैब से दीयह, मुदा पल्हने उनकर दाह संस्कार अपना सबहक चाच्चसऽ करबाऊ-दहोबहो कनचि त सुधीर बाईज रहल छलाह।

रमन चद्रकल्ली मे त तीस बरखसऽ रही रहल छलाह। बहुत रास संस्था सबसँसेहो जुडल छलाह। लोक सबकऽ खबर केलच्चन। दस लोक करीब भऽ गेलाह। सुधीरक बेटो सब, मोनक चाकार चाकललाकऽ बाद शात भेल। सब चकयो चागमबोध घाट जाइ गेलाह। ओतइ चिता पर लकडीकऽ बीि मे चकरणक देहकऽ जखइन राखल गेल छलइन तखने सुधीर बजलाह-

-

आब हमराकऽ सहारा अइ। हमर अंचाम इच्छा अइ जे चकरणक एकटा फोटो लइचायइन। ऊयाह हमर जीिनक संबल छलीह। हमरासऽ बयस मे छोट छलीह आ पल्हने छोड़ि देलीह। धरफरी मे छलीह। हमर अंचाम इच्छा आहा कहूना पुराकऽ दी। ताल्ह जमाना मे कैमरा मैनकऽ बजेनाई आसान नहि छलइ। तखनो रमन, िदनी िकसँस्टुडीयो बालाकऽ बजबेलाह। ओ चकरणक मृत्यु शैय्या परक फोटो खीिलक।फेर मुखाग्नि बेटा देलखीन।

सुधीर स्टुडियो बालाकऽ पाइ देबऽ िहलखिन लेचकन ओ नचिं लेलकइन।

सुधीर बाकी संस्कार हरिदार मे कयलाह। सब बेबसथा घुरनबाबु करि देने रहथिन।

हरिदारसऽ सुधीर सासुर गेल छलाह। ओतऽ अदोपात सब बात घुरन बाबुकऽ कहलखिन। अंतिम इच्छा सेहो पुरा भेलइन।

अकरे धन्यबाद दइ लेल घुरन बाबु गेल छलाह। पाछले पाछल रमन सेहो उनकर गमथाघर मे बइसलाह। ईएह त "डेबऽ " बाला कला छलइ , जईमे घुरन बाबु माहिर छलाह- रमन सेहो आइ बुझि गेलाह।

ऋशन एडकेशन (लघुकथा)

रमन मैट्रिककेऽ इम्तहान पासकेऽ किला अइछ। नम्बर ठीक ठाक छइन। जेहने विद्यार्थी रहता, तेहने ने नमरो एतइन। आब शुरु भेल आगुक योजना।

रमनक पिता बुधन बाबुकेऽ सेहो अपन पढबाक इतिहास छलइन। सात बेर मे ओ तिमिया मैट्रिक पास कयने छलाह। उनकर पढाइकेऽ पाछु पुरा हरिखअय मौजे ठाका गेल छलइन। सतमे मे जखइन छलाह तखनेसऽ उनका तासक नशा छलइन। जाबइत कोटथपीस मे "कोटथआ टिटी एट मे "लालक सेट " नहि होइ, ओ सुतइ नहि छलाह। उनका मोन लगेबा लेल गामक िइर गोटेकऽ सेहो उनकर कलकता बाला घर मे रहबाक बेबसथा केल गेल छलइन। िइर मे तीन गोटे त तासक गोष्ठीये भेलाह आ बिला एक गोटे- से राजा दैि ज्यो अइ मेसऽ चारियो नहि उपलब्ध छथि, तखन लेल। खेल त नहि र कबाक िही ने। ओहो गोष्ठीया दुआरे। जे हाथ मे छलइन -से उनकर बाबुजी केलखिन।

ई िर गोटे पईढ लिखक केऽ आगु बइढ गेलाह आ बुधन बाबु िपस गाम घुइड गेलाह। एको किलास आगु पास नहि केऽ पौलाह। नौिि पास कहिययउन ि दसमा फेल - ईएह भेलइन उनकर शहरक कमाइ।ओ त कहिते छलखिन जे पढाइ छोअइडकऽ कोनो काज

करा चलायह। उनकर बाबुजी नहि सुनलखिन चलकछु। आब भुगतस।

आब रमनक बेर आयल छलइन। हरखदअय सनक धनहर मौजे बुधन बाबुकऽ पढबा मे बाकेलइन त रमनो मे चलकछु बचलाते छइ। आब त मौजे नहि रहलइ-सब सरकारलऽ लेलकइ।जैह छइ, ऊयाह बाकेतइ। बेबसथा त अचलने होइ छइ ने- "ओ पढाइ की, जई मे जमीन नहि बाकाय।"

कालेजक पढाइकऽ खथिकोनो हंसी ठठा छइ। बुधन बाबुकऽ गाम आब बलचलारकट बोडथमे आइब गेल छलइन। अखनो बडकी टा खरहोइरे छलइन। अकर बगल तक बस्ती आइब गेल छलइ। चलकछु लोक चलदन राइत बुधन बाबुकऽ आगु पाछुकऽ रहल छल। ललका झंडाकऽ उत्पात सेहो शुरभऽ गेल छलइ। उएह सब बुधन बाबुकऽ मोन मे डर बइसाबऽ लगलइन जे बजार मे सुनलऊं चक ने अहाक खरहोर पर ललका झंडा लगाकऽ कब्जा करऽ बाला अइछ। बुधन बाबु ि टि दं ज़बाब देखयन -ई त हमर खचलाहानी जमीन अइछ। कोना कब्जाकऽ लेत।

-अरे आहा सुनचलायई नहि जे बरगाि बालाकऽ कयेक बीघा पर झंडा लगा देलकइन। चलकछु नहि कऽ सकलाह। कयेक बेर हंसेरी सबकऽ जमा कयल गेल। लेचलकन ओ चलटडडी दलकऽ की करतइ। ततेक ने लोक आइबकऽ बइस गेल जे नचलये उजाइर पेलाह।

दोसर गोटे बजलाह-

खुब थाना पुलिस भेल। पाइयो खुयेलखिन, लेकिन कब्जा नहि भऽ सकलइन।

- आब केस लिड़ छइन।कतेक बरख लितइन, सेकऽ जनिते अइछ। चालिसक मोकदमे एहने होइ छइ। पीढी बदइल जाइ छइ मूदा फैसला नहि भऽ पबइ छइ।

-तेसर गोटे उपरसऽ टीपई छइथ -

बेहरी बालाकऽ त ओतऽ कहिरी रहइन-ओहो हाथसऽ निकिल गेलइन।

अखुना सबखन ओ शहर बाला सब बुधन बाबुकऽ डरबइत रहइ छइन। ओहो सोचिऽ पर मजबुर छलाह जे बडका बडका कलामी घरबाला सबकऽ ई हाल, त उनकर की हेतइन। कोन भरोस, कखुनयो ललका झंडा उनके खेत पर नहि गाइड दइन।

इमहर गऊंओ सब उनका बडड अंईठल बुझाई लागल छलइन। अपने मे सब मगन। बुधन बाबुकऽ कोनो मोजरे नहि। उमहर देखू शहरबाला सब के, कतेक आगु पाछु करइत अइछ। ललका झंडाकऽ बारे मे उएह सब बतेलक। अपन गऊंआ त चुपकछु कहइते नहि अइछ। ओ चुपकछु ने-डाह होइत हेतइ अकरा सब के। भीतरिया बुद्धअयदी त निकिलते छइ ने

बुधन बाबुकऽ धीरे-धीरे पुरा गाम - समाज आन, आर शहर बाला सब अप्पन बुझाई लगलइन।

एक दिन ओ सब कहबो केलकइन- अइ गाम मे आहासऽ बडका के?

गामक नाम आहा पर होबाक चाही।

-आहा खरहोइड देला जमीन हमरा सबकऽ लाख टकायह। हम सब आहाक नामसँकालोनी बनायब।

ई गप्पक असइड आब बुधन बाबु पर पइड रहल छलइन। नामक नशा त सबसं बडका नशा थीक।

इमहर रमन सेहो मैट्रिक पास केलकइन। अपना बेर मे हरकोअय मौजे त बेटाक बेर मे खरहौरे बेचिनाई त बनते छइ।

बुधन बाबु चुपेचाप खरहौरे, अपन नामक कालोनीक लोभे बेचि देलाह। जखइन बिना मेहनतकऽ हाथ पर मोट पाइ अबइ छइ त ओ नचाबि रकइ छइ। अपना संगे कतेक रास आदत आ शानकऽ सेहो अनाबि छइ। जमीन कीनऽ बाला लोकक लाइन लाइग गेलइ। शुरू मे त सब बसऽ लेल हाथ जोईड कऽ अबइ छइ।

रबसरी होइते ब्रारब्राटोसऽ बेशी जल्दी रंग बदइल लइत अइछ। सस्ते मे कतेक लोक जमीन बखा लेलकइन।

आब सबाल उठलइ बुधन बाबुकऽ नाम पर कालोनी बनबऽ कऽ त ओकरा सबकऽ " बुधन" नाम ठीक नहि लगलइ। ओ बूधन बाबुकऽ बाबा "धनीलाल बाबु"कऽ नामसँ"लाल" लेलक आ कालोनीकऽ नाम "लाल बाग" रखलक। ई बकछु नहि- फुसयाही गप्प बुधन बाबुकऽ नामक बारे मे कहल देलकइन। आब कयले की जा सकइत अइछ।कतउ "नामक" बखा-पढी त भेले नहि छलइ।

"अपन हारल बहुक मारल कतउ बकयो बजलक" - मोन मसोईसेकऽ रही गेलाह बुधन बाबु।

आब शुर भेल रमनक कालेजक पढाइकऽ अध्याय।

रमनकऽ गाम मे सब कहऽ लगलइन

-" आहाक बाप त सब बेि देताह। घरो घरारी नहि बाित"।ई बात उनका सुनबा मे अधलाह लगइन।

अइ घरक जे परम्परा छलइ ओइ मे नहि बुधन बाबु अपन बताकऽ

चकछु कहलचखन आ नचि रमने चकछू बुधन बाबु के।अतबा मोन मे रमन चायिकऽ लेलाह जे अतऽ गाम मे ओ नचि रहताह आ नचि पढताह।

कयेक संबंधी सब गाहे-बगाहे अतऽ अबइ छलाह आ बुधन बाबुकऽ उदारतासऽ उपकृत होइत रहलाह।

आब रमनक बेर छलइन।

पैघ शहर मे एकटा संबंधी रहइ छलचखन। ओतुका कालेज सेहो नामी छल। रमन गामसँओतऽ पहुंिला। पचहल बेर असगर बहरायल रहइत। माय हुनकर कयेक टा सनेशक मोटरी संगकऽ देने रहचयन।ओ घरबइया, रमनकऽ देचखते बडड खुश भेलाह। ऊपरसऽ अतेक तरहक सनेश। पुरा मान-दान भेलइन रमन के। रमनोकऽ बुझेलइन जे अतेक चदन ओ चकअएह नचि आयल छलाह। आब हुनका अपन पचािर पर गिथबुझाय लगलइन। अपन आगुकऽ कालेजक पढाइकऽ बारे मे सचिस्तार गप्प सप भेलइन। अगले चदन ओ संबंधी कालेजसँएडचमशनकऽ फामचलऽ क अयलाह। अचाला रचिकऽ फुरसत मे फामथभरबाकऽ बारे मे सोिल गेल। एक हफ्ता बीत गेल छल। रचिकऽ फामथभरबा काल छातािसक कालम अयलइ। ओ संबंधी आ रमन एक दोसरा चदश ताकऽ लगलाह। रमन त एडचमशन लेल आयल छलाह। रहबाक चिषय मे त सोिने नचि छलाह। तखनो बजलाह - होस्टल त छइ ने कालेज

मे। ओतइ रहब।

संबंधी बजलाह-नहि नहि। अतइ रहब।

तखनो फामथमे होस्टल भरेलइ।

सुतली राइत किछु कनफुसकीकऽ आजिसँरमनक नीद टुटलइन-

- आहा किएअए कहल जयई जे अतइ रहब।

- ई केना ने कहल जायई।

-अपनो बाया-पुता अइछ। सेह बुझल अइ ने। धीरे धीरे खा बढत।

- अइ शहर मे रही कऽ होस्टल मे रमन रहताह त कतउ मुंह देखाबो जोगड रहब।

-सबदिना अतऽ राखब से ओकाइत अइ आहा के। हमर भाइकऽ कते मोन छलइ अतऽ पढबाक के। ओइ बेर मे त नाक पर माछी नहि बइसऽ देल जयई। अइ बेर देखू ने।

- आहा बुझअकऽ कोशिश कर ।

-ओहो। हम बुझइते नहि।सब त अही बुझई छयई।

-हम त कोदो खाकऽ पढने छी ने।

-कोनो जर रत नहि छइ। मेजनी करऽ के।

-आठ दिनसँबेशीभऽ गेलइन।कहल या जेताह।

-हम केना पुछबइ।

-कोनो काज नहि छइ अतऽ एडमिशन के।

अच्छना बडी काल फुसफसी लिइत रहल। चिकछु रमनकऽ सुनेलइन आ चिकछु नाकषथमकाललाह।

अचाला च्छन रमनक फामथकालेज मे जमाभऽ गेलइन।

एक हफ्ता बाद एडमिशनकऽ च्सस्ट नाकललइ। रमनक नाम ओइ मे नहि छलइन।

ओ संबंधी बडड अफसोस जाच्हरकऽ रहल छलाह। आब रमनक सोझा गाम घुरबाक दोसर कोनो रस्ता नहि छलइन।

तच्छया त शहरक पच्छले दुनाया देखने छलाह। आब होइ छइन जे कही उनकर एडमिशनकऽ फामथजमे त नहि भेलइन। जमा नहि भेलइन त च्सस्ट मे नाम कतऽ सँअऊतइन।उनका कालेज नहि जायल देल गेलइन- ई की स्नेह छल िसाच्मश। ई पहेली उनका भइड जीनि च्बहाडइत रहलइन। ज़बाब नहिये भेटलइन।

गाम मे सब उम्मेद लगौने जे ओइ शहर मे त कयेक टा नीक कालेज छइ। कोनो ने कोनो मे एडमिशन भईये जेतइन।ऊपरसँजे "फला" ओतऽ छच्थये- कोन बातक चिंता बेगरता।" फला"कऽ अनुभलिऽ

क रमन गाम मे छथ्थ। लालबागकऽ बोडथलाइग गेल छइ। रमनकऽ ओ बोडथकटहा कुकुर जेका लगइन। उमहर गेनाई ओ छोड्ढ देने छलाह।रमनकऽ घुरल देखकऽ , घर मे सब दुखी छल। मातम जेका पच्चच्चथच्चभऽ गेल छलइ घर मे। उम्मेद टुइट गेलइ जेना।

अच्चाला च्चदन भोरे भोर दोसर टोलकऽ बीर ठाकुर रमनक घर पर आयल छलाह। अयबाक मकसद त जमीनक थाह लेल छलइन।देखार नच्चि भेलाह। बुधन बाबु लग बइसलाह। कालेजक पढाइकऽ नाम पर जमीनो च्चाका गेलइन आ रमनक एडच्चाशने नच्चि भेलइन।

बीर ठाकुर दोसर शहर मे रहइ छल। अपनाकऽ छात-नेता कहइत छल। जेना "बाल कच्चि"कऽ अपनो बालकभऽ जाइ छइन- तइयो उपमा " बाल कच्चि"कऽ नच्चि छोडताह। "युि नेता "कऽ धीया पुता, ितनभऽ जाइ छइन, तखनो युि नेता कहबइते रहइ छथ्थ। ओच्चना ई "छात नेता " छथ्थ। नच्चि जाइन कच्चया तक ई छात नेता रहताह। दस बरखसऽ उपरभऽ गेलइन मैच्चक केलाह।गाम मे त सब कहइ छइन जे च्चाच्चर जीकऽ ई सब लठैत छइथ। जे भी होइथ। बीर ठाकुर बजलाह-

िइर टा कालेजकऽ च्चंच्चपल त हमर संगी अइछ आ कतेक रास पोफेसर सब त हमर जेबी मे अइछ। आहा रमनकऽ हमरा लग पठा च्चदयऊं। ई त दु च्चानटकऽ काज छइ। अहु लेल आहा च्चंता मे छी। कहुं त। तखन हमरा सन भाच्चाजकऽ रहने कोन काज।

-आब एडमिशनकऽ तारीख खतम भऽ गेल छइ। अफ्लाईयो नहि भेल छइन।

- आहा छोर ने। ई सब, हमर कंगुरिया आंगुरकऽ बरोबइड काज छइ। आब आहा बुइझ लियह जे एडमिशन भऽ गेलइन। बस कनी हमरो सब पर ध्यान देने रहबइ। हमरा घरारी मे बडड कशमकश अइछ। जयो अपन छाया मे बसा लइतऊं त बडका उपकार होइताह। आब आहा सब जेका सोचिऽ बाला लोक कहा। आहा अंतिम कडी छी।

रमन सब लक्ष्लो पिफो बाला गप्प सुनहि छलाह। सबहक जईड मे उएह जमीन। आब उनका बि बि कतेक केलइन। एकटाकऽ हश अछेना देखने छलाह।गामेकऽ छलाह। पटना मे पढई छलाह।

पटना मे एडमिशन खातिर रमनसँपाइलऽ लेने छलइन। ओकर बादसऽ लापता छल। बाद मे पता लिलइन जे ओकर हर सालकऽ ईएह धंधे छइ। दु िइरटाकऽ मुगा हर साल बनबइया।

आब रमनकऽ सब ठगहा बुझाई लगलइन।गामक लग बाला कालेजक पोफेसर, जे गऊंआ सेहो छलखिन, उनको लग गेल छलाह।

- हमर कालेज ई छइ। ओ छइ। सिस्टम छइ। विशविदालय मे छठम स्थान छइ। आहा अइ बेर छोडि दियउ। अगिला बरख आऊ। हम एडमिशन करा देब। अखइन हमरा मीटिंग मे जयबाक अइछ। लिइ छी।

आर चकछु नचि। असल मे टरकेलचकन। ओहो पिपायल छलाह एक समय मे जमीन लेबाक लेल। नचि देल गेलइन- तकरे बाष छइन।

एक साल बेकार बइसल रहस रमन, कतेक आसानीसऽ ओ कच्ल देलच्चवन। रमनक आंईख नोरा गेलइन। सबहक एडच्माशनभऽ गेल छलइ आ ओ दुआरे दुआर बउआ रहल छलाह। आब अफसोस होइन जे चकयैक शहरक िकर मे परलाह। उनका त बहुत नम्मर आयल छइन। अइ कालेज सब मे सोझे एडच्माशनभऽ जंइतइन।

ईएह होइ छइ-

बानाश काले, बापरीत बुचि।

होनी हाथ धराकऽ करा दइ छइ। आब अपन बाहर पढबाक फैसला पर खीस बरइन। घरो मे चकयो सलाह नचि देलकइन या नचि मंगलच्चवन। जे भी हो। कच्चन समय बीत रहल छलइन। जीनिक पाठ पईढ रहल छलाह।

अही समय मे बीर ठाकुरकऽ गप्प मे चकछु उमेद बुझेलइन।

अच्चाला सोमकऽ भोरका िरबच्चाया रेन पकइडकऽ रमन शहर गेलाह। स्टेशनसऽ ओना बीर ठाकुरकऽ डेरा दुर छलइन, मूदा रमन भोर मे टहलइत बादा भेलाह। चवक्शा बाला बचा बुइझकऽ भारा बेशी बतेलकइन, तै नचि लेलाह।आब आर ठगाय नचि िहइ

छलाह। सात बजेकऽ करीब ओकर लौज पर पहुंचलाह। ओ सुतले छल। इनका देखते जोश मे आयल। ओकरा गाम मे रमनक पटीसँ कियो मोजर नहि दइ छलइ।आइ काजलऽ क कियो आयल छइ।अपन लंबा लंबा गप्प देनाई शुरु केलक। रमन त काजसँ आयल छलाह। चुप चाप सुनइ छलाह।

थोरेक काल बाद कहलकइन - कागज सब अनने छी ने।

-हं -हं।देख लियह।

- देखबाक कोन काज। रखने रहु।

-आहा बइसु अतइ। हम कनी काल मे अबइ छी।

रमन ओतइ बइसल छलाह। दु घंटाकऽ बाद ओ बुलेट मोटरसाइकिल पर एकगोटेक संग बइसल, हरहराकऽ पहुंचल। फेर तीनु गोटा लौजक सामने बाला भरभुजाक दोकान मे गेलाह आ चुडा-दही जलखइ कयलाह।

फेर तीनु गोटे बुलेटसँ बिदा भेलाह। ओ बुलेटकऽ पहिल वा दोसर गेयर मे चलबइ छल, जईसँ आबाज फटफटकऽ बेशी होइ। बीर ठाकुर बुलेट पर सीना तनने चलबइ छल। रमनकऽ बुझाई जे कोनो रणक मैदान मे जा रहल छलाह। पाँच मिनट मे एकटा कालेज मे पहुंचलाह। अइसऽ दसगुणा दुरी त रमन स्टेशनसँ पैदल चलिकऽ आयल छलाह।

बीर हाथ मे बुलेटक िभीकऽ छकला घुमबइत कालेजक कायालय मे गेलाह। चकरानी बाबु ओकर जान पहिनकऽ छलचवन। कालेज मे एडमशनकऽ सीट खाचमये छलइ। बीर सऽ उनका पचने चकछु गपप भचसंभि भेल छलइन। कागज सबलऽ लेलचकन। एडमशन फीस बतेलचवन। रमन त पाइ लइयेकऽ आयल छलाह। तुरंते देलचवन।भऽ गेलइन एडमशन। चकरानी बाबु कहलचवन जे काइलसँकालेज आइब जाऊ। कोनो चदकत हुआय त हम छीहे।

रमनक खुशीकऽ ठेकाने नचि। घर मे नचि पढल चमखल रहलाहकऽ कारण कहू या बाहर नचि चनकललाकऽ कारण- "फोसरी बुझु की भोकनरभऽ गेल।" एना एडमशन हेतइ से ओ सोनिहो नचि छलाह।

चकरानी बाबुसँबीर कऽ परनाम पाती भेलइन। फेर सब बुलेटसँचवदा भेलाह।

चंचसपल ओना कालेज मे छलचवन। उनका लग बीर नचि गेलाह। की जाने, जान पहिन छइन चक नचि। आब अइ सब पर पश चकन्ह लगेबाक स्थचत मे रमन नचि छलाह। उनका त बुझाइन जे जीबते बैतरणी पारकऽ गेलाह। एडमशनभऽ गेल छलइन।आब होइन जे गाम बाला पोफेसरकऽ जाकऽ कचहयइ जे देखू हमर एडमशनभऽ गेल। आब अचगला बरख हमरा आहाक खुशामद नचि अइछ। अपन परफेसरी अपने लग राखु। ओकर बातसऽ बडड दुखी तचहया रमन भेल छलाह। मोन होइ छलइन जे ओकर मुंह नोइि ली। गाम लग रचहतइन त बीर कऽ कचहतचथन जे ओइ

परफेसरकऽ दलान बाटे बुलेटसँ लि -फटफट करइत।

आब रमन, बीर कऽ हदयसँबीर भाइ कहऽ लगलाह। बीर बुझई छल जे ओकरा अपन धाही देखेबाक ईएह मौका छइ। ओ रमनकऽ भइड च्चन कतउ कतउ घुमबइत रहलइन। ओ जे तेसर लोक बुलेट पर बइसल छल, ओकरोसँरमनकऽ दोस्तीभऽ गेल छलइन। भच्चसक बुलेट ओकरे छलइ। च्चन मे होटल मे तीनु गोटे खेनाई खाई गेलाह। अखइन तक कतउ बीर कऽ पाइ दइत नञि देखलच्चन। ई सबसँरमनक सीना सेहो िडा भेल जा रहल छइन।

साझ होइत होइत रमनक िइल मे अकड आइब गेल छलइन। ओहो अपनाकऽ बीर बुझअ लागल छलाह। बुलेटसँस्टाइल मे उतडइ आ िढई छलाह। कखनो डार आ गर्दनकऽ ढील नञि छोडइ छलाह।कनी मनी दादा टाइप अपनाकऽ बुझबा मे आइब रहल छलइन।पच्चल अनुभि छलइन। आइये एडच्मशन भेलइन आ आइये सऊंसे शहर घुईम लेलाह।

संझुका सतबच्मयासँगाम घुरबाक छलइन। बीर सेहो कहलच्चन जे गाम हमहु जायब। आइ िजयीभऽ क गाम घुरबाक छलइन। ईएह त मौका छलइन जे बुधन बाबुसँच्कछु झीट ली।

पाि बजेकऽ करीब स्टेशन तीनु गोटे बुलेटसँपहुंिलाह। बुलेट

िलेबाक उएह अंदाज छलइन जे कतेक बेशी आबाज ब्ाकइल सकाय। पह्लसँदोसर च्ायर, तेसर च्ायर त ब्ारले लागल होइत।सतबच्लया रेन लाइग गेल छल।रेन अतइसऽ खुजई छलइ। रमन जाकऽ बैस रहलाह आ एक सीट बीर लेल सेहो गमछा ध कऽ घेर लेलाह।

अखइन त रेन खुलबाक मे बडी काल बाकी छलइ तै लेल बोगी खाच्लये जका छलइ। ज्यो ज्यो रेनकऽ खुलबाक टाईम लगीि अबइत गेलइ , लोक आबऽ लगलइ। बुलेटक आबाज सुइनकऽ च्कछु ओतुके छौडा सब एलइ। ओकरे सबहक संग बीर आ तेसर लोक कतउ िइल गेल छलाह। पह्लने रमन अइ छौडा सबकऽ लफुआ कहइ बुझई छलच्लन। मूदा आइ त ओ सब स्टेशनक दादा लगइ छलइन। अपनाकऽ ओ ओकर सबहक समाग बुझई छलाह।

जेना गाम मे कहबी छइ- " कालेज मे जा कऽ नालेजभऽ जाइ छइ " आइ एडम्ाशन होइते रमन सब नीक बेजाय बुझअ लगलाह- अपना मोने मोन। च्कनको ओ गमछा राखल जगह पर बइसह नच्हि देलच्लन। आबाज मे र आब आइब गेल छलइन। एना बुझाइन जे रेन उनके जमीदाच्रये मे छइन। ओ गमछा बाला जगह त जेना ओ कबालाकऽ लेने होइत।

रेनक बोगी आब पुरा भइड गेल रहइ। बीर कऽ कोनो पता नच्हि।

ओकरा लेल जगह छेकने छलाह रमन। खाली जगह देखकऽ कयेक लोग लुधकय, बइसय लेल। रमनक रौद रुप देखकऽ सीट सँहइट जाय। आब बोगी मे लोक ठार भेनाइ सेहो शुर कऽ देने छल। रमन अकइडकऽ बइसल, िर कात तकइ छलाह। तखने अनायास आंधी तूफान जेका धरधराइत एकटा मऊगी आयल आ धडाकसँओइ खाली जगह पर बइस रहल। रमन अकडइत बजलाह-

-देख नही रहे है जो सीट पर गमछा रखा है।

- तो।

-" तो क्या। खाली कीजिए। कोई बैठा है"। आबाजकऽ गंभीर करइत अकडपन मे रमन बजलाह।

- "ठीक है। आऐंगे तो उठ जाएंगे"। बहुतही धीरेसऽ ओ मऊगी रमनक आंईख मे आंईख मिलाकऽ बाजल।

रमन आब ओकरा देखलाह। ओ तीसेक बरखक करीब छल। गोर त नहि लेकिन पीरिमयामे मे सुनर धोआ काया छलइ। ओकरा मे ठहराब छलइ। रमनकऽ आंईख अपने दोसर दिश करऽ परलइन। बोगी मे जगह कम रहबाक कारणे ओइ मऊगीकऽ देहसऽ रमन सटल छलाह। बयस्क मऊगी संग सटल रहबाक पहिल अनुभि छलइन। सऊंसे देहक रोईया ठारभऽ गेल छलइन। एना बुझाइन जे रोईया नहि ई "साही "कऽ काट अइछ। ततेक अकइड गेल छलइन जे अपनो गडइ छलइन। ओ मउगी आर अपन देहकऽ इनका दिश खसा देने छल। आइ मे इहोभऽ सकइत छइ जे ओइ मऊगीकऽ दहिना कात जे अधबयसु पुरुख बइसल

छल, ओ बेसी सटबाक पयास करइत होइ। ओकरासऽ नीक अइ मऊगीकऽ ई बच्चि रमन संग सटबाक मे लगइत होइ। तीनकऽ जगह मे पाि लोक बइसतइ त सटबाक त छइये। आब चक्कमहर सटु, से ओइ मनुक्ख पर न्नाभथ्र।

ईहोभऽ सकइ छइ जे ओइ मऊगीकऽ रमन च्चद्दश सि तिः अपन इच्च्छासऽ भार देने अइछ आ ओइ कात त च्चकयो धच्चकअए रहल छइ। जेतह बलात् ि जबरदस्ती िलिी बात नच्चि रहइ छइ, सदौसऽ उम्हरे झुकाि बनल रहइ छइ। रमन अइ पच्चस्थच्चाकऽ आनंद उठा रहल छलाह। संगच्च साकाक्ते छलाह जे च्चकयो उनका इ नच्चि बुझइन जे ओ जाइन बुइझकऽ ओइ मऊगी मे सटल छैथ। ओ धीरे धीरे अपन देहक भार रमन पर खसेने जा रहल छल। रमनक रोईया त ओकरो गडइत हेतइ, तैयो ओ बेपरिाह छल। पुरा बोगी मे मौन पसरल छल। अंदरसऽ च्चलकोर रमनलऽ रहल छलाह। ओ मऊगी आ दच्चना कात बाला पुरख, कखनो काल च्चलइ डुलइ छलाह- च्चकयो बुझय नच्चि। रमन त बुझअ लागल छलाह -अतबे काल मे।

आब उनका बीर कऽ कोनो च्चिंता नच्चि होइ छलइन। मोन मे होइन जे कहूना ओ नच्चिये आबस। सुनने आ देखनेहो छलाह जे कयेक बेर रेन लेटभऽ जाइ छइ। आइ होइन जे कहूना रेन लेटभऽ जाइ। उनकर देह च्चलला डुललाकऽ बाद ओइ मऊगीकऽ देहसऽ कयेक जगहसऽ संइट गेल छल। ओ मऊगी च्चकयैक नच्चि हटई छल, से रमनक समझसऽ बाहर।

ओ मऊगी माथ पर साडी रखने संि मंसिँबइसल, छल आ शुन्य मे तकइ छल। िइर पािटा पछलुका दादा आब लफुआ सब फ्लेटफामथपर अइ बोगीसऽ ओइ बोगी िहलकदमी करय छल। ककरो तकइ छल। कखनोकऽ आबाज रमन सुनबो करयथ-" अहु मे नचि छऊ। ओहु मे नचि छऊ। परा गेलइ की। -------"।

बेिनी ओइ लफुआ सबहक िहरा पर देखाअ रहल छल। तखने एक टा लफुआ रमनक बोगी मे िढल आ जोरसऽ हाक देलकइ-" हइया छऊ"।

फेर की। आब िइर पाि टा लफुआ सब बोगी मे आइब गेलइ आ हइया छऊ, हइया छऊ, फुसफुसाय लागल।

रमनकऽ भेलइन जे कही बीर ठाकुरकऽ दुश्मन सब त नचि अइछ। आइ त भइड बच्चन उनके संगे बुलेट पर सौसे शहर घुमलाह अइछ। लोक सब तचकते छलइन। स्टेशन अबाते केना दु तीन टा बदमशाि सब पहुंि गेल छल। ओकरे सबहक संग बीर गेल छलाह। सुआइत ने लोक कहइ छइ- " लंगाकऽ दोस्ती नीक नचि"। कोन काज छलइ ई बीर संग अयबाक के। एडमाशन अइ साल नचि होइतइ त पर काभऽ जइतइ। कोनो नौकरी छलइ। कोन िकर मे पइड गेलऊं। ई बदमशाि सब हमरे लेल आयल अइ। हमहु त अकइडकऽ िलइ छलऊं। अकरा सबकऽ भ गेल हेतइ जे ओकर एचया मे दोसर दादा के।

जे रमनक अकरल देह छलइन, से च्चाच्चल हुअि लगलइन। ठोर पर च्चफरी परऽ लगलइन। कंठ सुखाय लगलइन। पाइनो नच्च छलइन लग मे जे पीताह। आब रेनसँउतरताह, से ई बदमशाि सब जाय देतइन तखन ने। ई कतऽ बीर ठाकुर मइड गेलाह। हम त कच्च देबइ जे हम नच्च च्चन्हइ च्चयइन।

फेर रमनकऽ भेलइन जे बुलेट पर संगे बइसल छलऊं, से जे कहत त कच्च देबइ जे हम त पच्चले बेर शहर आयल छलऊं एडच्चशनकऽ लेल। हइया देखू कालेजक रशीद। देखला जे झोडा सामने अइछ-ओही मे त सब कागज-पतर सब छइन। हम टीशन अबइ छलऊं, रस्ता मे गाडी रोकलाह आ ढा लेलाह। ओ दोसर टोलकऽ छथ।हम सब सौजच्चया सेहो नच्च छी। हमरा छोच्च च्चयह। ईएह सब सोइि रहल छलाह। बोगी बला लोक की कहत। ककरो हम बइसऽ नच्च देच्चयई आ आब बेजती होइत।बडड दादा बुझअ लागल छलऊं आब च्चयह।

एक तरफ ओइ मऊगीकऽ स्पशच्चऽ गमाहट त दोसर च्चस सामने पाि पाि टा लफंडर बदमशाकिऽ देखक शोच्चतक सदथ भेनाइ। ओ मऊगी अखनो ुप्पी लगेने छल।

कनी काल मे ओ छौडा सब बाजय लागल-" लि ने", "उतर ने", " रेन खुलतइ आब"। पच्चने धीरेसऽ बजलक ओ सब। जखइन

बोगी मे चकयो चकछु नचि पत्युतर देलकइ त ओ सब जोरसँबाजय लागल।रमन रेनसऽ बाहर जाइन बुझ्झकऽ तकइ छलाह, कान त बोचाये मे पाथल रहइन।

ओकर सबहक साहस बढअ लगलइ। आब ओ ओइ मऊगीकऽ छुकऽ कहलकइ-" लि उतर, बडड दौरेने छे आइ, रेन खुईज जेतउ त लइत रच्चये, पहुंि जेबे कतऽ दुन"। आब रमनकऽ जान मे जान अयलइन। कहाबतो छइ-

" जान बि ी तो लाखो पाए"।

ओ सब त अइ मऊगी लेल आयल अइछ। आब रमन धीरेसऽ अपन देहकऽ ओकरासँअलगकऽ लेलाह। अखइन तक ओ नीक लगइ छलइन, आब ओ जानक जपाल बुझाइन। अपनाकऽ पुरा तरहे अइ अध्यायसऽ बाहरकऽ लेने छलाह। जेना चक ओ अतऽ छइथे नचि। " नचि हषथनचि चसिमयो" बाला च्पथच्च बना लेने छलाह।

आब बोगी मे ि रि कात रमन तकलाह। देखइ छच्चि जे खायल पीयल धाकड देह बला पुरष सब सेहो बैसल छच्चि। सब मौन धारण केने छच्चि। एक टा तऽ मुष ंडा सेहो छलाह। कतेक रौबदार ि हरा छलइन। एक बेर घुडइक दइतच्चिन त अइ लफुआ सबहक च्चम्मत होइतइ-अतऽ ठार होबाक के। पेट गीलभऽ जइतइ,अइ च्चकटी च्यक्ली सबहक। चकनको कोनो मतलब नचि। आपसो मे

नहि चकयो गप्प करय छलाय, आ नहि रेनसऽ नीचा -उपर, चढ़ई-उतड़इ छल।

ओ मऊगी, बोगी मे चारि कात एकबेर गदथ्य उठाकऽ देखलक। फेर ओकरा की नहि की फुरेलइ, सामान त चकछु छलइये नहि, देहे टा छलइ, एके बेर उठल आ सरसराकऽ बोगीसऽ बाहर चिइल गेल। जहना धरधराकऽ सीट पर बइसल छल, ओहना हरहराकऽ परा गेल। ओकर पाछु पाछु ओ लफंडरो सब भागल। तखने इंजन सीटी देलकइ। बीर ठाकुर सेहो दौरल रेन मे चढिलाह। एक टा बदमशाि उनका कहइ छलइन-" जेकरा हम सब सऊंसे रेन आ टीशन पर ताईककऽ हाचब गेलऊं ओ त ईएह बोगी मे बैसल छल"। बीर बजलाह-

-" ओह। अजुका जतरे गडबड छल।"

फेर रमनकऽ कहलचबन जे आहा चकअए नहि कहलऊं जे ओ अतऽ बैसल अइछ।

रमन की बजताह। गमछा हटा लेलाह आ कहलचबन -"चलयह । बैसु।"

तखने फेर ओइ बदमशाि गुपकऽ एकटा छौडा एलइ आ बाहरेसँबीर कऽ कहलकइन-" फेर ओ मऊगी गायबभऽ गेल। आइ चदनेसँओ चिरिा - नुकी हमरा सब संगे खेला रहल अइछ। आब जे चसपाहीकऽ डयुटी टीशन पर छइ, ओ बड कडा छइ। सबहक गतर गतर चनि्हइ छइ। अजुका जतरे खराब हमर सब

के। आब अहुंके रेन खुईज रहल अइछ। हमहु सब जा रहल छी। सोनि रही जे आहाकऽ कछु मजा दी, लेकिन नहि भऽ सकल"।रेन िइल परल छल।

रमन मोन मे सोिई छलाह जे मजा ओ लेलाह िक सजा मे समय बितेलाह। आइ पहिले बेर मे बहुते रास अनुभि लेलाह। बीर कऽ नीक कहताह िक अधलाह। ठीके कालेज मे जाइते नालेजभऽ गेल छलइन। ई िमशन एडमिशन, पन्द्रह बरखक बचिकऽ जीबनक पाठ पढा देलकइन।

अपन लोक (लघुकथा)

भिशकऽ अनायास फेसबुक पर मैसेज एलइन। "आहा बंगाली टोला बला भिशि छी ने"

भिशि सोि मे पइड गेलाह चक ईकऽ छच्य। मैसेज पठबऽ बालाकऽ पोफाइल देखलच्चन त ओ एकटा सुनचिर ललना छलीह। उनकर संगी सबहक सुिी मे तकलाह- चकयो इनकर जानऽ बला नचि।

अतबा त चाचित छल जे चकयो मैच्यलानी च्यकीह। बंगाली टोला मे त आइसँालीस बरख पच्लने रहल छलाह। ओतऽ त चकयो लडकीसऽ उनका कोनो जान पहािन नचि छलइन। मूदा रहल त छइते बंगाली टोला मे। ईहो सते थीक। तरह तरहकऽ चबािर सब चदमाग मे उमर घुमर करय छलइन। नचि छोरले बनचिन आ नचि चकछु कैले बनचि। हरदम उएह मैसेज माथा पर नािइत छलइन।

जखने मौका लगइन ......ओइ ललनाकऽ पोफाइलकऽ उलटबइत पलटबइत ...... चकछु चाफकषथनचि चाकलइन। मोन करयन जे ओ अइ मैसेजकऽ ज़बाब दकऽ पुईछ ली। फेर चबबेक एना करऽ

सऽ मना करयन। ई मोन आ ब्बिबेकक बीि कशमकश कच्चसयाकऽ िइल रहल छलइन। अइ मे लटपटायल भिश। जतेबे अइसँबहराय िहइ छलाह, ओतबे ओझरा जाइ छलाह। ई त काटक झाइड-झंखारभऽ गेल छल.....ओइ मे एक बेर फंसलाकऽ बाद जेतेक हाथ पैर मारब, ओतबे बेशी काट मे फंसब आ काट गरबो करत।

अखइन तक सुनिच्च छलव्चन जे फेसबुक मे अहीना मैसेज अबइ छइ। संगी बनेबाक सेहो नोत अबइ छइ। संगीकऽ नोतकऽ गच्छते आहाक सबटा समाद ओकरा लग िइल जाइ छइ। ओ तेहन ने एक टा अपन समागकऽ कम्प्युटर मे बइसा दइ छइ........ समच्चअय जेका ओ सबटा समाि र पठबइत रहइ छइ। अइ ".ब्बान बजायल पाहुनक " डरक मारे भिश आगु निच्च बइढ पाइब रहल छलाह।

दोसर गप्प इहो रहइन जे ज्यो ई मैसेज पठबऽ बाला पुरख रच्चतइथ त ओ ज़बाब दकऽ पुईछ लइतच्यन। उकि ओही पडाि पर ठार छच्च जे अगर इमहर ओमहरकऽ च्चकयो होइ आ ई बात पसइड जाइ त सेहो जुलूम। मैच्चयल समाज मे बात चिथारऽ सँबेशी दोसर कोनो काज मे मोनो निच्च लगइ छइ। मुदा घर मे त एके बेर लहाशकऽ िर-फाड कैल जाइ छइ .... इनकर समाज मे त जाबइत चिथडा चिथडा निच्च भऽ जाइ छइ, गप्पक पोस्टमाटच्च िच्चलते रहइ छइ।

फला फसलाह।

कोनो मउगीकऽ फिकर मे पडल छलाह।

पच्छ्नेहोसँहेतइन।

अइ बेर भंडा फुटलइन।

लोककऽ बुझनाई अतेक आसान नहि। केकर भीतर कोन खिचड़ी पकइ छइ जेकऽ कहत। ओ त अइ बेर बात बढलइ त लोक बुझलक....... ई सब तेला बेलासऽ रेहल खेहल छलाह भिशि। नहि साहस जुटा सकलाह-जबाब देबइ लेल।

किछु दिन बाद फेर मैसेज एलइ -" बुइझ पडईया जे आहा नहि चिन्हि पेलऊं। हम धनहा गामक ललन बाबुकऽ बेटी छी। आब उमेद अइछ.....चिन्ह गेल होयब। "

मैसेज पढ़ते सब किछु सनसनाकऽ याद आइब गेलइन। पुरा देह झनझना गेलइन।अपना पर अफसोस होइन भिशिकऽ जे कोना नहि चिन्हलखिन। फोटोसँसेहो नहि अंदाज लगलइन।ओ की बुझने हेतीह। फिटसँअपन व्हाटसएप नम्बर देलखिन.... ई कहयह.....अइ पर गप्प कर या अपन नम्बर बताऊ।

िलीस बरख पहलुलका सब घटना आंखबक सोझा आइब गेलइन। सनीमाक रील जका सब नािऽ लगलइन। ओ िदह - पन्दह बरखसँबेसीकऽ नहि छलाह। िवघ्य परीकादऽ देने छलाह। ब्रजकट नहि आयल छलइन। उनकर सब संगी सब कतउ कतउ घुमअ गेल छल। ओ सब त की शहर मे डेरा पर रहइत छल , तै अपन गाम या कोनो दोसर शहर मे संबंधी सब कतऽ गेल छल। भबेशकऽ गाम-शहर सब ईएह छलइन। हुनकर कोनो संबंधी दोसर शहर मे नहि रहइ छलखन। बचिसँपरीकाकऽ बाद घरे मे रहनाई भिशिकऽ नीक नहि लगइन। मूदा जेताह त कतऽ जेताह। उनकर बाबुजीकऽ अपन गामसँचरिचल छलइन। बदली बाला नौकरी सेहो नहि छइन। मोन मसोईसकऽ रही जाइ छलाह भबेश। ई कोन नौकरी, जई मे बदली नहि। ओ त एहन नौकरी करताह, जईमे खुब घुमअ चकरऽ कऽ रहतइ।सब साल जका, परीकाकऽ बादकऽ समय उनका पहाड जेका लगइन......अहु बेर सैह छलइन। मूंह लटकाअ कऽ घर मे पडल छलाह।

ओही समय हुनकर बाबुजीकऽ संगी ललनजी बम्बइसँआयल छलाह। ओना ओ उि मे भिशिक बाबुजीसँपैघ रहथिन, लेकिन दुनु मे दोस्ती रहइन। दोस्तीक कारण छलइन जे दुनु गोटे पहलने अतइ एके जगह नौकरी करय छलाह। ललनजी सीनियर छलखन। बाद मे ओ कोनो दोसर परीक्ष पास कं बम्बइ िइल गेलाह। ओ जहलया कहलयो गाम चदश अबइ छथि त अइ डेरा अयबे करताह। ओ सब

बेर इनका सबकऽ बम्बइ अबइ लेल कहइ छथ्यिन। बम्बइ जायकऽ भशिोकऽ बडड मोन करयन लेकिन नकयो जेबे नहि करय। ललनजी कहबो केलखिन जे हम आब नटायरोकऽ जायब, आहा सब कन्हया आयब। बडड नोन अतुका खेने छी, एक बेर हमरो कतऽ आऊ।

अइ बेर ललनजी अपन छोटकी बेटी सीमाकऽ बियाह करक लेल अपन गाम आयल छलाह। उनका तीन बेटी आ दु बेटा छलइन। सबहक बियाह दानभऽ गेल छलइन। ई अंतिम काज छलइन.......तै अयबाक आगह बेशी छलइन।

भशिक मा बुझई छलखिन जे एतऽ सऽ तऽ नकयो जाय बला छइ नहि, आ भशिकऽ परीक्षक बाद घुमबाक मोनकऽ रहल छइन.....ओ कहलखिन- "ल जईयउन भशि के। आब त ईएह सब ने संबंधकऽ आगु बढौता। बाकी नकयो त जाय बला अइछ नहि। आहासऽ की छुपल अइछ। सब बुझते छी।" फेर की छलइ। भशिक कपडा लता सब एकटा झोडी मे रखेलइन आ ओ ललनजी संग बिदा भेलाह। ई बिना मा बाबु जीकऽ असगर जयबाक पहिले अिसर छलइन भशि के। पुरा उत्साह मे छलाह।

पहिने रेन, फेर टायरगाडीसँओ धनहा गाम पहुंलािह। ओ त टायरगाडी पर हाथकऽ सुतायो गेल छलाह। पहिले बेर एहन गाडी

पर िढल छलाह।काजक आंगन छल। सब लोक भिशकऽ देख कऽ बडड खुश भेल। ललनजीकऽ पुरा पचिार भिशकऽ हाथो हाथ रखलकइन। आखिर छलाह त बर्िने भिश। थोडबाक काल त दलान पर संमिं भऽ बैसल रहलाह। ललनजी सेहो कतउ ऊईठकऽ गेलाह। उनकर घरक आर बचा सब भिशकऽ इशाराकऽ क बजेलकइन....... ओ उईठ बादा भेलाह.....फेर शुर भेल- खेलक दौड। िरिा नुकी, बुढ़िया कबडडी, ताश, लुडो,लाली, चटो आर कोन कोन खेल.... बीि मे पकइडकऽ लोक जलखइ करेलकइन। अइ बचा सब मे ललनजीकऽ बेटी सीमा सेहो छलीह। ओ अइ सबसँअनजान जे दसे दिनक बाद उनकर वीिाहि छइन आ ओकर सातम दिन दुरागमन। भोरेसँखेल शुर भऽ जाइ आ राइत तक िलइ। ईजोरियाकऽ समय छलइ तै कोनो ईजोतोकऽ बेशी काज नहि। खेल मे एक दिन त ओतुका बचा सब भिशकऽ बात माइन लेलकइन....... दोसर दिनसँलडाई होबऽ लगलइ। कयेक खेल मे अतुका नायम अलग अलग छलइ। कियो झुकइ लेल तैयार नहि। भिशोकऽ धमका देलकइन- "पाहुन बुझई छी अपनाकऽ त ओतऽ दलान पर बैसु गऽ , अतऽ अतुके नायम िलतइ। खेलऽ कऽ अइ त हमरा सबहक नायमसँखेलू।" भिशकऽ समझौताकऽ अलाि दोसर िरा नहि छलइन। ओतुके नायमसऽ खेलाय लगलाह। गामक बचा सब बइमानायो करय........ई भिशकऽ बदाश्त नहि। झगडाभऽ जाइ, फेर कनी काल मे मेल। अइ झगडा मे सीमा हरदम उनके तरफसँरहइन, बाकी सब अलग ।

सीमा बम्बइसँआयल छलीह। पाि भाइ बह्नन मे सबसं छोट, ओइसँदुलार ओ बडड छलीह।दोसर उनके बयाह छलइन, तै मोजर बेशी। एक ब्दन खेल मे सबके अपान अपान शहरक नाम लेबाक रहइ। भिशि बंगाली टोला बजलाह.....बसंत मुसरी घरारी बजलाह.....सीमा बंबइ बजलीह आ आर बचिा आन आन जगह। सीमाकऽ "बंगाली टोला" सुनबा मे नीक लगलइन। फेर की छलइ ओ भिशि के" टोला" कहऽ लगलब्धन आ बसंतकऽ "मुसरी"। ओ टोला आ मुसरी बाजस आ ठठाकऽ हंईस दइथ।भिशिो सीमाकऽ बंबइ कहला पर कहलब्धन जे ई त "सबुजा आम"कऽ कहल जाइ छइ। ओ सब सीमाकऽ सबुजा आ सीमा इनका सबकऽ टोला आ मुसरी कहथ्यन। अह्नना हंसइथ खेलाइथ ब्दन बीत रहल छलइ। बाना मा-बापकऽ भिशि आयल छलाह, तै ललनजी आ घरक आन लोक, बेशी ध्यान दइन। सब बचिा एके जगह सुतय,उठय, खाई पीयई छल। खाली नहाय मे बचिा आ बुर्चिी अलग अलग जगह, समय एके छल।

सीमाकऽ लोक बाध बाध लेल बजा लइ छलइन। उनकर मा कहथ्यन -खेलऽ कुदऽ ब्दयउ। फेर त अइ घर ग्रारहस्थीकऽ पिडा मे फंसहेकऽ छइ।

जेतबा बुझबा मे अयलइन भिशि के, ओइ अनुसार ललनजीकऽ अही साल बटायरमेट छलइन। ओइसऽ पहीने ओ सीमाक बबाहकऽ कऽ ब्जम्मेदारीसँमुक्त होबाक िहइ छलाह। ओना सीमाक मा अइ कथाक ब्वरोध मे छलब्धन। तह्नया स्त्रीगणक बाते कथा िता मे कतेक मानल जाइ छलइ। नब्व ब्चकयो कान बात उनकर बातकऽ

देलकइन। मोन माइडकऽ अंत मे लाइग गेलीह ब्बाबाहक तैयारी मे। लडका एम टेककऽ कऽ िजाब्बकक नौकरीकऽ रहल छल। बडक गुण देखी आ कब्बायाक रप-ईएह सीमाक मा सबके कहइ छलब्बिन। ई सेहो उनका बुझल रहइन जे बरक बयस बेशी छइ........ ललनजीक ब्वटायरमेट िला बातलऽ कऽ ओ ुिप्पी लगा लेने छलीह। सीमाकऽ तं गाम अयलाहकऽ बाद ब्बाबाहक बात बतायल गेल छलइन- ई सब गप सीमा कहने छलब्बिन भिशि के, तै फुईस होबाक कोनो मतलब नब्वि।

अहीना ब्बाबाहक ब्दिन आइब गेलइ। सीमा आइ नब्वि खेलेली। ओ मऊगी सबहक भीड मे घेरायल छलीह। साझ मे बर बब्वयाती आयल। भिशि अपन नबका कपडा जे मा देने छलब्बिन, से पब्हरलाह। जे काज लोक अढा दइन, से काज कइयो दइ छलब्बिन।

भिशिकऽ सीमाक बर देखबा मे नीक नब्वि लगलइन। ओ बेशी बयसक छल। ककरोसँब्वकछु बब्बतो नब्वि छल। भिशि दोसर ब्दिन कती काल ओकरा लग ठाढ छलाह, टोकबो नब्वि केलकइन। सीमाकऽ आब बाहर ब्बाकलनाई एकदम्मे बनभऽ गेल छलइन। सारा ब्दिन लोक सबहक एनाई गेनाई लगले रहइ छलइ। आब भिशिकऽ खेलनाई सेहो बने जका छलइन। उनका मोन उिइट गेल छलइन। सीमाकऽ आब भिशिक लेल समय नब्वि छलइन। सीमा ुिप्पी लगा लेने छलीह। हरदम जोर जोर से ब्वि करऽ िली, गुम्मीभऽ गेल छलीह। दुरागमनसँएक ब्दिन पब्हने " टोला" सोर कऽ क भिशिकऽ बजेलब्बिन-" हम काइल सासुर िइल जायब।

आहाक बुझल अइछ"।

- हं। हमरा बुझल अइछ।

- हमरा नोर नहि खसईया। की कर ।

- बीटु जोरसऽ काइट लियह।

-नहि नहि ।

-दोसर उपाय बताऊ।सब कहैत रहल अइछ जे दुरगमनमे कनिया कनैत छइ। हम बड कोशिश केलऊं। नोर खसबे नहि कैल। मुसरी कतऽ छथि.......

कहैकऽ हंस लगलीह।

-हमर "बर" केहन लगलाह।

-ठीक

-ठीक की। एक नम्मर, दु नम्मर से कहू।

- दु नम्मर।

फेर चिकयो सीमाकऽ बजा लेलकइन।

भशि सेहो परेशान छलाह जे दुरागमान काल मे जओ सीमा नहि कनतीह त लोक की कहतइ।

अगला पाते सीमाक कननाईकऽ आिजसँभिशक ध्यान

टुटलइन।उनका दहोबहो नोर खइस रहल छलइन। कखनो ओ अपन माकऽ गर लाइगकऽ त कखनो बह्नन के, त कखनो काकी के, त कखनो पीसी के,कखनो भऊजाइ के, आरो लोक सब के, फेर ललनजी के। दुरगमनमाया बचयाती सबहक आंईख सेहो नोरा गेल छलइन। कात मे ठार भिशि सेहो काइन रहल छलाह।सीमा ततेक कनलीह ......

सब बजई जे अतेक त चकयो नचि कानल सासुर जाय काल। सबहक कोढ फाइट गेल छलइ। भइड गऊंआ जमा छल ललनजीकऽ दरबज्जा पर। नचि कनचि छल त ओ सीमाक बर छलाह। थोरबा काल बाद सीमा गाडी पर बैस गेल छलीह। लोटा मे पाइन आइनकऽ उनकर मा उनका दु घुंट पीयेलखवन। फेर गाडीकऽ तीन बेर आगु पाछु केल गेल आ ओ गाडी मे बइस कऽ िइल गेलीह। भिशि सेहो एकटा दोसर पाहुन संग अपन घर घुइड गेलाह। चकछु चदन घर पर मोन नचि लगइन। सीमाक कनचित िहरा उनका परेशानकऽ रहल छलइन। धीरे धीरे अपन दुनमाया मे भिशि लौट िकल छलाह। कोनो हालािल नचि पता लगलइन। सब बासइड गेलाह।आइ िलीस बरखक बाद ई मैसेज उनका सब यादकऽ तरोताजाकऽ देलकइन।

आब दुनु गोटेकऽ िताक कम शुर भेल। सीमाकऽ मा बाबु जी दुनु सिगिथिसीभऽ गेल छलखवन। भाइ- भाऊज आ बह्नन-बह्ननोई सब अपन दुनमाया मे व्यस्त छथ्य। सीमा लेल उनका सबके

समय नहि छइन। कहियो कोनो फोनो नहि........आबऽ जायकऽ त दुरक गप। सीमा एकतरफा शुरु मे घरक लोककऽ फोन करय छलखिन........ बाद मे फोन केनाई छोडि देलखिन। अखनुका एकटा प्रसाह संबंध कहियो लिलइ अइछ। लडाई नहि छइन लेकिन अबरजात बंदयजेका।

सीमाकऽ एकटा बेटा बेटी छइन। बेटी फैशन डिजाइनिंगकऽ कऽ विदेश मे रही रहल छइन। जमाय ओ अपने िनलक।सीमा दोबारा गलती नहि करऽ िहइ छलीह। अइ बियाहलऽ कऽ सीमाक बर पसन नहि छलखिन। ओ अखइन तक अइ संबंधकऽ स्वीकार नहि केलाह अइछ। ओकर डेरा पर विदेश कहियो नहि गेलाह। सीमा अपन साल दु साल पर विदेश बेटी कतऽ जाइत अबइत रहइत छइथ। सीमाक घरबाला रिटायरकऽ गेल छइथ। कंसल्टेटकऽ काज बंबइ मे शुरु कयलाह अइछ।बेटा बैक मे नौकरीकऽ रहल छइन। ओकरा लेल लडकी ताईक रहल छइथ।

अकरा बाद भिशिक बारी छलइन। बंगाली टोला बाला मकान बिका गेलइन। ओइ पाइसँभिशिक दुनु भाइ दोसर शहर मे घर कीनलाह अइछ। भिशिक मा बाबूजी जे भइड जीनि कहियो गाम नहि गेलाह, से बुढारी मे दुनु गोटे गाम मे रही रहल छइथ। भिशि एक नौकरीसँदोसर नौकरी करइत, विदेश मे पडल छइथ। गामकऽ छोडि कतउ घर दुआर नहि बनौने छइथ। छोट छोट धीया पुता छइन, से सब अतइ पढई छइन। बदली बाला नौकरीकऽ शौक रहइन, से

आब जानक जपालभऽ गेल छइन।पच्छने शहरे शहर आब देशे देश च्छच्छया रहल छइथ।

फेर मुसरीकऽ हाल पुछलच्छन सीमा। एक बेर त सकपका गेलाह भिशि। बडका सास छोडइत बजलाह- "नचि कोनो संपकथ ठीके हेताह"।

सचिाई त ई छलइ जे सीमाक चयाहक तीन िइर बरखक बाद बसंतकऽ हदय मे कोनो बीमारीभऽ गेल छलइन। पटनासँडाक्टर िक्लोर रेफर केने रहइन। घर मे अथक अभाि कारणे गामे लगक बैदक इलाज शुर कयल गेलइन। छ महीना चतइत चतइत बसंत इलाजकऽ अभाि मे अपन गामे मे मइड गेल छलाह।

सीमा गपशपकऽ बाद बडड खुश छलीह। कहलच्छन जे बुझाइत अइछ नैहर मे छी जेना।

भिशि कहलच्छन-हं हं आहां नैहरेसँगपकऽ रहल छी। ललन ककाजी िइल गेलाह त ओइसऽ की। हम आहाक भाइ छी। नैहर आहाकऽ सबच्छना हमरा घर मे बनल रहत।

भिशिक स्नेह देखकऽ सीमाक आंईखसऽ नोर खंसऽ लगलइन। कहलच्छन- कोनो िजिक नचि कमी अइ आ नचि िही। बस ईएह आबेशक लेल मोन घुचयाइत रहय आ आहाकऽ तकइत रही।

सीमाकऽ अपन लोक आइ भेट गेलन्हिन। आइयो दहोबहो नोर बहइ छइन.........ई नोर खुशीक छइन-जे बडड दिनसँजमा छलइन।

बखशीश (लघुकथा)

आइ काइल त बेशी कालेजमे पढ़ैत बच्चा सब रिफर कँ ली, लिता पुजा होइत अइछ। कतउ आबऽ जाय आ गप करऽ मे अशौकयथ नहि लगइ छइ। फरहर सब अइछ। मुदा एकेटा छइ जे ई बच्चा सब अपन आन बडड बुझइ छइ। अपन घरक काज होइ त टि संकऽ लेत, दोसर घरक काज होइ तखइन ने देखू बाबंग। एना नहि त ओना नहि। अपना बेर मे पैसेजर रेनसऽ बाना चलकसकऽ जाइत आ दोसर बेर मे त इडपत्रया ि भयई....... नहि चकछु त मोटरसाइकलकऽ पेरोलकऽ नाम पर अस्सि। रैन, बससँ ज्यो जाइत त केतबो पाइ वायउ, घुराकऽ नहि देत। कथी मे खि करय छइ से नहि जाइन।

दमन अइ सबसं अलग छइथ। लितो पूजा खुब छइथ। अपन आन ओ नहि बुझताह। सबहक काज अपने बुइझकऽ करताह। कथु लेल पाइ वायउन त जे बंइ जेतइन से घुरा सेहो देताह। आब त मुश्किलसऽ एहन लोक होइया जे दोसरकऽ काज अपन बुइझकऽ करइत अइछ। खाली बाठक्ला बइसल रहत, कोनो काज कहू वायउ त कलक्टरोसँ बेशी व्यस्तता देखा देत। दमनकऽ अहीसऽ बडड जश छइन अपन गाम समाज मे।ओ बुझैतो छथि जे लोक दु टा बडाईकऽ कऽ, अपन उल्लु सीधा करयया.......तखनो लोककऽ हरसटे ना नहि कहइ छथिन।

परोपकारी लोकक ईएह हाल होइ छइ-दोसरक काज मे लागल रहइत अइछ आ अपन सब काज ओझरायल रहइ छइ। दमनक से हाल नचि। उनकर छोट भाइ सोहन घरक काज सब सम्हारने छलाह।दमन घरसँ चिन्त छलाह।

चकछु मास पच्हने दुचवत काकीक ल का चक्ली आयल छलाह। पुरा ठीकभ गेलचवन, तखइन गाम घुरलाह। दु महीनासँऊपर लाइग गेल छलइन।बडड सेि केलचवन। काकीक मुंह दमनक बडाई करइत थकइ नचि छइन। काकीक अपन बेटा पुतोहु त दसे चन लेल गुजरातसँचक्ली अयलइन-फेर नौकरी मे छुटी आ बचिक पढाइक बहाना बना िइल गेलइन। काकीक जमाय आ दमन दु गोटे चक्ली मे काकीक ईलाजक लेल टीकल रहलाह। कथी लेल लोक बेटा - बेटा करइत अइछ, से नचि जाइन। बेटा काज नचि अयलइन, तखनो काकीक मुंहे बेटेक बडाई। दमन ओहो पर काकीक चकछु नचि कहइ छचयन। काकीक लेखे उनकर बेटाक नौकरी मे छुटी नचि आ दमनक त नौकरी नचि, तै छचय।सैह देखू -काज केलो पाछु ईएह सुन क भेटई छइ- " खाचलाये बैसल छलाह, तै जाइ लेल कहचलयइन।"

काज कर बालाक त काज चवहाडइत घुडइ छइ। आब मामी दुचवताहभ गेल छचयन। ओना बडका लोकक चकछु ने

चकछु होइते रहइ छइ। नकि चकछु त "धरधरी"........ ओकर बाद "चडपेशन"। लोको आब ओतेक गंभीरतासऽ ई बीमारी सबकऽ नकि लइ छइ।अइ मे त आपरेशन होबाक छइ। दोसराइत लेल एक गोटेकऽ आर रहनाई जररी छइ। उएह संग जाय, जे िरफचया हुआय। डाक्टर सबसँगपकऽ सकय...... रस्ता पेरा मे सकाक रहय......िर उिकासऽ बइिकऽ रहय........अपन बेशी चटंभा नकि होइ.......पोन चटकल रहय बाला होइ आ अंचाम जे घरभइयाकऽ पाइकऽ अपव्यय नकि करय।काज पर िइर लाइन अंगेजी बाईज चमयैय त सोना मे सुगंध िली बात।

दमन अइ सब गुणकऽ बासन छलाह। मामा जे कचयो हुलकी नकि पाडइ छेलचखन, चानकर समाद पर समाद। दमन त सब लेल तैयार रहइ छलाह..... ई त अपने मामीकऽ गप छलइन। झटसँ"हंअ" कचह देलचखन। मामा अपना संग एसी बोगी मे चटकस कटा लेलाह। आइ तक कचयो एसी बोगी मे दमन नकि िढल छलाह। खुशीकऽ मारे फुइलकऽ कुप्पा भेल छलाह। सबकऽ कचते चकडइ छलाह जे फला चदन एसी मे चदक्ली जयबाक चटकस अइ।सब गोटे चाइत चदन पर पटनासँचादा भेलाह।

एसी मे जायकऽ पचहल अनुभि छलइन। राइत मे जाड लागह लगलइन, मामा कम्बल देखा देने रहचथन पचहनेहे....अपन ओइढकऽ सुइत रहलाह। खेनाई पीनाईकऽ त पुछु ने। बुझाइन जे बचयाती मे आयल छी। अपने मोने खायक सामगी सबदऽ रहल छलइन।

अंत मे आइसकीम सेहो देलकइन। मामा कहलखिन जे राजधानी एक्सपेस छैक ई। सबटा पाइ पहिलनेहेलऽ लइ छइ। एको गोटे फाजिल नहि छल बोगी मे। ओना दिल्ली बला रेन मे त

" ईधर घुसचलिये,

ऊधर घुसचलिये,

कहा घुसके,

माथा पर बैठ्ठियेगा-

ओ बीमार है..... लेटा है

रेन है कि एम्बुलेस है......सब बीमारे है

ईएह सब ओ सुनने छलाह। अइ बेर सब बचाने।

बच्चिया जतरा बुझेलइन दमन के।

दिल्ली मे स्टेशनसऽ सीधा टैक्सीलऽ क बता अस्पताल जाइ गेलाह। डाक्टरसऽ समय पहिलनेहेसऽ लेल छलइन। ई "फ्लाइड सजरी " छल। जतेका सुविधा हुअय.....करा लियह। अस्पताल मे मामीकऽ भतीकऽ लेलकइन। एकटा कोठरीदऽ देलकइन। नसक अलावे एकटा नर्संथा औडली, जेकरा दाई बुझु, सेहो मामी खाबार अलगसऽ रहइन। बेर बेर काकी बाला जे तरदुत भेल

छलइन दमनकऽ इरविन मे,ओइसऽ बसालबऽ लागइथ। ओइ मे िइर बेर जाइ छलाह तखइन नवसाथया आ दाई अबइ छलइन। अतऽ त पले पले हाल पुछाडी लेल अबइ छलइन।अस्पताले मे कैफेटेरिया छलइ। मामा जाकऽ र म नम्मर वालाखा देने रहथिन आ दमनकऽ काडथिऽ देलथिन। उनका जे खेबाक होइन से खा लेताह-पैसा देबाक नहि काज।काडथमे िढा देतइन। चलकत एके टा छलइ जे राइत मे एके गोटे कोठली मे रही सकइ छल। बाकी लोकक लेल सबजाना जगह बनल छल।

मामा दमनकऽ वीिर पुछलथिन।दमनकऽ त दस टा गऊंआ ओतइ संगम विहार मे रहइ छइन।तीन टाकऽ त अपने घर छइन। बाकी सब वकराया मे कोठली लेने छइथ। चलन भइड दमन अस्पताल मे रहइथ आ राइत मे कोनो ने कोनो गऊंआ कतऽ िइल जाइ छलाह। गऊंआ सब बडड आबेश करयन। गाम मे सब दमनसँउपकृत रहइ छल। चाछलो जतरा काकी बला मे, संबंधी सब कतऽ गेल छलाह। गऊआं सब छुटल छलइन। ओना ई सब काकीकऽ देखऽ अस्पताल मे दुर रहलतो कयेक बेर आयल छल।अइ बेर सबहक घर सेहो गेलाह। राइत मे र कइ छलाह अपन संगी मोहन कतऽ । ओ असगरे एक कोठरी मे रहइ छल। राइत मे तरह तरहकऽ नीक बेजाय गप होइ....... फेर मनमाफकक खेनाई बनहि। भोरे, मोहन अपन आफिकस जाय आ दमन अस्पताल।

ओना दमनकऽ एतऽ अस्पताल मे अपपन कोनो काज नहि

बुझाइन। सब पाइयक खेला छलइ।पन्द्रह िदन मामी अस्पताल मे रहलीह। आपरेशन सब ठीकभऽ गेल छलइन। आब दोसर िडथ मे िशफ्ट करतइन आ अिगला िदन िडसिजथकरबाक छलइ। िदह िदन एके कोठरी आ एके नसथआ दाई छलइन। ओ देखइ छलाह जे मामीकऽ ओइ दाईसँबडड खुसुर फुसुर होइन। नबामिथाया त ओतेक भाि नि दइन लेिकन दाई लक्लो िपो मे लागल रहइ छल। खुब दोस्तीभऽ गेल छलइन दुनु गोटा के। कोठरी छोडबाक काल मामी, दमनकऽ कहलििथन -

"अकरा िइर टा धीया पुता छइ। अस्पताल मे ई एकटा एजेसीकऽ माध्यमसँआयल अइछ। बडड कम पाइ दइ छइ। अपने िदसक छइ। पढल िलखल सेहो छइ। घरबाला सेहो िमक्युिटी गाडथछइ। नुकाकऽ अकरा िकछु पाइ बख्शीश मेदऽ िदयउ। बडड सेिा केलक अइछ। नुकाकऽ देबइ। ककरो कहबइ नि। ज्यो मनेजर अकर बुइझ जेतइ त सीधा नौकरीसऽ हटा देतइ।"

िकछु पाइ िनकाइलकऽ कुमोनसँदमन ओकरा देबह लगलििथन। मामी कहलििथन-

"हमरा देखाऊ।

....

आर िदयउ। हम आहाकेदऽ देब।

मामा जेका अहुं पुरख छी ने-मऊगीकऽ कतेक जररत होइ छइ से कोना बुझबइ"।

दमनक ऌसाबे मामी ओकरा बेशी पाइ देलथिन।दाईकऽ त डयुटी छइ। कथीकऽ पाइ। उपरसँअते डर। तखइन लइते ऌकअए छै।

दमनकऽ भेलइन जे ई मामीकऽ पोल्टयाकऽ ठइग लेलकइन।राइत मे मोहन कतऽ घुरलाह। ओ केक आ मिठाई देलकइन खाई लेल। कहलकइन-

हमर पडोसीकऽ बेटाकऽ आइ जन्मदिन छलइ। ऊयाह पठौलक अइ।

बगल बाला घरसँआजि अबइ छलइ -" अखनो दुनिया मे नीक लोक छइ जे गरीबोकऽ सुनचि छइ।"

बख्शीशक पाइसऽ ओ बेटाक कपडा आ केक कीनलक अइछ।अपन पाइ त पहिनेहेसँजन्मदिनकऽ लेल महाविर जीकऽ लडडू भोग लगबऽ लेल रखने छलाह। ई बेटाकऽ जन्मदिन त भगविने अतेक नीकसँमनबा देलथिन।

दमनकऽ केक आ मिठाई खेलाकऽ बाद ओइ बचिसँभेट करबाक मोन केलकइन। ऌकछु आशीविदी ओहो देबऽ चाहइ छलाह।केक

खेबाक उपरात अतबा बनल नहि छलइ। ओकर बगल बाला कोठरी मे मोहन संग जखइन ओ जाइ छइथ त देखइ छथिन जे उएह मामीकऽ अस्पताल बाली "दाई" सीधा पक्का साडी मे माथ झंपने बेटा संग खेला रहल अइछ। दुनु गोटे स्तब्ध भऽ गेलाह। दमन किछु पाइ बच्चाकिऽ हाथ मे दऽ घुइड गेलाह।

ओकर रतुका डयुटी होइ। ओ राइत मे अस्पताल आ दमन ओकर पडोस मे मोहन कतऽ । अखइन तक देखा-देखी भेले नहि रहइन।

आब अपन सोचि पर अफसोस होइन। आरो "बख्शीश" मे मामी किछु अएह नहि देलखिन।दमने लग सब पाइ रहइन......जे किछु चाहतइथ,दऽ सकइ छलाह......ऊपरसँ मामीयो कहियो किछु नहि कहलखिन सेहो देने छलखिन।

ठीके पुरुख किछु नहि बुझई छइ। आब उनका बडका लोकक उदारता नीक लागऽ लगलइन। मोने मोन सोइचि लेने छलाह जे आब कहियो " बख्शीश" पर संदेह नहि करताह।

टीस (लघुकथा)

ककरो ककरो जीनि मे अतेक जल्दी जल्दी बदलाकि बयार बहअ लगइ छइ जे ओ सोचिऽ पर मजबुरभऽ जाइया चक कोनो कथाकऽ पटकथा त नचि तैयारभऽ रहल छइ।अहुना की कोनो जीनि छइ-कण मे अट आ कण मे पट। अखइन देनिाथ, नबका डेरा भेटअकऽ खुशीकऽ एको बाचसया आनंद लेबो नचि केलाह ....डेरा छुच्टयो गेलइन। आहा एना बुझु जे छोडअ परलइन। ओ नचि छइ-"जायब नेपाल त कपार संगे जाइत।"

गामसऽ नबे नब देनिाथ चक्ल्ली आयल छलाह। अतऽ ओ अपन संबंधी चदिाथी कतऽ ठहरल छलाह। आब एलाह उपरात उनका लेल डेरा तकनाई शुर भेल। तच्हया चक्ल्ली मे लोक एक साझ खुआ दइ छलइ, लेचकन रहअकऽ नचि कहइ छलइ। ओना अखनो ईएह हाल छइ। सब महानगर मे ईएह हि बहल छइ। "मुंह देख मुंगबा" छलइ। खुबऽ लऽ दऽ कऽ अबइत छी, तखन त नचि कोनो चक्कत। अन्यथा ज्यो कतउ धरना खसाअ देच्लयई त बाद मे सुनऽ पडत- " खाता था और यही पडा रहता था। इतना हगा चक मेरा पाखाना का हौज भर गया।" ई सब चखस्सा ओ गामे मे सुनने छलाह।

दु तरहक समाज छलइ। चदिाथी आ मजदूर गिथत अपन नब

लोककऽ हदयसँसंगित करय छलइ लेकिन जे पािं- दस बरख पहिने चली आयल छलाह आ परिवार संग रही रहल छलाह- ओ त अपना घर पर किनको टपअ नहि दइ छलखिन। तखनो जे आइब गेलाह त उनका उचिनर मािकऽ ध दइ छलखिन। गलतीसँजे ओ घरबइया,अपन घर कीनने छलाह- तखइन त बुइझ लीयह, उनकासँबूिझयार कियो नहि। सबसं बढ़िया उनके कलोनी आ सबसं बेहतर उनके मकानक नक्शा.....सबसं दामो बेशी उनके घरक।सुनिश्चित रहु-पिनि.......। अपनाकऽ त कथी दुन बुझई छलाह घरबइया, मुदा आगंतुकभऽ गेलखिन " बिहारी।" उनकासँबेशी कमझ कियो नहि। बेिरा मोने मोन कान पकडई छल आ लगले बिदा होइत छल।ई असुरक्षक भािना छलइ या किछु आओर-से नहि जाइन।

अही सब हाल मे देिनाथ आयल छलाह।अबाते लाइग गेलाह "डेरा" ताकऽ । डेराकऽ त कोनो कमी नहि छलइ- जेकर कमी छलइ, ओ छल "ढऊआ"।ओइ बजट मे नोयडा मे घर भेटइन- तखइन होइन जे नोयडा त उतर पदेशभऽ गेल.......तखइन पटने कियैक नहि। नोयडाकऽ नाम फर नाक भौ सिकुडअ लगइन। दौड धुपक बाद पीत बिहार मे एकटा िचम मंजिल पर बंद फ्लैट भेटलइन।

आब भेल- रममेटकऽ तकनाई। ओतेक कियो राया असगर त संभि नहि छलइ। बिनका माध्यमसँडेरा भेटलइन-ओ सेहो संग रहबाक

पत्याशी छलाह..... लेकिन दादिदारी खुइलकऽ नहि केने छलाह। तेसर एक गोटे आर नब विदाथी माधि आयल छलाह,ओ एक कुडी सेहो भेलाह..... किरायाकऽ लेल। ई देखू - अखइन देनिाथकऽ अयलाह एक महीना नहि पुरलइन- उनकर एकटा गंऊआ पभात परीक्षा दइ लाय, ऊपरसँसेहो आइब गेलखिन। देनिाथ अपने पाहुन.....आब पाहुनकऽ पाहुन....... युि सतर पर इनका लेल डेरा ताकल गेल। डेरा लेल बुझु की सतगामा हकार पठाओल गेल छलइ। एजेट त सट देने घर बदअय दइतइ, लेकिन ओ तऽ पैसा लेतइ, तै ओकरा अइ मे नहि कहल गेल छलइ।

"डेरा"कऽ िभी भेट गेल छलइन। देनिाथ आ माधि भोरे पीत विहार गेलाह। घर मे सऊंसे कबुतरक बीट छछियाल......... महीनोसँघर मे झाडू नहि पडल......गंदगीक अंबार लागल। एरिया बडड सुनर छल। कोठी िर कात। ईहो कोनियेकऽ ििम तल्ला छल।

सबसं पहने दोकानसँझाडू,फिनायल, पोछा, बाल्टी, मग सब कीन कऽ दुनु गोटे अनहि गेलाह। फेर शुर भेल सफाई अभियान। दसो बाल्टी कुडा कबाडा सब घर मे छलइ। अपन डेरा आ नीक एरिया देख कऽ दुनु गोटे जोश मे छलाह। जिनी मे त अपने नशा होइ छइ।खुब िमिमा देलखिन घर के। अइ डेराकऽ बालकोनीकऽ सामने िला घरक छत पर िइर टा सुन्दर लडकी सेहो ठारभऽ कऽ इनकर सबहक सफाई देखइ छल- आपस

मे हंसी मजाक करय छल। चकछु िहलबाज़ीभऽ रहल छलइ ऊमहर। देिनाथकऽ नजइड जखइन ओमहर जाइन त ओ सब मुचमकयाईयो दइन। फेर की छलइ। भुख चयास सब दुनु गोटेकऽ हेरा गेलइन। आठ बजे भोरसँतीन बजे चदन तक ओ सब लागल रहलाह आ घरकऽ िमिमा देलाह। सामने बला छौडी सब सेहो अचयक काल इनका सबके तचकते रहलइन।

आब त देिनाथकऽ भेलइन जे असली चदक्ली त ओ आब एलाह अइछ। अतऽ बच्छया समय बीततइन। अकरा सबहक आंईख मे उनका अपना लेल दोस्ती देखा रहल छलइन। ओ तऽ आब उमंग मे आइब गेल छलाह। जे सुनने छलाह जे चदक्ली मे एना होइ छइ.....ओना होइ छइ......सब पुरा बुझाय लगलइन। चकछु चकछु ओहो सब इशारा केलकइन आ ईहो इशारा मे ज़बाब देलचखन। होइन की सामान लइयेकऽ कीया नचि एलऊं। जायकऽ मोन नचिकऽ रहल छलइन।

नब ताला, फ्लैट मे लगाकऽ दुनु गोटे घुरलाह।पभातकऽ सेहो अनबाक छलइन। ओ अतऽ सँअनभुआर छल। ओकर त देिनाथे ने अपमन एतऽ ।

सात बजे साझ मे देिनाथ, माधि आ पभात सब सामानलऽ क उमंगक संग पीत चिहार अयलाह। फ्लैटकऽ बकब सब बदलला

आ सामान सब रखलाह। घर आब बेसी नीक लाइग रहल छलइन। चाछान चाछान सेट केलाकऽ बाद घुमअ चाकललाह। उम्हरेसँतीनु गोटे खाअ पीअकऽ घुरलाह।

नीचाँसँदेखइ छइथ जे घरक लाइट जइड रहल अइछ। तीनु गोटेकऽ नीकसँयाद छलइन जे बती मीझा कऽ आयल छलाह। सीढीसँदौडइत उपर चढिलाह। देखइ छइथ जे उनकर सबहक सब सामान पैककऽ कऽ फ्लैटक दरबज्जा पर बहरी मे राखल। घरक अन्दर चाइर टा देबिनाथसँकनी बयिस मे बेशी लोक सब बैसल छल। सामने छत पर ऊयाह लडकी सब ओम्हरका ठार....हंसइत....अकरा सबसँबच्चायाइत।

इनका सबके ओ कहलकइन जे हम "डेरा" भारा पर नहि लगायब। आहा सबहक सामान बहरी मे अइछ। सामान उठाऊ आ चलिइत बनु।

देबिनाथ गामसँअखनेआयल छलाह। उनका अतुका ई रंग ढंग बुझा नहि रहल छलइन। ओ बहसा बहसी करऽ लगलाह। कहलखिन- हम त आहासँ चाभी नहि लेने छी। जे देने छइथ, उनकासँआहा सब गप्प कर ।

ओ बाजल- उनका खबरकऽ देने छियइन। ओ अबैते हेताह।

-ताबइत हम सब नहि जायब। बरजोरी करब त ओ ठीक ककरो लेल नहि।

-बरजोरी हमरा सब लेल नब नहि, लेकिन आहा पढअ आयल छी ……घरकऽ बडड नीक साफ केलऊं अइछ, तै हमरा सबकऽ बरजोरीकऽ जरुरि नहि। ओना आहा कहिब त कऽ देब।

ईएह सब गरमा गरमी चिइल रहल छलइ ताबइत पभात, देविनाथकऽ धीरेसँकहइ छथिन - हमरा कानकऽ स्टीम बइन गेल अइछ। जल्दी करय जाऊ….. हमरा सुतबाकऽ अइ।

ई सुनिते देविनाथकऽ देह मे आइग लाइग गेलइन। ओ त सोइच रहल छलाह जे बदमशाकिऽ अइ चिलम तक्लाकऽ बालकोनीसँउठा कऽ नीचा फेक दी। आ पभातकऽ देखू कान लाइग रहल छइन। एहनो मनुक्ख होइया।कतऽ मार घटाईकऽ चाहबा छल, आ इनका कान लगइ छइन। देविनाथ त बुझई छलाह जे चािइर गोटे बदमशा सब अइ, त तीन गोटे हमहु सब छी। एक गोटेकऽ ऊपरसँफेकते ई चक्कली बाला सनचटही सब की चकत। सबकऽ माइड कऽ भगा देबइ। जे हेतइ से देखल जेतइ। अइ छौडी सबहक सामने बेजजती कतउ बदाश्त होइ। माधि सेहो बहस मे देविनाथकऽ संग छलाह।

पभात आब समस्या बुझाय लगलथिन।उनका कोनो मतलब नहि अइ सब सं। देविनाथ उनका डेरे डेरालऽ कऽ घुईम रहल छइथ आ इनका देखू। ओ ओतइ एकटा कुसी पर बैसल ऊंघा रहल छलाह।

थोडे काल बाद शैलेश जे िभी चद्दयेने छलच्चन आ अपनो अतइ रहअ बाला छलाह- सेहो अयलाह। उनको बदमशाि सबसँअलगसँगप्प भेलइन। ओ अकरा सबकऽ देख कऽ डरा गेल छलाह।

फ्लैटक ताला त ओ सब तोइड ि़कल छल। देिनाथकऽ सामान पैककऽ देने छलइन। सुतली राइत सामानक संग संबंधी चिदाथी कतऽ घुरलाह।

भइड चद्दन जे घर साफ करऽ मे जे मेहनत केने छलाह, से देह आब दुखाइत छलइन। कतेक खुशीसँसब काज केने छलाह......की की ख्याल मे आयल छलइन। एके बेर सब िजपातभऽ गेलइन। कानल कचाया .....घुचये गेल.......... बाला हाल भऽ गेल छलइन।

मोन मे ईएह घुचयाइन चक घर साफ करबाबइ लेल तं ई कोनो योजना िल........ि उनका संग धोखा भेलइन........ओ छौडी सबकऽ ई हस होइत, से बुझल छलइ- तै हंसई छल......पच्चनेहो आरो ककरो संग एना भेल छइ?......

जे भी होइ, धोखा त भेले छइन आ ओहोसँबेशी हदय पर डाका।ई "टीस" सबच्चना रहबे करतइन।

विशासघात (लघुकथा)

पहलुका समय मे रामबाबूकऽ समाज मे सब कतऽ , नवि चकछु त पइनभरनी ि रार- रावन होइते टा छलइ। अहनो लोक चानका कतऽ दुनु साझ िला जरऽ पर संदेह- उनको चकयो नवि चकयो खबाचसन छलइन।भोज भातकऽ बाद जुठ उठबऽ खाचार ककरो कहऽ कऽ नवि पडई.......खतबे टोलीकऽ स्तीगण आ बचि सब जुठ पात पर टुइट पडई आ बदला मे सब साफ़कऽ दइ। ओकरो सब मे ककरो पाइन िलइ आ ककरो नवि। ई िगीकरण सब समाज मे रहइ।

रामबाबूकऽ पचिर मे त जेना जमीन-जथाकऽ बंटिरा होइ.......ओचहना नौकर-िाकिरकऽ सेहो।ई नौकर सबहक घर, चानकर जमीन पर छलइ, उएह ओकर माचलक भेलइ।ओइ नौकरक कचाया इनकर सबहक पइनभरनी आ जे तेज तरार नौकर, से खबासभऽ जाइ छल। कखनो आहा भोर मे सुइतकऽ उठू.....सब घइल पाइनसँभरले भेटत। जयो एक टा दुचखत होइ त ओकरा दोसर संग गठबंधन रहइ..... ....ओ आइब कऽ भइड दइ छलइ। चाना नागाकऽ ई वयिस्था िलइत छलइ। पाइनो की त, धार ि ईनारसँअबइ। खेनाई चानाई ईनारक पाइनसँआ कपडा लता, कचाया बहुचरयाकऽ नहेनाई धोयेनाई, पाहुन परख-ई सब लेल पोखइड ि धारसँपाइन अबइ छल। ईएह ढरा पैघ छोट सब घर मे छल। पाहुन परख आ बेटीकऽ ऐला गेला मे एक दोसरसँमंगनिन होइ......अकरा

खराब नञि मानल जाइ। पाहुन आ बेटी त समाजक होइ छल।

जे रामबाबू, सर संबंधीकऽ टेलि कहू ि नौकर, पठबइ छलथिन-से अपने आब बेलकल भेल छइथ।जखनयासँ नकमी बटाई बाला केस हारलाह, सब नौकर िकिर ठेगा देखा देलकइन। पछाइत एहन ने उजाही मिलइ- सब सोलकन गाम छोड़कऽ ि इल गेलइ। दु िइरटा ओइ मे सऽ बम्बइ मे ततेक ने कमेलकइ जे ओकरे देखाऊंस सबके लाइग गेल छइ। आब त रामबाबूकऽ एकटा चपअयद ओकर बम्बइ बाला होटल मे खेनाई बनबइ छइथ। सब दुसधा सब नक्सलाइटभऽ गेल छइ। बाबु भैया सब डरे डरायल रहइ छइथ। माल्लक कल दइ छइन-ओतबेसँ बारचत।

रामबाबू सबच्दना नौकर िकिर रखलाह। कतउ नोता चहानी मे जाइथ, तखनो एकटा संगे जाइन। कचाया उनकर जयथुन ि नञि, लेचकन नौकरबा जेबो करय।माल्लशकऽ कचतइन पहुनाई मे! आब अइ चकिट समय मे उनकर समईध एक टा टेलि जोचायाकऽ पठा देलथिन। ।उनकर समच्यायाना मे जोचाया माय पइनभरनी छल। बाधि छलाय त सोलिक जे दु पेटसँएक पेटभऽ जाइत। एक गोटेकऽ तऽ कोनो हिली बाला खुआ देतइ। घर होइ बेशी भीते के, मूदा कहाइ "हिली"।एके दु घर कोनो गाम मे कोठा होइ छलइ।

जोन्माया बारह तेरह बरखक छल, जखन्या रामबाबू कतऽ आयल। नीक नुकुत खेला उपर देह ओकर फुइट गेल छलइ। नौकर ाकिर त गोर कम्मे होइ छलइ- लेकिन जोन्मायाकऽ रंग साफ छलइ। ओ देखबा मे रामबाबूकऽ घरक धीया पुतासँकन्माको कम नन्हि लगइ छल। कतेक नब लोक त ओकरा उनकर बेटे बुझई छलइन। जोन्मायाकऽ रामबाबू माइनतो बडड छलन्धिन।ओ जोन्मायाकऽ ल कऽ अपनो धीया पुताकऽ ब्लागइड दइ छलन्धिन। रामबाबू जमाना देखने छलाह आ ओइ अनुसार अपनाकऽ बदइल लेने छलाह। उनकर कहबाक छलइन - " जोन्माया दोसरकऽ बचि ा छइ....... ज्यो अपन बचि ा ओकरा नन्हि बुझबइ त एक ब्दिन नन्हि ब्टकत। जे काज ओ कऽ दइया, से काज ब्कयो अपान नन्हि करत। " अन्हना जोन्मायो, रामबाबूकऽ ध्यान रखइन।

जोन्मायाकऽ मायकऽ समय समय पर रामबाबू पाइ पठा दइ छलन्धिन।ओकर कखनो समाद नन्हि अबइ जे जोन्मायाकऽ घर पठा ब्दयउ........देखबाकऽ मोन करइत अइछ। बस पाइ भेट जाइ आ ओ खुशभऽ जाय। तखनो रामबाबू दु-तीन बरखकऽ बाद जोन्मायाकऽ ओकर गाम घुमा दइ छलन्धिन।

जोन्माया सेहो अतऽ खुब खुश छल। ओहो कखनो मायकऽ मोन नन्हि पारय।

जखइन जोन्नाया अठारह उनैस बरखक भेल त ओकरा च्चकछु ि रिऊका समाद अपन घरसँएलइ।ओ रामबाबूकऽ कहलकइन जे एक बरख करीबभऽ गेल.......हम गाम जाय ि हिइ छी। ओइ समय मे रामबाबूकऽ हाथ मे ओते पाइयो नच्चि रहइन.....ओ ई बात ओकरा कहलच्चखन। जोन्नाया बाजल-

की हेतइ। आहा बाद मे पठा देबइ। हम त लगले घुइड जायब। बुझु की...बेशीसँबेशी दस च्चदन मे अतइ छी।

रामबाबू एकगोटे संग ओकरा घर भेजबा देलाह।

दस च्चदन की बीस च्चदन बीत गेल। फेर मच्चहना दु मच्चहना ......तीनो मच्चहना बीत गेलइ। जोन्नाया नच्चि आयल आ नच्चि अपन बच्चकयौता पाइकऽ लेल कोनो तगेदा।

आप रामबाबू अपन समच्चयानासँपता केलाह। जोन्नायाकऽ समाज मे बर्च मे ब्नयाहभऽ जाइ छइ। गौना छंटगर भेलाकऽ बाद होइ छइ। ओ जे जोन्नायाकऽ ि रिऊका समाद छेलइ से ओकर कन्नाया पठेने छलइ-जोन्नायाकऽ ब्नयाह सेहोभऽ ि किल छलइ.....अतऽ ककरो नच्चि बुझल। जोन्नायाकऽ समान मेसँपुजी न्नाकललइ......च्चलखल छलइ-" अगर तौ अइ फागुन मे गौना नच्चि करेबऽ त ओकर बाबु ओकरा दोसरा संग ब्नयाईह देतइ। तोहर

मायकऽ कयेक बेर समाद पठालि गेलइ-ओ कान बात नहि दइ छइ। जकीसँ दन तका कऽ पठबयह..... ज्यो ाहइ छह। नहि तं लइत रहयअ घंटा"।

ओ सैह बात रहइ। जोगाया माय गौना कराअ क, फेर एक पेटसँदु पेट नहि करऽ ाहइ छल। तै ज़बाब नहि देने छलइ। जोगाया गौना करेलक आ घरबालीकऽ अनलक। खि बइढ गेलइ। जोगाया माय सेहो बुढ भऽ गेल छल। ओकरोसँकाज धंधा नहि होइ। जोगायाकऽ नीक नुकुत खायकऽ आदतभऽ गेल छलइ। कनी जीभलाह ओ शुरयेसँछल। ओकर एकटा ससुरक भाइ दरभंगा मे हलुाईकऽ काज करय छलइ। ओ अकरा कहलकइ-

"मेहमान! तौ दरभंगा आइब जाह। हम सब सीखा देबऽ। हुनर भऽ जेतऽ, त भइड जीनि बना बोझा ढोने, नीक नुकुत खाइत पीयइत बीत जेतह।"

जोगाया देखलक जे गाम मे त ओ आब जन बाला मजुरी कऽ नहि सकइत अइछ। रामबाबू जे पाइ दइ छलबन ओइ मे ई दुनु सास पुतोहुकऽ चभनाई असंभ छइ।ओकर समाज, घरिलीकऽ बभनटोली मे काज करऽ नहि देतइ।अइ हालात मे, होटल बाला काज ओकरा ठीक बुझेलइ। सोलिक जे गपकऽ कऽ देखी पहने।

दोसर दिन दरभंगा " सत्कार होटल" गेल। ओकर कुटुम्ब, होटल मालिकसँ गप्प केने रहइ। फिर दिन बादसँ काज पर अयबाक छलइ।

जोगाया सोचलक जे रामबाबूकऽ समादद ऽ बिनु अयन जे ओ दोसर काज पकड़ लेने अइछ। ओकरा साहसे नहि भेलइ। ओकराभऽ रहल छलइ जे ओ उनका संग विशासघातकऽ रहल अइछ।ओ गाम छोड़ि गेल।

फिर दिनकऽ बाद अपन कपडा लता संग होटल पर आइब गेल। भोर साझ ओ हलुआईकऽ काज सीखय आ बाकी समय बैरा िला काज करय।

एहन ने चकिन चिनमुन ओकर हंसइत चेहरा रहइ जे गहकी सब आकर्षित होइ। बोली-बानी ओ रामबाबूसँसीख लेने रहय।

होटल मालिक सब देखइ छल। ओ जोगायाकऽ काजसँखुश छल। जोगाया सेहो अइ नब परिवेश मे मजालऽ रहल छल। दिन भइड तरह - तरहकऽ लोक सब होटल मे अबइ जाइ छलइ।

अहिना एकदिन रामबाबूकऽ एकटा गऊंआ मोहन ओइ होटल मे

अयलाह। उनकासँआडम्ब्य लइ लेल जोन्माया आयल। दुनु एक दोसरासँपुरना गप्प शप्प कयलाह। जोन्माया मान्मकसँकच्छ कऽ च्छकछु छुट सेहो च्छअय देलकइन।

रामबाबूकऽ बेटा रमेश सेहो दरभंगे मे रही कऽ पढइ छलाह। मोहन, जोन्माया बाला गप्प रमेशकऽ कहलच्छन।रमेश तखने सत्कार होटल गेलाह।ओतऽ जोन्माया भेटलइन। ओ कहलच्छन - कच्छया जेबे।

ओ बाजल- अतऽ सँन्मा़ति होइ छी, फेर जायब।

बहुतही ठंडा व्यहिार छलइ जोन्माया के। िहो ताह लेल नच्छि पुछलकइन। ओ तऽ अपने आपकऽ दोषी बुझई छल।

रमेश, होटलक मान्मकसँगप्प केलाह। ओहो अनच्छयाले जेका ज़बाब देलकइन। रमेश घुइड अयलाह अपन कमरा पर। आब जुगत भीरबऽ लगलाह जे केकरा कहलासँहोटल िला बात मानत।

उनकर एकटा संबंधीकऽ संगी दरभंगाकऽ बडका बापक बेटा छलाह। उनकर बडका टा मकान होटलकऽ लगे छलइ। रमेश ओइ संबंधीकऽ ल कऽ ओ बडका लोक कतऽ गेलाह। ओ पुरा आगत सिगत केलच्छन आ इनकर सबहक संग सत्कार होटल अयलाह। ओतऽ होटल बालाकऽ च्छगडबो केलच्छन जे

आहा हमर संबंधीकऽ नौकरकऽ अपना कतऽ चकअए रखने छी। होटल माचलक हफ्ता चदनकऽ समय लेलकइन, जे ओ जोचायाकऽ द देतइन।

सात की दस चदनकऽ बाद जखइन रमेश होटल गेलाह त जोचाया कहलकइन - ओ जे फला बाबूकऽ बेटा आहा संग ओइ चदन आयल छलाह, से बाद मे फेर आयल छलाह। होटल माचलककऽ केबान मे ओ हमरा कहलाह -" जतेक पाइ आहाकऽ रामबाबू दइ छइथ, ओकर दुना हम देबऽ। तौ हमरा कतऽ रह।"

दु बरखसँउनको दरभंगा डेरा पर नौकर नचि छइन-परेशान छलाह।

जोचाया उनका त चकछु नचि कहलकइन लेचकन होटल माचलककऽ कहलकइ- " हम रामबाबू माचलक कतऽ नचि रहब त दोसरो कतऽ नचि रहब। हम आब बम्बइये जाइ छी, गऊंआ सब लग"।

रमेशकऽ ततेक ने अइ बातक तकलीफ भेलइन जे देखू फला पचािरकऽ भ कऽ ओ दरभंगा बाला केहन चशिासघात केलाह। जोचायाकऽ कोनो गलती नचि, तखनो ओकरा अपन दोष बुझाई आ ई फला बाबूकऽ बेटा भऽ कऽ पाछुसँगेम खेलाय लगलाह। ओ मोने मोन सोइि लेलाह जे आब चबाना नौकरकऽ रहनाई सीखऽ कऽ अलाि कोनो िारा नचि। जे जतेक पैघ, उनकर दीन ईमान- ओतेक छोट। चशिासघाती सबतर बैसल आ पैसल छइथ।

पापक फल (लघुकथा)

महेन्द्र बाबू आश सुभ्यस्त लोक छलाह। बडका बासडीह -अगाहसऽ बागाह तक,पोखरा पाटन, मंचद्वर, कलम, खरहोइड, बसबाटी, धनहर खेत आ छहइडक कात कतउ सऽ कतउ जमीन उनका छलइन। जखनया जन्म भेलइन तखनया दु टा कोठरीकऽ दरबा जका घर छलइन। अपने अजथा कऽ कऽ सब ठार केलाह अइछ। अइसँई नचि बुझ्झ लेब जे खुब कमेला अइछ!कहक लेल किालत करय छलाह। अपने केश लडइत लडइत किीलभऽ गेलाह।

ई सब सम्पइत, उनकर पचािर मे छलइन। मूदा की? कोना? तखनया उनकर दादाक(चयताकऽ ओ दादा कहइ छलाह) संग बंटािरा मे भेलइन। दु टा कोठरी टा ह्सा मे पडलइन। बचि महेन्द्र एक बेर अपन दादा संग सुदन बाबु कतऽ गेल छलाह। सुदन बाबु जलाक बडका मोख्तार छलाह। ओ इनकर दादासँपुछलथन जे इनका कतउ पढाकऽ मास्टरी धरा दयउन।हनकर दादाकऽ जिब छलइन जे मास्टरी ई मना करय छइथ। तइ पर उनकर जिब छलइन-" त की मोख्तार बनताह "। घमंड मे डुबल सूदन बाबुकऽ ओ बात महेन्द्रकऽ आगु बढबा लेल पेचत कऽ रहल छलइन ।

महेन्द्र बचिसँजमीन जालकऽ बंटािराकऽ लेल संघषथकरइत

छलाह। सुपीम कोटथ्तक गेलाह.....केश जीतलाह.......फेर धीरे धीरे सब चकछु ठार केलाह। संघषकऽ संग संग किालतोकऽ पढाइ- चलखाई पुरा केलाह।मोखतार त नचि, ओइसँएक डेग आगु िकील बइन गेलाह। आब त दादा नचि जीबइ छचथन। रचतथीन तं, बडड गथिहोइतइन। अपने ओ पढल नचि छलाह, लेचकन पढबाक बडड सेहन्ता छलइन।

जखइन समपइत अबइ छइ त ओ अपना संग फुचसयाही "शान" सेहो अनचि छइ।ओइ मे जयो आहा चकछु केस मोकदमा जीत जाऊ त अपनाकऽ "अजातशतु" लोक बुझअ लगइत अइछ। महेन्द्र बाशा संग सेहो सैहभऽ गेल छलइन। अपनाकऽ आब जमीदार बुझअ लागल छलाह। उनकोसँबेशी उनकर धीया पुता सब मे ई बीमारी आइब गेल छलइन।

एक चदन महेद बाशकऽ पोखइड मे इनकर बेटा गजेन्द्र दतमइनकऽ कऽ कुर रकऽ रहल छलाह। तखने एकटा मलाचन खखार फेक देलकइन पोखइड मे। पाइन मे दहाइत ओ खखार चनकर सामने आइब गेलइन। गजेन्द्रकऽ खखार देखते पारा िईढ गेलइन। ओ ओइ मलाचन पर बागडला..... चकछु अिाि कथा सेहो कहलचथन। ओहो मलाचन उकटा उरेब बाईज देलकइन। बस आब की छलइ। खीसे माहुर भेल गजेन्द्र ओकरा पर हाथ उठा देलचकन। एक त उनकर पोखइड, दोसर खखार फेकलक आ उपरसँमहेन्द्र बाशकऽ बेटा, कतउ बदाशत होइ।

ओ मलच्छ्नाया कनच्चि त अपन घर गेल। मलाह टोल आ दुसधा टोली दुनु सटले छलइ। ओना दुनु टोल मे बात बात मे माइड पीट होइ। दुगोला छलइ ओकरा सब के। लेच्कन अतऽ त बभनटोलीकऽ गप्प छइ।आइ मलाच्छन संग भेलइ त काइल दुसच्धन संग सेहो हेतइ। ई रोग काटनाई जररी छइ।

दुसध टोली आ मलाह टोलकऽ सब मऊगी -मदथ लाठी ,भाला, गडास, जेकरा जे भेटलइ-लऽ कऽ महेद ब्राशकऽ दरबज्जा पर आइब गेलइन। लोहा बाला बडका गेटकऽ बंदकऽ कऽ अइ कातसँमहेन्द्र ब्राश लाईसेसी बंदुककलऽ कऽ ठार आ उमहरसँओ भीड। ओ सब कहइन जे आहासँहमरा सबकऽ कोनो दुश्मनी नच्चि। हमरा सबकऽ गजेन्द्र ािही। ओकरा च्छम्मत कोना भेलइ मलाच्छन पर हाथ उठबऽ के। गजेन्द्रकऽ ताबइत घरसँपाछु मुंहे भगा देल गेल छलइन।

बडी काल ई खेल िलल। आरो गऊंआ सब आइब गेल। अतइ पंिती भेल आ च्कछु आच्थथक दंड गजेन्द्र पर ठोईक कऽ मामलाकऽ रफा दफा कयल गेल।

महेन्द्र ब्राश जे आइ तक कच्छयो नच्चि हारल -अइ

बेइज्जतीसँअपमानित महसूसकऽ रहल छलाह। उनका आब ईहो पता लाइग गेल छलइन जे उनके चढ़अयदक लोक व्यानकासँकेस मोकदमा िलल छलइन-उएह सब अकर पाछु छइथ।

आब शुर भेल "आपरेशन बदला"।

महेन्द्र झाश अपन सब बेटा बेटीकऽ संबंध उएह घर मे करय छलाह जे लाठीसँमजगुत होइथ ि थाना पुलिस पर पभाि होइ। आब जे सब अगुआ छलइन उनकर घर पर िढाइ करऽ मे ओकर सबहक सुि बनल। अलग अलग व्याला किहरी आ थाना सब मे मोकदमा दायर कैल गेल। आब ओतऽ कऽ पुलिसकऽ बजा कऽ ओकर सबकऽ गिरफ्तारी भेलइ। कोटककऽ नोटिस सब अबइ- अकरा सब पर। जेहल गेला पर जमानत करबहो मे बडड पाइ लाइग जाइ। ओ सब परेशानभऽ गेल छल।

फेर पंिायती भेल। गजेन्द्र झाश पर जे आर्थिक दंड लगायल गेल छल से हटािल गेल। ओकर बाद जतेक जगह पर जे केस दायर छल- ओइ सब मे समझौता फाइल कैल गेल। पोखइड मे थुक फेकनाई पर रोक लागल। एनाकऽ कऽ दबाि बना कऽ समझौता भेलइ। ई परेशान करक लेल, झुठा केस केनाई तखनया आम बात होइ। कहबी छलइ- " बिन भय न होबे पीत।"

महेन्द्र झाशकऽ एकटा जमाय रामा ठाकुर समस्तीपुर जिला मे सेहो छलखिन। ओतऽ महेद झा शा अपने गेल छलाह आ ओतुका कोटथ मे केस फाइल भेल छलइ जे फला मुखिया आ फला मुखिया अतऽ समस्तीपुर डेरा पर आयल ....राइत मे ठहरल आ फला सामान सब ि‍रा कऽ पराअ गेल। पुलिस जाि मे घटना सही पालि गेलइ। ओकरा सब पर िरिंट जाकललइ......सब गिरफ्तारभऽ कऽ समस्तीपुर जेहल भेजल गेल।

जखइन समझौता महेन्द्र झाशकऽ गाम मे भेलइन तखइन अतउ ओकरा सबकऽ जमानत भेटलइ। ओ सब अइ बेर रामा ठाकुर कतऽ आयल छल। ओ मक्लाह सब लडाई मे थाईक गेल छल। रामा ठाकुर सबकऽ गोर लाइग कऽ गेल छल। जाय काल मे कहने रहइन जे हम सब त अपनेकऽ गामक कुटुम्ब बुझइत रही। अपने एना करब, से नहि उम्मीद छल। छोडु ।आब माइट दियउ सब पर। ओ सब जेहल गेलासँदुखी छल। रामा ठाकुरकऽ सेहो अफसोसभऽ रहल छलइन। ओ मलहा सब बडड आदर दइन उनका। तरह तरहकऽ माछ-मखान सब सासुर गेला पर खुआबइन ओ सब।

आइ महेन्द्र झा शा सेहो दुनियासँ ि‍इल गेल छइथ। समस्तीपुर मे एकटा हत्याक केस मे निदोष रामा ठाकुर गिरफ्तार भऽ जेहल गेलाह अइछ।रामा ठाकुर कतबो पुलिस ि‍लाकऽ कहलखिन जे ओ निदोष

छइथ। ओ कहलकइन -" जे कहबाक अइछ, कोटथमे जा कऽ कहब। हमरा सबकऽ ऊपरसँआदेश अइ"।

रामा ठाकुर बुइझ गेलाह जे ई मलहाकऽ "आइह" अइछ। ओइ ब्लादोषकऽ तब्लया ई जेहल भेजबेलब्लन, आइ ओ अपने जा रहल छइथ।

ई सब उनके " पापक फल" छइन। सब अतइ भुगतऽ कऽ पडई छइ। अखइन नब्लि भुगतता त अब्लाला जन्म तक पाप ब्लहाडइत रहतइन।

हाथक लकीर (लघुकथा)

जल्हयासँकबीर चौदेशसँघुइडकऽ अयलाह अइछ, बेशी काल ऋषिकेश जाइत रहइ छइथ। अकर पाछु दु टा कारण छइ- एक तं चहल्लीकऽ पदुषणसँमुक्त आ दोसर गंगा माईकऽ कोरा मे रहबाक सौभाग्य। चौदेशो मे नदी सबकऽ माय जका बुझल जाइ छइ। ओतुको सब नदी उनका गंगेजी बुझाई छलइन...... अतऽ त असली गंगा माई छथिन। ओ कोनो ने कोनो बहाने उनका लग जाइत अबइत छलाह। ऋषिकेशकऽ चहल्ली सदन इनकर अडडा भऽ गेल छलइन।

चहल्ली सदन एकदमसँगंगा कात मे छलइ। दुरसँदेखला पर बुझईता जे गंगेजी अपन अंिरा मे अकरा लेने छथिन। अतऽ चाशछल गंगाजी बहइत रहइ छइथ। ओ धारा बहअकऽ जे कलकल धुनि छइ- से कबीरकऽ सम्मोहित कयने छइन। ओ अतऽ आर चकछु नहि करय छइथ.......बस चहल्ली सदनक जे गंगा कात मे बेि लागल छइ.......ओइ पर असगरे बइसल ओ धुन सुनहि त रहइ छइथ।उनका ई धुन सब समयक अनुसार अलग अलग सुनाइत छइन। जेना शास्त्रीय संगीत मे भोर का,दुपहचरया, संझुका, रतुका सब मे अलग अलग राग गाबल जाइ छइ, ओहिना चहनका सब बेर मे अलग अलग राग सुनाइत रहइ छइन। नदी उएह, धारा उएह, गचत उएह, िगि उएह,स्थान उएह, समय उएह आ व्यचक्त उएह........तखइन एना चकअए पाइनक बहाि उनका राग मे डुबल

गीत लगइत छइन।

सबके एके आजि हहअ.....हहअ....हहअ लगइ छइ, इनके चकअए राग लगइ छइन। जे भी अकर पाछुकऽ कारण चविधान होइ......कबीरकऽ अपना नीक लगइ छइन आ ओ अबइत रहइ छइथ।एको राइत अतऽ बाता लइत छइथ त अपनाकऽ उजानि बुझाय लगइ छलइन।आब त चवकली सदनकऽ लोकसब इनका चीन्हो गेल छलइन। कयेक बेर नचि कमरा खाली रहला पर ओ सब अलगोसँइनका लेल व्यसिथा कऽ दइ छलइन। अतऽ जलखइ, िह आ दुनु समय भोजन, सबहक इंतजाम छलइ। कचयो कऽ बाहरोकऽ दीन- दुखयाकऽ अतऽ खेनाई खुआलि जाइ छलइ।

बेशी लोक त घुमअ ि चकछु काजे ऋचाकेश अबइ छल.......कबीर एहन छलाह जे लोकक अनुसार ओचना चवकली सदन अबइ छलाह।भइड भइड चदन गंगा कात मे बेि पर बइसल बाता दइ छलाह। नचि कतउ जाइ छलाह आ नचि चकयो भेट करऽ अबइ छलइन।अतुको लोकक लेल पहेली बनल जा रहल छलाह।

एक दुपहचया मे बैसल देख रहल छइथ जे चकछु भगाधारी साधू संत सब दौरल खेनाई खाय लेल आइब रहल छइथ।एना ओ पचनेहो अतऽ देखने छलाह जे दीन दुखया सब लेल कचयो काल

भण्डारा लगइ छलइ।अइ बेर ओइ भीड मे एक गोटे पर उनकर नजर टीक गेलइन। ओना भगिस्ति मे उनका पचलने नचि देखने छलथखन....... लेचकन मूंह कान कतउ बदलइ छइ! कबीर उनका चीन्ह गेला।अखइन जे उनका टोईक दइतथ्यन तभऽ सकइत छलइ जे ताबइत खेनाई खत्तमभऽ जाइ। पचलने आऊ आ पचलने पाऊ बाला हाल छलइ। दोसर भरल पेट मे पुछपाछ केनाई ठीक रहइ छइ। आब ओ इंतजार करऽ लगलाह.....उनकर घुरबाक।

घंटा भइडकऽ बाद ओ साधू जाय लगलाह त कबीर उनका बजेलथखन।

- आहा गढी माईकऽ पंडीजी च्यकौह?

- हं । छी नचि, छलौह। आहाकऽ छी?

हमरा केना चीन्हइ छी? हम की आहाक बगल मे बइस सकइ छी?

- हं हं पंडीजी एकदम बैसु। आहासँहम आशीिदी लेने छी।चीन्हु हमरा! कतेक बेर भेट भेल अइछ।

कतबो जोर ओ साधू लगेला मूदा नचि चन्हि सकलाह।

- आहा कोनो धरफरी मे त नचि छी? अइ साधू सबहक संग त नचि कतउ जयबाक अइछ?

-नचि नचि? ई सब त भोजनक संगी छइथ। अइ शहर मे भण्डारा लगइत रहइ छइ। जकरा पता लाइग जाइ छइ ओ दोसराकऽ सुचितकऽ दइ छइ। चकयो ककरो संगी नचि छइ। पापी पेटक सािल छइ, ततबे तक साथ छइ। देखबइ ने- दस चमनट मे खालीभऽ जाइत। सब अपन अपन अडडा पर पहुंि जाइत।

- िलु हमर कमरा मे। ओतऽ आरामसँगप्प करब।

- हं हं। िलु।

दुन गोटे कमरा मे अयलाह। आब कबीर अपन पचरिय देलचखन.......छक दं ओ साधू चन्हि गेलचखन।

- आहा पंडीजीसँसाधू कचहया भेलऊं?

- नचि हम पंचडये जी छलऊं आ नचि साधुये छी। सब कमचक फल

छइ।ओ जेना रखने छइथ.....जीब रहल छी। जन्हया अरदा पुरा भऽ जाइत, अपना लग बजा लेताह।

- हम त अइ सदन मे अबइत रहइ छी। आहाकऽ कन्हयो नहि देखलऊं।

- हमरे गलती। हम आहाक सोझा नहि अयलऊं।

- नहि नहि। से नहि कहइ छी। हम त हुजुम मे अबइ छलऊं। कयेक बेर बेशी लोकभऽ जाइ छलइ तऽ बाना खेने घुराअ दइ छलाय। आब आहा छी त एना नहि भगाइत।

- आब आहाक कन्हयो नहि भगाइत। चाहिंत रहु।

कबीरकऽ ल्हनकर छायादिकऽ बात आर अतीत जनबा लेल उत्साहित कऽ रहल छलइन।

ई गढी माई, नेपालक पंडीजी छलाह। कबीरक शहर मे लोक इनका अही रपे चीन्हइन।कयेक टा ल्हनकर ब्यरसा रहइन।

एक बेर एकटा अिधकारीकऽ पोमोशन बडड िदनसँबािधत छलइ। ई पंडीजी, जखनयाकऽ तारीख कहलिखन, तखनयो उनकर पोमोशन भेलइन। ओ अिधकारी इनकर िलाभऽ गेल छलाह। पंडीजीकऽ राबिा िवशाम उनके कतऽ होइन।ओ िइर लाइन इनकर पशंसा मे िलखबो केने छलिखन। पडीजी ओकरा शीशाकऽ फेम मे लगा कऽ अपन झोडी मे रखइ छलाह- कहला पर िनकाइल कऽ देखबइ छलाह।

एकटा पिाबिा त बयापारीकऽ धीयापुता निि होइ छलइ त पंडीजीकऽ ओ अपना कतऽ बजेने छलाह।जे तारीख कहलिखन- ओही िदन बेटा भेलइ। ओ वयिसाई अपन हाथक घडी खोइल कऽ पडीजीकऽ ईनाम मे देलकइन। पंडीजीकऽ हाथ मे उएह घडी बान्हल छइन।

अखना कतेक इनकर भिवषयिाणीकऽ सतय होबाक बात फैलल छलइ।

कबीरकऽ अपनो याद पडई छलइन जे एक बेर पंडीजी उनको कतऽ आयल छलाह। कबीर अपन पाि टा संगी संग बैठकखाना मे बइसल छलाह। मसतीकऽ लेल पुछलिखन -" हमरा बारे मे िकछु बताऊ।"

पंडीजी िकछु काल मौन रहला उपरात बजलाह- "

आहाकऽ   बादेशक योग अइछ।"

-" बादेशकऽ   योग की! हम त जाइते रहइ छी- बीरगंज। नेपाल बादेशे भेल नञि।" कहैत कऽ   कबीर अपन सब संगी संग हंसऽ लगलाह।

पंडीजी गंभीर होइत बजलाह-" से जे बादेश होइ। इनका पबल योग छइन। आ आहा ारि लोककऽ   नञि अइ। बहुतखा कऽ   लऽ बहुतयह"।

कबीरकऽ   ओहुना मोन छइन जे उनकर संगी सबकऽ   मोन हुस्सभऽ   गेल छलइ- ई सुइन कऽ   । कबीरक मा खुशीसँखुब अन पाइन पंडीजीकऽ   देने छलखिन। तखनया बादेश जयबाक अ सिर कम्मे लोककऽ   भेटई छलइ। आजुक जेका नञि जे सब हरही सुरही मूंह ऊठौने बादेश जा रहल अइछ।

पूजा पाठ, ज्योतिष,भविष्यि क्ता, हस्तरेखा पढअ बाला- ई सब कयेक पकार छलइ- कहाइ छलइ सब...." पंडित।"

जेना सत्यनारायण भगा नि, अनन्त आ सरस ती पूजाकऽ   लेल एक पंडित! मुडन, जनऊ आ दुगा पूजाकऽ   लेल दोसर पंडित! बियाह, गर ड पुराण आ शा कि लेल तेसर पंडित !आ चढ़पइन, गह महादशा आ एकादशी यज लेल अलग पंडित होइत छल। कियो लोका ारिकऽ जाता होइत छलाह त कियो ज्योतिषकऽ   त कियो हाथक लकीरक

त चकयो ललाट पढअ बाला त चकयो संस्कृतक वीदान।

ई पंडीजी अइ सब मेसँचकछु नचि छलाह- मूदा जे कहइ छलचवन से सतभऽ जाइ छलइ। ईहो कहल जाइ पचने जे एक चाचित संख्या मे जे गायती मंतकऽ जाप कऽ लइया, ओकरा मे अतेक पभाभिऽ जाइत छलइ जे ओ कहइ छइ- से भऽ जाइ छइ।ई गायती मंत पढई छलाह ाि नचि- संदेहे।

कबीरकऽ अपना बारे मे कहल गपप सत्य भेलइन, तै ओ आइ अतेक खोदबेद कऽ रहल छलाह।

पंडीजी कहलचवन जे लोक उनका पकइड पकइड कऽ अपन घरलऽ जाइन आ कहऽ लेल दबाि बनाबइन। ओहो जजमानक खुशीकऽ देखइथ, कचह दइ छलचवन। जखइन ओकरा अनुसार फल नचि होइ त इनका अनाप शनाप कहऽ लगलइन।

ई पंडीजी नचि ककरोसँचकछु मंचाते छलचवन आ नचि देला पर घुडइबते छलचवन। बाद मे इनकर चस्थचा खराब होबऽ लगलइन। जे बजेला पर जाइ छलाह पचने , से चबान बजौने घरे घर जाय लगलाह। भीखमंगा जेका लोक व्यिहार करऽ लगलइन।

" जे नगर राज करी, से नगर भीख नहि मागी"- ईएह सोइि कऽ ओ अउआइत बऊाइित ऋषिकेश पहुंिल छइथ। अतऽ एकटा बाबायाकऽ छोट छीन मंदिर छइ। ओइ मे ठाकुरजीकऽ दुनु साझ पूजा करय छइथ। मंदिरकऽ संग िइर टा दोकान सेहो छइ।ओकर किरायाकऽ किछु भाग पंडीजीकऽ सेहो भेटई छइन। ओही मे दुनु साझ पूजा पाठ,पसाद, साझ अगरबती सब छइ। जखो भंडारा मे भोजनभऽ जाइ छइन तं ओइ पाइसँबढियासँठाकुरजीकऽ भोग लगा लइ छइथ। ततेक ने पंडित ऋषिकेश मेभऽ गेल छइ जे "एक बुलाये, दस आये" बाला हाल छइ। जखो बाबायाकऽ कम पाइ बाला बात कहथिन तऽ ओ तखने हटा देतइन। ओकरा त एहन पंडित िही जे अइ स्थानक बदला किछू ओकरे दइ। भगि स्तिकऽ अइ शहर मे िलती छइ आ "औल र ट पास " सेहो भलइ। कतउ जाय आबऽ मे टिकस नहि लेबऽ पडई छइन, तै ई िला गहण केने छइथ। उजरा धोती मे तऽ धाई सने धअ लेतइन।पंडीजी समयक संग ढइड गेल छलाह।

सब बात बतबइत पंडीजी भावमग्नभऽ गेल छलाह। पहिले बेर कियो उनकर हाल पुछलकइन। जे हाथक लकीर मे खीिल रहइ छइ- से होइते टा छइ। जन्म आ मरण- ईएह सत्य थीक। पंडीजी भाुिकभऽ गेल छलाह। मंदिर मे साझ देबाक समयभऽ गेल छलइन।जाइत काल बजलाह- "आहा बहुत ऊंाई पर जायब- हम आहाक पशस्त ललाट देख रहल छी। हम अइसँनहि कहलऊं जे आहा हमरा अहु हाल मे चीन्हलऊं, हम जे देख रहल छी- से कहि रहल छी।"

कबीर, पंडीजीकऽ भोजन लेल च्चदकली सदन िलाकऽ कत्त्ह देलच्चिन।जच्चया आहाकऽ मोन करत आहा आइब कऽ भोजन कऽ लेब।

आइ राइत मे जखइन गंगा कात मे कबीर बइसलाह त उनका कोनो" राग " नच्चि सुनाई छलइन। खाली हहअ.....हहअ......हहअकऽ आिज अबइ छलइन।पंडीजीसँभेट होबा खाच्चतर ई सब सृच्चत डइि रहल छलीह।

बुझेलइन जे आब ऋच्चषकेशकऽ अध्याय खत्तो जेका छइन। अपन मोनकऽ कहलच्चिन- " हे कतउ आर िलु।" उईठ च्चबदा भऽ गेलाह- कोनो आर ठेकानाकऽ तलाश मे।

छका-पुराण (लघुकथा)

हाल्हि कऽ जदु ठाकुर फैसला ली कोटथ्मे केस फाइलकऽ देलाह। एतऽ सऽ ओतऽ, दौडइत दौडइत थाईक गेल छलाह। सोचि ने रहइत जे रिटायरमेन्टक बाद आराम करब, उनटे भऽ गेलइन। आब त कतउ गेनाईयो उनका लेल अबगह। जेहो नचि चिन्हइ जनचि छलइन, ओहो साईकिकल रोईककऽ "ओकर" की भेल, से पुछइत रहइ छइन। कतेक दिन नुकाकऽ रहबतैथ। जाबइत संभि छलइन, नुकेबे केलाह। कानो-कान नचि बुझअ देलखिन।

"दोषी" त उयैह छथि। कोन मति मारलकइन, जे ओ "हा" कहि देलखिन। ओइसऽ बेचारये पाइ रमपुरा बाला दइ छलइन। ओ सेबो सत्कार नीक करतइन।ओकर बेटियो सुन्दरि छलइ। लाल काकी कहइ छलीह, ई कथाकऽ लयह......जीतल रहब। नचि कयलाह। आब बुझु। अपनेसऽ अपन बेटाकऽ गदथा पर तरआइड लिा लेलह। आब पायचित मे केस केलाह अइछ आ तारीख पर दौर लगा रहला अइछ।

जदु ठाकुर सरकारी अमीन छलाह। हाले मे रिटायर केलाह अइछ। पुरा परोपटा मे चिकनका कतेक जथा- जमीन छइन.........कतेक ओइ मे ओझराहा आ कतेक सोझराहा...........सबटा उनका बुझल छइन। कयेक जमीनक मालिकक सबकऽ सेहो नचि बुझल जे कोन जमीन

कतऽ अइ। बेिऽ कऽ होइ ि दाब्बल-खाबज करबाक होइ, बाट-बखरा होइ ि बदलेन होइ........ लोक जदु ठाकुरकऽ पकइडते छलाह। थोड बहुत मेहनताना सेहो उपरसँभेट जाइ छलइन। अही िकर मे त ओ फंसी गेलाह। बगलेकऽ गामक जोहन पाठककऽ ब्दअयदी बंटिरा मे ओ गेल छलाह। िलीस बीघासऽ उपर उनका जमीन छल। सब खब्बाहानी मरौसी जमीन छलइन। कोनो झंझट, कतउ नबि। असगर जोहन पाठक, आ उनकर बापो असगर ए। बाकी ब्दअयद सबकऽ त बीघा बक, आब कटा मे बिल छइन। जखने जोहनक कतऽ सऽ कथा एलइन, जदु ठाकुर लुसफुॅसा गेलाह। भेलइन जे ई कुटमैतीभऽ जाइत त सब संपैत हमरे। ई नबि देखलाह जे जोहनकऽ िइर टा बेटो छइन। बकछु पतो ततो नबि केलाह। जानल घर छलइ। मोट पाइ देलकइन। सटसऽ "हं "कऽ लेलाह। पाइकऽ खुब छहर -महर भेल।

जदु ठाकुरकऽ बेटा मोहन आइ टी आइकऽ कऽ टाटा मे फीटर अइछ। डेरा डंडा सब भेटल छइ। पाइन -बाजली सब मुफ्तउआ। बाजली सब्दखन रब्लते छइ। ओतेक टा डेरा त उनकर बीब्दओ साहेबकऽ सेहो नबि छइन।आब की छइ।जदु ठाकुरकऽ जमीन नबि, लेबकन अपनो नौकरी आ बेटोकऽ नौकरी। जोहनकऽ जमीन छइन , लेबकन नबि अपने नौकरी, आ नबि बेटे सब के। बेटा सब अबंड जका भबब्दन मोटर साइबकल पर इमहरसऽ उमहर उब्धयाइत रहइ छइन। अखनो उनकर समाज मे सरकारी नौकरीकऽ बडड मोजर।ओइ मे टाटाक नौकरी, ई त पुछबे नबि कर । सरकारी फेल ओकर सामने। बेटाकऽ ओतऽ सब "फीटर बाबु" कहइ

छइन।

बियाह दान सब संपन भेलाक बाद, जदु ठाकुरकऽ पुतोहु छह महीने सासुरे मे रहल।हर िदनमे चािन जोहनक एक ने एक बेटा अबैते रहलइन। हर जतरा मे खुब सर - सनेश सब सेहो अबइ। जदु ठाकुर खुब िपिप सनेश सब खाई छलाह। आब जोहन पाठकक समईधभऽ गेलाकऽ कारण अमीनी लेल बऊयेनाई सेहो छोिड़ देलाह। घर मे रहलाक कारण चािकनाअ गेल छलाह । कनी कनी धोईध फुइटनाई शुर भऽ गेल छलइन।

छह महीनाक बाद मोहन किनयाकऽ टाटालऽ गेलाह। किनया डेरा पर जाइ लेल तैयार निह छलइन। जदु ठाकुरकऽ खुशी भेलइन जे कतेक नीक पुतोहु जे गाम मे रहअ िहइत अइछ ।मोहनकऽ त पिहलनेहो िकछु गडबड बुझाई छलइन। ओतऽ अपन दोस-महीम आ अस्पतालक डाक्टर सबसँ िकछु शंका समाधान केलाह। किनयाकऽ डाक्टर अनबाक लेल कहने छलैन।

डाक्टर जरूरी जाँि सब केलकइन। मोहनकऽ कहलकइन जे ई पुणथस्ती निह छिथ।

मोहन माथ पकइडकऽ बइस रहलाह। आब करताह की। किनयो

कानह लगलइन। कहलकइ जे ओ अपन मायकऽ कहने छलइ। ओकर चकयो नचि सुनलकइ। बायाह करा देलकइ।

दोसरो डाक्टरसऽ मोहन, कनायाकऽ देखेलाह। ओहो ईएह बतेलकइन। कनाया मे पुरखक बेशी लक्ण छलइन। लक्ण की छलीहे पुरख।

मोहनक सार सब एहन अबंडड आ बदमाश सब छलइन जे ओकरा सबसँजबरदस्ती चकछु करा नचि सकताह।

चकछु महीनाक बाद कनायाकऽ अपन छोट भाइ संग नैहर पठा देलाह। जदु ठाकुरकऽ धीरे-धीरे सब सचाई पता िललइन।

मोहन दुखसँआधाभऽ गेल छलाह। जदु ठाकुरकऽ धोईध कतऽ सटईक गेलइन, ओकर पते नचि। दुबखत रहअ लगलाह। डाक्टरसऽ देखेलाह। जाि सब भेलइन। बीपी, िीनी आर कथी कथी बाकललइन। रोज भूखले पेटे गोटी सब खाई छथ्य, तखइन बातय चकया कमथ करय छथ्य।

जोहन पाठक सबकऽ त सचाई बुझले रहइन।ओ सब गुमकी

लगा लेने छलाह। जदु ठाकुरकऽ सेहो मोहनक सार आइबकऽ कच्छ गेल रहइन, जे ि प रहबाक छइ। ज्यो बाजब तं घरक भीत भीत नोइि लेब। बुइझ च्लायह।

ईएह गुमकी जदु ठाकुरकऽ तरे तरे जौच्छस जका सुखा रहल छलइन। दि ईक डोज बच्छते जा रहल छलइन।

साल भइड त गुमकी सब लागल रहल- अइ व्रीषय मे। फेर जदु ठाकुरकऽ नच्चि रहल गेलइन। ओ जोहन पाठक कतऽ पस्ताा लिऽ कऽ अपने गेल छलाह -

जे च्बबाह मे जोहन पाठक च्यानती आ खि थिकयलाह अइछ , से िपसलऽ लैथ। अलगा-अलगी मोहनकऽ भ जाइन।

जोहन त अपने ि प्पे रहलाह। उनकर छोटका बेटा मारऽ मारऽ उठलइन जदु ठाकुर के। ओ तऽ आर लोक सब पहुंि गेलइ जे जदु ठाकुरकऽ जान बंि लिइन।

सऊंसे गप्प पसइड गेल छलइ।दु बेर पंि इती सेहो भेलइ।बेशी लोक अइ पंि तीसऽ अलगे रहल। जदु ठाकुर सब डाक्टरी जािकऽ च्पोटश्र पंि सबहक सामने रखलाह। नतीजा च्कछु नच्चि च्याकललइ।

जोहन पाठक सबहक कहब छइन जे इनके बेटा मे कमी छइन। आर दहेज लियइन-ओकरे लेल ई तेल बेल केने छथि। हमर परिवारकऽ जे बेजती भेल अइछ ओकर बदला हम सबलऽ क रहबइन।के, ककरा आ कोना जंतिइ चक की सि थीक!

शुर मे त जदु ठाकुर डराइत छलाह। आब सऊंसे घरे घर आ गामे गाम लोक बुझये गेलइ त आब कथीकऽ अढक काज। जे छइ से छइ- " छका बाला लीला", ईएह ने!

मोहन अलग होयबाक लेल मोकदमा केने छथि। तारीख पर तारीख पइड रहल छइन।

देखू ...... की फैसला......आ कहिया अबइ छइ।

ई अजगुत कथा त आइ तक एना सुनबा मे नहि आयल छलइ। तरघुसया भेलो होइ लेकिन एना हो- हल्ला नहि भेल छलइ।सब अकरा " छका" बला पंति कहइ छइ। समाज आ कोटश्र दुनु जगह जदु ठाकुरकऽ दौडइत दौडइत टिी बसा रहल छइन।

दाई- माई सब सेहो कहइत रहइ छथिन- " धुर! एहनो कतउ भेलइ अइछ। जीबी त कीऽ कीऽ नहि सुनी।"

अकरे संग जखइन दु बुढीकऽ नजर चालइ छइन....... ओ चकछु आरे ईशारा करय छइ । ई कोनो पहलले घटना नचि भेल छइ। सदौसऽ होइत रहलइ........ पहलने अकरा घरक छरदालीकऽ भीतरे दबा देल जाइत छलइ।आब जुग आ जमाना बदइल गेल छइ........नुका चछपीकऽ समय िइल गेलइ ....जे सि छइ-से सोझा छी।

जदु ठाकुर सबके अपन दुखडा सुनबइत िइल जाइत रहइत छथ्य। लोककऽ त ि ि मे मजा अबइ छइ, मूदा गुडक माइड त धोकरबे बुझई छइ।

लोक जदु ठाकुरसँपुछइ छइन- आहा कोना बुझचलयई?

अच्छा---

....

ई भेलइ----

....

ओहो------

अच्छना कतेक गप।

ई सब जाइन बुइझकऽ ओझरेने छइन, नञि त कच्छया ने अलगा-अलगी भऽ जइतइ।

छका पुराण पर सब नजर गरौने अइ। देखू अंत्ताम अध्याय कच्छया बहराई छइ।

<u>सरपाइज (लघुकथा)</u>

(गाम मे रहइत मा आ विदेश मे रहइत बेटाकऽ बीि भेल फोनिाता पर आधाबत- वीटी पतीकऽ जमाना िइल गेल।)

कोना छे!- बेटा बजलाह।

ठीक छी!- मा बजलीह।

- आर कोनो विशेष।

- नवि सब ठीक-ठाक।काइल नवि फोन केलह।

- हम त कहनेहे छलयउ जे शइन- डइबकऽ फोन करबऊ।

- दु बेरसँशइन कऽ फोन अबइ छलइ, तै भेल जे अहु बेर शइनकऽ आइत।

- ओ त जखया समय भेट जाइया, तखया कऽ दइ छलयउ। अइ बेर शइन कऽ समय नवि भेटल तै डइब कऽ केलयउ। दोसर जे समय मे पाि घंटाकऽ अंतर छइ- दुनु जगह मे। तकरो देखऽ पडई छइ।

- हम त सब बुझते छी जे बऊआकऽ आफस मे शइन कऽ काज बेशी भऽ गेल हेतइन- तै फोन नवि केलाह अइछ।

जनवि नवि छउन बाबु जी के! काइलसँ िइर बेर पुईछ लेलाह- बऊआकऽ फोन नवि आयल.......बऊआकऽ फोन नवि आयल।

मोन घोर भऽ गेल सुनिते.......सुनिते। कहलखिन्हयइन जे खाली फोन केनाई काज थोडे छइन। आब कहाँ मे नहि फुरसत भेल हेतइन। देखइत नहि छेलखिन्हयेन...... बड़की मे कती राइत कऽ हारल थाकल अबइ छलाह।

हमर बऊआ त विदेशोसँफोन कऽ दइ छइथ। रामजी बाबुकऽ देखहयउन- पटने मे बेटा पुतोहु छइन। कहियो फोन नहि। कनिया उनकर हकल नोरसँकनिते रहइ छइथ।एहन ने नबकी कनिया सब आयल छइ......काबाले आन्हर। हमर त पुतोहूओकऽ फोन अबइत अइछ।

- सब गप तुहे बजई छे। सब बुझते छे, तखइन परेशान नहि होबाक िाही।

-नहि नहि। हम किएक परेशान होयब। एहन बेटा भगािन सबके देथुन। आइ काइलकऽ माय बापकऽ अतेक खोज पुछारी करइत अइछ। अतइ देखऽ ने- सब बुढा-बुढी सब असगरे छइथ। जखइन कागज पर अंगुठा लगबऽ कऽ रहइ छइन, तखने गाम आ माय बाप याद अबइ छइन।

-आर कहऽ । मोन ठीक रहइ छऊ। दबाई समय पर खाई छै ने!

-हं हं। हम सब दाई समय पर खाई छी। ओइसँपच्छने एक ग्लास दूध सेहो पीबइ छी।

याद हेतऽ " मडर"। ओकरे पोता, खटाल खोलने अइछ। उएह आब बडका दूधक कारोबारीभऽ गेल अइछ। एतऽ ओ अपने दूधदऽ जाइत अइछ। कहलकइ जे ई हमर सबहक पुरान दरबार अइछ। बाकी टोल मे ओकर आदमी दूध लऽ कऽ अबइ छइ। ओहो अतेक इज्जत दइत अइछ तं हमहु जखइन ओकरा नब गाय खरीदऽ कऽ रहइ छइ- जे कहइत अइछ..... पाइदऽ दइ छयई। दूध मे ओ बानहा कऽ दइत अइछ।

ओ अइ दुआरे नहि अपने अबइत अइछ जे पुरान दरबार छइ- ओ अइ दुआरे अबइ छऊ जे तुं एडभांस मे पाइ दइ छही!

-भऽ सकइ छइ। बोली बानी ओकर बडड बढ़िया छइ।हमरा त कहियो दूध नागा नहि केलक।

- बाबूजीकऽ मोन ठीक छइन?

ओना तऽ ठीके छइथ लेकिन कफफक श्वाकाइत रहैते टा छइन।

- ततेक ने एंटी बायोटिक खेने छथिन, जे दवाई असर नहि करय छइन।

- पहिले बाला जे डाक्टर ओइ बेर दवाई देने रहइन, ऊयाह पुर्जी देखा कऽ बीना फार्मेसीसँ दवाई मंगा देलियइन। ओइसँ किछु आराम छइन।

" दही" दुनु साझ खेनाई छोडई नहि छेथिन।कऽ बुझेतइन।

गरम दूध मे हडइद मिला कऽ पीला पर आराम होइ छइ- लेकिन उनकाकऽ कहतइन। मोन होइ छइन त पीताह। नहि त ओहिना छोडि देताह।

हमहुं तऽ बुढेलऊं! अतेक हुजती हमरा सऽ आब नहि होइया। तुहे कखनो बुझईयउन जे दही छोडि दैस आ गरम दूध पीबइथ।

अखइन नहि कहलियउन- नहि त हमरे बिगडता जे बऊआकऽ हमही कहलियइन।

- अच्छा बाद मे कहि देबइन।

- एकटा खुशखबरी कहनाई त बिसईरे गेल। तुं जे कटहर रोपने छलह, से अइ बेर फइड गेलह। दु बरखसँ मोछी होइ छलइ- लेकिन कटहर नहि होइ। अइ बेर फरलइ। हमहु ओकर जइड मे माछक

खोईि सब गडबाअ देने छ्लयई।

अइ बेर कम फरलइ। अ्ााला बरखसँबेशी फरतऽ । हम अइ बेर बुइझ गेलयई।कटहर, ्ारह पर फडई छइ। पलनेहे नीि बला डाईढ सब पंगबा देबइ।

- तु तं एकदम ्ारहथभऽ गेल छंय। नाचयल सबहक की हाल?

- ठीक छअ। बीि मे गडबडा गेल छलइ। बलाये मे नाचयल सब ढनढना कऽ खसऽ लागल छलह। ुिटी लाइग गेल छलइ। दिाई स्मे भेलइ। आब जे बइि गेलह, से ठीक छह।

- दु ाईरो टा बिलइ की नचि?

- दु ाइर टा ्कअए? घुंघर जेका अखनो लुधकल छअ। ई बुजलहक जे स्मे केना ्बेलयई?

तुं जे ्वलीसँस्मे िला मशीन अनने छलह, से राखल राखल खराब भऽ गेल छलह। दु सै टाका लागल ओकरा ठीक कराबऽ मे।

- आम सब?

- ओ तोहर बाबूजीकऽ ्ाम्मा छइन। जो्ााया अपन पाइन ताइन दइत रहइ छअ।सब ठीक छअ।

ई कहऽ ने कलया " ऐबऽ "?

- देख! चाकरि त नहि अइछ।

- अइ बेर बडड धान गहुम भेल छअ। बटाईदार नीक पकडा गेल अइछ। बाकी त सबहक खेत परती परल छइन। उनकर सबहक बोली एहन खराब जे चकयो बटाई लेबइ लेल तैयार नहि। हमरा कतऽ सब बटाईदार तैयार।

लेबानो जोगर धान तोहर कनाया काकीकऽ नहि भेलइन। हमही पठा देलयइन। बडड आशीर्वादी दइ छलखुन। बेटा सब एहन कुपात सब भऽ गेल छइन से बेरिो की करतीह?

- की कुपात?

- नहि बुझल छअ! नाशा करय छइन। माय बापकऽ एक दशा नहि छोडई छइन। जेहन तोहर गाडी छलह चकली मे, सैह गाडी खरीदने छइन। आमदनी एक पाइकऽ नहि, आ शौक सब साहबी!

- कतऽ सँपाइ एलइन?

- कतऽ सं! तोहर गाम मेकऽ ककरासँकम। जमीन बाका रहल छइ आ फुटानी बइढ रहल छइ। चकली बम्बइ जेका लोकक स्टेन्डर भऽ गेल छइ।

लोक त मूंहे पर कहल दइ छइन........हमर बऊआ कमा कऽ कीनलक गाडी.....आ ई सब गंि कऽ । कतउ छजई छइन दलान पर गाडी। हमरा सबकऽ ओना शहर बजार जाय मे सहुलाइत भऽ गेल अइछ। सब घर मे गाडीभऽ गेल छइ......आ सब एक समाद मे गाडी पठा दइ अइछ। बडड मानहि अइछ हमरा।

कम्बलको नचि बुझाइत अइछ जे अपन गाडी नचि।

आब जे तुं स्टेशन एबह त चक्शा पर नचि आबह पडतह।

- िह। बहुत चिकास भेलइ। पचलने त चक्शो बालाकऽ खुशामद करऽ पडइ छइ।

- देखऽ ने। एकटा आर गप सब बेरसँचासरा जाइत अइछ। ओ जे दुमहला पर तोहर बाबूजी पोता- पोती लेल घर आ बादेशी बाथर म अलगसँबनबौने छलखुन....... ओ बंदयछलह......तौ सब एबे नचि केलह। ओइ घरकऽ साफ सफाई करेलखुन आ बाबूजी अपने ओइ बाथर म मे जाइ छथुन। ओइ बाथर म मे गीजर छइ......बाबूजी गरमे पाइनसँनहाइ छथुन आ थोडे काल बचि बाला घर मे आरामो करय छथुन।

ओना त ठेहुन धेने रहइ छइन- लेचकन कोठा पर िईढ जाइ छइथ।

हमरा त नचि जाअ होइया। तुं सब एबऽ त भऽ सकइत अइछ जे तखने िढी।

- आइ तऽ बडड गप्प भेलइ।

- अखइन आरो कतेक गप सब अइछ। तुं एबऽ तखइन कहबऽ। एकटा राज चमस्ती आ दु टा जाना चयछला तीन महीनासऽ काज कऽ रहल अइछ। बहुत काज भेल अइछ.......आ बहुत बाकी अइछ।

अखइन शुिक समय छी......एहन ने भारी लगन छइ जे जन सब नागा बडड करइत अइछ।

- आनंद लेल काज करबाहे। तनाि लऽ कऽ नचि!

- नचि नचि। कोनो चींता नचि।

- पाइकऽ काज होऊ त कहे!

- पाइकऽ कोनो काज नचि अइ। बस तुं सब जचदिये आइब जईहअ......." सरपाइज" रखने छयह।

- ठीक छइ। जचदिये एबऊ।

बऊआकऽ पता लाइग गेल छलइन जे उनकर मा पुरना घरकऽ नबका कजाइन मे बदलबा देलवन अइछ। जे उनकर माकऽ होइन जे जन मजुर सब उनकर बाबूजीकऽ हा मे हा मलाला कऽ ठकइ छइन..........आब बाबूजीकऽ भऽ रहल छइन जे जन सब इनकर माकऽ हा मे हा मलाला कऽ ठकइ छइन। असल मे चकयो ककरो नचि ठकइ छइ..........सब अपन बऊआकऽ सगित अपना ढंगे कऽ रहल अइछ।

बऊआकऽ " सरपाइज" देखबऽ कऽ इंतजार भऽ रहल छइन।

<u>अफेयर (लघुकथा)</u>

दासजी अइ शहरक कालेज मे लेक्चरर छइथ। लोक उनका परफेसर साहब कहइ छइन। सफाई दइत दइत परेशानभऽ गेलाह....लोक परफेसर साहब कहनाई नहि छोडलकइन। ओ कहइ छलखिन जे हम लेक्चरर टा छी अखइन...... पोफेसर बडका पद होइ छइ.........पुरा विशविदालय मे आंगुर पर गाना जाइत जे केऽ सब छैथ पोफेसर.... हम नहि छी। मूदा लोक तऽ उनका परफेसर साहब कहनाई नहि छोडलकइन। आब ओहो अपनाकऽ माइन लेलाह। कतबो दलील देलखिन जे दरोगा आ पुलिस कप्तान जेना अलग अलग होइ छइ.........ओहिना लेक्चरर आ पोफेसर........ कोनो काज नहि अयलइन।

अइ शहरकऽ ई रेबाजाज छलइ- सिपाहीकऽ हविलदार, किरानीकऽ बडा बाबु, दरोगाकऽ इंस्पेक्टर, विकीलकऽ पी पी साहेब, मास्टरकऽ हेडमास्टर साहब, बैकक बाबुकऽ मनेजर साहब, रेलविकऽ पैटमैनकऽ स्टेशन मास्टर, छुटभैया नेता सबकऽ विधायकजी, दोकानदार सबकऽ सेठजी, बदमशा सबकऽ भैयाजी आ बाकी सब शक्तिशालीकऽ िधरी साहब कहल जाइ छलइ। पहिल लोक दासजी नहि हेताह - जिनका पदकऽ बढा कऽ कहला पर अनकटल लागल हेतइन, लेकिन जे रेवाजि छइ से छइ। ई रेवाजि नहि एक दिन मे बनलहि छइ आ नहि एक दिन मे टुटई छइ। दासजी अकरा अिधाइड लेलाह।

आब दोसर परेशानी उनकर सामने मुंह बनि ठार छलइन। "दास" टाईटल देख कऽ पहिने देनिजी सबकऽ भेलइन जे ई उनके समाजकऽ छइथ। पछाइत गप्प सबसँ पता लिलइन जे ई त " बंगाली" छथिइथ। दासजीकऽ ज्यो कियो " बंगाली" कहइ छलइन तं बालमाला जाइ छलाह। ई सत्य छलैक जे उनकर पितामह पोस्टमास्टरक नौकरी करइत बदली भऽ कऽ कलकतासँ दरभंगा आयल छलाह। फेर ईएह शहरकऽ अपन घर बना लेलाह।अतऽ रहइत तिसर पीढी दासजी छइथ। ओ त घरो मे मैथिलीये बजई छइथ। बंगला बुइझ जाइ छइथ, लेकिन बाईज नहि पबइ छइथ।ई बाहरे- बाहर रहलाक कारण बुझाईया भेल छइन। इनकर कहब छइन जे या तऽ "मैथिल " कहू या "बिहारी " कहू.... बंगाली त कोनो हाल मे नहि लित। दासजी , बंगाली कहला पर खिसियाई छलाह, तै कयेक गोटे बिखाहे " बंगाली" कहऽ लगलइन।

पढल लिखल लोककऽ त सब समाज अपना मे मिलेबाक पयास करय छइ। ओइ मे ई भिन्नात करऽ बाला नामक आगु " दास" टाईटल- नब नब नेतिा बदअयबइत रहइ छइन। अइ शहर मे किछु घर " केटि" जाइतक लोककऽ रहइ। ओकर सबहक टाईटल सेहो " दास" छलइ- ओ सब दासजीकऽ अपन समाजक मानथिन। बडड अधिकारसँइनका ओ सब अपन पिथिलयोहार मे बजा कऽ लऽ जाइन।

बकछु आर दास पचिारि ओइ शहर मे रहइ। ई सब अलग तरहक िदनक टीका माथा पर करय। अलगे विन्हासी ओकर सबकऽ रहइ। माछ माउस ओ सब निय खाई। कने धामाथक बेचशाये ओइ सब घरक सब सदस्य होइ। नबो लोककऽ दीक्षा करा कऽ अपन समाज मे जोइड लइ छल। अतऽ त नामही मे दास लागल छलइ। ईहो सब " दासजी" पर बोर फेकलकइन।

दासजी, महानगरसँपढल - बलखल- गुणल छलाह।ओ सबसँसमभाि मे मेलजोल रखइ छलाह।जाइत पाइत- धमश़ऊंि- नीि, धनी-गरीब सब मे ओतेक विशास निय करय छलाह। छोट शहर मे रहबाक उनकर पहिले अनुभि छलइन। उनकर बायुक्त सरकारकऽ कमीशन दारा भेल छलइन।जतऽ पठा देलकइन, ओतऽ खुशी खुशी आइब गेलाह।जई विषयक, जतऽ जगह खाली रहतइ, ओतइ ने उनका पठेतइन- सब बुझई छलाह।

ओइ समय मे बेशी पोफेसर सब त उएह होइ छलाह जे मैनेबमांग कमेटीकऽ सदस्यकऽ पचिारिक होइत ि लगुआ भगुआ ि ककरो अनुमोदन ि पाइ दऽ कऽ ।जे बेशी पढल से पोफेसर, कम पढल से बकरानी आ बिना पढल सब िपरासी मे रबमस्टर मे नाम िईढ जाइ। नब नब कालेज खुजई छलइ.....सब लोककऽ बहाली होइ........फेर सरकारी कराबइ लेल पयास शुर । अइ मे सब खुश -खुश रहइ छल। बाधायक, कलक्टर, मंती, स्याका विभाग, ठेकेदार, व्यिसाई, पाइ बला सबहक िडथरहइ- तै ककरो

कोनो व्याकाइत नहि। व्याकाइत ककरा रहइ छल- ओ छलाह विदाथी! उनकाकऽ पुछइया।

दासजी अपनाकऽ अइसँअलग बुझई छलाह। ओ लोककऽ फरीछा कऽ कहइ छलखिन-" हम कमीशन बाला छी"।

लोक तखनुया की अखनो "कमीशनक" मतलब "देबलेब" बुझई छइ।ओकर आंईखक भिकी देख कऽ दासजी बुइझ जाइ छलाह जे ई गलते बुझलक। जेतबा ओ बुझेबाक पयास करय छलाह- ओतबे ओकरा" देबलेबसँभेल नौकरी" पका बुझनाई लागऽ लगइ छलइ। अंत मे हारि कऽ दासजी फरिछेनाई छोड़ि देलाह। जे बुझबाक होइ से बुझय, हम जे छी, से छीहे।

दासजी विजान विषयक पोफेसर छलाह। तखनुया टयुशनक बडड भिलती छलइ। पोफेसर सब कालेज मे अइ दुआरे नहि पढबइ, जे पईढ जाइत तऽ टयुशन कोना भिलऽ त।दासजी कालेज मे बुझा कऽ पढबइथान आ ऊपरसँजेकरा नहि बुझाई, ओकरा अपन घरो पर बिना पाइ लेने पढबइथान। पहिने त सबकऽ भेलइ जे विदाथी फसबंकऽ त ई कोनो भिइल त नहि छइ- लेकिन साल बितलो पर जखन पाइ नहि लेलखिन, तखइन सब विरोधीकऽ मुंह मे ताला लाइग गेलइन।

एकतऽ मुफ्तउआ पढाइ, उपरसँनीक सेहो- विद्याथीकऽ जमघट होबऽ लगलइन।

कय विषय पर तऽ दासजी "व्यवस्था"कऽ खिलाफ खुइल कऽ कालेज मे बजल्तो छलाह। हरदमसँसताकऽ ललकारऽ बाला लोक, छात सबकऽ बीि मे लोकप्रिय रहल अइछ। दासजी बेश लिती बाला पोफेसर भऽ रहल छलाह।अहुसँपैघ जे गुण रहइन - ओ छलइन " उत्सि/ सभा/गोषी आयोजित करऽ के"। छातक फौज इनका संग छल- कितना नीक छलाह- आयोजन कता नीक छलाह- मुफ्त मे घर पर पढबइ छलाह- आर आर गुण सब।

इनकर पत्नसिि अइ शहरक स्थापित पोफेसर सबकऽ विस्थापित करऽ लगलइन। ओना मैनेजमेंग कमेटीकऽ कृपा पात सबकऽ पढबऽ कऽ जगह "पबंधन" सदौसँपाथमिकता मे रहलइन। कोनो भी विशविद्यालयकऽ सुि उठाअकऽ ताकु- सब अहने लोक पशासनिक पद पर भेटताह। ई सब हक एकटा गिथहोइ छइ। सब एकदोसराकऽ "लिफेयर" करय छइ। ज्यो चकयो लिफेयर नहि करऽ बला आइब गेल त सब मिल कऽ ओकर " फेयरलि" कऽ दइ छइ। अतऽ ईएह भेल जा रहल छल। दासजीकऽ पत्नसिि कऽ ल कऽ इनकर सबहक दोकनदारी बन होबाक कगार पर पहुंि गेल छलइन। दासजीकऽ खिलाफ कय गोटे एकजुटभऽ गेल छलाह। मौकाकऽ तलाश मे छलाह। आखिर भेटिये गेलइन।

दासजीकऽ घर पर पढ़अ बला विद्याथी मे बसंत दास सेहो छल। ई बसंत ओतुके केटि टोलीकऽ छल। ओना त केटि टोली मे किओ सुभ्यस्त नहि, लेकिन बसंतकऽ परिवार त सबसं गरीब। बसंत पढअ मे तेज छल, तै दासजीकऽ नजर मे आयल। ओ पढबऽ कऽ अलावा किछु आर्थिक मदद सेहो बसंतकऽ कऽ दइ छलखिन। अकर बदला मे बसंत अपने मोने हुनकर घरक टहलुआ बाला काज जेना- तर तरकारी अननाई, बच्चाकऽ खेलेनाई, मेला ठेला घुमेनाई, बजार हाटक काज ईएह सब हक्लुक फक्लुक कऽ दइ छलइन। बसंतक माय बापक लेल त दासजी आ हुनक परिवार देवता तुल्य छलइन। हालाकि कयेक बेर दासजी, अपन कनियाकऽ मनो करय छलखिन- बसंतकऽ काज अढबऽ सं, लेकिन बसंत नहि मानथि छलइन। अपने आगु बढ़कऽ काज कऽ दइन। ओना बडड काज त छेबो नहि करय- कोनो कुर्सिया पीढ़ियाकऽ सरिले नहि त काजे कोन। ईएह- इमहर ओमहर विला।

दासजीक कनिया अन्नपूर्णा सेहो पोफेसराइनकऽ पदवी भेटलासँखुश रहइ छलीह। दु टा छोट छोट बेटा छलइन- पाँच बरखक अखिल आ दु बरखक निखिल। अखिल स्कुल गेनाई शुरु केने छल। दुनु बच्चा बसंतक संग खुब हिलीया गेल छलइन। ओ सब बसंतक संग ओकर घर सेहो चलि जाय। बसंतक माय सेहो दुनु बच्चाकऽ जानसँबेशी मानथि छलीह।अन्नपूर्णा अपुर्व सुन्दरी त नहि छलीह लेकिन

भरल भरल देह छलइन, आंईख बडड तेज, केश बरकी टा आ िहरा रमणगर रहइन। ओहोसँबेशी जे हंसमुख सभािकऽ छलीह। चिदाथी सबसँसेहो हंसी ठठाकऽ लइ छलीह। चिदाथी सब सेहो बडड आदर करयन। दासजी जत्बना गंभीर ओत्बना मजाक्बअए अम्बामाजी। सब कहइ जे दासजीकऽ त्बस्साकऽ हंसी कन्बाया मे आयल छइन। हंसी खुशी चद्बन ससडइ छलइ।

अच्बवल बीमारभऽ गेल छलइन। डाक्टरकऽ ईलाज िइल रहल छलइ। देह मे चकछु दाना जेका न्बाकलल छलइ। अम्बामाजी त पत्बले बेर एना दुच्बवत बचािकऽ देखने छलीह। बसंतक माय सेहो एलच्बवन च्बागेसा मे। ओ अच्बवलकऽ देखते कहलच्बवन -ई त " कोदबा" छइ।

अम्बामाकऽ अकर अनुभि नचि छलइन। ओ कहलच्बवन-

ई तऽ आब कम भेलइया। डाक्टर कहला जे तीन िइर चद्बन मे पुरा ठीक भऽ जेताह।

बसंतक माय बजलीह- डाक्टर जे बाजय, अइ मे नीमक पात छुआबऽ पडत।

- अच्छा हम डाक्टर साहबसँपुईछ लेबइन।

- "हं । अपन पुईछ लेबइन।" बसंतक माय बजलीह।

फेर भेलइन जे नब जमानाकऽ लोकबेद छइथ। अपन जे नीक बुझेतइन से करतीह। इनका जे फुरेलइन, अपन कत्ब देलच्बवन।

अइ गपशपकऽ समय बसंत ओतइ ठार छल। ओकरो एकबेर "कोदबा" भेल छलइ- ओइ मे नीमक पात ओकर देह पर राखल गेल छलइ। तखइन ओ ठीक भेल छल।

अच्बवल दुच्बवत भेलासँकमजोरभऽ गेल छलइ। बसंत , अच्बवलकऽ मानबो बडड करय छलइ। साईच्किल पर सऊंसे शहरकऽ कैक िकर ओ अकरा घुमेने अइ। बसंतकऽ भेलइ जे नीमक पातसँअच्बवलकऽ छुआलि जाय त ई ठीकभऽ जेतइ। ई मोन मे अबाते ओ ओतऽ सँसाईच्किललऽ कऽ बादा भेल।

ओकरा ई अंदाजे नचि छलइ जे ओकर शहर मे अतेक बदलाभिऽ गेल छइ। पच्हने कतेक ने नीमक गाछ िर कात छलइ। आइ ताकऽ चाकलल, त कतउ देखेबे नचि करय। कतऽ बालाअ गेलइ नीम सब। तकइत आगु बढल। दु ठाम नीम गाछ भेटबो केलइ- तं ओइ गाछक माच्मक पात तोडअसँमना कऽ देलकइ। एकाध टा आर ठुठ नीमक गाछ भेटलइ- जेकर सब डाईढ पात लोग दतमइन आ खच्चका मे सुडडाहकऽ देने छलइ। आगु बढल जा रहल छलाय बसंत। आइ ओकरा बुझेलइ जे अपनो शहरसँओ दुरभऽ गेल अइछ। नीम सन छोट छीन गाछ तककऽ ओकरा ठेकान नचि।कतऽ ओकर ध्यान रहइ छलइ- ओकरा अपने पर हंसी आबइ।

अच्छंना ओ पहुंचलि स्टेशन गुमटीक बाद , बंद चिनी मीलक गोदाम लग। ओ खंडहर जकाभऽ गेल छलइ। पच्छने ओतऽ रकक लाइन लागल रहइ छलइ। ओतऽ पहुंचिला पर एक फंका चिनी ओच्छना डाईवरि खलासी सबदऽ दइ। भीड लागल रहइ छलइ ओतऽ । ओतऽ चिहक दोकान सेहो छलइ- जे मंगनी चिला चिनीसँबनच्चि। सब रक चिला दु चिइर च्चकलो ओच्छना ओ चिहक ठेहाचिलाकऽ द दइ। सब खत्म। बयाबान जंगल जेका लगइ छइ। आइ ओ देखलक जे गोदामक देचिरि मे पीपरक गाछ सब भऽ गेल छइ।

अपन च्चमाग पर जोर दइया बसंत- देखू हम आयल छलऊं नीमक पात लेल......पीपरक पात देख रहल छी। गोदामक पछुआइत मे एकटा नीमक गाछ पच्छने छलइ। ओ सब ओकर खसलका फर नीमरी खाई छलाय आ तखइन उपरसँजं चिनी भेट जाइ त" तीता मीता" सचिद ओकरा सबकऽ कहइ। बडका नीमक गाछ छलइये। नीचि बाला ठाइड नच्चि छलइ लेच्चकन ऊपर पात छलइ।

साईच्चकल गोदामक आगु मे बसंत लगेलक आ पाछु चिइल गेल - च्जमहर नीमक गाछ छलइ।

दासजी कतऽ सँजे बसंत च्चाकलल, ओकर बाद ओ अपन घर नच्चि पहुंचलि।ओ कतऽ गेल? ओकर घरक लोक दासजी कतऽ

आयल- एतऽ सँत ओ तखने ि इल गेल छलाय। सब जगह ताकल गेलइ। कतउ नहि भेटलइ। एक दु गोटे कहलकइ जे नीमक पात लेल आयल छल- लेकिन मना केला पर ि इल गेल।ओकर साईकिल गोदामक बाहर भेटलइ। ओकर बाद कोनो खबर नहि।

अंत मे हारि कऽ थाना मे रपोट लिखा गेलइ। पुलिस घरक लोक, दोस महीम, विद्यार्थी आ दासजी सबसँपुछताछ केलकइ। आब ई त सत बाहर आइब गेल छलइ जे दासजी कतऽ सँबसंतकऽ बडड हेमकेम

छलइ।

आब दासजीक जे विरोधी लोक सब छल- से अइ घटना मे हि देबऽ लगलइ। ओ सब हल्ला उडा देलकइ जे अम्बामाजी आ बसंत मे नाजायज रिश्ता भऽ गेल छलइ तै पोफेसर दासजी, बसंतकऽ मरि देलखिन। ई बात पुलिसकऽ सेहो पता लगलइ। ओ दासजीसँपुछताछ करऽ लगलइन। दुनु गोटेकऽ थाना मे राखल गेल। अलग अलग पुछाई भऽ रहल छलइन। बीमार अम्बिल , पडोसी कतऽ छलाह। बाबूलकऽ पुलिस थाना आनऽ सँमनाकऽ देलकइन। आब बाबूल दोसर पडोसी कतऽ । दुनु बचि दु जगह आ अतऽ थाना मे दुनु पाणी दु जगह परीक्षादऽ रहल छलाह। संकमणक दौर ि इल रहल छलइन।

उमहर जे बसंतक माय खाद्वार दासजी सब देति छेलाह, से आब इनकर सबहक चारफन्नारीकऽ मागकऽ रहल छलीह। शहर मे केटि टोलीकऽ लोककऽ संग चककछु आर संगठन सब दासजी आ अच्चामाजीकऽ चारफन्नारी खाद्वार दबाि बना रहल छल। अखबार आ टीिी मे समाििर इनकर सब पर आइब रहल छलइन। बाना चारफन्नारीकऽ समाििरकऽ आधार पर दासजीकऽ वीशवीदिालय पशासन चालम्मातकऽ देने छलइन।

पुच्लस टीम जाि करइत फेर ओइ गोदाम पर गेल। जखइन ओ नीमक गाछकऽ तकइत ऊपर िढल त देखइत अइछ जे गाछक ऊपर जे खजखोहइड छल ओइ मे बसंतक लाश पडल छल। पुच्लसकऽ अनुसार नीमक पात तोडइत काल ओ ग्यारह हजार ििल्टक बाजलीकऽ करेटक िपेट मे आइबकऽ ऊपरे टंगा गेल छलाह। पोस्टमाटम मे सेहो बाजलीकऽ करेटसऽ मौत अयलइ। तखइन जा कऽ दासजी आ अच्चामाजीकऽ पुच्लस छोडलकइन।

अइ सब पुछताछसँ दासजी आ अच्चामाजी अतेक टुइट गेल छलाह जे आब उनका ई शहर काटई छलइन। लोककऽ नजर मे ओ पुच्लसकऽ पाइ खुआ कऽ चादोषक तमगा लेने छलाह। इमहर वीशवीदिालय पशासन इनकर चालम्बानकऽ आदेश रदकऽ देने छल।

दासजी तखनो कुलपतिकेँ अपने जाकऽ हाथ पैर जोईडकऽ विनती केलखिन जे ओ कोनो आन शहरक कालेज मे बदलीकऽ दइ लेल। जे दासजी ककरोसँ कहियो किछु नहि याचना केलाह, सेअ अइ पताडनाकऽ दौड मे हाथ जोडनाई सीखा देलकइन। कुलपतिकेँ सेहो सचाई पता लाइग गेल छलइ। माहौल समान्य करबाकलऽ सेहो दासजीकेँ ओतऽ सँहटेनाई जरुरी छलइ। पशासनिक अनिवार्यताकेँ नाम पर बदलीकऽ आदेश जारी कएल गेलइन।

विरोधी लोक सब एहन ने बदला लेलकइन , जे दासजी अपने बदली करा कऽ चलि गेलाह। आब उनका ई शहर मोन नहि पडई छइन.......मोन पडई छइन त बसंतक त्याग आ आदर। ओ इनका सबहक लेल अपन जीवनिकऽ ईहलीला खत्मकऽ लेलक आ ओ एहन छइथ जे लोकक कुत्सित डरे, ओकरा याद मे किछु लिखियो कऽ नहि कऽ पाइब रहल छइथ।

पहिलूका दासजी रहितइथ त ओ जमानाकेँ परवाहि नहि करितइथ। आब दु टा पैघ होइत बच्चाकेँ बाप छइथ, तै मौन भऽ कालेज जाइ छइथ आ कालेजसँ सीधा घर घुडइ छइथ- नैराश्यसँ पीडित अर्धांगिनी श्यामाजीकेँ सेवा खातिर।सोझा सोझी जीवनि भऽ गेलइन। आब नहि "बंगाली " कहला पर खराब लगइन आ नहि परफेसर कहला पर। अपनाकेँ कमीशन वाला लेक्चरर कहनाई त बिसरिये गेलाह।

ईएह कहाइ छइ- बदला मे बदलीभऽ गेलइन।लोक घर मे बइसल...... ई बाफकषथनाकाइल लेलक जे बान आइगक धुआं नचि बाकलइ छइ। चककछु तऽ किर छइहे। चकनको पचाष।मचटयामेट करबाक हुआय त " अफेयर " सबसं औकि हच्चयार सदैयसँरहल अइछ........ओकरे उपयोग दासजीकऽ चिरोधी सब कयलाह आ एक आगु बढइत क्यचकतकिऽ समाज "अफेयसथ" कऽ नाम पर धराशाई कऽ देलक।

केतकीकऽ व्यथा- की कहू कथा (लघुकथा)

ओइ समय मे सब गाम मे विद्यालय नहि होइ छलइ। पाथमिक विद्यालय कतउ कतउ भेटियो जइतइ, मुदा उच्च विद्यालय त गूलरक फूल। जई गाम मे उच्च विद्यालय,ओकर अंईठने अलग। अइ गाम मे बच्चिया सब सेहो पढल लिखल होइत छल। केतकी अइ मे भागमंत छलीह। उनकर गाम मे उच्च विद्यालय छलइन। अगल बगल कयेक गामक विद्याथी सब ओइ गाम मे पढबाक लेल कियो संबंधी त कियो जोर आ संबंधी त कियो अनुबंधी कतऽ रही कऽ पढई छल। अही मेसऽ किछु विद्याथी बाहमण भोजनक लेल बैपैल रहइ छल।

केतकी नऊआं किलास मे पढई छलीह। सबसं तेज त नहि, मुदा भुसकौलो नहि छलीह। केतकी जेहने सुनर फूल, ओहिना सुनर देखबाह मे। ओहिना बात विचार व्यवहार। से कियैक नहि होइन-संस्कारी परिवारिक छलीह। ओइ समय मे नउआं मे पढइत केतकीकऽ विहि घरकथासँपंकियो समये मे सुभ्यस्त परिवार मेभऽ गेलइन। विदेह बरखक केतकीकऽ घरविला विबीस बरखक कमऊआ मनोहर बाबू छलाह। कमऊआ बर मे कनिो अविगुण नहि- तहिया ईएह मानल जाइ छलइ। यिसक अन्तर तहिया कथा बारता मे नहि देखल जाइत छलइ। सब ठीक छलइ। केतकी घरबाला संग दिल्ली मे रहअ आइब गेली।

घरबाला पाइ जमाकऽ क रखने रहइत। च्दक्ली मे एकटा मकान सेहो चकनलाह। मनोहर बाबूकऽ कनिो गंभीर बीमारी छलइन।ईलाज लिइ छलइन। ई सब गप्प जाबइत केतकी बुझतीह, ताबइत एकराइत मनोहर बाबू सुतले केतकीकऽ छोब्डकऽ दूब्मायासऽ चदािलऽ लेलाह।दु बरख चीिहकऽ भेल रहइन।

सोलह बरखक नऊआं पास केतकी आब की करतीह। सासुर-नैहरकऽ सब लोक जमा भेल। ईएह घमरथन। केतकीकऽ की हेतइन। चकनको चीिर जे आगु पढालि जाय,चकयो नैहर मे रहबाक, चकयो बरक आचकस मे पैघ भेलाह पर छोट नौकरी, चकयो दोसरो ब्बयाह। तरह तरहकऽ गप्प। केतकी मौनीभऽ जीनि ढो रहल छलीह। उनकर सुन्दरता चीिच्लत भेलासँआरो ब्बखइड गेल रहइन। सासुर बाला सब कुमार देबरसँचीिहकऽ इच्छा जतेलकइन। केतकी त जेना बऊकभऽ गेल छलीह।ओ नचि हं कहलच्बन आ नचि । उनकर ुप्पीकऽ सासुर बाला नचि बुझलकइन आ लगलइन दुख देनाई।

एही सबहक साकी छलाह दीपक। ओ केतकीकऽ च्दक्ली िला मकान मे चकरायेदार छलाह। पढाइकऽ संग नौकरीकऽ तैयारी करय छलाह। मनोहर बाबूकऽ संबंधी छलाह आ केतकीकऽ गाम मे रहीकऽ पढाइ केने छलाह। बचिा बाली केतकी, स्कुल िली, चीिच्लत आ चधिा केतकी, अपन स्तीति बबिइ खाब्बार संघषश्रत

केतकी- साक्षी छलाह दीपक।

एक दिन केना की भेलइ, केतकी दीपक संग बाकी जीनि बीतबइ लेल तैयारभऽ गेलीह। ओ दीपकक ढीम फलासी मे फंईस गेलीह। असली गप्प छल जे केतकीक सौन्दर्यथआ हवेलीकऽ संपत्तिाकऽ लालसा मे दीपक ई िइल िलने छल। दूनु गोटे िारा कऽ कोटथ मे बीिहकऽ लेलइन। किछु दिन बाद भेद खुललइ। पर पंिइती भेल। सासुर िला अपने मूड़्त िहइ छलाह बीधििकऽ जिम्मेदारी सं। कनीक हक्ला गुल्लाभऽ सब शातभऽ गेल। हवेली िला मकान, व्यिसाय शुर करबाक नाम पर दीपक, केतकीसँबेिबा देलकइन। केतकीकऽ एहन दीपकक नशा छलइन जे बुझबइन किछु, ऊयाह दुश्मन बुझाइन। लोक सब सेहो छोअइड देलकइन। जाबइत मकानक पाइ छलइन, खुब छहर- महर करय गेलाह। किछु बरखक बाद जखइन पाइ खतम भेलइन, तखइन दीपककऽ असली रप सामने अयलइन। अही बीि केतकी एक टा बेटाकऽ मायभऽ गेल छलीह। उचित-अनुचित बुझ लागल छलीह। बात बात पर दीपकक ताना आ किछु बजलाह पर माइड पिटाई सेहो सहअ पडइ छलइन।

केतकीकऽ आगु जीनि मे अन्हार बुझाय लगलइन। कयेक बेर जहर माहुर खयबाक मोन करयन। फेर ननकिरबाकऽ देखकऽ बीिर बदइल लइथ। समय बीतेबा लेल किछु पेन्टिंग करय छलीह। एक दिन एक टा पाहुन घर अयलखिन । ओ कलापेमी छलाह। केतकीकऽ पेन्टिंग देखकऽ कहलखिन जे ई त बीशुि आत्मयला पेन्टिंग अइछ। केतकीकऽ घरक हालात ककरोसऽ नुकायल नहि छलइ। नैहरिला सब सेहो दोसर बीयाहकऽ बाद संबंध

तोअइड लेने रहइन। सासुर मे सेहो चक्कयो व्यथिस्थत नचि। पेच्चंगकऽ बदला मे चककछु टकाकऽ पस्ताि अयलइन। आन्हरकऽ की िाही, दु टा आंचब। केतकी मोन लगाकऽ पेच्चंग बनबऽ लगलीह। अहीसँदु टा टका अबइन, जईसँघरक िुला जरइन। कहूना च्चन बातबइ छलीह जे ननकीरबा पईघ होइत त च्चन घुरत। दीपकक हाल आरो खराब। नशाकऽ क परल रहनाई आ चिक्लेनाई आ स्ती पर हाथ उठेनाई-ईएह रही गेल छलइन।

केतकी बेटाकऽ पढबकऽ पाछु पागल भेल छलीह। बेटाक संगत ठीक नचि भेलइन। दर्सािी मे पढइत छलइन, तखने नशाकऽ क घर घुरलइन। ओही च्चन पच्चल बेर केतकी बेटाकऽ ई र प देखलीह। पढाइ मे सेहो साढे बाइस छलइन। आब कोन उम्मेद आ केकरा पर। पच्चने सायकऽ लातजुता तर आब उपरसँबेटो तेहने। जीनि ढो रहल छच्च आइयो। कनिो पूथिजन्मकऽ पापक फल छइन, आर की। केतकी कथा-व्यथे-व्यथा।

उठऊआ ब्याह (लघुकथा)

आइ कतेक बरखक बाद शोभनसऽ भेट भेल। ओ अपन बेटीकऽ दिल्ली विश्वविद्यालय मे नाम लिखबऽ आयल छलाह। हमरा बारे मे पता सब किछु छलइन। ताहि लेल सोचलाह जे बेटीकऽ परिचय सेहो करा देताह आ भेट गाठ से होभऽ जाइत। राजा देब कखनो कोनो जररत पडतइ त लग मे अपन लोक कतऽ भेटिलो जाइत। परिवार छला सरकारी डेरा छल हमर। लोगक अबरजात छल।पहुंचनाई सेहो आसान छल। पहिने फोनकऽ क छुटीकऽ दिन आयल छलाह। बहुत तरहक गप्प शप्प भेल। पुरान पुरान लोकक चर्चा भेल। अतबा बुझबा मे आइब गेल जे बेटी विदुषी छलइन। ओतबे सुनर आ ठाय पर ठाय छली हाजिरजबाब। मजाक मे शोभनकऽ सेहो नहि छोडइन ओ। अपने कहलक हम उठऊआ पोडक्ट छी। भइड दिन कोना बीत गेलइ, से पते नहि चलल। किछुये घंटा मे ओ अपन उपस्थिति जता देलक। ठहका पर ठहका। साझ मे ओ दुनु गोटे अपन होटल घुरी गेलाह।

तीस बरखक पुरान सब गप मोन पडी गेल।शोभन हमर संबंधी कतऽ रहइकऽ कालेजक पढाइ करय छलाह। बदला मे घरबइयाकऽ धीया पुताकऽ पढबइ छलाह। माने बच्चा सबहक सरजी। बीएससी ओतइसऽ केलाह। ओना एमएससी मे युनिवर्सिटी मे होस्टल भेट गेल रहइन, मुदा घरबइयाकऽ आगह पर ओतइ रही गेलाह। परिवारिकऽ समागभऽ गेल छलाह। हमर संगतुरिया छलाह।

समय उनके संग बातय। भलमानुष पवािरकऽ छलाह। चारहथक बेटा छलाह। पाइक कशमकश घर मे देखने छलाह। ई सरजी िला मौका जखने भेटलइन, बाना सोिने हामी भरी लेने छलाह।

एक दन शुिकऽ समय मे बेर पहर जखइन युवा ािथीसऽ घुडइ छलाह। िकछु लोक जबरदस्ती मोटरसाइिकल पर बइसा कलऽ गेलइन। ओ लंगा गाम छल। दन मे कतउ आर रखलकइन। राइत भेलाह पर जबरदस्ती बयाह कराअ देलखइन। हामी भरऽ मे िकछु ना नुकुर केलाह त मारबो केने रहइन। थोडेक काल मे हल्ला भेल। बाना मोबाइलोकऽ खबर िर कात पसइड गेल। गाम मे माय पेटकुिाया लाईध देलिकन। िकछु गामक नितुबया सब जमा भेल आ शोभनकऽ सासुर गाम गेल। ओतऽ आंगन मे लाल धोती पहरने आ हडइद ठोप लागल गुम्म शोभन भेटलखन। शोभनकऽ फेर मोटरसाइिकल पर बइसािल गेलइन आ उनकर गाम घुराकऽ ल जायल गेल।सबकऽ उम्मेद छलइन जे माइड पीट िकछुओभऽ सकइत छइ। लेिकन कोनो िवरोध निि। शोभन अपन गाम मे आइब गेल छलाह। आब लंगा गामक अगला डेग पर सबहक नजर छल। शोभनकऽ नुकाकऽ कतउ कतउ राखल जाइन

युवा ािथीकऽ पढाइ से हो छुटी रहल छलइन। िकछु लोक थाना पुिलसक लग सेहो गेल। कतउ समाधान निि। जानका कतऽ रहइ छलाह, ओहो लंगा गामक दुआरे तटस्थभऽ गेल छलाह।

करीब महीना बीतऽ लगलइ। आब शुर भेल समझौताकऽ

िता। अहि बीि दुनु पक कोटथमे नाश केलक। लडकी सुनर छलइन, विधिाकऽ बेटी छल। नैहर सासुर कयो कथा लेल ध्यान नहि देलकइ। तखइन अइ उठऊआकऽ शरण मे गेल। पाइ कऊरी सेहो छलइ। बाद मे शोभनकऽ पुरा दान दहेज सेहो देल गेल। समझौता भेल। लडकीकऽ भाग देखयउ। ओही साल शोभनकऽ बैक मे नौकरी सेहोभऽ गेलइन। कछु दन बाद सब सामान्यभऽ गेल। उठऊआ बयाहकऽ अहन सुखात होइत, कयो सोिबो नहि कयने छलाह। शोभनक कन्या सेहो व्यिहारसऽ सब सासुर िलाकऽ मोन जीत लेलक। सबहक मुंह मे एके बात- अइ मे लडकीकऽ कोन दोख।

अहिनो होअइत छलइ। कयो बसािस करत अजुका नबका पीढी।

बडका घरक बहुच्चया (लघुकथा)

आइ फेर रामबाबूकऽ तुलसी पीडा लगसऽ उठाकऽ घर मे घुराकऽ राखल गेलइन्नह।भइड गामक लोक उनका जा कऽ देख अयलइन। च्चकयो गोर लाइग अयलइन त च्चकयो थोडेक काल ओतऽ बइसकऽ आइब गेल। देखच्चाहार सभकऽ ाहि- पान सेहो उनका कतऽ भेट जाइ छइन। ताच्चक लोभे सेहो च्चकछु लोक च्चायच्चात ाइल जाइत अइछ।ओना रामबाबू आ उनकर घरक लोकक बेबहार एहन छलइन जे भइड गाम मे लोक याद करइत छइन। च्चाना कनिो लोभ लालि के, जे भी याद केलकइन, कम-बेशी मदद केलच्चान। ओही परतापे, सब धीया पुता सुख मे छलइन। लोक कहइन जे फलमा आयल छच्चा- आहाकऽ देखइ लेल। बडड दुर सं। रामबाबू उनका च्चास ताईक लेच्चान। च्चकनको देखकऽ मुच्चाकयाईयो दइ छलच्चान। ओ अपनाकऽ भागमंत बुझइत जे हमरा देखकऽ मुच्चकयेलाह।फेर ाि होइ जे फला फलाकऽ देखकऽ खुशी भेलइन। बजई च्चकछु नच्चि छलच्चान। मुदा बुझाई जे च्चकनको ताईक रहल छइन उनकर आंईख। आइ फेर तुलसी पीडा लगसँजखइन घुरालि गेलइन त सब कहऽ लगलइ जे च्चकनको देखइ लेल च्चानकर पाण अटकल छइन। आइ त गऊदान सेहो करा देल गेलऽ इन हाई हाई मे।

रामबाबूकऽ कच्चाया सब बुझई छलीह जे रामबाबू च्चकनका जानसँबेशी ाहिइ छच्चान।उनकर आंईख च्चकनका ताईक रहल छइन। ओ आर

चकयो नचि उनकर बडकी बेटी िन दाई छथ्य। दस बरख रामबाबूकऽ बबाहक बाद िनदाई पहल संतान जन्म लेलथ्वन। रामबाबूकऽ माय कतबो कहथ्यन जे दोसर बयाहकऽ लइ लेल मुदा रामबाबू मनाकऽ देलथ्वन। िन दाईकऽ बाद पा िटा आर संतान भेलइन मुदा अंचवदेखउआ दुलार िन दाई रहलीह। सोलह बरखक जखइन िनदाई भेलीह त तखुनका बडका घर मे कथालऽ क रामबाबू अपन बहनोई संग गेलाह। ओत िरागत जे सब कहलथ्वन, रामबाबू सब शतथएके बेर मे माइन लेलथ्वन्ह। घुरती मे बहनोई कहबो केलथ्वन्ह जे आहा सब चकयैक गइछ लेचलयई। रामबाबूकऽ ज़बाब छलइन जे आइ कान्ह बाजारि दि छइ।जखइन बाजार जाइ आ कनिो सामान नीक लाइग जाय त ओकर मोल भाि नचि करीह। घुइडकऽ ननदोईस सब बात सरहोइजकऽ कहलथ्वन। आब उपाय की। रामबाबू जमीन बेिकिऽ बबाह केलाह।सब कहइन जे अतेक चकयो नचि देने छल बेटी के।

बबाहक बाद िनदाईकऽ बदागरी मे सब बेर संशय। पहल बेर रामबाबू अपने गेल छलाह बदागरी लेल। बदागरी त नचिये भेलइन, बेटीसऽ भेट सेहो नचि भेलइन। गाम घुरीकऽ झुटे िनदाईकऽ मायकऽ कहलचकन जे सासकऽ मोन खराब छलइन ताय नही अयलीह।फेर कहियो रामबाबू िन दाईकऽ सासुर नचि गेलाह। बाचक पाि धीयापुताकऽ बयाह दान मे सेहो िनदाई कनीक काल लेल अयलीह। बडका घर बडका व्यिहार।नैहरबालासँसीधा भेटगाठक परम्परा नचि। िन दाई कहियो सासुरकऽ कनिो च्शाकाइत नचि केलीह।ओही दुचनया मे ओझरायल छलीह। नैहर आबस त बाचक भाइ

बच्चनकऽ सासुर बालाकऽ बेबहार देखकऽ सेहन्ता होअइन च्छक उनको सासुरक लोक अहने आबेशी होअइतइन। उनकर च्छदागरी लेल च्छकयो नैहरसऽ आबइ लेल तैयार नच्छि। च्छान च्छदागरीकऽ पठबऽ कऽ परम्परा नच्छि। अइ बीि मे झुलइत िन दाई। एक बेर मोन हक्लुक करक लेल मायकऽ कहबो केलच्छन जे बराबरी िला कथा नीक। धन सम्पच्च सब च्छकछु नच्छि। माय बुच्छ गेलच्छन। आब उपाय की। जखन िन दाई रामबाबूकऽ सोझा जाइ छलीह। दु िइर टा नोर दुनु गोटाकऽ आंच्छसऽ टपईके जाइन। च्छः शब्द सब। गाम समाज मे एकतरफ लोक कहइ जे बेटीकऽ च्छबाहक मे रामबाबूसऽ बेशी च्छकयो खिथनच्छि कयलक। दोसर हुनकर मोन कहइन जे बडका मे संबंधकऽ क नीक नय केलाह। सब बेर सोिइत जे िनदाईसऽ माफी मागब। मुदा सामने अबइन त ज़बान मौनभऽ जाइन।िन दाई पढअ िहइ छलीह तच्छया। सोलहम बरख तच्छया बड बुझाय। आइ छब्बीसम सेहो कम। अकर बाद कनिो बेटीकऽ ओ बडका घरक बहुच्छया नच्छि बनऽ देलच्छन। बहुच्छया आ मलकाइन मे अंतर सबके बुझबच्छान। बहुच्छया मे सास ससुरकऽ राजबाला...बर- घर आ मलकाइन मे लायक घरबाला।

सब धीया- पुता, भाइ, बच्छन, भाच्छाज भतीजी, सखा - संबंधी नौकर िकर, गंउआ सब आइबकऽ देख गेलइन मुदा िनदाई अखनो नच्छि अयलीह। माय िरऊका संिद कयेक बेर पठा देलच्छन च्छक आइबकऽ देख च्छायउन। िन दाई कतसऽ खबास फलक मोटरीलऽ क आइब गेल, ओ नच्छि अयलीह। कहलकइ जे बहुच्छया

पठेलीह अइछ। आब मायकऽ से हो बुझाय लगलइन जे रामबाबूकऽ पाण बना बहुचयाकऽ देखने छुइट जेतइन।ऊयाह भेलइ राइत मे बहुचयाकऽ इंतजार मे रामबाबू गोकुल धाम ि इल गेलाह।

दरबार (लघुकथा)

दरबार सुनिते राजा-महाराजा, बडका जमीदार, मंती, अफसर ईएह सब ध्यान अबइ छइ। दरबारी ओहदा होइ छलइ। नरित सब ओइ सब मे होइ छलाह। महाराजाक दरबारी छोटका राजा सब, राजा सबहक जमीदार, जमीदार सबहक बारहथ- मजुर। अहीना बडका लाला- व्यपारी सबहक फुटकर दोकानदार,दोकानदारक मुनीम अछना कम लिइत छइ। दरबारीसऽ दरबारक मान होइ छलइ।कतउ कतउ रानी महरानी सबहक सेहो अपान अपान दरबारी छलइन। कोनो कोनो खबास सेहो हिटगर िक नायक रहइ छल।बेशीतर अइ तरहक दरबार िला सबहक आंगन मे परपुर खकऽ गेनाई मे रोके जका छलइ।जे घुसऽ मे सफल उनका बडका दरबारीकऽ तमगा। जतेक मुंह ततेक गप्प आहाकऽ सुनऽ कऽ भेटत।मोटा मोटी धन जर री दरबारक लेल। आइ काल्ह लोक व्यंग्य मे दरबार िला कहइ छइ। दरबारी कहबा लेल त बकयो तइयार नि । ओना हा मे हा बालबऽ बाला लोकक कमी नि।दरबार मतलब त सीधा भगािन भगातीकऽ दरबार, मनूक्खक कतउसऽ नि ।

आब जई दरबारक बात हमकऽ रहल छी से सबसं मने अइछ।

रामबाबू पन्ने अंगेज सरकार बाद मे बहार सरकार मे छोट-छन मुलाजम छलाह। समयक अंदाजा लाइग गेल होइत। कनयाकऽ

मृत्युभऽ गेल छलइन।असगरे रहइ छलाह। ओना ओइ समय मे अंगेज अधिकारीकऽ छोड़िकऽ कम्मे सरकारी लोक पचारि संग रखइ छल। डइब चलनकऽ रामबाबूकऽ दरबार लगइ छलइन। बेर पहर होइत होइत दरी जाजिम सब बिछ जाइ।लोक अयनाई शुर भऽ जाइ। रामबाबूकऽ अपन अलग आसन रहइन । रतआ दरबारी सबहक अलग। दरबारक बाना चलखल पढल अपन संविधान रहइ। मोटका रजिस्टर रहइ।ओइ मे नाम चलखाई। किछु पाइ दकऽ आहा दरबारकऽ सदस्य बइन सकइ छी। गैर सदस्य सबकऽ बइसऽ कऽ अलग बेबसथा- कात मे। सदस्यसँरत बनऽ लेल पारदशी पचिकया छल। रतकऽ बइसबाक अलग बेबसथा। जे नायबात अऊताह ि ढोल-संगीतक जानकार ि नाचित सहयोग रािश, से सब रत दरबारी। लोक गप्पिँदरबारी कहाबइ छल। सब सदस्यकऽ गोलगाया, फल आ लडडू पसादी मे देल जाइ छलइ। महिला सदस्य सब सेहो होइ छलीह। आचबर ओइ दरबार मे की छलइ जे लोक अबइ छल। ओइ मे ढोल मृदंगकऽ संग नागुण आ विदेशाया गायल जाइत छल।रामबाबूकऽ एहन पभािि आिज छलइन जे जखइन ओ विदेशाया गबइ छलाह त लोक तिकते सुनाते रही जाइ । भाग-गाजाक बेबसथा सेहो रहइ छल। ओतबा काल सब दोसरे दुनाया मे रहइ छल। अंगेज अधिकारी सब सेहो उत्सुकता िश अबइ छल। रामबाबू जई शहर मे बदलीभऽ क जाइत छलाह- ई दरबार अनरित िलइत छल। ओ दरबारीकऽ अलाि चिकनको कतऽ अन जल गहण निह करय छलाह। हुनक संबंधी आ अधिकारी सब सेहो हुनक भािनाकऽ सम्मान करइत दरबारक सदस्य पहिने बनिह छल तखन आबऽ कऽ आगह करयन। रामबाबू सेहो अपन दरबारी सबकऽ पुरा ख्याल रखइ छलाह। भाइ भतीजासँबेशी दरबारी सबहक मान

दइ छलाह्थन।आब नहि ओ दरबार आ नहि ओ दरबारी।एक सामान्य लोक अतेक ब्यक्तिकऽ संग ब्जिनगी जी लेलक। ककर्यो कहलकइ जे एहन दरबार लिबऽ बाला लोक जन्म लइ छइ, बइन नहि सकइ छी।

की अहुं सब अइ तरहक कनिो दरबारकऽ बारे मे सुनने छी? ब्जाजासा। सामाब्जिक व्यवस्थिा मे कतेक बदलाभिऽ गेल।

समयक कि (लघुकथा)

आइ फेर बडका बखेरा भेल रहइ। भइड गामक लोक रामबाबू कतऽ जमा भेल रहइन। बेशी त मजा लेबऽ खाबार आयल छल।कऽ कहइ छइ जे गाम खालीभऽ गेल छइ। कतऽ सऽ अतेक लोक आइब गेल। बाहमण भोजन मे लोक नोत बाजोह देलो पर नकि आबइत अइछ।मुदा अखइन देखू। सब बान बजेने आइब गेलाह।कऽ मऊगीकऽ पुरख। मुरी चानकि त रहु। उतर िरी टोलसऽ सबसं बेशी लोक आयल।चकयैक नकि आइत। ओतइ सटले रामबाबूकऽ बडका आमक गाछी छलइन।जई मे पकने लोक चाृति होइ लेल ओइ टोलक लोक जाइत छल।सटले ईनार सेहो रहइन।ओतुके लोक ओकर उपयोग करय छलाह।कहबी ईहो छल जे अइ ईनारक पाइन मे दाइल नीक सीझई छइ। बस आब की दोसरो टोलक लोक पाइनलऽ जाय। पकने हत्था आर बाद मे लोहाकऽ काटसऽ पुरा घेरा देल गेलइ।रखबार सेहो रखा गेलइ। भारी आफत उमहरका लोक के। धन कक सरकारकऽ जे आब सब घर मे ई सब बेबसथा छइ।

रामबाबूकऽ बाप फूलबाबूकऽ सबसं बेशी जमीन अइ परोपाटा मे छलइन।संगही कागेसी नेता सेहो छलाह। अजुका नेता जेका नकि। अपपन घरक आंटा चाकलाकऽ क राजनीचा करय छलाह। ककयो नकि चटकट मंगलचकन, नकि पाटी अपने देलकईन, आ नकि िनाि लडलाह। धन भेलासँअनेरो िहरो रौबदार लागऽ लगइ छइ।

फूलबाबूकऽ ज्ञानगी शान मे बातइ छलइन। रामबाबू चिदाथी नीक नचियो रहलाकऽ बादो बापक बदौलत चजकट मे बच्चया रहलाह। शहरक कालेज मे पोफेसरी सेहो भेट गलइन, चकयैक त फूलबाबू कालेजक कमटी मे छलाह। अतेक तक त सब ठीक।

इमहर रामबाबूकऽ शहर मे नौकरी लगलइन आ उमहर हुनक माय मामुली जर बोखार मे परलोक िइल गेलच्चन। ओइ समय फूलबाबू पाटीकऽ अच्चशिन मे छलाह। खबर भेलइन। तखन अयलाह।फेर चकयाकमथभेलइन।ताबइत बफक्क चसक्ली मे देहकऽ राखल गेल रहइन। पच्चल बेर लोक एना मृत देहकऽ चसक्ली मे राखल देखने छल। शाि मे िगामा आ पिमेर भेलइ।

आब फूलबाबू असगरभऽ गेलाह।ओतेक संपइत।ओइ समय मे दुटा तीन टा बयाह लोक करइत छल। फुल बाबू पच्चने त बयाहकऽ लेल तैयार नचि होइ छलाह मुदा बाद मे सचिस्तदऽ देलच्चन। नीक कुल शीलकऽ कथा देख कऽ भलमानुष कच्च ि गरीब कच्च, दोसर बयाह भेलइन। अइ बयाह मे कन्या पक्क बाकी ज्ञम्मेदारी फूलबाबू गछलच्चन आ ता जीनि ज्ञभेलचकन। रामबाबू भीतच्चया बापक दोसर बयाहक च्चखलाफ छलाह।होबाके िही मुदा चकछु बजलाह नचि। बेशी अप्पन शहरे िला घर मे रहइथ।इनको बयाह दान भेल आ पचिर संगे रखलाह।

फूलबाबूकऽ दोसर ब्याहसऽ तीन टा बेटा भेलइन। जखइन बच्चा सब छोटे रहइन त बीमारी आ उदिराज फूलबाबू सिगिथिसीभऽ गेलाह। अखइन तक जे रामबाबू शात आ शहर मे रहइ छलाह, दादशाकऽ पराते बापक पाइ कौरीकऽ हिसाब सतमायसऽ मागह लगलाह। गामक लोक कतबो कहलकइन जे माछ माऊस बाचकये छइ। थम्ही जाऊ। लेचकन उनकर माथ पर त अतेक दिनक हिसाब हाति छलइन। सबसं पहिने मोटरक िभी लेलाह। फेर भरार घरक। ओकर बाद जतेक लगुआ भगुआ संबंधी सब रहथिन, सबके जयबाक आदेश। मालिकक बनाते एहन आन्हरभऽ गेल छलाह जे सतमायक मायकऽ सेहो जायक लेल कहि देलथिन। मनेजर, मास्टर,, मुहबथ्थ सबके हटा देलथिन।उतरिरी टोल िला गाछी मे लोहाक जाली आ ईनार पर मनाही अखने भेल। पुरा हिली फूलबाबूकऽ जाइते सुन सपाटभऽ गेल। बडका घरक बात छल। सब ि्पो रहल तमाशया।कऽ इनकासऽ बागार लेत।

समयक िक देखू। रामबाबूकऽ कनिया सेहो ईएह अस्थिा मे मइड गेलथिन। दु टा बेटी छलइन। दुनु सासुर बसई छलइन। समय अजुका बदइल गेल छलइ। कतबो बेटी- जमाय सब मना केलकइन। रामबाबू दोसर ब्याहकऽ लेलाह। समझौता ई भेलइन जे पाइ आ पेशन नबकी कनिया आ समपइत बेटी सबकऽ द देल जेतइ। अइहना सब ि्इल रहल छलइ। आइ िइर दिन मुइला नचि भेलइन रामबाबू के, सतमाय आ बेटी सब मे पहिने बाता- बाती, फेर गारा - गरौलि, फेर झोटा- झोटऊल भेल। ज़बान धनिक बाधिकऽ बडड शुभचिंतकभऽ जाइत छइ। दुनु पक एक पर

एकाले। बाद मे थाना-पुलिसकऽ चक्रयो फोनकऽ देलकइ। मछ्लला पुलिस सेहो आयल छलइ। ओकरो सामने मे मारा - पीटी भेल। सबके पकइडकऽ पुलिसलऽ गेलइन। आब कोना चक्रया कमथ्हेतइन रामबाबू के। उएह बइमातर भाइकऽ बेटा कमथ्करतइन-ईएह पंडिती मे चाणथ भेल। तछ्या रामबाबूकऽ सत्माय सब ज्यो सब नही रखने रछ्तइत त अछ्ना चांजन होइतइन।सब जगह अकरे िि। समयक कि छइ। ऊपरिला सबटाह छ्सााब बरोबर करय छइ।

बदलल बेबहार (लघुकथा)

आइ कतेक बरखक बाद रामबाबू दरभंगा एकटा बियाह मे आयल छलाह। संजोगसँ कन्यागत आ बरिागत दुनु हुनक अपेक्षित छलखिन। सोलिाह अइ बहाने कतेकाक मोनो बदलत आ लोक जे कहइत अइछ जे काज मे नवि अबइ छी से दोषो मेटा जाइत। दरभंगा आइबकऽ सीधा कन्यागत कतऽ गेलाह। कन्यागत एकटा बडका घर आ सटले बिहि भनि बुक केने छलाह। रामबाबूकऽ देखते घरबइयाकऽ बडड खुशी भेलइन। आदरक संग अप्पन पाहुन परख सबसँ परिचय पाक्षा करेलखिन। कनीक काल रामबाबूकऽ पभाि व्यक्तित कलऽ क गंभीरता रहल। फेर बाधोख बहस लिऽ लागल। ओइ मे किछु लोक राज स्कुलकऽ विदयारथी सेहो रहल छलाह। फेर की संस्कृतक शिक्षक पंडीजी सलऽ क हेडमास्टरकऽ रौब रतबा, खेलक मैदानकऽ सफाई आ फस्ट बेंजिन लािकऽ लोहा लिा जालीकऽ अंदर बोडथमे नाम लिखायलकऽ िि। खुब भरी छाक पुरनका गप्प सब भेल।

बिबाह दान संपन भेल। खुब उत्साहक संग दुनु पक जिम्मेदारी नाभेलाह। पछिल बेर रामबाबूकऽ अफसोस भेलइन कि कियैक ओ दुनु बेटीकऽ दुखलीसँ बियाह केलाह। शौक मनोरथ, बाध बाध देखकऽ अपनसऽ तुलना करऽ लगलाह। सब बेबसथा आ सुविधा अतऽ छइ। बेटाक बियाह अतइसऽ करब से मोने मोन प्राणथा केलाह। बियाहकऽ पराते घुरबाक टिकट छलइन।

होइ छलइन जे किछु चिन्ता न आर रही। गाड़ी घुरबाक लेल भारी मोनसऽ विदा भेलाह। घरबइया अपने स्टेशन आयल छलाह छोड़ई लेल।

फस्ट क्लास मे टिकट छलइन। समयसऽ आइबकऽ सीट पर बइस गेलाह।दोसर सीट एकटा बच्चियाकऽ छलइ। ओकर माय बाप ओकरा विदा करऽ आयल छल। ओकर सबहक गपसँई पता िइल गेलइन जे ई सुन्दर युिती सजातीय छइन आ इन्जीनियरिंगकऽ क आइ टी कम्पनी मे काजकऽ रहल अइछ। असगरे दिल्ली जा रहल अइछ। ओ लड़की आधुनिकता आ पारंपरिकता दुनुक अदुत मेल बुझेलइन। अतेक ओ परिवारिकऽ लोक सबहक लेल सोिई छइथ, सुइनकऽ रामबाबू भीतरे भीतरे उत्साहितभऽ रहल छलाह। उनका अपन जतरा सफल बुझायल लगलइन। ओ ओइ लड़कीकऽ अपन पुतोहु बनेबाक लेल सोिऽ लगलाह। रेन से हो विलम्बसँ खुलभऽ गेल छलइ। लड़कीकऽ पिता रामबाबूकऽ परिचित कतऽ कथालऽ क गेल छलाह। रामबाबूकऽ परिचय जाइनकऽ ओइ लड़कीकऽ पिता फोनक देब लेब से हो कयलाह। रामबाबू ई सबकऽ संयोग बुझई छलाह।

रेन कनीक काल मे खुजल। ओइ लड़कीकऽ आंईख मे नोर भरल। माय बाप से हो कनैत छलाह। रामबाबू सेहो देखकऽ द्रवितभऽ गेल छलाह। जखने रेन प्लेटफार्मसऽ बाहर भेल, ओ लड़की िटसऽ नोर पोछलक। आइबो ठीक केलक। फोन

उठेलक। ितालाप सुनु।

अरे कइसे फोन उठाती। मा पापा यही थे।

रेन तो कब का खुल ुका।

रेन ्शुडल हो गया था।

मैसेज कर देती।

निह मौका ्ला।

मैने ि्लीस कौल ्कअए।

साइलेट पर था।

अब सबका फाइन देना पडेगा।

आ ही रही हुं। ले लेना।

सुद स्त लुंगा।

हा-हा ठीक है।

कोई और बैठा है।

कोई नही।

....

भइड राइत गपक पि्ह ि्ते रहल। शब्क मयादाकऽ सीमा त कखने लंघा गेल छल। फस्ट क्लासक कुप छल। दुईये गोटे ओइ

मे। रामबाबू कंबल ओइढकऽ सुतऽ कऽ ढोग केने रहइत। पच्छुल बेर अपन असेसमेट उक्टा लगलइन। अपनाकऽ कम्बलतीकऽ बडड दाबा छलइन। जे लडकीकऽ ओ आदशथबुइझकऽ पुतहु बनबऽ कऽ सोर्इ छलाह ओकर असच्लइत सामने छलइन। पुरा जतरा आब बोझ बुझाय लगलइन।बरका धोखा खायसँओ बिलाह। ओकर मायबाप जे कथालऽ क घुईम रहल छइथ ओ कतेक धोखा मे छइथ।बेबहार कतेक बदइल गेल। लाज अइछ त कंबलसऽ मुंह झाइप च्लयअ।

अनघोल (लघुकथा)

आइ फेर भोरेसऽ गाम मे फुसफुसी िइल रहल अइछ।चकयो ककरो सीधा चकछु नचि कचह रहल छइ। पुछला पर कहत की नचि कोनो बात। मुदा सब व्यस्त। चदनसँसाझभऽ गेल।स्तीगण सब कानो फला बाबूकऽ घरक दुमुंहा लग त कखनो महाचिर मंचदर मे साझ देबाक काल एकदोसरासऽ पुछइ छचथन। सब चार तर। सबहक कान ठार। ऐना बुझाई छलइ जेना िनाकिऽ चानतीभऽ रहल छइ।कऽ चातत आकऽ हारल। चकनकर सरकार बनत-तेहने चाजासा। जेना िनाि मे पोचलंग एजेट आ चकछु पाइ पर काज करऽ बाला लोककऽ छोचडकऽ चकयो नचि कहत चक चकनका तरफसऽ आहा छी, ओचहना आइ चकयो अपन चािर नचिदऽ रहल छल चक ओ कोन चदस।सबाले एहन छलइ। पचहल बेर एहन गप्प सामने आयल छलइ। गाम त गाम छी। अपना घर मे चकछु हुआय मुदा दोसरक घर पर सबहक नजर। सब उचतिकिे आ सब जाचनाये। चकयो कहइ चक हमर नैहर मे ऐना भेल रहइ त चकयो अपन सासुर त चकयो अप्पन मातृक त चकयो कोनो आर गामक। अइ गामक त पचहल घटना। अनघोल मिि छल। की हेतइ। आचखर एहन कोन गप्प छअइ जे सब हक ध्यान अही पर।

रामबाबू अइ गामक सबसं कलामी लोक छलाह। हुनका जीबइत चकनको चहम्मत नचि भेलइन जे हुनका घरक चाशेषकऽ स्तीगणक चकयो िि करय। समय बदइल गेल छइ। आब चकयो ककरो मुंह

पर जाबी लगा सकइ छइ। सब सितंत। आइ रामबाबू रह्लतइथ तखनो गप्प नोन तेल लगाकऽ होइबे करतइ। नीक भेलइन,िइल गेलाह।बाजु हुनकर पुतहुकऽ लोक मुदा बना देने छइन। जह्वया अइ गाम आयल छलीह ओ कतेक मान- दान भेल छलइन। सुनच्चिर त ओह्वना छलीह, पढलो च्चखल सेहो। सब गामक लोक िहइ छलाय च्चक कह्वयो ओ उनको कतऽ आबस। कम्मे च्चदनक लेल गाम अबय छलीह।अप्पन मोटर मे। तह्वया गाम मे ककरो मोटर नच्चि छल। च्चकयो च्चकयो नबका धच्चाक भाडा परलऽ क अबइ छलाह।कहबाक जे अलगे उनकर अंदाज छलइन।

रामबाबूकऽ बेटा राजा बाबू असम मे िहक गाडच्चा मे मैनेजर छलाह। ओतइ ओ रहइ छलीह। ओतेक सुनर रहलाक बादो घरिला उनका पर च्चिशेष ध्यान नच्चि दइ छेलच्चखन। ई बात रामबाबूकऽ बुझल छलइन। ताह्व लेल देखकऽ पुतोहू िनलाह च्चक बाद मे सब ठीकभऽ जेतइ। लेच्चकन से नच्चि भेलइ। तखनो संग रहलाहसँएक टा बेटी भेलइन।ओकरा राजा बाबू बड मानच्चि छलाह। घरक माहौल अनुकूल नच्चि रहबाक कारणे बेटीकऽ ह्वमािल मे बोह्वंथा स्कूल मे पढबइ छलाह। झापल तोपल सब िइल रहल छलइन। इमहर रामबाबूकऽ परलोक च्चाधारभऽ गेला पर मायकऽ सेिकऽ नाम पर कच्चायाकऽ पठा देलच्चखन। कच्चाया जह्लना देश तह्लने परदेश, अपन हालत बुह्मते छलीह। गामे आइबकऽ रहअ लगलीह। इमहर राजा बाबूकऽ आजादी भेट गेलइन। जे च्चकछु िरा छुपाकऽ करय छलाह, आब खुक्ला करऽ लगलाह। बातकऽ पसरह मे कतउ समय लगइ छइ। कंपनीकऽ माच्चाक नोच्चटस थमा देलकइन।

नौकरी छुइट गेलइन। गाम घुइड अयलाह। किछु दिनकऽ बाद मोन उटिअ लगलइन। बहिनोई गुजरात मे अधिकारी छलखिन। ओत गेलाह। सब ठीक छलइन। नब नौकरीकऽ सेहो जोगारभऽ गेल छलइन। एक दिन राइत मे शराब पीकऽ आयल छलाह। बहिनोईकऽ ई ठीक नहि लगइ छलइन। ओ इनकर बहिनकऽ किछु नैहर पर कटाक केलखिन। बहिन ई सब खीस राजाबाबू पर उताइड देलखिन। राजा बाबू बहुत दुखी भेलाह। राइत मे सबकऽ सुतले छोअइडकऽ िइल गेलाह। भोर भेलाह पर सब बुझलकइ। बहुत खोजबीन भेल। पुलिस मे सेहो रिपोटथभेल। अखबार, टीबी मे सेहो फोटो छपािलि गेल। मूदा सब फेल। उम्मेद सबकऽ छलइ जे राजाबाबू बेटीकऽ जन्मदिन पर फोन करथिन, ओहो बीत गेल। कतउसऽ कोनो समािर नहि।

आइ बारह बरखभऽ गेल राजाबाबूकऽ लापता भेलाह। आब जे कानाफूसीभऽ रहल छइ से उनके शािकऽ बारे मे। लोककऽ उनकर कनियाकऽ पहिरल ओढल आ सधाि िला खान नयन पइि नहि रहल छइ। राजा बाबूकऽ कनिया त असगर जीिनक पहिनेहेसऽ आदी छइथ, से त सबके नहि बुझअ देलखिन। आब अनघोल मिल छइ गाम मे जे की हेतइ। की भइड जीिन राजाबाबूकऽ कनिया सधाि रहथिाह या विधाि।अकरे कहइ छइ फुसियेकऽ घमथथि। मुदा अनघोल त मिले छइ।

देहक नेह (लघुकथा)

बीरछाकऽ बेटी एकटा मनसाकऽ घर मे बइसा देलकइ।

ओकरा त बियाह भेल छइ।

त घरिला कतऽ छइ।

छोड़ि देलकइ।

के छोरलकइ।

आर के। बीरछाकऽ बेटी।

लोक सब बिकछु कहलकइ नहि।

बकअए ने कहलकइ। सब कहलकइ।

मुदा ओकर माये कहलकइ जे ई देहक नेह छइ। आइ मे बकयो बकछु नहि कऽ सकइ छइ। ओकरा जेना मोन करऽ चाहियउ। खुश रहअ चाहियउ।

आब ककरा फुरसत छइ। लोक जमा त भेल छल मुदा ओकर मायक गप्प सुनबाकऽ बाद सब छिड़िल गेल। तरका मुस्की सब माडइ छलाय। नेनाभुटका सबकऽ त बरका मनोरंजनभऽ गेल छइ। सब ओते मंडराई रहल छइ।

बीरछा अप्पन समाज मे मानल लोक छल। आन सब जेका ओ दस दुआरी नहि छल। ओ एके घर पकरने रहल। ओ कयेक तरहक काजकऽ लइ छल। मजुर आ खबास दुनु बाला काजकऽ लइ छलाय। मालिकक भाग आ मलकिनीकऽ मशाला दुनु पीसई छलाय। घरामी, राजमिस्त्री, भानस भात, होलीकऽ लुकारी, भोज मे पुआरक बिटी सलऽ क टहल चिकोरा तक मे माजल छल। आमक समय मे रखबारी आ जमीनक खरीद बिकीसऽ सेहो किछु नगदी भेट जाइ छलइ। किछु समय त एहनो एलइ जखइन ओ मालिककऽ कहलकइन जे आहा कतऽ जे मोटका भात बनबि त अइछ से हमरा नहि खायल होइत अइछ। हम सब पतरका ि ऊरक भात खाई छी। आब हमरा छोड्ड दियह। मालिक कहलखिन हमहु त उएह भात खाई छी। तोहुं हमरा छोड्ड देबे। जे बिा िर। बीरछा चीि िरि िन छल। मालिककऽ नहि छोरलकइन। भइड जीि नि बाभेलकइन। कतउ आर कमाय नहि गेल।अतऽ तक की ओर रेनो पर नहि ि ढल।

बीरछाकऽ एके टा बेटी छलइ। ओ भइड गाम मे सबसं सुनबि र छल। बयस होइते बगलेकऽ गामसऽ समाद अयलइ। आ ओ बेटीकऽ बियाहकऽ देलक। जमाय ओकर गुजरात मे काज करय छल। बेटी गुजराते रहअ लगलइ। जं कोनो समाद किछु दिन नहि आबइ त बीरछा परेशानभऽ जाइ छलाय। कोनो कोनो फोन नम्बर पर बुथसऽ फोन करय। गप्प त नहि ये होइ,पाइ सेहो लाइग जाइ। इंतजार मे बीरछा मईरो गेल। कोनो खबर नहि। कतेक बरखक बाद बेटी अयलइ। ओकरा संगे एकटा मनसा सेहो। पहिने

त ओ मनसाकऽ अपन च्चअयद कतऽ ठहरेलक। सुतबा लेल। लेच्चकन राइत च्चराइत अबरजाइत देखकऽ ओ अपना कतऽ राखऽ सऽ मनाकऽ देलकइ। बीरछाकऽ कच्चाया त बऊकभऽ गेल छल ई सब खेला देख क। इमहर जमाय सेहो एलइ बेटीकऽ ल जाइ लेल। बेटी साफ मनाकऽ देलकइ। पर पंायितीकऽ नौबत आइब गेल छलइ। तखने बीरछाकऽ कच्चाया एलइ आ कहलकइ जे ई देहक नेह छइ। जेना रहइ छइ से रहअ च्चयउ। सब ओकर इशारा बुच्चा गेल। जमाय ापिस असगरे गुजरात ाइल गेल आ ओ मनसाकऽ बीरछाकऽ बेटी घर मे आइन लेलक रहबाक लेल।

लछमी बहुचिया (लघुकथा)

आइ गाम बला सब लछमी बहुचियाकऽ याद मे चकछु करबाक खाचिार बैसार केने अइछ। चकयो कहइ की मूचिाथबनालि जाय, त चकयो छोट छीन सिसथ्य केन्द्र, त चकयो पढबाक लेल जिीफा, त चकयो बेटीकऽ चिाबाहक लेल चिान सुदक कज़थ त चकयो सकुल, चकयो धमशाला आचिद आचिद। सब चकयो अपान चिारिकऽ पक मे तकथदइ छलाह। फैसला नचि भऽ सकल। मूदा ई चिाचि त भेल जे चकछु ने चकछु होयबे करत।

आइ गाम समाज मे लछमी बहुचियाकऽ याद मे चकछु करबाक चकअए जर रत बुझेलइ। नबका लोककऽ त चकछु बुझले नचि।कऽ छलीह ओ। उनको चकछु नाम हेतइन जे माय बाप रखने हेतइन। चकनको नचि बुझल। लछमी बहुचिया त सासुरक नाम छइन। िटरचिासट मे सेहो ईएह नाम छइन। खेत खचिहानकऽ दसतािज मे सेहो ईएह नाम। सुनचि चिायई की कोनो नबकी िहुलबाज पुतोहु पुछलकइन की आहाकऽ चकछु त नाम होइत। माय बाप हेताह तखने धरती पर अयलहुं ने। हमरे टा कान मे कही चियह। हम ककरो नचि कहबइ। लछमी बहुचिया कनी काल सोिली, फेर कहलचकन जे ठीके नचि मोन अइछ। ईएह नाम अइछ।कहीकऽ मुसका देलचिन। चकयो सासुर मे अहनो डइि बइस जाइ छइ जे नामो चिासइड जाइ। चिासिस ककरो नचि लेचकन भेल छइ। ओ छलीह लछमी बहुचिया।आइ दुचिायासऽ एतेक बरख गेलाकऽ बादो

लोक नहि बासरलइन अइ।आब त ओहन लोक बननाईये भगानि बंदकऽ देने छथिन।

अतेक त बुझाईये गेल होइत जे लछमी बहुरिया अइ गाम मे पुतोह बइनकऽ आयल रहइत। ई नाम उनकर ससुर देने रहथिन। उनका अयलाकऽ बाद ओइ बरख बडड धान भेल रहइ। लोककऽ राखइ लेल कयेक टा कोठी बनबऽ परल छलइ। ओइ साल बाईढ मे एहन माइट आयल छलइ जे अन पाइनक संग आमो बडड फरल रहइ। जे भी भेल हो नाम परलइन लक्ष्मी, खुशहालीकऽ ल क। बाद मे लक्ष्मीसँलछमी बहुरियाभऽ गेलीह।कहल जाइ छइ जे कालाजारसँउनकर घरबालाक मृत्यु कम्मे बयस मेभऽ गेल छलइन। तखनुका अइ बीमारीकऽ इलाज नहि छलइ।

लछमी बहुरिया कासंतान छलीह लेकिन भइड गामकऽ माय जेना आबेश करय छलीह। उनकर भंसा घरक आइग कहियो मिझाई नहि छलइ। तखनुका सलाईकऽ पलिन नहि छल। लोक एक दोसर कतऽ सऽ आइगलऽ जाइ छलाय। लछमी बहुरिया कतऽ सऽ लोक सब आइग टुटल खपरा मे सम्हाइड कलऽ जाइ छल। ओइ संगे किछु दुख सुख सेहो साझा करय छल। उनका अपना मे त कते खाित, लोक सबके कोठी मेसऽ धान निकाइलकऽ दइ छलखिन। दइ त छलखिन पईिं, मुदा तगेदा कइयो नहि। खेनाई कमसँकम पाित लोकक बनबइ छलखिन। जे रहइ छलइ खाय काल, सबके आबेश ककऽ खुआबइ छलखिन। बियाह दान मे सब बाध

उनकेसऽ पुईछकऽ सब करय। पंचहुत पुरत्हतसऽ बाबाद भेला पर लछमी बहुचयाकऽ कहल मानल जाय। पुरत्हत सब सेहो चलनकर जानकऽ आदर करइत छलाह। चकयो बीमार पइड जाय त घर सलऽ क डागदर आ अस्पताल तक संग दइ छलचखन। चकनको कतऽ कोनो करदेिता हुअय, ओ असगर दु सय तीन सय लोककऽ खेनाई बना दइ छलचखन।

कतउ चकनको घरसँसैय बहुकऽ बेशी लडाई पर ओतऽ पहुंिकऽ धमकाअ दइ छलचखन। अपने कचहुयो तीथाटन पर नचि गेलीह, लेचकन जौ पता लगइ छलइन जे फला जा रहल अइछ त उनका रपया कौडी दइ छलचखन आ कहइ छलचखन जे हमरो लेल चकछु माइग लेब। चकयो पढअ बाला बचािकऽ कापी चकताब, नाम चलखाबऽ मे चदकत होअइ त ओकरा मदद करय छलचखन। परसौतीकऽ खाचलार त ओ डागदरसऽ कम नचि छलचखन। कतेक बचाि उनके देख रेख मे दुचनया मे आयल। ओ डागदर, दाई आ पंचहुत तीनु भुचमका मे रहइ छलीह। बेटी सबहक खाचलार त ओ बरका आशय छलीह। बचाि सबहक लडाई मे ओ हरदम नाइत-नाचतान, भाचगान- भचगनीकऽ पक मे रहइ छलीह। उनकर घर , घर नचि सराय छल। भोर सलऽ क राइत धइड लोकसऽ भरल रहइ छलीह।के बरका,कऽ छोटका,कऽ धचनक,कऽ चनधचा,कऽ पढल,कऽ चबनपढल,कऽ शहरी,कऽ गाम बला,कऽ काचबल,कऽ िपाट सबके लेल उनकर दरबज्जा खुजल रहइ छल। कयेक लोक त लोकाािर चबध बेबहार खाचलार आन शहरो मेलऽ गेलइन। ओ सबहक सुख-दुख मे शाचमल भेलीह। ओ बाप जे बेटीकऽ चबबाहक लेल पयास नचि करय छलाह, उनका ओ एक दशा नचि छोडइ

छेलखिन। उनकर बागराईकऽ चकयो खराब मनबो नचि करय। जे उनकर सबसं बरका गुण छलइन जे ओ उपकारकऽ ककरो नचि कहइ छलखिन आ नचि चकनको उपरागे देलखिन। कतेक लोक पईढ चलखकऽ बनल अइछ ओइ मे उनकर योगदान सेहो छइन। ओ सब आब उनका याद मे चकछु करबाक लेल लागल अइछ। एके लोक मे अतेक गुण कीभऽ सकइ छइ। सबसं कमाल देखू। चकनकोसऽ कोनो सेि नचि करेलीह। िइलतेचकरते दुचनयासऽ िइल गेलीह। िहुंओर उनकर ििभऽ रहल अइछ। आजुक कलयुग मे अहनो लोक भेल। अपचन सब चबसइडकऽ समाजकऽ उपकार करऽ बाली लछमी बहुचयाकऽ हमर पणाम।

अजादी (लघुकथा)

ई कोन अजादी छी।

बुझबाकऽ अइछ त पुईछ लियउन रमन सं। किछु कहता त संयम राखब।

रमन आब एतऽ कहा छथि।

कतऽ गेला।

लोकेसँबि ऽ दुआरे गेला अछि त बताकऽ थोरे जेताअ।

बाजु रमनक कनिया परा गेलइन। एहनो कतउ भेलइ अछि।

रमन एक टा कम्पनी मे सुपरि इजर छलाह। कनिया आ एक टा बेटी संग पटना मे रहइ छलाह। सोि लाह की सब दिल्ली मे रहइ छइ, ओहो दौड-धूप कऽ कऽ बदली दिल्ली करा लेलाह। कनियेकऽ बेशी जोड छलइन। कतेक नीक पटना मे छलाह। दिल्लीकऽ एहन उजाही मि लि छइ जेकऽ बि ति। बाहरी दिल्ली मे एक टा नब कालोनी मे किरायाकऽ घर लेलाह। ओतइ लग मे अंगेजी स्कुल मे कनी भाग दौड कऽ कऽ बेटीकऽ नाम सेहो लिखा गेलइन। बीि सेशन मे ज्यो बचि ाकऽ दिल्ली मे एडमिशनभऽ जाय त बुझु बैतरणी पारकऽ गेलऊं।सब काज सुच्चिया रहल छलइन। जमहर घर लेने छलाह, उमहर अपनो देसक लोक सब

रहइ छलइन। इनकर नौकरी टुर बाला छलइन,तै सोिलाह जे अप्पन लोकक बीि पच्चिर रहतइन।राजा दे कोनो जर रत परलाह पर च्चकत नच्चि हेतइन। ओना अप्पन आच्चकस ओतऽ सऽ बडड दुर छलइन। लेच्चकन सोिलाह जे उनके टाकऽ ने परेशानी।बाच्चककऽ सहुच्चलइत त छइ।फोन सेहो घर मे लगा लेलाह। मोबाइलक जमाना नच्चि आयल छलइ।

अच्चना सब ठीक िइल रहल छलइन रमनक च्चसाबे। धीरे धीरे फोनक च्चबल बडड आबय लगलइन। टेच्चलफोन च्चिभाग मे पता लगबइ लेल समय नच्चि छलइन। तखनो जखइन च्चबल बच्चढते रहलइन त काल च्चकॉडथच्चकलबेला। सब फोन इनके घरसँभेल छलइन। समय छलइ जखइन ई टुर मे बाहर छलाह। कच्चयाकऽ जखइन ई सचिाई रखलच्चकन त ओ गलती मानलच्चखन आ दुबारा नच्चि फोन करबाक भरोसा देलच्चखन। अइ घटना मे आपसी बहुत दंि भेल रहइन। च्चकछु समय बाद एक च्चदन कच्चया गायबभऽ गेलच्चखन। दुनु बाप बेटी सब जगह पता लगेलाह, च्चकछु थाह नच्चि लगलइन। हाच्च थाईककऽ पुच्चलस मे च्चपोटथदजथकरौलाह। सासुर बलाकऽ कहलच्चखन त ओ सब इनके दोषी कहऽ लगलइन। कहलकइन जे घर सम्हारऽ नच्चि अबइ छइन। छोट-छीन गप्प फोन बालाकऽ हल्ला मि देनाअइ उच्चित नच्चि, आरो कतेक दोष। कोनो मदद रमनकऽ सासुरसऽ नच्चि भेटलइन। उल्टा बदनामीकऽ तोहमा लगबऽ कऽ बारे मे उपरागो देलखइन। च्चनराशभऽ क च्चदल्ली घुरलाह।

जतऽ जतऽ रमन मदद खातिर जाइथ, उनकासऽ पहिने उनकर खिस्सा पहुंचि जाइन। सब हमददी जतबइन मुंहछुआन, आ मजा लइन अंचिन्हदेखार।हारिकऽ पुलिस बालाकऽ फोन बाला गप्प कहलखिन। ओकर आंईख चिमकऽ लगलइ। ओइ नम्बर बाला लोक सबसँसख्तीसँपुछताछ केलकइ। त पता चिलइ जे रमनकऽ कन्याया एकटा सोलकन संग तेजपुर, आसाम मे पराकऽ रही रहल छथि। चिक्लीसऽ पुलिसकऽ संग तेजपुर गेलाह त ओतऽ घर मे ताला लटकल छल। चिकयो पुलिसकऽ अयबाक खबरदऽ देने रहइ। रमनकऽ शक अप्पन गऊंआ सब पर बुझेलइन। एकतरहक झुग्गी बस्ती छल। चिपस चिक्ली घुरी गेलाह। तलाकक केस सेहो लगेलाह।

आब सचिल पैघ होअइत बेटीकऽ भविष्यकऽ छलइन। नौकरी छोअइड नचि सकइ छलाह। गामसऽ बुढ मायकऽ बजेलाह।सब धीरे धीरे सामान्य चिदश भेल जाइ छलइन चिक एक चिदन बेटी सेहो लापताभऽ गेलइन। कोनो उपाय नचि देखकऽ फेर पुलिस लग गेलाह। पता लगलइन जे बेटी सेहो माय लग तेजपुर पहुंचि गेल छइन। रमन आब पुरा चिनराश छइथ जे बेटी ओतऽ ओअइ समाज मे कोनाकऽ रहथ। ओकर भविष्य की हेतइ। आब पता लगलइन जे पुलिसकऽ पहिले बेर तेजपुर जायबाला फोन बेचिटये केने छलइन। ओ चिनरंतर फोनसँमायसँजुडल रहल आ बाद मे चिनणर्य केलक जे उएह जीचिन नीक।

रमनक अडोसी-पडोसी आब कहइ छइन जे उनकर कन्याया पुरखाह

छेलखिन। जेना पुरख मऊगायाह होइत अइछ ओहिना मऊगी सेहो पुरखाह। उनका सबके पहिलेसऽ आशंका छलइन। जे भी सत हो, रमनकऽ चाकरी मे रहनाई आ ओ नौकरी केनाई दुनुं पहाड बुझाय लगलइन। कनियासऽ ओतेक दुख नहि जतेक बेटीकऽ छोडनाईसऽ दुख भेलइन। तलाककऽ केसकऽ तारीख पर तारीख ि इल रहल अइछ। रमन सब छोडिकऽ चाकरीसँ ि इल गेलाह। ककनको लग नहि उनकर नम्बर आफ नहि पता-ठिकाना।

ई कोन अजादी छइ जे घर परिवारिकऽ ढाहि दइ। बेटीकऽ बापसऽ अलगा दइ। ककयो कहइ जे एहन अजादीकऽ आइग लगा दी तो ककयो अपन अपन पसंदक पक मे। ककछु दोष रमनोकऽ हेतइन। सबाल ई बेशी घुमई छलइ जे भगलखिन त भगलखिन, सोलकन संग ककअए भगलखिन।बाह रे समाज। परेनाईयो मे ि गिथ चिभेद। की उचित की अनुचित।

गोलकी फेमकऽ शिमा (लघुकथा)

आशाकऽ जमानत हाइकोटसऽ भेटलइन। अखइन बरी नहि भेलीह अइछ। एकदम झोखइड गेल छइथ। बुझइया जका लिइ छइथ। चिन्हाईते नहि छइथ। सब किछु बदइल गेलइन। नहि बदललइन त ओ गोलकी फेम बाला शिमा। हम त ओहीसऽ चिन्हलइन। केहनभऽ गेल छइथ। कतेक गंभीरभऽ गेल छइथ। किछु बजाते नहि छइथ। बडड खोचियोन त हुं हा। हिरा पर कोनो भाि नहि। जेकर बुटी बुटी मिकइ छलइ, ओ एहनभऽ जाइत से पइि नहि रहल अइछ। लेकिन जे सामने देख रहल छी ओइ पर विसास त करहेकऽ परत। आब बेशी दिन नहि जीतीह। हाइकोटमे जल्दिया आब इनकर केशक नम्बर अइतइन, ताबइत तक ई नहि जी पेतीह।आशा जेहल जेतीह, सजोभऽ जेतइन एहन अपराध करतीह से सोचि मे किनको नहि आयल हेतइन। ईएह त छइ जीनि। पता नहि की की लिखाकऽ आयल छइथ।

आशा बचिसऽ खुब हंसमुख आ पढुआ छलीह। तखइया बेशी बेटीकऽ कालेज मे नामे टा लिखालि जाइ छलइ, रोज जयबाक पलिन नहि ये। ओइ मे जे गाम मे रहइ छलीह, उनकर त सोचिबो नहि कर । आशा बिदकऽ क कालेज मे नाम लिखेलह। रेनसऽ रोज जाइ छलीह। पास बना नेने रहइत, ताय बेशी पाइ नहि लगइ छलइन। डेरा भारालऽ क रहतइथ आ पढाइ करतइथ, से घरक स्थित नहि रहइन। किछु आर समाजक लडकी बचि सब सेहो

रेनसऽ जाइ। आशाक दुश्मन उनकर सुन्दरता आ गोलकी फेमकऽ शिमा रहइन। किछु लफुआ सब उनका रेन मे पीछा करयन। आशाकऽ बुझल छलइन जे ज्यो घर मे कहलखिन त कालेज गेनाई बंदभऽ जेतइन।ओहीलऽ क अपने जेना तेना सामना करय छलीह। बात किछयो छुपलइ अइछ। एकदिन उनकर गऊंआ सब बालकऽ ओइ बदमशाकिऽ पकडलक आ जईमकऽ थकुलिक। ओ बदमशा बडड हाथ पैर जोडलक त ओकरा रेलि पुलिसकऽ नहि सौपल गेलइ। किछु महिना त ओकर बाद शान्तिसऽ गुजरलइ। मुदा जखइन ओ बदमशाकिऽ घाि सब भरा गेलइ त ओ एकदिन फेर ओ रस्ताकऽ स्टेशन पर आशासऽ बदला लइ लेल किछु लोक लड्कऽ आइब गेल छल। अइ बातक खबर आशाकऽ दोसर लडकी सबसऽ पता लाइग गेलइन। आब केल की जाय। फोन फानकऽ कोनो जमाने नहि। पुलिसकऽ रेन मे रहबाक सेहो कोनो बेबसथा नहि। ओइ रेन मे किछु कुजरनी सब सेहो जाइ छल। ओ सब बालकऽ एक टा मुसलमानक पत्नि जाइ छलइ, ओकरासऽ नेहोराकऽ क ओकर बुका आशाकऽ पहिराालि गेल। गोलकी शिमा उताइडकऽ कोरा मे एकटा बचाकिऽ बइसालि गेल। किछयो आब चिन्ह नहि सकइ छल आशा के। उएह भेलइ। अगिला स्टेशन पर रेनकऽ भेकम्पकऽ क बदमशा सब रोकलकइ। आ सऊंसे रेन मे तकलकइ शिमालिी के। मुदा नहि ताईक पेलक। बडका अनहोनी होबऽ सऽ बइि गेलइ। आब आशाक कालेज गेनाई बंदभऽ गेलइन। अगिला शुि मे बियाहकऽ देल गेलइन। पढाइ छुइट गेलइन।

आशाकऽ घरबाला सरकारी नौकरी मे छलाह। एक टा बेटा सेहो भेलइन। आशा सब बासइडकऽ बचािकऽ पढबऽ मे लागल छलीह। विधाताकऽ ई मंजुर नचि। एक चदन उनकर बेटाकऽ एकटा बचािसऽ लडाईभऽ गेल छलइन। साझ मे ओ बचािकऽ बाप चकछु बदमाशकऽ लकऽ इनकर घर पर आइबकऽ बेटाकऽ मारऽ लगलइन। तखने आशाकऽ घरािला आचकससऽ अयलचथन। लाइट गुलभऽ गेल छलइ। मारा चपटी दुनु तरफसऽ भेल। लाइट आयल त देखल गेल जे ओइ बचािकऽ बापक माथसऽ शोचणत बहइ छल। अस्पताललऽ जायल गेलइ। दु चदनक बाद ओ मइड गेलइ। आब पुचलस आइबक आशाकऽ बर आ उनकर बेटाकऽ पकइड कलऽ जाय लगलइन। तखने आशा सामने अयलीह आ कहलचथन जे हम ओकरा मारने रचहयइ लाठी सं। लाठीकऽ जरा देचलयई आ राईखकऽ नाली मे बहा देचलयई। बर आ बेटाकऽ आंईखसँनोर बहअ लगलइन- ई गप्प सुइन क। पुचलस आशाकऽ पकइड कलऽ गेल। कोटथमे आशा ईएह बयान देलचथन।केश िलल। लोअर कोटथसऽ सजा सेहोभऽ गेलइन। ऐना चकअए केलीह आशा। सचाई छल जे घरािलाकऽ नौकरी छुइट जंइतइन आ बेटाक जीिन बबादभऽ जंइतइन। उनकर सबहक दोष अपना परलऽ क अपन जीिन अन्हारकऽ लेलीह। जे कचहयो जोरसऽ नचि बजलीह ओ चकनको जान मारतीन। कतउभऽ सकइ छइ। ऐना जेहल मे अपनाकऽ दकऽ घर पचािर लय अतेक त्याग की संभि छइ। आशाकऽ आंचख चकयो गोलकी िशमा हटाकऽ देखतइन तखइन ने बुझतइ जे कतेक ददथ ओ समेटने छइथ।

अंत (लघुकथा)

धनेश बर्चिसऽ लिता-पुजा छलाह। ओना उनकर गामोकऽ पाइनक असर छइ। लोक कहइ छइ जे ओइ गामक बची, दोसर गामक तिनकऽ जेबी मेलऽ क घुमई छइ। कतउ ककरो बेि देत ओ सब। धनेश ओहो मेसऽ गिला छलाह। ओना उनकर बाप कम्मे बयस मे मइड गेल छलथिन। बाबा सब खथिबथिदइ छलथिन। पाइकऽ कोनो चकत नहि छलइन। जखइन धनेश स्कुल मे पढई छलाह तखनेसऽ धुरफंदी मे लागल रहइ छलाह। बाबासँस्कुलक फीस लइ छलाह। बान बापक बची टुअर कहाइ छइ।ओ अइ टुअरकऽ आर मे पुअर ब्याज फंडसऽ फीसकऽ पैसा लइ छलाह। फेर बाबाक देल फीसक पाइसँमहाराजा होटल मे जाकऽ चांघारा खाई छलाह।एहन मुंह बनाकऽ मास्साहेब लग ठारभऽ जाइ छलाह जे ओ एप्लीकेशन देखते फीस माफकऽ दइ छलथिन।

जखइन स्कुलक बाद कालेज मे पढई लेल गेलाह त ओतउ उएह खेला। पढाइ छोड़ि सब काज मे उनका मोन लागइन। बाबा अन पाइन आ हसाबेसऽ पाइ सेहो दइ छलथिन। धनेशकऽ कालेज मे आइबकऽ पाईख चाकइल गेल छलइन। दोसर शहर छलइ। नचि चकयो चीन्ह बाला। खुइलकऽ मटरगश्ती करय छलाह। युवा चिसाथीकऽ िनाि मे सेहो ठार भेलाह। एकटा कागज मे झुटफुसकऽ सब जाइतक अलग अलग नम्बर चाखने छलाह आ

अपनाकऽ अपन जाइतक ोिटक ठेकेदार बइन गेल छलाह। िकछु लोक झासा मे आइब गेलइन। ोिटसऽ एक िदन पछने मोटकश पाइलऽ क बइस गेलाह। ईएह त उनकर योजना छलइन। बाबा जखइन ईएह हाल देखलिखन त उनकर िबबाह पुरा दान दहेजलऽ क करा देलिखन। जतेक पाइ देने रहिथन अखइन तक ओ दहेजकऽ रुपया मेसऽ काइटकऽ धनेशक मायकऽ पठा देलिखन।

आब धनेशक सब फुटानी हिा होबऽ लगलइन। युवा िवधायक ोिला इलेक्शन मे एकटा कैिन्डडेटक बाप िबहार सरकारकऽ बोडक ियरमैन छलइ। ओकरा पकइड धकइडकऽ पटना मे िकरानीकऽ नौकरीलऽ लेलाह। पछने अस्थायी छलइन नौकरी बाद मे परमानेटभऽ गेलइन। दरमाहा कम छलइन। कनिाया गामे रहइ छलिखन। एक टा बेटा आ बेटी सेहो भेलइन।

पटना मे पछने एकटा गऊंआ कतऽ रहलाह छह माह धइड।फेर एमहर उमहर िकराया मे। राजेन्द्र नगर मे एकटा िबधिा मउगी िकछु कमरा सब िकराया पर लगबइ छलाय। इनको पता लगलइन। ओ ओकर बरसाती मे िकराया पर शेयर मे घर लेलाह। कनिाया गाम मे हल्ला करिान पटना जाय लेल।उनका अलग घर निि होबाक बहाना बना कऽ रोईक देिथन। धनेश सब काज सोइि बुअइझकऽ करय छलाह। धीरे धीरे ओ बरसातीसऽ अलग कमरा मे अयलाह। फेर ओइ िबधिाकऽ बहरी कमरा मे रहअ लगलाह।

ओइ बाधिकऽ दु टा बेचये छलइ। धनेश ओकरा सबकऽ पढबऽ लगलाह। पाइ नहि लइ छलखिन। ऐनाकऽ क अपन विशास जमेला।ओहो मऊगी पढबऽ कऽ बदला मे इनका खेनाई देबऽ लगलइन। आबऽ धनेश बहरी घरसँभीतरका घर मे रहअ लगलाह। ओकर बेटी सब स्कुलसऽ कालेज मे आइब गेल छलइ। ओकरा सबकऽ सबटा बाहरबाला काज धनेश करऽ लगलाह। इमहर नौकरी मे उपरी आमदनी सेहो पुराभऽ रहल छलइन। सब ओकरा सब पर खर्चकरय छलाह।बाकी किरायेदार सब किछु किछु कामेट करयन।

आब बाधिकऽ मकानसऽ सब किरायेदारकऽ हटा देलाह। बीच मे कनिया एलखिन पटना त एहन ने परेशानीकऽ नाटक केलाह कि ओ घुरये गेलीह। कनिया बच्चा सब गामे मे रहअ लगलइन।इमहर अइ मौगीकऽ दुनु बेटी पारा पारी बिहार मेडिकल परीक्षा पासकऽ गेलइ।एकटा पटना आ दोसर राँची मेडिकल कालेज मे पढअ लगलइ। धनेशक मुंह मे अपन बचाकिऽ नामक जगह पर सदिखन बबीताजी आ सबीताजी नचइत रहइ छलइन।

बात धीरे धीरे पसरऽ लगलइ। सब कहइ जे ओ मऊगी धनेशकऽ पटाअकऽ अपन ऊल्लु सीधाकऽ रहल अइछ।ओकर संबंधी कहइ जे ई धनेश ओकरा मीठ मीठ बात मे फंसेने अइछ आ अतेकटा घरक मालिक बइनकऽ बइसल अइछ। धनेशक माथ पर त उएह

सब नहि छलइन। गाम चाकछु पाइ हर महीने पठा दइ छलथवन। गाम लोकक व्यंग्यपाणिक डरे गेनाई लगभग छोडइये देने छलाह।

बेटी समथाS गेल छलथवन। कका सब माल कS लडका तकलक। खखिथिखिजे भेलइ से धनेश देलथवन। अलगे अलग गामो मे रहलाह। बेटासS नखं ये जेका गप भेलइन। बेटीकS बाबाहक बाद घुअइडकS पटना अयलाह।गाम मे बाप माय मइड गेल छलथवन। बाट बखराभS गेल रहइन। चाकछु चाकछु बात पर भाइ सबसS सेहो झंझटभS गेलइन।

इमहर बबीताजी आ सबताजी दुनु डाक्टरभS गेल। ओकरो सबकS आब धनेशकS घर मे रहनाई नीक नचि लगइ।धनेश त अपन सब टा कमाइ ओकरे सबकS पढाइ चाखाई, घुमाई चाकराई मे गाँि िकल छलाह। बबीताजी एकटा डाक्टरसS बायाहकS क राि मे सेटलभS गेल छल। सबीताजी सरकारी अस्पताल बाहटा मे पोस्टेड छल। धनेश कतेक लोककS मुफ्त मे इलाज करा दइ छलथवन। एक चादन धनेशकS पता िललइन जे राजेन्द्र नगर िला मकान ओ सब बेि देलक। धनेशकS मकान छोडअ परलइन। चटायर केला पर चाकछु पाइ भेटलइन। बाचक सब पाइ त ओ पचलनेहे चाकाइल िकल छलाह। आब यक पश सामने छलइन- धनेश कतS जैताह।

धनेश घुरीकऽ गाम अयलाह। बंटािरा मे उनकर ह्सा मे घर नहि घरारी भेटल छलइन। जे कहु पाइ छलइन ओइसँएकटा छोट घर बनेलाह। उनकर नौकरी मे पेशन नहि छलइन। कहुनाकऽ घीिि तीरकऽ घर िलइ छलइन। बेटा सेहो बेरोजगार बइसल रहइ छलइन। दुनू बाप बेटा म मे खटबहस होइत रहइ छलइन। अहुना समय बितइ छलइन।

धनेश सुविधा भोगीभऽ गेल छलाह। ई जीिन जीबाक ओ आदी नहि छलाह। बडड जोरसँदुखहत पडलाह। इलाजक कमीसँमजथ बढइत गेलइन। बाद मे देखेला पर पटना रेफरकऽ देलकइन। लाईद पाइदकऽ पटना भती भेलाह। संयोगसँबबीताजीकऽ बदली पटनाभऽ गेल छलइ। ओ तुरंत पाईिट िडिथमे सपफ्ट केलकइन। मायकऽ खबर केलकइ। ओ हो सब रािसऽ अयलइन। दस दिनकऽ करीब अस्पताल मे रहलाह। ओतइ मृत्यु भेलइन आ ओकर सबहक देखरेख मे काजो ओतइ बेटा केलखन। जेकर पाइ तकरे जुइत ने।

दु दु टाकऽ डाक्टर बनेलाह आ ईलाजक अभाि मे धनेश मइड गेलाह।अपन योजना बनेलासऽ कहु नहि होअइ छइ। ऊपरिला जे अंत कानका लेल लखने अइ, ऊयाह होइत।

फैसला (लघुकथा)

बेर पहर काल बेल बाजल छलइ। ईकऽ भऽ सकइत अइछ। डाक्टर राधानीकऽ अखने तऽ ध्यान लागल रहइन। क्लीनिकसँएलाक बाद , नर्स िचन्तो थाकल थेन्हयाल रहइत छथ्थ। दाईयो नहि छलइन। अनमने भासिँगेट खोलइत छथ्थ।

ईकऽ चकिट पाहुन भऽ सकइत छथ्थ। जन्हयासँपी एन जी भऽ गेल छइ, ई गैस बालाकऽ झंझट खतम। नहि तऽ ओ, जखने सुतब, तखने आइत। बेटाकऽ स्कुलसँआबऽ मे अखइन समय छइ। अगल बगलसँबेशी अबरजात रखनेहे नहि छथ्थ। ओना डाक्टर सबहक संग ई ध्यकत छइ, जखने लोककऽ बुझा जेतइ जे ई डाक्टर छथ्थ- सबकऽ कछु ने कछु मंगनाया सलाह दइत रहु। सब लोके रोगी भऽ गेल छइ। मऊगी महाल मे तऽ आर हाल बेहाल छइ। मास्टर कुमारकऽ बेशी लोकसँहेम केम पसन्द नहि छइन। ओइसँराधानी ककरोसँहाय हेक्लोसँबेशी संबंध नहि रखने छथ्थ। भेलइन जे बेच्सनक नाली जामक कम्पलेन मास्टर कुमार केने छलथ्बन, भऽ सकइत छइ, जे उएह होइ?

महानगर मे ई बडका लीला छइ, आब तऽ राधानीकऽ सेहो आदत भऽ गेल छइन.........मेन गेट खोलऽ सऽ पहिने मैच्छक आइसँहुलकी ध्यउ। अइ मे कछु देखाई छइ?

केकर भीतर की ि इल रहल छइ सेकऽ जनकिया?

ई िहरा तऽ बकछु चकिन्हल जानल लगइत अइछ।

गेट खोलेलते देखइ छथि जे राजन ठार छथि।

आऊ आऊ राजन बाबु। कोना आयल? आइ कोन चकशसँसुर ज ऊगला अइछ?

राजन घर मे घुसला। सोफा पर धंईस कऽ बैसलाऽ ।

िहइ तऽ कलुयासँछलऊं। मूदा गरे नकि धडइ छलाय। आइ मौका लागल तऽ आइब गेलऊं।

अच्छा! मौकाकऽ तलाश मे छलऊं!

हं हं। आहाकऽ कोना बसरब।

से चकयैक? हमरा मे एहन की लागल अइछ जे आहा नहि बासरब?- मुस्कयाइत राधानी बजलीह।

जे आहा मे अइछ, से हमही जनहि छी।

अच्छा! अखनो बासरायल नहि।

राधानीकऽ मुस्कीसँराजनकऽ बुझा गेलइन जे आइ फेर गोटी लाल अइ।कतेक सोइि चहिइर कऽ तऽ आइ बेर पहर एलाह अइछ।गप्प सबसँपता िइल गेल छलइन जे मास्टर कुमार अखइन बंगलोरसँबाहर सेमनार मे गेल छथ। बचा स्कुल गेल छलइ, घुरऽ मे तीन घंटा बाकी छलइ। राजन अइ लब्धक लब्ध, समयक सदुपयोग करऽ िहइ छलाह। राधानीकऽ सब ज़बाब उनका हबयर झंडी लाइग रहल छलइन।

राधानी जल्दी जल्दी िहि बना कऽ देलखिन।

राजन उनका आर चकछु बनबऽ सँमना कऽ देलखिन।

आहा अतइ बइसु ने। अहीसँभेट करऽ एलऊं अइछ। आब खेनाई पीनाई के,कऽ पुछइया ?

की भेल? भूख पियास सब हेरा गेल?

आहा सामने रहब तऽ , हरेबे करतऽ ने।

हम तऽ सामनेसँजाइते छलऊं , भंसाघर मे जलखइ बनबइ लेल, अही तऽ रोईक देलऊं।आब सामने छी त कहइ छी एना ओना भऽ गेल।

कहैत कऽ ि ट दऽ उईठ कऽ रानी भंसाघर दिश जाय लगलीह।

राजन तखने सही मौका देख उनका आगुसँरोईक लेलखिन।

अच्छा बइसु। नहि किछु कहब!

रानी अपन भाि भंगिमा सऽ राजनकऽ ऊकसबइ छलखिन।

राजनकऽ भेलइन जे आरो देरी केनाई ठीक नहि। सब किछु उनकर साथ दऽ रहल छइन।असगर मे रानी दसो बरखक बाद भेटेलिह अइछ। कतेक कतेक राइत उनकर याद मे जगले बितेने छइथ।आइ सब बचकयौता पुरा कऽ लीह।

" आहा की सोि चिि िर मे पडल छी"- रानी बजलीह।

राज्ञानीकऽ सि ाील पर राजन सम्हडइत बजलाह- नञि च्चकछु।

थाकल बुझाई छी? आराम करब तऽ , ओइ घर मे पइड रहु।

परऽ कऽ तऽ मोन कऽ रहल अइछ, आहा संग दी तखइन ने?

अइ मे हम की संग देब? हऊआ पलंग अइछ। जा कऽ पइड रहु।

अहा पहुंि ा च्चदयह।

ि ालु।

राजन आब आगु बढऽ कऽ मोन बना लेने छलाह। ओ राज्ञानीकऽ ज़बाबकऽ आगु बढबाकऽ ईशारा बुझई छलाह।अइ बीि मे गप्पक दौरान राज्ञानीकऽ अस्तव्यस्त ि स्तसँउनकर अंग पत्यंग सेहो कखनो काल झलकी दऽ दइ छलइन।राजनकऽ बुझबा मे एलइन जे राज्ञानी आ ब्मास्टर कुमार दुनु व्यस्त लोक छच्थ आ एक दोसरा लेल इनका सबकऽ समय नञि छइन। राज्ञानी अपन दाम्पत्य जीि निसँसुखी नञि छइथ, तै कतेक...... च्चाफट दऽ रहल छच्थन।

जखने ओइ पलंगक लगऽ दुनु गोटे पहुंि लाह त राजन "मत ि को ि हान" जेका राज्ञानीकऽ हाथ पकइड लेलच्थन।

राधानी झट दं हाथ झाडलथ्रन। सखीसँकहलथ्रन- हम बुझइत रही जे आहा कतऽ जा रहल छी। कथी लेल आहा एलऊं अइछ।

सनाटा छा गेल छलाह। राजन कथी दुन सोिने छलाह, आ भऽ गेलइन तेसरे।

आहा आब दु ध्यानटक अंदर एतऽ सँरस्ता नाइप ध्यायह। नयि तऽ हमरा पुध्यसकऽ बजबऽ मे समय नयि लागत- राधानी बजलीह।

हमऽ आहाकऽ असली रप देखऽ िहइ छलऊं। अतेक बरखक बादो आहा मे बदलाि नयि भेल। जाऊ, अपन कन्याया बचि संग समय बाताऊ।अतऽ आहाक सब कायकलाप कैमराक ध्कॉध्रंथा मे आइब गेल हैत।

राजन स्तब्ध भऽ ठार छलाह। मौसम ठंडा रहला बादो पसीनासँतर-बतर भऽ गेल छलाह।

गरदन नीि केने लजाइत धीरेसँबजलाह- "ओ जे पध्नने भेल छलइ?ओइ मे अहुं शाम्मल रही।"

राधानी उनकर बातकऽ बीि मे कटइत बजलीह- हमरा होइत छलाय जे अखइन तक आहा ओकर िि ध्कयै नयि केलऊं।

बजइत हंफइत राधानी सोफा पर आइब बइस रहइ छथ्य।

पाछु - पाछु राजन सेहो सोफा पर बइसऽ लगलाह, ताबते फुंफकाडइत राधानी बजलीह-

खबरदार जे अतऽ कऽ कोनो चीज पर बइसऽ कऽ कोशश करब। आहा पुरख सब हमेशासँस्त्रीकऽ भोगक वस्तु बुझई छी। लक्लो पिपो कऽ कऽ एक बेर फंसा लेलऊं, फेर जखइन मोन ओकरासँहसिकऽ पुरा केलऊं। स्त्री कऽ एक गलतीकऽ भइड जीनि ओकर फल भोगबइत रहइ चाहयई।हम गलती केने छलऊं, ओ हम भोइग लेलऊं। हम मास्टर कुमारकऽ सेहो सब बात पचहनेहे बता देने छलयइन। तै ओइ दिनर मे नहि परब जे बातकऽ फईला कऽ हमर जीनि नकथकऽ देब। आब हम फैसला कऽ लेने छी जे आहाक सजा दी। बाजु सजा चाही? या हमर जीनिसँदूर रहब?

राजन कल जोइड कऽ माफी मंगलाह। ....आइकऽ बाद हम कखनयो नहि एहन गलती करब आ नहि आहाक जनगी मे आयब।

राजन गेट खोइल कऽ जाय लगलाह आ जाइत काल राधानीकऽ पैर सेहो छुअइत बजलाह- "ई बातकऽ अतइ कब मे दफ़न कऽ देल जाय। कैमरा चकाकथा सेहो डलीट कऽ देबइ? "

आहा चाकलु? हमरा जे करबाकऽ होइत, से कऽ लेब।

राजनकऽ गेलाकऽ बाद राधानीकऽ बुझेलइन जे बडका भारी बोझ उनकर माथा परसँउतइड गेलइन। बचािकऽ स्कुलसँघुरबा मे अखइन समय छलइ। ओना राधानी , मासेज कुमार बनलाकऽ

बाद आजाद ख्यालक बइन गेल छथ्य। जीनि जीबा मे कोनो बंधन नयि छइन। मास्टर कुमार तरफसँपुरा आजादी छइन। व्हस्की पीनाई उनका मास्टर कुमारे सखौने छथ्यन।"िइन तऽ पाइन छइ"- पहल बेर ई लाइन सुनऽ मे केना दन लागल छलइन। मेडकिल कालेज मे जे छौडी सब िइन पीबइ, ओकरा सबसं ई कै लग्घा दुरे रहइ छलीह। आब की ओहना लोक इनकोसँदुर रहइ छइन?ओ छोट शहर छलइ, ई महानगर छइ। देश- विदेशकऽ लोक छइ। नयि पीयऽ बाला बैकिडिथ्कहाइ छइ।

ओ दन मे कंक घर मे नयि करय छथ्य, तखनो उनका नयि रहल गेलइन। बार कैबनेट मेसँअपन पसंदीदा बाड नकाललीह आ बोतलक काकथ्खोललीह। आइ बान सोडा, बान आइस आ बान पाइनक, नीट पी रहल छलीह। कन्ठाको कंठ मे आइ नयि लाइग रहल छलइन।

दसो बरखसँओ अइ दनक इंतजार मे छलीह। राजन फेर एताह तऽ उनकासँकोना बाबटब। कही हल्ला गुल्ला नयि भऽ जाइ। स्तीकऽ िचते टा तऽ छइ, जई पर बाना कछु केने, कयो ढेपा फेक सकइ छइ। एतऽ तऽ उनकासँगलती भऽ गेल छलइन।बात मे फंईस कऽ ओ राजनकऽ देहसँखेलायकऽ आजादी दऽ देने छलथ्यन। बाद मे सब बुझेलइन। क्याक सुख, वीकि पर हािी भऽ गेल छलइन। ओना उनकर कयेक टा मेडकलक संगी बान्दास जीनि जी रहल अइछ। बायाह ओकरा सब लेल बेकारक " पिडा" छइ। शरीर की छइ? मासक लोथडे ने? अइ लेल कयैक अतेक पपंि? ईएह सब सोिइत, राबानी पैग पर पैग खीि रहल छथ्य। सामने शीशा मे िहरा देखा रहल छइन।

हम तऽ बच्चया नाटक खेल सकइ छी।

राजन केहन डराऽ गेल छलाह।

सटक सीताराम भऽ गेल छलइन।

कही डरक मारे पेट तऽ गील नहि भऽ गेल छलइन।

हा हा हा- नशा मे अपने हंसऽ लगलीह।

अपनेसँअपन पीठ ठोईक लेलीह।अपन सोिइत, हंसइत, मुस्कयाइत बाछान पर परऽ िइल गेलीह।माथ पर कोनो भार नहि छलइन, तै बाछान पर जाइते बान भऽ गेलइन।

ओ गक्ती की छलइ? राजनक िकर मे राबानी कोना एलीह? ओ इंजीनायर, ई डाक्टर, केना? की? भेलइ? बुझऽ लेल आहाकऽ चाछला इबहाससँगुजरऽ पडत ....

....

राजन आ राबानी एके शहर मे शुरआत मे रहइ छलीह। राजनक चाता चकरानी छलबबन आ राबानीकऽ चाता सरकारी पदाब्धकारी। चकरानीकऽ नौकरी बदली बला नहि, आ पदाब्धकारी सबकऽ चकछु चकछु बरखक बाद बदली होइत छलइन। ओइ शहर मे पढबाक सुविधा नीक छलइ, मूदा अब्धकारी आ चकरानीकऽ बीि दूरी बेशी छलइ। आपसी आन- जान आ मेल- जोल नहिये बराबर।

दसमी तक लडका-लडकीकऽ अलग स्कुल छलइ, लेबकन ग्यारहिसँकालेज मे संगे पढाइ होइ।दुनु गोटे एक दोसरकऽ नीक विदाथी रप मे नामसँजनहि छलीह। गक्सथकालेज ओइ शहर मे नहि रहइ। राजनकऽ दसमी मे नीक नम्मर आयल छलइन।

राधानी तऽ अपन स्कुलक टापर छलीह। कालेज मे आइब कऽ नीक दोस्ती भऽ गेल छलइन। टयुशन सेहो सब संगे पढई छलाह।दोस्ती कालेजे तक छलइन।

बारहीकऽ बाद राजन इंजीनियरिंग आ राधानी मेडिकलकऽ कोचिंग लेल पटना अलग अलग संस्थान मे जाइ गेलाह। गाहे-बगाहे भेट सेहो भऽ जाइन। राधानीकऽ तऽ पटना मेडिकल कॉलेज मे डाक्टरीकऽ पढाइ मे ,आर राजनकऽ टाटा मे इंजीनियरिंग मे नाम लिखा गेलइन।

सब अपन दुनिया मे व्यस्त छल। राजनकऽ थडर्थईयर मे खाकि लऽ कऽ धनिक बापक बेटीसँ बियाह करा देल गेलइन। राधानीकऽ परिवार ,ओ शहर छोड़ि कऽ कतउ आर फिल गेल छल।आब दुनु मे कोनो संपर्क नहि छलइन।

इंजीनियरिंगकऽ पढाइकऽ बाद राजन सरकारी नौकरीकऽ तैयारी गाम मे रही कऽ करऽ लगलाह।दु टा धीया पुता सेहो बेरोजगारी मे भऽ गेलइन। परीक्षा सब दइ छलाह , लेकिन सफलता नहि भेटलइन। इमहर पिता सेहो रिटायर कऽ गेल छलखिन। घरक जिम्मेदारी बइढ गेल छलइन। हारि कऽ बम्बइ जा कऽ प्राईवेट नौकरी करबाक फैसला केलाह।ईएह प्राईवेट नौकरी पहिने भेटई छलइन, तखइन नहि केलाह। आब कोनो नौकरी ताकऽ बहरेला।पछता रोटी खेने छलाह।

जखइन पटना मे, रेन मे बम्बइ जाइ लेल सीट पर बइसला तऽ देखइ छइथ जे सामने निश्चिन्त राधानी अपन घरबाला संग बइसल छलीह।गाम मे बेरोजगारीकऽ माइड झेललाकऽ कारण

राजनक देह झोकइड गेल छलइन। ओ बयससँबहुत बेशी लगइ छलाह।

इमहर राधानी एम बी बी एस, फेर एम डी कऽ कऽ नौकरी करइत रहलीह। एतेक गुणी लेल बर तकनाई आसान थोडबे छलइ।देरीसँबियाह भेलइन। बियाहक बाद बरक संग बम्बइ मे रहइत छलीह।

राजन तऽ देखते राधानीकऽ चिन्ह गेलथिन। राधानी इनका चेहरा जाइन बुइझ कऽ या अनजाने सं, तकबो नहि केलकीन। राजन इंतजारे करइत पहल दिनक रस्ता ताकतेलाह।अगिला दिन भोर मे हक्का फुक्का राधानीकऽ बरसँराजन गप्प शुरु कयलाह। तखइन संक्षेपे मे राधानी बजलीह। राजनकऽ बेरोजगारीकऽ बात बुझला पर, राधानीकऽ घरबाला अपन काडथदेलथिन आ नौकरी तकबा मे मददकऽ भरोसा देलथिन। राधानीकऽ घरबाला अपने पाइवेट कालेजक पढल इंजीनियर छलाह, सरकारी कालेज मे उनका एडमिशन नहि भेल छलइन। राजन सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज मे पढलाक बादो नौकरी नहि भेटबाक कारण उनका सहानुभूति छलइन।

बाद मे राधानी आ उनकर घरबालाकऽ सहयोगसँएकटा नौकरी राजनकऽ सेहो भेटलइन। राधानी अपने डाक्टर छलीह आ ओतइ एकटा पाइवेट अस्पताल मे नौकरी शुरु कऽ देने छलीह।

राजनकऽ अपन बच्चो बम्बइ मे नहि छलइन, तै ओ पाबइन तेहार आ छुटी मे राधानी कतऽ जाइत अबइत छलाह।

अच्छना एक द्धदन बेर पहर ओ राद्मानी कतऽ गेल छलाह। ओतऽ गप्प सप्प, हंसी -मजाक कद्धते ओ कखइन आगु बइढ गेलाह........ राद्मानी नद्धि बुझलीह........राजनकऽ तऽ सोिल छलइन...... राद्मानी पर अपन शारीद्धक बल शौष देखबइत ओ मयादाकऽ सीमा रेखा तोइड लेलाह। ओना ओइ द्धदन कतउ असहमद्धत नद्धि छलइ। द्धविाद्धहत राजन, बहुत द्धदनसँस्त्रीकऽ संसगद्धसँदुर छलाह, आइ मौका भेटला पर राद्मानीकऽ संग सहिास कऽ लेने छलाह।

द्धकछु द्धदनक बाद राद्मानीकऽ बरक बदली भऽ गेलइन। ओ सब गोहाटी िइल गेल छलाह। राजनकऽ ओइ द्धदनक बाद राद्मानीसँकद्धहयो भेट नद्धि भेल छलइन।एक दु बेर िहबो केलाह- जाइ लेल, लेद्धकन नद्धि गेल भेलइन........कारण जे भी हो।

राद्मानी अइ घटनासँबाद मे दुखी छलीह। ओ अइ लेल अपनोकऽ दोषी मानद्धि छलीह। उनका होइन जे द्मास्टर कुमारकऽ द्धवशासकऽ ओ तोइड देलद्धखन।ऊपरसँजे फेर राजन एताह, तऽ कोना कऽ सामना करबइन।

ओ बम्बइकऽ पाइन नद्धि सुट केलाक बहाना बना कऽ अपने दुद्धखताई होबाक नाटक केलीह। फेर हाद्ध कऽ द्मास्टर कुमार दोसर नौकरी गोहाटी मे तकलाह।ओतऽ ओ सब द्धान बतौने िइल गेलीह।

राजन आब व्यद्धिस्थत भऽ गेल छलाह। कद्माया बचािक संग बम्बइ मे रहऽ लागल छलाह मूदा उनकर माथ पर राद्मानी निइत छलद्धखन।

राजनकऽ जखने मौका लगइन, ओ इनकर सबहक पता करइत छलाह। थोडबे चद्दन पच्छने पता लगलइन जे ई सब आब बंगलोर मे छइथ।

राजन बंगलोरकऽ आफ्कसयल काज अब्बते, ओतऽ पहुंि गेलाह। चकछु ढेकाहारी कऽ कऽ इनकर सबहक घरक पता जाकाइल लेलाह।ओकर बाद ऊयाह बेर पहर पहुंि ल छलाह। उनका बुझले नचि छलइन जे राचानी " फैसला" लऽ लेने छच्य। अपन गलतीकऽ अपने सुधार राचानी कऽ कऽ चाचि न सुइत रहलीह।

आत्मग्लानि (लघुकथा)

रंजीत नारायण, गंगा अपार्टमेंट आर डब्ल्यू एकऽ प्रेसीडेंट छथि। रिटायर भेलाक बाद अपन सब उर्जा अपार्टमेंटकऽ भलाई मे लगाबैत रहल छलाह। इनका अइ सोसायटी मे एलाक बाद सोसायटीकऽ खर्च तिहाई भऽ गेल छइ, आर सुविधा दुगुना। सब अपार्टमेंट मे रहनिहार इनका या तऽ प्रेसीडेंट साहब कहइ छइन या मास्टर आर एन।ई दुनु संबोधन मे गदगद रहइ छथि। कुकुरमुत्ता जका भइड़ रहल दिल्ली मे नव बनायल ई हाऊसिंग सोसायटी आ अकर आफिस बाहरी लोकसब सगरे भेटा जेताह।सब प्रेसिडेंट छथि। आइनसँ भरल रहताह सब। घर मे कनिया बच्चा सब टेडइत नहि रहइत छइन, अतऽ सोसायटीकऽ आफिस मे तीसमार खा अपनाकऽ बुझइत रहताह।अनेरोकऽ कनहा उचका उचका कऽ चलइत रहताह। सोसायटीकऽ गेटसँबाहर जाइते सुटक बिल्ली भऽ जाइ छइथ। ई उनका बुझले नहि छइन जे इनकर सबहक काजवाली सब टा भेद खोइल देने छइन।अकरा कतऽ कऽ गप ओकरा करऽ मे ई दाई सब पारंगत अइछ।

मास्टर आर एन , अइ सबसँअलग अपनाकऽ बुझई छथि।एक दिन सोसायटीकऽ आफिस मे केयरटेकर लग कोनो काजक सिलसिला मे गेल छलाह। ओतऽ पहिलेनेसँएकटा व्यक्ति किछु सोसायटीकऽ फार्म भरइत छल।

केयरटेकर कहलकइन-

ई ब्रास्टर ब्राक्चर राय छथ्थि। २०१ मे एलाह अइछ।

२०१ तऽ ब्रास्टर कुंरिकऽ छइन?

हँ। ई चकराया मे एलाह अइछ।

ब्रास्टर आर एनकऽ तऽ ब्रास्टर ब्राक्चरकऽ देखते जेना साप सुंईघ गेलइन। एकदमसँसकपका गेलाह।

आन कोई रब्बतइ त केयरटेकरकऽ ब्रादेश दइतथ्थिन की- ई फामथ भराऊ, एना ब्रास्टर कुंरिसँएच्कडेक्टिट ब्रायउन, इनकासँअंडरटेच्कंग ब्रायह, एना आऊ, एना जाऊ, ओतऽ गाडी पाकथ्कर, समय पर मेटेनेसकऽ पाइ ब्रयउ......... फला चीला। केयरटेकर तऽ मजा लइ लेल इनका पचबयि करेलक। अतऽ तऽ ओ भेलइ जकर ओकरा आशा नथ्थि छलइ।

अइ सोसायटी की, सब हाऊच्सांग सोसायटी मे चकरायेदारकऽ दोयम दजा देल जाइ छइ। आन मेम्बार तऽ अइ बुच्चयाकऽ फुईस बाला पेच्सडेटकऽ मोजर दइ नथ्थि छइन, ई नबका चकरायेदार पर इनका सबकऽ छजई छइन। नब लोककऽ तऽ ई सब ई कर आ ई नथ्थि कर, सुना कऽ पका दइ छथ्थिन।

ब्राक्चर चकछु बजलाह नथ्थि, लेच्कन केयरटेकरकऽ थाह लाइग गेल छलइ जे चकछु तऽ चकछु झोल छइ।

मास्टर आर एन ािपकेसँओतऽ सँ भाकइल रहलाह। मास्टरकऽ सेहो भेलइन जे िलु अपनलोक अतऽ सोसायटी मे पहलिले बहिन भेट गेलाह, ई नीक संयोग छइ।

मास्टर आर एन सोसायटीकऽ आफिससँसीधा घर घुरलाह। आन बहिन तऽ इमहर ओमहर राउंड मारलाकऽ बादयअबइ छलाह। इनका डर सतबइ लगलइन जे कही ई मास्टर सबकऽ सचाई ने बता दइ। अतुका सब इज्जत एके मिनट नहि लगतइ, छु जेका उड़िया जाइत।

बेिनी मे घर मे टहलऽ लगलाह। कनियाकऽ अइ परेशानीकऽ कारण पुछला पर शुरु मे तऽ नहि किछु बतेलखिन लेकिन बाद मे जोर देला पर मास्टरकऽ अइ सोसायटी मे रहअ बाला बात कहिये देलखिन।

कनियायो परेशान जे आब की हेतइ, सबकऽ असलियइत ई मास्टर बतेबे करतइ। ई जाइन बुझ्झ कऽ अइ सोसायटी मे आयल अइछ। ई तऽ किरायेदार अइछ, कतउ रही सकइ छलाय।ई बदला लेबाक इरादासँआयल अइछ।

आइकऽ बाद मास्टर आर एन आ उनकर कनियाकऽ सोसायटी मे निकलनाई कम भऽ गेलइन।

महीना बितइत बितइत एक बहिन सब देख रहल अइछ जे मास्टर आर एनकऽ समान रक पर लदा रहल छलइन।ओ किनको अपन पता नहि देलखिन आ ओतऽ सँकतउ आर शिफ्ट भऽ गेलाह।

बाद मे सोसायटी बालाकऽ पता लिलइ जे ब्मास्टर आर एन अपन फ्लैट सेहो बेि लेलाह अइछ।सब लेल ई एकटा रहस्य छलइ, च्मायि केयरटेकर के।ओकर अनुभि आईख, ब्मास्टर आर एनकऽ ओइ च्द्नक उतरल िहरा बडड च्कछु कच्ह देने रहइ।

च्मजासा सबकऽ ई बुझबाकऽ लेल लागल छलइ जे एहन " कारण " आच्ब्रर की छइ?

रंजीत एकटा सामान्य नौकरी करय छलाह। उनकर कच्मया तीन बच्हन आ एक भाइ छलच्ब्रन। ससुरकऽ मृत्यु भऽ गेल छलइन। रंजीतकऽ सार संजीि बनारस च्हन्दू च्वशच्वदालय मे पढइ छलाह।

एक बेर संजीि अपन गाम छुटी मे गेल छलाह। ओतऽ एकटा पुश्तैनी जमीनकऽ लऽ कऽ दोसर टोलक लोकसँच्वि भेलइ। ओइ लडाई मे दुनु पक्क लोक जमा छल। ओइ पक्क एक गोटे संजीि पर गोली िला देलकइन। मौके पर संजीिक मृत्यु भऽ गेलइन। संजीिकऽ च्पता पच्हनेहे स्िगथलोक जा िुकिल छलच्ब्रन। ई जािन बचािकऽ लहाश देख कऽ संजीिक बाबाक बुढ भाइ दलपच्त रायकऽ नच्ि रहल गेलइन।

ओ अपन लायसेसी बंदूक उठेलाह आ संजीि पर गोली िलबऽ बालाकऽ ओतइ ढेर कऽ देलाह।दु लोककऽ सरेआम हत्याकऽ खबर आइग जेका िर च्दश फैल गेलइ। थाना पुच्मस एलइ ।दलपच्त राय आ उनकर घरक सब पुरख सदस्यकऽ पकइड कऽ लऽ गेलइ। ओइ पक्क जे मारने रहइ, ओ तऽ मइड गेल छल।तै उमहरसँआर च्कयो नच्ि जेहल गेलइ।

संजीि आ उनकर दुनु साढु सपिरवािर अइ दुखक घडी मे ढाढस देबइ लेल पहुंि ल छलाह।ई लडाई संजीिकऽ लऽ कऽ भेल रहइ आ ओकर मृत्युकऽ बदला लइ लेल दलपि राय बुढ भेलाक बादो ई कदम उठेलाह। उनका लाख कहलाकऽ बाि जुदो पुिलस घरक सब पुरख सदस्यकऽ नाम केश मे दऽ देने रहइ, कारण सीधा छलइ- दोसर पक पभाि शाली छलइ आ उपरसँपुिलसकऽ पाइ सेहो िढा देने छलइ।

शाि कर्मकऽ बाद ई सिाल उठलइ जे केसक खिि आ दलपि रायकऽ आिशतक देखरेख कोना होइ। संजीिक मा कहलिखन जे उनके बेटा लऽ कऽ सब फसाद भेल छइ आ बेटा परलोक िईले गेल अइछ।हम ई सब भार ओकर आत्माक शािन्त लेल उठायब।गामक स्कुलकऽ जमीन सेहो संजीिक माय देबऽ िाहइ छलिखन। उनकर बेटी सबकऽ आब संपइतक लोभ भऽ गेल छलइन।ओ सब अपन मायकऽ िदमाग मे बइसा देलिखन िक स्कुलकऽ जमीन देला पर ओतऽ अनेर आ लोकक अडडा भऽ जेतइ। आहा िकछु आर सोिि, भाइकऽ नामसँसैह कऽ देल जतइन। अिलना स्कुलक जमीन देबाक पस्तािि टरका देल गेलइ।

ओकर बाद संजीिक खेतक फसल दलपि रायकऽ घरकऽ लोककऽ दऽ देल जाइ छलइन। सब सामान्य िइल रहल छलइ। सब जेहल गेल लोकक जमानत लेल बडका िकील राखल गेल छलइ। लोअर कोटसँतऽ जमानत निि भेटलइ, लेिकन हाइकोटसँदु बरखक बाद िकछु लोककऽ जमानत भेलइ। अइ सब कोटिक दौर बरहा आ दलपि रायकऽ आिशत सबहक खििथ

संजीकि माय अपन दऽ रहल छलखिन।

जानि बेटाकऽ मायकऽ रहैते गुजरलाकऽ शोकसँबडका दुख किछु नहि होइ छइ। संजीकिऽ माय आब बेटी सबहक संग रहइ छलीह।ओ इकलौता बेटाकऽ याद मे गाम मे किछु करऽ चाहइत छलीह। बहुत सोचि विचारि केलाक बाद महादेव मंदिर बनबऽ चाहित केलीह। उनकर ई आकांक्षा सुइन कऽ तीनु बेटी एहन ने जाल बुनऽ लगलइन जे सब पाइ इमहर आमहर होबऽ लगलइन।दोसर गामक पुश्तैनी जमीन बेचि कऽ जहा ककरो कहलखिन कि जमाय ओकरा भडका देलखिन।नहिये मंदिर बनबऽ देलकइन सब।किछु बेटाक याद मे करबाक विचारि ओ सोचिते रही गेलीह।

दु बरख बीतइत बीतइत संजीकि माय चिंता दुंखे एकदिन रंजीतक कतऽ रहलाक कम मे मइड गेलखिन।ओना गामक लोककऽ उनकर मृत्यु पर संदेह छइ।

तीनु बहिन अपन जमा भेलीह आ उनकर शाति हमदार मे कऽ दइ गेलखिन। मूंहछुआन गाम मे खबर भऽ गेल छलइ। आधासँबेशी लोक तं जेहल मे छलइ, नहि किओ आइब सकलइन।

आब तीनु साढुकऽ केस परक खर्चिफालतू बुझा रहल छलइन। ओना ई पाइ उनका सबकऽ अपनासँदेबऽ नहि पडइ छलइन। आब तऽ सासुरोकऽ संपइत उनका सबकऽ अपन बुझाय लागल छलइन।

सब साढु मे बुझबाहार रंजीत छलाह। ओ दलपचा रायकऽ घरक लोकसँसेहो संबंध रखने छलाह। आन जान होइत रहइत छलइन।

अही सब मे एक गोटे इनका लग संजीकि ब्हससाकऽ गामक घरारीसँलऽ कऽ सब संपइत ब्मखबइकऽ आफर देलकइन। जमीन खरीदऽ बाला आर कोई नचि छलाह, ई छलाह उएह लोक, ब्मनकर बेटा संजीकि हत्या केने छलइन।

ई बात दलपचा रायकऽ घरकऽ लोककऽ सेहो पता लगलइ। ओ सब रंजीत आ उनकर कचायाकऽ ओकरा बेिऽ सँमना केलचवन। रंजीत बदला मे बहुत रास पाइ मंगलचवन। दलपचा राय त अपने जेहल मे छलाह।ओतेक पाइ कतऽ सँदइतचथन।

पाइकऽ लोभ मे तीनु साढु आ उनकर कचाया सब चाल कऽ ओइ पक्कऽ सब संपइत रचमस्टरी कऽ देलकइ।

रंजीत आ दलपचा रायकऽ पचिरकऽ बीि खुब झगडा दन भेलइन।

आहाकऽ हाथ नचि कापल ई हत्यारा सबकऽ रचमसरी करऽ मे?

हमर सम्पइत! जे मोन से करब!

अइ खानदानक संपइत छइ। आहाक बाप नचि अरजने छथ्य।

आहा सब बाप पर नचि जाऊ।हम आहा सबकऽ देखा देब।

हं हं । कर ने, जे मोन करय।

जेहलसँसबकऽ ब्लाकलऽ ब्दयउ। आहाकऽ टपअ नचि देब।

....

अच्छना राचं बेटखऊंकी खुब भेलइन।

रंजीत आ दुनु साढु ओकरा सब के, सब च्माख देलब्वन।ओ दुनु साढु अइ मुफ्तउआ पाइकऽ उडा लेलक। आइ तक ककरो रहलइया? रंजीत बुच्चयार छलाह, ओ ई अपाटथेट कीनलाह आ सम्मान्वत लोक जेका अतऽ रहअ लगलाह।आबऽ उनका काजे कोन जे, सासुर जेताह।

आब दलपच्चा रायकऽ पच्चा रिकऽ खाय पीयकऽ कष होबऽ लगलइन। रंजीत ओइ पाइसँसोसायटी मे घर कीन लेलाह। सब संपकथसासुरसँतोइड लेलाह। दलपच्चा रायकऽ दुःखसँजेहल मे ही मृत्यु भऽ गेलइन। रंजीत आब ब्मास्टर आर एन भऽ गेल छच्चा।

ऊयाह दलपच्चा रायकऽ पोता ब्माच्छर राय छच्चा। ओ तऽ अंाके अइ सोसायटी मे च्कराया मे घर लऽ लेलाह।

रजीत नारायण आ उनकर कन्मयाकऽ आत्मग्लाच्मा भऽ रहल छइन। ओ सब अपने बुझई छच्चा जे कतेक ब्मकृष काज करय गेलाह अइछ। मरल भाइकऽ संपइत ओकरे दुश्मनकऽ हाथ बेबिे नचि केलाह, मायक देल बनिकऽ सेहो नचि ब्माभेला। ब्माच्छरक आंईख उनका सबकऽ ब्वहाडइ छलइन। ओकरासँआंईख

मालबऽ मे एक टा गच्छा नहि बाहिइन।

कहल गेल छइ-

बाप बडा न भैया, सबसे बडा रपैया।

रपैया तऽ रंजीत नारायणकऽ भऽ गेलइन लेकिन मारूरक आंईखक सोझा उनका ठार नहि भेल जाइ छइन। ओकर आंईख जेना पुछइ छइन-

संजीकिऽ मौतक बदला लेल आहा की केलयई?

दलपच्छा रायकऽ मृत्युकऽ जिम्मेदारकऽ छइ?

सासक बनिकऽ की भेल?

ई आत्मग्लाािकऽ कारण रंजीत नारायणकऽ एक एक दिन गंगा अपाटमेटट मे भारी लागऽ लगलइन। सुतली राइत संजीकि आत्मा आबऽ लगलइन। ई सब मारूरक अतऽ एलाकऽ बाद भेलइन। अइसँबिबाक एके टा उपाय बालि छलइन- एहन जगह िइल जाइ, जतऽ मारूरक सोझा सोझी नहि होबक परइन।

पहले तऽ मास्टर कुंरिसँपयास केलाह जे ओ किरायेदारकऽ हटा दइ। ओ तैयार नहि भेलइन।

आब कोनो उपाय नहि देख, रंजीत नारायण कतउ आर िरा कऽ बाकी जीनि बीतबऽ िइल गेलाह।

इनका ई बुझले नहि छइन जे संजीकि भूत इनका सब जगह अछैना चहाडइत रहतइन।भाइकऽ जमीनक अतेक स्नेह छलइ जे ओ जाना दऽ देलक आ बच्चनकऽ देखू ओ मच्छलकाइन होइते हत्याराकऽ हाथे कबाला कऽ देलक। कतऽ चाचि संजीकि आत्मा होबऽ देतइन।

ओमहर बाबूरकऽ जखइन रंजीत नारायणकऽ फ्लैट बेि कऽ िइल जेबाक पता लगलइन, तऽ उनका चिंता भेलइन। बाबूर तऽ नब जबानाकऽ लोक छथि, बनका नहि ई सब अतेक बात बुझल छलइन। आ चकछु उडन्तु सुननेहो छलाह तऽ ओ पूिगहसँअपनाकऽ अलग रखने छलाह।

बाबूर दु िइर बन रंजीत नारायण लेल चिंतित रहलाह, फेर समयक डेग मे बढइत,सब बसइड कऽ आगु बनगी बढा लेलाह।

खेलौना (लघुकथा)

जई बेर गाम जाऊ, खेलौना टपककये जाइत। हमरा आब ओ सोहाइ नहि अइछ। आइब कऽ बइस रहत, आ तखइन तक बइसल रहत.......जाबइत किछु देबइ नहि।

कयेक बेर त दलान पर अखरे िकी पर नाधंग सुईतायो जाइत।

देला परलो, जाय काल मे दु बेर पुछत, जे फला रेनसँजायब ने?

हम कहबइ हं, तखने मुस्कयाइत धीरे धीरे टुघडइत बिदा होइत।

कोन काज छलइ खेलौनाकऽ आबऽ के। िलल जाइ ने छइ, आंईखसँसुझाई नहि छइ, तखनो एके करत। आंईख मे मोतियाबिन भेल छइ। एक आंईखक आपरेशन तऽ " धरान " मे जा कऽ करा आयल। दोसर आंईख मे तइया मोतियाबिन पाकल नहि छलइ, तै नहि केलकइ। ईहो अिरजक बात- दुनियाकऽ लोक तऽ भारत मे अबइत अइछ, ईलाजक लेल। आ अतऽ देखू गामक गाम " धरान " , नेपाल जा रहल अइछ। ओतुका बेबसथा कहादुन बडड बढ़िया छइ। भीड उमडल रहइत छइ।बेशी अपने देशक लोक रहइत छइ। ऊपरसँरहबाक, खेबा-पीबाक आ मंगनाये मे िशमा सेहो दइ छइ। कतऽ सँई सब होइ छइ। अतऽ कहइ लेल अपन सरकार, आ इलाजक कोनो इंतजाम नहि।

खेलौनाकऽ जइया देह मे हुब्बा छलइ, बडका नेता बनहि छल। अपन समाज मे ओकर बात अंतिम होइ छलइ। सबनको पर हाथ

उठबो मे ओकरा सोिऽ कऽ नचि पडइ।सब कहइ- अकर हाथ छुटल छइ।ई हाथ एकचदन मे नचि छुटलइ। अकर शुरआत रामजीनि चसंह कतऽ सँभेल छइ।

रामजीनि चसह कलामी लोक छलाह। गाम मे सबसं बेशी गाछी बारछी छलइन। अही गाछी बाटे सब सोलकन चदशा- मैदान लेल सरेह मे जाइ छलाय। जे कनी तरी चमारी की केलकइन, ओकर बाध मे जेबाक रस्ता बन भऽ जाइ छलइ। गाम मे पहीने उनके धनरोपनी होइन, ओकर बाद चकनको खेत मे हाथ लगइ। ओचहना कटनीकऽ समय मे सेहो होइ।उनकर खेत मे खेलौनाकऽ महीस चकछु जजात चमयान कऽ देने रहइन।अइ लऽ कऽ खेलौनासँरामजीनि चसंहकऽ बेटाकऽ बहस भेलइन। ओइ पर तमसा कऽ दु हाथ रामजीनि चसंहकऽ बेटा , खेलौना पर िला देलचखन। ओतइ खेलौनाकऽ संघचाया, ओकरे टोलक रमरचाया सेहो घास गढई छल।रमरचाया दौरल एलइ खेलौनाकऽ बिबइ लेल। आब की छलइ, रमरचायाकऽ देखते, खेलौनाकऽ की जाने की भेलइ। पचहने तऽ ि़पिप माइड खा लेने छल।बात खत्मे जेका छलइ। ओकर महीस जजात चमयान केलकइ, तऽ ओकर जुमाना मे माइड खेनाई बनचि छलइ।ई पाठ ओ बच्चिसँपढने छल। लेचकन ओइ चदन तऽ दोसरे गह लग्न रहइ। खेलौनाकऽ हाथ मे महीस िरबऽ लेल छऊंकी छलइ।ओ सटासट िइर छऊंकी, रामजीनि चसंहकऽ बेटा पर ससाइड देलकइ। चिकरइत रामजीनि चसंहकऽ बेटा परेलाह।उनकर चिकरनाई पर उपरसँरमरचायाकऽ हंसी छुइट गेलइ।

ओ पच्छले बेर च्यसयान बाबु भैय्याकऽ च्यटाईकऽ बाद च्यियेनाई सुनने छलइ। ओकर समाज मे तऽ दस- बीस छऊंकी खेलाकऽ बाद कनी मनी आिज च्याकलइ छलइ। अतऽ तऽ एके छऊंकी पर छटपटाय लागल। कथीकऽ मरद हइ, से नच्यि जाइन।

खेलौनाकऽ बाप हमरा कतऽ दौरल आयल छलइ।पर - पंियती भेलइ। सिलि ईएह छलइ- पच्छने हाथकऽ उठेलक?

जमाना बदइल गेल छलइ। खेलौनाकऽ समाज मे कै टा लाठी भऽ गेल छलइ। आब गच्ली सहीकऽ फरीछौता हुिअ लागल छलइ। एकतरफे फैसला नच्यि होइ, िहे च्यकयो होइस।

अही आधार पर खेलौना बाइि गेल। माफी माइग कऽ छुइट गेल।

आब ओकरा रामजीिन च्यंह बाला गटीसँतरऊका दुश्मनी भऽ गेल छलइ। ओना गामक हीरो ओ भऽ गेल छल। आब च्यकनको मजाल नच्यि जे ककरो पीट दैस।खेलौना अगल बगल गाम मे आब पंिइती मे जाय लागल छलाय। सब ओकर च्यिन्ह लागल छलइ।

अइ माइड बाला घटनाकऽ बाद रमरच्याया जे नैहर ओच्छना मोन बदलऽ आयल छलाय, अतइकऽ रही गेल। खेलौनाकऽ संग ओ रहअ लागल।कऽ ककरा रखलकइ, से नच्यि फुजलइ। ओना कहऽ बाला ईहो कहइ छइ जे खेलौनाकऽ ई रामजीिन च्यंहकऽ बेटाकऽ मारऽ बाला करेज देख कऽ , रमरच्याया अपनाकऽ ओकरा च्याहुछ देलकइ।

ओकर बर, ब्यादागरी लेल एलइ तं गऊंआ सब बेलगा देलकइ।ई रमरच्नायाकऽ सब बाझ बुझई छलइ, ओकरासँ ाइर टा बेटा भेलइ खेलौना के।

रमरच्नायाकऽ सोभा एहन छलइ जे नञि अपने साऊस तर रहल आ नञि पुतउहे सब ओकरा संग रहलइ। दु टा बेटा डडइरि करय छइ आ एकटा घरभुजाकऽ दोकान खोलने छइ। िाचम जे सबसं बेशी पढने रहइ ओ एकटा चिरान - ब्माल मे मुंशी छइ। सब अलगा-अलगी छइ। जाबइत रमरच्नाया जीबइत छलइ, खेलौनाकऽ नञि कोनो च्चकत छलइ।ओ च्चकछु ने च्चकछु कमाइये लइत छल। ऊपरसँबकरी पोसने छल, मूंजक डच्नाया बीनञि छल,एकटा माल सबच्चना पोसबे केलक आ ऊपरसँरोपनी- कटनी मे काज भेच्चये जाइ छलइ।

रमरच्नायाकऽ कोन बेमारी भेलइ से नञि जाइन........दसे च्चनक जाड बोखार मे ओ िइल गेल। खेलौना सोिते रही गेल, पाईिट मे नच्लये देखा सकलइ ओकरा। सरकारी मे देखेबा मे भइड भइड च्चन लाइग जाइ छलइ। तखनो खेलौना लऽ जाइ ओकरा।कयेक बेर तऽ रमरच्नाया अपने ककरो दोसराइत मे लऽ कऽ िइल जाइ छलइ। नञि बिबाक छलइ, तै नञि बिलइ रमरच्नाया।

गरीब गुरबाकऽ कच्लयो बडका बीमारी थोडबे होइ छइ? बडका बीमारी ओ भेल , जकर ईलाज मंहग! बीमारीकऽ पता तऽ जािसँहोइ छइ। जतेक पैभ बीमारी, ओकर जाि ओतेक मंहग। गरीब लोक तऽ डागदरेसँने देखाइत, जाि ओकर बुतासँबाहरक गप होइ छइ। उएह भेलइ रमरच्नाया संग। डागदरसँतऽ खेलौना

देखेलकइ, मूदा जाि नचि करा सकलकइ। कराईयो लइतइ त की चक्वली बम्बइ ओ लऽ जा सचकतइ। ई जे मोन मे अफसोस होइतइ, ओइसँनीक रमरचाया िचलये गेल।

खेलौना काज केनाई रमरचायाकऽ जीबाते छोच्छ देने छल। आब खेलौनाकऽ बेटा सब कतऽ खेबाक पारी लागल छइ।

भोजन तऽ दुनु साझ भेट जाइ छइ। ि्न-तमाकुकऽ ओकरा तलब छइ। ओइ मे चक्कदारी भऽ गेल छइ। देह आब िलइ नचि छइ। बेटा सब खेनाईकऽ अलाि चकछु देबइ लेल तैयार नचि छइ। ओना सरकारी ललका काडथ्ओकरा बनल छइ। ओइ पर िाऊर, गहुम सब भेटई छइ। जकरा मे रहइ छइ, ऊयाह बेटा कोटा उठबइ छइ। सरकारक सौ चक्ना काज करौचाहार मे खेलौनाकऽ नाम सेहो छइ। सरकारी पोखइडकऽ साफ-सफाई मे िक बइन गेल छलइ। आब बस ओकर एकाउंट मे अबइये बला छलइ चक कोनो मूंहझौसा कलक्टरकऽ स्थाकाइत कऽ देलकइ। आब इन्कािईरी बइसल छइ। पाइ फईस गेलइ।तै कनीक चक्कदारी मे अइछ।

हम सोिऽ लगलऊं। कोन पाइ फंसलइ? अकरा िलल तऽ जाइ नचि छइ। जन बचाहार मे नाम छइ? पोखइड मे कोनो काज भेले नचि छइ। आत्मचिशास देखू अकर- देर सबेर पाइ भेटबे करतइ। बस ताबइत ि्न तमाकु लेल चकछु िाही।

खेलौना बाईज रहल छल-

हम आहा कतऽ छोच्छ कऽ दोसर घर नचि धेलऊं।अतउ आब पच्छने बाला िहििही नचि छइ। पच्छने कतेक तरहक काज

होइ। माच्लकक ऽ अपन नौकरी नचियो छलइन तइयो दु लोकक ऽ रोजगार दइ छलच्चन। आहा सब पईढ च्लख क ऽ हाच्कम भ ऽ गेलऊं, लेच्कन ककरो रोजगार नचि द ऽ पेलऊं। कथीक ऽ हाच्कम?

हम सोिलऊं जे कतेक अकर उपदेश सुनुं। हमरे दलान पर बइस क ऽ हमरे कही रहल अइछ जे पच्लका िहििही आब एत ऽ नचि छइ। कोनो जन बच्नहार नचि खइट रहल अइछ। सब त ऽ मनखब पर द ऽ देल छइ।क ऽ खटतइ। जन ऽ क मजुरी ततेक ने भ ऽ गेल छइ, जेक ऽ सकताह खेती करबाि मे।

हम कहच्लयई- ई पाइ च्लयह। िन तमाकु कीन लेब। आहां बुढा गेल छी। टीशन अयबाहक ऽ नचि काज।

खेलौना परनाम पाती क ऽ क ऽ िइल गेल।

जाय काल टीशन पर अबइ छी त ऽ खेलौना गुमच्लाये लग भेटा जाइया।हमरा ओकरा देखते फेर मोन खौझा गेल। फेर अकरा पाइ िच्लयई..........हमर च्यंड ई नचि छोडते.......थेथर भ ऽ गेल अइछ........कहने रच्लयइ नचि ओ, तखनो आइब गेल। अतेक बुढक ऽ कोना ऊिि कथा कहबइ- हुं हा करइत रहलऊं।

ओ कहलक-

ढेबराक ऽ बेटा अतइ टीशन पर च्टकट कटई छइ। ओकरे लगसँहम आइब रहल छी। रेन एक घंटा लेट अइछ। हम ईएह बतब ऽ जाइ छलऊं।आब आहा आइब गेलऊं त िलु टीसने पर बइसब।

स्टेशन पर रेन लेट हेबाक कारण भीड बेशी छलइ। खेलौनाकऽ देखते ढेबराकऽ बेटा एक गोटाकऽ इशारा केलकइ। हमरा सबहक लेल तीन टा कुसी कतउसँआइब गेल। फेर लस्सी। कनी काल मे िह सेहो।बच्चा सब लेल कुरकुरे।

कतबो पाइ देबऽ िहचलयई, ओ सब नञि लेलक।

खेलौनाकऽ समाजकऽ िइर गोटे तऽ टीशन पर दोकान खोलने छइ। खेलौना सबकऽ हमर जयबाक बारे मे बतेने छलइ।लोक एकाएकी अबइत छल। हमर धीया पुता ई आदर देख कऽ अचम्भित छलाह।ओकर हम बादेश्याया माल्लक भेचलयई। रेनकऽ अबाते देख हमर हाथ जेबी मे गेल आ जे भी पाइ रस्ता लेल अलगसँरखने रही, ओ बंद मुटी मे आइब गेल।हम ओ मुटीकऽ खेलौनाकऽ जेबी मे हाथ दऽ कऽ खोइल देचलयई।

रेन पर सब सामान हाई हाई कऽ कऽ रखा गेल छल। खेलौना कहलक- हम आब अंचलमे छी बौआ जे आहाकऽ िहुंपािई लेल अबइ छी। अही लेल हमर बेटा सब हमरासँख्यालयाल रहइत अइछ।हमरासँअइ अंत काल छोडल हैत।हम पाइ लेल नञि, स्नेह लेल अबइ छी। ओइ बुढा माल्लक- मच्लकाइनकऽ याद मे अबइ छी।उनकर कजा िुका रहल छी।

हमर बच्चा सब सेहो गामक पैघ बुजुर्गकऽ जेना पैर छु कऽ आशीािदी लइ छलाह, ओहेना खेलौनाकऽ सेहो पैर छुबइ गेलाह।

खेलौनाकऽ आंईख छलछला गेलइ-

जाऊ जुग जुग जीबइ जाऊ।बऊआ माच्लकसँभी पैघ हाच्कम बनच्च जऊ। हमरा जनीकऽ नच्च ब्बासरब।

खेलौना ठीके कहइ छल। जाबइत ओ अइछ, ताब्बते ने "बौआ माच्लक "। आब गाम गेला पर दोसरकऽ कहत। िन तमाकुल की, कतबो पाइ देला पर च्चकयो अतेक आबेश करत आ बौआ माच्लक कहत।ई ओइ पीढीकऽ अंच्चम लोक अइछ। आबऽ बला जमाना, पोच्चयये टा मे पढतइ, जे खेलौना जेका लोक समाज मे होइतो छलइ।

टीशन पर ब्बादा करय लेल खाली खेलौने ठार अइछ। आर च्चकयो गोटे नच्च आयल छच्च। हम च्चकनको छोडअ जेबइन ने, तखने ओ सब अऊताह। अतऽ तऽ बरोबरी बाला गप छइ। पाइये सही, आच्चखर खेलौने मे अतबा माियथत्तऽ भेलइ। खेलौना तोरा हम िच्चकयो कऽ नच्च ब्बासरबऊ।

कक्काि‍स (लघुकथा)

दहन बाबुकऽ आंगनसँबडड इच्छा रहइन - " एक बेर कक्काि‍स कचतऊं "।

उनकर नैहरे- सासुर सब मास द्धनक लेल कक्काि‍स केने छलइन।ओइ कक्काि‍सक समय भोगल बानगी, संत महात्माकऽ बोल- िि‍न, लोकक भीड, साद्धकि जीि‍न, साधु संतक बडका बडका टेट, कुंभ मे लोकक रेला, ओ मोरक पंख, लोहाक हासु, लोककऽ हरेनाई आ हरेला पर तकनाई, सरकारक बेबसथा, हडडी गलबऽ बाला जार, भीजल जारइन, ईटाक ि‍ला, साझक बजार, तरकारी बाली सबहक मोल मोलइ , ओ मोटरा- मोटरी, ओ ठगहा सिमी, ओ ि‍स्तुजातक िरी, अहीना कतेक रास बवस्सा चहानी ओ सुनने छइथ।

सासुरकऽ लोक गेल होइथ ि नैहर के, बवस्सा एकरंगाहे। कक्काि‍स उनका अपना द्धश सम्मोह्नत करय छलइन। ओ एक दु बेर पह्लनेहो मोने मोन जायकऽ तैयारी केनहो छलीह लेचकन ऐन मौका पर कोई न कोई चघि बाधा सामने ठार भऽ गेलइन। नचह जा सकलीह, मोन मसोईस कऽ रही गेलीह। अपनेकऽ मनेलीह- ओना अखइन तेहन बुढ थोरबे भेल छइथ, कक्काि‍स कोन भागल जाइ छइ।

आब सब जिम्मेदारीसँ मुक्त भेली अइछ। ओना त भइड जीनि किछु ने किछु लगले रहइ छइ।दुनु बेटी अपन सासुर बसई छइन। बेटाकऽ नीक नौकरी छइन। दु बरखक पोतो छइन। दिल्ली मे बेटा-पुतोहु रहइ छइन।नाइत, नतनी आ पोता भेलाक बाद उनका लागऽ लगलइन जे आब बुढ भऽ रहल छइथ।

ओना देह- दशासँ नीक छइथ। किछयो नहि कहतइन जे घरबाला नौकरीसँ रिटायर कऽ गेल छथीन। ओना ई दहन बाबुकऽ उपराग मे कहतो छथिन- आहा रिटायर भेल छी, हम नहि। से मोन राखु।

कहलो गेल छइ जे पोता भेलाक बाद सरगिक रस्ता सीधा खुईज जाइ छइ।

ईएह सरगिथ सुनला पर तऽ कल्पवासिक धुन सवार भेल छइन।अइ बेर सोइच लेने छलीह जे किछु भऽ जाय माघ मे पयागराज जेबे करतीह।एक दु टा धरम करम बाली बुढी सबकऽ दोसराइत लेल पुछबो केलखिन, लेकिन ओ सब नहि तैयार भेलखिन।अंत मे हारि कऽ दहन बाबुकऽ कहलखिन- " आहा हमरा कल्पवासि मे जा कऽ छोड़ि देब आ फेर एक महीना बाद लऽ आनब"।

से कियैक?

हम कै गोटेकऽ कहच्लयच्ला, च्चकयो संग दइ लेल नच्चि तैयार भेल।

अरे हम छी ने। हम संग देब!

सकारात्मक ज़बाब भेटला पर दहन बाबुकऽ कच्चाया कनी आर जोशेली। बजलीह-

से तऽ हमरा बुझल अइछ जे आहा संग हमर देबे करब।ओहीसँत कहलऊं।

मूदा हम छोच्च्ब कऽ नच्चि आयब?

च्चकयैक?

डर होइया। आहा कोनो बहुर च्चया साधुकऽ नच्चि च्चयछोड धअ लेबइ।

आब कतऽ जायब। ओतऽ हम धरम करऽ जाइ छी। एहनो नच्चि छी जे च्चकयो बहला फुसला लेत हमरा।

बात बात मे दहन बाबु अपनो कच्काि सि जयबाक इच्छा जतेलच्च्वन।

आब की छलइ। उनकर कच्चाया तऽ खुशीसँझुमअ लगलीह। सब बेटा बेटीकऽ अपन जायकऽ बारे मे बतेलच्च्वन।

सब बयस भेला पर बदलइत अइछ।दहन बाबु घरो मे कहियो पूजा पाठ नहि केलाह, ओ मास दिनक लेल कल्पवासि करऽ जा रहल छथि। सबकऽ अचरिज लगलइ।

अगिला दिन इलाहाबाद बाला रेन मे रिजर्वेशनकऽ टिकट अबाती-जयतीकऽ करा लेलाह। समान सबहक लिस्ट बनऽ लागल। जे बुढी सब पहिने कल्पवासि केने छथि, उनका सबसँबीचबीच मे पर बीचबीच मे दहन बाबुकऽ कनिया लऽ रहल छलीह।जायसँएक हफ्ता पहिनेहे सब जर रतकऽ समान कीना गेल छलइन। इलाहाबाद मे एकटा सीधा संबंधी तऽ नहि, लेकिन जोडुआ तऽ अबस्से कहबइन, उनकर पता आ फोन नम्बर सब लऽ लेने छलाह। उनकासँएकदिन फोन पर गप्प सेहो भऽ गेल छलइन। हुनका अपन आबऽ कऽ पोगाम बता देने छलथिन। कोना की स्टेशनसँगंगा कात जेबाक छइ, कतेक की भाडा लगतइ, कोना आ कते पाइ मे टेट भेटतइ, सब बुइझ- सुइझ लेने छलाह।

दहन बाबुकऽ कनियाकऽ होइन की आब तऽ ओ सोझे सरगे जेतीह। ओकरे लेल रस्ता सब बइन रहल छइ।

जायसँएकदिन पहिने सब धीया- पुताकऽ " आलदऽ बेस्ट आ हैप्पी जनी" बाला फोन सेहो एलइन। आइ ओ नानी-दादी बाला खाडी मे अपनाकऽ असली मे बुइझ रहल छलीह।

जखइन घरसँबिदा भेलीह तऽ भइड दिअयद बिदा करऽ आयल छलइन।बुझा रहल छलइन जे कोनो जंग मे जा रहल छइथ। लोक सब कुंभ आ कल्पवासिक सुनल सुनायल गप कहइन आ डरबइतो रहइन। दहन बाबुकऽ कनिया पर अकर एक नबको असर नहि

छलइन। उनका दहन बाबुकऽ अफसर बाला रौब पर भरोसा छलइन। जे काज ओ हाथ मे लइ छलाह, सफलता भेटते छलइन। िहे बचि सबहक एडमशन होइ, रेन मे जतरा होइ, बेटी सबहक कथा िता होइ, सब जगह ई गोटी लालकऽ कऽ घुरल छलाह।

रेलि टीशन पर छोडअ लेल एकटा भाजा आ उनकर कनया मोटरसँआयल छलखन।एसी बोगी मे रजिशन छलइन। बेशी भीडभाड नहि छलइ। अपन आरामसँदुनु बेकती रजिसीट पर बइस गेलाह।

जखइन अला दन भोरे इलाहाबाद पहुंिलाह त देखइत छइथ जे एक गोटे उनका सबकऽ लेबइ लेल स्टेशन पर ठार छथ। ई ऊयाह यत छलाह जनकर यतासँदहन बाबुकऽ गप भेल रहइन।ओतऽ सँओ सब सीधा संगम गेलाह, जतऽ ककिसक लेल टेट सब लागल छलइ। पनेहेसँइनका सबहक लेल एकटा टेट ठेकनायल रहइन।ओ यत फाइनल अइसँनहि केने छलाह, इनका सबकऽ केहन नीक लगतइन?

बया जगह पर ओ टेट लागल छलइ। सब जगह ओतऽ सँलगे छलइ।थोडेक काल मे इनका सबकऽ यिथत केलाहकऽ बाद ओ यत िइल गेलाह। उनकर अनुसार ककिसीकऽ कछु काज आइब कऽ ओ अपन खाता मे धमकऽ डेबट कऽ रहल छलाह।

कतउ भी स्थानीय अपन लोक रहलाह पर सब कछु आसान भऽ जाइ छइ। अखइन पतयक मे ई सब देखलाह।थोडेक काल मे िला

जडा कऽ िहि बनबइ गेलाह आ पीयई गेलाह। भानस भऽ गेल, तऽ बुझु सब भऽ गेल। बदली बला सरकारी नौकरी मे उनका सबकऽ अकर अनुभि छलइन। सबसँपहले, घर मे घुसते देरी ओ भंसे घर मे जाइ छलीह आ जै िला रहइ, ओकरा पजाइर कऽ िहि बनबइत छलीह। अतउ ओहना भेलइ।

अहला दिन सं अपन अइ बालु परहक दुनिया शुर भऽ गेल छलइन। गंगाजी मे पातः स्नानसँदिनिया शुर होइन। दिनभर पूजा पाठ, भजन, खेनाई बनेनाई, आ गप्प सरका मे बीतइ। अदुते अनुभि रहलइन। केना भोरसँसाझ भऽ जाइ, कनियो नहि बुझाई। कोनो तरहक विकार मोन मे नहि अबइ। सुआइत ने लोक मास करऽ अतऽ अबइ छइ। दिन हो या राइत, िर कात इजोते -इजोत, अलगे दुनिया छलइ। कोनो ओहन सुविधा नहि रहनेहो, खुब नीद होइ आ भुख सेहो लगइ। गंगा माईकऽ कृपा ठीके अपरम्पार छइन, ओहने उनकर महिमा।

सुयास्तसँपहनेहे अतऽ लोक रतुका भोजन कऽ लइ छल। ओकर बाद साधु संतक पिनि सब सुनहित छल। कतउ कतउ भंडारा सेहो लागल छलइ। इनका सबकऽ पूरिक संस्कारकऽ कारण लंगर मेकऽ खेनाई खाइत ठीक नहि बुझेलइन। ओना खाय बला पसादयकहइ छल। ओ सब अपने बनबइत आ खाई छलाह।

पाि सात दिनक बाद त कैक परिचित लोक भेटा गेलखीन। आब त सब कियो एकदोसरक टेट मे जाय आबऽ लागल छलाह। ई कल्पबासीक नब दुनिया बइन गेल छलइ। कियो साते दिन लेल आयल छल त कियो दु हफ्ता लेल, कियो किनको पहुंिबइ लेल त

चलयो कुशल क्षेम लेबऽ लेल। सब अपन दुनिया मे रमल छल।

दहन बाबुकऽ कनियाकऽ तऽ कयेक टा मैथलानी बनिहार पचयिबाली सब भेटा गेल छलखिन। पईिा उधारी सेहो गाम जेका मऊगी महाल मे शुर भऽ गेल छल। दहन बाबु ििपिप सब देखइत रहइ छलाह। उनका होइन जे अतउ उनकर कनियाकऽ सब ठइग रहल छइन।ऊमहर कनिया उनकर कक्षिास मे दान-पुण्य करबाक िाही, सैह सोइि कऽ देब लेब करय छलीह।

साझ मे एकटा संतकऽ पििनि मे ओ सब जाइत। ओ कहइ-

ई संसार मिथ्या थीक। बेटा-बेटी,अपन आन सब भ्रम छइ। जे सि छइ। ओ आत्मा छइ। ईएह अिर, अजर, अमर छइ।

कहलयो ओ संत पििनि मे कहइ छइ-

ई सब माया छइ। आहा संग ई लोक तकने तक सटल अइछ, जाबइत ओकर सििथथआहासँजुडल छइ। जखने मतलब खत्म,ओ घुमयो नहि ताकत।संगकऽ रहत? ओ रहत अपन सदकमथ। अही सदकमथकऽ रस्ता पर कोना िलिब? ओइलेल अपन सिवि समपथकऽ भाि जगाऊ भगिानिक पक्ष।

अहिना ओ संत तरह तरहकऽ खिस्सा बहानी सब कहइ। ओकरा अनुसारे "अपन " किछु नहि छइ। जखन अइ देहेकऽ भरोस नहि त आर दोसर कथी के,?

ओ संतक बाणी मे तऽ मिठास घोरल छलइ लेकिन ओकर शब्द दहन बाबुकऽ कनियाकऽ लोहछा दइ छलइन।बाकी सब पर

ओतेक रंज नहि होइन, जखइन ओ बेटा-बेटी पर कहइ, त ओ इनका कहबाको नहि बुझाराइन।

एकदिन ओ पंडित मे कहइ छल- " मनुक्ख अपन संथिथलेल ई माय- बाप आ संतानक जाल बनबइत अइछ। जालकऽ फेर पोखइड मे फेकइत अइछ.......... जाबइत धइड ओकरा माछ फंसइत रहइत छइ............जाल नीक बुझाई छइ। जखने जाल मे माछ नहि फंसलइ, ओ जालकऽ ऊपटबऽ - पलटबऽ लगइत अइछ। ओकरा होइ छइ जे जाल मे कोनो दोख छइ, ताहि लेल माछ नहि फंसल। दोसर - तेसर जाल बदलइत रहइत अइछ।ओ पोखइड मे नहि तकइत अइछ जे ओइ मे माछ छइ कि नहि। माछ नहि जाल मे फंसलाक कारण पोखइड मे माछक नहि भेनाइ सेहो भऽ सकइत छइ।

ओहिना ई संसार छइ। जाल भेल संथिथ। जाबइत माछ जाल रूपी संथिथ मे भेटइत रहइ छइ.........ताबइत सब नीके छइ। जखने नहि भेटलइ, ओ बदइल लइत अइछ।अतऽ पोखइड अइछ आहाक सदकमथा ऊयाह आहाक काज पुरा करबइत अइछ। दोसर किछु कयो किछ नहि करइत अइछ।आहा ई झुठहाकऽ मोह-मायासँ बान्हकलु। अइ लोककऽ जखो नहि सम्हाइड सकलऊं, त ओइ लोककऽ सम्हार । आहा जर रतमंदकऽ बुझयउ, नहि की अपन कहल सखा-संतान के। आहां अखनो देख सकइ छी। मूदा आहाके आंईख पर संतानमोहक पदा लागल अइछ.........ओ नहि किछु देखऽ देत।

अहिना ओइ महात्माकऽ पंडित सुइन कऽ दहन बाबुकऽ कहबायाकऽ मोन कनी काल लेल डोल-डुल जाइ छलइन।फेर मोन

मे अबइन, भऽ सकइत होइ अइ सधुबा संगे बीतल होइ, तै अपन राग अलापइत रहइत अइछ। दहन बाबु त पनिक समय टेट मे आराम कऽ कऽ बीतबइ छलाह। ओ नम्नि अइ परिा मे फंसई छलाह।

समय कतउ रकलइया। कक्मासिक मास बीत गेलइन। आबऽ काल मे बैग मे भंसाक समान भरल आ आब सनेशसँभरल। मोरक पंख, लोहाक स्तिुजात,कयेक जगहक चामाल, पसाद, गंगाजलसँभरल बैग लऽ कऽ टीशन आयल छ्यि, रेन पकडई लेल। तखइन पता लिलइन जे उनकर रेन तऽ कुंभ लऽ कऽ कैन्सल भऽ गेल छइन। आर जे कीछु चन्निहल जानल लोक सब छलच्बन, ओ सब च्चक्ली जा रहल छलाह। उनकर सबहक रेन मे चजशिन छलइन। ओ सब आगह सेहो केलच्बन। दहन बाबु सोलिाह जे च्चक्ली मे उनको बेटा छ्यिने। अखइन अतइ इिल जाइ छी.......संगत अइछ। मास च्चन नीकसँबीतल........ जतरो नीक रहत।ई जे सनेश सब छइ, अखने दऽ देबइन। ओ मंच्चरक चामाल माथ पर सबकऽ टटका टटकी लाइग जेतइन।च्चकट लेलाह आ च्चक्ली उनकर सबहक संग आइब गेलाह।

आब दहन बाबुकऽ कन्नाया च्चक्ली टीशन परसँबेटाकऽ फोन केलच्बन जे हम सब टीशन पर आयल छी।आइब कऽ लऽ जाऊ।

बेटा तामसे घोर भऽ कऽ फोने पर ज़बाब देलच्बन-

हम सब दच्चिण भारत आइ जा रहल छी। आहा सबकऽ पच्लने बतबऽ कऽ छलाय।एना कतउ हुलेले होइ छइ। हमर सबहक

ई टूर छह महीना पहिलहिने बनल छल। आहाके गामक टिकट छल त इमहर चलि कअए एलऊं।

जे बुझाइत अइछ कर ।हम अपन याता नहि कैन्सल कऽ सकइत छी।फोन पर पाछुसँपुतोहुकऽ बरबराइत अस्पष्ट बात सेहो सुना रहल छलइ।

दहन बाबुकऽ कन्यायाकऽ िहराक भाि देख कऽ पता लाइग िकल छलइ जे की ज़बाब भेटल छइन।

पटनाकऽ दोसर रेन लागल छलइ। दहन बाबु ओकर टीटी लग गेलाह। अपन परिचय दइत दु िइर टा रेलि अधिकारी सबहक बारे मे कहलथिन। ओ टीटी, पटनाक टिकट दुनु गोटेकऽ बना देलकइन आ अपनबाला सीट एसी बोगी मे दऽ देलकइन।

दहन बाबुकऽ कन्याया कहलथिन-

हमरा आहा पर भरोसा छल जे आहा रस्ता निकालबे करब।

हम आहाके नेने छोडब।अतउ गोटी लाल करबे केलऊं।

आब दहन बाबुकऽ कन्यायाकऽ ओइ साधुकऽ पि िनक सब शब्द मोन पइड रहल छइन। सब स िथ्यक संग छइ- संतान सेहो।चलयो ककरो संग तखने तक छइ, जाबइत स िथथपूर्वाथभऽ रहल छइ। निशाथथऊयाह परम बह अइछ।ओकरा पर यश अपयश, नीक बेजाय, उचित अनुचित , लाभ हान सब छोड़ि दियउ आ जतऽ जेना जहीया तक राखय.....खुशी खुशी रहु।जीि न रेतक टीला अइछ, अइ पर नहि कोनो घमंड आ नहि राखु कोनो भम।

कक्काािस इनका सबकऽ जीिनक पाठ पढा देने छलइन। आब मोह मायासँअपनाकऽ परे बुझइत गाम घुइड रहल छलाह। कन्चया तक ई कक्काािसक पभाि रहतइन, से नचि जाइन।

बचनिक बनि (लघुकथा)

बचनि मस्तमौला सोभाकि छल।गामक लोक त उनका महादेि सेहो कहइ छलइन। मस्त मलंग छलाह। बेशी चिंता बेगरताकऽ किर मे नहि पडई छलाह। नीक बेजाय जे बुझाई छलइन, मूंहे पर कहि दइ छलखिन। अही दुआरे कयेक लोक इनकासँदुरे रहइ छल।इनका ओकर कनेको परबाह नहि छलइन जे ,कऽ उनका लेल, की बाईज रहल अइछ।

ईएह सोभाकि कारण घरक लोक सेहो आजिज रहइत छल। जतऽ काज करय छलाह ओतउ बेशी लोक इनकासँपरेशाने छल।ई अलग-थलग अपन परल रहइ छलाह। इनका ओतेक हाब- भाब बी रहैतो नहि छलइन। भगानिकऽ त ई पुछिते नहि छलाह, मनुक्खक लेखे कतऽ ।

ओना अइ चिंचित सोभासिँकतेक लोक इनकर पशंसक सेहो छल।अपन दुनाया छलइन। ओही मे ओझरायल रहइत छलाह। कहियो नहि , अइसँबाहर जयबाक कोनो शम केलाह।कयेक बेर एहन ने सि गप चलनको सामनेहे कहि दइ छथिन जे अगलाकऽ पिनाई मोश्किल भऽ जाइ छइ।ई सब गुण - अिगुण रहला बादो मलंग जेका अपन जी रहल छलाह।कियो "बचनि" कहइन त कियो "बनि"सँकाज िला चलयैह।

बनिकऽ चकयो आइ तक कोनो मंचदर मे माथ झुकबइत नचि देखने छइन। पूजा-पाठसँकोसो दूर रहइत छलाह। समय पर खेला-पीलाह आ सुतलाह। गामक लोक नचि इनकासँधाम्चक काज मे दिा मंगइन आ नचि ई दइते छलचवन। ई सब लोककऽ सोबिा लेल चबश कऽ दइ छलइ - एना चकयैक।लोककऽ तऽ अखुनकासँमतलब छइ- टटका टटकी की भऽ रहल छइ। बडकी टा चवसमा छइ अकर पाछु- जनबा बुझबाकऽ बेगरते ककरा।

बनिक चपता रामबृक बाबु पटना मे नौकरी करय छलाह। हर बरख महालयासँएक चदन पचहने ओ अपन गाम एक मचहना लेल अबइत छलाह। दशमी-दीयाबाती बीतेलाक बाद पटना घुडइ छलाह।उनकर घर पर कयेक टा पंचडत सब तेरहो अध्याय दुगा पाठ करइत छलइन। रामबृक बाबु आ हुनकर चपता सब चकयो पुरा चबध - चबधानसँपाबइन मनबइ छलाह। मनेता चकयैक नचि.......कथीकऽ कमी छलइन...... भगति सब चकछु देने रहचयन.......अपन आनंद लइत छलाह।

रामबृक बाबु सब साल जेका महालयासँएकचदन पचहने पटनासँगामक लेल चबदा भेलाह। पचनया जहाजसँपहलेजा एलाह। ओतऽ सँरेनसँमुजफ्फरपुर। आ फेर ओतऽ सँबस पकइड कऽ गाम जाइ छलाह।जकरा कम पाइ छलइ या सोम पचृबाकऽ छल ओ सब रेन सँसमस्तीपुर बाटे सेहो जाइ छल। बससँसमय कम लगइ

मूदा पाइ बेशी खर्चि होइ।

रामबृक बाबु तऽ भरल पुरल घरक छलाह आ ऊपरसँ उदार सोभाक के, बसेसँ गाम घुडइ छलाह।भोरे पटनासँ चलइ छलाह आ देर राइत कऽ गाम पहुँचई छलाह।मनुआ पुल पर बससँ उतडइ छलाह आ ओतऽ सँ घर पर स आयल टायरगाडी पर बइस कऽ गाम।
सबसाला र टीन छलइन। सबके बुझल जे कहिया एताह आ कहिया जेताह।ओइ राइत दिन पर जखइन नहि पहुंचलाह तऽ टायरगाडी बैलबान सहित भइड राइत मनुआ पुल पर इंतजार कऽ कऽ गाम घुइड गेल।

उनकर पिता रामकिशुन बाबुकऽ चिंता भेलइन।इमहर आमहर पता केलाह। कोनो खबर नहि भेटलइन। आइ तक एहन कहियो नहि भेल छलइन।अगिला दिन महालया छलइ। पूजा पाठ सब साल जेका घर मे भऽ रहल छलइन।रामबृकक्कऽ पठाओल चिटी मे सेहो अयबाक बारे मे लिखल छलइन। कयेक बेर उनटा पुनटा कऽ चिटी पढलाह, कोनो आर माने नहि लगाकललइन। ज्यो ज्यो दिन बीतल जाइ , कोनो अनहोनीकऽ डर सताबइ रहल छलइन।

तीन दिनक बाद दोसर टोल मे बिसुन बाबुकऽ जमायसँ पता चललइन जे एकटा बसकऽ भारी एक्सीडेट भऽ गेल छइ। एक्सीडेटक समय रामबृकक्क अयबाक समयक लगीच रहइ। गाम मे

अखबार सेहो तीन दिन बाद अबइ छलइ..... ओहो मे एक्सीडेटकऽ खबर छलइ। रामकिशुन बाबुकऽ कनियाकऽ याद छला ािइर दिन सं दुध मे जुरबाती जेका बुझा रहल छलइन। किछु संतानक कष क आभास बुझाय लगलइन।जखने अखबारक समाािरकऽ िि भेलइ.....चिंता बइढ कऽ बेिैनी मे बदइल गेलइन।

आब सब हाल पता करय लेल कमबाया आ एकटा दिअयदक पढुआ भाइकऽ कुशल क्षेम पता करय लेल पठािल गेलइन। अखबारक खबरक अनुसार ई सब जखइन ओइ अस्पताल मे गेलाह त किछु पता नहि लगलइन। फेर पुलिस थाना होइत मुदाघर मे लहाश सबकऽ देखलाह त ओइ मे रामबृक, उनकर कनियाया आ बेटाकऽ ई सब चिन्हलखिन। इनका सब लग पहिचानाख्तक कोनो कागज पतर नहि रहबाक कारण लहाश सबकऽ सुरक्षित राखल रहइन।आरो किछु तारा- ऊपरी लहाश सब चिन्हबा लेल राखल छलइ।तीन दिन मे लहाश सब फुइल कऽ कुम्भा जेका भऽ गेल छलइ। ओतइ कियो कहलकइन जे छह महीनाकऽ एकटा बचिा अइ मरल मऊगीकऽ कोरा मे जीयइत भेटल छलइ। आब ओ कतऽ छइ से पता कर।

पुलिस आ अस्पताल बालासँपुछला पर पता लगलइ जे एकटा नर्सआया ओइ बचिाकऽ दुध पीयाकऽ बचायेने छइ।

ओतइ चकयो बाजल- " अतेक बीभत्स आ भीषण एक्सीडेट मे ओइ बचाकेऽ माय एना कऽ रखने रहइ जे अपने त मइड गेल, मूदा अइ जन्मौटी बचाकेऽ कतऊं खरोि तक नहि एलइ।"

कहूना कऽ कऽ सब कागजी खानापूरथभेलाक बाद ओ कमचाया आ पढुआ भाइ तीनो लहाश आ छह महीनाकऽ बचा लऽ कऽ गाम एलाह। पुरा गाम की परोपटा मे तहलया मातम पसइड गेल छलइ।रामचकशुन बाबु आ उनकर कनयाकऽ शोकसँबडड खराब हाल भऽ गेल छलइन। ओइ अबोध बचाकेऽ देख देख कऽ सब सबुर कऽ रहल छल।

लोक सब अइ बचाकेऽ देखऽ अबइ। बचाकेऽ खोज-पुछारी होइत होइत ओकर नामे बचासँबचिन पइड गेलइ। ईएह ओ बचिन छलाह। एकटा खबासनकऽ सेहो आठ- दस मासक बचा छलइ आ ओकरा दुध सेहो खुब होइ। ओकरे रामचकशुन बाबु कतऽ राखल गेलइ। ऊयाह खबासन अपन दुध चया चया कऽ इनका पोसलकइन।

अइ तीन- तीन टा लहाशसँभरल अंगना मे ,कऽ आ ककर पूजा हेतइ। पूजा पाठ बंद भऽ गेलइ। सब अइ बचिनकटुअर टुअर कहइ। चकयो अइ बचाकेऽ देख कऽ कहइ - "अर दा रहइ तऽ बइि गेलइ।"

दोसर बाजई- " दुनियाया मे अबिते माय बापकऽ खा गेलइ"।"

दस मूंह दस बात। ककरा ककरा मूंह बंद करबइ। रामकिशुन बाबु बाद मे अइ बचिा लग ककरो नहि जाइ दइ छलखिन।

रामकिशुन बाबुकऽ अपना होइन जे भऽ सकइत छइ जे उनकासँगलती भेल हेतइन, जेकर सजा भगािन इनका अइ एक्सीडेटकऽ रप मे देलखिन। लेकिन अइ छह मासक अबोध कोन गलती केलक जे ओकर माय बापकऽ ओकरासँदुर कऽ लेलखिन। ई भगािन नहि छथि। कथी लेल इनका गोहरबायइन। घोर अनथ्र्र दुबकी मारने देखइत रहलाह। आब भऽ गेलइन। ओही दिन सं रामकिशुन बाबु कतऽ पूजा पाठ बन भऽ गेल छलइन।

कनीक छटगर भेला पर घरे पर मास्टर साहब अबथिन आ पढबथिन।

जखइन बुझअ सुझअ जोगर बच्चा भेला तऽ एकदिन रामकिशुन बाबु बचिनिकबजेलखिन-

"आहा हमरा एकटा बािन दियअ।"

कहू।हम बनि देलऊं।

आहा कह्रयो बस पर नचि ढिब।

ठीक छइ। नचि ढिब।

जाबइत छोट छलाह बचनि ताबइत तऽ नचि चकछु बुझेलइन। गाम लगक स्कुलसँमैत्रक केलाकऽ बाद सबसं पह्रने शहर जेबाकऽ जररत पडलइन। आगुकऽ पढाइ त करबाक छलइन।

जबानी आबऽ बला छलइन। ओकरे उमंग मे कयेक कोस साईचकल लि कऽ रेन पकडई छलाह। फेर शहर जाइ छलाह- आगु पढबाक लेल।

समय बीत रहल छलइ। बेटा पुतोहुकऽ मौतसँशोकायल बाबी जचदये मइड गेल छलचखन।आदमी जनकऽ भरोस पर रामचकशुन बाबु अपन टेक धेने छलाह। उनका मोन नचि छलइन जे बचनि शहर जाइथ पढबाक लेल। मूदा बना पढने जीनि जंजाल भऽ जइतइन। लोकक समझेला बुझेला आ बचनिकआगु पढबाक मोन देख कऽ शहर मे पढबाक अनुमत्त दऽ देलचखन। दु बरख बातइत बातइत रामचकशुन बाबु सेहो परलोक चसधाइड गेलाह।

आब बचनि बीए केलाकऽ बाद गाम आइब गेल छलाह। बाना बसकऽ कतउ आब जाय बला" बनि" उनका बडड भारी बुझा रहल छलइन। कयेक लोक कहलकइन-

" बनि" देबऽ बाला तऽ अपने िइल गेलाह।आब आहा बस पर ईिढ सकइ छी।कऽ देखत आ चकछु कहत। जाऊ बस पर िढु।

जतबे लोक उनका बनि तोडबाक लेल ऊकसबइन, ओतबे ओ चानचदअयइत गेलाह। नचि िढलाह बस पर।

ओ तऽ धन कहू जे नबका पाईिट कालेज दु कोस पर खुईज गेल छलइ। ओही मे चकछु पाइ दऽ कऽ चकरानीकऽ नौकरी भेट गेलइन। बायाह दान सेहो बगलेकऽ गाम मे केलाह। महफा मे बइस कऽ बायाह करऽ गेल छलाह।

बस बाला" बनि " बढइत बढइत मोटर तक पहुंि गेल छलइन। ओ मोटर मे सेहो नचि कच्छयो बइसलाह। बाद मे कालेज सरकारी भऽ गेलइ। बाद मे बच्छया दरमाहो भेटअ लगलइन। धीया पुता सब तऽ बस आ मोटर मे जाय लगलइन। बचनि अपने आ कबाया हुनकर, सेहो बस आ मोटर मे नचि बइसई छइथ।

कहऽ मे बडड आसान छइ जे की हेतइ नचि बइसला सं। मूदा आइ एहन चकयो भेटत जे बस आ मोटर मे नचि बइसल होइत। बचनि अखनो अपन" बनि " बाभा रहल छच्था। उनका भगिन भगतीसँईएह चाकाइत छइन जे अइ अबोधकऽ जन्म लइते ओकर

माय बापकऽ च्चकअए अपना लग बजा लेच्चयई। ई केहन न्याय। आहा न्याय नच्चि कऽ सकइ छी त हमहुं आहाकऽ भगिान नच्चि मानब।

अजुका लोककऽ जखइन बच्चिनकरामच्चकशुन बाबुकऽ देल बिनकऽ च्चाभाविअकऽ पणक बारे मे पता लिइ छइन त आदरसँसबहक माथ उनकर सोझा झुईक जाइ छइन।ओना कहऽ बाला मथच्चछनु सेहो कहइ छलइन।

बच्चिनकदुनु बेटीकऽ नीक घर- बर, च्चलनकर बिनबि गुणक पच्चमच्चिसँभऽ गेलइन। आब एकटा बेटा छइन जे मोटर मे ढिइ छइन आ शहर मे रही कऽ पढाइ कऽ रहल छइन। भगिान मे ओकर आस्था छइ, लेच्चकन बाहरे बाहर ओ भगिानकऽ गोर लगइत रहइया........घर मे अकर अखइन तक नच्चि कोनो सुरसार छइ।

आब नच्चि बिन लेबऽ बाला लोक भेटताह आ नच्चि बिन च्चाभाविअ बला लोक।

रखबार (लघुकथा)

गामसँसमाद आयल छल- " हवेया आब घर पर नहि रहइत अइछ। कोनो लोकक बेबसथा आब करऽ पडतह।"

ई समाद पर मोन चलाना गेल। आइ तक इसमागो मे नहि आयल छल जे हवेया हमर घर छोड़क कऽ िइल जाइत। सबसं पहले तऽ एकटा रखबारकऽ राखऽ पडत। िरी- िहारी कऽ हल्ला अलगे गाम देश बइढ गेल छइ। मुनाई बाबु ओहन दबंग घर, चानकर बेटो भारतीय पुलिस सेिकऽ अधिकारी छइन, िरी भऽ गेलइन।

िकीदारकऽ जान पर आफत बनल छलइ। पुरा चलाकऽ थाना- पुलिस आयल छलइन।

चककछु भेलइन?

चककछु नहि भेटलइन।

उपरसँअइ हाकिम सबहक आयल गेल पर सेि- सत्कार मे कतेक खि भेलइन।

ओ सब कहइ- "गाकिऽ भीतर घर है। परदेश से िर आयेगा? यही अगल बगलबाला सब चकअए होगा?इस गाि मे िर सब बसने लगा है।"

दु ि इर टा अगल बगलकऽ दीयाद बादसँपुछोताछ केने रहइ। एकाधकऽ तऽ थानो पर बजेलकइ।

भेटलइन तऽ नहि चलकछो। उपरसँअगल बगलसँआनो जान बन भऽ गेलइन।गाइड शाप अलगे सुनऽ पडलइन।

बाजु! जई गाम मे अतेक तरहक अफसर भेल। ओइ गाम मे आब ि रि बसइत अइछ।

राइत बराइत आब एक बालास पाइनो देबऽ बाला गाम पर चलयो नहि छइ।

ईएह हचया अइछ। जलया घरसँहटबइ छलयई, नहि हंटल।ओ बजलक-

" हमराकऽ अइछ? आब बुढारी मे,कऽ दु साझ खुआइत।अतेक दनसँआहाकऽ दरबार मे रही आयल छी, रहऽ दयह। कतेक जनगी आब बा िले अइछ।"

हचया ईमानदार अइछ। एक पाइ बान पुछने आइ तक घरसँनहि उठेलक। ओकर सब जगह अपन कमीशन बान्हल छलइ।

आमक गाछी बाकाइ। पैकार हचयाकऽ अलगसँकमीशन दऽ दइ। चकरानाकऽ समान जकरा कतऽ सऽ आबइ, ओ हचयाकऽ सब मलना चकछु दइ छलइ।घर मे कोनो टुट फुटकऽ मरम्मत होइ, हचयाकऽ चससा सब बान्हल होइ। जे पाहुन स्टेशन छोडला पर ओकरा बख्शीश नहि देलचकन, उनका जाय काल दोसर

बेरसँकोनो भंगठी माइड दइन।कतउ माइट भराई, ईटा खसय, मोटर ठीक होइ, गंारिरी िदा होइ,गाछ ब्काकाइ, कोनो समानक लेब देब होइ, गाडी भाडा पर लेबाक होइ, ब्जिली बती ठीक करेबाक होइ, हच्चयाकऽ जे महतिनिं देलबकिन, उनकर ओ पता काइट दइ छलइन। ब्बान ओकर मजी, ब्ककछु भऽ नहि सकइ छइ। ओकर संपकथएहन रहइ, जे एक समाद पर सब हाब्जर।

ओ गाम मे ब्कनको मोजर नहि करय। हमर अडोसी पडोसी ब्ककछु बजब्ान, तऽ सबहक खच्चाहान ओकरा लग छइ। ओ शुर भऽ जाइ।कोनो जन मजुरकऽ जे बेशी काज करइत देब्खताय, तऽ ओकर करेज फाटऽ लब्गातइ। ओकरा ब्कयैक अतेक पाइ दइ छ्ब्ायई। हमरे ब्दयह, हम काज कऽ देब। देह सकइ नहि, तैयो पाइयक लोभ मे काजक ठीका लऽ ब्लयाय।

ओकरा ब्बाना हमर सबहक काज आ हमर सबहक ब्बाना ओकर काज नहि िलइ छलइ। अइ करीब िलीस बरखक ओकर , हमर पच्चारिरसँजुडाि मे कै बेर ओ रसल, फुलल, ब्खब्सयाल, भागल अइछ। मूदा हफ्ताह ब्दनक भीतर फेर घुच्च आयल।

ओ सिभासिँततेक ने टनुक अइछ, जे कब्ाको एमहर ओमहरकऽ बात ओकरा खराब लाइग जाइ छलइ। हमरा घर छोब्ब, ओ कतउ खैबो पीबो नहि छलाय। ओकरा अलगसँज्यो ब्कयो कहतइ आ आदरसँलऽ जैतइ, तखने ओ उनका कतऽ खइतै।

हमरा सबकऽ छोब्ब कऽ , बाकी लोकक ओ "हच्चजी" छल। हमहुं सब कयेक बेर सोिलऊं जे ओकरा आब " हच्चया " नहि

कनियइ, नयि भऽ सकल।

हम घर पर कहलियइन- " अपने पाँ दस दिन मे आइब जाइत।"

घर परसँज़बाब भेटल- " मन्नासँऊपर भऽ गेलइ ओकर गेला। ओना भेटला पर पहिने मना नयि करइत छल, लेकिन आब ओ नयि आइत।तीन िइर दिन पर टहलइत बुलइत अबइत छलाय, ओना आब रहत नयि।"

ओ जाबइत छल, ओकर डरे एकटा नेबो, की आम, की अमरा, की लीिी, की सरीफा, की लताम, घास तक गढऽ कियो टपई नयि छल। आब तऽ हर दु दिन पर किछु ने किछु कियो टपा दइत अइछ।

हबियाकऽ पुरा नाम हबिहर महतो छइ।आठ भाइ अइछ। बापो ओकर सात भाइ छलइ।अकर बचिे मे बियाह भेल छलइ। ितिन भेला पर गौना भेलइ। कनिया अकर सासुर बसऽ लागल छलइ। एक बेर सरेह मे घास गढऽ गेल छलइ, ओतइ साप काइट लेलकइ। बहुत झाडा फुंकी भेलइ। पुरा देह ओकर नील भऽ गेल छलइ। नयि बिलइ। मईरे गेलइ। ओकर लाशकऽ घइल संग उकटा बाईन्ह कऽ कमला बलान मे बहा देल गेलइ। ई उम्मेद छलइ जे बहइत पाइनक संग जहर देह मे सऽ उतइड जेतइ, तऽ ओ जी जेतइ। ई ककरो बुझल तऽ नयि छइ जे कियो एना जीब गेल छइ, लेकिन तनिया एहने भेलइ।

हबिया ओकर बाद मतछिनु भऽ गेल छलइ। ओकर बाप हमर सबहक जमीन बंटाई करय छल।अइ घटनाकऽ पाँ - सात बरख

बाद ओकर बाप हमरा कतऽ हरिहि मे हचबयाकऽ पठहि लगलइ। धीरे धीरे ओ अतइ रहऽ लागल। जे ओकर भाइ सब हचबयाकऽ एक साझ खाई लेल नचि दइ, से एकरा लग पाइ भेला पर मान दान करऽ लगलइ। हचबयाकऽ बाल न बचि, नीक पाइ पोस्ट आफस मे जमा भऽ गेल छलइ।

आब गामकऽ समीकरण बदइल गेल छइ। पंडितकऽ बछला िनाि मे गाम, मल्लला लेल आरक्षत भऽ गेल छइ। पचीस बरखसँमुखयाजी िनाि मे जीतइत आइब रहल छलाह। मल्लला आरक्षत भेला पर उनकर पुतोहु िनाि मे ठार भेल छलीह। इमहर हचबयाकऽ भाभो तेतरीकऽ सेहो ओकर घरक लोक िनाि मे देखाऊंस मे ठार करा देलकइ। तेतरी आब तेतरी देिी भऽ गेल अइछ। देखहो मे पइनगर छइ आ बजतो ओलना बढया छइ। बातो बिरकऽ बढया छइ। बाबू भैयाकऽ सेहो इज्जत करय आ अपन समाजकऽ तऽ बाते अलग।

हचबयाकऽ गोबाया अपने बडकी टा छइ। पलल बेर ओकर घरक लोक मुखया िनाि मे ठार भेल छलइ, ओहो मूखयाजीकऽ पुतोहुकऽ खलाफ।सब जी जानसँलागल छलइ। हचबयाकऽ कोनो खास मतलब अइ िनाि आ घरसँनचि छलइ।

िनाकि पचणाम बाकललइ।तेतरी देिी चकछु िटसँिनाि जीत गेलइ। आब ओ गामक मुखयाइन अइछ। ओकर दलान पर सब जाइत आ समाजक लोक पंिती लेल अबइ छयन। कतेक तरहक सचकफकेट पर ओकर हस्ताकर बायाई छइ। मुखयाइन बनला पर हचया लेल सेहो मधुर ओकर भाबाज लऽ कऽ आयल छलइ।

शुर मे तऽ हच्चया अपन भाइ भाभोकऽ दुसई छलइ। कोन काज छइ घरे घर बऊआइ के।ई ि नाि तुनाि सब झुटेकऽ होइ छइ। जीततइ मुच्चयेकऽ पुतोहु। लेच्चकन जखइन िटिक च्चानती भेलइ, तऽ सबहक सोिल फेल कऽ गेलइ।

आब कच्चयो काल हच्चया अपन घर जाय आबऽ लागल छलाय। भाइ- भाच्चाज आब कहइ छलइ च्चक घरे पर रह। हच्चया ओकरा सबकऽ डाट डपट कऽ हमरा कतऽ आइब जाय। फेर सब बात बताबय।

आब हच्चया, मुच्चयाइनकऽ भैसुर कहाबइत अइछ। मुच्चयाइनकऽ बेजजती बुझाई छइ जे ओकर घरक लोक दोसरा कतऽ दरबानी करय। ओ सब हर तरहसँपर्पि कऽ कऽ देख लेलक, हच्चया हमर घर नच्चि छोडलक।

गाम मे सबसं बेशी पाइ शराबक च्चबकी मे भऽ गेल छलइ। जच्चयासँसरकार शराबबंदी केलकइ, तच्चयासँअकर भाि बइढ गेल छइ। मुच्चयाइनकऽ बेटाकऽ एक च्चदन पुच्चलस अइ अँधि शराबक गोरखधंधा मे शाच्चमल होबाक लेल पकइड कऽ जेहल मे धऽ देलकइ। हच्चयाकऽ दु टा भाइकऽ सेहो अही केश मे बाद मे पुच्चलस पकडलकइ।

मुच्चयाइनकऽ कहब छइ जे च्चपछला मुच्चयाकऽ पुतोहुकऽ ओ ि नाि मे हरेलकइ, तै ओ सब साच्चजशकऽ तहत एकर घरक लोककऽ अइ शराबक केश मे फंसेलकइ।आब हच्चयाकऽ अपन

पचारि पर आयल चीपचा देखी कऽ नहि रहल गेलइ। ओकर घर पर कोनो पुरुख पातर नहि छलइ। हुनका ओही लेल अपन घर घुडल।

आब बाबाक सब लोक जमानत पर छुइट गेल छइ। हुनकाक ऽ पुरमाग मे बाबू भैयाक ऽ खिलाफ जहर भइड देल गेलइ। आब ओ इमहर आइबतो नहि अइछ। पुछला पर साफ साफ रहबासँमना कऽ देलकइ।

आब हुनहर महतो ओ कहबइ अइछ। अपन जाइत आ समाजकऽ मोछ ऊंँचा रखबा लेल दिन राइत काज मे लागल अइछ। समाजक ई विभाजन, कखनयो हिंसक संघषथमे बदइल जेबाक आशंका हरदम बनल रहइ छइ।

ओही लेल जल्दीसँएकटा रखबार तका रहल अइछ। कोनो भेटाय तऽ कहब।

सिंगर (लघुकथा)

मोहन गाम गेल छलाह।हाथ- पैर धोलाक बाद चाय पिबैत भौजीसँ बइसला। चाह- जलखइ सब भऽ गेल छलइन। भौजी उनकर किछु परेशान बुझेलथिन।मोहन ई बात बुझई छलाह जे बेरोजगारक कन्याक भाग्य मे परेशानी लिखले रहइ छइ।नीक रहितइ तऽ ओकरो घरवालाकेँ नौकरी रहितइ।मोहनकेँ पुछलो पर नहि किछु जवाब भेटलइन।

मोहनकेँ अपन भौजीकेँ ओ हंसइत चेहरा याद आइब गेलइन।जखइन मोहनकेँ भाइजी सुधीरक बरियातीकेँ गप्प इनकासँ कहि छलइन। एक दिन छिपि मोहन भौजीकेँ देखबा लेल उनकर छातापर चढ़ि गेल छलाह। ओतऽ सब लडकी मे सुनर उनकर भौजी लगलथिन।

बाद मे मोहनकेँ भौजी कहलथिन - " से बात नहि छलइ। लडकी सब एकसँएक सुनर छलइ। आहा हमरा देखऽ आयल छलऊं, हमर होस्टलक दिन बुइझ गेल छलीह।ओतऽ जाइन बुइझ कऽ सुनर लडकी सब अपने बाहर नहि निकलइ छइ, जखइन ककरो किनको देखऽ आबइ छइ। ई एकटा अघोषित पद्धति छइ।"

अच्छा ! से बात छलइ।

हं! तऽ आर की।

सुधीर कनी काल बाद ताश खेला कऽ घर घुरलाह।ताबइत बाबूजी मायसँगपशप करइत छलाह। बीचि बीचि मे टोल पडोसकऽ लोक सब अयलइन।उनको सबसँकनी मनी बात भेलइन।

सुधीर अबिते हाल चालि पुछलखिन।छोट भाइकऽ देखी कऽ पसन भेलाह। गाम मे तऽ अखुना दिन बीतइ छइ। साझु पहर पेच्छयासँअपने जा कऽ बोआरी माछ अनलाह।

बोआरी माछ बाबूजीरकऽ नीक लगइ छइन। ई सुधीरे टाकऽ बुझल छलइन।

बाबूजीरकऽ तऽ सब माछे पहिने एके जेका लगइन। बोआरी सस्त भेटई, तै बाबूजी बजारसँईएह खरीदइ छलाह। दोसर कनीक देखऽ मे ई माछ गोर लगइन। गोरका रंगकऽ पाछा आशचर्यत बचिसँछलइन। अपन पीरच्छयाम छलाह।तै मधुरो मे रसगुल्ले नीक लागइन। चक्यैक तऽ ई उज्जर होइ।मीठ तऽ अतेक नीक लगइन जे गुडक भेच्चालये खा लइ छलाह आ चिनी तऽ कयेक फका, जकर ब्यानती नचि।

रंगक पाछा एहन ने धुनी छलाह जे कतउ सुइन लेलखिन- " गभथिती स्त्रीकऽ नाचयल खेलाहसँसंतान गोर होइ छइ।"

अपन कनिया जखइन माय बनऽ बाला रहथिन तऽ नाचयल

खुआ खुआ कऽ उनकर मोन अकच्छ कऽ देने रहथिन।

गाम मे एकटा भाइजान नमन छलखिन। ओकरा लेल कपडा लता लऽ कऽ आयल छलाह। नमन देखते बडड खुश भेल। ओहि टिसँ नबका कपडा पहिरलक आ खेलऽ चलि दा भऽ गेल।

नमन पढबा मे ठीके छल। गामे मे आब अंगेजी मीडियम पाईिट स्कूल खुईज गेल छलइ। ओही मे पढई छलाह। एकटा चक्रशा अबइ छलइ। ओही मे दसमयो बच्चि लदा कऽ स्कुल जाइ। ओना स्कुल गामे मे छलइ। दुर तऽ कतउसँ नहि कहल जा सकइत छलइ, तखनो चक्रशासँ नमन जाइ छलाह।

एतनी दुर लेल चक्रशा?

हं। आब सब बच्चि चक्रशेसँ जाइ छइ।

एतबा दुर पैदल या साइकिलसँ जायकऽ निहि। सिस्थ्य सेहो ठीक रहतइन।

मोन तऽ चक्शो पर गेलासँठीके रहइ छइन। स्कुल मे सबकऽ बतेनाई जर री थोडे छइ जे नमनक बाप गरीब छथ्यिन।

अइ मे गरीबी आ अमीरीकऽ कोन बात?

चकयैक ने। खुब बात छइ। खतबे टोलीकऽ सेहो सबटा बचा चक्शोसँअबइ छइ। ओहुसँगैर गुजरल हमर नमन?

नचि नचि। से नचि कहलऊं।

आब जमाना बदइल गेल छइ। सब अव्हना स्कुल जाइ छइ। हमरो बेटा तव्हना जाइत।

बातकऽ दोसर चक्श जाइत देख चाच्लरक माय बीि मे बजलीह-

छोडह ई सब बात। आर कहऽ । अखइन रहबऽ ने?

हं ाइर चदनक छुटी अइछ। डइब कऽ ि इल जायब। फेर सोमसँआचकस पकडा जाइत।

ब्रजकिशोरकऽ बुझल छइन जे गामक सब खर्चि मायक पेशनसँ लिइ छइन। च्यवनिपाश, टॉनिक,किछु फल आ दर्ह सब माय लेल ब्रजकिशोर लेने आयल छलाह।

मायकऽ सब पाइ घरे मे लाइग जाइ छइन।फल, दुध, दर्ह कतऽ सऽ हेतइन?

ब्रजकिशोर दुध ऊठौना ठीक कऽ देने छथिन।माय कोना सब दुध अपने पी लेथिन। सब तऽ उनकर संताने छइन। ओइ मे नमन तऽ बीन दुध- दहीकऽ एको साझ नर्हि खा सकइत अइछ। सुधीरक जीह सेहो पातर छइन। घरक जेठ बेटा मागल गिल छलाह। ओ किछु बजई नर्हि छइथ, मूदा बीन दुध- दहीकऽ ससडइत नर्हि रहइ छइन। गारा धऽ लइ छइन। हफ्ता मे एक दिन नोनर्हि हाट पर जेबे करताह आ घुरती मे कचिया पनी मे काट कुश रहबे करतइन। अकर माता जेबी कऽ गमी देख कऽ ।

दुपहरिया मे मायसँ ब्रजकिशोरकऽ एकाती भऽ रहल छइन। कतबो ब्रजकिशोर मायकऽ अपना संग दिल्ली लिय लेल कहइ छथिन, ओ तैयार नर्हि भऽ रहल छथिन। उनका ई भान छइन- पेशनक पाइसँसुधीरकऽ आशम लिइ छइन। अगर माय नर्हि रहथिन तऽ

कशमकश भऽ जाइ छइन। पाइकऽ चदगदारी भेलासँघर मे कक्लह सेहो होबऽ लगइ छइन।

एक बेर दु मह्लना लेल ब्माह्रर कतऽ गेल छलीह। घुरला पर सतलखा बाली सब हाल बतेलच्चन। सुधीर तऽ हरखन तैयारे रहता- " तोरा जेतऽ जेबाक होइ, तो जो।"

माय बुझई छच्यन ई ऊयाह सि ाम्हमानी बापक बेटा छइथ ।ओ भुख लगबा पर घर मे जखइन नचि च्कछु देखच्यन तऽ कलम च्दश ि इल जाइ छलाह आ दु ि इर लगाा कुचसयार खा कऽ कुधा शात कऽ लइ छलाह। घर मे केकरा की कहच्यन? सब ब्सथचा सबके बुझले छइन। सुधीर कखनो मायसँपाइ नचि मंगइ छलच्चन।

मायकऽ तऽ जे संतान कष मे रहइ छइ, ओकरे पच्चा ओकर ममत ि देखाइत छइ।माय, सुधीरकऽ ओगइड कऽ अपन छाि मे रखने छलच्चन।

तुं कपडा लता च्कयैह अनचि छहुन। ओकर बदला मे पाइये सुधीरकऽ दऽ देल करहुन।

पाइ तऽ दइते रहइ छथियइन। अते नीक कपडा इनका सबकऽ अपनासँनचि कीनल हेतइन? तै लेने अबइ छी।

नीक कपडा?

तोहर भौजीकऽ गामकऽ कोन - दन भाइ आयल छलइन। ओ कहलकइन- " ई तऽ दरभंगामे रेहरी पर बिकाइ छइ"

बस! फेर की छलइन। तोहर देल,नमनकऽ पच्लरल टी-शर्टकऽ उतरबेलथिन आ पोछा बना देलथिन।

आंय। ओ पोछा बइन गेलइ। ओ तऽ बाडेड कपडा छलइ। छये मह्लना पहिने तऽ अनने रहथियइन।ओतेक दामी कपडाकऽ ई हाल?

दाम कहा लिखल छलह?

दाम बला लेबल तऽ जाइन बुझ्झ कऽ हटा देलियई। इनका सबकऽ होइतइन जे दाम देखा कऽ अहसान कऽ रहल छइथ। कंपनीकऽ लेबल तऽ लागल छलइ। ओइ कंपनीकऽ

कपडा तऽ तीन हजार र पयासँशुर ये होइ छइ।

सेह सुधीरकऽ कहइत सुनने छल्हयई-" बाडेड कंपनी छइ। हमहुं सब अखइन तक देखने छी, पल्हरने नचि छी।"

ओ जे मुंहझौसा भाइ आयल छलइन, से कहलकइन-" च्चक्ली मे नकली लेबल लाइग जाइ छइ। असली रव्हतइन तऽ दाम बला लेबल सेहो रव्हतइ की ने?

ब्बाव्हरकऽ ई सब जाइन कऽ बडड दुख भेलइन। फेर सोािलाह- भाइ तऽ भाइये होइ छइ। आइ भाइ, ज्यो अपना संग शहर मे नचि रखने रव्हतइथ, तऽ अइ च्चथत मे ब्बाव्हर थोडबे पहुंितइथ। गाम मे रहलासँकेना बुचि भष भऽ जाइ छइ। जव्हया पढई छलाह भाइ, कतेक पगब्बाशील सोा छलइन। आइ गाम मे रहइत रहइत सब सोाि मे घुण लाइग गेलइन।

माय फेर ब्बाव्हरकऽ बुझेलब्बन। बाकी सब छोडऽ । सब घर मे अव्हना होइ छइ।गाछकऽ कतउ पात भारी लगइ छइ। जव्हना सुधीर लोकइन रखताह, हम रहबइन।

ाइर च्चन लेल अयलाह अइछ। खुशी खुशी अपन जाह।देब्बयह ने, नमन च्चकछु बइन जेतइन। कतेक िसगर देखबा मे लगइ छइ। तुहो नेना मे अव्हना लगइ छलह।दुनु भाइ अव्हना ब्बालजुल कऽ

रहइ जाऽ ।

मायकऽ तऽ अपन बेटा केहनो देखबा मे होइ, सुन्दरे लगइ छइ। मास्टर बचिा मे कतउसँसुन्दर नहि छलाह। आब कनी मोटेलाह आ पदक गौरि माथ पर एलइन, तऽ कपार िमकऽ लगलइन।

ई नमनकऽ मैच क पास कयते अपना लग राईख लहुन। तोरा लग रहतुन तऽ आदमी बइन जेताह। नहि तऽ गाम मे रही कऽ उच्चायागर नहि हेथुन। पछुने ईएह गामसँअतेक लोक पईढ ल्लिख कऽ हाकिम हुकुम बनल। नबका मे तऽ मुश्किले लगइत अइछ।

मास्टर हा ना, किछु नहि कहलखिन। मैच क केलाक बाद मास्टर, नमनकऽ अपना संग दिल्ली लऽ एलखिन।अतऽ ग्यारहिा मे नाम लिखाबऽ सँपहिने स्कुल सब मे परीक्षा होइ छइ। ओइ परीक्षा मे नमन पास नहि कऽ सकलाह। आब दुईये टा रास्ता बिलइन, घुइड कऽ गाम मे आगुकऽ पढाइ करस िा दिल्ली मे केहनो स्कुल मे नाम लिखालि जइन।

नमन अपने ठाणथ लेलाह जे आब हम गाम मे नीकसँपढाइ करब आ बारहिाकऽ बाद दिल्ली मे रहब।पढाइकऽ माध्यम सेहो एकटा समस्याकऽ र प मे आयल छलइन।

ईएह भेलइ। नमनकऽ परीक्षा मे असफलता उनका पढबाक ओर उन्मुख केलकइन। गामेसँबारहवीं केलाह। ओही साल इंजीनियरिंग मे एडमिशन सेहो भऽ गेलइन।

सुधीर गामक अंगरेजी मिडिया स्कुल मे कम्मे पाइ पर पढबऽ लागल छलाह। नमनकऽ पढाइकऽ खर्चा दादीकऽ पेशनसँजाइ छलइन।

नमनकऽ इंजीनियरिंगकऽ अंतिम साल मे कैम्पस सेलेक्शन भऽ गेलइन।दादीकऽ इच्छा लऽ कऽ नमनक बियाहि गामसँभेनाइ तय कैल गेल छलइन।

बाबूजी सेहो सपरिवार ओइ बियाहि मे शामिल होइ लेल गाम गेल छलाह। भौजीकऽ गोर लागऽ गेलाह।

"हमर बेटाकऽ लोक तऽ दु साझ खाई लेल नहि देलकइ।अपन घरसँघुरा देलकइ। आइ हमर भगिनि सुनलाह। "

ई बात सुनिते नमन बजलाह- " मा। ईएह कका छइथ जिनका लऽ कऽ हम अतऽ तक पहुंचलिऊं।ओ हमरा बचपनी डेरा पर

रखबाक लेल तैयार छलाह, हमही नहि मनलियइन। हमरा इंजीनियरिंग मे हर महिना पढई लेल पाइ पठबइ छलाह। इनकर आदेश छलइन जे ई बात आहा ककरो नहि कहबइ।हमर असफलता, आंईख खोललक। समय समय पर हमरा रस्ता देखबइत छलाह।"

बालेश्वरकऽ किछु देर बाद अइ बातक आशय बुझबा मे एलइन। ओ सन रही गेलाह।

नमन तऽ बच्चेसँअपन मायकऽ बाजल ऊकटा पैपी सुनैत सुनैत पैघ भेल छल।ओकरा होइ छलइ जे समयक संग ओकर मायकऽ कटुवाणीकऽ धार मद्धिम हेतइ, मूदा ई बढ़ैते गेलइ।

बालेश्वरक माय सेहो उईठ कऽ एलीह। " हम तोरा कहने रहलियह। मोन छह। ई नमन बडड िसगर देखऽ मे लगइ छइ। देखह , आइ सचि सबहक सोझा मे रखलक।"

बालेश्वरकऽ भौजी अतेक बरखसँविकार अपन मोन मे रखने ढोअइत छलीह। आइ उनकर सब विकार धोआ गेलइन। ओ नोरसँडबडबाइत आंईखसँबालेश्वरकऽ तरफ देखइत बजलीह- " हमरा माफ कऽ दियह। अतेक कष्ट सहलो पर आहाकऽ पवारिक मान मयादा रखबाक पयास कयलऊं। गरीबीकऽ कारण हमर सोिऽ कऽ

तरीका बदइल गेल छलाय।

जखनिया आहा हमरा देखS होस्टल मे आयल रही, तखनिये आहाकS भोलापन देखी कS हमरा बुझा गेल छल जे आहाकS भाइ आ पत्नि केहन भेटत। आहा सबहक सोच सच मे हमर नैहरोसँनीक अइछ।"

सुधीर सेहो आंगन मे ठार भेल सब देख सुइन रहल छलाह। ओ भइड पाछा कS बाबुजरकS पकइड कS कानS लगलाह।

बाबुजरकS मायकS आंईखसँसेहो नोर खइस रहल छलइन।

इमहर दुनु बेटाकS बीच बढल जाइत दुरीकS देखलासँउनकर आंईखसँहरदम पाइन खइस जाये जाइन।लोको सब जाइन बुइझ कS एहने एहने गप करS आइब जाइ छलइन।

" आब हम मरबो करब तS चैन सं। अपन संतानक बीच मे मतातरकS हम अपन कमी बुझई छलऊं। ई सबहक पाछु गरीबी छइ। ईएह मनुक्खक दिमागकS खराब कS दइ छइ।"

तइ पर नमन बजलाह- " सब बाबु कथी कहैते रहब तS हमर बियाहकS ओरियान कोना होइत।"

ई सुनिते हंसीकS ठहका आंगन मे छुइट गेलइ।

दोषी के? (लघुकथा)

एना कच्चेया तऽ क लित?- आशा बजलीह।

जच्चेया तक िहब, तच्चेया तक लित।- अमन बजलाह।

आब हमरा डर होइत अइछ।

कथीक डर?

आहा छोच्छ कऽ तऽ नचि िइल जायब?

एना चकयैक सोिई छी? की भऽ गेल अइछ? हमरा मे चकछु बदलाि देखलऊं की?

हमरा चकछ भेल नचि अइछ। मूदा हमरा बुझा रहल अइछ। आब ई बेशी चदन नचि िलऽ त।

" अतेक चदनसँ िइलते अइछ ने। अच्चेना आगुओ िलऽ त। आब छोडु ई सब ढकपैिी। बुझाइत अइछ आहाकऽ आचकस मे बेशी काज नचि अइछ। तै चदमाग मे अंटशंट बात उम्हडइत रहइत अइछ"-

ईएह कहइत अमन कच्सया कऽ आशाकऽ दबोिला। फेर दु ियिस्कक बीिकि खेला शुर भेल। आइ खेला मे आशा ओतेक सहयोग नचि करय छलच्खन। अमन ई बुझई छलाह। ओ चकछु नब तरीकासँखेलाय लगलाह। फेर धीरे-धीरे आशाकऽ नबका खेला नीक लागऽ लगलइन। बडी काल तक िलइत रहलइ। फेर

थकला बाद दुनु गोटे एकदोसरा मे गच्चया कऽ सुइत रहलाह।

भोरे अमन - आशा एकबेर फेर पेमालाप कयलाह। अमनकऽ च्वक्ली घुरबाक छलइन। ओ ाहि पी कऽ ाइिल गेलाह। आशा असकर घर मे पडल छलीह। थोडेक देर बाद दाई अयलइन। एक बेर फेर कडक ाहि बनबइ लेल ओकरा कहलच्वन।

आइ काइल चकयैक ई सब नीक बेजाय माथा पर नाइित रहइ छइन। आचकस मे सेहो ओतेक मोन नचि लगलइन।अतुका सबसं बडका अच्चकारी ओ छइथ। सब उनकासँ छोटे छइन। आचकस जास ि नचि? चकयो रोकऽ टोकऽ बाला नचि।

आइ एकटा स्कुलक फंक्सन मे सेहो जायकऽ छइन। ईएह मूख्य अच्चाच्य छच्य। आदशर्वादी बात कहऽ मे कतेक नीक लगइ छइ। आशा शब्दक ायिन मे महारथ हाचसल केने छच्य। इनकर संबोधन बडड सारगभार्वत रहइत छइ।बचर्सँई च्कबेट सब मे पाईज जीतइत रहलीह। माईक हाथ मे अबते टोन ऊयाह पच्वायोचगते बाला भऽ जाइ छइन। जखइन समारोहकऽ मुख्य अच्चाच्य मे पच्वायोगी बाला जोश खरोश होइ तऽ ओइ भाषणकऽ कहबे की। खुब लोकचपय भेल जा रहल छलीह। अतुका अखबार मे रोज इनकर कोनो ना कोनो समाचिर सच्वत फोटो रच्वते छइन।

फेर साझु पहर ओइ समारोह मे गेल छलीह। ओच्वना ओजस्वी भाषण भेलइन। मंचसँ आयोजक लोकइन आशा जेका बेटी सब घर मे होयबाक बात कहलच्वन। कतेक लोक इनकासँ आशीवार्द लेलक। जच्वना इमानदार ओच्वना सुनर , कमच्च आ मृदुभाषी आशा छलीह।

आशा पैघ पशासनिक अधिकारी छलीह।बच्चा सब देहरादून मे बोर्डिंग मे पढ़ई छलइन। आशाक घरवाला भरत दिल्ली मे एकटा पाईवेट कंपनी मे काज करइत छलाह। उनका स्वाभिमान बडड छलइन।ओ आशाक धन- दया पर नहि जीबऽ चाहइ छलाह। शइन डइब कऽ आशा लग पहुंचने अबइ छलाह। दिन पर दिन आशाक व्यस्तता बढ़ते जा रहल छलइन।भरत धीरे-धीरे एनाई गेनाई कम कऽ देने छलाह।

भरत आ आशाकऽ चारि घरकथासँभेल छलइन। जखन बेटा ब्याह भेलइन तखन अतबे बुझल छलइन - " लडकी पत्रकारिता परीक्षाकऽ तैयारी कय बरखसँकऽ रहल छइ।"

आशाकऽ सफलता नहि भेट रहल छलइन आ बयस बढल जा रहल छलइन।

आशाकऽ माय बाप पर बिन ब्याहल बेटीकऽ रखनाई आब असह भऽ गेल छलइन। ओ सब पाईवेट कंपनी मे काज करइत भरतसँब्याह निश्चित कऽ देलखिन। जखइन आशा परीक्षाकऽ बाद गाम गेलीह तऽ देखइ छथि जे ब्याहक काडथतक छपा गेल छइ।

घरक इज्जत बेटीक हाथ मे। आशा पर विश्वास कऽ कऽ माय बाप सेहो औकातसँबेशी खर्च कऽ दिल्ली मे राईख कऽ पढाबऽ मे केलखिन।सफलता नहि भेटला पर कोनो कुबात नहि कहलखिन। आब आशाक पारी छलइन अपन जिम्मेदारी निभाबऽ के।

बियाह दान आशाकऽ भरत संग भऽ गेलइन। बदली फेर आशा घुरली तऽ ओ पचायोचाता परीक्षाकऽ तैयारी अपने शुर कऽ लेहली।

भरत जखइन इनकर इच्छा देखलखिन तऽ ओहो इनका संग देलखिन।पढाइकऽ संग गृहस्थ जीनि बीतबइत दु टा बचाकिऽ माय सेहो भऽ गेलीह। विधिकऽ विधान देखियउ।परीक्षाक पचणाम इनकर पक मे भेलइन। आशाकऽ पशासनिक सेवि मे ियन भऽ गेलइन। कैडर सेहो बदलीसँसटले हरियाणा भेटलइन।

जई पखंड मे आशाकऽ पहिल बेर नियुक्ति भेलइन। ओतऽ एकबेर अमन पहुंलाह। बदली मे बियाहसँपूर्थ परीक्षाकऽ तैयारी करय लेल आशा रहइत छलीह। ओतऽ उनकर की, आरो कतेक छौडीकऽ अमन बडड नीक लगइ छलखिन। अमन आ आशाकऽ दोस्ती मयादासँआगुकऽ भऽ गेल छलइन।अमन कयेक बेर आशा लेल अपनाकऽ कष देने छलाह।

ओना अमनकऽ दोस्ती आरो कयेक बांदास छौडी सबहक संग छलइन। अइ लऽ कऽ आशा- अमन मे नोक झोक सेहो भऽ जाइन। अही बीि अमनकऽ बदली सेि आयोग मे नौकरी भऽ गेलइन । आशा तऽ गाम घुइड गेल छलीह।

आशाकऽ हरियाणा मे जिइन कचते अमन आइब धमकलखिन। आशा- अमन असगर होइते अपनाकऽ नहि रोईक सकलाह।

आब शुर भऽ गेल छलइन इनकर सबहक पुरना संबंधक खेला। ओना साधिानी दुनु तरफसँबरतल जा रहल छलइ।

भरतकऽ आब आशाक बताि मे बदलाि लाइग रहल छलइन। समाज मे हैसइत मे अतेक अंतर दुनु गोटे मे आइब गेल छलइन जे भरत अपनाकऽ अपमाित महसूस करऽ लागल छलाह।आशाकऽ बुझबऽ कऽ कोशश कैला पर, आशा आकामक भऽ जाइ छलखन। अमन जोडुकऽ गुलाम नि कहाबऽ िहइ छलाह।

भरतकऽ गेनाई बहुतही कम भेल जा रहल छलइन। जखइन छुटी मे बचाि सब घर रहइ, ततबे दन भरत आशा संग रहस। आशा-अमनकऽ फोन पर कयेक बेर गप होबऽ लगलइन।

एकदन भरत आशा मे बहस अतेक बइढ गेलइन जे भरत आशा पर हाथ उठा देलखन। आशा ततेक ने पतीकार मे आइब गेलीह जे तखने अमनकऽ फोन पर सब बात कहलखन।

" आब इनकर कोनो उपाय लगाऊ। हमरा आब बदाशतसँबाहर अइछ।"- आशा बजलीह।

"अच्छा। रईक जाऊ। हमरा सोिऽ दयह।"अमन बजलाह।

" कदया तक सोिइत रहब? हमर जान लऽ लेत ई पगलबा, तदया तक सोिते रहब।आइ गदध दबने छलाय। हमरा तऽ भेल की मरये गेलऊं। ई मूखथिपाट कतऽ सँबथा गेल हमर कपारे।"- कन कऽ कानऽ लगलीह आशा।

अमन उनका बोल भरोस दऽ कऽ शात केलखिन। दुनुकऽ बीि एकटा योजना बनलइ। अमनक योजना सुनतहि आशा जोश मे आइब गेलीह। अजुका खेल मे अमनकऽ बहुत आनंद आशा देलखिन।

हफ्ताह बितइत बितइत एकदिन दिल्ली मे पुलिसकऽ सुि ना भेटलइ जे भरत नशाकऽ कारोबार मे शामिल छथि।

पुलिस उनका पर दबिश देलक आ नशाक पुड़िया उनकर गाडी मेसँबरामद भेलइ।

भरत अइ सब पदाकऽ पाछुकऽ खेलासँअनजान छलाह। पुलिस उनकासँनशाकऽ कारोबार मे शामिल आर लोकक नाम लइलेल दबाि बनौने छल।आशा सेहो अमनक पकडेला उपर दऊड बडहा करऽ लगलीह।

नशाक समानकऽ केशक जाि करइत पुलिस अमन तक पहुंि गेल। शुरआत मे अमन अपन अनभिज्ञता जाहिर करइत रहलाह। पुलिसक सख्तीकऽ बाद अपन संलिप्तता तऽ गइछ लेलखिन लेकिन आशाकऽ नाम ज़बान पर नहि एलइन।

अमनक कहब छलइन-

" हम एकतरफासाहे आशासँपेम करय छलऊं। हम भरतकऽ जेहलसँछोडा कऽ आशाकऽ दिल जीतबा िहइ छलऊं। अइ अपराधक लेल हम दोषी छी।"

भरत जेहलसँछुइट कऽ आइब गेलाह आ अमन जेहल मे बंद भऽ गेलाह।

आशाकऽ घर आ पत्नाष ा टुटऽ सँबाइि गेलइन। अमनकऽ अइ अपराधकऽ लेल ओ बराबरकऽ साझी छलीह।

पढाइकऽ बादनसँलऽ कऽ आइ तक अमन , आशा लेल त्याग करइत रहलाबन। आइ समय एहन आइब गेलइ जे आशा अमनक त्याग ककरो कहलयो नहि सकइत छथिन। अपना नजर मे आशा दोषी त छथिहे।

बतहबा गाछी

ओकरा गाम मे सब "बतहिया" कहइ छलइ। कियो कियो "बताही " सेहो। ककरो गलती नहि छइ। ओकर करनाये एहने रहे। नहि ठीकसँ इल कऽकर सकइ छलइ, नहि बजबे समझ करय, नहि नुआ साया पहिरऽ कऽ ढंग, कहमागसँतऽ पैदल रहबे करय, कखइन लेर पोटा बहऽ लगइ तकर सेहो नहि ठेकान, हंसई सेहो अजबे छलइ।

कियो कहइ जे "लोथबी" छइ, कियो अलबटाही त कियो आर किछो किछो।

ओ बऊक बहिर नहि छलइ। नहि कहियो दुख्बत पडई, नहि खाय पीयऽ मे भाभट देखबइ, लाज- धाख सेहो बुझई।अपन दुख तकलीफ नहि ककरो कहइ, नहि हकले करय, नहि र सई, नहि फुलइ, कखइन सुतइ, कखइन ऊठई, लोक तइकते रही जाइ।

ओ छलइ सरदाकऽ बतहिया पुतोहु। सब ओकर मरबाक इंतजार करय छलइ। एहनो कतउ भेलइया।मरण जीयन अपन हाथ मे छइ। एतऽ ओकरा सास- ससुर फंझइतकऽ तऽ र रखने रहइ। एकरा मारबो पीटबो करय सब। तखनो एहन अकखज रहइ जे किछु नहि होइ। फेर अचाला कहन दलछनबचिया असोरा पर ऊकी पर

चिराजमान भऽ जाइ।रोज माग मे चमन्दुर केनाई नचि चासडइ। आंगन बडकी टा रहइ। दस फचककऽ उएह एक टा अंगना। चकयो दुबगलीकऽ कातसँपाछु मे फुसक घर बन्हने छच्य तऽ चकनको चस्सा मे ओहो मडई नचि।चकयो पाछु बला सरकारी पोखइडकऽ महार भइड कऽ एकिरी खसा रहइ छलाय। तखनो सबहक चन कच्ते लिइ।

पुर ख पातर लेल संच्मया दलान छलाई। ओतऽ चकयो टुटल िकीकऽ पायाकऽ बदला ईटा जोईड कऽ , तऽ चकयो बासक तख्ती बना, तऽ चकयो बाबा आदम जमानाकऽ पलंग पर ओतऽ सुइत रहइ छलइ। कोन फरीककऽ कतेक चस्सा ? नचि फचछायल छलइ। ई दलान गोसचिया बुझु। सबहक बरोबइड अच्मकार। पाहुन परखकऽ एला पर ई खाली कहबाक लेल पलंगकऽ छोच्ड देल जाइ छलइ। सब नीभल जा रहल छलइ। सरदाकऽ सब गोच्ाये दचद रहइ। सरदा ओहु मे सबसं सफाटि छलाह। सब िइट पोईछ कऽ खा िकल छलाह। आंगन मे एकटा मडई आ ई दलान छलइन जे अढ छलइन।

बरसात मे ई दलानकऽ छबेतइ के?

जे माच्मक हेतइ, सैह ने छबेतइ?

अही फेरी मे एकरो खसले हाल छलइन।

दोसर टोल बला कहइ की ई गैरमजरआ जमीन मे बनल छइ। सबहक चक्ख्सा भेलइ। कय बेर माइड पीटकऽ नौबत आइब जाइ।

जतऽ गरीबी रहत, ओतऽ संतोनोत्पत्ति बडड होइत। खंऊजखेहर जेका सरदाकऽ गोच्चाया सब लाठी फटा लऽ कऽ आइब जाइ। अइ लंगा संकऽ लागय। गंऊआ सब घुइड जाय। ओना नजर अइ दलान पर सब गडौने रहइ छलाय।

सरदाकऽ बाप इनकर नाम शशिनाथ रखने छलथिन। गरीबक पुरा नाम कच्चयोसँनहि लेल जाइ छइ। शशिनाथकऽ बेटासँछोट सब सेहो इनका सरदयकहइन।चक्कयो सरदा भाइ सेहो कच्च दइ छलइन।

गरीब लोककऽ अपमानजनक संबोधन खराब लच्चातो नहि छइ।सुनहि त सुनहि त कान आ माथ मे ठेहा पइड गेल रहइ छइ। अइ पर आब कोनो असर नहि।

शशिनाथकऽ बेटाक नाम इमहर उमहरकऽ थोडे हेतइ। इनकर नाम हृदयनाथ छलइन। गंऊआ सब हृदयनाथकऽ हरदा कहइन। बच्चेयो हरदी सेहो।भइड गाम मे शशिनाथ टा अपन बेटाकऽ हृदयनाथ कहइ छलाह। जखइन कऽ सरदा अपन बेटाकऽ शोर पाडस, सब सुनऽ बालाकऽ अइ सैहबी पर हंसी छुअइट जाइ। देखू ने छगुन्ता इनकर - हृदयनाथ।

सरदाकऽ नहि जमीन जाल छलइन, नहि बापे किछु छोड़ि कऽ गेल छलखिन। अइ हालत मे कोना घरक खिला जडई छलइन, सैह अचरिजक बात। बाद मे पता चिलइ जे सरदाक कनियाया गाम मे दु चािरटा नीक घर पकडने छलीह। उनकर सबहक काज - धंधा कऽ दइ छलखिन। बदला मे पसेरी, दु पसेरी अन पाइन आ बसि खुसि खेनाई भेट जाइ छलइन। ओहीसँअपन घर चिलइ छलइन।

सरदाकऽ बेटा हरदा सेहो तीन बेरे मैट्रिक केलाक बाद इमहर ओमहर बऊआइत छल। एकदिन सरदाकऽ कनियायाकऽ जतऽ काज करय छलीह, ओतऽ एकटा हरदाकऽ लऽ कऽ कथा एलइन।कथा की? एकटा अलबेलाक लखि बाला बात। इनकर कान मे किछु कहल गेलइन। मऊगियायाही कथा चालित भऽ गेल।नीक पाइ तखने सरदाकऽ कनियायाकऽ हाथ मे राईख देयेलइन।अतेक पाइ ओ देखनेहे नहि रहथिन। आब पाइकऽ शब्द बाजऽ लगलइ।

हं। हं। हम तैयार छी।

ककरो पुछबाकऽ काज नहि।

जखइन मोन हुअय। हृदयनाथकऽ लऽ जाऊ।

सरदाकऽ कनियाकऽ आइ बुझाय लगलइन जे बेटाकऽ जन्म देनाई साथक भेलइन। अही लेल लोग बेटा लेल मडइत अइछ।

दऊरल घर घुरलीह। फेर तीनु गोटे गाछी दिश जाइ गेलीह। ओतऽ सब बात कहलथिन। सुनिते सबकऽ खुशीकऽ ठेकाने नहि।हरदाकऽ सचिपक कीट सब उनका सबकऽ पठा देलथिन।

दर दिअयद मे नहि ककरो कहल गेलइ।

ककरो नहि बतेबइ।

बुझत तऽ कथा मोइड देत।

िपेिप दिन तकािल गेलइ। बाहरे बाहरसँकछु बरियाती संग हरदा गेलाह। बियाह दान भेलइ। बरियातीकऽ बिदाई आ हरदाकऽ दु महीना बाद कारपोरेशन मे पका नौकरी भऽ गेलइन।

हरदाकऽ पाइ भेटलइ आ ऊपरसँनौकरी भेट गेलइ। महीने महीने मनीआडर सरदाकऽ आबऽ लगलइन। मडईकऽ जगह पर पका ईटाकऽ घर भऽ गेलइन। दशमी छुटी मे हरदा गाम

आयल तऽ दलानकऽ छान्ही नब खरसँछडि देलकइ।

अस्सी बरखक च्यतीया बजलच्वन-

हम आइ तक दलानक पुरा खर बदलाइत नचि देखने रही। ठीके कहल गेल छइ - जीबी तऽ की की नचि देखी।

दलान परहक ईटा लागल िकीकऽ जगह सखुआकऽ पाया लाइग गेलइ। बास बाला तख्त पर बढई नब िकी बना देलकइ। आब दलान बंगली जेका लागऽ लगलइ। हरदा आब गाम मे हदय बाबु आ हदय भैया कहाय लागल छल।

हरदाकऽ लोथ कन्यासँब्याह भेल छलइ।धन सम्पइतकऽ कोनो कमी नचि छलइ। ओकर कका मंती छलइ। ओकरा नैहरा मे सब लोथही कहइ। ओ कय बेर बडड जोर दुच्वत पडई। डाक्टर दि सेहो जिब दऽ दइ। मूदा फेर लोथही जीब जाइ।

इमहर लोथहीकऽ बयस बढइत गेलइ। देह मे अंग सब मे उभार आबऽ लागल छलइ।केदन जोतखी ओकर बापकऽ कच्च देलकइ जे अकरा च्संदुर नचि पडतइ तऽ तोरा दोख हेतह। ईएह दोख छोडबइ लेल हरदाकऽ नौकरीकऽ लोभ दऽ कऽ च्संदुरदान करालि गेलइ।

सबकऽ उमेद छलइ जे दुच्वत लोथही दु- तीन बरख मे मइड जेतइ। हालत देखऽ मे तच्चना लागइ। भरण पोषण लेल एकटे पाइ ओकर नैहरालिा सरदाकऽ दऽ देने रहइन।

कहल गेल छइ- अपन सोिल नचि होइ छइ।

लोथही तऽ सासुर अयलाकऽ बाद डेबा डेबी िलहो लगलइ। अपनेसँकपडा लता कहूना बदइल लइ। पुरा देह झापऽ ओकरा नचि आबइ। लोकक ताक झाक ओकरा नीक लगइ। ओ देह देखबऽ लगइ।

हरदाकऽ माय शुर मे तऽ झाप तोप कऽ दइ। बाद मे पच्छने सरदा फेर ओकर माय लोथही पर हाथ उठाबऽ लगलइ।अकरा सासुर मे बतच्छया सब कहइ।

बतच्छयाकऽ कतबो सासुर मे दुख दइ, ओ ढीठ भऽ गेल छल,लोकक सामने नचि कानचि खीझई।

गामक छौडा बतच्छयाकऽ देखऽ आबइ। ऊं आं मे ज़बाब दइ। आंईख खुब मटकबइ।टोल परोसकऽ पुरख पातरकऽ अइ अंगना मे अबरजात बढऽ लगलइ। दलान मे सब बेबसथा रहलाक बादो पुरख सबहक नजर बतच्छये चक्श रहइत छलइन। बतच्छया उनका सबके चारााश नचि करयन।जाइन ि अनजाइन, कच्छयो चककछु देखा दइन। ओकरो लोक नीक लगइ।

हरदा िइर बरख तऽ बतच्छयाकऽ मरबाक इंतजार केलक। ओकर बाद ओ बाहरे बाहर दोसर बायाह कऽ लेलकइ।गाम नबकी कन्ायाकऽ नचि आनचि,मूदा अपने आबय।दोसर बायाहसँनोकरी छुटबाक डर होइ।

इमहर हरदाकऽ कमाइ बढल जा रहल छलइ,ऊमहर बतहिया पर अत्याचार।

ओही आंगन मे रहनिहार रमनकऽ बतहिया भौजीसँ बडड गप होइन। ओना रमन बतहियासँ बयस मे छोट छलाह, लेकिन दुनु गोटेकऽ पटान बडड।इशारे इशारासँ सब गप भऽ जाइन।

गंऊआ लेल सरदा बहुत माहाइत सज्जन लोक छलाह। घर मे अबिते ओ बतहिया लेल राक्स भऽ जाइ छलाह। बतहिया अपन देहक चोट सब रमनकऽ देखबइन।

बतहियाकऽ सासुर अयलाक बाद ओकर नैहरसँ नहि कियो बजेलकइ आ नहि खोजे पुछारीक लेल कियो एलइ। ओकर नैहरा बला लेल पाइ दऽ देलाक बाद कतव्य खत्म।

हरदाकऽ शहर मे रहिते धीया पुता भेलइन।सरदा आ उनकर कनिया मइड किल छलखिन। हरदा गामसँ संबंध तोइड लेने छलाह। बतहियाकऽ सब महीना नैहराकऽ जमा कयल पैसाक सुदीसँ पोस्ट आफिससँ पाइ भेट जाइ छलइ। आंगन मे कनिया काकी ओकरा दु साझ भोजन दऽ दइ छलखिन। बतहिया पाइकऽ महत्व बुझऽ लागल छलइ। थोड पाइ कंतोल मे जमा करय। कहियो दुखित

पडबे नहि केलइ जे ककरो सेहो काज पडतइ।

रमन महानगर मे पाईवेट नौकरी करऽ लागल छलाह। पढहो काल पाइकऽ काज पडइन तऽ बतहिया भौजी दऽ दइन। आंईखक सुख लेल शुरु भेल दोस्ती धीरे धीरे स्नेह मे बदइल गेल छलइ।

एकदिन रमनकऽ गामसँ खबइड एलइन। बतहिया मइड गेली। लाश आंगन मे पडल छइन। हरदा गाम आबऽ सँमना कऽ देलकइ। बतहियाकऽ नैहरबला सेहो नहि कान बात लेलकइ। संपइत किछु छइन नहि। घरारी हरदा कबाला कऽ लिकल छइ। अइ मे बिना धनक लोभ मे पोसपुतो बनऽ बाला कियो नहि छइ। गामक लोक एकाएकी एलइ आ तुलसी पीढा लग राखल लाशकऽ देख कऽ घुरी गेल।

रमन कहलखिन-

हम बतहिया भौजीकऽ मुखाग्नि देबइन। हम आइब रहल छी।

रमन तखने गाम बिदा भेलाह। जे पाइ कौडी छेलइन संग लऽ

गेलाह।

दाह- संस्कारकऽ बाद जखइन बतच्चयाकऽ कंतोल खोलल गेलइ तऽ ओही जमानाकऽ बारह हजार रपया आ पासि भइडकऽ करीब सोना ादीकऽ गहना राखल छलइ। एकटा कागजकऽ परिी पर च्चखल छलइ-

हमर दाह संस्कार करऽ बाला, अइ सम्पइतक बाचस हेताह।

दु हजार खिा भेलइ। बाकी पाइसँजमीन कीन कऽ " गाछी" लगालि गेलइ। ईएह गाछी " बतच्चया गाछी" कहबइ छइ।सदोसँगामक लोक थोड बहुत आम अकर खाइत छल।

ओही गाछीकऽ रमनक बेटा सब गाछ बेि देलकइ आ जमीनकऽ फ्लाट बना कऽ बेि रहल अइछ। बतच्चयाकऽ च्चाशानी आब सब खत्म भऽ गेलइ।

डालडा पसाद (लघुकथा)

फेकु बाबासर ओना कथा ािकि छथ्थि। रामायणकऽ िपाइकऽ बात बदन पाठ करय छथ्थि। बहुते पाबा कंठस्थे छइन। तखनो कहल जाइ छइ, जे कंठस्थ रहलो पर, पोथी सामने रहबाक ाही, तै रामायण सामने रखइत छथ्थि। इनकर रामायण, तुलसी रामायण नबि छलइन, लेबकन जे भी छइन.......छइन बडड कणाबाय। जखइन ओ साझ मे पाठ करइत रहइ छथ्थि , तऽ राही- बटोही सेहो दु पल लेल रईक जाइया आ शणिक आनंद लइया।जतबे काल फेकु बाबासर रामायण बंिई छथ्थि, ओतबे काल पसन मुदा मे देखबइन। बाकी तऽ , गऊंआ लेल ओ झनकटाह छथ्थि। भइड बदन उनकर घरसँ बकिरा-बकिरीकऽ आाजि अबइत रहत। पुरा घर मे बकयो धीरे बबनते नबि छइ।

कथा बंिलासँकी पेट ालइ छइ। आब कहा ओहन धमात्मा रही गेलाह अइछ, जे कथा सुइन कऽ बकछु सीा(अन) रोज बनका देथ्थन। महीना दु मबना पर फेकु बाबासर नबि जाइन कोन देश जाइ छइथ, ओतऽ सँघुरलाह पर अन पाइनक बोरा संग रहइ छइन। अकर बाद थोडे बदन घर मे शाबाये नबि, िहल-पहल सेहो रहइ छइन। दस- पन्द्रह बदनकऽ बाद फेर उएह रामा- उएह खटोला। गऊंआ सब अभ्यस्त भऽ गेल छलइन इनकर घरक हाल के। घरक शात माहौलसँपता लाइग जईताय जे फेकु बाबासर अखइन नबि छथ्थि।

भगिन गरीबी तऽ दइ छथिन, मूदा ओकर संग कोनो गुण सेहो ओहि लोक मे गइढ दइ छथिन।फेकु भाइसरकऽ घर मे सबहक गला, सुरीला छइ। हर मंगल कऽ , महाविरजीकऽ कीतर्ण उनकर घरक लोक करय छल। ढोल मृदंग, हरमोनियम, झाल सब उनकर घरे मे छलइन। ऊपरसँ"थपरी"कऽ धुन, गीतकऽ आर महो महो कऽ दइ छलइ। परसादी सेहो रहइ छलइ- नवि भेल तऽ थुरी लतामे! अगि फुलायल खुदीकऽ विरठ! अच्छना चकछ चकछ।

गामक अपन अपन दशा होइ छइ। बडका कतऽ , नवि चकयो बइसऽ कहत, तखनो भेल्छया धसान जेका सब पहुंति। गरीबहा कतऽ आबेश भेटलो पर हरसटे लोक गेनाई पूजा- तुजा मे अंचयबइ छइ। लेकिन अकर संग, एकटा आर विशेषता छइ, बेटीक बियाह मे सब ओकरा तात्कालिक सम्हाइड दइ छइ। बाद मे भले ही बिल-खुलि गाछी- नासी, गडहा- गुडही कबाला कराऽ लइ।

फेकु भाइसरकऽ गाम पकिोशी मे छलइन। सभागाछीकऽ लग बाला गाम सबकऽ लोग सब , कथा भजयाबऽ मे बडड माहिर होइया। ओ सब सभाकऽ शुरये मे वीहि योग्य नीक लडका " चटप" लेत। ओकरा पर नजर गरौने रहत। ओकर जहा कतउ बिबाह चर्चित होअि लगतइ, ओइ मे भंगठी माइड कऽ ,

कथा गडबडा देत। एना ओकर सबहक फूलपूफ ढंग छइ, जे ओकरा नामकऽ पंसगी भइडकऽ ि ि कतउ नचि हेतइ। जखइन सभाकऽ अंत्तम एक दु बदन बितइ, बर बाबूकऽ आब बान बीयाहले गाम घुरऽ कऽ हालात भऽ जेतइन, तखइन ई सब कथा पस्तुत करत। फेर ि र तरफसँहाफ बबकऽ कऽ , बरकऽ उठाइत आ ि लिइत बनत।

फेकु बासरकऽ ि इर टा बेटी छलइन। तीन टाकऽ बयाह अल्लना भऽ गेल छलइन। सब नैहरसँबेशी सुखी घर मे गेल छलइन। बा ि तकऽ समय सब गइछ लइ छलबन। देबऽ कऽ रहइन, तहैन ने सो ि बाक काज। ओ तऽ बेटी सब सुनचि र आ सुघइड छलइन ....सब सम्हाइड लइन।आब अंत्तम कन्यादान छलइन। अल्लना एकटा पचि म बदशक कलकत्ताया बर टेबइ गेलाह। बेर पर हथपै ि बकछु भेट गेल छलइन।

सभासँबर- बचयाती नेने गाम पहुं ि गेलाह।गामक संबाया पोखइड मे एक आनाकऽ दसमा, फेकु बासरकऽ सेहो बस्सा पडइ छलइन। कल्लयो मछैटा मे इनका एकटा माछ बस्सा नचि भेलइन, लेबकन कहबा मे तऽ छलइन- " ई हमरे पोखइड अइछ।" बचयाती सब पोखइड पर बदशा मैदान कऽ कऽ जमा भेल। एकटा बचयाती माथ मे लगबइ लेल " तेल" मंगलकइ। समाद फेकु बासरकऽ घर पठा ि ल गेलइन। सभाकऽ समय छलइ.........कखइन कोन पाहुन टपकता........ई सोइ ि कऽ रोशनाई बला खाली द ि त मे एक

नम्मर कर आ तेल आ नाचयर तेल बाला खचमका ब्कब्बा मे डालडा च्गालेशनसँआइन कऽ रखने छलाह। राजा, देकिऽ आइब जेतइ, से ककरो बुझल थोडबे रहइ छइ। ऊपरसँफेकु ब्गासरकऽ सोभाि छइन, चकनको उठा कऽ घर लऽ एताह। एक बेर तऽ अक्कना चसदुक्ली बला िधरीजीकऽ सभासँनेने िइल अबइत रहलाह। ओइ बेर ब्गासराइनकऽ समान जुटबऽ मे कतेक थका फजीहत भेल रहइन। तक्लयासँओ पक्लनेहेसँकर तेल आ डालडाकऽ बेबसथा केने रहइ छइथ। अपने चकछु खाई? पाहुन परखकऽ सुखखा सोहारी दइत ब्गासराइनकऽ अपरबात लगइ छलइन।

जे बचयाती लगसँमाथ मे लगबऽ लेल तेल लइला आयल छलाह,ओ टाटाकऽ नाचयल तेलक ब्कब्बा मे "जमल डालडा" राखल देखलाह। चकयो पिमा पास कहूि छठिी फेल, ओ नाचयल तेलक ई डालडासँभरल ब्कब्बा पोखइड पर पठा देलकइ।

बचयातीकऽ तऽ अलगे टशन होइ छइ। ओइ मे एक तऽ पचिम आ ऊपरसँकलकबाया सब। एकटा बचयाती तेल मंगने रहइ, लेचकन मूफ्तउआ तेल बुइझ कऽ , ओ सब बर- बचयाती, माथ के,कऽ पुछइया, भइड देह रगइड रगइड कऽ लगेलक।पुरा ब्कब्बा खाली कऽ देलकइ। साझ मे िनि कैल मलमलक कुता पक्लरकऽ सब फेकु ब्गासरकऽ दलान पर आयल।

आब डालडा, पेरोमेक्सकऽ गमी पर अपन करामात देखेनाई शुर केलक। एक कान- दु कान होइत होइत , सब एक दोसराकऽ सुंघऽ लागल। ऊपरसँकोनो सब्बयाती च्चहकारी दऽ देलकइ। पच्बछनसँपच्छनेहे बर- बच्यराती सब च्चवच्चया गेलइ। सब पराय लागल। फेकु च्चासरकऽ पच्छने तऽ च्चकछु बुझेलइन नच्चि। बाद मे डालडा कऽ गच्चयबइत ओतऽ बच्यराती सब लग गेलाह। फेर खने दौडइत घर पर आबइथ।कऽ नाच्चयर तेलक च्छब्बा मे डालडा रखलक?

पुरा गामक लोक जमा भऽ गेल।

फेकु च्चासरकऽ कच्चाया डलडा डकुबा कच्छ कच्छ कऽ गाइड पढऽ लगलीह। घर मे कना रोहट मइि गेल छलइ। ऊिती- चनिती हुअऽ लागल। एहन बच्छया बर, डालडा दुआरे हाथसँिइल जाय, अइसँबेशी कुसंयोग की भऽ सकइत छइ।

फेकु च्चासरकऽ गउआं सब थोर- थाम लगेलक। बर बालाकऽ बाद मे बुझा गेलइन जे ई मजाक नच्चि, अनजान मे भेल गलती छी। सि पुछु तऽ गलती, डालडा देह मे लगबऽ बालाकऽ छलइन। ओ बच्यरातीकऽ मुफ्तउआकऽ लोभ मे गंधो नच्चि बुझ्झ पेलाह।।बाद मे कयेक टा ललका लाइफ बीय साबुन पोखइड पर गेल। बर - बच्यराती फेरसँरगइड रगइड कऽ नहाइ गेलाह। जुमाना मे फेकु च्चासरकऽ अच्चाला च्चदन एकटा छागरकऽ काटऽ परलइन। तखइन जा कऽ बर मनलाह।

डालडा डकुबाकऽ   किर मे आइ एकटा भेल कुटमैती गडबडा रहल छल। अंत भला तऽ   सब भला। बाद मे सब सामान्य भऽ गेलइ। रसा-फुक्की खत्म भेल।आब ओइ जमायक नाम "डालडा पसाद" सबद्धना लेल सासुर मे पइड गेल छइन।

की सोि‍ल- की लीखल - दीघकथा (पहिल आ दोसर भाग), (अंतिम भाग)

की सोि‍ल- की लीखल (पहिल भाग)

आइ शहरक मंद्दर स्कुलक नबका भि‍नक उदाटन भऽ गेल। चलालाकऽ सब नामी ग्रामी महानुभाि‍ सब पहुंि‍ल छलाह। सास्कृतीक कायक्रम सेहो स्तरीय छल। पाि‍िया रि‍का देि‍ी अपने अचाच्य सबकऽ सि‍ागत लेल ठार छलीह। एक एककऽ कऽ सबकऽ उत्कृष जलपान कराऽ विदा केलीह। जेना लोक बेटीकऽ वि‍ि‍ाहि‍ मे एके पैरे ठार रहइत अइछ, तहिना रि‍का देि‍ी आइ काजक समापन केलीह। सब लोक समारोहक व्यि‍स्थासँबडड खुश छल। लोक सबकऽ विदा केलाकऽ बाद सोझे पलंग पर आइब कऽ अराऽ कऽ पइड रहलीह। कतबो सब कहलकइन जे चकछुओ मूंह जुठया लीयह....... नहि मोन केलकइन। रौबदार एहन छलीह जे दोबाराकऽ आगह करऽ कऽ दुस्साहस कचतइन।

मोलायम बाछान पर परलाकऽ बादो देह मे गडअ लगलइन। चयछला संघषथसब आंईखक सोझा मे नाि‍ऽ लगलइन। कतबो सुतऽ कऽ कोशिश करय छलीह.......नीद कोसो दूर बुझा रहल छलइन। परल परल जखइन थाईक गेलीह त ऊईठ कऽ टहलऽ

लगलीह। तखइन नजर गेलइन जे ओ तऽ साक्छयो नचि बदलली। सजल धजल जन्लना छलीह, तन्लना छचाये। डेचसंग टेबलकऽ सामने जा कऽ ठार भऽ कऽ अपनाकऽ चाहारऽ लगलीह। आइ बुझेलइन जे ओ तऽ बडड सुंदर अखनो छइथ। ऊपरसँनीि तक अपन अंग पत्यंग सबकऽ शीशा मे गौरसँदेखइ छलीह.......अपन देह उनका आइ अपने आकचाश्च कऽ रहल छलइन। हम अतेक सुंदर अखनो छी।अपने पर दुलार आइब रहल छलइन। जखइन दुलार आइबे गेल........त दुलार कइये ली। अपनेकऽ दुलार करऽ लगलीह। कती काल तक अही मे लागल रहलीह। आब गहना गुच्छया सब जे पन्लरने रहइत......ओ सब खोलऽ लगलीह........ धीरे धीरे आब ओइ अस्थिा मे आइब गेलीह......जखइन ओ आ उनकर देहक बीि मे चकछु नचि। अपने देखइत.....अपने मुचसकयाइत....... अपने दोसरासँतुलना मे शेष बुझइत......अपने चान चान अदा देखाबइत........ अपने भाि भंचामा बनबइत...... अपने अगराइत....... अपने चाछराइत.......अपने ईठलाइत.....अपन आनन्दक झुमर मे झुला झुइल रहल छलीह। अपूिथ आनन्दसँलबल डुबल , अलटइत पलटइत ओही लोक मे चीिरिण कऽ रहल छलीह। अखइन ओ मनुक्ख आ ओकर देह, ओकर गंध, ओकर रप, ओकर रंग, ओकर कोण, ओकर चाखार, ओकर नाक, ओकर नक्श, ओकर लंबाई, ओकर गोलाई, ओकर ऊंिाई, ओकर चसहरन, ओकर धडकन, ओकर ऐंठन, ओकर मटकन, ओकर राग, ओकर चीराग, ओकर संगीत आ ओकर धुन मे मदमस्त हाथी जेका जंगल मे असगर बढल जा रहल छलीह। ओ अइ सपि लोकसँबाहर नचि आबऽ िाहइ छलीह। चकछु आर बात चदमाग मे आबऽ िाहइ छलइन, तऽ बेरहमीसँओकरा झटईक दइ छलीह। आनंदकऽ

एक एक पल ओ जीबऽ ाहिइ छलीह। पहुलके बेर उनका अपना देहसँअतेक लगाि भेलइन। आब त ओ इनकर संगी भऽ गेलइन। बडी काल तक अहुना अही अवस्था मे ओ पडल रहलीह।देह कशमशाइत रहलइन। भाकि पाहि अबइत जाइत रहलइन। हाथ कऽ उठअ ाहिलीह लेकिन नहि उईठ पेलीह। ओना सब थकान दुरभऽ गेल छलइन। आब तरोताजा महसूस कऽ रहल छलीह।आइ ओ जीनि मे एकसंगे दु टा सुख भोगलीह। तकरे ामकी छलइन। एकटा सुखक लेल त ओ कतहुयासँलागल छलीह...... परिशम केलीह.......भाग्य आ समय साथ देलकइन .....उमेदो छलइन.......आ पुरो भेलइन। मूदा दोसर त अनायासे। ई आ इनकर देह त सब्बखन संगे रहलइन, तखइन ई अनुभूतासँककयैक ािंवत छलीह। ई त भऽ गेल- एकक संग एक फी ािली बात। जे भी होइ ई " बात " - आब ओ अइ आनंदकऽ नहि छोडतीह।

सब बात जनकि लेल र ािका देािकऽ अखुनका तकक जीािकऽ बारे मे जनला बिना काज आगू कोना बढत!

र ािका मे देाि नाम त बाद मे जुडलइन। पहुने ओ सफथआ सफथर ाि छलीह।उनका अपन पिातासँबेशी भेट नहि लेकिन पिता अपन नाम बहुत बाद मे देलखिन। ओ तखुनका समाज लेल अपन पिताकऽ अिधि संतान छलीह......ककयैक उनकर माय बापकऽ बीाि ािवाहाति वािाहि नहि भेल छलइन। सामाािजक आ कानुनी व्यवस्था एहन छलइ जे उनकर पिता ाििहुयो कऽ इनका सबके अपान

घर नहि लऽ जाअ सकल छलाह। ओ पच्छने सँ बयाहल छलाह आ धीया पुता छलइन।ई नहि छलइन जे पयास नहि केलाह मूदा सफल नहि भेलाह।रश्मिकऽ माय दोसर जाइतक छलीह लेकिन छलीह बडड स्वाभिमानी। उनकर जाइत मे तलाकया मऊगी आसानीसँ दोसर तेसर बियाह कऽ लइ छलाय।उनको नैहरिला सब कहलकइन जे चिन्ता नहि करु ओ ब्याहि कतउ कऽ लीयह मूदा ओ टससँ मस नहि भेलीह। बयस बढल रहबाक बादो पढलीह लिखलीह आ सरकारी नौकरी पकडलीह। अइ नौकरी भेटबा मे उनका सरकारक आरक्षण व्यवस्थासँ मदद भेटलइन।ओ स्वाभिमानी भऽ गेल छलीह लेकिन उनकर इच्छा स्वाभिमानीका होबाक छलइन......से नहि पुरा भऽ सकलइन।

रश्मिकऽ पिता एकमुश्त पैसा रश्मिकऽ मायकऽ नामसँ जमाकऽ देने छलखिन। रश्मिकऽ माय ओइ मेसँ एक ढेला अपना पर नहि खर्च केलीह।

रश्मिकऽ बचपनसँ बाहरे बाहर पढाओल गेलइन। ओतइ उनकर माता पिता अपन सुविधानुसार भेट करबा लेल अबइत जाइत रहलखिन।जखइन रश्मि दसमी मे छलीह त उनकर पिताकऽ मृत्यु भऽ गेलइन।ओ अपन मायकऽ संघर्ष करइत दुनियाकऽ देख रहल छलीह। ओ आजन्म अविवाहित रहबाक प्रण कऽ लेने छलीह।

महानगरीय सभ्यताक लेबाक बाद ओ फिपस अपन मायकऽ शहर मे रहबाक लेल आइब गेल छलीह। सुन्दरता त रशिकऽ बान ब्याहल दहेज मे मायसँभेटले छलइन। फिर तरफसँलोक सब जीभ लपलपेने मंडराइत रहइत छलइन।बान पुरखक घर आ ओइ मे बैक बैलेस- कतेक लोक तऽ शालीनता लाईघ कऽ धृषता तक केलकइन।" यहा न लगाये राऊर माया"- सबसं जाबटइत रशि मजबुत होइत रहलीह। कालकमेण उनकर माय सेहो परलोक सधाइड गेलीह।

रशि सामाजिक कायकर्ताकऽ रप मे शहर मे स्थापित भऽ गेल छलीह। मायकऽ जीवते स्कुल खोइल लेने छलीह। अपन पुरा शम आ बुद्धिमता ओइ स्कुलक विकासक लेल समर्पित कऽ देने छलीह। अखनो नेतासँलऽ कऽ अधिकारी सब इनकासँअपेक्षा बढबइ लेल लालायित रहइ छलाय। सबके ईएह होइ जे "माये एहन त बेटी केहन"।कतउ नम्बर लाइग जाय।

रशिकऽ सभ्यता मंदिर मे एडमिशन भेनाइ पत्थषाकऽ बातभऽ गेल छलइ। रशिकऽ अपना समय मे बाना बापक नामकऽ कारण बडड बदकत भेल छलइन.... ग्लानिकऽ दौरसँउनका गुजरऽ कऽ पडल छलइन। बाद मे उनकर पिता अपन नाम देने रहथिन। अइ स्कुल मे अकर अलगसँकोटा छलइ। रशि आब पगतिशील महिला कहबबइ छइथ।अपन सब जमापुंजीसँसभ्यता मंदिरकऽ नबका भनि

आधुनिक ढंगसँ बनबेलीह अइछ आ अपन मायक इच्छा पुरा कयलीह.......तकरे खुशी छलइन.......अही लेल पयतशील छलीह।

आब उिक ओइ पडाि पर मोन मे चकअए भटकाि आइब गेल छइन......सैह सता रहल छइन। कही चला जज शी शाशा त अकर पाछु मे नहि छइथ। ओ स्कुलक सब फ़क्शन मे अबइ छइथ......विधुर छइथ.....चताक समजाच्च छइथ। चला पदाधिकारी हंसी क कहतो छलाह जे शी शाशा पर कृपा बनबयौन।

रिी आब रिीका देिी भ गेल छइथ। मोन मे अबइत भाि सबके दुरदुरा रहल छइथ। आब एना चिािर चकयैक। फेर मोन पडइन जे पाटी मे शी शाशाक लोलुप नजर। ओ बजइत त कम्मे छलाह लेचकन संग रहबाक मौकाक तलाश मे रहइ छलाह। कतउ कतउसँ उडइत गप्प रचिका देिी सेहो सुनने छलीह जे शी शाशा आर रचिकाक जोडी नीक रहतइ।

आइ स्कुलक फंक्शनक परात छुटी छलइ......तै लेटसँ उठबाक चिािर मे छलीह। तखने घरक दाई उठब एलइन जे जज साहब शी शाशा आयल छइथ। नाम सुनते रिी देिीक देह चसहइड गेलइन।

कहलथिन-

बइसथु आयउन। हम अबइ छी।

- ओ अपने बैठकी मे बइस ि‍कल छइथ।

- डाईरि सेहो छइन!

- नहि अपने डाईकिऽ कऽ अयलाह अइछ।

घबराइत र ि दे ि फेरसँ डेस्क ंग टेबलकऽ सामने ठार भऽ बैठक मे जायसँ पहिने अपनाकऽ समहारि रहल छइथ।

आब की हैथ! जे हमर मोन मे घुमडइ छलाय, सैह शी आशाकऽ सेहो।

पता नहि। की सोि लि आ की लीखल।

ईएह सोि इत अंदेशासँ भरल बैठकखाना दिस जा रहल छइथ।

कीसोिल- कीलीखल (दोसर भाग)

पचणामकऽ अंदेशा स पीडत रचका देिी बैठकी मे गेलीह। ओ त एना डरायल घबरायल छलीह जेना कोनो नेना स्कुल मे गलतीकऽ दइ छइ.......आ ओकरा मरखाहा मास्टरकऽ सामने पठािल जाइ छइ। एक राइत पहने तक त उनकर सामने लोक सबकऽ घग्घी बन्हल रहइ छलइ......राइत बतते ई कीभऽ गेलइ।

बैठकी मे इनका जाइते शी मशा िटसँठार भेलाह। परनाम- पाती भेलइन। कलुका समारोहकऽ बारे मे िि िललइ। रचका देिीकऽ स्तुती गाण शी मशाकऽ रहल छलाह। बीि मे दु बेर िह एलइ। शहर बाजारकऽ गप शप भेलइ...... दुनाया दारी सबपर बहस सेहो भेलइ। धीरे धीरे रचका देिी सामान्य भऽ गेल छलीह। पुरा पभािशाली ढंगसँअपन पक बहस मे रखइ छलीह........तखइन शी मशा शोता भऽ जाइ छलाह , लेकन उठबाक नाम नइ लइ छलाह। बीि-बीि मे िुप्पी भऽ जाइ छलइ।रचका देिीकऽ बुझा रहल छलइन जे शी मशा जेना मौकाकऽ तलाश मे छलाह। रचका देिीकऽ तरफसँकोनो तरहक साफट नइ भेट रहल छलइन। शी मशा चकछु इमहर उमहरसँइशारा मे गप्प उठेबो केलाह। अंत मे हाथकऽ जायकऽ अनुमत मंगलाह।

जाय काल मे भोजन पर नहि बजबऽ कऽ उलहना सेहो केलाह।अइ पर रचिका देवी बजलीह-

-ई कोनो बात भेलइ! आइये र कु। भोजन भऽ जेतइ।

शी ब्राशा बजलाह- नहि नहि। एना नोत थोडबे लेल जाइ छइ।

- आर केना नोत होइ छइ! बाब्यलाम छोडु। आब आहाकऽ खाईयेकऽ जाय पडत। हम सबकऽ एना आगहो नहि करय छीयई।

-हं हं। हमरा बुझल अइछ। हम आहाकऽ नीकसँ चिन्हइ छी।आब आहा कहइ छी त हम रईक जाइ छी। जे खुएब से खाईये कऽ जायब।

- जे ?कऽ सोचिबो नहि कर! खेनाई टा खुयाब।

-हमहुं सै कहइ छलौ जे भोजन मे जे जे चिन्यास रहतइ।

- हम नीकसँबुझई छी ....ई जे जे ?? की छी!

- अच्छा कहू त ? ई जे जे की छइ?

- रहअ दियउ। हम पुरखकऽ गतर गतर चिन्हइ छियई।हमरा सब बुझल अइछ जे आहाक अभिपाय की अइछ।

- जखइन बुझिते छियई तऽ आहाक की दिगिर अइछ।

- कोनो दिगिर नहि अइछ! " heard and rejected."- आइ जज सबहक जेना रचिका देिी बजलीह।

-आहा त जज भऽ गेलऊं!

- फैसला हमरा लेबऽ कऽ छलाय तऽ जजकऽ होइत!

- फरियादीकऽ पक त सेहो सुनऽ कऽ पडत!एकदिसाह

फैसला नहि भेलयउ।

- ठीक छइ। फरियादीकऽ पक रखबाक मौका देल जा रहल छइ। कहू जे कहबाक अइछ।

आब शी मामाशा अपन कनियायाक मरलाक बाद जे एकाकीपन जीनि मे भेल छइन - ओइ सब बारे मे खुइल कऽ कहलथिन। उनकर बेटा आ पुतोहु दोसर शहर मे रही रहल छइन।बरख दु बरख पर िइर भेलन लेल अबइ छइन।दूनु गोटे काज करइत छइन। शी मामाशा जखइन बेटा कतऽ जाइत छइथ त बेटा पुतोहुकऽ उनका लेल समय नहि छइन। तै ओतऽ गेनाई छोड़िदेलाह।

कनियायाकऽ गुजरलाकऽ बाद एहन नहि छइन जे आर स्त्रीकऽ आमंतण नहि एलइन। सब गोटेकऽ नजर इनकर संपइत आ ओहदा पर छइन। कोटथमे फैसला करइत करइत मनुक्खक मनःस्थितिकाकऽ भापअकऽ क्षमता आ शक्ति दुनु उनका भऽ गेल छइन।दोसर मानसिकक स्तरकऽ सेहो सािल छइ- ओ हमरा एके जगह भेट रहल अइछ। कहिक कऽ मौन भऽ गेलाह शी मामाशा। आंईख डबडबा गेलइन।

रचिका देिी िटसँउईठ कऽ शी मामाशाकऽ एक गिलास पाइन

देलखिन आ उनकर पीठ पर हाथ धऽ धेलखिन।

श्री बाबाशाकऽ गला रूंधल छलइन। रचिका देवीकऽ स्पर्शसँ श्री बाबाशाकऽ नोर झहरऽ लगलइन।

रचिका देवी स्तब्ध छलीह।

श्री बाबाशा, रचिका देवीकऽ हाथ पकड़इ लेलखिन।रचिका देवीकऽ ई स्पर्शअभिघात कऽ रहल छलइन।

पहिल बेर अइ तरहक स्पर्श हुनका उनकर सोझा आयल छलइन। ओ एकटा प्यादा जका डिल जा रहल छलीह। नीक बेजाय, उचित अनुचित सबसं बिलग ओ बढल जा रहल छलीह। श्री बाबाशा भावुक भऽ उनका अपन छाती मे सटा लेने छलखिन। अतबो होश मे नहि रहइन जे घर मे काजबाली दाई सेहो अइछ। छोट बच्चा जेका श्री बाबाशाकऽ कानदक आगु रचिका देवी बेबश छलीह।

थोडेक काल बाद दुनु गोटे अलग भेलाह। पुरा घर मे मौनक पहरा परल छल। दुनु गोटे चुप्प। आब रचिका देवी उईठ कऽ दोसर घर मे चलि गेलीह। दाईसँसमाद पठा देलखिन जे श्री बाबाशाकऽ

सेहो ापिस घुइड जाइ लेल।

र च्चीका देंाीकऽ आब अपनाआप पर पाताप भऽ रहल छलइन जे ई की कऽ लेलीह। अतेक च्चदनक तपस्या आइ भंग भऽ गेलइन। अइ शहरक लोक बुझतइ त की कहतइ? दाईकऽ कोन भरोसा- ई त आर नोन मराािई लगा कऽ सऊंसे च्चढंढोरा पीटतइ।

तखने मोटरगाडी स्टाटथहोबाक आािज सुनेलइन। बुइझ गेलीह जे शी च्चमाशा जा ाुकिल छइथ।

कतऽ दाईकऽ कहने रहच्चथन जे शी च्चमाशाकऽ खेनाई बनबऽ लेल, आ फेर ओकरेसँसमाद पठेलच्चकन जे ाइिल जाइ लेल। की मोन मे सोािने हैत ई दाई।

च्चकछु नच्चह फुरा रहल छलइन। ओ जनच्चथ छलीह जे अच्चाान्हार कुमार पुरख संग रहअ मे बेशी सुरक्षा छइ, च्चबयाहल पुरख पच्चच्चत सं। तखनो गलती कऽ बइसली।

फेर सोािली जे उनकर कोन गलती- ओ त पच्चच्चस्थच्चताकऽ गुलाम छलीह। तेना ने सब च्चकछु भेलइ जे ओ कोना अकरा रोईक सकइ

छलीह। मयादाकऽ रेखा ओ पैघ खीचि ने छलीह, तै ने ओ परेशान छैथ। देखू त अजुका लेखे किछु नहि छइ। ई बात दिमाग मे अबिते कनीक मोन हल्लुक भेलइन आ स्नानघर मे नहाइ लेल घुइस गेलीह।

<u>की सोचि- की लीखल (अंतिम भाग)</u>

झरना खोइल देलीह आ ओकर नीचा बइस कऽ नहाइत रहलीह। ठंडा पाइन देह पर खइस रहल छलइन....... तैयो तनाव शायद नहि खत्म भऽ रहल छलइन। बडी काल तक नहेलाकऽ बाद बाहर निकललीह। मोन तखनो भरियाले रहलइन। माथ भारी - भारी बुझाइन। दराईयक डिब्बा मे सऽ मथदुक्खीकऽ गोटी निकाइलकऽ खेबो केलीह..... तखनो नहि आराम भेलइन। अनमना भइड मोन कछमछ करइत मोन लगतलइन। राईतो मे मोन ठीकसँ नहि भेलइन। अखाला मोन स्कुलो नहि गेलीह।

ऊमहर शी माशा सेहो परेशान छलाह। सुख चैन हरा गेल छलइन। जखनो कोनो मोटरगाडीकऽ आवाज सुनाई दइन- झट दऽ पदा हटा कऽ बाहर ताकऽ लागस...........होइन जे कही पुलिसकऽ गाडी त नहि छइ। ई त अपना भान छलइन जे ओ रश्मिका देहकऽ

ब्बाजता मे हस्तक्षेप केलच्छकन........स्तीकऽ बयान पुच्छ्लसकऽ अकरशः मानऽ कऽ पडई छइ। कही ओ पुच्छ्लस मे च्शाकाइत कऽ देलीह त सब नाम गाम, इज्जत मान एके बेर मे खत्म।उनकासँतऽ अतुका पुच्छ्लस अधीक्क पच्छ्लनेहेसँखार खेने छइन। ओ कयेक बेर सम्मन पठा कऽ ओकरा कोटथ्मे बजौने छइथ।अगर ओकरा पता लाइग गेलइ त ओ तऽ िइर टा आर धारा लगा देतइ।आबऽ काल मे रच्मिका देर्ीकऽ देच्छ्वयो नच्चि सकल छलाह जे केहन पच्चाच्छकया छलइन। ईएह सब सोिइत परेशान छलाह। ओना अच्चाला च्छ्दन ओ कोटथ्गेल छलाह। आइ जे पुच्छ्लस िला सब गािही मे आयल छलइन, ओकरा सबसँनीकसँगप्प केलाह.......आन च्छ्दन जेका फटकारलच्छकन नच्चि। घर घुरलो पर कयेक बेर मोन केलकइन जे रच्मिका देर्ीकऽ हाल पता करी..... लेच्छकन साहस नच्चि जुटा सकलाह।

एक च्छ्दनक छुटीकऽ बाद रच्मिका देर्ी स्कुल जाय लगलीह। ओतऽ त बचिा आ स्टाफ मे समय बीत जाइन लेच्छकन घर अच्चाते परेशान भऽ जाइ छलीह।जखनो कोनो मोटरगाडी अबइ त बुझाइन जे शी च्मशा त नच्चि छच्थ्य? स्कुलो मे जखइन फंक्शनकऽ संदभथ्मे शी च्माशाकऽ िि भेलइन त अनमने जका ओ अइ पर च्छकछु बजलीह।फोनक घंटी बजइन त होइन जे कही शी च्मशा त नच्चि छइथ। हाल िल लइ लेल फोन केने हेताह? मूदा उनकर फोन नच्चि एलइन।

अच्छना डइब आइब गेलइ। आइ फेर उएह समय मे मोटर गाडी एलइ......... दाई कहलकइन जे शी च्मशा छइथ.........ओच्छना बैठकी मे बइसऽ कऽ समाद दाई माफच्च देलच्कन .... आ अपनो गेलीह।

आइ कनी काल गंभीरता रहलाकऽ बाद सामान्य माहौल मे गप्प होबऽ लगलइन। दाई अपने ि च्मतराईह रहय...........ओ झुठे कच्छ देलकइन जे ओकर बेटा दुच्खत छइ......... घर ओकरा जेनाई जर री छइ..............कच्छ कऽ ओ ि इल गेलइन। अपना मोने ओ इनका सबकऽ एकान्ती देलकइन। रच्वीका देिी हा ि नच्चि च्कछु कच्छतच्यन, ओइसँपच्छने ओ जा िकिल छल।

आइ ओही च्दन जेका फेर गप्प शप आ पेमालाप

भेलइन। बाहरसँखेनाई मंगाि लि गेलइ। साझ मे फेर शी च्मशा अइ िदाकऽ साथ घुरलाह जे ओ फेर डइब कऽ आइब रहल छइथ।

आब सब डइब कऽ शी च्मशा आबऽ लगलाह। भइड च्दन ओतइ रहइ छलाह। बीि बीि मे आब ओ सब बाजार आ च्सनेमा सेहो संगे जाय लागल छलाह। छोट शहर मे त जखने मऊगीकऽ दोसर पुर खकऽ संग देखइ छइ.........च्वस्सा बननाई शुर भऽ

जाइ छइ। आब जगह जगह इनकर सबहक संबंध पर ि ि शुर भऽ गेल छलइन........ओना दुनु गोटे व्यहिार मे पुरा साधिानी बरतइ छलाह, लेकिन ई सब कतउ छीपलइ आय।एक कान, दु कानसँहोइत, ईहो सब सुनलाह।

आब शी व्याशा कहलथ्वन

- हमसब वैिाहिक बंधन मे बंईध जाइ।

- आहा एकबेर अपन बेटा आ परिवािरकऽ लोक सबसँअइ विषय मे गपककऽ लीयह। र विका देिी बजलीह।

-बेटाकऽ की पुछबइन। ओ तऽ अपने आप मे मस्त छइथ।हम जनवि छी ओ त खुशे हेताह। बात रहल बाकी लोक के, हम की उनकासँविीिर लेबइन।

- नवि नवि कमसँकम बेटाकऽ बता व्दयउन।

-आहा कहइ छी त कव्ह दइ छयइन।

राइत मे शी ब्माशा अप्पन च्वैहिक संबंध मे बेटाकऽ कहलच्चवन। बेटा अकिकेलच्चकन लेच्चकन च्चकछु क्हलच्चकन नच्चि।

थोडे कालकऽ बाद पुतोहुकऽ फोन, शी ब्माशाकऽ अयलइन। ओ त फोने पर लगलच्चवन शी ब्माशाकऽ उाउिर करऽ ।

-आहाकऽ अइ उि मे बेशी जबानी िईढ गेल अइछ। हमरा सबकऽ लोक की कहत? आहाकऽ कच्माको च्वैकि नच्चि! ओइ मऊगीकऽ िकर मे आहा फंईस गेल छी। धुर छी। हमरा त आहा पर च्च्मन आइब रहल अइछ। कोन पच्चिरि मे हमर बाप च्वयाईह देलाह। ..आर बइजते रहलीह।..............

अच्माला डइबकऽ भोरै भोर बेटा पुतोहु , शी ब्माशा कतऽ आइब धमकलइन। दु बरखसँकोनो अबरजात नच्चि। एकच्चदसाहे शी ब्माशा बेटा पुतोहुकऽ फोन करय छलच्चवन। आइ देखू ने। सब हाच्चार।

थोडे काल मे शी ब्माशाकऽ बच्चहन - बच्चहनोई सेहो दोसर शहरसँआइब गेलच्चवन। बेर पहर गामसँबुढ कका सेहो अपन पोता संग छडीलऽ कऽ आइब गेलाह। बडका मजमा शी ब्माशाकऽ घर मे लागल छलइन। बेटा पुतोहु एकच्चदसाहे बाईज रहल छलइन। सब संबंधीकऽ उएह सब फोनकऽ कऽ बजौने छलच्चवन।

आइ शी ब्माशा अपने घर मे अपराधी जेका कटघढा मे ठार छेलाह

आ उनकर पुतोहु सरकारी किील जेका इनकर ि्खलाफ सबुत सब दऽ रहल छलि्खन। जजक कुसी पर कका बइसल छलाह- मौन।

सब डइब कऽ शी ि्भाशा , रि्धका देिी कतऽ ि्भायि्भात जाइ छलाह।आइ जखइन ओ नि्ह पहुंिलाह तऽ रि्धका देिी ि्िंि्तात भेलीह। फोन केलि्खन त ि्कयो नि्ह उठेलकइन- अइ हो हल्ला मे फोनक घंटी कतऽ सुनेतइ। तखइन अपने गाडीलऽ कऽ आइब गेलीह।अतऽ त दोसरे लीला िइल रहल छल।

रि्धका देिीकऽ देि्खते मातर शी ि्भाशाकऽ पुतोहुकऽ पारा िईढ गेलइन। ओ अंटशंट बाजअ लगलीह-

ई राक्सी पाइकऽ लोभ मे इनका फंसेलकइन अइछ। -हमर सबकऽ की होइत? से नि्ह सोिलिक ई हरा शंखनी। अकरे िइल छइ। हम सब त सडक पर आइब जायब। अकरे बचिा राज पाठ सम्हारतइ। ई नाि्गन कतेककऽ डंसने होइत। आर कथी कथी................

बाकी सब गोटे ठकमूडी केने बइसल। आब रििका देिीकऽ नि्ह रहल गेलइन। ओ बजलीह-

पुईछ ि्लायउन, सामने बइसल छइथ। हमर नि्ह, इनकर पस्ताि

छलइन। आहा सब दु बरखसँदेखबो केच्चयइन जे बापक की हाल अइछ। आइ पहुंिलऊं आय। ई जाइतो छलाह आहाकऽ डेरा पर, एको च्चदन छुच्चयो लेच्चयइन इनका लेल.........कतउ घुमेबो च्चकरेबो केच्चयइन कच्चयो। सब मे त जय जगनाथ। आब संपइत लेल दौरल आयल छी। त सुइन च्चयह- हमरा इनकर संपइतकऽ कोनो काज नच्चि अइ। हम त च्चीिह नच्चिये करऽ िहइत रही। हम आहा सबकऽ च्चख कऽ दऽ दइ छी जे हम कच्चयो " मा " नच्चि बनब। बचिा पैदा नच्चि करब। आहाकऽ राज पाठ हमर बचिा हेबे नच्चि करत त ओ लेबे नच्चि करत। हम काइल आपरेशन करा लेब। भऽ गेल समस्या समाप्त।

कतबो लोक मना केलकइन- रच्चिका देिा अच्चाले च्चदन आपरेशन करा लेलीह। ओकर बाद दुनु गोटे कोटथमैच्चज कऽ लेलीह। जे लोक सब शी च्चशाकऽ बुझाबऽ आयल छलच्चन ओ सब अइ च्चीिह मे शाच्चल भेलाह। रच्चिका देिीकऽ च्चाका मंच्चर मे बडका च्चसेप्शान पाटीकऽ आयोजन भेल। भइड शहर मे रच्चिका देिीकऽ त्यागक बखान भऽ रहल छइन।सबके मूंह पर एके िा- सि मे रच्चिका"देिा" भऽ गेल छलीह।च्चला पदाच्चकारी फेर रच्चिका देिीकऽ कहलच्चन- शी च्चशा पर तऽ कृपा कऽ देच्चयइन.........बच्चयौता हमरो पर कऽ च्चयह। फेर बडी जोरकऽ सब ठहका मारलक।

पैबंद- उपन्यास (पच्चल-सातम भाग), (अंच्चम भाग १-२)

पैबंद (उपन्यास) (पच्चल भाग)

आइ कन्नाया बाबी अन्नाि ियुि भेल छच्चा। जे च्चकयो दलान पर जाइ छइन सबके उएह गप्प " बदरी नाक कटा देलकइ "।

कीकऽ देलकइ। भोर मे त पोखइड पर देखने रच्चयइ। बाध च्चदस जाइत रहय।

" कीकऽ देलकइ"। हद करय छं तो सब। बेशी काच्चलभऽ गेलह हय। स्टेशन गेल छलह।

हं गेल छलहुं। तीन िइर च्चदन पच्चलने। रमपटी िला पीसाकऽ छोडई लेल।

कीछ देखलहक।

नञि ।

तोरा सबके नजइड कतउ आर रहइ छह। की देखबहक।

ककरो चकछु बुझा नञि रहल छलइ चक की भेलइ। कञाया बाबी फेर देखलचथन ककरो जाइत। ओकरो बजेलचथन। ईएह गप्प फेर सं। तोहर बाप पुरखा सबकऽ नाक कटा गेलह। बडड शानसँजे कहइ छलह जे हम फला, हम चकला पचरिकऽ छी से आबकऽ पचायेतह। बदचया त सब नाशकऽ देलकह।

धीरे धीरे कयेक गोटे कञाया बाबीकऽ दलान पर जमाभऽ गेल छल। पुरा बात अखनो नञि बुझल चकनको। मुदा अतबा त बुझा गेल छलइ जे बदरी चकछु करस्तानी केलकइ अइछ। फेर सब सोईिते, एहन कीभऽ गेलइ जे बदरी केलक आ चकनको नञि बुझल।

गाम मे हर नामकऽ पाछु चकछु दशथा रहइ छइ। जेना चानकर नाम पढुआ कका ओ बुझु बेशी पढल चलखल लोक, साहेब कका माने ओ जे पैघ सरकारी पद पर छथ्य, बाडला कका माने नबका

धन्नाक, माच्लक कका माने जमीन बेकिऽ फुटानी करऽ बाला, बाऊ कका माने शात लोक, लाल कका माने गोर नार लोक, छोटका कका माने सब भैयारी मे छोट, जमधा कका माने अंगरेज बाला रंग, जे बामा हाथे च्लखय ओ लटेरी कका। अही तरहे नामकरण होइ छइ। ई कन्नाया बाबीकऽ सेहो अच्लना नाम पडलइन। इनकर घरबाला सब च्लअयदी भैय्यारी मे छोट। जच्लया बायाहभऽ क अइ गाम अयलीह त इनकर बरसँपैघ जाऊत सभ। तुलसी पात छोट की पैघ। जाऊतक धीया पुताकऽ त ई बाबी भेलच्लन। ओ सब कन्नाया बाबी कहऽ लगलइन फेर आरो लोक सब। शुर मे त नबकन्नाया मे च्लकयो बाबी कहइन त नीक नचि लगइन। धुर छी, धुर छी करऽ लगइथ। मुदा बाद मे सुनऽ कऽ अभ्यस्तभऽ गेल छलीह। नैहर बालाकऽ गच्लिऽ सुनबच्लन। सुनु हमरा कतेक कतेक टा पोता-पोती अइछ। पैघ पैघ जाऊत जईधी सब पैर छुअइबकऽ गोर लगइ छलइन त च्लारच्लतभऽ जाइ छलीह। नैहर मे सबसं छोट छलीह तै बडड गोर लागत पडय छलइन। सासुर मे त अच्लाते च्लारथाइनभऽ गेल छलीह। कन्नाया बाबीकऽ घरबालाकऽ जच्ली त नचि कहबइ मुदा च्लिाते च्लकरते अधबयसे मे मइड गेलच्लन। च्लकछु च्लन त सोगायल रहलीह। फेर घरकऽ सम्हारलीह।

आब कन्नाया बाबी उज्जर किकि सारी सटुआ पच्लरऽ लगलीह। खेत पथार सेहो देखऽ लगलीह। उपजा बारीकऽ च्लसाब राखऽ लगलीह। लोककऽ जर रत परलाह पर सुद व्याज पर नुकऊआ पाइ सेहो देबऽ लगलच्लन। दोसरोकऽ जमीन जथा भरना पर लेबऽ लगलीह। माल जाल सेहो पोसऽ लगलीह। दुध सेहो

उठौना पर लगेलीह। बोचंगसऽ ज्यो कोई पच्मांग सेट लगबइ, ओहो मे घंटे च्नसाबे पाइ लेच्थन। आिजो ओच्नना टनगर रहइन।दलाने परसऽ बजच्थन त गाछी मेसऽ जारइन च्बाछअ बाली, घास गढअबाली सब पराअ जाय। दुकऽ िइर पाइकऽ खुब करऽ अबइन। पाइ भेलासऽ च्कछु लोक आगु पाछु करऽ इन। अपने त आगु बढल छलीह मुदा बेटा सब पाछुये रहअ बाला बनलइन।

ईएह गुनधुनभऽ रहल छलइ जे बदरी की केलकइ आच्वर। ओना ओ च्वारकाल छल। च्वारकालक मतलब तच्नया होअइ जे तीन समय जे भाग घोटय। भोर, दूपहच्रया आ साझ। सब कहलकइन कच्नाया बाबी कहुं त की केलक ओ बदच्रया। कहलच्खन जे हमर बेटा स्टेशन लग बदरीकऽ देखलच्खन च्वक्शा िलबइत। बाजु त एहनो होअइ। आइ तक च्कयो िलेलक अइ च्वक्शा। कहुं त पुरखाकऽ नाक कटल की नच्ि। लोक सोिऽ लागल जे च्कयो घरे घरे पंच्कताई करय छच्थ, च्कयो दोकान मे मजुरी करय छथी, च्कयो टयुशन पढबइ छच्थ, च्कयो दलाली करय छच्थ, च्कयो हेराफेरी करय छच्थ, च्कयो स्टेशन पर मटरगश्ती करय छच्थ, च्कयो तारी-दार पीबकऽ च्दने मे टुन रहइ छच्थ, च्कयो मायबाप आ स्त्रीकऽ सच्दखन फजैतकऽ तर केने रहइ छच्थ, च्कयो पेटपोसुआ जेका कोनो संबंधी कतऽ पडल रहइ छच्थ आरो कतेक बात। अइसऽ च्कछु नच्ि आ च्वक्शा िलेलासऽ कीभऽ गेलइ।

कच्नाया बाबी कहलच्खन जे आहा सब ओकरा बइलाऊ अतऽ सं। रहत त की की नच्ि करत ई बदच्रया। कखनो बदरी कहच्थन मुदा

जखन बेशी खीस बरइन त बदचलया कहऽ लगइ छलखिन। गरीब लोकककऽ पुरा नाम कहऽ कऽ कष कऽ करत।

बदरी साझ मे घर घुडल त सब पता लिलइ ओकरा। ओ कहलक जे कन्नाया बाबी कय बेरसँओकरा घरारी आ गाछी कबाला करय लेल कहइ छलखिन। नचि त बदलेनेकऽ चलायअ।

कतेक बेर नोत दकऽ नीक नुकुत खुओबो केलखिन।ओ तैयार नचि भेल। ओकरा कहब छइ जे बाप सब जथा बेचिये देने छथि। दु कटा घरारी, एक कटासऽ कनी बेशी गाछी आ दस धुर बंसबाटी ओकरा बालि छइ। ओ मइड जाइत लेचकन ओ ई नचि बेति। ओकरा पालि बरखक बेटा छइ जे माय संग कलकता मे रहइ छइ। सब चदन चक ओ गरीबे रहत। ओकर बेटाकऽ काइल ज्यो पाइभऽ जाइ त ओ घर कतऽ बनेतइ। लिइर खाढी मे चदन घुमई छइ। तेसरभऽ गेल छइ।भागक नशा मे बदरी बाईज रहल अइछ। लिचम खाढी आबऽ लिला छइ। ओ नचि बेति घरारी। कन्नाया बाबीकऽ कोठाकऽ आगु ओकर कालि ईटाकऽ भीतक घर उनका पैबंद लगइ छइन। ओ कोनो ने कोनो रपे ओकरा उजाइरकऽ अपन बढबऽ लिहइ छथि।बदरी कलकते रहइ अछि। ओतउ त ओ चवक्शे लिबइत अइछ। पेटक आइग बुझबइ लेल त चकछु करहे परतइ। कलकता मे जखइन मोन अजबजा जाइ छइ त गाम आइब जाइया बदरी। गामो मेकऽ एको चदन खुलितइ। पाइ जाबइत छलइ, कीछु बास बेलिने छल ,बइसकऽ खेलक। आसानीसऽ त चवक्शे लिलाकऽ पेट भरतइ ने। ओकरा त एकरे हुनर।

सब बुअइझ गेल कन्याया बाबीकऽ ई तेला-बेला। ओ पैबंद पचारिकऽ पत्ताष ाकऽ नामे हटबऽ िहइ छलीह।

पैबंद (दोसर भाग)

आइ जतरा बेशी च्दन गामे मे रत्लु गेल बदरी। पर पंिती आ चकदन सब। ओइ सब मे ओझरायल रहल ओ। कतेक बेर मोन मे अयलइ जे बेि बाकीनकऽ परा जाय गाम सं। फेर डीहक एहन मोहभऽ जाइ जे सब पर भारी पडइ। जखने डीह बेिऽ कऽ गप िलइ त कन्याया बाबी टा नचि, आरो लोक सब थाह लेबऽ लागइ। ओना ओकर समाग सब झच्वते रहइ छलाय पाइ लेल, मुदा डीह कीनबा मे सब ताराउपरी तैयार। आनो टोलक लोक ओकर हाल िल पुछह लगलइ। एक गोटे त ओकरा अतेक तक कहलकइ जे कन्याया बाबीकऽ नचि बेिमे त नचि बेि, हमरादऽ दे। चकयो कहइ जई ओ कन्याया बाबीकऽ एजेट छइन। जमीन कबाला तोरासऽ अपन नाम करोतउ आ बाद मे उनका नाम च्लख देतइन। ओकरा अतेक पाइ कतऽ सऽ एतइ। ओ त उनकर बले फऊंकइ अइ। अही सब मे तीन महीनासऽ ऊपर लाइग गेलइ। बदरी चकछुभऽ गेलइ, डीह नचि बेिलक।

उमहर बदिन पर बदिन बीतल जाइ, बदरीक कोनो खबर नहि कलकता मे। ओकर कनियाया इमहर ओमहरसऽ हथपईलिऽ क कहूना बचाकिऽ पेट भडइ छल। अपने ओ कखनोकऽ भुखलो सुअइत जाइ। ओकर कलोनी जे जे कलोनी कहबइ। जे जे मान झुग्गी झोपडी। अइ कलोनी सब मे सबकऽ सबहक हाल पता रहइ छलइ। सब किछु खुल्ले मे होअइ। दुलार मलार आ बियान घुनाईज आ मारा पीटी आ गारा गारी आ बेटी पेटखऊंकी-सब बिना अहर के। बदरीकऽ कनियायाकऽ सेहो अपना देसक किछु लोकसऽ अबरजात रहइ। ओतऽ मरदयमऊगी बचा सब काज करय। बदरीकऽ ई पसंद नहि कि ओकर कनियाया काज करय। तालेल ओकर कनियाया काज पर नहि जाइ। कयेक मऊगी सब ओकरा बोलियायो दइ -ई जे महंथाइन बनल बइसल रहइ छे, देहकऽ चलो डोलो, बरकत हेतउ तखने। ओ किनको जाबत जर रत नहि होअइ नहि किछु कहइ। ओना किछयो किछयो बुझाये गेलइ जे ओकर सैय मना केने छइ। अइ पर ओ सब कहइ तोरा मे कोन सुरखाबक पर लागल छऊ जे हमरा मे नहि अइ। जो धेकरी बनल रह। बाद मे बुझेतउ।

आब बदरीकऽ कनियायाकऽ पैि उधारी सेहो भेटनाई बंदभऽ गेल छलइ। राशनक दोकान बला सेहो सीिा उधारी मे देबऽ सऽ मनाकऽ देलकइ। ओना ओ दुकऽ िइर लइ उधारीकऽ बदला मे, मुदा ओहो मनाकऽ देलकइ। ओकरा दोसर झुग्गी बला कही देलकइ जे कोन ठीक बदरिया कतउ मइड खइप त नहि गेल। ओ दोकान बलाकऽ कहबो केलकइ- नहि देबऽ त नहि दैय।

ऐना अलच्छ बात नहि बाजअ।

घर मे एको कनमा अन नहि। कतउसऽ किछूके उम्मेदो नहि। अपन पेटे टा रहितइ त भुखले सुअइत रहितै। लेकिन भगानि एकटा ननकीरबोदऽ देने छथिन। ओ केना भुखले रहतइ। किछु टिरंगी मऊगी सब अपन धंधा मे आबइ लेल कहबो केलकइ। बियाहल छै- मिक देह छइ- की फरक पडइ छइ।इलकऽ देख ने। बदरीकऽ कनिया नीकसँ चिन्हइ छलाय ई सब छिनाइड के। आब करय त की करय। साझ भेल जाइ छलइ, ओ मोनेमोन अपन सोखाबाबाकऽ गोहराबय लागल। अही रस्ता देखायब।आंईखसऽ नोर सेहो बहइत छलइ। नोर बहिते बहिते बिानभऽ गेलइ कि की भेलइ।

जखइन आंईख खोलइ अइछ त देखइत अइछ जे ओकर ननकीरबा ओकर देह पर लटकल छइ। बगलकऽ एकटा ओकरे देशक मऊगी ओकर माथ पर पाइन छीटई छल। ओ दुनुकऽ भइड पाईज कऽ पकरलकऽ। कनी काल बाद मोन हल्लुक भेलइ। ओ सब बात बुझलकइ। दुनु मे किछु गप भेलइ। ओइ राइत ऊयाह मऊगी अपन झुग्गी कहुं या घर कहुं, ओतइसऽ पनपीयाई बनाकऽ अनलकइ।

बदरीकऽ ननकीरबा बगलबाला मऊगीकऽ घर पर छोड़ि देल

गेल। ओ ओइ मऊगी संग एकटा घर मे दुनुं साझ खेनाई बनबऽ कऽ काज करऽ लागल। ततेक नीक जे ओ खेनाई बनबय जे ओ मालिकक अपन संबंधी कतऽ सेहो लगा देलकइ। दुनु घर लगीि छलइ। अइ मालिकक बुटीकक दोकान बाजार मे रहइ। बदरीकऽ कनिआया त अखनो हाथेसँ ँटि दं अपन ननकीरबाकऽ सब जामा लता सीब दइ छलइ। झुग्गी मे सेहो नुकऊआ कीछु कपरा सीबकऽ कखनो कखनो कछू कमा लइ छलाय। ओकर हाथ कपरा सीबऽ मे बडड साफ छलइ। कछु महीना अहुना बीत रहल छलइ। बदरीकऽ बेटा बाजईया मुसपैलटीकऽ सकुल मे पढाइ शुर कऽ देने छल।

इमहर जखइन बदरी कलकता पहुंिई या त कलोनी मे घुसते राशनक दोकान बाला ओकरा कनिआयाकऽ कतऽ कतऽ जाय बला गप कहलकइ। कनी घर तरफ बढल त फेर कयो कछु आर कहलकइ। ओकर दमाग ख़ना गेलइ। झुग्गी पहुंलि त ओतऽ ताला लागल छलइ। बेटा बाजईया खेलऽ धुपअ गेल छलाय।बगलकऽ झुग्गी बाली िभी दकऽ िइल गेलइ। घर मे जखइन घुसल त सामने देखलक नबका बटलोही आ केटली। देखते मातर ओकर पारा ऊपर िईढ गेलइ। एक तऽ राकस दोसर नोतल। पहलनेहे राशनबाला आकऽ के सब की की कहने रहइ, ओइ पर घर मे नब बरतन। देखते ओकरा ऊरी बारी लागऽ लगलइ। बटलोही आ केटलीकऽ पटईक पटईककऽ पिका देलक। सब सामान इमहर ओमहर फेक फाईक देलक। जे जे कलोनी मे टेलीगरामोसऽ जल्दी समाद फैलइ छइ। बाजईया लग खबर पहुंलिइ कि ओकर बाबु आइब गेलइ। ओ लंके दंके दौरल

घर आयल। ओकरा कयेक टा गप बाबुकऽ कहऽ कऽ रहइ। सकुल के, नबका दोस के, शिमीक्ली मस्टरनी के, खुसठ बुढबा लमनिुस बेिबहार के, नबका मायक मेमसाब - साहेब के, तरह तरहकऽ खेनाईकऽ परकार सब के। अतऽ बापक रौद र प देखकऽ डरा गेल आ केिरीकऽ बाहरे नुका गेल। मायकऽ अयबाक इंतजार करऽ लागल।

साझ मे माय कऽ जखने अबते देखलकइ बजईया। दौर कऽ सब गप बाबु बला रस्ते मे कही देलकइ। माय संगे डराईते डराईते ओ हो घुसल। बदरीकऽ खीस फेर कनयाकऽ देखते बइढ गेलइन। खुब चिक्ला चिक्लाकऽ बजई छलाह।गाईरे पढ्अ लागल छलाह। बजईया बदस तकबो नहि केलकीन।ततेक खीस मे छलाह। जखइन बकते बकते शात भेलाह।तखन कनया सब टा गप कहलकइ। कतेक बदन भुखले अपने सुतल। बदरी त कोनो खबरो नहि लेलथकन। कहलकइन जे आहा सोिलऊं जे हम बेटाकऽ मुंह मे जाबी लगा देबइ। ओ की खेतइ। जखइन सब िस्तुथमथबासँअिगत भेलाह त बदरी बजईया आ ओकर माय दुनुकऽ एके संगे पाजा मे कसलाह। कतेक काल तक सब अछना रहलइ। फेर बदरीकऽ कनया उठल। खेनाई चयनाई बनेलक। बजईया त बाबुक कोरे मे सुअइत गेल छलाय। माय ओकरा उठेलकइ। नहि खाई छलाय त माय कहलकइ -भुखले सुतमे त एक बगेरीकऽ बरोबइड माउस कमभऽ जेतउ। बजईया त बगेरी देखनेहे नहि अइ। अंदाज लगेलक एहन ओहन होइत। बाद मे अपन बाबुसऽ पुईछ लेत।

भोर भेलइ। सब अपन काज मे लाइग गेल। बाजईया सकुल गेल। माय अपन मेमसाब कतऽ खेनाई बनबऽ । मेम त अंगरेजक घरबाली सब होइ छलइ। आब त कनिया भुजंग मऊगी सब सेहो मेमसाबभऽ गेल छलइ। जे होअइ। बदरीकऽ कन्याया ओकरा मेमसाब कहइ। ओ अइसऽ कहइ जे जन्चया ओ पन्चल बेर ओकरा कतऽ काज करऽ गेल छलाय त ओकरा जे मउगी काज बयौने रहइ से सीखेने रहइ। पुरखकऽ साब आ मऊगीकऽ मेमसाब कहबाक छइ। तै ओहो कहइ छलाय। बदरी लेल खेनाई बनाकऽ गेल छलइ ओकर कन्याया। अपन घरक त बदचयो साहेबे अइछ। अतऽ त ओकरे जुइत।आइ भइड बचन ओ साहेब सबकऽ डइब जेका आरामे केलक।

अन्याला बचनसऽ ओहो अपन पुरनका काज पर लाइग गेल। चक्शािलाकऽ काज मे कल्चयो बेरोजगारी नचि छइ। नचि कोनो सच्चस्थकेट आ नचि बच्गीकऽ काज। आइ काच्म गारेन्टर सेहो मागइ छइ। ओ त कोनो चक्शा बाला बइन जाइ छइ। ओकरा लग छइये चक जे बदला मेलऽ जेताह। नचि हरायकऽ डर, आ नचि िरीकऽ खतरा।

बदरीक कन्यायाक नाम रामरचा रहइ। मेमसाबकऽ ई बरकी टा आ पुरान नाम लगलइन।ओ रचा कहऽ लगलचबन। उनका बुटीक काज मे करीगर छुटी मे घर िइल गेल रहइन।ओ रचाकऽ

चकछु कपरा सीबाक लुइड सीखा देलखिन।ओ झटसऽ सीख लेलक। ओ आब रचनाकऽ अपन बुटीक परलऽ जाय लगलखिन आ खेनाई बनबऽ लाय रचना दोसरकऽ ठीककऽ देलकइन। बाजईया तेहन ने िसगर छलइ पढ्अ मे जे पंिमे पास करइत ओकरा अच्छाला बरख िशमा बाली मैडम नबोदयकऽ फारम भरा देलखिन। अपने संगेलऽ गेलखिन परीक्ष दयौलखिन। बाजईया पासोकऽ गेल।

इमहर बुटीक बच्चया िलइ छलइन। चकछु बदमाश सब ओकर बाहर मे अडडा जमािअ लागल छलाय। बदरीकऽ देह दशा त बलंठ छलइ। ओ एकच्दन बुटीक पर रचनाकऽ कोनो समाद कहइ लेल गेल छल। ओकर िइल मे अकर छलइ। पुच्लसक चपाही जका ओ िलइ छल। ओकरा अच्बाते देखकऽ ओ दोकानक बाहर ठार छौरा सब ससइड गेल। ई सब रचनाकऽ मेमसाब शीशाकऽ तरसऽ देखइ छलीह। जखइन बदरी, रचनासँभेटकऽ क िइल गेल तखइन ओ रचनाकऽ कहलखिन जे चक्शाकऽ जगह ज्यो गाडथक काज करइत त चक बेजाय।

रचना अपन महादेकिऽ चीन्हइ छलीह। आब उनका नीक पाइ बुटीकसऽ भेटई छइन। उनको चक्शा उघनाई ठीक नचि लगइन। दोसर आब बयस सेहो बइढ रहल छलइन। कहने रहच्यन बदरी के। ओ त ततेक सच्ायल जे कहलकइ -ओ,आब हम बहुकऽ कमायल खायब। हमर देह मे चक घुण लागल अइछ। ओ तच्कया नचि तैयार

भेल छल।

फेर अइ बेर डराईते डराईते कहलखिन। ओ हंसऽ लागल आ तैयारभऽ गेल। कहलकइ आब चिकत्शा मे ओ बात निह रहलइ।

बदरी कनीकटा मोछ बढा लेलक आ एक टा लाठी कीनलक। आब मोछ पर ताि दइत, लाठी हाथ मे लकऽ ओ बूटीकक बाहर स्टुल पर कखनो बइसय निह त ठारे रहइ छलाय।अइ मे त कोनो काज निह, आ पाइ महीना पुरिते चिकिन। मजा आइब रहल छलइ आब ओकरा जिनगी मे। गाम आब मोनो निह पडइ।

इमहर बिजईयाकऽ निदिय मे नाम लिखा देल गेल छलइ। ओ आब ओतइ रहय। कखनयो काल बदरी आ रिन्ना मेमसाबकऽ गाडी मे नबोदय स्कुल जाइ छलाय। आब ओ सब एकटा जनता फ्लैट कीनलक। बदरी कलकता मे मकान मालिकभऽ गेल। आब अपान घर मे रहइ छलाय। गऊंआ सब जे संबंध तोरने छलखिन जे कही बदरी किछु मािगा निह लय।आब अबइ जाय लागल छलखिन। अपन लोक सबसँअबरजात शुर भऽ गेल छलइ।

एक दिन बदरीकऽ दोकानक बाहर एक टा पुरान बैग खसल भेटलइ। पहिने त ओकरा भेलइ जे कही बम निह होइ। फेर की निह फुरेलइ- बम भोलेकऽ नामलऽ क ओकरा खोइल देलकइ।

ओइ बैग मे रुपये रुपया आ कतेक रास कागज सब। बदरी बैगलऽ जा कऽ मेमसाबकऽ देलकइ। ओ ओइ कागज पर लिखल फोन नम्बर सब पर फोनकऽ क ओकर मालिककऽ बजेलकइ। ओकरा पाइसऽ भरल बैग सोइप देलखइ। बैगक मालिक ईनाम मे बहुत रास पाइ बदरीकऽ देबऽ चाहिलकइ। बदरी पाइ लेबऽ सऽ साफ मनाकऽ देलकइ। ओकर कहबाक छलइ जे चौकिदारी त हमर काज अइछ। अकर हमरा दरमाहा भेटई अछि। हम कोनो अलग काज नहि कयलऊं। ई हमर कर्तव्य थीक। ईनाम नईहे टा लेलक बदरी। आइ घटनाकऽ पुरा बजार मे चर्चा। अखइन तक बरका अफसर सबकऽ ईमानदार आ कर्तव्य निष्ठ होइ छइ, सैह बजार वाला सब सुनने छल। बदरी त हदेकऽ देलकइ। सब कहइ पता नहि, कोन माइट पाइनकऽ बनल छइ।

आइ घटनासऽ एक टा भेलइ। बदरीकऽ एकटा बरका बिजनेसमैन अपन ओफिस मे नजर राखइकऽ काज लेल ओकर मेमसाबसऽ माअइग लेलकइ। मेमसाब हाथ जोइड लेलकइ बदरीकऽ सामने। बदरी आब शीशाकऽ बाहर से भीतर, एसी मे डयुटी करऽ लागल। दरमाहा दुगुनाभऽ गेलइ। एसी मे डयुटीसऽ रंग सेहो साफ होबऽ लगलइ।

समयक बहाव देखू। बिजईया दसमीकऽ बाद दक्षिण भारतकऽ स्कुल मे नवियकऽ विद्यार्थीकऽ अदला बदली योजना मे पढअ चलि गेल। ओत रहिकऽ अंगेजी बडड सुनर सेहो बाजअ लागल।

बंगलोरकऽ कालेजसऽ गेजुएशन केलक ओ घुरती बरख चारिम सचिवालेज मे IAS मे ओकर ियनभऽ गेलइ।कैडर सेहो बिहारे भेटलइ।

चलाकऽ कलक्टर आ पुलिस कप्तान ओकर गाम तकइत घर पहुंिलचकन। बधाई देबऽ बालाकऽ लाइन लागल छइ। कनिया बाबी घर पर दऊर दऊरकऽ सबकऽ िह जलखइकऽ बेबसथा करय छथि। टेलिविज़न बाला सब टोलक लोककऽ इंटरव्यूलऽ रहल छइ।

बदरीकऽ गामक कचिा माइटक भीतक घरकऽ ईमानदारीकऽ पतीक मानल जा रहल छइ। बदरीकऽ त्यागक व्यवस्सा िइल रहल छइ।

जे घर पैबंद छल से आब ओइ गामक पहिानिभऽ गेल। बिजईया आब बिजय बाबुभऽ गेल छथि। पुरा गाम बिजयक गामभऽ गेल। कनिया बाबी सबकऽ फेर शोर पाइरकऽ बजा रहल छथिन आ टेलिविज़न परकऽ इंटरव्यू देखा रहल छथिन।

पैबंद (तेसर भाग)

बिजयकऽ IAS मे ियनक समािर गाम-गाम फइल गेलइ। बदरी आ ओकर कनियाकऽ त खुशीकऽ ठेकाने नहि। दऊर कड् मधुर किनलक आ महाबीर मंदिर मे िढेलक। गामो मे समाद देलकइ जे सोखाबाबा आ भगबतीकऽ मधुर िढा दइला।भरी टोल मे परसादी मे मधुर बटिलक।

आब ओकरा कनियाया बाबीकऽ बेटा-पुतोहुसँघुटा-सोहारभऽ गेल छइ।

फोन पहिनेहुसँउनके कतऽ छलइन। ओ जखइन पहिने फोन करय त ओकर गप्प पर किनयो धेयान नहि दइ। उल्टा कयेक बेर ओ फोन पर सुनने रहे कि ई भंगेरीकऽ हम सब समझइअय छी। एकर सपरिवाब ने देखू, हमरा कतऽ फोन करय अछि-जेना अकर बापक गुलाम होइयई। अकरे ले जेना फोन लगेने होइ। कोनो काज नहि छइ- समाद कहबा के। पडइक गेल अइछ। ताहि दुआरे रामरिता, कहियो फोनकऽ क बदरीकऽ हाल नहि लइ। कयेक बेर करय लेकिन ओ सब कोनो कान बात नहि दइ छलखिन। तखइन आखिजभऽ क छोड़ि देलक।

आब त उल्टे गंगा बहअ लगलखिन अइछ। उनके सबकऽ फोन आबऽ लगलइन। तै रामरिता कहियो देलकइन कनियाया बाबीकऽ पुतोहु सं। से ठीके। ओ बारह सै रपयाकऽ मिठाई कीनली, भगािन भगातीकऽ ऊसरगाकऽ भरी टोल लोक बिच्छु एक एक

टा बंटैली। ऐना त आइ तक नहि भेलइ। दु टाकऽ मधुर बैनक िलन छलइ। कन्नाया बाबी त महो महोकऽ देलखिन। लोक गइन गइनकऽ मधुर पठबेलखिन। अबसरे एहन छलइ।

मधुर खेलाक बाद ओकरा टोलक लोगकऽ सेहो फोन एलइ। ओकरा सबकऽ कहब छलइ जे कन्नाया बाबी बुढारी मे टेलीविजिन पर आयल छलीह, ओकरा बदला मे ई मधुर छइ।

व्यअयदी होइते सैह छइ।हर बात मे तेसरे ब्यवसाभऽ जाइ छइ। तै ज्यो संयम रहय त किछु करी िा नहि करी, किछु शगुफा छोड़ि दी। देखू ओ घुमइत घमाइत, नाना परकारक एक्सपटर्थकौमेट आहाकऽ मंगनीये मे सुनऽ कऽ भेट जाइत। उएह भेलाई अछि बेर। बदरी समाद देलकइ मधुर िढबऽ के- लोक कन्नाया बाबीकऽ टेल्वाविज़नसऽ जोइड देलकइ। कोई त नबका दोस्ती पर किछु आरे तंज। त किछयो लक्लो िप्पोकऽ तेसरे कारण- बिन कारण चटहीं नहि बाजय। आहा रोईक नहि सकइ छी सबके अपन विश्लेषण करबा सं।

लोक जे भी कहइ। बदरी त आर्थितकऽ लेने अइछ जे मधुरकऽ एक एक पाइ जोअइडकऽ द देतइन कन्नाया बाबी के।

जेना भदबारी अबैत, बेग सब कतऽ ने कतऽ सऽ आइबकऽ टरथटरथकरऽ लगइ छइ, ओहिना बदरीकऽ संबंधी सब ऊपर होबऽ लगलइ।अखइन तक सब लापता रहइ। अहन मीठगर गप्प सप्प सब करय जे बदरीकऽ बासिसे नहि होइ कि ओकरे कान ई सब सुअइन रहल छइ। कयेक बेर भेलइ कि सपना त नहि छइ। अपना जाघ मे बाटु काइटकऽ देखलक। ठीके सब

सद:भऽ रहल छलइ।

बिजय रेसंग मे मसुरी िइल गेलइ। जायसऽ पहने कलकता मे सब संगी साथीसऽ भेट गाठ केलकइ। जेजे कालोनी िला संगी सबकऽ पाटी देलकइ। मुस्पैटी बाला सकुलकऽ मास्टरनीकऽ मधुर जाकऽ द एलकइ। आरो किछु नबोदय बाला संगी सब कतऽ गेल। रामरबाकऽ साहेब जेकर गाडी मे नबोदय जाइ, ओकरो कतऽ गेलइ। सबसँ लल मलल रहल। लोक ओकर सोभाकिऽ पशंसा करय छलइ। बदरीकऽ परोछ मे बेटाकऽ पशंसा सुनऽ मे बडड नीक लगइ। सीना ओकर बइढकऽ 56 इंकिभऽ जाइ।बिजय अकदमे सरल छलाह। घमंडक एको मया लेश नि।

बदरीकऽ आब ओकर बाबु जे िम पीढी बला गप कहथिन, ओइ पर बिसबास होबऽ लगलइ। ओ याद करय छल कि आर कोन कोन गप कहइ छलथिन। मुदा किछु याद नि परलइ। आब ओकर खाढी बला िम कि पुराभऽ गेल छलइ। ओकर दिन घुइड गेलइ। आब कतउ ओ जाय, ओकरा अनकटल मोजर भेटअ लगलइ। ई सब ओकरा सोहाइ नि। ओकरा पहलके जिनगी नीक लगइ छलइ। आब ई सब ओकर हाथ मे थोडे छलइ। सोिनाई छोड देबऽ िहइ छलाय, लेकिन फेर उएह उधेरबुन। माथक ओधबाधभऽ जाइ छलइ ओकर। आब एकटा तेसरे खेला शुरभऽ गेल छलइ। ओहो खुब खेलाय लागल।ओकर हाल ओहनभऽ गेल छलइ जेना जखइन बुनी पडइ छइ तो राही बटोही, भीजअसऽ बिई लेल गाछ-बिरीछकऽ अढ लइ या। जखइन भीजअसऽ नि बइि पबइया ि बुनछेक नि होइ छइ त ओइ मुसली बरखा मे आगु

त्याधोख बइढ जाइया-अन्नाला त्त्वकाना त्त्वस। आब बरखा मे त्त्याजनाअइ ि त्त्याजकऽ तर भेनाइ ओकरा नीक लगइ छइ। ऊयाह हाल बदरीकऽ भ गेल छइ।

ई खेल छइ। कथा-िताक खेल। आब बदरी लग कन्यागतक लाइन लाइग गेल छइ। एक पर एक पत्त्वयि सब। बदरीकऽ बुझेबे नत्त्वि करय त्त्वक ई बाबु भैया सबकऽ की जबाब दइ। सब ओकर सामने दीन-हीन जका कल सेहो जोइड लइ।कयेक लोकसऽ त ओकरा अइलऽ क टेना मेनी तकभऽ गेलइ। रामरत्त्वा ओकरा सीखबइ।

-एना नत्त्वि उसठल जका जबाब देल जाइ छइ। भागक गप्प जे तोरा दुआरी ई लोक सब अबइ छह। ुिप रहल करऽ ।

-फेर बदरीकऽ त्त्वकछु अनटोटल बजाअ जाइ। ओ अइ त्त्वानगी स अनघुआर रहल अइछ। पेट मे त्त्वकछु आ ज़बान पर त्त्वकछु।

लोक सबसँगप्प सब कत्त्वते आब ओहो रेहल खेहलभऽ गेल अइछ। सीख गेल बदरी त्त्वक केना ज़बाब देल जाइ छइ।

आब ओकरा लग सौ टासऽ बेशी कन्याक पत्त्वयि जमाभऽ गेल छइ। सब थाह लगबइ जे कतउ कथा ठीक त नत्त्वि भेल छइ।

आब अप्पान भीतरका गप्प ओ त्त्वकनको नत्त्वि कहय।

अइ सौ टासऽ बेशी पत्त्वयि मेसऽ दस टा ओ अलग केलक। कोन आधार पर केने छल ओ रामरत्त्वाकऽ सेहो नत्त्वि बुझअ देने

छलइन। चकयो जं पुछइ त कहइ जे उपरका दस मे आहाक नम्बर नचि अइ।

सामने िला मुंह छोटकऽ क िइल जाय। ईएह नंबर ओकर तचकअए कलाम छलइ। अही मे ओ सबके ओझरेने छल।

जेना नेना सब खेल मे माइटक महल बनबइ आ साझु पहर घर जयबाक काल ओकरा ढाचह दइ छइ। फेर दोसर चदन नब घर, आ साझ होइते ओकरे पचहलुका चदनक बाला हाल। ई कम िचलते रहइ छलइ, भरी गमी छुटी। ओचहना बदरी रोज खयाली महल बनबय आ भोर नीन टुटीते सब ढही जाइ। लालाजीकऽ ओचफस मे जायकऽ तैयारी शुर भऽ जाइ। आइ काचम लेटोभऽ जाइ त मनेजर नचि चकछु कहय। कतउ बेबहार मे अंतर ओकरा देखाय लागल छलइ।

अही सब मे ओ लागल रहइ छलाय।एक चदन त गाडी िला ओकरा धका सेहो माइड देलकइ। ऊपर से उपराग सेहो जे मरऽ कऽ छह त कतउ आर जा। लोक सब कहलकइ जे ओ गाडी बला कतेक बेर हानथदेलकइ।माय ओकर खरचाचलाया केने छलइ ताय ओ बइि गेल। बदचयेकऽ गलती रहइ। जे भी हो। बदरीकऽ ई बुझाई लगलइ चक ओ बेशी सोिऽ लागल अइ। चदमागक खिथ ओकरा बइढ गेल छलइ। अपने पर हंसी आबइ। बदरी आ सोिनाई। सोिऽ सऽ बिई लेल त ओ भाग पीबइ छल। जखने चदमाग पर जोर बूझाई ओ झटसऽ दु चगलास खीि दइ। फेर मसती मे िइल जाइ छल।

कयेक बरखसऽ ओ भाग छोब्ह देने छल। आइ ओकरा बुझेलइ जे अजुका एक्सीडेट भाग छोरबाकऽ कारण भेल छइ।मोन मे फैसलालऽ लेलक जे आइ भाग पीइत। रसते मे दोकान छलइ पान बला के, ओ िराकऽ भागो बेिई छल। ओतइसऽ चकनलक। ओकरा आब रामरचा पर जोर कम िलइ छलइ। ओ त चकनऊ ने भाग पीसतय ओकरा लेल। ऊपरसऽ िइर टा पुरखाकऽ सुनाईयो दइतइ।

घर जा कऽ भागक छुटल कोटा अपन पुरा केलक। आब ओ सीधा अपन पुरनका दुनाया मे िइल गेल। अतऽ चमागक कोनो िता नचि। जे देलकइ कनाया, अपन खेलक आ बािरण करऽ लागल अच्ह लोक-ओच्ह लोक।

बाजयक फोन अबइ त रामरचा कहइ कथा सबहक बारे मे। बाजय कीछु ज़बाब नचि दइ।

- एकटा कन्यागत त खाली िकलऽ आयल छलबन। -जे भरबाकऽ अइछ भरी चनाया। हमरा ई लडकादऽ चयअ।

अच्हना कोनो कोनो गप्प सब।

बदरी आ रामरचाकऽ ई पुरा भरोसा छलइ जे बाजयक बाबाह ओकरे अनुसार हेतइ। तही मादयकनी िर, दुनु बेकती रहअ लागल रहय।

एक दन बजयक फोन एलइन। फला बाबु दल्लीसऽ अऊताह। ओ जे जे कहताह, आहा सबकऽ लेब।

बदरी घर मे दु दु फीट खीस मे कुदऽ लागल। बेटा हमर, जनम हम देलयई आ ओ जे कहताह सेकऽ लेब।

दु िइर दन दमागक खथिबुझाय परलइ। तखने बदरी भागक घुंटदऽ दइ। सोिबाक काजे खतम।

दल्लीसऽ फक्ला बाबु अयलाह। कहलखन सब गप्प बजय बाबुसऽ हमराभऽ गेल अइछ। हमरा दु टा कन्या छथ। बरका जमाय, बजय बाबु जका पद पर छथ। ऊयाह मध्यस्थ छलाह। आइसऽ हम आहा कुटुम्ब भेलऊं। ओत्ह धराने एक दोसरकऽ शुभचंतक।

एक हफ्ता नह बतलइ क गामसऽ समाद अयलइ जे फला बाबू (दल्ली िलाक)कऽ मनेजर पुरा ताम झामक संग आयल छल। बजयक भीतक घर ढाह देलकइन। ओत्ह पर तीन तक्ला नबका डजाइन बाला घर बननाई शुर छइ। थानाक दु टा सपाही राइत दन िचकदारी मे लागल अइछ। अतरे दन छोटा बाबु सेहो काज देखऽ अबइ छथ।

ा इर महीना मे घर चक कोठी कच्लयउ, बइनकऽ तैयारभऽ गेल। गाछी मे एकटा बंगली सेहो बनलइ। फला बाबू सेहो अंत मे आइबकऽ देख लेलाह।

चबाहक चदन चाच तभऽ गेल छलइ। आब बचयातीक चसट बनच छलइ। कतेक काट-पीटकऽ बाद बदरी चसट फाइनल केने छल। ओइ चसट मे उधारी सीा देबऽ बाला बचायाक नाम सबसं ऊपर रहइ, ओकर बाद जेकरासँचकशा भारा पर लइ छलाय-ओकर नाम, फेर चकशा गारेन्टर जे बनच-ओकर नाम, जे रामरचाकऽ पचल नौकरी चयेलकइ-ओकर नाम,फेर जे मास्टरनी चजयकऽ मुसपेलटी स्कुल मे चान कागजकऽ नाम चखलकइ-ओकर नाम, जेकर गाडी से नबोदय जाइ-ओकर नाम, कचाया बाबीकऽ बेटा सबहक नाम, अपन चअयद सबहक नाम। अचना बरकी टा चसट रहइ। चकली बाला फला बाबू बदरीकऽ कहनेहो रहचन जे जतेक लोककऽ आइन सकी, से आइन लेब। भगबतीकऽ देल हमरा सब चकछु अइ। कहा अशौकयथनच करब।

चजय अइ चसटसऽ सहमत नच छलाह।ओ नाम कम करऽ कहलचन। कलकता बाला लोककऽ अतइ बडका होटल मे भोज देबऽ पर सहमचा भेलाह। गामसऽ घर चछु एक आदमी पर तैयार भेलाह।

बबाहक काडथथानाक छोटाबाबु गाम मे बंटला।उनके भार छलइन जे सब बचयातीकऽ हरिई जहाजसँ द्दवल्ली अनबाक लेल। सात द्दन पहने एकटा गेस्ट हाउस मे बदरी आ रामरबा इिल गेल छला। कन्याया बाबीकऽ बलआनकऽ क बजालि गेल रहइन। बदरीकऽ अतबे जाम्मेदारी देल गेल रहइन जे चकछु बाजई लेल नचि। से ओ जखने बाजअकऽ मोन करयन जेबीसँभाग गोली बाकालइथ आ सुखले घोअईठ जाइथ।

बबाह बडड धुमधामसऽ भेलइ। सब बचयातीकऽ एक नम्बारकऽ धोती कुता,तउनी, पाग, डोपटा, मठाईकऽ बडबा आ जनऊ सुपारी संग पाइक लफाफा भेटलइन। सब चकयो जय जय करइत गाम घुरलाह।

आइ फेर बदरी भागकऽ नशा मे बाईज रहल अइछ से ठीके चिबम खाढी मे ओकर द्दन घुरलइ। कोठा बइन गेलइ। कथुक कमी नचि छइ। बस अतबे छइ जे चकछु बाजय नचि।

आब बदरीकऽ पहलुके द्दन याद पइड रहल छइ। मोनक गप तकऽ सकइ छल। आब त ओकरा ई सब घर ,दुआर, लोक,बेद,पारि, पैसा जीबनक पैबंद लगइ छइ। बदरी अरथबरथअहना बरबरा रहल अइछ। डाक्टर माथ लग आ रामरबा पैर लग ठार छइ। सब बुझ्मते चकयो चकछु बाईज नचि सकइत अइछ।

जे बदरी अपन घरक साहेब छल से आइ पाबंदी मे जीब रहल

अइछ।

<u>पैबंद (ि ाचम भाग)</u>

ब्जय ब्बाहक बाद घुमई च्कडइ लेल कन्याया संग ब्देश ि इल गेल छलाह। ई पच्पाटीयेभऽ गेल छइ च्क सोहाग राइत आब कोबरा घर मे नचि, ब्देश जाकऽ मनालि जाइ छइ। नचि कोनो उपाय त लोक काठमाडू ि ा पोखरा ओतइ ि इल जाइत अइछ। नचि मामा त कनहा मामा।

कोनो भी ब्धकरीकऽ आब जररत नचि छइ। कन्याया सब अपने पाकल परोर रहइ छइ। पच्नेहो त ब्धकरी, कन्यायेकऽ मददक लेल होइ छलइ। पुरखकऽ त ब्याबान सासुर मे असगर धकेलकऽ छोच्क दइ जाइ छइ। जेना माल-जालकऽ बच ि ाकऽ हेलल नचि च्सखालि जाइ छइ, सीधा जलकर मे हुला च्दयउ, अपने ि ार पैर माडइत, उबुक-डुबुक करइत, कात लाइग जाइया ि ा पारकऽ जाइया। ओच्नाहे हाल पुरखकऽ सासुर मे होइ छइ।ब्जय अपन ऊबडुब करइत ब्देश मे हनीमून मना रहल छलाह।

इमहर बदरीकऽ च्दमाग मे हलालि बइढ गेल छलइन। च्कछु भागक असर सेहो। च्काल जे पच्ने छलाह, ओहो त अपन रंग देखेतइ। शरीर कमजोर पडला पर ि ार तरफसऽ बीमारी सब खेहाडइ

छइ। कयेक टा जाि सब भेलइन। चककछुकऽ चपोटथतखने भेटलइन आ चककछुकऽ लटकल रहलइन। रामरचा, बदरीकऽ बेमारीलऽ क बुटीक गेनाई छोच्छ देने छलीह। बाजयकऽ कोनो फोन फान नचि अबइ छलइन। पाइ कौडी लग मे रामरचाकऽ रहइन। तै सब चाबहल जा रहल छलइन। कखनोकऽ मोन मे होइन, जे कोन लगन मे ई बायाह भेल। जच्दयासऽ भेल, चककछु ने चककछु अटपट भईये रहल छइ। ककरो नजर गुजर त नचि लाइग गेलइ। घर मे भगबानक पूजा सेहो बडड चदनसऽ नचि भेल छइ। बदरी ठीक हेताह त सतनारायण भगबानक पूजा करबे टा करब। मोने मोन रामरचा ई चाि यिकऽ लेने छलीह।रामरचाकऽ बाजयक सासुरक रंग-ढंग नचि ठीक लगइन। कोना बाजय इनकर िकिर मे फंईस गेलाह, से नचि बुझाई छलइन। जन्म, बायाह आ मरण ककर हाथ मे रहलइ, से ठीके। कतऽ दोसर दोसर कथा, कतऽ ई टपसऽ फाइनलेभऽ गेलइ।

बाजयक ससुरक चबस्सा बडड रोिक छइन। नाम छइन रामबाबू। ई दु भाइ छच्थ।चनकर जेठ भाइ बादेश मे नौकरी करय छच्थ। उनकर बचि सबहक रंग दुच्थया गोराई छइन। ऊपरसऽ बरका हाचकम सेहो छलाह। कयेक बरख पच्लने ओ रामबाबूकऽ कहलच्थन जे तोहर दुनु बेटीकऽ रंग झामर छह।ऊपरसँतो हाचकम सेहो नचि छह। तोरा बेटीकऽ नीक कथा मे चदकत हेतह। जैह भेटतह,कऽ चलयह। बेशी मीन मेख नचि चाकाचलयह। रामबाबू कहलच्थन-

-भैया। सब अपन अपन भागलऽ क अबइ छइ। जे चलखलाहा

हेतइ, सैह ने हेतइ।

बात आयल गेल, िइल गेल। सब ब्बसइड गेल लेच्कन रामबाबू नच्च बसरलाह। ओ बेबसाई छलाह। दबाईयक कम्पनी च्चमालि मे खोलने छलाह। ओ िइल गेलइन। बडड पाइ बनेलाह। अठारह टा त उनके महानगर सब मे घरे छलइन। जकरा छु दइ छलच्खन सोनाभऽ जाइ। मकान खरीद ब्बकी मे सेहो खुब कमेला।

जखइन जेठकी बेटी ब्बयाह जोगर भेलइन त अपने मसुरीकऽ IASकऽ रेच्बंग सेन्टरकऽ बाहर ठारभऽ क अपन ब्बरादरकऽ कुमार लडका सबकऽ ठेकनबइत छलाह। देखबाक मे सुन्दर हुआय, तकरे च्फराक मे रहइ छलाह। जेठका जमाय अच्छना भेठलच्खन। आब ब्बजय बेर मे त ऊयाह ई भार ऊठालेलच्कन। दुनु जमाय देखबा मे च्सनेमाक हीरो सब जका लगइन। रामबाबूकऽ भाइकऽ जमाय त देखऽ मे केहने दन छलइन। एक त अपन समाजक नच्च, दोसर रािीकऽ आच्दवासी। कच्नाको मेल नच्च। रामबाबू एकसुती कायच्कम मे लागल छलाह, आ सफलो भेलाह। नौ टा घर त उनकर कच्नाया बेटीकऽ खोईछ मे देलच्खन। ओना सब उनके सबहक। तखनो अपन मान मनोरथ पुरा केलीह।

बदरी कऽ मोन ठीक भेलइन।ब्बजय सासुरसऽ सीधा मसुरी िइल गेलाह। उनकर जनता फ्लैट मे पुतोहु केना अयच्तान। रामबाबू कलकता मे एक टा मकान भाडा पर लेलाह। ओही मे बदरी आ रामरच्ता सेहो रहअ लगलीह। सब सेट भेलाकऽ बाद पुतोहु सेहो एलच्खन।तीन पाणी ई सब घरबइया, आ पाि टा बहच्नया। डाईरि,

माली, भंचसया, झाड़ू पोछा बाली आ मनेजर। ई आठ लोकक खेनाई बनचि। सब ओतइ रहइ। रहबाक घर ओकर सबहक अलगसऽ बनल रहइ। बाजयक आगह आ बीमारीकऽ देखइत बदरी दुनु पाणी नौकरी छोड्ब देला। कोनो सरकारी त छेलइ ने जे गेच्युटी आ पेशन। गेनाई बंद, नौकरी खत्म। चजाइन देबाक कोनो काजे नचि। जेबाये मे चजाइन आ जाइन। काज पर गेलऊं त नोकरी नचि त छुटी। आब सब चदना छुटी।

बदरीकऽ त कलकताकऽ हीर हीर बुझल। मनेजर जे रहइ से महग महग सामान सब खरीदइ। आचबर पाइ त ओकरे पुतहुकऽ लगइ छलइ। ओ मनेजरसऽ सामानक चसस्ट लइ आ अपने बस पकइडकऽ इिल जाय आ सस्त ीज सबलऽ आबय। कतउ ाइर घंटा लाइन मे लागय पडई त ओहो लाइग जाय। घर मे परल परल की कचता।समय ऐना बीत जाइ आ अपना मोने दु टा पाइ बिबो करय। बाजयकऽ रेचांग खतमभऽ गेल छलइन। आब पोचस्टंग पर जायकऽ रहइन। ई लंबा छुटी छलइ। कलकता मे लोक उनका कहलकइन जे आहाकऽ बाबु समानक लाइन मे लागल देखचलयइन अइछ त कखनो काख पर झोडा ढोइत। घर मे गाडी डाईरि, तखनो बदरी ई सब काज अपने करय। पुतोहुकऽ ई सब नीक नचि लागइन। ओ मनेजरकऽ बागडच्यन। मनेजर बेिरा की करय। ओकर त नौकरी छइ।अपन सईह लय सबके।बाजयकऽ ई सब गप्प कहलचकन कचाया।

बाजय कल्हकऽ हाब गेलाह त एक टा रस्ता बाकालललाह। बदरी आ रामरवाकऽ गाम रहबाक कहलचबन आ कबायाकऽ अपना संगे मसौढी पोचस्टंग परलऽ गेलचबन।

बदरीकऽ आब कलकता मे नौकर िकर संग रहबाक आदतभऽ गेल छलइन। पुतोहुकऽ रोब दाब करइत सेहो देख लेने रहच्यन।आब ओ गामो मे तकरे नकल करऽ लगलाह।उनका कबाया बाबीकऽ ढहल कोठासँसाप छुछुंदरकऽ आबऽ कऽ आशंका लगइन। उनकर घोठा पर जे मालजाल रहइन, ओकर दुगंध लगइन, काज करऽ लेल जे दाई अबइन ओकरो कोनो ने कोनो बहाने दुरगइत करइत रहइ छलाह।अपन बंगली लग ककरो टपअ नवि दइ छच्यन। काज तेहार मे कयेक लोक मंगलकइन मुदा नवि देलचबन। बाहोरा पर टस से मस नवि भेला। अपनाकऽ कथी दुन बुझअ लागल छलाह।सुख दुख मे ककरो कतऽ जाइतो नवि छलाह। गाम मे से छबातइन। कनी चदन त लोक बदाश्त केलकइन। देनाई एक पाइ ने आ रोब सऊंसे। ई कतऽ िलत।

आइ भइड गऊंआ बइसल आ बदरीकऽ बाइड देलकइन।भतबरीभऽ गेलइन सब सं। ओकरा सबहक लेल बदरी फेर अछोपभऽ गेलाह। गामक पैबंद छच्य बदरी आ मुफ्ते मे मारल गेलीह रामरवा बानका लोकक अते सनेह।

पैबंद (पाि म भाग)

समय अपन गत्सेसँ ि इल रहल छल। ब्जिय आब गामक बगल बाला ज्लिलाक कलक्टरभऽ गेल छलाह। ब्जिईयासऽ ब्जिय आ ब्जियसऽ आब बी एनभऽ गेल छलाह। अध्किारी ि गिथमे हुनका लोक आब बी एन कहइ छल। नबका फैशन छइ ईहो नाम बदलबाक। ब्जिय नारायण आब बी एन। घरबाली सेहो BN कहइ छलथ्बिन। गरीब गुरबाकऽ त बी एनसँ ब्जियनभऽ जइतइ। ऊयाह ब्जियन जे हथ पंखाकऽ कहइ छ्छियई। ब्जियन डोलबइत अखनो लोक गाम घर मे भेट जाइत। ज्यो गरमीकऽ मौसम होइ आ ब्जिजली गुल हुअय, त देख ब्जियअ ई ब्जियनक ि लिती। एक हाथसँदोसर हाथ घुम्तिते इनकर ब्दिन ब्जितइन। बडड भाि बइढ जाइ छइन ब्जियन के। ब्जिकयो इनका छोडअ नइ्ि ि ाहइ अछ्छि। सुतऽ बाला घर तक मे इनकर पहुंि अइछ। मुदा अखन जे BNकऽ ि थ्तिऽ रहल अइछ ओ कलक्टर ब्जियक नबका नाम अइछ।आब बी एन जे बचि ा मे कंि ा आ गुल्ली डंडा खेलाई छलाह से ब्जिल्लयडसथ आ स्नुकर खेलाई छथ्यि। एक बेर बडका मेडल सेहो भेटलइन।

BN कयेक टा पोस्टिंगकऽ लेलाह अइछ। सुखल आ तब्जिगर ब्जिभागक थाह लाइग गेल छइन। पोस्टिंग केना होइ छइ, सेहो बुइझ गेल छथ्यि। अतुका पोस्टिंग त उनका एकटा MP करबेलकइन

अइछ।ओना ओ ईमानदार मे गनल जाइ छथि।

शुरु मे जखइन पोस्टिंग भेलइन त लती फती जोइडकऽ कयेक लोक, संबंधीभऽ गेलखिन। आब पहिनेहे BN कहल देथिन जे पुरा जाले हमर संबंधी अइ। अयबाक मूल बात बताऊ। सब चाकयो कोनो ने कोनो काजेसँअबइ छलाह। ई नहि चाकनको मददयलेल कहलखिन नहि बाधे बनलखिन। तखनो लोककऽ सही काजभऽ जाइ। उनका तक पहुंि, लोकक लेल बडका उपकार छलइ। नहियो िहते, जश बढइत गेलइन।

पहिल बेर राखी मे एकटा गामक बहिन एलखिन। आइ तक त बाजयक हाथ सुने छलइन राखीक लेल। कहियो कोनो बहिन नहि आयल छलइन आ ने बजेने रहइन। ईहो बहिनकऽ संबंध उनका फचबछायल नहि छलइन।तैयो नीक लगलइन। बहिनकऽ जाइ काल चाकछु टाका जे जेबी मे रहइन से देलखिन आ पी एकऽ कहलखिन जे इनका घर छोडबा चदयउन।अफसर सबहक जेबी मे कखनो बेशी पाइ नहि भेटत। बाजयक सेहो उएह हाल। पाइकऽ जररत परला पर अपन पी एसऽ लइ छलाह। बहिनक मोन खुशीसँफुलल जाइ छलइन। लाल बती बाला गाडी मे पहिल बेर जीबन मे बइसली।मोने मोन खुब आशीिद देलखिन बाजय के। आब देखू अगिला बरख राखी मे कयेक गोटे आइब गेलखिन। अइ बेर पी एकऽ कहलखिन जे टेम्पु ि चाकशा पर बइसबा चदयउन। चाकराया हमरा सलऽ लेब। बाजयकऽ आब बुझाय लागल छलइन

जे सब संबंध पद आ पाइसऽ जुडल छइ। कतेक नेता, अफसर, डाक्टर, ईन्जीन्यायर, ठेकेदार, पोफेसर , पतकार सब उनकासऽ कोनो ने कोनो संबंध जोइड लेने छलाह। उनको सरकारी काज मे टटका सुिना सब अइ नबका संबंधी सबसऽ भेट जाइ छलइन।दुनु एक दोसरकऽ उपयोग करय छलाह। बरका लोक अपन इदथ्यादथ रहअ बालाकऽ केना काज लइ छइ, तइ मे ब्बाजय न्यापुणभऽ गेल छलाह।

उनकर गामक लग एक टा राज्यकऽ मंतीकऽ सेहो गाम छलइन। ओ ओतुका ब्बाधायक सेहो छलाह। अपन बेटीकऽ ब्बाबाह गामेसऽ क रहल छलाह। अइ बहाने सब िटरकऽ भोज सेहोभऽ जेतइन। ई नेता सब सद्धखन, की केलाहसऽ फायदा होइत, ओकरे जोगार मे रहइत अइछ। अइ ब्बाबाह मे पटनासँकम्माशर सेहो आइब रहल छलाह। तै ब्बाजयकऽ उपत्स्थत्था अन्नायिथ छलइन। ब्बाजय गेलाह आ घुरती मे सोिलाह जे गामो िइल जाइ। बहुत द्दनसऽ भेट नद्दि भेल रहइन।

गाम ब्बाना खबरकऽ पहुंिलाह। बदरी आ रामरत्नाकऽ खुशीकऽ द्धकाने नद्दि।ब्बाजय असगरे आयल छलाह। कन्नाया द्दवल्ली गेल छथ्यान। ब्बाजय च्चकछु कालक लेल आयल छलाह। माय कहलथ्वन जे आयल छह त रईक जा।च्चकछु गप्प करबाक अइछ। थोडे कालक बाद दुनु माय बेटा एकाती मे बैसलीह। रामरत्ना सब गाम घरकऽ गप्प कहलच्चकन। ब्बाजय सेहो अनुभकिऽ रहल छलाह जे पच्छने

गाम पहुंिते कतेक लोक उनकासऽ भेट करऽ पहुंिई छल। अइ बेर भइड ब्दन बीत गेलइ कोनो कऊओ तक पुछारी करऽ नव्हि अलइन। साझु पहर, बिजय सबहक घर भेट करऽ गेलाह। उनका देखते देरी सबके मोन गदगद भेलइ। अचािला ब्दन बिजयकऽ जाइ काल भइड गऊंआ छोरऽ अयलइन। बिजय त ब्दन राइत तरह तरहकऽ लोकक बीि मे रहइ छलाह। ओ बुझ्ि गेलाह जे गाठ कतऽ छइ। अइ बेर अपना संग माय बापकऽ सेहो नेने अयलाह।

बिजय जखइन नौकरी मे आयल छलाह त उनका एक टा जनता फ्लैट कलकता मे रहइन। आब जे ओ सरकारकऽ सलाना सुिना देलब्खन ओइ मे महानगरक आठ टा घरक बिबरण छलइ।ई घर तक उनकर कबिायाकऽ खोईछ मे भेटल छलइन। आब जे सब इनकर बिरोधी छलइन ओकरा सबकऽ मौका भेट गेलइ। बिजयकऽ आब बुझेलइन जे कतेक लोग उनकासँखार खा कऽ बइसल अइछ। अकर मूल छल- बिजयक बिबाह। उनकर जाइतक मंती, अफसर, बिधायक, बेबसायी आरो कतेक शब्क्तशाली लोक कथा पठेने रहइन।ओ सब कथा नव्हि भेला सं, अपन बेइज्जती बुझलक। आ कारण तकइ छल।

ई सम्पब्त्ताक लेखा जोखा रोज अखबार मे छपअ लगलइ। टेब्लबिज़न पर बिजयक आमद खिथपर बहस होबऽ लगलइ। उनकर ब्खलाफ नारेबाजी आ हो हल्ला शुर भऽ गेल छल। अइ आइग मे घीकऽ काज केलकइ ओहो भष लोग सब, जेकर गलत काज मे बिजय साझेदार नव्हि छलाह आ ब्किछु उनके अफसर िगिकऽ लोक,

जे इनकर पत्नीसँ जडई छल।

अतेक ईमानदार रहलाहकऽ बादो बिजयक खिलाफ राज्य मे माहौल बइन गेल छलइन। बिजय केन्द्र मे डेपुटेशन पर आइब गेलाह। बदरी आ रामरति सेहो दिल्ली मे इनके संग रहअ लगलीह। बिजय गाम समाजकऽ त आब नीकसँबुझअ लागल छलाह लेकिन बदरी त अइ सबसँअंजान। बदरी त गामो मे असगर आभऽ गेल छल। तै अइ बेर ओ खुशी खुशी दिल्ली मे रहअ लागल।

दुनु बेकत मे ज्यो घरबाला बेशी सुनर रहइ छइ त एहन मे ओकर कनिया बडड आजाकारी आ देखभाल करऽ बालाभऽ जाइ छइ। अतउ बिजय देखिते ततेक सुनर छथि आ कनिया उनका सामने बेश दबऽ । बिजयक कनिया अइ कमीकऽ अपन बेबहारसऽ भरने छथि। कियो कहि नहि सकइत अइछ कि अतेक पाइ बालाकऽ बेटी। जेकरा कहइ छइ ".सर्षिय समर्पिता" से हाल छलइन। बिजयकऽ पुरा खुश रहबाक पयास करय छलखिन। बिजय आब ऋछला जिनगी बिसरल जा रहल छलाह।

आब कियो कहलकइ जे तिसम पीढी मे दिन त घुमत मुदा संग संग डीह सेहो बदलत। आब कि बिजयक बच्चा घुइडकऽ गाम जेतइ। कथमपि नहि। आब बिजय दिल्ली बालाभऽ गेलाह। ईएह उनकर डीह डाबर भेलइन। पीढीकऽ कि, ई साप सीढीकऽ खेल जकाभऽ गेल छइ । कखन मे ऊपर, कखन मे नीचा।

बगलकऽ गामबला जे मंतीजी छलखिन, उनका बिजय अपन घर आ बंगलीकऽ बेबिाक भारदऽ देलखिन। डीह नहि, आब घरभऽ गेल छइ। सही दामक इंतजार छइन। घरारीकऽ बोली लाइग गेलइ।

आब बिजयक घरकऽ पता भेलइन-

मकान नं-420, नवि दिल्ली।

<u>पैबंद (छअम भाग)</u>

बिजय आब दिल्ली मे रहनाई शुर कऽ देने छलाह। अइ महानगरकऽ उनका अनुभि नहि छलइन। कलकता आ बंगलोरे उनका जीन्ति शहर लगइन। अतऽ आइबकऽ त ओ गुमभऽ गेलाह। आब बुझेलइन चिक लोक दिल्ली अबइ लेल चिकअए आफनतोडने रहइया।

गाम बला घर आ गाछी सब बिका गेलइन। अइ मे ओ मंती बडका गेम खेलेलक। चियछला िनाि मे बिजयकऽ दिअयदीसऽ ओकरा िटि नहि पडल रहइ। अखनो जाइतक समीकरण मे ओकरा िटि भेटअ बाला नहि छइ। ओ बिजयकऽ नीक गहकीकऽ बारे मे

बतेलकइन आ सब पाइ पच्चनेहेदऽ देलकइन। पाइ, बजार भासिऽ बेशी छलइ, तै बजय पुछताछ केनाई उचित नचि बुझला। जखइन रच्जसरी करऽ पहुंिला त देखलाह च्क ओ त उनके गामक छटल बदमाश सोलकन अइछ। अकरा पर कै कीता मोकदमा िइल रहल छलइ। गलत काजकऽ क पाइ जमाकऽ नेने अइछ। एको टा कुकमर्सँई बािल नचि अइछ। आब मुदा अपन समाज मे पाइ खिच्क बदला मे जगह बना नेने अइछ। मंती जीकऽ िमिा - बेलिा छल ओ। अकर ईनाम ओ च्दअय देलच्कन।

पढल च्लखल लोक सेहो कयेक बेर कनीक फायदा लेल अइ सब मे फंईस जाइ अइछ। चीट-फंड कंपनी सब ईएह छइ ने। बेशी फायदा शुर मे दइ छइ। बस अपन सच्यिय लोक बेशी फायदा लेल फंसा दइया। ओकर बाद कम्पनी बंद- घोटाला उजागर। अऊ बाबु, जखने च्कयो बेशी फायदा च्दयय त बुअइझ जाऊ, च्कछु राज छइ। बान कारण च्टटही नचि बाजय। मुदा सब च्कछु बुच्झतो लोक तात्कालच्क फायदा कलऽ क फंईस जाइत अइछ। अतऽ देखू ने, बजयसऽ बडका अफसर के? पाइ कौडीकऽ सेहो कोनो कमी नचि। तखनो एहन आदमीसँकबालाकऽ रहल छइथ जे कतउसँउनका लेल सही नचि। रच्जसरी अफसरकऽ सेहो आियथ लगलइ जे साहेब ककरा हाथे बेि रहल छच्थ। आब ऊपाये की। मंतीजी अपन एकटा आदमीकऽ पठौने छलाह- ओइ सोलकन संग। बजय रच्जसरी आच्कससँपटना लेल घुरी गेलाह। िट दं गाडीकऽ दुनू शीशा उठा लेलाह आ च्कछु पढअकऽ नाटक करऽ लगलाह - ककरोसँआंईख नचि च्मल जाय।

आब बाजयक घर मे ओ सोलकनमा रहत। ई घर सब बदअयदक बीि मे पडइ छइ। आइ तक चकयो दोसर जाइत अइ मे एको धुर नचि कीनने छल। ज्यो चकछु बाकेबो करय त आपसे मे सबकऽ लइ छलाय। मंतीजी बदला लेलक कचसया कऽ ।

बाजय बदकली आइब गेल छलाह- डीहक रचसरी सोलकन संकऽ क। बदरीसँपुछनाईयो उचित नचि बुझला। फोन परकऽ गप्प सुअइनकऽ बदरी आ रामरचाकऽ ई बुझा गेल छलइन जे बेिऽ जा रहल छयचय। आब उनकर सबहक सबटा भार त बाजय उठेने छयचयन- तखइन कथीकऽ पुछा-पुछी। घर मे सनाटा पसरल छइ। बाजय आइ तक चकछु बेिने नचि छलाह। ई काज उनको ठीक नचि बुझेलइन। पाइलऽ क की करताह। कथीकऽ कमी छलइन। रामबाबू कतेक जतनसँई घर बेटी जमाय ले बनबौने छलाह। सब िस्तु एक नमबरकऽ लागल छलइ। अकर नक्शा अपने इंजीचयर साहेब कतऽ जाकऽ फाइनल केने छलाह। रामबाबूकऽ ई चशानी छलइन। बाजयक कचया तनुजाकऽ सेहो दुख भेलइन। ओहो घर मे कचहयो बेिऽ बाला गप्प नचि सुनने छलीह।

सबकऽ अपन अपन याद जुडल छलइ। रामरचा केना दुरागमनकऽ क अइ घर मे आयल छलीह। पचहने चक्शा पर नैहरसऽ बादा भेलीह। फेर घर लग आइबकऽ महफा मे बइसल छलीह।ओना नैहरसँसीधा महफोसँआइब सकइ छलीह। ओ महफा बाला बेशी पाइ मंगलकइ। ताई लेल चक्शा कयल गेलइ। रामरचाकऽ नैहर अथचक

ब्लसाबसँबड पातर। सौराठ सभासऽ बाबाह ठीक भेल छलइन। शुिक अंबाम ब्दन छलइ। नचि बदरीकऽ कोनो कथा आयल रहइन आ नचि रामरबाकऽ बाबूकऽ कोनो ठेहगर कथा अभरलइन। अंबाम ब्दन एकटा घटक कहलबन जे ई बदरी बाला काजकऽ ब्लयअ। बाबाहक खिथ्टा लागत। रामरबाकऽ बाबूकऽ जेबी मे एको नबका पाइ नचि। फेर जेना तेना सब भेलइ। अब्लना होइ ओइ जमाना मे । ककरो बेटी कुमाइड नचि छुटई-सबके घर बर होइ। बाकी त अपन भाग। एक बब्लन सासुर हाथी पर जाइ आ दोसर कतऽ सब ब्दन िलहो नचि जडई। रामरबाकऽ नैहर मे भीतक घर रहइ। अतऽ त कचि ईटाक घर छलइ। नैहर मे बाबूकऽ दुटा घर भीतक अलाि बकछु नचि, अतऽ त छोटे ब्छन गाछी त रहइ, बंसबाटी सेहो छलइ। ओना संब्लया पोखइड मे दु पाइ ओकरो सबकऽ ब्लस्सा छलइ। लेबकन फरछायल नचि रहइ। सभा मे बकयो कहलकइ ओकर बाबुकऽ जे बरकऽ जथा पात नचि छइन। ओइ पर ओकर बाबु झटदऽ कहलकइ जे दुती बर त नचि छइ, कोनो अंग भंग त नचि छइ, सऊबान तर मे त नचि रहबाक छइ। देह-दशासऽ सिस्थ छइ। अपने कमेतइ खेतइ। बाकी अपन भाग। आइ सब टा गप रामरबाकऽ याद पडइ छलइ। आंईख मे नोर भइड जाइ।

ऊयाह हाल बदरीकऽ रहइ। कब्लया बाबी बाला सब गप याद पडइ छलइ। आब अफसोस होइ की उनके ब्लख देबायइन। बाजयक बाबाह मे त ऊयाह एक पैर पर ठाढभऽ क सब समहारलीह। आब लोक की कहइत हेतइ-गाम मे। सब थु थु त करीते हैत।

ई सब काज बिजय भाबना मे बहिकऽ केला। दु ाइर बिन कनी मातम जेका छलइ। सब दुखी छल। बिकयो अइ बिषय मे ककरोसँ िथनचि करय। सबकऽ सब गप बुझल। ओना मंगनी त बिकयो देलकइ निय आ निय बिकयो जबरदस्ती छिनलकइ। अपने सोइि समइझकऽ बिणय लेल गेल, फेर अतेक पिताप बिकयैक। ईएह छइ लगाि। जतऽ जतेक स्नेह ओतऽ टुटला पर ओतेक टीस।

समयसँपैघ बिकछु निय।सब आब ओइ बातकऽ बिसइड गेल। जीिनक पिहया आगु बइढ रहल छल। बिजय आब गोल्फ खेलाय लगलाह अइछ। शूर मे त शइन आ डइबकऽ खेलाई छलाह। आब त बेशी काल औिफससऽ सीधा गोल्फ कोसथइिल जाइत छइथ। ओतऽ सऽ देरीसँघर घुडइत छइथ। कनिाया तनुजा सेहो बिकटी पाटी सब मे सिदखन जाइत रहइत छइथ। कहियोकऽ इनको घर पर सब अबइ छइन। जहियाकऽ इनकर घर पर पाटी होइ छइ तहिया त बुझु बदरी आ रामरिाकऽ जेलो मे जेल। एक कोना मे ुिपािप परल रहइ छिथ दुनु गोटे।

बिजयकऽ दु टा बेटा भेलइन। जन्मो ओकर सबहक मातृक मे भेलइ आ लटकल सेहो ओम्हरे बेशी रहइत अइछ। जखइन बिहार मे पोिस्टंग रहइन त उनका सबहक बिसाबे ओतऽ स्कुले निय छइ। जतऽ नानाकऽ फैक्री छइन बिमाि मे, उम्हरे कतउ ओहो सब पढई छिथ। बिजय लग कम अबइ छिथ। छुटी मे सेहो

मातृके। बदरी लेल सब धन सन। जतऽ रहैथ नीके रहैथ। कलकता मे कतेक नौकर िकर रहइन। अतऽ त एके टा छइन, उएह खेनाईयो बनबइ छइन आर बजारो हाट करय छइन। कयेक बेर बजयक ससुर िहलचकन जे कछु नौकर िकर पठा दइलाय। बजय अकर सख्त बरोधी। बहार मे जे उनकर खलाफ अखबार बाजी भेलइन, ओइसँओ हरदम सिंत रहइ छथ। बेटा सब पैघभऽ रहल छइन। बजयक बारे मे कोनो भी अनट सनठ समाचार, ओकरा सबकऽ दमाग पर खराब असर करतइ। ओ तनुजाकऽ बुझबइत रहइ छथन जे ओ ऐना नह कर।

बदरी आ रामरत्ना, बऊक बहीर जका परल रहइ छथ। आब जाइथ त कतऽ जाइथ। कलकता िला जनता फ्लैट तक्ये बेि लेने रहइत। गाम सेहो सुडडाह। आब की रास्ता। कोना मे परल रहइ छथ। िलनाई फरनाई छुअइट गेल छइन। मोनो खराबे रहअ लगलइन। उनका सबकऽ लदाइत छलइन जे जखइन बाहरकऽ लोक ि चकटी पाटी होइ तखइन बहरी घर मे नह अबइ लाय। ओना, नह कोनो रोक छलइन। असली गप जे समये नह छलइ ककरो लग। बदरी आ रामरत्ना अपनाकऽ बजयक घरक पैबंद बुझअ लागल छलाह।

पैबंद (सातम भाग)

बाजय आब बेशी काल घरसऽ बाहरे रहइ छलाह। तनुजा सेहो अपन सखी बच्चनपा मे व्यस्त छलीह। कच्चयो काल गाम समाजकऽ हरायल भुच्चायाल चकयो पहुंि जाइ छलइन- बदरी आ रामरच्चाकऽ च्मगेसा मे। ज्यो आगंतुक चकछु सलाह तनुजाकऽ बदरीकऽ बारे मे दइ छलच्चबन त उनकर नाक कान लालभऽ जाइ छलइन- आ उनका िहो पर आफत। एहन देहक च्मथच्चा रामरच्चाकऽ नच्चि रहइन जे ओ अपने उईठकऽ बना लइतइथ। नौकरबा त अपने देहिर रहइन। जाबइत चकयो कच्चतइ नच्चि -ओ नच्चि उच्चतय। दस बेर त तमाकुए खाय बालकोनी मे जाइ छलाय। ओना सामने बला घरक काजबालीसँओकरा घुटा सोहार छलइ। जखने मौका लगइ, गप्प करबाक मे लाइग जाय। घर मेकऽ ओकरा चकछु कच्चतइ। ओ बुइझ गेल छल जे बदरी आ रामरच्चाकऽ जेहने रहने, ओहने नच्चि रहने। नौकर िकिरकऽ ई बुझबाकऽ शच्चत भगबान तरफसँअदुत भेटल छइ- कोन पाहुनकऽ केहन आगत सिगित होइन। कयेक लोककऽ त बाना िहिकऽ जाय पडइ छइन। आर नच्चि चकछु त तखने बाथर म मे घुअइस रहथ आ जखइन बुझा जेतइ जे पाहुन गेलाह, तखने चाकलथ। ऊपरसऽ बजबो करत- जाह िइल गेलाह। हम त काफी बनबऽ जाइ छलऊं। सुइनकऽ त आइग लाइग जाइन बदरी के। मूदा उपाये की। बुझई छलाह जे कतेक परेशानीकऽ क च्चदक्ली मे चकयो अबइ छइ। अपन बुझलक तखने ने आयल। आ अतबोसऽ ओ गेल। आब कम्मे उमेद जे ओ फेर आऊत। ईएह त तनुजा आ नौकरबा दुनु िहइ छलाह।

बाजयकऽ इमहर अपन साढु कतऽ उपनैन मे जायकऽ मौका लगलइन। बडड नीक लगलइन ओतऽ ।दुनु दशक लोक आयल छलइन। जगक सफलता अही पर ने, जे कतेक दुरक कुटुम्ब अयलाह। उनको सेहन्ता भेलइन कि हमरो बेटा सबकऽ उपनैन अच्छना करी।

जखइन बेटाकऽ स्कुल मे छुटी हेतइन, ओइ समयक दिन देखेबाक लेल पंडी जीकऽ कहलखिन। बदरी-रामरजा त खुशीकऽ मारे पागल भेल छइथ। पहिल खुशी जे बेटा उपनैन बुझलखिन दोसर अइ मे कतेक लोकसँभेट होइत। बाजयकऽ उपनैन त ओ कपलेशर मे जाकऽ करौने छलाह। या त मनौती रहइ छइ या खगता रहइ छइ- लोक कपलेशर मे करयया।कऽ सब आइत, कतऽ रहत, केना भोज, की बादाई,कऽ बनत बह ा, हजमाकऽ बेबसथा, केशक भसान आरो कतेक तरहक गप्प। पंडीजी ततेक िलता पुजा छल जे ओ सबहक संपकथमे। ओकरे बेशी इमहरका भार देल गेलइ। बदरीकऽ सासुर दशसऽ आयल छल, तै तनुजाकऽ ओकर योग्यता मे कोनो संशय नहि छलइन।

आब एकटा समस्या आइबकऽ सोझा ठारभऽ गेलइन। बर आकऽ आ ियथकऽ बनत। कतऽ दन अपने खानदानक लोक बइन सकइ छइ। बदरीकऽ त गामसऽ संबंधे नहि। ओना पंडी जी कहलखिन जे शास्त्र मे सबहक बेबसथा छइ। कुशक आ ियथबइन जेताह। ऊपरसँसीताजी बला खिस्सा सेहो सुना देलखिन जे कोना

कुशक बनाओल गेल छलइ।

ई पंडीजी त संकटमोिन बनल जाइ छलाह। सब समस्याकऽ समाधान अपन पतरा मे रखने छलाह। उनकर मोजर हर जतरा मे बढल जा रहल छलइन। रामरचा एक िदन जखइन निह िकयो रहइ त पंडीजीकऽ कहलिखन- एहन कतउ भेलइ अइछ। कुशक आियथ।

-आहा करौने छी एहन उपनैन।

पंडीजी िप।

रामरचा आगु बजली

-आहा अपन जे मोन होइया कर िबजयक संग। मुदा कुशक आियथ बाला सलाह निह िदयउन। आियथकऽ अलग स्थान होइ छइ। ओकरा मरला पर कते जेका िलाकऽ सेहो कयेक कमक िबधान छइ। एक बेर गाम मे समाद देिखन बाजय। िकयो ने िकयो गछबे करतइन।

पंडीजी त बुझते छलाह ई सब।

पंचायत लग ज्यो समाधान निह त लोक पंचायत बदइल लइत अइछ। पंडीजी जजमानक खुशीकऽ लोकािर कहइ छिथन।

िबजयकऽ अयलाह पर पंडीजी कहलिखन-

िकयो अपन लोक आियथकऽ जाय त उतम।कुश िला अंचाम,

ओना व्यावहारिक नहि।

विजय तखने कन्याक बाबीकेँ बेटाकेँ फोन केलखिन आ आरिपोर्टक भार देलखिन। ओ सहर्ष स्वीकार लेलखिन। आरो विवाहक बादकेँ उनके आदेश देलखिनलेँ क अबइ लेल विदा भेलिन।

सासुरबाला बरका स्मार्ट छलइन। गामसेँ लोक आइत आ विदा भेली मे जे सब संबंधी छैत ओ नहि रहताह त केना दन लगतइ। सबहक कतेँ विजय दुनु बेकत गेलाह आ उपनैनकेँ चलायैन कैलाह।

असली बात त ई रहइ जे उनकर सादुकेँ गऊंआ बडड आयल रहइन उपनैन मे। विजय ओइसँकोन कम। डेकसी आ इडखा, मनुक्खक सोभाव छइ।सब मे कमोबेश रहइ छइ। नीके कहू एकरा। अही बहाने सबसँभेट भेलइन। पहिल बेर संबंधी सबहक घर गेल छलाह। कतयो नीको व्यवस्था मे छलाह आ कतयो लरिलो त कतयो संघषो। किछु जगह त गाडी जयबाक रस्तो नहि छलइन। डाईरि कहबो केलकइन-

साहब पता नही कहा कहा संबंधी का घर ढुंढकेँ जाते है।

विजयकेँ जाइते मातर देखल सुनल एहन या लगलइन।बुझेलइन जे ओ एतेँ आयल छथि। दिमाग पर जोर देलाह त याद आइब गेलइन जे अखना त उनकर कलकत्ताकेँ जे जे कलोनी छल।

जे जे कलोनी कलकताकऽ होअइ या च्दल्ली या बंगलोर, एके रंग लोक आ एके रंग सब ताम झाम बेबसथा।

कोठी बाला मोहक्ला मे से समानता नच्चि भेटत।

"मुंडे मुंडे मच्तार्भािा " िला हाल रहइ छइ। नच्चि दु लोकक च्बाि र च्मलतइ आ नच्चि घर।

उपनैनक च्दन आइब गेलइन। एकटा घरे लगक मंच्दर मे उपनैनक जगह चार्च्ि त छलइन।सासुर बला आ अपन गाम बला दुनु पाहुनकऽ रहअकऽ फराक बेबसथा छलइन। ई सब मंच्दरक लगे छलइ। टहलइतो आइब सकइ छी। तखनो दु टा गाडी दूनु जगह लागल रहइ- पाहुन सबहक सुच्िधा लेल।पंडी जी एके च्दन मे उदोग, िरकुटा िरकुटी, माइट मागर, कुमरम सलऽ कऽ उपनैन तक करा देलच्खन। एकऊ टा च्िच्ध छुटअ नच्चि देलच्खन। जयंती जनता एक्सपेस बनल छलाह पंडी जी। ऊपरसँकोक्ड च्बंक बेक्स सेहो। सब खुशी खुशी भेल। आइ कम्मे बाहण भोजन छलइन। पंडी जी च्िदापीठसऽ बजौने छलाह। गाडी पठौलच्कन, आ सब एक संगे आइब गेल। बर आ हाथे सब बाहणकऽ दच्छणा सेहो च्दयेलच्खन। बाहण सब दच्छणा भेटलाकऽ बाद खुब पशस्त मंतोच्चािरकऽ संग आशीिद देलच्खन आ च्बदा भेलाह।च्िजय अपने एकटा आिियथबइन गेल छलाह ई सब झंझटसँबिबा लेल। तनुजा, पंडीजी आ च्िजयक एकटा सासुरक लगुआ भगुआ सब बेबसथासऽ जुडल छल।

असली गप त काजक बाद ब्वाकलइ छइ। आब ई भेद खुजलइ जे ब्वजयक सासुरक लोक लेल एसी गेस्ट हाउस आ इमहरका संबंधी लेल धमर्शाला जेका होटल। ऊमहर नौ छौकऽ बेबसथा आ इमहर सुखा-सुख्खी। उमहर बाला सबकऽ ब्वदाई मे पटोर आ बासलेटक धोती आ इमहर िदनी िकक फुटपाथी कपडा लता। उमहर बालाकऽ पुछारी पर पुछारी, इमहर कोनो ऊिाििथनच्चि। नच्चि खाईकऽ कोई पुछअ बाला आ नच्चि कोनो आरे बाता। बदरी आ रामरब्वा ब्वारीह जका बइसल देखइ छलीह। ओ सब त अतबेसऽ पसन जे हमर पोताकऽ उपनैन त भेल।

िच्वम ब्वदन राच्वाम छल। ओच्छ ब्वदन ब्वदच्ली बाला आन समाज आ ब्वजयक अतुका लोकबेदकऽ भोज नच्चि, पाटी छलइ। अइ मे सब तरहक बेबसथा रहइ। गाम बला लोक सब सेहो शाब्वाल भेल अइ पाटी मे।

जेना घुरती बच्वयातीकऽ च्वकयो पुछइ नच्चि छइ। भेल ब्वयाह मोर करताह की।

आब त उपनैनभऽ गेलैन। शोभा सुनर अपना अनुसारे पुरा छलइन। आब च्वकनको कुनो पुछारी नच्चि। लोक ब्वजय कतऽ सऽ ब्वदाभऽ क, आन आन संबंधी कतऽ िइल गेल।

ब्वजय सेहो केना गामक लोकक भािनासऽ खेलेलाह- से देखू। कच्वाया बाबीकऽ बेटाकऽ आियथ्वनबा काल कहलच्वन -

जेना बाबी हमर बबाह कलकता आइबकऽ सम्हाइड देली, ओक्कना आहा आइबकऽ हमर बेटाकऽ उपनैनकऽ जग सम्मान कराऊ। हमरा आहाकऽ छोब्क क,कऽ अप्पन अइ।

आइ तक बजय बकनको काज मे बहार मे रव्हतो नर्कि उपक्सथत भेल छलाह। कोन मुंहे ककरो अयबाक अपेक्त रखबतइथ।

सब चकछु बुब्झतो, गामक लोक आयल। फेर ओकरा सबकऽ उपयोग, अपना सेहन्ता पुरबइ लेल,कऽ लेल गेलइ।अइ उपनैनक बाद फेर कब्हयो कोनो संबंधी कतऽ बजय ि उनकर पचबारि नर्कि गेलइन। चकछु लोक जे आदतसँमजबुर अइछ, हाजी हाजी करऽ मे, ऊयाह सबकऽ एकच्कसाह संबंध छइन।

गामक लोक अइ उपनैन मे अपनाकऽ पैबंद जेका बुझई छल।फेरो छला गेल ओ सब।

ईएह छइ समाज।आइये नर्कि, सबच्कना ईएह रव्हलइ अइछ। कब्हयो कच्माया बाबी लेल बदरीकऽ जे क्सथत छलइन, उयैह आइ बदरीकऽ बेटाकऽ लेल, कच्माया बाबीकऽ बेटाकऽ क्सथत छइन। जेकरा जेतऽ , जे भेटई छइ, दोसरसँफायदा उठबऽ कऽ ताक मे रहइ छइ।ई अथे तक सीक्मत नर्कि अइछ, अकर दायरा बढल जा रहल अइछ।कहाति छइ-

"मतलब चकल गया तो पहािनते नही"।

आब बजय आ तनुजा,बकनको नर्कि कीन्हइ छच्थन। बजय त टोकला पर लोक लाजे हाल ािल गऊंआकऽ पुच्छयो लइ छच्थन। तनुजा त टोकलो पर कहइ छच्थन- "हम नर्कि कीन्हइ छी"।

लोक कहइ छइ जे तनुजाकऽ असली रप आब बाहर एलइन अइ। ओ त बजयक कारण, बदलल बदलल छलीह।आब बजयकऽ समगसऽ काइटकऽ अपन आंगुर पर नि रहल छथि।

भोजपुरी मे सेहो तनुजा जेका लोक पर कहल गेल छइ-

" ससयरा उहे बा, रंग बदलले बा"।

बदरीकऽ होइ छइन जे अइ जीबनसऽ मरले नीक।

जे सब कलयो नहि सोिलाह, से सब भगबान पुराकऽ देलखिन। आब जे िहइ छइथ, ओइ पर ककछुओ नहि। भगबानोकऽ लीला अपरम्पार।

केकरा परतापे सब नीक भेलइन, आ केकरा सरापे ई दुखथ भेलइन- सोिइत बन घसयाडइ छथि।

<u>पैबंद (अंत्वाम भाग)</u>

१

ब्वजय घर मे कम्मे काल रहअ लगला अइछ।देर राइत घर अबइ छथ्ब्य। पैर डगमगाइत रहइत छइन। कखनोकऽ डाईरि सेहो हाथ धेने रहइ छइन। आइबकऽ सीधे बेडरम मे ि इल जाइ छथ्ब्य।बेशी तर रतुका खेनाई बाहरे खाकऽ अबइ छथ्ब्य। तनुजा सेहो कयेक बेर इंतजारकऽ क सुइत रहइ छथ्ब्य। ब्वजय लेल एके लोग जागल रहइ छइन घर मे। ओ छथ्ब्य रामरत्त्वा।

बर्च सँजाबइत ब्वजय नव्वि अबइ छलाह, ओ अपनो नव्वि खाई छलीह। अखनो ब्वडकीकऽ शीशासँतकइत रहइ छथ्ब्य। जखन ब्वजय आइब जाइ छथ्ब्य, तखने ब्वछान पर परऽ जाइ छथ्ब्य। ब्वन ब्वजयकऽ देखने ब्वने नव्वि होइ छइन। ब्वजय, रामरत्वाकऽ घरक बती जडइत देखकऽ बुइझ जाइ छथ्ब्य जे मा जागल छथ्ब्य। तनुजाकऽ सुतल देखकऽ त पल्हने फझइत करय छलब्वन लेब्वकन धीरे-धीरे ब्वकनको ब्वकछ नव्वि कहइ छथ्ब्यन। रामरत्वाकऽ बुझाई छइन जे ब्वजय, बदरी जेका नशा करऽ लगला अइछ। बदरी जल्हया नशाकऽ क घर घुरय त सटक सीतारामभऽ जाय। ि प्पी सधने रहय। बाजत त मुंह महकतइ, तै ि प्पे रहय। ब्वजय पर ओकरा ब्वशबास नव्वि होइ छइ जे ओ ब्वशा करताह।

तनुजा बेटा सब लग गेल रहइत। सुतली राइत बदरीकऽ छाती मे ददथ्उठलइ। रामरचा तेल मालशकऽ देलचकन। चकछु आराम भेलइ। फेर कनी काल बाद बडका उक्टी बाछाने परभऽ गेलइ। रामरचा जाय लागल बाजयकऽ ऊठबइ लेल त बदरी ओकरा मनाकऽ देलकइ। ओकर बाद ओकर हाथ पकइडकऽ कानऽ लगलइ। आब हम जा रहल छी। जमराज ठार छच्य। तौ बाजयकऽ देखबयौन।

ई अनट बानट गप सुअइनकऽ रामरचा डरा गेल। कहबो केलकइ जे ऐना चकअए बजई छं। ठीकभऽ जेबह। पछल बेर कोनो दुखबत परलह अइछ। गैसभऽ गेल हेतह। तै ऐना उक्टी भेलह।

बाईज त देलक रामरचा, मुदा ओकरा लक्ण ठीक नचि बुझेलइ। ओ बाजयकऽ जा कऽ उठेलकइन। बाजय कहूना उईठकऽ एलाह। नौकर सेहो ऊठल। बाजय तुरते डाक्टरकऽ फोन केलचबन। ओ आयल लेचकन ताबइत बदरी देह छोडब ि कल छलाह। तखने तनुजाकऽ फोन भेलइन। भइड राइत रामरचा आ बाजय, बदरीकऽ लाश लग बइसल रहल। आंईखसऽ नोर झडइ लेचकन दुनु गोटा मे ककरो मुंह नचि खुजई। मोन करय रामरचाकऽ भोकासी पाइरकऽ कनचि के, अतऽ कऽ सुनतइ। बाजयकऽ अपने दहो बहो नोर खइस रहल छलइन।

भोर भेल। चकछु बजयक कलोनी बाला आ आमकसक लोक आयल। तनुजा असगरे घुरलीह। बेटा सबकऽ नचि अनलचखन या नचि अयलइन, सेकऽ पुछतइन। दस-बारह लोक श्मशान घाट गेल। ओ उपनैन बाला पंडी जी सेहो पाछुसऽ दौरल एलाह। बजयक कन्हा पर उतरी परल छइन। बजयकऽ मोन भेलइन जे गाम मे सबकऽ खबर तकऽ दी। तनुजा िट ज़बाब देलचखन जे देखचलयई उपनैन मे केहन लीला ओ सब केने रहय। कुनु काज नचि छइ- ओकरा सबकऽ बजबय के। बजय मौनभऽ गेलाह। रामरचा सकऽ पुछइया।

पंडीजी फेर संस्कृत बचादापीठसऽ बाह ण सबकऽ बजेलाह। एकादशा-दादशा मे ऊयाह सब आयल। कहूनाकऽ दचद सबकऽ जेना कमथसमपन भेल।

रामरचा त एकदमे असकर आभऽ गेलीह। बदरीकऽ टहल चटकोरा मे समय बीत जाइत छलइन। ऐना जीबन पहाड लगइन। बदरीकऽ पचल बरखीसऽ पचलनेहे रामरचा मइड गेलीह।उनका ई चिंता छलइन जे बजय, बापक बरखी करताह की नचि। ओ पंडीजी उनका बुझबइ छलइन जे जे बजट होइन बरखी के, से बजय उनकेदऽ दऊथ। ओ अपनकऽ देतइन। रामरचाकऽ ई सब ठीक नचि बुझना जाइ छलइन। ओहीसऽ परेशान रहइ छलीह। उनका त ई पंचत एक रती नचि सोहाइन। तनुजाकऽ ओ ओचना चय। बजई जे छलीह-हंईस हंईस क- बाह रे पंडीजी, आहा त हमरा

सब समस्यासऽ ऊबाइड लइ छी।

रामरच्ना मोन मे बजइत- कपार उबारतइन। बिजयक पाइ ठगइ छइन ई पंच्कतबा।

बिजयकऽ साफ कहब छलइन जे माय घर मे असकर नहि रहत। अइलऽ क तनुजा, बच्चन कतऽ ि नैहर नहि जा पबइ छलीह। आइसऽ उनका रामरच्नाकऽ अर दा, पहाड लगइ छलइन। फोन पर कतेक बेर बजइत रामरच्ना सुनने छलीह जे ई बुढी नहि जानी कहिया टघरती। कतेककऽ अंकुरी खेतीह। रामरच्नाकऽ देह च्महइड जाइन ई सब सुअइन क। सोखा बाबा आ भगबतीकऽ गोहरबइत जे आबलऽ ि लु। ज्यो बिछान पर पइड जायब त ई पुतोहु जीते माइड देत।

भगबती सुनलकीन। सुतले रही गेली रामरच्ना। ि च्लते च्फरते ि इल गेलीह।अगल बगल बाला उनका भागमंत कहइन। असली त उनके बुझल।

बिजयकऽ बापक शाि क अनुभि छलइन। अइ बेर सब ि टिपटभऽ गेलइन। पंडीजीकऽ जे संग छलइन।

बाजयकऽ बेटा सब बाबा-बाबीकऽ चकनको काज मे नहि आयल। ओ सब नाना नानी आ मौसा मौसीकऽ अलावा कोनो आर संबंधी होइ छइ, से बुझबे नहि केलकइ। बाकी सब लोककऽ अंकल आंटी मे ओ राईख लइ छेलाह।

दुनु बेटा पारा पारी बादेश गेल। एक टा पढई लेल आ दोसर नौकरीकऽ लेल। छोटका जे पढअ गेल छलइन से ओतइकऽ अपनासऽ पैघ लडकीसँबयाहकऽ लेलकइन। बबाहक बाद बाजयकऽ खबर केलकइन। अतबे नहि, भारतक नागरकता सेहो छोओइड देलक ओ। जेठका बेटाकऽ बयाह बाद मे भेलइन। अइ मे अतबे संतोख जे लडकी भारतीय त कमसँकम रहइन। अइ बबाह मे बाजय गेल छलाह।

बाजयकऽ ई सब बेटाकऽ फैसला सही नहि लगइ छलइन। तनुजाकऽ सब बुझल छलइन ओ बाजयकऽ नहि बतबइत छलखिन। उनकर पुथिसहमइत छलइन।

आब तनुजा, चकली आ बादेश अबइत जाइत रहइत। बाजय पर उनकर कोनो ध्यान नहि। कखनो अइ बेटा त कखनो ओइ बेटा। आइ देश त ओइ देश, अही मे ओझरायल रहलीह।

विजय अबसाद मे िइल गेलाह। लंबा छुटी पर जाय परलइन।ककरो मोनक गप कहि नहि सकइ छलाह। तनुजा बेटा पर ध्यान देलीह लेकिन बरकऽ गाठ नहि बुअइझ पेलीह। ईएह सबकऽ बीच,विजय असगर अस्पतालकऽ बेड पर, अइ दुनियाकऽ छोड़िकऽ िइल गेलाह।

एकटा उठइत घर, धरधराकऽ ढही गेल। अइ भीड मे सब ई पचारि कऽ बिसइड गेल।

अप्पन लोकक आदेश छल जे मैथिल बडड आशावादी होइत छइथ। किछु बाम भईयो जाइ छइन तऽ ओकरा "विधिलिखल" माइनकऽ स्वीकारकऽ लइ छइथ। पैबंदक अंत "नीक" होबाक चाही।

२

विजय बाबुकऽ मरलाकऽ बाद आब एकटा नब समस्या सोझा एलइ। सासुरक जे अतेक सम्पइत छलइन ....ओकर व्यवस्था केना होइ। तनुजा त ललबबुनी छलीह। उनका लोक ठकनाई शुर कऽ देने छल। नहि ठीकसँमकान सबसँकिराये अबइ छलइन आ नहि नैहरक जमीनसँउपजा बारी। जे कमचारिया आ देबानजी सब छलखिन सब झूठ फुस कहिकऽ बहलबइ लागल छलखिन। विजय बाबुकऽ रतबाक आगु सब ठीकसँ िइल रहल छलइ। आब कखनो अइ जमीन पर झंझट त कखनो ओइ जमीन पर, ईएह सब समाद अबइत छलइन। नैहर जईते सब समस्यालऽ कऽ आइब जाइ छलइन। तंगभऽ गेल छलीह तनुजा। होइन जे विजयकऽ जाइते सब

शेयंश खत्तमभऽ गेल होइ जेना।

एक बेर त हदेभऽ गेलइन। समाद एलइन जे पटना बला मकानक चकरायादार घर खालीकऽ देने अइछ। दोसर आइत त घर देल जेतइ। तनुजा चद्बक्ली अयलाकऽ बाद कच्लयो पटना िला मकान देखहो नचि गेल छलीह। एकटा सबंच्ध्रये चकराया िसूल कऽ आगु-पाछु पाइ पठा दइ छलच्चिन। दस महीनाक बाद ओच्हना मोनभऽ गेलइन, त पटना गेलीह। घर पर जाइ छइथ त देखइत छच्थ जे चकरायेदार त अच्छहे। अगल बगलसँपता लगलइन जे घर कच्लयो खालीये नचि भेलइन। आब त उनका संबंधी सब परसँबासिसे उठअ लगलइन। सब लुटहे लागल छलइन। एहन बासििसी लोक , एना झुठ बाईजकऽ पैसा ठगत.....सोइ किऽ परेशानभऽ गेल छलीह।

सब बात दुनु बेटा कऽ कहलच्चिन। बडका बेटा बापुलकऽ गाम घरसँलगाि बुझेलइन।छोटका चिनयकऽ ओतेक मतलब नचि, अइ सब सं। महीना चद्नक भीतर बापुल सपचािर भारत अयलाह।

तनुजाकऽ संग बापुल आ उनकर कच्चाया सब संपइत सब देखलाह। ओकर बाद मातृक गेलाह। गाम मे त चकछु छलहेने नचि, तै नचि गेलाह। आब अफसोस भेलइन जे एकटा ठाि रच्हतै गामो मे। "जब चिच्डया िग गइ खेत, चफर क्या पछताने।" आब ऊपाये की!

मातृक मे बंटिराकऽ बादो बडड संपइत छलइन। बापुलसँबेशी उनकर कच्चायाकऽ गाि नीक लगलइन। बादेशो मे कोनो बच्डया चस्थत मे ओ सब नचि छल। गामक जीनि ओकरा शुकुन िला

लगलइ। पच्छले बेर ओ बाशनपुर गाम आयल छल। ततेक ने लोक भेट करऽ अयलइ। लोकक आबेश देख कऽ ओ अत्माभुतभऽ गेल छल। बापुल आ उनकर कन्याया दीप्ता चाणथ्था केलक जे ओ सब आब बाशनपुर मे रहत आ अतइसऽ सब संपइतकऽ देखभाल करत।

तनुजाकऽ खुशीकऽ ठेकाने नय्छि। अपना लेल त उनका पेशने बहुत छइन। संपइतकऽ जे छीछालेदर होइ छलइन, तइसँओ दुखी छलीह।आब सब सम्हइड जेतइन, से उनका भरोस छलइन।माय -बापकऽ मरलाकऽ बाद बच्हन -बच्हनोई संपइतकऽ िकर मे इनका च्दअयद बुझअ लागल छलच्वन।

बापुल आ दीप्ता एक महीना रही कऽ बादेश गेलाह आ ओतऽ सँबोचया बास्तार बाईधकऽ भारत घुइड गेलाह। आब अपान आच्याशयाना बाशनपुर मे बनेला।

गाम मे खेती िजाब्नाक तरीकासँशुर कयलाह। सबसं पहीने माइट आ पाइनक जािं करेलाह जे की उपजा सकइ छइथ। ओकर बाद ओही अनुसारे फसल सब बाऊ कयलाह। जन सबहक संग अपने दुनु बेकती खेत मे रहइ छलाह। गामक लोककऽ त एकटा च्वनाश करबाक मौका भेटलइ। बापुल अइ सबसँकन्यायो नय्छि चींच्लत भेलाह। बापुलसँबेशी दीप्ता अपन चाणथ्था पर डटल छलीह। धीरे धीरे सब शातभऽ गेलइ।

ततेक ने उपजा भेलइन जे च्वनाश करऽ बाला सब बापुल लग सलाह मागऽ आबऽ लगलाह। बापुल आ दीप्ता यथासंभि सबकऽ मदद करऽ लगलच्वन।

अइ परोपाटा मे ई नब पयोग छल। चकयो आइ तक माइटक जािकराकऽ खेती नचि कयने छल। चापुलकऽ सफलता देख कऽ दोसरो गामसँलोक आबऽ लगलइन। बीि बीि मे चापुल दोसरो शहरक संपइत सबकऽ देख सुअइन अबइ छलाह।

सारा चदन त खेती नचि होइ छइ। बाकी समय मे दीचपा गामक स्कुल मे चाना पाइकऽ अंगेजी चाषय पढबऽ लगलीह। लडकी बचि सबकऽ घर पर अलगसँचाना पाइकऽ पढबइ छलचदन।

गामक आर सामाचजक काज मे बइढ िईढकऽ दीचपा भाग लेबऽ लगलीह।िहे स्कुलक सचाचव होइ ि अस्पतालक, िहे सडक बनचि त होइ ि पुचलया, िहे गरीब गुरबाकऽ कोनो कष क समय होइ ि धचनकहाकऽ कोनो सलाहक काज- सब जगह दीचपाकऽ सेि हाचजर रहइ छलइन।

दीचपा-चापुलक जोडीकऽ पचसचि िहुंओर बइढ रहल छलइन। अइ मे िइर िदि लाइग गेलइ जखन चापुल दीचपा अपन बेटाकऽ नाम गामक सरकारी स्कुल मे चलखेलाह।स्कुलक पढाइकऽ स्तर बढइत जा रहल छलइ।

उनकर सबहक काज आब समाजक सोझा आबऽ लागल छलइ।कयेक छोट पैघ अखबार मे उनकर सबहक जीिनी आ कायचकलापकऽ बारे मे चलखल छपल। चजलाक अचधकारी सब सेहो इनकर सबहक बुचि मताकऽ गाहे-बगाहे उपयोग करऽ लगलाह। आब इलेकरॉचनक मीचडयाकऽ सेहो इनका सब पर नजर गेलइ। आब टेलीचिजन पर इनकर चाषय मे समाि ार अबइ। गामक

पद्मासनी सेहो होबऽ लगलइ।

अखबार आ टेलीविज़न मे समाचार अयलाकऽ बाद विजयक गामक लोक अलगसँसंपादक सबकऽ चिट्ठी लिखकऽ कहइ जे विपुल आ दीप्ति उनके गामक छथिन। विजयकऽ रिटायर्मेंट बाला कागजक कापीलऽ कऽ कन्याया बाबीकऽ बेटा टेलीविज़न पर इंटरव्यू देने छलाह।

इनकर सबहक नाम गाम देख कऽ ओतुका नेता सबकऽ खतरा बुझाय लगलइ। ओ सब किछु किछु षडयंत्र इनकर सबहक खिलाफ करऽ लागल। विजय दीप्ति खुइलकऽ ओकरा सबकऽ कहलखिन जे राजनीतिसँउनका कोनो लेना देना नहि छइन। तखइन ओतुका नेता सब इनका सबकऽ सहयोग केनाई शुरु कयलक।

ततेक ने इनका सबके ऊपर ओतुका लोककऽ विसिसिभऽ गेल छलइ जे आब पर पंक्ति मे सेहो बजबइ छलइन। स्कूलाक अस्पताल मे दवाई आ खेनाईकऽ बेबसथा सेहो दीप्तिकऽ अगुवाई मे संपनभऽ रहल छल।

आब इनका सबकऽ ततेक ने व्यस्तता बइढ गेल छलइन जे न्यायमूर्ति खेत पर नहि जा पाइब रहल छलाह। आब तनुजा ई सब सम्हारने छलखिन। कहियो खेतीकऽ ए बी सी डी नहि बुझअ बाली तनुजा आब खेती पथारीकऽ हीर हीर जानऽ बुझअ लगलीह। अतबे नहि, कोन नक्षत्रक बाद कखइन पाइन बुनी परबाक संभावना पबल रहइ छइ- सेहो उनका बुझल। उनका मे जे परिवर्तित भेल छलइन से सब अविश्वसनीय छल। छोट भाइ विनिय सेहो बीच बीच मे आइबकऽ मनोबल बढबइ छलखिन।

ब्रपुल आ दीघ्रा फेरसँओइ पच्रारिकऽ ऊंाई परलऽ गेल छलाह। च्रकयो ब्रानोबा कहइन त च्रकयो बाबा आमटे कहइ छलइन । सदािनाक संग समाजक सेिा ओ सब कऽ रहल छलाह। नब डीह आ नब सोिकि संग, नब समाजक च्रामाणभऽ गेल छल। जे पच्रािर कतउकऽ पैबंद छल......कतेककऽ संबल अइछ।

पद खण्ड

<u>आशीष अनचिन्हार</u>

<u>गजल</u>

घूसक संगे गबन कर

चुटका लिनन हनि कर

पीठक पाछू गाच बात

आगू अबाते नमन कर

हुनकर आँखक कोना उठल

जेना तेना दमन कर

कछु नै बँतै दुनयामे

रमन मिन के जतन कर

छोट छोट या नमहर हो

जमीदारी हिन कर

सभ पाँतिमे 22-22-22-2 मात्राक्रम अछि। दू टा अलग अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि। सुझाव सादर आमंत्रित अछि।

<u>गजल</u>

झापल गेलै सत्य ि ि न

बारल गेलै सत्य ि ि न

भोरे एलै औचक समे

थाकल गेलै सत्य ि ि न

ि र कातक योजनासँ

छाटल गेलै सत्य ि ि न

झुटा सभहँक पौतीमे

साठल गेलै सत्य ि ि न

बह स्थानक दीपर

आनल गेलै सत्य ि ि न

सभ पाँतिमे मात्राक्रम 22-22-22-2 अछि। दू टा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि।

गजल

माला बैसल तहखानामे

ठोपो ढूकल तहखानामे

चिखना देखब कऽ लबनी देखब कऽ

पंडित नालि तहखानामे

पूरा दुनियामे मचल गेलै

जीनि बालि तहखानामे

िनिन घसलहुँ ठाओ नापलहुँ

हारो गाथल तहखानामे

बड दिनक बाद अनचिन्हारो

अपने लागल तहखानामे

सभ पाँतिमे 22-22-22-22 मात्राक्रम अछि। दू टा अलग-अलग लघुके दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि।

<u>गजल</u>

भुजजा चिखना ताडी आ पासी िही

हमरा तच्छखाना िही लबनी िही

हुनका भेटल्ल बडका बडका इनाम

बस हमरा छोट छीन बदनामी िही

हम बोर भ' गेलहुँ चकिन िनमुन खुशीसँ

हमरा चकछु लेढाएल उदासी िही

तो ल' ले दच्छनामे पूरा दुन्नाया मुदा

हमरा खाली हुनकर जजमानी िही

खाली पहनाि बदलल छै इच्छा नै

हुनका राजा आ हमरा दासी िही

सभ पान्तामे 222-222-222-22 मातिकम अच्छ। दू टा अलग अलग लघुके दीघथमानबाक छूट लेल गेल अच्छ।

गजल

आँखि हमर दास हुनक

अदना नै खास हुनक

आब खबहान संगे

छै पूरा ास हुनक

धेलकन्हा हाट बजार

मोशकल उगरास हुनक

ऐठा दुइए टा सि

आस हमर आस हुनक

एना केने कल्हयो

नै हेतन्हा बास हुनक

सभ पाॅतिमे 22-22-22 माताकम अछि। दू टा अलग अलग लघुके दीघथमानबाक छूट लेल गेल अछि।

<u>गजल</u>

कियो पुछलक मोनक हाल

कियो कहलक मोनक हाल

खसल नोरक ठोपे गालि

कियो बुझलक मोनक हाल

कियो आनलि हीरा मोती

कियो अनलक मोनक हाल

कियो डाहैए संसार

कियो डहलक मोनक हाल

नुका पढ़ैत अनकि न्हार

कियो चिखलक मोनक हाल

सभ पातिमे 122-22-221 माताकम अछि। तेसर शेरक पहिल पातिक अंतिम दीर्घके लघु मानबा छूट लेल गेल अछि।

<u>गजल</u>

हम सुंदर कहबौ तो किनार बुझ्झ चलहे

सुंदरतम कहने चांगरहार बुझ्झ चलहे

परदा रहबे करतै संसारक कारण

सैतल कहने तो बेसम्हार बुझ्झ चलहे

शब्दसँ पता चिल जाइ छै के कहने छै

हम चविकास कहबौ तो सरकार बुझ्झ चलहे

मतलब अपन अराध्यसँ छै चािहे जे हो

हम करेज कहबौ तो दरबार बुझ्झ चलहे

भोरका लाली बचा हाथ छूतौ तोरा

हम कोढी बुझबौ तो भकरार बुझ्झ चलहे

संन्यास केर मतलब िरम आसक्त छै

हम समाध्य कहबौ तो संसार बुझ्झ च्लहे

आब जर री नै छै संबंध क्लमाहब

अपना सन लच्छातो अनकि न्हार बुझ्झ च्लहे

सभ पाच्लामे 222-222-222-22 माताकम अच्छि। दू टा अलग-अलग लघुके दीर्घमानबाक छूट लेल गेल अच्छि।

गजल

केहन छै ई लोकक आँखि

फूलक मूँह काटक आँखि

सभहँक भूख एकै रंग

ताकै खाद खेतक आँखि

कोनो बिंदुपर मीलल छै

शहरक आँखि गामक आँखि

सुरजक बात कहिए देत

भोरक देह साझक आँखि

अनचिन्हार एबे करतै

रहलै जागि बाटक आँखि

सभ पाँतिमे 2221-2221 मात्राक्रम अछि। मतलाक पहिल पाँतिमे एकटा दीर्घकेँ लघु मानबाक छूट लेल गेल अछि, तेसर आ पाँचम शेरक पहिल पाँतिक अंतिम दीर्घकेँ लघु मानबाक छूट लेल गेल अछि।

गजल

सपनाइत रहलहुँ हम

डेराइत रहलहुँ हम

मँजाइत रहल एडी

चिक्कनाइत रहलहुँ हम

जते जे सुनेलक से

पच्बाआइत रहलहुँ हम

अइ हाथसँ ओइ हाथ

बदलाइत रहलहुँ हम

हुनकर मोनक बाकस

सैताइत रहलहुँ हम

इम्हर उम्हर सभठा

उसनाइत रहलहुँ हम

ि पुपे अनचिन्हारसँ

बच्चाआइत रहलहुँ हम

सभ पाच्चामे 22-22-22 माताकम अच्छि। दूटा अलग अलग लघुके दीघथ्मानबाक छूट लेल गेल अच्छि।

गजल

ठोरक गिलास ठोरक शराब

के राखत किछु ठोपक हिसाब

अनधन लछमी हुनका हिस्सा

हमरा हिस्सा गालक गुलाब

उनटाबैए ओ पन्ने पन्ने

देहक पना मोनक किताब

सुंदर शब्द भेलै बेकार

ओ अपने छथि अपन जबाब

अनचिन्हारक इयाद अबिते

पूरा दुनियाँ लागै खराब

सभ पाँतिमे 22-22-22-22 मात्राक्रम अछि। दू टा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि।

<u>गजल</u>

बान्हल भाषा बान्हल बोल

अइ नाटकमे अतबे रोल

हुनका कहने दुनिया टेढ

हुनके कहने दुनिया गोल

खाली पेटक छै फरमान

भरलाहाके खोलै पोल

चुप्पे आबै चुप्पे जाइ

हुनकर आँगन हुनकर टोल

किछु ने जानै अनचिन्हार

के पहिरैए नकिा खोल

सभ पाँतिमे 22-22-22-21 मात्राक्रम अछि।

गजल

संसार हमरो लेल छै

अपकार हमरो लेल छै

राजा बहुत रानी बहुत

दरबार हमरो लेल छै

जइमे भुजेतै आन से

कंसार हमरो लेल छै

तोही ठकेलह से तँ नै

बटमार हमरो लेल छै

पायल भने नै हो मुदा

झंकार हमरो लेल छै

सभ पाँतिमे 2212-2212 मात्राक्रम अछि।

गजल

भीजल कपडा गुदगर देह

बिजली लागै सुंदर देह

गौतम धेलथ्यि इंदक भेष

फेरो पाथर हुनकर देह

हुनका ताकी कोने कोन

हमरा लग छै जानकर देह

बजजर सपना बजजर आँखि

बजजर जीनि बजजर देह

सरकारक फाइल बहुते पैघ

देखू घटलै चाकनकर देह

सभ पाँतिमे 22 22 2221 मात्राक्रम अछि।

गजल

नीषिदिन युगधमथछै

पचातिथा युगधमथछै

जइमे खेने रोग हो

से बरतन युगधमथछै

खाली अपने टा रही

से कतरन युगधमथछै

खाली ाहिच्च्या मीठ रस

मधुगुंजन युगधमथछै

बान करने कक्याण नै

गठबंधन युगधमथछै

सभ पाच्चामे 222-2212 माताकम अच्छ।

<u>गजल</u>

चक्कयो डबल छै

चक्कयो ढहल छै

सपन नयन के

बलि खुलि छै

गरीब लेखे

पनि अनल छै

सुगंध हुनकर

रलि बसल छै

कनी मनीपर

बहुत झुकल छै

सभ पाँतिमे 12-122 मात्राक्रम अछि।

<u>गजल</u>

केयो कारी बुझलक केयो उज्जर कहलक

केयो शीशा बुझलक केयो पाथर कहलक

जाइ अबै छी बिना रोक टोक ओइ ठाम

केयो मालिक बुझलक केयो नौकर कहलक

गलत काज भेलापर अंतर नै रहलै

केयो साधू बुझलक केयो लोफर कहलक

जीनि ईहो छै आ जीनि ओहो छै

केयो अप्पन बुझलक केयो दोसर कहलक

उपेक्षित रहब अनचिन्हारक कपारमे

केयो चिंतक बुझलक केयो जोकर कहलक

सभ पाँतिमे 222-222-222-22 मात्राक्रम अछि। दू टा अलग अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि।

<u>गजल</u>

हुनकर बात

च्चपरक पात

देशक अगुआ

भेलै कात

तप्पत नोर

बच्सया भात

च्मानिक नाम

झंझाति

अनच्चि न्हार

केलक घात

सभ पाच्वामे 2221 माताकम अच्छ।

गजल

गदहा सभ सरकार ि लेतै

लुच्चा सभ दरबार ि लेतै

जकरा लग ने पैसा कौडी

से कोना संसार ि लेतै

जखने जागत सूतल जनता

आर ि लेतै पार ि लेतै

कापै जकर मोन इजोतमे

ओ मार च्क सम्हार ि लेतै

बनतै गृहस्थ साधू बाबा

साधू सभ पच्चा ि र ि लेतै

सभ पाच्चामे 222-222-22 माताकम अच्छि। दूटा अलग अलग लघुके दीघथमानल गेल अच्छि।

गजल

अइ संसारके अनकासँ मतलब

आ हमरा छलै अपनासँ मतलब

पूल बनाउ नदी महानदीपर

कातक धारके लकिासँ मतलब

भेटै आशीादि या चक सराप

छै भगताके देतिासँ मतलब

भूआ पसरल जमीनपर तैयो

चांगरहारके खसबासँ मतलब

जकरा लग चकयो नै अनचिन्हार

अनचिन्हारके तकरासँ मतलब

सभ पाचामे 222-222-222 माताकम अछि। दू टा अलग अलग लघुके दीघथमानबाक छूट लेल गेल अछि।

<u>गजल</u>

मोन मीलल बहुत बहुत

नेह भेटल बहुत बहुत

दूर गेलै जते जते

नीक लागल बहुत बहुत

साि बजलहुँ कनी मनी

संग छूटल बहुत बहुत

बात करता जखन जखन

खाद फेटल बहुत बहुत

साझ खाव्चार कही कही

भोर टूटल बहुत बहुत

आइ हुनकर कथा व्यथा

भाज लागल बहुत बहुत

आब भेलै महो महो

रुप साजल बहुत बहुत

गाछ देखै टुकुर टुकर

काँच पाकल बहुत बहुत

सभ पाँतिमे 2122 12 12 मात्राक्रम अछि।

गजल

बाहर जते फेम छै

भीतर तते ब्लेम छै

प्लेयर सहुत फीक्स आ

अम्पायरो सेम छै

जैठा बहुत जौहरी

तैठा कनी जेम छै

अनकर हड़प्पा आत्मा लेब

अतबे हुनक एम छै

तोडब हृद मोनके

ई ओकरे गेम छै

सभ पाँतिमे 2212-212 मात्राक्रम अछि। ितम शेरक पहिल पाँतिक अंतिम लघु छूटक तौरपर लेल गेल अछि।

नन्द विलास राय

सरस्वती वन्दना

सरस्वती माता हे

किएक ने दइ छी हमरोपर

कखनायो ध्यान

एक नजैर हमरा दिस तकियौ

करियौ हमर कल्याण

सरस्वती मैया हे...।

मृगतृष्णामे हम भटकै छी

जेतए जे सुतैर गेल

से झटकै छी

तेना स्वार्थमे

आन्हर बनल छी

भष्टाचारिक दलदलमे फँसल कऽ

अपनो कऽ बुझै छी आन।

सरस्वती मैया हे..।

हम मूरख, लोभी, अधमी

चरित्रहीन, कपटी, कुकर्मी

कहाओ नहि अछि जान।

सरस्वती मैया हे...।

मानव बनि धरतीपर एलौं

जे नै करैक छल

सेहो सभ केलौं

दानबबला कर्म करै छी

भऽ गेलौं शैतान।

सरस्वती मैया हे...।

जे माए-बाप जनम हमर देलक

पालि-पोसि कऽ पढ़ेलक-लिखेलक

हुनका सभक सेवा ने केलौ

केहन भेलौ हम बेइमान

सरस्वती मैया हे...।

महल-अटारी बहुत बनेलौ

मानवता केर सेवा नै केलौ

केलौ ने कहियो दान।

सरस्वती मैया हे...।

अधला काजक अधला फल होइ छै

ई बात हम खूब बुझै छी

बुझियो कऽ छी अनजान

सरस्वती मैया हे...।

हाथ जोड़ि विनती करै छी हे मैया

अहा छी दयानि

हमरा सद्-बुद्धि दिअ

हे मैया

आओर दिअ सदगजान

मृगतृष्णासँ हम बचाकैल कऽ

बनाऐ नेक इंसान

सरस्वती मैया हे

कनियो दियौ हमरोपर

ध्यान।

एक नजैर हमरा

दिस तकियौ

करियौ हमर कल्याण।

धनि ान

हमरा गाममे छैथ

एकटा धनि ान

ओ छैथ

बड पैघ चीि ारि ान।

बुढ होच्थ

ि होच्थ जुआन

करै छैथ

सभके आदर-सम्मान

अपनासँ पैघके करै छैथ

दुनू हाथ जोच्ड पणाम

तँए तँ छच्थन लक्ष्मीजी

हुनकापर पूरा मेहरि ान

हमरा गाममे छैथ

एकटा धनि ान।

ब्लन्तुक घरमे शादी रहए

ि मुसलमानक घर ब्याकाह

ब्राना बजौलो जा कऽ

दइ छैथ नीक सलाह

तँए सभ करै छैन

हुनक गुणक गान

हमरा गाममे छैथ

एकटा धनिन।

बाग-बगीि खेत-खळिहान

पोखैर, गाडी, बंगला आलीशान

जे बढाबइ छैन

हुनक शान

मुदा हुनका कन्याको

नल्क छैन अभिमान

हमरा गाममे छैथ

एकटा धनािन।

उमेर भऽ गेलैन हे

हुनकर साठ

करैत रहै छैथ योगक संग

सभटा अपन काम

तँए लगै छथिन

अखनो जािन

हमरा गाममे छैथ

एकटा धनािन।

कखनो चकनको नञ्ह

बजथिन बुराइ

सत्य आओर अहिंसाक

बड पैघ पुजारी

यएह छन्हनक चलिऐन

धर्म आओर इमान

हमरा गाममे छैथ

एकटा धनिन।

गाधीजीक विचारधारा

अपनौने छैथ

छैथ पूरा सदाचारी

बुझि दशाघ

जनै छैथ

छैथ पैघ परोपकारी

रामायण आओर गीताक

छैन हुनका पूरा जान

तँए छैथ ओ भाषामिन

हमरा गाममे छैथ

एकटा धनिन।

देह तँ कारी छैन हुनकर

मुदा चद्दलक छन्हि न साफ

केतबो पैघ चकयो

अपराध करए हुनकर

कऽ दइ छन्हि न माफ

आनक धनके समझै छैथ

बाक्कुल ओ हराम

हमरा गाममे छैथ

एकटा धनिन।

रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'

झारू

कर नइ तुलना पर बच्चासँ

भर नइ ओकरा हीनता बात।

ऐसँ बच्चा कुण्ठित होइ छै

और होइ छै मानसिक आधात।।

गीत-

कनी देखही दिनेश

कनी सुनही सुरेश

कनी मानही महेश।-2

माता अजान बस फँसलै कलेश।-2

नैनाके नहि स्कूल धरबै छै

घरक अपन सभ काम करबै छइ।-2

अपने नैनाके गला मोकै छै

तेकर रक्त केना करतै गणेश।-2

कनी...।

बकडीमे भच्च च्चन गोली खेलै छै

अपना च्चनगीके दुखमे ठेलै छै।-2

माताजी ओइपर चकछ नच्च बोलै छै

यै माँ केर नाम च्चयौ माता भुलेश।-2

कनी...।

समयसँ नच्च कच्चयो खाना बनै छै

स्कूल समयमे बौआ रोजे कानै छै।-2

देखै नइ छी हमर हाथ लगल छै

रौ बजरखसुआ ले ने परैस।-2

कनी...।

आलस नच्च माता आप भगबै छै

पढैबलासँ घास कटबै छै।-2

सभटा जे एहने नीपले रहतै

के हेतै देशक भाग्ि नरेश।-2

कनी...।

झार

साधुिद ब्मच्यला केर धरती

साधुिद मैथ्यल जनता।

साधुिद हे ताज ब्मच्यला केर

साधुिद सम्पभुता।।

गीत-

हमर न्दिना मा ब्मच्यलासँ

विनय कर स्िीकार हे।

बच्चा अनाडी जीबै छी जगमे

च्जनगी भेल बेकार हे।।

राजाजनक छल अही गभक्के।-2

जन्म देलौ विदापच्चा सथ्क्के।-2

हमरा छुपेबै अहा कच्चया तक

हमरो कर उदार हे।

बच्चा...।

नचि जाबा अहा केतेके तारलौ-2

अपना धुलसँ बहुत उबारलौ-2

कनायो धुल हमरो छीटि दइतौ

हमहूँ होइतौ साकार हे।

बना...।

जान देलौ अहा सौसे जगत-के।-2

कर दया कनी अहूँ भगत-पे।-2

पूजब हे तोरा कण-कण मैया

दियौ मौका एकबार हे।

बना...।

<u>मुना जी</u>

<u>गजल</u>

अजीबो गरीबी कहानी क’ गेलै
बचि ा जे छलै ते नदानी क’ गेलै

पच्छने पता केलकै बाट ओतै
छलै ब्बासरल जे जबानी क’ गेलै

पछाडैत कोना रच्छतै नच्छया
िच्छ माथ देहो कटानी क’ गेलै

कच्छया धच्च रैहतै आस मे ओ
रच्छ शेख काजो पठानी क’ गेलै

मंच्छरोक शानो छलै जे तच्छया
धिजा के बिबा अजानी क’ गेलै

पछुने छलै जे कन्याया क' ठाढो

भगेबाक काजो मशानी क' गेलै

बहर- ए- मुतकारिब.

मात्रा क्रम-१२२ १२२ १२२ १२२

पदीप पुष्प

गजल

के की कहलक की कहू

के की ठकलक की कहू

हमरो उजरे रंग छऽल

के की दगलक की कहू

भेलै साधू आब सभ

के की चखिलक की कहू

माया बडका पैघ ई

के की रलिक की कहू

अखनो नै छी पास हम

के की जँलिक की कहू

(2222212सभ पाब्बामे)

गजल

गप्प उठतै तँपहुँचिबे करतै

मेघ लगतै तँबरसबे करतै

ओकरा रोकि सकत नै केओ

गीत रचतै तँपरसबे करतै

पाप आ पुण्य कथी नइ बूझै

भूख लगतै तँभटकबे करतै

छै अभिव्यक्तिक हक सभकेते

दम्म फुलतै तँखखसबे करतै

छै उमेरक गलती चिन्हक नइ

डाड लचकलतै तँलचकिबे करतै

(2122 112222 सभ पाँतिमे)

<u>गजल</u>

के की कहलक की कहू

के की ठकलक की कहू

हमरो उजरे रंग छऽल

के की दगलक की कहू

भेलै साधू आब सभ

के की चिखलक की कहू

माया बडका पैघ ई

के की रलिक की कहू

अखनो नै छी पास हम

के की जँलिक की कहू

(2222212सभ पाक्तिमे)

गजल

गप्प उठतै तँपहुँबिे करतै

मेघ लगतै तँबरसबे करतै

ओकरा रोक्क सकत नै केओ

गीत रतिै तँपरसबे करतै

पाप आ पुण्य कथी नइ बूझै

भूख लगतै तँभटकबे करतै

छै अभावयक्तक हक सभकेते

दम्म फुलतै तँखखसबे करतै

छै उमेरक गलती िच्चक नइ

डाड ल्हलतै तँलिकबे करतै

(2122 112222 सभ पाच्मे)

गजल

तोहर देल दाग मोन रहत

टूटल पेम-ताग मोन रहत

अनले ओढनीमे झाच्च जे

बथुआकेर साग मोन रहत

गप्प कच्चते ब्बतै छल कच्चुयो

भच्च रातुक जाग मोन रहत

नाओं हमर तोहर अँगना

कुरैत छल काग मोन रहत

स्पशक्क अबीर लगलौ तोरा

ओइ बरखक फाग मोन रहत

जे दऽनइ सकलौ तोरा फेर

एकटा उपराग मोन रहत

(22222222सभ पाँतिमे।बहरे- मीर)

<u>गजल</u>

उघरल खाट छी

उसरल हाट छी

क्यो ने जाय छै

बिसरल बाट छी

खुटा ठाढ छै

भसकल टाट छी

भुखले भोजमे

अब्बाम लाट छी

सगरो मैल हम

पोखैर घाट छी

(22212सभ पाब्बामे)

गजल

टूटल लेल की ऋतुराज

हूसल लेल की ऋतुराज

हमरा आँखि नोरे नोर

दूखल लेल की ऋतुराज

की नब गाछ की नब फूल

सूखल लेल की ऋतुराज

पिचकल गाल पाकल केश

झूकल लेल की ऋतुराज

यौनि गान कोना हैत

भूखल लेल की ऋतुराज

(2221 2221 सभ पाँतिमे)

गजल

राच्छा छोट मुदा च्यहानी नमहर केने जो

रंच्चा मुँह -कान च्यकरदानी नमहर केने जो

तोरा उडीस मारैले कहने रच्छयौ हम

उनटे तूँ मच्छरदानी नमहर केने जो

संगतमे सुर कोनो च्यीादी लगौ तोरा

तँगबैयाक ससरफानी नमहर केने जो

भोटक न्दिा भेटैत रहौ सभ च्यदस ते तूँ

बेच्यि कऽतगमा जजमानी नमहर केने जो

तूँ गाधीके फूल- माला सेहो ढिा आ

गोडसे पर खा- पानी नमहर केने जो

(222222222222, बहरे-मीर)

गजल

आँखि बजलै ओकर की ठोर बजलै

जखन ठोर बजलै से बहुत जोर बजलै

ि ान गगनक लगै छै झुझुआन चान कए

देखि तोरा ई मन ि कोर बजलै

इज्जति कृष्णाक सोझा लुटलै हम्मर

कलपैत पा ालीक पटोर बजलै

मुँह कानसँ लागल ओ शरीफ जेना

मुदा लोक नाम ओकर ि ोर बजलै

बगय समाजा शहरमे भेटत बहुत

हम नइ भेटब मुदा चालकोर बजलै

(2222222222सभ पाँतिमे। दूटा अलग अलग हस्वकें दीघथ मानबाक छूट लेल गेल अछि)

<u>गजल</u>

साझ रही हम पराती रही हम

तोहर कबूला पाती रही हम

तूँ मूँडी झुका बेदी तऽर छले

अक्त छिटैत बराती रही हम

आइ अन्हरिया नाम हमर अछि

सुन कहियो दियाबाती रही हम

सुरज घोघट देता नइ बनलौ

छी बानरे उत्पाती रही हम

हमरा मतलब छऽल एक तोरेसँ

नइ समाजक अघाती रही हम

ओ पोथी फाड़ि फेक देले की

जाहिमे पढ़लुक पाती रही हम

(222222222 सभ पाँतिमे, बहरे-मीर)

गजल

पाखच्छ तऽरक मिान मोन पच्छ गेल

खपडा बला दलान मोन पच्छ गेल

तोहर हमर च्यरीत भेल अनघोल

पीठक पडल च्नशान मोन पच्छ गेल

तोरा रच्सक च्नहाच्न बाच्न देलक ई

भादि बहय बलान मोन पच्छ गेल

भुखले च्द्दसि खटैत फेर बीतल तँ

गामक अपन निान मोन पच्छ गेल

तोरे भऽच्नानच्यायो कटैत ई 'पुष्प'

जाच्नाक मुदा च्नमान मोन पच्छ गेल

(221212121221सभ पाच्नामे,तेसर शेरक पच्हल पाच्नाक अन्तामे दीघच्के हस्र मानबाक छूट लेल गेल अच्छ)

गजल

नइ बरछी नइ भाला राखू

अपन मूँह पर ताला राखू

ि चत्र- ि चत्र महल केर घऽर बना कऽ

नइ रस्ता नइ नाला राखू

जा विदेश बड मौज उडबायौ

खाता-बऽही च्ढ़ िला राखू

खोलू अनकर कचि ा चिटा

झाव्य अपन घोटाला राखू

शासनमे नइ अन्तर बेसी

बर लक्लू ि ा लाला राखू

खूब ब्भाहार कर्ज़ि न-काया

मुदा हाथमे माला राखू

(22222222सभ पाब्भामे।बहरे-मीर)

गजल

मूँह फेर लोक जहन जाए लगलै

छै भाषण बेकार बुझाए लगलै

घर मन्दिरक सटले बना लेलक जे

सदिखन 'अच्छे दिन'सपनाए लगलै

रोग सेहो सिखलक राजनीतिमे आब

बैद बदलल तँाँट दुखाए लगलै

पुल बनेबाक जहन भेल ओरियान

नदी देलक धोखा सुखाए लगलै

ओना तँहेमकेँ धनि आकम्मा छल ओ

खादी पहिरि ठीके कमाए लगलै

(2222222222- बहरे-मीर)

<u>गजल</u>

भेट ओ अन्हारमे इयाद छौ ने
गप्प ओ पूआरमे इयाद छौ ने

कोन ईस्वी कोन साल कोन मास हम तूँ
एक्कयै देखारमे इयाद छौ ने

बन्द भेलौ आन जान आब सगरो
गाजधाक फटकारमे इयाद छौ ने

कऽबहाना मन्दरक अबै छले तूँ
नसिँ नि स्वांगारमे इयाद छौ ने

ठाढ तोहर बाट ताकते रहल के
साझ धब पछुआडमे इयाद छौ ने

(212221212122सभ पाँतिमे)

गजल

पेमक डोर की गजल नइ

जगले भोर की गजल नइ

टटका फूल सन नरम ई

पातर ठोर की गजल नइ

ि नी सोन केर ि मक सन

देहक पोर की गजल नइ

मातल पैघ पैघ नैनक

कारी कोर की गजल नइ

तोहर मीठ मीठ ि ि नक

बासरी बोर की गजल नइ

तोरा लेल जे बहल ओ

पुष्पक नोर की गजल नइ

(2221 2122 सभ पाँतिमे)

गजल

अपन चकरदानी पैघ अनकर छोट लगैए
बजलै केओ उन्नति कने बड ि‍ाट लगैए

जानै के नै कमथककर छै शानक जगमे
चकदैन ि‍ाच्छ कऽबाजै जे अखरोट लगैए

गन्ध अबै छै सताक चकए देहसँ धमचक
मंती जका बाबाजीक लंगोट लगैए

ककर ि‍ारेलकै धन ककर जमीन च्छनलकै
छऽल जे दुबबार लोक आइ बड मोट लगैए

होइ पाठ चात धमथ अधमचक नीचाक तैयो
देचब जगत व्यिहार च्लय कि‍ाट लगैए

खन दक्षना खन बामा होइत छथ्य नेताजी

कुरता पजामा नि मन लोटपोट लगैए

(222222222222सभ पाच्चामे।बहरे- मीर)

<u>गजल</u>

अजान बौक

भसान बौक

नित लाश

मसान बौक

मरैत गाछ

मिान बौक

सधैत पाय

च्भालान बौक

खटैत लोक

दलान बौक

भरैत पेट

थकान बौक

बहैत गाम

च्बशान बौक

कटैत गाय

बथान बौक

बढैत दाम

च्बादान बौक

जरैत खेत

च्बकसान बौक

(12121सभ पाच्बमे)

<u>गजल</u>

कने ध्यान एम्हर आनल जाए

घामक जाड़ा कोन मानल जाए

छै छाली-दूध धोखबला लेल

भूखल लेल सतु सानल जाए

निन्दा-टिकी फेरो बटोरबै

हँ यौ ते कीतथा ठानल जाए

सभा मध्य जे उचित गप्प कहता

हुनका पंच नै मानल जाए

छागर-बकरी देने छै धरना

बाघ हमर नेता गानल जाए

(222222222,बहरे मीर)

<u>गजल</u>

लोक मरैत रहतै

तंत ि लैत रहतै

तोप हँसैत रहतै

पेन कनैत रहतै

भात सधैत रहतै

बात बढ़ैत रहतै

पेट घटैत रहतै

धोच्छा बढ़ैत रहतै

बान्ह बनैत रहतै

बाच्छ अबैत रहतै

भूत गबैत रहतै

धैम नॅित रहतै

(2112122सभ पाँतिमे)

<u>गजल</u>

स्नेहक सम्मान माए छै

दैबक रिदान माए छै

छै डूबल जोतमे दुब्बयाँ

सय सय ब्बनमान माए छै

कोनो पूजा कथी लेल

पब्बलुक भगानि माए छै

जे हेरत बाट जगले ओ

सबहक अनुमान माए छै

ब्बाब्बया छब्ब दशहरा संगे

माहे रमजान माए छै

जे हम्मर पेट भरलक ओ

भूखल खरिहान माए छै

(22221222सभ पाँतिमे। तेसर शेरक अन्तिम लघु दीर्घ मानल अछि)

<u>गजल</u>

टाटक घर छी बहाब सुन्न डेरायल छी

गगनक ान छी इजोरसँ ाटायल छी

नै आदर नै सत्कार नै कुशल पूछै

पैघ लोकक दरबारमे िच्च आएल छी

सगरो िर आ बंसा छै पपञि हँसैत

अपनहुँ घरमे रहतो हम औनाएल छी

शतुक गप्प पर िच्चतौ तँपहुँ ि रहतौ

मातक बाट धऽ िललौ ते भुचाआएल छी

पछता रोपल भाग्यक नै ई दोष हमर

माघी फूल रही जेठमे फुलाएल छी

(बहरे-मीर)

<u>गजल</u>

कने हिन्दू कने मुसलमानक देश

लड़ैत फरियाद जका भगवानक देश

हथियार छै जाति धरम नस्लक खेती

उपजि गेलै सुचिता इंसानक देश

पाण अखनो भात बिनु छूटै तैयो

केस छेनाक लडै श्मशानक देश

सुनतै के सगरो हुकी जौ उठतै

छै कान बिनु आरती अजानक देश

पुरना गेलै टोपी-टीका तँआब

आत्मा बेचि दै दि पुराणक देश

(2222222222 सभ पाँतिमे। बहरे मीर)

<u>गजल</u>

अनठौने छी मुदा अनजान नै छी

घरैये लोक छी मेहमान नै छी

अहाक मुँह देखि मूँगबा बूझल अछि

चुप्प भेल छी ते कि पाषाण नै छी

अहाक कहलासँ राति- दिन नै हेतै

अहूँ बुझाबये छी कुनु दिनमान नै छी

सुविधाक हिसाबसँ मानक नै रखियौ

यौ अहूँ सभ दिनक पहलानि नै छी

ओ नै डूबत जे हेलब जनैत छै

अहा खताक पानि छी बलान नै छी

(बहरे- मीर)

गजल

के सुनेतै गरीबक गान कह

के बढेतै गुदड़िया शान कह

मोसि बेसी तँउजरे छै तहन

पाठ हेतै केना कविछान कह

गीत बिरहत बला सुनलौ बहुत

बालिनमाक बिआज अभिमान कह

जेहने छै घँसल आ की सही

तूँ अठनीक बिआज सम्मान कह

देलकै नाम कवि कोकिल बना

ओइ उगनाक तूँ गुणगान कह

लेकलम हाथ लि संगे चाकल

पुष्प चाच्यलाक नि अच्यायान कह

(2122122212सभ पाच्चामे)

गजल

राब्बा सपना देब्बव गमेलौ तँकी भेटल

नोर हमरा लेल खसेलौ तँकी भेटल

फेर आपस हैब हमर नइ रहय सम्भि

नैन बाटे बीि लगेलौ तँकी भेटल

जाब्बा सभ ब्बन माथ पर मारने पलथा

टोलके टोलेसँ सटेलौ तँकी भेटल

छी अहा पच्चआह तँकी ठोप आ िनन

मास ब्बन गंगे जँ नहेलौ तँकी भेटल

ब्बीत सभ ठा टागल यातीक घर घरमे

गीत बलिनमाक सुनेलौ तँकी भेटल

पाण काया केर ब्बना नइ रहय कखनो

ब्बनु बहर गजले जँ कहेलौ तँकी भेटल

(2122211221222सभ पाब्बमे)

गजल

किछु रौदीमे किछु दाहीमे

बाकी जरतै अगराहीमे

सतैर बरखक भेलै चिलका

एतै कछिया फगुनाहीमे

धी माइक अनुपम नाता ई

दुनू डुबलै पुरनाहीमे

जे जते बडका लीडर छै

से तते बेपरबाहीमे

मुइने भेटत अनुदानो ता

भुखले नारा बहबाहीमे

उपरे उपपार दौरा करबहे

नइ जइहेकोसी मरखाहीमे

(22222222सभ पाबामे। दूटा अलग-अलग हस्सिके दीघथमानल गेल अछि)

<u>गजल</u>

अपनेसँ कान्ह पर अप्पन लहास लेने छी

जानगी ई भूत -बँगला हम बास लेने छी

तूँ जाम दे जहर दे हमरा नै फिकर अछि

हम आँखि मूनि हाथ फेर गिलास लेने छी

हि बीि सभामे बेईमान कहि देलक

जकरा एकाबन दऽहम उनासि लेने छी

बनि लंकेश कतेक अप्पन घेट काटू हम

भेल सािा छथि आन्हर ई बिशास लेने छी

गजल नोरक मोति भरि कहैत रहब 'पुष्प'हम

अहा सुनबै जर र हम ई आस लेने छी

(222222222222सभ पाँतिमे।बहरे- मीर)

<u>गजल</u>

हेतै जन्हैया इजोर हम मोन पडबौ

लगतौ तोरा बकोर हम मोन पडबौ

तोरा पाछू लैत पिसेँ केओ

धरतौ जहने पछोड हम मोन पडबौ

फेरो केओ नहाक निशा जका मुख

हेतौ तोहर किोर हम मोन पडबौ

जे तोरा देखब भोजमे खूब रस लऽकऽ

बनतौ डलना टोर हम मोन पडबौ

बेदीतर बैसक मंत पढऽलेल बन्हना

पल्हरेतौ जे पटोर हम मोन पडबौ

(222212122122 सभ पाक्तामे)

<u>गजल</u>

उजडल मनक गाम बसाबऽपडत एक दिन

जाइ छी तँजाऊ फेर आबऽपडत एक दिन

सनेश हमर घुमा देलौ तकर कष्ट नै अछि

मुदा देल सिनेह सेहो घुमाबऽपडत एक दिन

मनुक्ख रहैत ईश्वर जँ बनबाक लौल करब

शोणित लालसँ कारी बनाबऽपडत एक दिन

जँ दूध आ पानिक भेद नै कऽसकलौ अहा

तहन उल्लूसँ संसद िलाबऽपडत एक दिन

हम रहैत छी श्मशानमे भूत- पेत संग

संग पाबऽलेल देह जराबऽपडत एक दिन

(222222222222- बहरे-मीर)

गजल

ददर्क्क दबाइमे भा ि उप ि र भेल

पेमक पीड ते गजल भऽबहार भेल

जतै दीघर्लघु केर गाडी र कल ओतै

र क्ग़क ि क आ बहरक बजार भेल

अन्त नीक सऽब नीक नीक इ आदशर्ते

मतलाक अन्तमे रदीफ संस्कार भेल

र चि गर सुआद होइ शेरक भोजमे

छंदक सँ ि रमे काफ्क़या अँ ि र भेल

पनाक भीडमे के कतय हेरा जायत

ते मोन पाडैले मकता अ ि तार भेल

अदब आँगनमे नि घऽर ठाढ होऊ

गजलक गजल ते'पुष्प'चर्चित भेल

(सरल वार्णिक बहर,15 वर्ण सभ पाँतिमे)

<u>गजल</u>

दोसरक गीत उगबै अच्छ ि।न मीता
हमर गजलो गबै भूखक गान मीता

आब र दल बऽनब ने हम गऽछब कच्हयो
जरल पेटसँ उठै ने सुर तान मीता

भेल बटुआसँ तगमाके नीक दोस्ती
बान टका छी सभा मध्ये आन मीता

जैह देबै अहा हम रखबै हुलसके
गाय बूढो खपै चीप- दान मीता

पातमे हम अछोपक छी भोज खाइत
'पुष्प'के नइ चमककर आ ने मान मीता
(2122 1222 2122 सभ पाक्तामे)

गजल

शब्द छौ भाव छौ अलंकार छौ तोर आँखि

अपनी तऽर साहित्य-संसार छौ तोर आँखि

मन शान्तनु भेल ठमकै तोरे लग जा-जा कऽ

की नहि सुरसरिक अवतार छौ तोर आँखि

जेना कोनो दरिद्रके भेटल राज-पाट

तहिना ऐ जीवनिक आधार छौ तोर आँखि

की कोना कथी कखन ककरा चलाए सन बहुत

सदति सजीव पशक बौछार छौ तोर आँखि

छै विधाता हाथमे बालि बडड कौशल-कला

ऐ शाशत तथ्यकेर पहिर छौ तोर आँखि

(222222222222- बहरे- मीर)

<u>गजल</u>

भाषा च्आने च्आन बजै छै ई कोन गाम छै

केओ केकरो नै चीन्है छै ई कोन गाम छै

नै तरआ चालकोर नै दही ूडा गमचक रहल

गन्ध ाउच्आनकेर अबै छै ई कोन गाम छै

नै सोहर नै लगनी आ छै नै नारीक धुन

सगरो मात डीजे बजै छै ई कोन गाम छै

बूढमाए बापके कोन बेटा रखतै संगे

धुर! सभ सबहक मूँह तकै छै ई कोन गाम छै

सून छै दलान आ भकोभम्म भेल आँगन घर

िच्छकऽसोफा कुकुर हँसै छै ई कोन गाम छै

(222222222222222सभ पाच्आमे।दूटा अलग अलग हर्सके दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अच्छि)

गजल

दीप सभटा मिझा गेलै तोहर मिलनक आस केर

तैयो भरि कऽरखने छी टाडा अपन विशास केर

फूँकैत रहै जे हेमन्त धरि शंख जनिदी भेल

आइ ओ नटुआ भेल छै सोझामे किछु खास केर

नि रहै व्यापार हमर सुगन्धकेर व्याकारी रही

बूझि गुलाब िबा लेलौ ते ठोर हम पलास केर

जे सोझा साष ाग करै पान करै िरणोदकके

पीठ पाछू ओ गाबै खिस्सा हमर उपहास केर

भेट अन्तिम कऽले आबो पाण छूटि जेतैक हमर

जा रहल पुष्प साडा सपना लेने रन्िास केर

(22222222222222सभ पाँतिमे, दूटा अलग अलग हस्तिके दीघथ मानबाक छूट लेल गेल अछि)

<u>गजल</u>

गमकैत घाम बला लोक

िमकैत िम बला लोक

भाषण आमो पर दै छै

थुरी लताम बला लोक

बाटै दरद सगरो खूब

ई झंडु बाम बला लोक

मौसो केर हाट लगबै

गाधीक गाम बला लोक

करतै उिर ब्याच्यलाक

च्वक्ली असाम बला लोक

(2222222सभ पाच्छामे।दूटा अलग अलग लघुके दीघथमानबाक छूट लेल गेल अच्छ)

गजल

खेत बेचि कऽटाकाक ओरियान करतै

माथ पर बेटी छै कन्यादान करतै

जे रातिमे पी कऽकेने छल हो-हल्ला

हि भोरे नशा-मुक्ति अभियान करतै

जकरा छै नइ बालि जोत एको धूर

तकरा बाढि -रौदी की नुकसान करतै

जे अपने कात भऽबैसि गेल अछोप बनि

ओकरा बारीक कहिकए अपमान करतै

ओ नेता छै सताकेर बडड भूखल

बाटि कऽदेश हिन्दु आ मुसलमान करतै

आइ पाथक जयघोष पर नाि दुनयाँ

समय राधेयक सेहो गुणगान करतै

(22222222222सभ पाामे।दूटा अलग-अलग हर्सकिे दीघथमानल गेल अछ)

गजल

टुकटुका रहल जिनगी

सुगबुगा रहल जिनगी

गीत फेर अच्चिआपर

गुनगुना रहल जिनगी

तेल बानु ब्कबाया सन

चमचमा रहल जिनगी

नोरकेर बरखामे

उजगुजा रहल जिनगी

सून भेल आँगनमे

लटपटा रहल जिनगी

(212 12 22 सभ पाँतिमे)

<u>गजल</u>

बीतलाहा बाटमे हेरा रहल छी

ऐंठ छी हम िहते सेरा रहल छी

पेरलक दैबा भऽतेना ने कसैया

मेहमे बऽरदे जका पेरा रहल छी

देह भेलै आब अनमन टाट सनठी

आत्मा लागल ऊक सन फेरा रहल छी

मीत मुसकी बीिकननी हैत अलगे

नोर सुख दुखकेर हम बेरा रहल छी

मन भेलै भोज कत्बतौ गाम भत्बक

'पुष्प'गोलक बान्हमे घेरा रहल छी

(2122 2122 2122 सभ पाँतिमे,मकताक पहिल पाँतिमे अन्तिम लघुके दीघथ्मानबाक छूट लेल गेल अछि)

गजल

हम च्लखै छी लोक लए चदािन लए नय

हम गबै छी गाम लए जजमान लए नय

पेटमे कूदत मूस तहन पागे करतय की

हम खटै छी भूख लए सम्मान लए नय

हम जनै छी दे हमर जेबीक लिर

हम पुजै छी भच्कत लए रिदान लए नय

छैक हमरो लोभ अपन बन्ा जाइ अहाक

हम तकै छी नेह लए पकिन लए नय

भूब्ाका छै छोट मुदा नमहर सपना छै

हम कनै छी टोल लए खनदान लए नय

(2122211222 1122सभ पाच्ामे। तेसर आ िच्म शेरक पच्ल पाच्ाक अच्तम हस के दीघथमानल गेल अच्छ)

गजल

तपलौ जे रौद जेठक झखच गेलौ हम

एते ि ललौ चक रस्ते बसच गेलौ हम

मजरल हमहूँ रही फागुनक देहचपर

पी लेलौ कीटनाशी झखच गेलौ हम

बदलल छै लोक घऽर एतऽनइ छै हम्मर

पाछू छै गाम आगू ससच गेलौ हम

छाती हमरो रहै बास्सने पाथर सन

दोस्ती शीशाक केलौ भहच गेलौ हम

नै केओ मीत नै पेम छुच्छे टाका

की भेटल आबा चक्ली ठहच गेलौ हम

(222212212222सभ पाच्मे)

गजल

लगलेमे हीया हाच लेबै हम

छातीमे मुका माच लेबै हम

हमरा नै ब्मलले ि‍न गगनक ते

करबै की च्छब्बाये बाच लेबै हम

खगता कच्मको नै दऽर च्चयादक आब

आँगनमे अमती गाच्छ लेबै हम

कलपै बाजै बेटी च्चालक कारण

च्छब्बा पेरोलक ढाच लेबै हम

जेबीमे रखने छी पशासन हम

क्यो एगो लेतै ि‍च लेबै हम

(2222221222सभ पाच्चामे। तेसर शेरक अच्चतम लघु छूट तौर पर लेल गेल अछि)

गजल

फेम टागल छै चीत उखाड़ि देलौ

काबा भरि मोन तोरा बसारि देलौ

पएर ठमकल तोहर दलान लऽग जे

छाती पाथर कऽडेग ससारि देलौ

आस छल ब्जानगी रबि‍ै गजल जेना

बहर कब्लन छै हम ब्लया हारि देलौ

देखल नै गेल पराजय तोहर ते

हम अपने अपनाके बजारि देलौ

तूँ पीठेमे ि‍कू भोकबे कते

तोरा लेल छाती उघारि देलौ

ि नि धच्च पहुँि बि नै च्चाखल छल हमरा

मोनके हम सीढीसँ उताच्च देलौ

(2222222222सभ   पाच्चामे।दूटा अलग अलग हर्सके दीघथ मानबाक छूट लेल गेल अच्छ।)

संतोष कुमार राय 'बटोही', रिसर्च स्कोलर (ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,दरभंगा), गाम-मंगरौना, पोस्ट- गोनौली, थाना-अंधराठाढी, अनुमंडल-झंझारपुर, जिला-मधुबनी

कमला-बलानक मारल

मुसहरी लग टुटि गेल छै छहर

कमाल-बलानक पानि अनाया बताल भेल छै

किछु टा नहि बचलै मुसहरी मे

हो..हो पानि एलै हो

भरि राति जागल छलहुँ आइ

बैठौनी लग टुटि जैतै तऽ की कैरबायै

इ पैघ पश बुझियैए ।

छोट-छोट नेनाक ठोर देख कऽ

नोर बहि गेल से कहनै बेमानी बुझियैए

नरआर आओर रखवारी गामक स्थिति देखि कऽ

करेज फाटि जाएत

भूख सँ बिलबिलायत नेना आओर ि

मिहस,बकरी आओर गाएक जोर-जोर सँ कानब

सहो भगिन मइ गेल छिथ।

भष ठीकेदार आओर मंती मिल कS

छहर िपेयर के नाम पर खूब लूटलिथ

इ मौगा के देश छैयैए

जत सभ बिनाया फौदैत छिथ

गरीब-गुरबा मइ रहल अिछ

जनता कँ टैक्स पर जनपितिनिध रंगरेली मनाबैत अिछ

सुशासन कुमार बौरा गेल छिथ ।

बनौल आओर जोडल घर आँिखक सामने

पािन मे बहलाक बाद

अपन करेजा कँ टुकडा बािढ मे भिसएला पर

दोख ककरा दैयैए ?

नसीब के ?

लोकतंत के पहरी के ?

सतासीन सरकार के ?

भष -तंत के ?

रौदी आओर दहार

इंद भगािन सुतल गेल छथिन्ह

धानक बिया अखन धरि बाग नहि भेलै

खेतिहर हताश-निराश छथि

माटि मे बेबाय फाटि गेल छै

अइ बेर की हेतै ?

रौदी !

पोखरि सभ सुखि गेलै

िपाकल के पानि सुखि गेलै

भूमि तैप रहल छै आगि जका

कुकुर कानि रहल अछि साझ-भिनसर

अन लेल तडैप रहल छै मूस

बिलाय कऽ रहल अछि म्याऊँ ।

पाि च्छन बरखा भेला पर

छोट-छोट बाया सभ डुब्ब गेल

कहुना कS रोपल धान डुब्ब गेल

इ बाच्छ ब्याच्यलाक नसीब च्लखैत छै

हमर-अहाक दरद के बाटत ?

भव्सया गेलै नसीब खेव्वाहर के ।

च्लास्ट बन्ना रहल छै गामे-गामे दहार के

नेता सभहक बाजनेस बच्छ गेलैए

एन एि 57 पर बाच्छक बाद

नसीब च्लखल जा रहल छै

मुसहरी टोलक लोकन्ना के

सरकार आओर ओकर तंत हर्चिंद बन्ना गेल छच्य।